मंजरी ऑपेरा





साहित्य भवन [प्रा] लिमिटेड
के.पी.कक्कड़ रोड, इलाहाबाद-२११००३

पाध्याय

मंजरी ओपेरा



MANJARI OPERA

(Novel)

by

TARASHANKAR BANDYOPADHYAY

अनुवादक

योगेन्द्र चौधरी

प्रथम संस्करण १९८५ मूल्य : ७०·००

साहित्य भवन प्रा० लि०, ९३ के० पी० कक्कड़ रोड, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित, तथा स्टार प्रिन्टर्स, २८७ दरियाबाद, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित।

DHYAY

मंजरी ऑपेरा

प्रथम भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा सम्मानित बंगला के उपन्यासकार श्री ताराशंकर बंद्योपाध्याय की एक महत्वपूर्ण रचना है — मंजरी ऑपेरा।

बंगाल की कलामयी धरती के सांस्कृतिक वैभव के रूप में 'यात्रा' का वहाँ के जन जीवन में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। 'यात्रा' के रूप में आज भी बंगाल के जन-साधारण के मन की धड़कनें वहाँ की इस प्राचीनतम नाट्य-विधा को जीवित रखे हैं।

'यात्रा' का भी अपना एक इतिहास है। 'यात्रा' से जुड़े लाखों जन-कलाकारों का अपना विचित्र प्रकार का जीवन है। उनका अपना दुख-सुख है, ईर्ष्या-द्वेष है, कटुता और मैत्री है और साथ ही एक आन्तरिक राजनीति भी है। सब मिला कर 'यात्रा' का अपना अलग जीवन है, अलग दुनिया है।

यात्रा-जीवन के समस्त पहलुओं को दृष्टि में रख कर ताराशंकर ने इस वृहद उपन्यास की रचना की है और उपन्यास की नायिका मंजरी जो अपने यात्रा-ऑपेरा की प्रोप्राइट्रेस भी है, के चरित्र-चित्रण, दुख-सुख का जैसा स्वाभाविक व करुणामय चित्र खीचा है वह ताराशंकर बाबू की ही लेखनी का कमाल है।

□ □

मंजरी ऑपेरा



एक

ग्रे स्ट्रीट और चितपुर के संगम के दक्षिण-पश्चिम कोने पर जो मकान है उसके बरामदे के ऊपर एक बहुत बड़ा साइन-बोर्ड है। मंजरी ऑपेरा। कोष्ठ में लिखा है, महिला यात्रा-दल। उसके नीचे, प्रोप्राइट्रेस मंजरी देवी। १६४४ ई०। साइन-बोर्ड पर नये सिरे से रंग चढ़ा कर उस दिन – रथ यात्रा के दिन—उसे फिर से टांगा गया। मैनेजर गोपाल घोष सड़क के पूरब के फुटपाथ पर खड़ा होकर देख रहा था। कहीं टेढ़ा या तिरछा न हो जाये, देखने का मकसद यही था।

देख कर गोपाल घोष खुश हुआ और बोला, 'बस, बिलकुल ठीक। इसी को कहते है, न इधर न उधर। गाँठ लगा दो।' कह कर वह सड़क पार कर घर के अन्दर आया।

संगम का यह मकान सभवतः बनने के बाद से ही यात्रा-दल का दफ्तर रहा है। किसी वर्ष साइन-बोर्ड रहता है—मथुरशा थियेट्रिकल यात्रा पार्टी, किसी वर्ष गणेश ऑपेरा, किसी वर्ष सत्येश्वर ऑपेरा, किसी वर्ष श्री चरण भण्डारी ऑपेरा, कभी वीणापाणि ऑपेरा, कभी रॉयल वीणापाणि। मजरी ऑपेरा के पहले यहाँ आर्य ऑपेरा का दफ्तर था। बहुत दिन पहले जब कि मति राय, धर्मदास राय, भूपेन राय, फकीर अधिकारी, शशी अधिकारी आदि महानुभावो के यात्रा दलो का बोलबाला था तो उस समय दफ्तर रखने का रिवाज नही था। या तो उनके घर पर ही आफिस या मजलिस थी या फिर यह मकान उस समय बन कर तैयार नही हुआ था। दफ्तर का रिवाज होने की शुरुआत से ही यह मकान संभवतः यात्रा-दल का दफ्तर रहा है। मोटे तौर पर लोगों का ख्याल है कि यह मकान जिस दल का दफ्तर रहता है वही दल आज कल अग्रणी रहता है। पिछले दो बरसों से मजरी ऑपेरा की ख्याति शिखर पर है।

बंगाल में महिला यात्रा बहुत अधिक नही हुई है, जितनी कुछ हुई है उनमे से त्रैलोक्य तारिणी, भवसुन्दरी और राधा विनोदिनी की याद लोगो को अब भी है। राधा विनोदिनी के पहले जो आखिरी महिला यात्रा-दल था, उसे समाप्त हुए दस साल हो चुके हैं। महिला यात्रा दल की परमायु प्रोप्राइट्रेस की परमायु और क्षमता पर निर्भर करती है। प्रोप्राइट्रेस के विदा होते ही दल भंग हो जाता है। या फिर उसकी उम्र बढ़ने पर पार्ट करने की सामर्थ्य में जब कमी आ जाती है तो दल भंग कर दिया जाता है। आम तौर से यात्राओं के दल बड़े-बड़े हुआ करते हैं और उन दलों का काम पुरुषों को लेकर चलाया जाता है। उनके दलों में अभिनेत्रियाँ नहीं होती। लड़के लड़कियों के वेश में सज-धज कर ऐसा अभिनय करते हैं कि लड़कियों को पीछे छोड़ देते है। सज-संवर कर जब मंच पर आते हैं तो पता ही नही

चलता कि लड़के हैं या लड़कियाँ। इसके अलावा दूसरी-दूसरी बातें भी हैं। यात्रा-दल में कष्ट कुछ कम नहीं होता। दशहरे के समय मुफस्सिल की ओर निकलते हैं तो यहाँ-वहाँ, शहर-गाँव में अभिनय करते हुए अगहन के बिलकुल आखिर में वापस आते हैं। पूस का महीना आराम का महीना होता है, उसके बाद माघ महीने की सरस्वती पूजा से बेरोक-टोक कलकत्ते से शुरू कर पूरे बंगाल, पूरब में आसाम—गौहाटी से डिब्रूगढ़, श्री हट से शिलचर और बिहार के कटिहार, पूर्णिया, किशनगंज तक की परिक्रमा करते हैं। उत्तर में जलपाईगुड़ी से सिलीगुड़ी के चाय बगान तक। बिहार का एक और अंचल यात्रा-दल की बहुत बड़ी आमदनी की जगह है, तब हाँ, वह अंचल ऐसा नहीं लगता कि वह बंगाल के बाहर हो। वह है बराकर नदी पार करने के बाद कोयला खदान का इलाका। वहाँ यात्रा-दल को जितना पैसा मिलता है उतनी ही ख्याति। अभिनय करने में भी सुख है। वहाँ बंगाली समझदारों की संख्या बहुत अधिक है। अच्छे पैसे का अंचल है। सिर्फ दल को आमदनी नहीं होती बल्कि अच्छे ऐक्टरों को ढेर-सारा उपहार भी मिलता है। फिर भी कष्ट यात्रा-दल की नियति है। आने-जाने का कष्ट, खाने-सोने का कष्ट। सबसे ज्यादा कष्ट महिलाओं को होता है, जब उन्हें खुली जगह में अभिनय करना पड़ता है। चारों तरफ हजारों श्रोताओं की भीड़ रहती है, महिलाओं के कोमल कण्ठ के लिए उन तक आवाज़ पहुँचाना मुश्किल हो जाता है। असली चीज है उपार्जन। उस उपार्जन से महिलाओं का काम नहीं चलता है। अभिनेत्रियों का कार्य इस देश में अब तक वे ही करती आयी हैं जो देह-व्यवसायिनी हैं। थियेटर में नौकरी करने से उनके उपार्जन में वृद्धि होती है। पुराने जमाने में जब कि रात-भर या रात के दो-तीन बजे तक अभिनय चलता था तो उन्हें शनिवार, रविवार, बुधवार—बाद में बुधवार के बदले बृहस्पतिवार—को काम करना पड़ता था और बाकी चार दिन अपने पेशे की कमाई के लिए अवकाश मिलता था। लेकिन *यात्रा*-दल में शामिल होने पर मुफस्सिल में उनकी उस तरह की आय का स्रोत थम जाता है। इसके अलावा यात्रा-दल में थियेटर की तुलना में तनख्वाह भी कम मिलती है। उस पर रास्ते की तकलीफ। बहुत सी जगहों में बैलगाड़ी से दस-बीस मील जाना पड़ता है। मर्द लोग पैदल चल कर रास्ता तय कर लेते हैं। अपने साथ चिउड़ा-गुड़ रखते हैं, रास्ते में उसे ही भिगो कर खा लेते हैं और रास्ता तय करते हैं। महिलाएँ ऐसा नहीं कर पाती। इसके अलावा जरूरत पड़ती है रखवारों की। शास्त्र में नारी और पुरुष की तुलना घी और अग्नि से की गयी है। चारों तरफ या दसों दिशाओं में आग की लपटें जब महराने लगती हैं तो घी के लिए मुसीबत खड़ी हो जाती है। यही वजह है कि महिलाओं को यात्रा-दल में नहीं लिया जाता और वे उसमें भर्ती भी नहीं होती हैं। जहाँ तक महिला यात्रा-दल की बात है वह स्वतंत्र होता है। वहाँ कुछेक महिलाएँ और पुरुष एक-दूसरे के प्रति अनुगत या अनुरक्त रहने के कारण देह के व्यवसाय [illegible] को पीछे छोड़ कर राह-घाट में डेरे का निर्माण कर लेते है। महिलाएँ

देह-व्यवसायिनी श्रेणी की ही होती हैं–नृत्य-संगीत के मामले में कुछेक अव्वल, कुछेक दोयम दर्जे की और कुछेक कामचलाऊ होती है। इसमे जो पुरुष रहते है वे वहेतू किस्म के होते हैं जिनमे से कुछेक वादक, कुछेक गायक और कुछेक ऐक्टर होते हैं। इसके अलावा वैसे पुरुष भी रहते है जिन्होंने परीक्षा करके यह नही देखा है कि वे कुछ और काम कर सकते है या नही। संयोगवश वे एक दूसरे से मन-मिलन के बंधन में बँध जाते हैं और यात्रा-दल के कष्ट को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। दोनो रोजगार करते हैं, एक साथ पैदल चलते है, एक साथ खाना खाते है। छः महीने, आठ महीने तक उन्हें दैहिक मिलन का सुयोग प्राप्त नही होता, सिर्फ परस्पर दो-चार बाते कर लेते है, हास-परिहास का विनिमय कर लेते है और इतने मे ही खुश रहते है। यात्रा-दल का सफर खत्म होता है तो फिर से सुख के दिन लौट आते है और वे कपोत-कपोती की तरह वास करते है। लेकिन सब के मूल मे है प्रोप्राइट्रेस। उसे इस तरह की इच्छा न हो तो महिला यात्रा-दल का गठन हो ही नही सकता। प्रोप्राइट्रेस का हीरोइन ऐक्ट्रेस होना लाजिमी है, उसके पास पैसा होना जरूरी है, उसका प्रेम-पात्र हीरो ऐक्टर होगा—तभी महिला यात्रा-दल हो सकता है।

मंजरी ऑपेरा की प्रोप्राइट्रेस नामी ऐक्ट्रेस और रूपवती युवती है। 'प्रवीर पतन' में 'जना' की भूमिका और 'सती तुलसी' में 'तुलसी' की भूमिका मे उतरने के कारण उसकी ख्याति देश-भर मे फैल चुकी है। मजरी मच पर प्रवेश करती है तो महफिल में सरगर्मी छा जाती है।

हीरो गोरा चक्रवर्ती उर्फ विजय चक्रवर्ती ने भी 'प्रवीर' और 'शंखचूड़' की भूमिका में वैसी ही ख्याति अर्जित की है। दीर्घांगी गोरा बाबू का प्रवेश-प्रस्थान दिग्विजयी वीर जैसा ही होता है। बहुतों का कहना है कि गोरा बाबू विख्यात नट दुर्गादास का अनुकरण करता है। मगर उसका आश्चर्यजनक स्वच्छन्द अभिनय अनुकरण जैसा लगता ही नही है।

इन लोगों के साथ एक और निपुण नट है—यशस्वी रीतू बाबू, यात्रा-दल का राजा ऐक्टर। रीतेन बोस। लम्बा-चौड़ा शरीर, पैंतालीस इंच का सीना, लम्बाई लगभग छः फीट, भरा हुआ चेहरा, नाक, मुँह, आँख की गठन आकर्षक। लेकिन उसकी बड़ी-बड़ी आँखों की दृष्टि और चेहरे की कठिन पुरुष भंगिमा देख कर लोग सकते मे आ जाते है। रावण, कंस, शिव इत्यादि की भूमिका में उतरने वाला वह एक नामी नट है। जब दल का गठन हुआ था उसी समय रीतू बाबू दल में शामिल हो गया था। वह वहेतू किस्म का आदमी है। उसे घर-द्वार सब कुछ था, मैट्रिक पास कर श्रीरामपुर म्युनिसिपैलिटी मे काम करता था। शौक था तो बस एमेच्योर थियेटर में भाग लेने का। जवानी के दिनो मे तरुण नायक का पार्ट करता था। यहाँ-वहाँ से उसकी बुलाहट भी आती थी। कभी छुट्टी लेकर जाता और कभी यों ही बिना छुट्टी लिए चला जाता। लौट कर आने पर डॉक्टर का सर्टिफिकेट पेश करता। इसी में पकड़ा गया और नौकरी छूट गयी। नौकरी छूटने के बाद माँ

भाई को दुतकार सह कर प्रसन्न मन एमेच्योर थियेटर में पार्ट करता रहा, लेकिन उसकी पत्नी दुतकार बरदाश्त नहीं कर सकी। उसने आत्महत्या कर ली। इसके बाद रीतू बाबू थियेटरों के दरवाजे पर फेरे लगाने के बाद यात्रा-दल में शामिल हो गया। यह आज से चौबीस साल पहले की घटना है—उस समय उसकी उम्र थी चौबीस साल। कई साल तक वेश्याओं के मुहल्ले में चक्कर काटने के बाद एक वेश्या के यहाँ डेरा डाल दिया। उसके बाद एक दूसरी वेश्या के घर में। आठेक साल पहले थियेटर की ऐक्ट्रेस नर्तकी-गायिका पटली चारु से जान-पहचान हुई और उसे लगा कि इतने दिनों से वह उसी की तलाश में था। मगर यात्रा-दल के ऐक्टरों का, जो इसी तरह के बसेरे का निर्माण करते हैं, बसेरा अक्सर हर साल उजड़ जाता है। और उजड़ने का कारण है उनके काम का बेढंगापन। वे लोग दल के साथ बाहर निकलते हैं, लगातार महीनों तक बाहर का चक्कर लगाने के बाद जब वापस आते हैं तो उनके बसेरे पर नया आदमी दखल जमा लेता है। लेकिन पटली चारु ने ऐसा नहीं होने दिया। इन्तजार में वह बैठी रहती थी। इसलिए चार वर्ष पहले जब मंजरी ऑपेरा की स्थापना हुई तो पटली चारु के साथ रीतू बाबू भी उससे जुड़ गया था। पटली चारु खूबसूरत थी—छरहरी। तीस साल की उम्र में भी वह पन्द्रह से बीस साल की नायिका के रूप में बखूबी खप जाती और नाचती-गाती भी अच्छा थी। नौकरी मिल जाने से उन दोनों ने इत्मीनान की साँस ली थी। बड़े ही खुश हुए थे और उन्हें लगा था कि इस विक्षुब्ध संसार-सागर में उन्हें पाँव टिकाने के लिए ठोस जमीन मिल गयी है। इसी वजह से दल के प्रति उनमें काफी लगाव भी था। उन दोनों के नाम के कारण भी दल की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई थी।

उन लोगों के साथ ही तीन और जोड़े दल में शामिल हुए थे। रीतू बाबू और पटली चारु की ही तरह। नाडू बाबू और गोपाली बाला, कॉमिक ऐक्टर बोका बाबू और बूँची छाया, बंशी डांसिंग मास्टर और आशा, गायक नाडू और शोभा। दो वर्ष पहले पटली चारु इस दुनिया से विदा हो चुकी है और इस बार नाडू बाबू ने भी आखिरी साँस ले ली। लेकिन रीतू बाबू ने दल नहीं छोड़ा और न ही शोभा ने। पिछले साल पटली चारु की जगह कुमारी नायिका के लिए योग्य लड़की की तलाश करने पर सहज ही कोई वैसी लड़की नहीं मिली थी। बहुत खोज-पड़ताल करने पर हावड़ागिरी या सरस्वती मिली थी, रूप या गुण की दृष्टि से सरस्वती पटली चारु से बीस ही थी, लेकिन उसके कारण सेमल के फूल जैसे रूपवान मगर गुणहीन चालू चान्दाल को लेना पड़ा था। वही चालू चान्दाल हो दल को हानि पहुँचा कर चला गया था। आज रथयात्रा है, २८ आषाढ़। आज से ढाई महीने पहले वर्ष की अन्तिम प्रस्तुति के बाद यात्रा-दल खुलना शहर से कलकत्ता वापस आया। सभी अपना-अपना पावना लेकर घर चले गये। जाने के समय सभी यह अनुरोध कर गये कि अगली प्रस्तुति के मौसम में उन्हें दल में फिर से लिया जाये। सिर्फ बोका बाबू ने ही कहा, 'मरण में रहा हूँ। मेरी जगह दूसरे आदमी की तलाश कर लीजिएगा।'

'क्यों ?'क्या हुआ

'नहीं । अब मैं—'

वाक्य अधूरा छोड़ कर वह चला गया । यहाँ तक कि बुंची के लिए भी इन्तजार नहीं किया ।

बोका बाबू की प्रेमिका बुंची छाया से गोपाल मैनेजर ने पूछा, 'बात क्या है बुंची ?'

'मालूम नहीं ।' यह कह कर वह चली गयी ।

मंजरी, गोरा बाबू, रीतू बाबू को पता चला तो वे बोले, 'दसेक दिन के लिए जाने दीजिए । लगता है झगडा वगैरह हुआ है ।' लेकिन यह कह कर वे सन्तुष्ट नहीं हो सके । क्योंकि इस प्रकार के प्रेम मे जो झगड़ा होता है वह चहारदीवारी से घिरे कमरे या घर मे नहीं होता । अगर होता है तो रास्ते में या दल के डेरे पर या फिर वेशमन्दिर में सबके सामने ।

चूँकि झगडा नहीं हुआ था इसलिए किसी ने देखा-सुना नहीं था । हुआ था कुछ और ही । चालू चारूदास और बोका बाबू की प्रेमिका बुंची छाया छिपे तौर पर एक दूसरे को प्यार करने लगे थे । सेमल का फूल चालू चारुदास महफिल के अभिनय मे यद्यपि अनाडी है मगर जीवन के अभिनय मे पहुँचा हुआ उस्ताद है । अपनी प्रेमिका हाबलीसरी तक को पता चलने नहीं दिया । दल से हिसाब-किताब कर जाने के समय भी दोनों एक साथ निकले । एक सप्ताह बाद सुनने को मिला कि हाबलीसरी ने दोपहर के समय बुंची छाया के घर पर धावा किया था और चारु और बुंची को झाड़ू से पीट आयी है । इसके अलावा चारुदास का सूटकेस अपने घर से निकाल कर रास्ते पर फेंक दिया है । एक महीना बीतते न बीतते वह थियेटर के सखीदल में भर्ती हो गयी ।

मैनेजर गोरा बाबू को जब इस खबर का पता चला तो उसने असिस्टेन्ट मैनेजर गोपाल घोष को बुला कर कहा, 'फिर तो आदमी की खोज करनी पडेगी गोपाल बाबू ।'

मंजरी ऑपेरा की प्रोप्राइट्रेस मंजरी देवी है, गोरा बाबू उसका मैनेजर । असिस्टेन्ट मैनेजर हैं गोपाल घोष । यात्रा-दल की मैनेजरी करते-करते उसके बाल पक गये हैं । बड़ा ही अनुभवी आदमी है । वास्तव मे गोपाल ही मैनेजर है । चूँकि गोरा बाबू का कोई बड़ा पद न रहे तो शोभा नहीं देता, इसलिए नाम का मैनेजर वही है । गोरा बाबू यात्रा-दल का हीरो है, पद से मैनेजर और मंजरी का पति । दोनो की शादी वैष्णव मत से हुई है । मगर लोग इस बात को मानने को तैयार नहीं हैं । मंजरी देह व्यवसायिनी की लड़की है, उसकी भला जात क्या, या कि उससे शादी ही क्या ! लेकिन वे इस बात को मानते है ।

गोपाल घोष ने कहा था, 'हाँ, तलाश करनी ही होगी । आदमी तो एक नहीं, तीन की जरूरत है—दो फिमेल एक मेल । इसी को इंपॉर्टेन्ट कहते हैं । बोका

बाबू जैसा कॉमिक पार्ट करने वाला आदमी मिलना आसान बात नहीं है। उसके बाद कुमारी नायिका। वह तो और भी ज्यादा इंपार्टेन्ट है। चेहरा, उम्र, गाने के लायक गला—। इसी को कहते हैं, तलाश करनी ही होगी। उनके बिना काम नहीं चलेगा तो ढूंढना ही होगा।'

ठीक उसी क्षण रीतू बाबू ने घर के अन्दर प्रवेश किया था। गला खँखार कर मोटे गम्भीर स्वर में मुखस्थ किये हुए पार्ट की तरह पुकारा था, 'देवता हैं ?'

गोरा बाबू ने आग्रह भरे स्वर में उत्तर दिया था, 'आइये मास्टर साहब।' उसके बाद मंजरी को पुकार कर कहा था, 'मंजरी, मास्टर साहब आये हैं।'

यात्रा-दल के सभी प्रवीण और बड़े ऐक्टरों को या तो मास्टर साहब कहा जाता है या फिर बाबू। गोपाल घोष भी उसे मास्टर साहब कहता है। गोपाल घोष की उम्र साठ से ज्यादा ही है। लेकिन फिर भी रीतू बाबू, नाडू बाबू वगैरह उसके लिए मास्टर साहब ही हैं। गोरा और मंजरी भी रीतू बाबू को मास्टर साहब ही कहते हैं। बड़े लोगों के नाम के साथ बाबू लगा कर पुकारते हैं, बाकी लोगों का नाम लेकर ही पुकारते हैं। एक और व्यक्ति मास्टर साहब था। वृद्ध नाडू बाबू, गायक नाडू, नारायण घोष, लेकिन वह कुछेक महीने पहले इस दुनिया से विदा हो चुका है।

दल के लोगों के लिए मंजरी आँखों की ओट में प्रोप्राइट्रेस या मालकिन है, कोई-कोई कहता है गृहिणी। सामने कहते हैं माता जी। गोरा बाबू को आँख की ओट में मालिक कहते हैं, सामने बड़े बाबू या सर। रीतू बाबू गोरा बाबू को देवता कहता है, मंजरी को प्रोप्राइट्रेस। आम लोगों के बीच सिर्फ 'आप' कह कर ही काम चला लेता है।

गोरा बाबू की पुकार सुन कर मंजरी ने कमरे से ही उत्तर दिया था, 'बैठिये मास्टर साहब, मैं पापड़ तल रही हूँ, जल जायेगा। बाहर निकाल कर आ रही हूँ। गोपाल मामा, आप भी नहीं जाइएगा।'

गोपाल घोष को मंजरी मामा कह कर सम्बोधित करती है। गोपाल मंजरी की माँ तुलसी को दीदी कहा करता था।

पुकार सुनते ही रीतू बाबू ने गीत गाना शुरू कर दिया था। इस तरह गीत गाने की उसे आदत है। आवाज मोटी है, रीतू बाबू गायक भी नहीं है मगर मोटे तौर पर काम चला लेता है। गीत वह एक ही गाता है, खास कर गोरा बाबू के घर में या फिर वहाँ जिसके बारे में उन दोनों के अलावा किसी को कुछ मालूम नहीं है। और वो भी दो ही पंक्ति। गीत शुरू किया था—

यह माया प्रपंच, माया यही विश्व के रंगमंच पर।
लीलामय नटवर हरि, जिसे सजाते जैसा वह वैसा ही सजता।

इन दो पंक्तियों का अर्थ चाहे जो हो या उसमें दार्शनिकता चाहे जो हो, मगर रीतू बाबू का लक्ष्य है गोरा बाबू, उसके साथ मंजरी भी है। ऐसा नहीं कि यह बात

गोरा बाबू और मंजरी न जानते हों—और सिर्फ वे ही क्यों, दल के प्रायः बहुतेरे लोग इसके अन्दरूनी अर्थ को समझते है ।

कॉमिक ऐक्टर बोका बाबू दल छोड कर चला गया; वह कहा करता था, 'चाहे हरि के चरणो में तेल लगायें या उन पर तुलसी ही चढायें मास्टर साहब, आपको कंस रावण की भूमिका में ही उतरना पडेगा ।'

रीतू बाबू कहते, 'बात तो तुमने बिल्कुल सही कही है बोका । हरि अपना पार्ट किसी को नहीं देता ।'

बोका कहता, 'देखिये न, मुझे बिल्कुल बोका (बेवकूफ) सजा कर बाप के द्वारा दिये गये नाम को ही उड़ा दिया । सचमुच ही मैं बेवकूफ ही हो गया । आप जिस गीत को गाते हैं वह अक्षरशः सही है । लीलामय नटवर हरि जिसको जिस रूप में सजाते हैं, उसे उसी रूप मे सजना पड़ता है !'

उस दिन उस गीत की दो पंक्तियाँ गाते हुए रीतू बाबू जैसे ही ऊपर पहुँचा, गोरा बाबू ने कहा था, 'हरि तो मुसीबत में फँस गया है मास्टर साहब । सजाने लायक आदमी ही नहीं मिल रहा है । बात मालूम है ?'

'सुन चुका हूँ । कई दिन यहाँ नही था । घर यानी श्रीरामपुर गया था—वहाँ से बाबा तारकेश्वर । परसों वापस आया हूँ । बोका से सब सुनने को मिला ।'

'वह आपको कहाँ मिल गया ?'

'बता रहा हूँ । अरे ओ शिवनन्दन, कहाँ है तू ? एक गिलास पानी पिला । हाँ, तो कल एक बार अभिसार में निकला था । मिनर्वा थियेटर के पास आमने-सामने मुलाकात हो गयी । वह भी बिल्कुल दरवाजे के पास । वह निकल रहा था और मैं अन्दर जा रहा था । मैंने कहा कौन, बोका ? बोका ने चरणों की धूल लेकर कहा — हाँ, दादा मैं ही हूँ ।'

मंजरी आकर खडी हुई, उसके हाथ के शीशे के प्लेट में मिठाई और झकमक मँजे हुए मुरादाबादी गिलास मे पानी है । स्नान हो चुका है, सिर पर हल्का घूंघट है, ललाट पर सिन्दूर की बेंदी । पहरावा फारसडांगा की साड़ी । कुल मिला कर मंजरी बडी ही प्रसन्न दीख रही है । मंजरी लम्बी-छरहरी है, उसकी सेहत ठीक है, उम्र सत्ताईस-अट्ठाईस, मगर उम्र की तुलना में गम्भीर दीखती है । रूप, वय और तरुणाई में कोई कमी नही है, लेकिन तरुणाई की चंचलता नही है उसमें । प्लेट और पानी का गिलास नीचे रख कर बोली, 'आप जैसे ही पहुँचे, शिवनन्दन से मैंने कहा—जाकर मिठाई और पानी दे आ । मेरा हाथ फँसा हुआ है । लेकिन वह खीरा-प्याज बैठ गया है । मास्टर साहब का नाम लेकर कहा—वे आये हुए हैं । सादे पानी से

काम चलेगा ? ले जाऊँगा तो लताड़ेंगे। वे तो लताड़ेंगे ही, मेरे बाबू भी लताड़ेंगे। हाँ, वो सब समाचार ठीक है न ?'

'सब ? सब समाचार मेरा क्या ठीक नहीं है प्रोप्राइट्रेस ? मेरा कहने से तो सिर्फ मैं से ही सम्बन्ध है। सो तो देख ही रहो हैं कि अच्छी तरह ।' रीतू बाबू हँसने लगा।

गोपाल अब तक चुपचाप बैठा था, कालीन पर बैठ कर उँगली से लकीर खींच रहा था—शायद कुछ लिख रहा था—दुर्गा, काली, कृष्ण या वैसा ही कुछ। उसके बाद हाथ से पोंछ दे रहा था और बातें सुनता जा रहा था। उन दोनों के बीच जो रिश्ता है उसमें दखलन्दाजी करने का अधिकार नहीं है, यह बात गोपाल जानता है। मगर अब उसने कहा, 'एक बात कहूँ मास्टर साहब ?'

'कहिए मगर उसके पहले देवता से वरदान माँग लूँ, ठहर जाओ। एक अदद एसप्रिन या एस्प्रो चाहिए सर। कल जरा ज्यादा मात्रा में ले लिया था, सिर फट रहा है। और सीधे वहीं से आ रहा हूँ। आप तो रखा करते हैं।'

शिवनन्दन ट्रे में शराब की बोतल, गिलास, खीरा, प्याज के टुकड़े, तला हुआ पापड़ ले आया और अभिवादन किया, 'प्रणाम बाबू।'

'नमस्कार शिवनन्दन जी। तुम भैया साक्षात शिवपुत्र गणेश हो, सिद्धिदाता गणेश। जरा एक एसप्रिन ले आओ, पानी के साथ गटक लूँ।'

मंजरी उठ कर खड़ी हो गयी, 'मैं ला देती हूँ। छिपा कर रखा है।'

'छिपा कर ? ओह हाँ, युद्ध के बाजार में छिपा कर रखने लायक चीज ही है। मैं लिया करता हूँ। मगर किसी दिन दुकान में एस्प्रो मिल जाता है और किसी दिन मिलता ही नहीं। कोई दूसरी ही चीज निकाल कर देता है और कहता है, यही ले जाइए।'

गोरा बाबू ने गिलास में शराब ढाल कर हाथ में थमाते हुए कहा, 'तब तक इसे ही चलाइये। गोपाल बाबू।'

'थोड़ी-सी दीजिए।'

गिलास उठा कर रीतू बाबू बोला, 'इसी की वजह से यात्रा-दल की जिन्दगी पसन्द करता हूँ। जितने हैं सबके सब अधपगले—काम में निठ्ठले, अभिनय-पागल का दल। रात में शाही पोशाक पहन कर राजा का वेश धारण करता हूँ। दिन के वक्त फकीर बन जाता हूँ, फटा-पुराना कुर्ता पहने चटाई बिछा कर लेट जाता हूँ और बीड़ी के कश लेता हूँ। इस चीज के अलावा जिन्दा कैसे रह सकता हूँ ? लेकिन जमाना इतनी तेजी से बदल रहा है कि हमी लोगों के साथ यह सब खत्म हो जायेगा।'

'राइट।' गोरा बाबू ने शराब की चुस्कियाँ ले गिलास खाली कर दिया और नीचे रखते हुए कहा—'राइट ! बिल्कुल बजा फरमाया है आपने। हम लोगों के पास और है ही क्या ? मंजरी यह बात समझती ही नहीं। कल मुझसे कह रही थी कि इसके दल में नये पढ़े-लिखे छोकरे भर्ती हुए हैं और वे शराब नहीं पीते। मैंने कहा था,

पीते नहीं हैं लेकिन पियेंगे। और अगर पियेंगे नहीं तो ऐक्टर बन नहीं पायेंगे। उस पर कहा—मजलिस के लोग उस चीज को बरदाश्त नही करेंगे। सुनिये तो सही। नशे के बगैर कही ऐक्टिंग होती है? नशे में नही रहूँगा तो कैसे सोचूँगा कि मैं गोरा उर्फ विजय चक्रवर्ती, चट से देवता हो गया हूँ, या राजा हो गया हूँ, या कि मर रहा हूँ। लीजिए, सिगरेट लीजिए। गोपाल मामा को बीड़ी चाहिए।'

'मेरे पास है।' गोपाल ने जेब से बीडी निकाल कर उसे सुलगाते हुए कहा, 'मतलब है, आप लोग पीते हैं ही कितनी? मैं यात्रा-दल मे चालीस साल गुजार चुका हूँ। मैं त्रैलोक्य तारिणी के दल में भर्ती हुआ था, मतलब है कि ऐक्टिंग करूँगा, इसी इरादे से। लेकिन वैसा हुआ नहीं, बन गया मैनेजर। त्रैलोक्य तारिणी के दल के हीरो—मतलब है जगत बाबू मंच पर जाते थे। जाने के पहले गिलास मेरे हाथ में थमा जाते। मतलब है मैं खडा रहता था। पार्ट खत्म कर वापस आते ही मेरे हाथ से लेकर, मतलब है कि घूंट लेते-लेते वेश मन्दिर में जाते। उनसे सुना है, वे कहा करते थे, गोपाल कैसे-कैसे दिन बीते हैं। मेदिनीपुर जमीदार के घर यात्रा करने जाता था, वहाँ के बाबू लोग सुराही मे शराब रखे रहते थे। और माटी के सकोरे का ढेर लगा रहता था। ढालो, पियो और फेंक दो।'

मंजरी एस्ट्रो लेकर आयी। रख कर बोली, 'लीजिए मास्टर साहब। लेकिन इसके बाद मेरी एक आरजू है।'

गोरा बाबू ने हँस कर कहा, 'बोतल उठा कर ले जाना चाहती हो न?'

'ले जाना चाहती हूँ। कौन-सा अन्याय कर रही हूँ?'

'जो कुछ कहा सुन चुकी हो न?'

'सुना है।'

'फिर?'

'अभी तो यात्रा के मंच पर पार्ट करने नही जाना है न! अभी दल के गठन की बात चल रही थी। नशे की झोंक मे वह करना ठीक नही रहेगा।'

रीतू बाबू ने संभ्रम के साथ कहा, 'युक्ति तो ऐसी है जो काटी नही जा सकती, लो बाबा।'

गोरा बाबू ने हाथ कस कर पकड़ लिया, 'उहुँ। मैं मानने वाला नहीं हूँ। और एक-एक डोज का हुक्म मिल जाना चाहिए। उसके बाद मैं सुबोध सुशील बालक बन जाऊँगा—उसके बाद प्रोप्राइट्रेस मंजरी उसे जो कुछ कहेगी, वही मान लेगा वह?'

मंजरी ने हँस कर कहा, 'शिवनन्दन ले, थोडी-थोडी और ढाल कर दे दे। नही, तुम नही ढाल सकते हो। अब मामा को मत देना। उठा कर ले जा।'

रीतू बाबू ने कहा, 'बोका से सब सुनने को मिला। उसने कहा—मास्टर साहब, उस साले चालू चारु को आप लोग पहचानते नहीं थे, मैं पहचानता था। पहले वह एमेच्योर थियेटर में महिला का अभिनय करता था। बड़े-बड़े राजा जमीन्दार के थियेटर में नौकरी करता था। जितनी भी जगह गया है, सब जगह वह साला भले घर की लड़कियों से प्रेम कर आया है, पकड़ा गया है और जम कर उसकी पिटाई हुई है। आखिर में यात्रा में भर्ती हुआ था। पार्ट कर नहीं सकता। जो कुछ करता है लड़कियों के साथ ही करता है। अचानक हावलीसरी को फँसा लिया। कहीं उसे महिला की भूमिका में उतरते देख कर हावलीसरी उस पर मुग्ध हो गयी थी। थियेटर छोड़ कर वह हम लोगों के दल में भर्ती हो गया। लेकिन साला है तो आखिर कुत्ता ही। चोटा कुत्ता। बुंची पर उसकी नजर गड़ गयी। चालाक तो पहले दर्जे का है न। हावली को इस बात का पता नहीं चला, मगर मुझे पता चल गया था। दो-चार बार बुंची से कहा—सावधान बुंची, सावधान। मुफस्सिल में झमेला बढ़ाना नहीं चाहता था, और बढ़ा भी नहीं सकता था। जब छोड़ कर जाने का वक्त आया तो समझ गया कि बुंची मुझे छोड़ कर चली जायेगी। इसलिए मैं खुद ही हट गया। बुंची दूसरे के पास जायेगी—उसके बाद दल में रहना कैसा लगेगा, आप ही सोच कर देख लीजिये।'

जरा चुप रहने के बाद सिगरेट के कई कश लेते हुए रीतू बाबू ने कहा, 'मैंने कहा—हावलीसरी से समझौते का रास्ता निकाल कर जिस तरह रह रहे थे, उस तरह रहो। दल क्यों छोड़ोगे? तनख्वाह अच्छी मिलती है। प्रोप्राइट्रेस जैसी मालकिन नहीं मिलेगी। घर तो अमीर आदमी है। उसके बाद ऐक्टर ऐक्ट्रेस का दल है। इस पर बोका बोला, वह सब अब खत्म हो गया। हावली थियेटर में भर्ती हो गयी है। मैंने भी मोहन ऑपेरा की नौकरी स्वीकार कर ली है—तनख्वाह भी अधिक मिलती है। उसके बाद बोला, आप भी चले आइए मास्टर साहब—आपको यहाँ एक सौ पचहत्तर मिलता है, ये लोग दो सौ देंगे। वे लोग दल बनाने जा रहे हैं—सबसे श्रेष्ठ दल। आइएगा? मंजरी ऑपेरा को डाउन करेगा—यही उन लोगों के मालिक की प्रतिज्ञा है। उन लोगों के कई बँधे घर को इन लोगों ने अपने हाथ में कर लिया है—पर ही नहीं, बल्कि मंजरी ऑपेरा ने उन लोगों को पूरे बोकारो इलाके में डाउन कर दिया है। यही वजह है कि वे लोग मंजरी ऑपेरा के रंगकर्मियों को ज्यादा तनख्वाह पर लेना चाहते हैं।'

गोरा बाबू का गोरा चेहरा लाल हो गया। वह भौंह सिकोड़ कर चुपचाप सुन रहा था। रीतू बाबू के चुप होते ही चौंक कर इधर-उधर देखा और अन्दर चला गया। मंजरी भी घबरा कर खड़ी हो गयी। लेकिन वह कमरे के अन्दर जाये कि इसके पहले ही गोरा बाबू मुँह पोंछते हुए बाहर निकल आया। शराब के घूंट लेकर वापस आया है। उसके चेहरे में बदलाव आ गया है। उसके अन्दर से एक जिद्दी गंवार बाहर निकल आया है। सिगरेट सुलगा कर बोला, 'गोपाल मामा!'

बीड़ी का कश लेते हुए गोपाल ने कहा, 'कहिये।'

'बाजार का सबसे बढ़िया दल का गठन कर सकिएगा ?'

'क्यों नहीं ।'

'हाँ, अगर वैसा कर सकते हैं तो दल रहे, वरना जरूरत नही । कहिये, ठीक कह रहा हूँ न मास्टर साहब ?'

रीतू बाबू ने कहा, 'बिलकुल ठीक । मैं इससे सहमत हूँ ।' उसके बाद हाथ हिला कर भाषण के अन्दाज में कहा, 'ज्येष्ठ नही, श्रेष्ठ होना चाहिए ।

इस धरती पर श्रेष्ठ एक जन—एक ही व्यक्ति
बाकी सब हैं अधम, सभी के साथ
अधम हो जीवन जीना किसी तरह
क्या रखता है अर्थ ? उससे तो अच्छी मृत्यु ।
इसीलिए तो युद्ध चल रहा मुझमें और ईश्वर—ब्रह्माण्ड के
एकमात्र विधाता में । देवलोक पर
इसीलिए तो विजय प्राप्त कर मिटी न मेरी तृष्णा—
खोज रहा मैं ईश्वर को उससे ही
द्वन्द्व चल रहा मेरा । बड़ा कौन ? वह या मैं हूँ ?'

रीतू बाबू की आँखें बड़ी-बड़ी हैं । उनमें लाली उभर आयी है । चेहरा बदला-बदला जैसा लग रहा है । नशे ने उस पर अपना रंग जमा लिया है । बात उसने झूठी नही कही थी । यात्रा-दल के ये वाकचपल, किन्तु दूसरे-दूसरे कारनामें में संबल-हीन, लोग स्वप्न के बदले यथार्थ का सामना होते ही असहाय जैसे दीखने लगते हैं । स्वप्न देखने की एक ही दवा से वे परिचित है—और वह है नशा । इसकी वजह से दुनिया के किसी भी व्यक्ति के सामने उन्हें संकोच का अनुभव नहीं होता । बल्कि नशे में नहीं रहते हैं तो अपने-अपने में सिमटे-सिकुड़े जैसे रहते हैं । ऐसा नही कि नशे में रहने पर वे लड़खड़ा कर मुँह के बल गिर पड़ते है । भाषण समाप्त कर गोरा बाबू ने कहा, 'मंजरी, तुम बताओ ।'

मंजरी ने हँसते हुए कहा, 'तुम्हारे कहने के बावजूद मुझे कहना होगा ?'

'तुम मालकिन हो ।'

'और तुम मालिक नहीं हो ? ऐसी बात है तो दल भंग कर दो ।'

'अरे तुम तो झट से गुस्से मे आ गयीं !'

मंजरी बोली, 'गुस्से में क्यों नही आऊँगी ? तुमने वैसी बात क्यो कही ?'

रीतू बाबू बोला, 'आप माफी माँग लीजिए सर । गलती आपकी ही है ।'

'अच्छा-अच्छा, वही बात । माफ...'

मंजरी ने उसकी बात काट कर कहा, 'अच्छी तरह दल का गठन करो । मेरा भी यही कहना है । और अगर न हो सके तो फिर दल भंग कर दो । उस बोका को जब बूँची से मुहब्बत करने पर पहले-पहल ठोकर लगी, यात्रा-दल से लौटने के बाद जब देखा कि बूँची बीमारी की वजह से मरने-मरने की हालत में है तो मैंने उसे बुला कर

इलाज कराने के लिए पैसा दिया था। वुंची ने मेरे पैरों पर हाथ रख कर कहा था—बोका ने ईश्वर को साक्षी रख कर कहा था, तुम हटा दो तो अलग बात है। लेकिन हम लोग कभी छोड़ कर नहीं जायेंगे।'

गोपाल बोला, 'इससे क्या आता जाता है मंजरी बिटिया, मतलब है कि बोका के बदले अच्छा आदमी ले आऊँगा।'

रीतू बोला, 'अबकी किसी अकलमन्द को ले आओ गोपाल। चिन्ता लड़की के लिए—'

एकाएक ओ-ओ आवाज करता हुआ साइरेन बज उठा। १९४४ ई० । अब भी बीच-बीच में साइरेन बज उठता है। लेकिन लोग बाग तेंतालीस-चौवालीस की तरह भयभीत नहीं होते हैं। फिर भी सब चौंक उठे जरूर।

गोपाल बाबू, 'बाप रे, बरदाश्त से बाहर हो गया। लड़ाई थम कर भी थमने का नाम नहीं ले रही है।'

रीतू बाबू बोला, 'मरने को जो इच्छुक मरे न, किन्तु वह राम यह कैसा बैरी ?'

मंजरी बोली, 'नीचे चलिए।'

गोरा बाबू बोला, 'नहीं।'

एकाध मिनट चुप रहने के बाद बोला, 'गोपाल बाबू, चितपुर में कोई अच्छा सा मकान देखिये। ऑफिस करना है। अच्छा दल बनाने के लिए ऑफिस की जरूरत पड़ती है। घर पर ऑफिस रखने से काम नहीं चलेगा। मास्टर साहब, साइरेन बजने से अच्छा होता है। यहीं नहाइये-धोइये, खाना खाइये और सो रहिये। तीसरे पहर एक योजना बना कर हम काम करने में जुट जायेंगे।'

मंजरी बोली, 'मगर दुहाई धर्म की, शराब जरा कम पीना।'

उसी योजना के अनुसार ग्रे स्ट्रीट और चितपुर में संगम पर यह बेहतरीन मकान किराये पर लिया गया है। आज रथयात्रा, शुभ दिन है, आज नया दफ्तर खोला जा रहा है। आज ही नये लोगों की भर्ती करने का काम शुरू किया जायेगा। गोरा बाबू और मंजरी पूजा करने के लिए कालीघाट जायेंगे। नाटक की साइत की जायेगी, यानि पाण्डुलिपि में सिन्दूर की छाप लगायी जायेगी।

गोपाल घोष ऊपर चला आया। नीचे की मन्जिल में तब भी १९४४ ई० में वेश्याएँ रहती थीं। नीचे की मंजिल की ओर खुलने वाले दरवाजे पर ताला लगा दिया गया है। कमरे को झाड़-पोंछ कर एक किनारे एक तख्ता बिछा दिया गया है, दूसरी ओर एक मेज और उस मेज के दोनों ओर कुछेक फोल्डिंग चेयर रख कर कमरे को ऑफिस जैसा नक्श बना दी गयी है। दीवार पर कुछेक तस्वीरें हैं—माँ काली की, सिद्धिदाता गणेश की और रामकृष्ण परमहंस की। खूबसूरत लड़की का एक कैलेण्डर और उसकी बगल में चटखदार कागज वाला बंगला-मास का एक कैलेण्डर। एक , आलमारी के नीचे के आले पर एक बहुत बड़ा घड़ा। एक सुराही, ऊपर के आले

पर कलईदार एक गिलास, दो अदद काँच के गिलास, एक अदद प्याली-तश्तरियां सजा कर रखी हुई हैं। मेज पर सालू से जिल्द मढ़ा खाता है और उस पर सालू से जिल्द मढ़ा एक पंचांग है। कमरे के अन्दर जाने के दरवाजे पर एक छोटा-सा साइन-बोर्ड है— मंजरी ऑपेरा, प्रोप्राइट्रेस मंजरी देवी। आलमारी के सबसे ऊपरी खाने में दो बॉक्स हारमोनियम, ढोल, दो जोड़ा बायां-तबला, मजीरा बड़े ही सलीके से सजा कर रखे गये हैं।

मोटे तौर पर यही कहा जा सकता है कि गोपाल घोष सवेरे से ही अपनी रुचि के अनुसार यथासाध्य कमरे को सजा कर रखे हुए हैं। दल के नौकर विपिन हाजरा ने सड़क के किनारे के बरामदे पर एक तिपाई बिछा कर अपने बैठने के लिए स्थान मुकर्रर कर लिया है।

कमरे में प्रवेश करते ही गोपाल के चेहरे पर प्रसन्नता घिर आयी - वाह, बहुत ही अच्छा ? मेज के सामने कुर्सी पर बैठ कर एक बीड़ी सुलगायी और विपिन को पुकारा, 'विपिन।'

'कहिये', विपिन आकर खड़ा हुआ।

'मतलब यह कि कैसा रहा ?'

'बढ़िया—बहुत ही बढ़िया। अब नगाड़ा पीट कर कुड् ताक-कुड् ताप भोंपू बजवा दें। मोहन ऑपेरा के कलेजे पर साँप लोटने लगे।'

'दूँगा दूँगा, तुम फिक्र क्यों करते हो ? हुँ हुँ ! मतलब यह कि अभी शाम ही हुई है। पान-वान का आर्डर दे चुके हो न ?'

'सब कम्पलीट। चाय की दुकान में कह आया हूँ।'

ठीक उसी वक्त सीढ़ियों पर पदचाप सुनायी पड़ी, उसके साथ ही रीतू बाबू का कण्ठ-स्वर सुनायी पड़ा, 'यह माया, प्रपंच माया······अरे, गोपाल बाबू कहाँ हैं ? वे लोग कहाँ हैं ?'

'वे लोग' का मतलब मंजरी और गौरा बाबू प्रोप्राइट्रेस और हीरो, मंजरी का पति। पूजा करने के लिए कालीघाट जाना है।

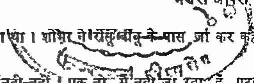
बोलने के साथ ही टैक्सी का हॉर्न सुनायी पड़ा। वे लोग भी आ गये हैं।

दो

एक ही टैक्सी से काम नहीं चला, दो टैक्सियों की जरूरत पड़ी। आदमी तो पाँच ही है मगर सामान बेशुमार। मंजरी ने स्वयं ही झांपी में सामान सहेजे हैं। पोड-

षोपचार पूजा का आयोजन है। नकद पैसा दे देने से पण्डा आधे सामान में ही काम चला लेता है। फल-मूल, मिष्ठान्न, अड़हुल फूल की माला, अपराजिता की माला, फूल, वस्त्र, शंख इत्यादि फेहरिस्त बना कर खरीदे गये हैं। स्वयं गोरा बाबू ने फेहरिस्त बनायी है। मंजरी और शोभा शिवनन्दन के साथ बाजार गयी थी और खरीद कर ले आयी थीं।

शोभा अब काफी उम्र की हो चुकी है—लगभग पैंतालीस साल की अपनी जिन्दगी में उसने गवैया नाड़ू के साथ गृहस्थी बसायी थी और अपने प्रेम को जीवित रखने के लिए यात्रा-दल में आश्रय लिया था। यह लगभग बीस साल पहले की बात है। नाड़ू बाबू उन दिनों यात्रा-दल का बड़ा गवैया था। उन दिनों राधा विनोदिनी का दल काफी प्रख्यात था। नाड़ू आकर उसी दल में भर्ती हुआ था। शोभा की काठी काफी लम्बी-चौड़ी है। उस जमाने में लोग उसे हथिनी कहते थे। राधा विनोदिनी स्वयं दल की बड़ी हीरोइन थी, महिषासुर वध में दुर्गा, रुक्मांगद के हरिवासर में रानी, रावण वध में मन्दोदरी आदि का पार्ट करती थी। जरूरत पड़ने पर शोभा इन सब पार्टों में स्थानापन्न अभिनय करती थी। शोभा में खोट यही है कि वह गीत गाना नहीं जानती। राधा विनोदिनी का दल जाने पर बहुत दिनों तक बेकार बैठे रहना पड़ा। नाड़ू बाबू को दूसरे दल में काम मिल गया था। उस समय तकलीफ महसूस हुई थी, मगर शोभा ने अपने प्रेम को अपमानित नहीं होने दिया। रीतू बाबू की प्रणयिनी पटली बाड़ शोभा की ही बहन थी। रीतू बाबू ने पटली बाड़ के साथ मंजरी ऑपेरा में भर्ती होने के समय नाड़ू बाबू और शोभा को वहाँ काम दिला दिया था। उस वक्त नाड़ू बाबू का गला अचानक बैठ गया था। दल में भर्ती होने पर चाहे ख्याति-सम्मान प्राप्त न हुआ हो लेकिन लोगों के दिल में उसके प्रति स्नेह का भाव अवश्य था। यही वजह है कि गला बैठ जाने के बावजूद नाड़ू बाबू की नौकरी जिन्दगी के आखिरी दिन तक बनी रही। नाड़ू बाबू की मौत मुफस्सिल में इसी वर्ष हुई है। उस वक्त दल आसाम में गौहाटी में था। शोभा की स्थिति बड़ी ही दयनीय हो गयी थी। रीतू बाबू की प्रेमिका पटली बाड़ उसकी सहोदरा बहन थी, परन्तु उसके मरने पर शोभा के चेहरे पर उतनी दयनीयता का भाव नहीं आया था। पटली बाड़ की भी मौत मुफस्सिल में ही हुई थी। दल उन दिनों पूर्व बंगाल के खुलना में था। यह दो वर्ष पहले की बात है। पटली को हल्का सा बुखार आ गया था। और उस बुखार की हालत में ही उसने पार्ट किया था। रीतू बाबू ने उसे ब्राण्डी पिला कर और कुनैन खिला कर तरोताजा बना कर अभिनय में उतारा था। पार्ट खत्म होने के बाद पटली आ कर गिर पड़ी थी। सवेरे बेहोश हो गयी। डॉक्टर ने आ कर देखा और कहा कि डबल निमोनिया है। १९४२ ई०—तब एम० बी० पेनसिलिन प्रचलित नहीं हुआ था और उस पर युद्ध की हालत। पैसा रहने के बावजूद मुफस्सिल में कासा बाजारी के मोटे चावल परवल को हटा कर घुसने की राह नहीं मिली। दल को उसी दिन दौलतपुर था। शाम को वहीं का बयाना लिया गया था। रीतू बाबू रुक गया था,



पटली के सिरहाने बैठा रह गया था। शोभा ने रीतू बाबू के पास जा कर कहा था, 'मैं ठहर जाती हूँ।'

रीतू बाबू ने कहा था, 'नही-नहीं। एक तो मैं नही जा रहा हूँ, पटली भी नहीं रहेगी, उस पर तुम न रहोगी तो अभिनय कैसे होगा ? तुम चली जाओ, प्रोप्राईट्रेस अपने नौकर शिवनन्दन को यही छोड़ गयी। उसके साथ रहेगा नवीन घोष। वह हरफनमौला है।'

यही वजह है कि शोभा चली गयी थी। चार दिन के बाद पटली का दाह-कर्म समाप्त कर रीतू बाबू दल के साथ होने के लिए रानाघाट चला आया था। शोभा रीतू बाबू के पास आ कर रोयी थी, सांत्वना भी दी थी। लेकिन नाडू की मृत्यु होने पर वह औंधे मुँह दो दिन तक पड़ी रही थी। मंजरी ने उसे ढाढ़स बँधाया था और कहा था, 'जब तक दल रहेगा शोभादी और जब तक मैं रहूँगी, तुम भी रहोगी।' इस वादे को मंजरी ने सिर्फ निभाया ही नही है, उससे भी अधिक उसे दिया है। मंजरी जिस मकान में रहती है वह उसका निजी मकान है। उसके एक मंजिले को उसकी नानी ने बनवाया था—चालीस साल पहले की कीर्तन गायिका राधारानी ने। एक मंजिले पर दो मंजिला उसकी माँ तुलसी के प्रताप से हुआ है। मंजरी के बाप, उसके जन्मदाता ने दो मंजिला बनवा दिया था। उस समय वे लोग ऊपर रहते थे और नीचे का हिस्सा किराये पर लगा दिया गया था। तीन कमरे है, बरामदे को घेर कर रसोईघर बनवाया गया है और उनमें उन्ही लोगों के वर्ग की तीन औरतें रहती हैं। लेकिन देह व्यवसायिनी होने के बावजूद वे देह व्यवसायिनी नही हैं, हर औरत अलग-अलग मर्दों की रखैल प्रेमिका के रूप में रहती है। उसी के दो कमरे बयालीस ईस्वी के दिसम्बर महीने मे हाथी बागान में बम गिरने के कारण खाली हो गये थे। दो औरतों को साथ लेकर उनके प्रेमी मुफस्सिल चले गये थे। इसी वर्ग की एक महिला ने एक कमरे को किराये पर ले लिया है। बाकी एक कमरा जो बच गया उसे शोभादी को बुला कर देते हुए मंजरी ने कहा, 'तुम यही रहो। वहाँ जितना किराया देती हो उतना ही मुझे देना, मेरा कमरा यों ही पड़ा है। तुम तो जानती ही हो कि हम जिसको-तिसको मकान किराये पर नही देते है।'

शोभा को आश्चर्य हुआ था। उसकी आँखों से आँसू लुढ़क पड़े थे। बहुत ही कष्ट के साथ बोली थी, 'तुम्हारे पति '.

मंजरी ने कहा था, 'उसी ने कहा है शोभादी। उसे सुनने में आया है कि तुमने नाडू बाबू की विधवा लड़की को पत्र लिखा है—'तुम्हें लेने में नफरत न हो तो मैं तुम्हे हर महीने दस रुपया भेज दिया करूँ'। उसे जब पता चला तो बोला, जानती हो, शोभादी को मैंने मन ही मन प्रणाम किया। तुम उसे यही एक कमरा दे दो और यही आकर रहने कहो।'

अब शोभादी मंजरी की हर वक्त की संगिनी के रूप में रहती है, मंजरी हाट-बाजार जहाँ कहीं जाती है, वह मंजरी के साथ रहती है। मंजरी की हर फरमाइश

पूरी करती रहती है। शोभा आज की पूजा की सामग्री खरीदने साथ में बाजार भी गयी थी और कालीघाट जाने के लिए साथ ही आयी है। शोभा स्नान कर रेशमी साड़ी पहने है। उम्र होने के बावजूद शोभा के बाल लम्बे-लम्बे हैं, अन्दर कुछ बाल पक जाने के बावजूद ऊपर से वैसा मालूम नहीं होता। चेहरे पर स्नो-पाउडर की हल्की छाप भी है। तब हाँ, मस्तक पर वह अब सिंदूर का टीका नहीं लगाती। मंजरी की वेश-भूषा पुजारिन जैसी है। लाल चौड़े किनारे की साड़ी, माथे पर सिंदूर का टीका, माँग में सिंदूर। मंजरी का चेहरा खासियत लिए हुए है, खड़ी नाक, बड़ी-बड़ी आँखें, छोटा-सा कपोल, सुडौल मुखड़ा, जिसमें किसी प्रकार की खोट नहीं—जिस चेहरे पर चिन्ता की हलकी सी छाया मँडराते ही लगता है जैसे स्वर्ग के सपने में डूबी हो या ध्यान-मग्न हो। लगता है, इस मुखड़े पर चंचलता की कोई छाप नहीं है, बड़ा ही शांत और गम्भीर है वह। आज उसके उसी मुखड़े पर अनायास ही पुजारिनी का संकल्प उभर आया है। शोभा के होठों में पान का रस है, मगर मंजरी के होंठ सूखे-सूखे जैसे दीख रहे हैं। उससे उसका वह स्वर्ग के सपने में डूबे हुए भाव की पवित्रता और भी अधिक स्पष्ट हो गयी है।

रीतू बाबू ने फुटपाथ पर खड़े होकर पूछा, 'किसमें बैठूँ ?'

शोभा एक टैक्सी की पिछली सीट पर अकेली ही है, उसकी बगल में पूजा की सामग्री सहेज कर रखी गयी है। सामने शिवनन्दन है। दूसरी टैक्सी में प्रोप्राइटर और गोरा बाबू हैं। मंजरी की गोद के झावे में भी कुछ सामग्रियाँ पड़ी हुई हैं।

शोभा बोली, 'किसमें बैठने की बात पैदा ही कहाँ होती ? इसी में बैठने की इजाजत मिले। बगल में बैठना बेमानी जैसा नहीं लगेगा। इसके अलावा'''।'

उसने धीमी आवाज में मजाक भी किया— वैसा मजाक जो कि खुले तौर पर न तो बोला जाता है और न ही पचाया जाता है।

पटमी की दीदी होने के कारण ही वह रीतू बाबू से मजाक करती है, वरना साधारण ऐक्ट्रेस रीतू बाबू को सम्मान की दृष्टि से देखती हैं, और उनसे डरी-डरी सी रहती हैं। अभिनेतागण उसे मास्टर साहब और बाबू कहते हैं, लड़कियाँ बड़े अभिनेताओं को बाबा और मास्टर साहब कहती हैं। शोभा दल की पुरानी और नामी अभिनेत्री है, उस पर मंजरी उसे साधारण अभिनेत्रियों से अधिक प्यार करती है। इसके अलावा शोभा स्वभाव से ही मजाकिया है, चाहे जो हो, वह छोड़ती किसी को नहीं। रीतू बाबू ने स्पष्ट शब्दों में उत्तर दिया, 'सिर्फ बेमानी लगने का भय नहीं है शोभा दी, रास्ते में कांस्टेबुल पकड़ ले लेगा। कहेगा : सरला अबला कुमारी को लेकर तू बुड्ढा भाग कहाँ रहा है ? पोती कहने से भी नहीं छोड़ेगा।'

शोभा बोली, 'धत्तेरी की ! ऐसा ही जवाब सुनना चाहती थी !'

गोरा बाबू ने कहा, 'इसी में चले आयें मास्टर साहब। गोपाल बाबू उसमें जाकर बैठ जायें। बातें करनी हैं।'

रीतू बाबू ने गोरा बाबू की टैक्सी में बैठ कर दो बार लम्बी साँसें ली और कहा, 'आज ड्राइ मॉनिङ्ग जैसा लगता है सर ?'

'क्या करूँ ? मंजरी ने पानी नहीं पिया है। यहाँ तक कि पान भी नहीं खाया है। लेकिन आपका अनुमान बिलकुल सही है।'

'लीजिये ! शेर की आँखें प्रखर होती है या नाक, देवता ?'

'हार मानता हूँ। नाक ही प्रखर होती है। यही वजह है कि टैक्सी में बैठते न बैठते आपने जोरों से साँस ली।'

टैक्सी चितपुर हैरिसन रोड के मोड पर आ कर खड़ी हुई। ट्रैफिक बन्द है। मंजरी बोली, 'आप कुछ दिनों तक लापता रहे, आये ही नहीं। इधर इन्होंने जो कुछ किया है, मेरी समझ में बिलकुल नहीं आ रहा है। किताब शुरू कर दी है, कॉमिक ऐक्टर ठीक कर लिया है। नया आदमी है, एमेच्योर थियेटर में काम करता है। सिनेमा में भी छोटा-मोटा पार्ट कर चुका है। उसने एक लड़की का पता बताया है। भले घर की कुमारी लड़की है। सुना है, नाचने-गाने में काफी शोहरत है। मैं क्या कहूँ, कुछ कहना चाहती हूँ तो गुस्से में आ जाते हैं। उस पर जब किताब लिखना शुरू करते हैं तो और ही तरह के हो जाते हैं। मैंने गोपाल मामा से कहा था, उन्होंने बताया कि वे विपिन को आपके घर दुबारा भेजेंगे। उसे भी आपके बारे में कुछ पता नहीं चल सका।'

रीतू बाबू हँस पड़ा, थोड़ा-बहुत लज्जित होने के भाव से ही। बोला, 'बिना पतवार की जिन्दगी का काण्ड भी अजीब हुआ करता है। ऐसा न होता तो खुद को जन्तु कहता ही क्यों ? एक जगह गया—पुराने जमाने के थियेटर का भूती घोपाल पकड़ कर ले गया। बोला : रीतू बहुत दिनों से मौज नहीं मनाया, चलो मौज मनायें। अभी-अभी लौट कर आये हो, अभी तुम्हारे पास पैसा है। मुझे बहुत अच्छी जगह का पता है। सम्मानित घर है। मैंने कहा : चलिये। गया तो लगातार तीन दिनों तक रुक गया। तीन दिन के बाद लौटने पर मूड बिगड़ गया। स्वयं ही अपने आपसे पूछा, यह क्या हो रहा है ? कभी लगता कि ठीक ही किया है और कभी मन छिः-छिः करने को होता था। दो दिन तक घर में पड़ा रहा, उसके बाद बाहर निकला। बीरभूम के तारापीठ पहले जाया करता था, तब हाँ, बहुत पहले। वहाँ चला गया। बड़ा ही पवित्र स्थान है, जाग्रत श्मशान। उस पर युद्ध के मन्वन्तर के कारण पूरे मुल्क में महामारी फैल गयी है। डेढ़-दो मील तक मसान में मुर्दे ही मुर्दे नजर आ रहे थे। उन्हीं के बीच एक पगला साधु मिल गया। लगा, सिद्ध पुरुष है। बस जम कर, बैठ गया। कहा : तुम्हारे चरणों को नहीं छोड़ूँगा बाबा। साधु ने कहा : रहो। रह गया सात दिनों तक। साधु बेशुमार गाँजे और शराब का सेवन करता है। उतना बरदाश्त नहीं हुआ और उस पर कष्ट की भी कोई सीमा नहीं—यात्रा-दल के छोटे आसामियों से भी कष्ट। आखिरकार उठ कर चल दिया। याद आया, तीन दिन बाद रथयात्रा है। मंजरी ऑपेरा की यात्रा शुरू होने वाली। परसों लौट कर आया

हूँ। कल सोया रहा—बदन—हाथ साफ किया, साबुन-स्नो लगाया। आज गोल्डन मून होकर उदित हुआ हूँ।'

मंजरी बोली, 'साधु कैसा मालूम हुआ ?'

गोरा बाबू हँस दिया, 'एकबारगी सिद्ध पुरुष। चावल देने से भात बनाना तो मामूली बात है, भात को चावल बना देता है। चलोगी ?'

मंजरी की पेशानी पर बल पड़ गये। बोली, 'जाऊँगी तो तुम्हें अपने साथ जाने को नहीं कहूँगी। साधु किस प्रकार के हैं मास्टर साहब ?'

रीतू बाबू बोला, 'आदमी के लिहाज से अच्छे हैं। सब हाँ, सिद्ध-विद्ध नहीं हैं। उसने स्वयं भी बताया। बातचीत सलीके से करते हैं। मन भी अच्छा है ? मैंने अपने बारे में सब कुछ बताया तो बोले : अरे बाबा, जिससे मन खराब हो, तन खराब हो और जिससे दूसरे को दुःख पहुँचे, वही पाप है। इसके अलावा पाप नहीं है। और जिससे परम आनन्द की प्राप्ति हो, वही पुण्य है। बस, इतना ही जान लो।'

गोरा बाबू बोला, 'तो फिर उसे अच्छा आदमी ही कहा जायेगा। यानी निरीह साधु।'

मंजरी बोली, 'साधु बाबा का भाग्य सराहनीय कहा जा सकता है।'

गोरा बाबू बोला, 'साधुओं के बाबा नहीं हुआ करते, यह जानती हो न ?'

मंजरी बोली, 'नहीं। वे लोग आसमान से टपकते हैं।'

'नाम-धाम, घर-गृहस्थी, सगे सम्बन्धी, वंश-कुल, इहलोक-परलोक, जात-धर्म, जनेऊ-कंठी इत्यादि होम की अग्नि में जलाना पड़ता है या फिर गंगाजल में फेंक देना पड़ता है। बहुत कुछ मेरी ही तरह—'

'क्या बोले ?'

'बोला यही कि तुम्हीं मेरे लिए संन्यास हो।'

'संन्यास को ऐसी-वैसी और मेरी भी वैसी तैसी। संन्यास छोड़ तो सकते हो !'

अबकी गोरा बाबू ने गम्भीर हो कर गम्भीर स्वर में कहा, 'छोड़ने के लिए स्वीकार नहीं किया है मंजरी। जो कुछ मिलने को है, तुम्हीं में मिलेगा।'

मंजरी के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कराहट तिर आयी। अकारण ही सिर के घूंघट को जरा खींच कर बोली, 'छोड़ो यह सब बात। अब मास्टर साहब से अपने कॉमिक ऐक्टर और कुमारी नायिका के बारे में बातें करो।'

टैक्सी तब धर्मतल्ला पार कर चौरंगी पहुँच चुकी थी। रीतू बाबू उदास निगाहों से सामने की ओर ताक रहा है लेकिन उसके होंठों पर मुस्कराहट की एक हल्की रेखा तैर रही है। उसे इन दो प्राणियों के सुखी जीवन की बातें याद आ रही हैं। साथ ही गोरा बाबू के आखिरी शब्द याद आ रहे हैं—छोड़ने के लिए स्वीकार नहीं किया है मंजरी जो कुछ मिलने को है, तुम्हीं में मिलेगा। इसी तरह की बातें वह भी पटली बाप से कहा करता था। उसी बात को याद कर मुस्कराहट तिर आई है। आयी

ओर टाइगर सिनेहा के उत्तरी किनारे पर विलायती शराब की दुकान है। पिच बोर्ड की बनी जानीवाकर की बड़ी सी तस्वीर मानो कौतूहल और आदर के साथ पुकार रही है। रीतू बाबू के जी में हुआ कि अभी तुरन्त नीचे उतर कर किसी बार के अन्दर घुस जाये।

गोरा बाबू अपनी नयी खोज की कहानी बताये जा रहा है।

'उस युवक को आप देखिएगा मास्टर साहब। बातचीत करने पर मालूम हो जायेगा। यंगमैन है, छब्बीस-सत्ताईस साल का। पढा-लिखा है। नाम है भवेन बोस—लेकिन अपने पुकारू नाम को नाम के तौर पर रखा है। बाबुल बोस के नाम से ही जाना जाता है। कुछ ही दिनों के दरमियान सिनेमा मे नाम कमा लिया है। स्टूडियो में ही मुझसे जान-पहचान हुई। महाशक्ति सिनेमा में मुझे निशुम्भ का पार्ट दिया गया था। उसका छोटा-सा एक पार्ट था। जान-पहचान हुई। बातचीत के दौरान उसने बताया कि एमेच्योर में कॉमिक पार्ट करता रहा है। पब्लिक थियेटर में प्रवेश पाने की इच्छा है, मगर वैसा हो नहीं सका। पहले तो मुझसे बातें ही नहीं की। बगल में बैठ कर और-और लोगों से बातें कर रहा था, लेकिन मुझसे बातें नहीं की। सत्य सिंही ने गौर किया तो कहा: यह क्या? आप लोग एक-दूसरे से परिचित नहीं है? आप है विजय चौधरी, गोरा बाबू—यात्रा-दल के, और आप है बाबुल बोस। युवक ने नमस्कार करने के बाद कहा: यात्रा-दल की ऐक्टिंग पहले जमाने की है, मुझे अच्छी नहीं लगती। इसीलिए जान-पहचान नहीं की थी। मैंने कहा: आप लोगों की ऐक्टिंग मुझे अच्छी लगती है। युवक ने कहा: लगेगी ही। हम लोग मॉडर्न है। यह कह कर वह मुड कर बैठ गया। उसके बाद मेरे दो शॉट हुये। एक शॉट में था कि निशुम्भ महामाया का रूप देख कर मोहित हो गया है। अपलक ताक रहा है। चार ही शब्द बोलता है—यह कैसा अपरूप रूप! महामाया हँस कर कहती है: इस रूप के अन्तराल मे तुम्हे और एक रूप दिखायी नही पड़ रहा है, जानवर कहीं के? मृत्यु का रूप? शॉट की समाप्ति यही होती है। युवक देख कर बोल उठा. गुड, गुड, गुड। उसके बाद वाले शॉट में महामाया सामने नहीं है, उसके बदले मृत्यु रूपधारिणी कालरात्रि आयी है। काले बुर्के जैसा अल्खालुक धारण किये उसका चेहरा घनी केशराशि से ढँका है। कालरात्रि का मेकअप अच्छी तरह किया गया था, लाइटिंग भी अच्छी थी। अँधेरे में नीले फ्लैश में उसकी मूर्ति दीख रही है। देख कर निशुम्भ झिहुँक उठता है और दो पग पीछे हट जाता है, उसके बाद अपलक देखता रहता है और उसकी आँखों में प्रबल मोह उतर आता है। कालरात्रि खिलखिला कर हँसती है। इस पर निशुम्भ सुध-बुध खो कर दौड़ता हुआ जाता है और कहता है: हे विचित्र रूपसी, यह तो और भी अधिक अपरूप है! यह कैसा अमृत रूप है! अहा हा! वहीं शूल से विद्ध होकर निशुम्भ गिर पड़ता है। अच्छा हुआ। सबने तारीफ की। सबके बाद वह आया। मेकअप पोंछ चुका था। आकर मेरी बगल मे बैठा, मैंने कोई बातचीत नही की। युवक ने पॉकेट से एक कागज निकाल कर झटाझट कुछ लिख कर मेरे हाथ में दिया: लीजिए सर। देखने पर कुछ

आया। पूछा, यह सब क्या है? बोला : एक हिसाब है। पढ़िये, अच्छा दीजिये, मैं पढ़ता हूँ। मार्वलस प्लस वंडरफुल। आप का आज का परफॉर्मेन्स प्लस माइनेस माई ओल्ड अपिनियन—यानी मैंने जो कुछ कहा है उसे वियड्रा कर रहा हूँ, इज इक्वल टु आप बड़े और सचमुच ही मॉडर्न ऐक्टर प्लस आइ एम ए फूल। यानी आइ एम सॉरी बस कागज देकर एबाउट टर्न। मैंने हाथ पकड़ कर कहा, हिसाब में गलती है। उस पर मुड़ कर खड़ा हो गया, बोला, नेवर। मैं हिसाब में बहुत स्ट्रांग हूँ। मैंने कहा : दिखा देता हूँ। कलम दीजिये। यह कह कर 'आइ एम ए फूल' काट कर मैंने लिख दिया—आइ एम ऑलसो ए वेरी गुड कॉमिक ऐक्टर। आइ प्लेड दि पार्ट ऑफ ए फूल। उस पर उसने हँस कर कहा : थैंक्यू सर। येस, मेरे हिसाब से गलती थी। तब हाँ, आपने भी थोड़ी-बहुत गलती की है। 'आइ प्लेड दि पार्ट ऑफ ए फूल' सही नहीं है। सही है कि दोपहर के सूरज की तुलना में दोपहर का बालूचर जिस प्रकार अधिक तपा रहता है उसी नियम के अनुसार जवानी की अपेक्षा जवानी का अहंकार अधिक तेज होता है। वह युवक वंडरफुल है रोतू बाबू।'

मंजरी ने कहा, 'बेशक। तुम्हें जब इतनी अच्छी बातें कही हैं तो जरूर है।'

गोरा बाबू बोला, 'चिकोटी काटना औरतों का स्वभाव होता है। तुम्हें उसका 'गुणोमन' का पार्ट नहीं दिखाया था? तुमने अच्छा नहीं कहा था?'

'यही तो अब भी कहती हूँ।'

'कहाँ देखा था?'

'खुद ही निमन्त्रित कर गया था। एक एमेच्योर में पार्ट किया था, रंगमहल में। हम लोगों को कार्ड भेजा था।'

'रख लीजिए। उसके बारे में और क्या कहना। नये पन की चमक है उसमें, रम गया तो कामयाब हो जायेगा। मगर यात्रा-दल में आयेगा तो?'

'आयेगा। मुझसे कहा है। आज शाम को आयेगा।'

'वेरी गुड। लेकिन माल-वाल पीता है न?'

मंजरी बोली, 'लगता है, उसके बिना आप लोगों का काम नहीं चल सकता?'

'क्यों नहीं चलेगा? तब हाँ, टिक नहीं सकेगा। दीजिए सर, सिगरेट दीजिये। सवेरे से मुर्गा बाजार चल रहा है, उस पर बातचीत में ऐसा मशगूल हो गया कि सिगरेट तक की याद न रही।'

मन्दिर आ गया। 'सावधानी से पार करें जी, रथयात्रा के मेले की भीड़ है।' मरके मट्ठू और मार्बल की तरह भाग-दौड़ रहे हैं। उस पर पेड़ और डिस्पोजल माल [illegible] मेला मानो बाजार का पैदा है ना सावधानी से।

गाड़ी उल्टडांगा पार कर दाहिनी ओर के रास्ते पर मुड़ गयी। रथ के मेले [illegible] दोनों तरफ बाजार लग गया है। एक तो कार्पोपाट, उस पर १९४४ई०। माड़ और रथ के लिए जो यात्री दल बांध कर कलकत्ता आये थे, वे झुण्ड के झुण्ड फुटपाथ पर

मौत के मुँह में समा चुके हैं। लेकिन जो लोग बच-खुच गये हैं वे फिर लौट कर नहीं गये। कालीघाट उनके अड्डे की एक बहुत बड़ी आढ़त है। दो अदद टैक्सियों से गोरा बाबू और मंजरी जैसे ख़ूबसूरत संपन्न दम्पति तथा उनके साथ रीतू बाबू जैसे डील-डौल काठी के व्यक्ति को उतरते देख चारो तरफ से घेर लिया और कहने लगे, 'राजा बाबू, रानी माँ—'

गोरा बाबू ने चट से उँगली से इशारा करते हुए कहा, 'ये बड़े बाबू मेरे भैया हैं—उन्हीं के पास जाओ। उनका हुक्म होते ही वह मैनेजर—वही जिनका सिर गंजा है।'

गोपाल घोष का गंजा सिर अषाढ़ के प्रथम पहर की धूप में चमक रहा था।

मंजरी बोली, 'दूँगी। पहले पूजा करके आने दो। देना तो है ही। शुभ कार्य होगा। और तुम लोग खुश नहीं होगे तो माँ भी खुश नहीं होंगी। दूँगी। गोपाल मामा, दस बारह रुपया तुड़ा लेना है। इन सब मामले में किसी प्रकार की त्रुटि रखने से पूजा नहीं होती है।'

किसी तरह की कोई त्रुटि नहीं हुई। वापस आने के वक्त रीतू बाबू के लिए शिवनन्दन जानीवाकर भी ख़रीद ले आया।

तीन

तीसरे पहर नया खाता खोला गया। उस पर सिन्दूर से स्वस्तिक बनाया गया और नाम लिखा गया—मंजरी ऑपेरा। सन् १६४४-४५, बंगला तिथि १३५१-५२। शुभ मुहूर्त रथयात्रा दिवस—११ आषाढ़। मालिक : श्रीमती मंजरी देवी, कोष्ठ में चौधरी, मूल पता - नम्बर व्रजदास लेन, ऑफिस—नम्बर चितपुर रोड, कोष्ठ में चितपुर ग्रे स्ट्रीट जंक्शन।

मैनेजर श्री विजय चौधरी, असिस्टेन्ट मैनेजर श्री गोपाल घोष उसके बाद ही प्रथम पृष्ठ पर पहला नाम, श्री रीतेन बोस – रीतू बाबू, मासिक वेतन—गोपाल ने कलम रोक कर कहा, 'कितना लिखूं मास्टर साहब ? पिछली बार एक सौ था, वही रहने दूँ ?'

'रहने दीजिये ! जरूरत पड़ेगी तो पेशगी ले लूंगा।' रीतू बाबू हँ

'नहीं।' गोरा बाबू ने दो उँगलियाँ दिखायीं।

बगल की कुर्सी पर बैठते हुए मंजरी ने चेहरे पर हँसी लाकर हामी भरी, 'हाँ।'

गोरा बाबू बोला,'अब—लिखो मंजरी देवी—

शोभा हँस कर बोली, 'हाँ उसके बाद गोरा बाबू श्री विजय चौधरी। लिखो।'

'जरूर। वैसा न होगा तो हिसाब ठीक नही रहेगा। यात्रा-दल में कितना मुनाफा हुआ यह तो समझना होगा। खटने की कीमत मुनाफा नही है। लिखो।'

'शोभा रानी दासी, गोपालीबाला दासी—अरे नाड़ू बाबू कहाँ है ?'

शोभा की बगल मे ही गोपाली बैठी थी। उसने कहा, 'वह देश से वापस नहीं आया है।'

गोरा बाबू बोला, 'ठीक है, नाड़ू बाबू समय पर आ जायेंगे। नाम लिखिये।'

मंजरी बोली, 'क्या गोपाली ? देखो भई'—

शोभा देह मटकाती हुई बोली, 'हाँ, देख लो कि कहीं बैल पगहा तुड़ा कर भाग तो नही गया।'

गोपाली हँस कर बोली, 'बैल पगहा तुड़ा कर भागेगा ? क्यों शोभादी ?'

'चूँची के मामले मे तुड़ा कर नही भागा था ?'

'वह पगहा तुड़ाकर नही भागा था, पगहा अपने आप खुल गया था।'

'सो तो सही है।'

'रीतू बाबू अपने कान मे कबूतर का पंख घुमा-फिरा रहा था। बोला, 'ठीक है। गोपाली के मामले में बैल भी है और गिरह भी। तब हाँ, बात क्या है, जानती हो ? गोपाली का पगहा जरा लम्बा है, इसीलिए नाड़ू गुलामी का पट्टा लिख कर गया है। नाड़ू गृहस्थ आदमी है, पत्नी और बाल-बच्चों को भूला नहीं है। गृहस्थी चला रहा है। आयेगा।'

गोपाल बोला, 'खेती-बारी। मास्टर साहब वह फसल उगा रहा है। अजीब आदमी है यह। कौड़ी-कौड़ी का हिसाब रखता है। आपको तो मालूम ही है कि नाड़ू बाबू सिगरेट नहीं पीता। मगर लेने के वक्त दो पैकेट सिगरेट अवश्य ही लेगा। जमा करता है और जो लोग ज्यादा सिगरेट पीते हैं उनके हाथ बेच देता है। जहाँ पर सिगरेट मिलती है वहाँ एक पैसा कम कीमत लेता है और जहाँ सिगरेट नहीं मिलती है वहाँ नाड़ू बाबू दो पैसा अधिक चार्ज करता है।'

गोपाली बोली, 'क्या करे, घर पर बाल-बच्चे हैं। आमदनी कम है और कुनबा बड़ा।'

गोरा बाबू बोला, 'लिखिये, नाम लिखिये। नाड़ू बाबू का वेतन पाँच रुपया, गोपाली का चार रुपया बढ़ा दिया जाता है। ठीक है न गोपाली ?'

'हाँ लिखिये।'

उसके बाद बंगी और आशा।

बंसी आबनूस की तरह काला, लम्बाकार छरहरा [illegible] गठन मुर। मांग को बड़े करीने से काढ़ता है वह। बंसी [illegible] पर बोतल रख, पानी से भरा गिलास रख [illegible] शाम में नाच-घर कमाता था। संगिनी और प्रेमिका आशा [illegible] है। बंसी का पहला नाम था हब्शी बंसी, उसके उस रंग के कारण। जिन्दगी की शुरूआत उसने किराये के डांसिंग बैंड के नर्तक के रूप में की थी। पहले का स्वर औरतों जैसा था। राह-घाट में मारे-मारे फिरने वाला लड़का था वह। उस डांसिंग मास्टर ने ही उसे अपने पास रख कर आदमी बनाया था। लोग बाग उसकी जात और रिश्ते के बारे में बहुतेरी बातें करते हैं। बचपन से सुनते-सुनते बरदाश्त करने का अभ्यस्त हो गया है। लिखना-पढ़ना ठीक से नहीं जानता है, हिज्जे लगा कर पढ़ता है और किसी तरह दस्तखत कर लेता है। मगर है बड़ा ही शौकीन। कपड़ा-लत्ता, जूते करीने से पहनता है। सबसे ज्यादा सजावट रहती है उसकी मांग की। हर वक्त उसकी जेब में बीड़ी की तरह शराब की बोतल भी रहती है। रूमाल न रहने पर भी बंसी मास्टर का काम चल जाता है, कुर्ता या धोती की चुनट से मुंह पोंछ लेता है (आजकल चुनट नहीं रहती है, क्योंकि पाजामा पहनता है और जब धोती पहनता है तो चुनट विहीन आधुनिक अफगानी पाजामे की तरह पहनता है) मगर बोतल न रहे तो उसका काम नहीं चलता। आज भी वह नये दफ्तर में आने से लेकर अब तक दो-चार दफे बाहर गया है और पी आया है। आशा उसके उपयुक्त संगिनी है—आशा सुन्दरी नहीं है, उम्रदार भी हो चुकी है, भरसक पैंतीस साल से ज्यादा की। मगर छरहरे दुबले-पतले जिस्म की वजह से उसकी उम्र का पता नहीं चलता है। रंग-रोगन लगाती है तो सत्रह साल की युवती जैसी दीखती है। कब किस सन में उन दोनों में मुलाकात हुई थी, यह बात सिर्फ उन्हीं दोनों को मालूम है। लोग-बाग तरह-तरह की बातें करते हैं। कुछ लोग कहते हैं, आशा बस्ती में रहती थी। तब वह [illegible] थी। बंसी से शुभ लग्न में उसकी मुलाकात हुई थी, उसके बाद जब भी मौका मिलता बंसी चोरी-चोरी उसके घर पर जाता था। लेकिन उस घर में सिर्फ आशा का ही डेरा नहीं था, बस्ती का एक शेर भी वहां वास करता था। यानी बस्ती का एक शेर बीच-बीच में वहां आकर डेरा-डन्डा डालता था। जब तक बस्ती में उसका डेरा रहता था तब तक बस्ती के सामने की पान-बीड़ी की दुकान के छोकरे और उस शेर के शागिर्द के अलावा कोई घुस नहीं सकता था। पुलिस आती तो पान की दुकान का छोकरा बाहर से सिगनल दे देता और सिगनल के इशारे से शेर भाग जाता। पुलिस के अलावा कोई दूसरा आदमी आता तो दुकान का छोकरा उसे सावधान कर देता- मत जाओ भैया। वहां शेर है। बंसी को भी उसने सावधान कर दिया था मत जाना शेर है। आज सवेरे आया है। अभी दो-चार दिन इधर मत आओ। लेकिन उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। चाहे शेर हो या भालू या सांप, आशा वह देखेगा ही। झगड़ा-टन्टा नहीं करेगा। [illegible]

दोस्त हो। तुम भी रहो और मैं भी एक किनारे पड़ा रहूँगा। गीत सुनाऊँगा, नाच दिखाऊँगा। देखना, कैसा रंग ला देता हूँ। लेकिन शेर शेर ही होता है। वह नही माना और पंजे से आक्रमण कर दिया। बंसी जब थप्पड़-मुक्के-घूसे से भयभीत नही हुआ, गाली-गलौज की भी उसने परवाह न की तो उसने छुरे से वार किया और एक ही लम्हे के अन्दर बस्ती से गायब हो गया। बंसी गिर पड़ा था। मर जाने की ही बात थी, मगर आशा ने उसे जिन्दा रखा था। स्थान और पात्र की दृष्टि से बस्ती मे वास करने वाली आशा को घायल बंसी को घर से बाहर निकाल देना चाहिए था और अपना दरवाजा बन्द कर लेना चाहिए था। लेकिन उसने वैसा नही किया। बंसी दरवाजे के बाहर गली मे पड़ा हुआ था। वहाँ से उठा कर घर के अन्दर ले आयी, डाक्टर से दिखाया, दवा-दारू का इन्तजाम किया और खुद भी बिना सुस्ताये उसकी सेवा की। पुलिस केस चला था और बंसी ने उस केस मे बयान दिया था कि जिसने उस पर छुरा चलाया था उसे वह पहचानता नही है। वह आशा के घर से बाहर नही निकला था, बल्कि उधर से आ रहा था। शेर साँड़ जैसा ताकतवर आदमी था। बंसी ने बताया था, वह आदमी दुबला-पतला था। अचानक कहा, पैसा निकालो। उसने नही दिया। उसका बायाँ हाथ बंसी ने कस कर पकड़ लिया था। उसने झट से दाहिने हाथ से छुरा निकाल कर चलाया और चलता बना। गली मे पड़ा-पड़ा वह चिल्ला रहा था। लोगों ने अपने-अपने दरवाजे बन्द कर लिये थे। मगर आशा अपने घर का दरवाजा खोल कर आयी थी, उसे उठा कर ले गयी थी और उसकी जान बचायी थी। लिहाजा मुकद्दमे की बात दब गयी थी। उसके दूसरे ही दिन बंसी आशा को अपने डेरे पर ले आया था। वह भी बस्ती ही थी परन्तु जरा ऊँचे स्तर की। तब हाँ, उत्तर से बिल्कुल दक्षिण ले आया था। सर्कुलर रोड के किनारे के तेल की मशीनों के इलाके की बस्ती से कालीघाट के गंगा के किनारे ईंट और सुर्खी की मशीनों के इलाके मे। उस इलाके मे बंसी मास्टर का नाम यश था। गुण्डे की हैसियत से नही मास्टर की हैसियत से। हाजरा मोड़ के महतरों के नुक्कड़ के पक्के मकान से लेकर पटो मुहल्ले की बस्ती तक बंसी मास्टर की बहुत-सी छात्राएँ थीं—वे उससे नाच-गाना सीखती थीं। सिर्फ उनके घर मे ही नही, कालीघाट के दो-तीन एमेच्योर यात्रा-दल में भी बंसी पुरगत के वक्त मास्टरी कर आया था। वहीं उसका किराये का मकान था। आशा को भी उसने नाच-गाना दोनों की तालीम दी थी। तब वह श्रीधर दिग्विजय यात्रा पार्टी मे डांसिंग मास्टर था। सखियों के दल के छोकरों को तालीम देना और खुद भी बीच-बीच में कभी व्याधा, कभी लोटन कबूतर का वेश धारण कर मंच पर उतरना और कभी सियारकाँ का वेश धारण कर नाच जाता था। कभी सती दल के बड़े और सबसे अधिक कुशल नर्तक बालक के साथ ड्यूयेट नृत्य करता था। उन दिनों आजकल की तरह छोटे-मोटे नृत्य-नाट्य का प्रचलन नही था। नाच के साथ-साथ गाना भी रहता था। इन सब चीजों में बंसी मास्टर को काफी नाम-यश प्राप्त हुआ था। अच्छी आमदनी भी होती थी। उन दिनों वेतन था साठ रुपया, एक

पैकेट सिगरेट, एक बण्डल बीड़ी, एक दियासलाई और राज की खुराकी के तौर पर आठ आने मिलते थे। नौकरी छोड़ नहीं सका था। आशा ने भी छोड़ने नहीं दिया था। नौकरी सिर्फ पैसे के लिए नहीं करता था—यह बात भले ही और लोग मानने को तैयार न हों, मगर बंसी मानता था, उसके अन्तर्यामी और आशा को मालूम थी। यात्रा-दल का डांसिंग मास्टर—इससे बड़ी ख्याति उसे कहाँ मिल सकती है? लावारिस बालक होने के बावजूद उसका परिचय सभी को मालूम है। उसकी माँ सुन्दरवन अंचल से भीख माँगने आयी थी। अछूत – जिसे अंत्यज कहते हैं, उसी की वह अजान लड़की थी। उसके बाद यहीं किसी पुल के नीचे जन्म लिया था। उसके बदन का रंग इसका गवाह है। यात्रा-दल में प्रवेश करने के बावजूद खाना खाने के वक्त वह एक किनारे बैठता है मगर मजलिस में डांसिंग मास्टर रहने के कारण उसे सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, वहाँ वह बैठ सकता है। छोटी सखियों के दल के लड़के उसे मास्टर साहब कहते हैं। जिन्हें उसकी जात का पता नहीं है वे उसके पैरों का स्पर्श करने आते हैं। इसके अलावा अभिनय की रातें आश्चर्यजनक सपनों की रातें हुआ करती हैं। वे सपने अब तक पुराने नहीं हुए हैं – दुःस्वप्न जैसे मालूम नहीं होते हैं। इसे क्या छोड़ा जा सकता है? आशा को घर पर रख कर दो महीने का मकान-किराया देते हुए उसने कहा था कि वह चली न जाये। 'मकान का किराया दिये जाता हूँ। तुम्हें नाच-गाना सिखाया है, तुम्हारे चेहरे में भी लावण्य है। तुम्हारे दिन चाहे सुख से न बीतें मगर दुःख भी नहीं होगा। बस इतनी ही बात ध्यान में रखना कि किसी के बन्धन में बँध कर चली मत जाना। दल से लौटने के बाद तुम्हें पा सकूँ, यही चाहता हूँ।'

आशा ने उस वायदे को निभाया था। वह कोई सती-साध्वी नहीं है। है वह देह व्यवसायिनी और बंसी जैसा ही उसके जीवन का इतिहास है। वह भी छोटी जात की औरत है। तब हाँ, उसके माँ-बाप की कोई एक जात थी, गृहस्थी थी, समाज था। देहात की लड़की है, देहात में शादी हुई थी। देखने में वह हमेशा किशोरी लड़की जैसी लगती है—रंग था गोरा, उस पर चेहरे पर एक प्रकार का लावण्य था। देहात से पति के साथ कल-कारखाने में काम करने गयी थी। वहाँ से उसका पति एक औरत को लेकर भाग गया। अनाथिन आशा को सुख का लोभ दिया कर एक आदमी उसे कलकत्ते की बाग बाजार नहर के किनारे की एक बस्ती में ले आया और वहाँ से उसकी खूबसूरती के जोर पर सर्कुलर रोड की बस्ती में। वहाँ देह के व्यापार में रात-दिन में कोई फर्क नहीं रहता था। लेकिन यह इसकी आदी हो चुकी थी। इस दुनिया का यही नियम है, इस धारणा ने उसके हृदय में अपने लिए स्थान बना लिया था। लगता भी उसे अच्छा ही था। इश्क-मुहब्बत या घर-गृहस्थी के बारे में वह कोई कल्पना नहीं करती थी। सिर्फ एक ही कल्पना।—और वह थी अपनी जिन्दगी की सरहद की अलकापुरी के बारे में। शोभा सजा-सँवरा मकान मिल सके, यही साध भी रही। सोनागाछी।

फिरने के बहाने देख आयी थी और उसे वह स्थान स्वप्नपुरी जैसा लगा था। इसके अलावा उसे कोई दूसरी साध न थी—और कोई दूसरी चीज साध की हो सकती है, उसकी धारणा इस प्रकार की न थी। एकाएक उसके जीवन में वंसी मास्टर का आगमन हुआ। आश्चर्यजनक आदमी है। वंसी मास्टर ने गाना गाया। जेब से बाँस की छोटी सी बाँसुरी निकाल, बजा कर दिखाया, गीत गा कर और पाँवों में घुँघरू बाँध कर नाचते हुए उसके उस झनकते हुए घर में स्वप्न लोक का स्वर गुँजा कर उसे अभिभूत कर दिया था। दूसरे घर की औरतों ने अवाक् होकर सुना था। दूसरे दिन अच्छी-बुरी तरह-तरह की बातों के दौरान आशा ने पुलकित हृदय से महसूस किया था कि कल की रात के उसके सौभाग्य के कारण सभी ईर्ष्या से जल उठी थी। वह उस काले आदमी की राह में आँखें बिछाये बैठी थी। शाम को वह आया भी था। इसी तरह दिन पर दिन लुढ़कते रहने के बाद एक दिन शेर आया और उसके घर के अन्दर घुसा। आशा ने ही पान की दुकान के उस छोकरे से कह रखा था कि तू उसे मना कर देना। समझा कर कहना। उसे आठ आना दिया भी था। फिर भी वह आया। छुरे का वार झेला। सेवा कर स्वस्थ बनाने के सिलसिले में आशा का प्रेम उसके प्रति और अधिक उमड़ आया।

इस प्यार का स्वाद ही अलग किस्म का होता है, सेवा कर आदमी की जान बचाने से उस पर अपना एकान्त अधिकार प्राप्त हो जाता है और आवेग का अनुभव होता है। उसके बाद वंसी उसे लेकर कालीघाट चला आया और अपने घर में गृहस्थी बसायी। उसे नाच-गाना सिखा कर एक नयी जात की श्रेणी में ले आया। नया रूप दिया उसे, आशा जैसे उसके हाथ में बिक गयी। इसलिए वंसी यात्रा-दल का डांसिंग मास्टर बन बाहर जाता तो जिस्म का व्यापार कर रोजी-रोटी चलाने के बावजूद वह उसकी बाट जोहती रहती थी। एक बार आशा ने कहा था—देखो, अब मैं वह काम नहीं करूँगी। सोच रही हूँ, अच्छा घर देख कर नौकरानी का काम करूँगी।'

वंसी ने कहा था : 'नहीं-नहीं। नौकरानी का काम क्यों करोगी? नहीं-नहीं।'

'उससे मेरा मान-सम्मान बढ़ेगा। सम्मान में बट्टा नहीं लगेगा।'

'उहुँ। नाच-गाना भूल जाओगी। उहुँ वैसा नहीं हो सकता। मुझसे वह बरदाश्त नहीं होगा।'

इसी समय, पाँच वर्ष पूर्व, मंजरी आँगिरा ने महिला यात्रा-दल की शुरूआत की। खबर मिलते ही वंसी दौड़ा-दौड़ा गया और आशा के साथ खुद भी मुलाजिम होकर लौट आया। आशा ने कहा, 'बस, मन ही मन जिस चीज की चाह थी, मिल गयी। दोनों को एक साथ नौकरी मिल गयी है। दोनों मिल कर नाचेंगे डांसिङ्ग आँगिरा।'

वंसी व्याधा का वेश धारण करता है, आशा व्याधिनी का। वंसी लोटन कबूतर का वेश धारण करता है, आशा मादा लोटन कबूतर का। वंसी चन्दा का वेश धारण

करता है, आशा बाँदी का। बंसी ख्वाजे का, आशा ख्वानिनी का। बंसी को ही इन चीज़ों का आविष्कार करना पड़ा है। यात्रा के अभिनय में सखी दल का गाना होता है। उसके बाद हर अंक के विराम पर कनसर्ट बजने के बाद ही इसी तरह का एक नृत्य-गीत होता है। मंजरी ऑपेरा के प्रथम वर्ष में बंसी मास्टर आशा के साथ पहला नाच नाचा था—अलीबाबा के वन्दा और बाँदी का नृत्य-गीत।

बादशाह बन मैं हूँ आया—बाँदी, तू बन जा बेगम
बादशाह बेगम मिल नाचें छम छमा, छम, छम छमा छम

उन लोगों ने सचमुच ही घुंघरू की आवाज से छमाछम का समा बांध दिया था। जमींदार की हवेली की पुरानी दरी की धूल ने उड़ कर पूरी मजलिस को पैट्रोमैक्स की उजली रोशनी में कुहरे जैसे आवरण से ढँक दिया था।

इतने ज़ोर से चक्कर काटा था कि मजलिस से बाहर होने के वक्त अनभ्यस्त आशा पछाड़ खाने जैसी भंगिमा में आ गयी थी। मंजा हुआ नर्तक बंसी उसे थाम न लेता तो वह गिर गयी होती। मजलिस से बाहर निकल वेश-मंदिर में आते ही गोरा बाबू ने कहा था, 'बहुत ही अच्छा!'

रीनू बाबू से बंसी बहुत दिनों से परिचित था। रीनू बाबू ने जब यात्रा में प्रवेश किया था, बंसी तब किशोर बालक था। उस समय भी वह लड़की का वेश धारण कर नाचता था। रीनू बाबू बंसी को तू कह कर सम्बोधित करता है। रीनू बाबू ने बंसी को पुकारा था, 'बंसी सुन जा!' बंसी जैसे ही उनके पास पहुँचा, उसके हाथ में गिलास थमाते हुए कहा था: 'ले, पी जा।'

बंसी शरमा गया था। यात्रा-दल में सौ में नब्बे आदमी शराब पीते हैं। बंसी की तो बात ही क्या! वह सुबह से शुरू करता है। चाहे यात्रा-दल के बीच हो या फिर छुट्टी के समय घर पर हो, वह सवेरे जग कर ही एक डोज पी लेता है। उसके बाद उसका सुरूर कम होते ही दूसरा दौर चल जाता है। नहाने के पहले एक डोज। खा-पीकर लंबी नींद लेने के बाद फिर एक डोज़। शाम के बाद डोज पर डोज का दौर तब तक चलता है जब तक कि नींद न आ जाये। अभिनय के वक्त की बात कहना ही क्या। शुरू से आखिर तक दौर चलता रहता है। आशा को भी उसने पीना सिखा दिया है। लेकिन रीनू बाबू यात्रादल के सम्मानित व्यक्ति, मास्टर साहब ठहरे, बाप-दादा से भी बढ़ कर गुरुजन। वह सामने पड़ जाता है तो बोतल-गिलास छिपा लेता है। वहीं रीनू बाबू हाथ में गिलास थमाने लगा तो बहुत ही लज्जा का अनुभव हुआ था। लेकिन इससे बढ़ कर सम्मान दूसरा क्या हो सकता है? वह [illegible] बाबू के चरणों की धूल लेकर जरा अलग हट जाने की चेष्टा कर रहा [illegible] बाबू ने कहा, 'नहीं बेटे, मेरे सामने ही पी। छिप कर तो तू अपनी [illegible] है। मैंने सामने पीने को दी है, पी ले।'

गिलास ऊपर उठा कर उसके अन्दर की शराब को अलग से

था। रीतू बाबू कायस्थ हैं, वह अंत्यज। उनका गिलास वह कहीं जूठा कर सकता है?

सिर्फ शराब ही नहीं, शराब खत्म होते ही गोरा बाबू ने उसे सिगरेट दी थी, 'लो, पियो।'

बंसी को कृतार्थता का अनुभव हुआ था। यात्रा-दल तब भी एक विचित्र क्षेत्र था। एक तरह से वह जगन्नाथ क्षेत्र भी और दूसरी तरह से स्मृति-तीर्थ का अड्डा भी। यात्रा के अभिनय के दौरान अज्ञात जाति-कुल बंसी सम्मानित व्यक्ति डांसिंग मास्टर हो जाता है, वेश मन्दिर में उसके सजने-सँवरने का स्थान बड़े-बड़े ऐक्टरों के बगल में ही है, लेकिन खाना खाने के स्थान पर अनपढ़ तीस रुपये तनख्वाह पाने वाले ब्राह्मण को अधिक सम्मान मिलता है। वहाँ उस आदमी को मछली का टुकड़ा मिलता है, बैठने को अच्छी जगह मिलती है। बंसी वहाँ एक किनारे अकेले ही बैठता है। औरतों के स्थान में भी आशा का स्थान अलग ही रहता है। वह नीच जात की औरत है, यह बात सबको मालूम हो गई है। यात्रा-दल के डेरे पर भी बंसी को स्पर्श से बच कर रहना पड़ता है। इसीलिए रीतू बाबू ने जब अपने गिलास से और अपने हाथ से शराब पीने को दी तथा खुद गोरा बाबू ने अपनी पैकेट से सिगरेट दी तो उसे कृतार्थता का अनुभव हुआ। दूसरे दिन मैनेजर गोपाल बाबू ने कहा था, 'कल तेरा नाम नोट कर लिया गया है बंसी।'

बंसी इसका अर्थ जानता था। तनख्वाह में बढ़ोतरी। यात्रा-दल के मालिक (पहले प्रोप्राइट्रेस-ओप्राइट्रेस नहीं हुआ करते थे) के पास नोट बुक रहती थी। उसमें जिसका नाम दर्ज हो जाता था उसकी तनख्वाह में वृद्धि होती थी। पहले तनख्वाह बढ़ने की दर एक या दो रुपया थी। बड़े ऐक्टरों की पाँच रुपया।

बंसी ने गोपाल घोष को प्रणाम करते हुए कहा था, 'मालिक-मालकिन की सरमो बढ़े, मंजरी ऑपेरा का जय जयकार हो। कुछ हुक्म हुआ है क्या?'

'हुआ नहीं है, होगा। तब ही नोट कर लिया गया है। कल के नाच से बहुत खुश हैं। रीतू मास्टर साहब को प्रणाम करना, उन्होंने ही कराया है। तेरा दो रुपया और आशा का एक रुपया तो बढ़ेगा ही।'

बंसी ने कहा था, 'तनख्वाह में बढ़ोतरी हो चाहे न हो बाबू, लेकिन दल बरकरार रहे और हम लोगों की नौकरी बनी रहे। इसी में सुखी होगी मैनेजर बाबू। आप तो सब समझते ही होंगे।'

गोपाल मैनेजर यह बात समझता ही है। गोपाल की दल-यात्रा की नौकरी के तब पैंतीस साल हो गये थे। कितने ही दल का चक्कर लगा चुका है। उसका भी यात्रा-दल का जीवन बंसी जैसा ही है। वह नर्तकी हानिम के आकर्षण से यात्रा-दल में शरीक हुआ था।

नर्तकी हानिम!

पर यह बात उसे तत्काल स्मरण हो आयी थी।

हुगली जिले में घर। कायस्थ वंश का लड़का। चेहरा-मोहरा अच्छा था। ऐसा वैसा नहीं—सुदर्शन। बुद्धिमान भी था और लिखने पढ़ने में बचपन के साथ नाम भी कमाया था। लेकिन कोई भूत या प्रेत या निकम्मा संसार त्यागी व्यक्ति ऐसे लोगों के हृदय में वास करते हैं। वह अचानक जाग उठता है, बाँस की एक बाँसुरी प्राप्त होते ही संसारी सत्ता को दूर हटा कर जीवन की मसनद पर अपना दखल जमा लेता है। गोपाल गीत नहीं गा पाता था मगर ताल-लय की समझ थी उसे। जहाँ भी गीत-वाद्य का आयोजन होता वहीं आ कर जम जाता था। कहीं बाहर खड़ा हो कर सुनता और कहीं मजलिस के एक किनारे अपने लिये स्थान बना कर बैठ जाता था। बचपन से ही यात्रा की मजलिस के सामने शाम से ही जा कर बैठ जाता और पान फेंक कर साथीदल के छोकरों के साथ घनिष्ठता बढ़ाता। बचपन में स्कूल की कापी में पशुपति सरकार, विभूति कर्मकार का नाम कितनी बार जो लिखा था, उसकी कोई सीमा नहीं। स्कूल में जब तीसरे दर्जे में पढ़ता था उस समय महेशपुर मेले से जाकर बाँस की एक बाँसुरी खरीद लाया था। उसके बाद वही बाँसुरी उसके जीवन की संगिनी बन गयी। पढ़ाई-लिखाई चौपट हो गयी, मगर बाँसुरी बजाना सीख लिया। उसके साथ ही स्वप्न लोक का एक नशा जग पड़ा। उसी नशे के कारण स्वप्न लोक की खोज में चाँदनी से भरपूर मैदान में जाकर गहरी रात में बाँसुरी बजाता। बाँसुरी बजाना तो सीख गया मगर गोपाल की बदकिस्मती कि स्वप्न-लोक के धुंधले आभास के अतिरिक्त उसका आना-जाना नहीं चल सका। उधर स्कूल की बाकी तीन साल की पढ़ाई के पाँच साल में खत्म न कर पाने के कारण टेस्ट परीक्षा में फेल हो गया और पढ़ाई-लिखाई से [illegible] तोड़ लिया। उसके बाद स्वप्न-लोक का आभास भी कहीं खो गया। [illegible] से एक काला परदा सामने आकर झूलने लगा है और उसने [illegible] है। माँ-बाप के तिरस्कार से घर का अन्न बेस्वाद लगने लगा। [illegible] को प्राप्त नहीं कर सका उसी विद्या को लेकर उसने दुकान खोली [illegible] बैठ गया। उस समय गोपाल जैसे व्यक्ति के लिए यों ही [illegible]।

इसी सपने की दुनिया के आभास का उसने अनुभव किया था पर उसका पता नहीं मिला था। हाँ, यही है। तब पैट्रोमेक्स बन कर तैयार नहीं हुआ था, वह कार्बाइड का जमाना था। उस कार्बाइड की उजली झलझलाती रोशनी में उसे लगा कि यह यात्रा की मजलिस नहीं बल्कि एक दुनिया है। चाहे सपने का लोक है या स्वर्गलोक। यह रोशनी और उसके साथ का संगीत ! इसी बीच जलमलाते वस्त्रों में पेण्ट से रंगी भौंएँ, आँख और होंठ वाले अपरूप मनुष्यों का मेला। औरत-मर्द जैसे देव देवांगना, किन्नर-किन्नरी हैं - हँसते हैं, रोते हैं, नाचते हैं, गाते हैं। कितनी अपरूप है वह भाषा कितनी मनोरम है भंगिमा। कितना चपल है कटाक्ष ! कितना सुन्दर है सलाप ? कितना प्राणस्पर्शी विलाप ! वाद्य संगीत के स्वर और झंकार में सुख-दुख की कितनी अभिव्यक्ति ! इतने दिनों से जिस सपने की दुनिया का अस्तित्व और प्रकाश उसके आभास में था—उस दिन वह सब कल्पनालोक के सामने का आवरण हटा कर स्पष्ट और प्रत्यक्ष होकर उसके सामने उजागर हो गया। यही नहीं, अभिनय की शुरूआत में ही हालिम नर्तकी की साज-सज्जा में आकर खड़ी हुई, हल्के से हँसी, मुँह को जरा तिरछा कर। जैसे दूर आकाश की ओर ताकती हुई उँगली से इशारा करती हुई गा रही हो—

वह नीला उजला तारा।
या कि अमृत से धुली हँसी वह स्निग्ध किरण की धारा।

बस, इतने में ही गोपाल खो गया। गोपाल के मन में उल्टा ही प्रभाव पड़ा। उसे लगा कि अब तक वह अपनी दुनिया से अलग हट कर किसी अनजानी-अनपहचानी दुनिया में भटक रहा था और मानसिक यातना के साथ जीवन जी रहा था। आज एकाएक उसे अपनी जानी-पहचानी दुनिया और जाने-पहचाने लोग मिल गये। इस बीच जो नारी नृत्य कर गयी, वही नारी उसकी चिरन्तन काल की स्वजन है। माँ-बाप पराये जैसे लगे। लगा, बचपन में वह खो गया था और ब्राह्मण टोली-कायस्थ टोली, धनी-गरीब, अभाव-आवश्यकता, पाठशाला-स्कूल, परीक्षा, नौकरी वगैरह से परिपूर्ण इस दुनिया के रास्ते पर लोरी के पंक्ति के शब्दों की तरह रास्ते की धूल बदन पर लपेटे 'माँ-माँ' कह कर रो रहा था—वह माँ उसे रास्ते से उठा कर ले गयी थी। आज उसकी गलतफहमी दूर हुई है। और गलतफहमी जब दूर हो गयी तो गोपाल फिर अपनी गलती के रास्ते पर लौट कर नहीं आया। दो दिन के बाद यात्रा-दल अभिनय समाप्त कर स्टेशन आया और गाड़ी पर सवार हुआ। गोपाल भी उसके साथ ही गाड़ी में बैठ गया। उसकी जेब में पाठशाला की गुरुगीरी की कमाई की कुछ रकम और बाँसुरी थी। अनेक दिन के दरमियान दल के आसपास चक्कर लगाते हुए अन्दर चला आया। इस तरह का एक खूबसूरत युवक दल के इर्द-गिर्द चक्कर काट रहा है, यह दल मालकिन प्रेमांशु तारिणी की दृष्टि से अनदेखा नहीं रहा। उसने उसे बुला-कर कहा था, 'क्यों भैया, तुम्हारा घर कहाँ है? देख रही हूँ कि कई दिनों से साथ-साथ चक्कर काट रहे हो। बात क्या है?'

गोपाल खामोशी ओढ़े रहा, जवाब नहीं दे सका।

त्रैलोक्य तारिणी ने पूछा था, 'नाम क्या है [illegible]

गोपाल सिर झुकाये बैठा रहा और नाखून से धरती पर निशान बनाता रहा। एक भी शब्द का उत्तर नहीं दिया। बहुत देर के बाद गोपाल घोष अचानक रो पड़ा और उसके पैरों को पकड़ते हुए बोला, 'मुझे अपने दल में ले लें। आप जो भी मर्जी हो, दे दीजिएगा।'

उसके बाद अपना पूरा परिचय बताया था। परिचय ठीक-ठीक ही बताया था—केवल एक बात झूठी बतायी थी और वह यह कि उसकी माँ जिन्दा नहीं है। बाप ने दुबारा शादी कर ली है और सौतेली माँ उसे तकलीफ देती है। यह हर युग और हर देश का एक करुण सत्य है। ममता से विगलित होकर माँ त्रैलोक्य तारिणी ने कहा था, 'फिर तुम यहीं रहो भैया। तुम्हारा चेहरा अच्छा है—सुन्दर, इस पर अगर आवाज अच्छी होगी तो हीरो बन जाओगे। संलाप बोल सकते हो?'

गोपाल ने अब झूठ का सहारा नहीं लिया। कहा, 'कभी मौका ही नहीं मिला। सब ऐसा कर सकते हैं तो फिर मैं क्यों नहीं कर सकता?'

हँस कर त्रैलोक्य तारिणी ने कहा था, 'नहीं भैया, हर कोई संलाप नहीं बोल सकता है। गीत गाना क्या हर व्यक्ति के लिए सम्भव है?'

गोपाल ने कहा था, 'गीत की समझदारी मुझमें है। गा नहीं पाता पर बाँसुरी बजा सकता हूँ। मैं बाँस की बाँसुरी अच्छी तरह बजा सकता हूँ माँ।'

गोपाल को नौकरी मिल गयी थी। भाषण वह दे नहीं पाता था, परन्तु चेहरा सुन्दर रहने के कारण चकाचौंध से भरे-दृश्यों में नारायण, कृष्ण और शिव के वेश में आता था। वह बाँसुरी बजाता था। इस बीच गोपाल ने नर्तकी डालिम के हृदय को जीत लिया था। डालिम का प्रेमी दल छोड़ कर चला गया। डालिम के साथ त्रैलोक्य तारिणी के दल में उसकी नौकरी स्थायी हो गयी। गोपाल स्वयं भी गुणवान था—यह गुण बाँसुरी बजाने का नहीं बल्कि दल के काम-धन्धे को चलाने और देखरेख करने का था। उस जमाने में मैट्रिक तक पढ़ा था, पाठशाला में गुरुगीरी कर चुका था। दल के लिखने-पढ़ने का काम, खाता लिखना, पार्ट लिखना वगैरह बड़े ही अच्छे ढंग से करता था। उस पर बाहर स्टेशन और राह-घाट में बातचीत करना—यह काम वह थोड़ी बहुत अंग्रेजी बोल कर भी चला लेता था। एक बार एक फिरंगी गार्ड से रिश्वत के मामले में अंग्रेजी में ऐसा झगड़ा किया कि बगैर रिश्वत दिये काम निकल आया। उस वक्त त्रैलोक्य तारिणी ने खुश होकर कहा था, 'गोपाल, तुम भैया दल के मैनेजमेन्ट का काम देखो। बाँसुरी बजाते रहने से असमय ही सीना झाँझर हो जायेगा। उससे तो अच्छा यही है कि इसी काम को सँभाल लो।

उसी समय से गोपाल मैनेजरी कर रहा है।

त्रैलोक्य तारिणी का दल आठ वर्ष बाद अभिनय करने के लिए [illegible] था। उस समय शाल नदी का पुल टूट गया, ट्रेन गिर पड़ी और दल का

गया। लेकिन गोपाल की तकदीर अच्छी थी। डालिम को निमोनिया होने के कारण वह अभिनय के आखिरी पड़ाव वर्द्धमान में रुक गया था। गोपाल की जान बच गयी थी। वह डालिम के साथ कलकत्ता वापस आ गया और सांतरा कम्पनी में उसे असिस्टेन्ट मैनेजर की नौकरी मिल गयी। लेकिन महिला यात्रा दल का अभाव पग-पग पर अनुभव करता रहा। डालिम को कलकत्ते में रख कर उसे सात-आठ महीने तक बाहर ही रहना पड़ता था।

घर पर पत्नी बाल-बच्चों को रख कर नौकरी की खातिर सभी नौकरी पेशा व्यक्तियों को बाहर रहना पड़ता है। बाल-बच्चों को लेकर किराये के मकान में रहना कितनों के लिए सम्भव है। लेकिन वह रहना अलग ही किस्म का है। वैसी स्थिति में पत्नी सगे-सम्बन्धियों के बीच रहती है। पत्नी का धर्म अलहदा होता है। लेकिन यह पूरे तौर पर अलहदा था। डालिम का धर्म अलहदा था, समाज अलहदा था। उसे वहाँ छोड़ कर जाने पर जब लौट कर आया तो वह मिली नहीं। उसने डालिम के लिए घर छोड़ा था, माँ-बाप को छोड़ा था। वही डालिम खो गयी तो शुरू में उसकी बेचैनी सीमा लांघ गयी। लेकिन यात्रा-दल को भी वह छोड़ नहीं सका। यात्रा-दल में हजारों कष्ट का सामना करने और हजारों अपमान बरदाश्त करते रहने पर भी उसे उसी में कल्पनालोक का स्वाद मिलता था। किसी तरह उस घटना को उसने बरदाश्त कर लिया। यात्रा-दल के साथ चक्कर लगाने के सिलसिले को खत्म कर लौटने के बाद वह डालिम के घर पर चार-पाँच महीने गृहस्थ के तौर पर रहता था। उस समय का उसका जीवन सचमुच ही सपने का जीवन था। उसके बाद सांतरा कम्पनी में मधुरत्ना, वहाँ से सत्येश्वर ऑपेरा, गणेश ऑपेरा आया। कहा जा सकता है कि तमाम बड़े दलों में ही उसने नौकरी की है। उसके बाद डालिम मर गयी। मरने के समय डालिम के पास जो कुछ था उसे देते हुए कहा था, 'इस लाइन में किसी के साथ जुड़ना नहीं। बल्कि शादी कर लेना। अपने कुछ जेवरात तुम्हें दे रही हूँ, उसे दे देना। तुम दल के साथ बाहर निकलते थे तो मुझे कितनी तकलीफ होती थी, यह बात तुम नहीं समझोगे। सज-संवर कर बाहर खड़ी होती तो रुलाई आती थी। शादी कर लेना। जो शादीशुदा औरत होती है, धर्म उसकी रक्षा करता है। हम लोगों का धर्म बच नहीं पाता है।'

डालिम की बात मान कर उसने शादी की थी। पत्नी को कलकत्ते में किराये के मकान में रखा भी था। जब दल के साथ बाहर निकलता तो पत्नी को उसके मायके में रख आता। लेकिन वह गृहस्थी चल नहीं पायी। उसके बाद नारी के प्रति उसमें जो नशा था वह दूर हो गया मगर यात्रा का नशा दूर नहीं हो पाया। यह नशा दूर हो, इसका भी उपाय नहीं है। खायेगा क्या? बुढ़ापे में नशे के सरूर के कारण कष्ट होता है, बरदाश्त नहीं होता, फिर भी महिला यात्रा-दल में उसे अधिक आनन्द प्राप्त होता है। जीवन के प्रारम्भिक दिनों की याद आती है। इसलिए गोरा ने जब मञ्जरी के साथ महिला यात्रा-दल चलाने की चर्चा की तो उसने न केवल

i

उत्साहित किया बल्कि कम तनख्वाह में दल की असिस्टेन्ट मैनेजरी स्वीकार कर ली। दल के प्रति उसे अगाध ममता है। इस वजह से दल के बहुत सारे ऐक्टर उससे चिढ़ कर उसके विरोधी हो गये हैं।

यात्रादल के मैनेजरों की तकदीर ऐसी ही हुआ करती है। गाली-गलौज सहना ही पड़ता है। चोरी करने का इलजाम लगाया जाता है। तब हां, मैनेजर कुछ-न-कुछ चोरी अवश्य करता है। लेकिन सिर्फ अपने लिए नहीं, मालिक और दल के लिए भी करता है। बीच-बीच में चोरी न करने पर भी चोरी करने की बदनामी का शिकार होना पड़ता है। किसी-किसी अभिनय के बाद विदाई के समय आयोजक-पक्ष हजारों प्रकार के झमेले खड़ा कर सौ-पचास रुपये कम देता है। दल के लोगों को बताया जाता है तो उन्हें विश्वास नहीं होता। किसी-किसी मजलिस में पूरी रकम मिलने के बावजूद मैनेजर बताता है कि आयोजक पक्ष ने पूरी रकम नहीं दी है। वह रकम मालिक ले लेता है और मौका मिलता है तो मैनेजर भी। सार्वजनिक पूजा की मजलिसों में आयोजक-पक्ष आये दिन चालाकी से काम निकाल लेता है। अभिनय के बाद पूरी रकम दे देता है। उसके बाद कहता है कि अब की कुछ प्रणामी या चन्दा आप लोग दीजिये। हम लोग तो चन्दा वसूल करके पूजा करते हैं। पचास रुपया देना ही पड़ता है। देने से अगले साल के लिए बयाना मिल जाता है।

इन सब चीजों का वह अभ्यस्त हो गया है। कभी वह यह नहीं महसूस करता कि यात्रादल छोड़कर और कोई दूसरा काम करे। क्या करेगा? उसके द्वारा तो और कुछ हो नहीं सकता। इस यात्रादल के बाहर विशाल कारोबार की दुनिया है मगर वह वहाँ का प्राणी नहीं है। दल छोड़कर वहाँ जाने पर न तो वह सांस ले सकेगा और न ही जिन्दा रह सकेगा। वहाँ की हवा जैसे और ही तरह की है।

उस दिन यानी मंजरी ऑपेरा की स्थापना की पहली मजलिस के समय बंसी को उसकी तनख्वाह की बढ़ोत्तरी की सूचना देते ही उसने कहा था, 'तनख्वाह में चाहे बढ़ोत्तरी हो चाहे न हो, मगर दल की जयजयकार हो, मैं यही चाहता हूँ।'

गोपाल को सोंतरा कम्पनी के मालिक की बात याद आयी थी। मालिक हालांकि धनी घर का लड़का था मगर उन्हीं लोगों की श्रेणी का था। शौक से यात्रा-दल की स्थापना कर अपना शौक पूरा किया था। दल के साथ लौटते थे। खाना-पीना एक साथ होता था। वे कहते थे, 'गोपाल चन्दर, जानते हो भैया, यात्रादल के आसामी और तालाब की मछली दोनों एक ही जात के प्राणी हैं। यात्रादल तालाब है और ऐक्टर, वादक, गायक वगैरह मछली। मछली जिस तरह पानी में स्वच्छन्दता का अनुभव करती है उसी तरह ये लोग यात्रादल में स्वच्छन्दता का अनुभव करते हैं। डुबकियां लगाते है, उछलते-कूदते हैं और मगन रहते हैं। पानी से मछली सूखी जमीन पर आते ही पछाड़ खा-खा कर मौत के मुंह में समा जाती है। आसामी भी उसी तरह दल छोड़ कर और कुछ करने जाता है कि आठ-दस दिन के दरमियान

ही वह खाना-पीना छोड कर मौत के मुँह में समा जाता है। झिंगा मछली से लेकर रोहू-कातर तक कोई जिन्दा नही रहती है।

तत्क्षण उसे उसी दिन बंसी की बात याद आयी थी। मछलियों के दल में रोहू-कातर के अलावा मँगुरी, सौर, महासौर, पंकगड़क भी हैं।

बडी मछलियों की घर-गृहस्थी तालाब में नही, नदी में होती है। वहाँ से अण्डा, मछली का बच्चा लाकर तालाब में डालते हैं। उसके बाद छोटे तालाब से बडे तालाब में डालने से बढ़ती हैं। पंकगडक मछली की घर-गृहस्थी कीचड से भरे गड्ढे मे होती है। उन्हे निकाल कर बडे तालाब में डालने से कीचड़ के अभाव में मर जाती है। बंसी और आशा जैसे लोग पंकगडक मछली हैं—महिला यात्रादल उनके लिए पंकिल तालाब का गड्ढा है। गोपाल अपने प्रारम्भिक जीवन के त्रैलोक्यतारिणी दल की डालिम के साथ बिताये दिनों को भूल नही पाता है। कितने ही दिनों के बाद मंजरी ऑपेरा में प्रवेश किया है। डालिम नही है, घर-गृहस्थी नही है, फिर भी अच्छा लगता है।

आज १६४४ ई० की रथ यात्रा के दिन बंसी-आशा का उल्लेख कर मानिक गोरा बाबू ने जब सवाल किया, तो गोपाल को मालूम था कि बंसी क्या कहेगा। बंसी कहेगा, हम क्या कहे, जो कुछ करने को है आप कीजिएगा और आशा हल्के-हल्के मुसकरायेगी। प्रसन्न सम्मति की हँसी। गोपाल का अनुमान मिथ्या नही हुआ। बंसी ने हाथ जोडकर कहा, 'जी मैं कुछ नहीं कहूँगा। दल के प्रथम अभिनय की रात ही आपने तनख्वाह बढ़ा दी थी। आपका न्याय गुर, सही न्याय होता है—हाईकोर्ट के फैसले जैसा।'

रीतू बाबू बोल पड़ा, 'तुम तो पट्ठे नामी वकील के भी कान काटते हो। मानिक के सामने अकाट्य दलील रख रहे हो।'

रीतू बाबू के मजाक से कभी कोई दुखी नही होता है। उसके मजाक में एक प्रकार का स्नेह रहता है जिससे कि मन प्रसन्न हो जाता है। सभी हँस पड़े थे, मगर उससे बंसी घबराया नहीं। वह खुश रह सकता है। जरा-जरा बात में खुश हो जाना ही उसका स्वभाव है। ऐसा उसकी जात, जन्म और बचपन-शैशव के हालात के कारण भी होता है। औरों की ओट मे भी वह किसी को 'साला' नही कहता। कभी-कभी गाली-गलौज सुनता है तो भी उसके चेहरे पर एक उदास हँसी तिर आती है। उसकी जात चाहे जो हो परन्तु उसके स्वभाव में आश्चर्यजनक मिठास है। रीतू बाबू के चरणों की धूल माथे से लगाते हुये बोला, 'तो फिर मास्टर साहब जूरी हैं। सुना है, जूरी के मशवरा के बगैर जज साहब की कलम नहीं चलती है।'

'शाबाश वंसी, शाबास !' कहकर रीतू बाबू ने वंसी की पीठ पर हौले से धौल जमाया, 'वाह क्या कहा है !'

वह खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसके साथ ही सब लोग हँस पड़े। लेकिन वह हँसी सड़क पर बजने वाले बाजे और काँसे के घण्टे के शोर से दब गयी। आवाज बहुत देर से आ रही है—अब बिलकुल निकट चली आयी है। रथयात्रा के दिन किसी घर से रथ बाहर निकलकर आया है। संभवतः किसी गली से निकलकर एकबारगी ग्रे स्ट्रीट के जंक्शन के मोड़ पर। शोभा, गोपाली, आशा तीनों हड़बड़ा कर बरामदे पर चली आयी। शोभा का बदन मोटा-सोटा है, इसलिए वह सबके पीछे आयी। उसने जाते हुए कहा, 'खबरदार, मर्द लोग बरामदे पर नहीं आएँ।'

मर्दों में से अधिसंख्यक सीढ़ी के सामने के बड़े कमरे में थे। वे सीढ़ियाँ उतर कर नीचे चले गये। एकमात्र वंसी नहीं जा सका। मगर वह भी छटपटाने लगा।

गोपाल घोष, रीतू बाबू, मंजरी और गोरा बाबू भी उत्सुक हो उठे। बाजे-गाजे, धूम-धड़ाके के साथ बज रहे हैं। बैण्ड, बैगपाइप, एकाध दर्जन काँसे के घण्टे। उसके साथ ही भीड़ का शोर।

'अरे, यह तो बड़े ही धूम-धड़ाके के साथ रथ निकला है।' मंजरी भी उत्सुक हो उठी।

गोरा बाबू मुस्कराते हुये बोला, 'देखने की इच्छा हो रही है क्या ?'

'जरूर हो रही है। प्रोप्राइट्रेस होने की वजह से मन-कान-आँख से नाता नहीं तोड़ लिया है।'

'फिर जाइये न', रीतू बाबू ने कहा, 'देख आइये। कम उम्र है, इच्छा होना स्वाभाविक है। जाइये।'

'मुझे जाने दीजिये मास्टर साहब।' वंसी ने अनुनय भरे स्वर में कहा।

मंजरी बरामदे के दरवाजे तक चली आयी थी। वह मुड़कर बोली, 'गोपाली का पाँच रुपया बढ़ाया गया है, उन लोगों का चार रुपया कर दीजिये। कहो वंसी ठीक है न ?'

'ठीक है। इतना ही काफी है। मैंने तो कोई माँग नहीं की थी। इतना ही काफी है। फिर मैं चलता हूँ।'

गोपाल मैनेजर ने धमकाते हुए कहा, 'रथ कोई भागा नहीं जा रहा है। दस्तखत करते जाओ।'

'आकर करूँगा। या फिर बाद में कर दूँगा।'

'नहीं। आज रथ का दिन है।'

'तब अँगूठे की छाप लगाऊँगा। दस्तखत करने में मुझे बहुत देर लगेगी।'

उधर, सड़क पर पल-पल लोगों का उल्लास शोर-शराबा के रूप में रहा था। बरामदे पर महिलाएँ खिलखिलाकर हँस रही हैं। यात्रा वाले अन्तरात्मा पिंजरे में बन्द पक्षी की तरह छटपटा रहो है।

रीतू बाबू, गोरा बाबू दोनों हँस पड़े। वंसी जब अँगूठे की छाप देकर चला गया तो रीतू बाबू बोला, 'चलिए, हम लोग भी चलें।'

यह कह कर वह हँस दिया।

बूढ़ा गोपाल भी छटपट कर रहा था। लेकिन बेचारा काम छोड़कर नहीं जा पा रहा था। रीतू बाबू, गोरा बाबू के जाने के बावजूद वह जा नहीं सका। उसने पुकारा, 'बाहर कौन हो जी ? सुन रहे हो ?' मगर कोई जवाब नहीं मिला। गोपाल ने दुबारा पुकारा, 'अरे, सभी चले गये क्या ?'

गोरा बाबू ने एकाएक कविता-पाठ करना शुरू किया—

कौन देगा उत्तर व्यर्थ ही तुम रहे पुकार
मृत्यु-जगत के छोटे सुख-दुख से कातर
नहीं ये अमृत के प्यासी—नवीन संन्यासी !
तुम्हारा अमृत-मंत्र नहीं है उन लोगों के लिए
तुम अमृत-अधिकारी जाओ अपने पथ पर
वे लोग न उत्तर देंगे।

रीतू बाबू ने गोरा बाबू के चेहरे की ओर ताकते हुए कहा, 'ठहरिये-ठहरिये। यह पार्ट मैं कर चुका हूँ।'

गोरा बाबू बोला, 'कहाँ किया था ? यह यात्रादल में नहीं हुआ है। गिरती हालत वाले स्टार में हुआ था, सो भी आठ-दस रात से ज्यादा चल नहीं सका। 'मार' का पार्ट है। बुद्धदेव से मार कह रहा है।'

रीतू बाबू बोला, 'हाँ साहब। मृत्यु पथ के यात्री हैं वे—इसके बाद याद नहीं है। एक रात के लिए एमेच्योर में किया था। स्टार में भी देख चुका हूँ।'

गोरा बाबू आवृत्ति करने लगा—

मृत्यु पथ के यात्री हैं वे—मृत्यु भय से सदा कातर—
फिर भी मोहांध जीव मृत्यु के विलास नृत्य में;
मदिर उल्लास से मृत्यु नाच रही है नूपुर बजाकर
रति-राग में गीत गा रही; हाथ में उसके मधु का प्याला
चली जा रही वह अपने अंधकार से पूर्ण निलय में।
ये लोग दौड़ रहे हैं पीछे-पीछे
अग्निशिखा से मुग्ध पतंग सम
उन्मत्त अधीर।
लौट चले जाओ तुम हे संन्यासी
तुम्हारे आवाहन का नहीं देंगे वे उत्तर।

आवृत्ति समाप्त करने के बाद गोरा बाबू बोला, 'उसी नाटक के एमेच्योर से मैंने अभिनय प्रारम्भ किया था। बुद्धदेव का पार्ट किया था।'

बोलते-बोलते दोनों धीमी गति से बरामदे की ओर बढ़ रहे थे। इस बीच गोपाल घोष बक्से में खाता बन्द कर चाभी हाथ में थामे सीढ़ी के दरवाजे पर खड़ा हो चुका है। पूरब तरफ के दोमंजिले के बरामदे पर महिलाएँ खिलखिला कर हँस पड़ीं। शोभा की हँसी का रेला सब से बढ़-चढ़ कर है। उसने गरदन घुमाकर कमरे की ओर देखते हुए कहा, 'ए रीतू बाबू, हाथी नाच रहा है।'

'एक या दो ?'

'एक।'

'तब जल्दी से भागकर चली आओ। जोड़े के लिए तुम्हें पकड़ कर ले जायेगा।'

सभी हँस पड़े। यहाँ तक कि प्रोप्राइट्रेस मंजरी भी। गोपाली ने शोभा से कहा, 'हुआ तो।'

शोभा हार मानने को तैयार नहीं, कम से कम सहज ही किसी भी तरह नहीं। उसने जवाब दिया, 'इससे तो बेहतर होगा कि हम दोनों जने चल चलें। पकड़-धड़ का झमेला भी खड़ा न होगा और उन लोगों को तीन हाथी मिल जायेंगे।'

गोपाली खिलखिला कर हँस पड़ी। मंजरी ने साड़ी की कोर को मुँह में दबाते हुए मीठे स्वर में कहा, 'बहुत अच्छा शोभादी।'

रीतू बाबू जवाब देने जा रहा था, मगर जवाब देना नहीं हो सका। उसी क्षण गोपाल घोष सीढ़ी के मुहाने से यात्रादल के कुशल गायक योगा मास्टर और एक भले आदमी के साथ कमरे के अन्दर आया। योगा मास्टर बातें करते हुए कमरे के अन्दर आया, 'कहाँ हैं माता जी ? शुभ महूरत के दिन योगानन्द —। अरे, यह रहे मालिक जी, योगानन्द बयाना लेकर आया है, बाबू। अरे, यह रहे रीतू बाबू। शोभादी, प्रोप्राइट्रेस। सारथी हाजिर है। मैं बयाना ले आया हूँ।'

आनन्द और आत्म-गौरव से योगा मास्टर के बड़े-बड़े दाँत विचित्र प्रकार की हँसी ले बाहर निकल आये।

आयोजन के पहले दिन बयाना मिलना सचमुच ही अप्रत्याशित चीज है। खुश होने की बात भी है। यही नहीं, आदमी का मन इसमें शुभ लक्षण ढूंढ़ लेता है। गोरा बाबू से लेकर बंसी-आशा तक सभी आदमी के गले में ग्रहकवच या उँगली में अँगूठी है। कमरे से बरामदे तक जितने भी लोग थे सबने गरदन घुमाकर कमरे की ओर देखा। बातचीत कुछ क्षणों के लिए बन्द हो गयी। खुशियों से भरी निगाह से एक ने दूसरे के चेहरे की ओर देखा। एक उज्ज्वल भविष्य की छटा जैसे हरेक के चेहरे पर तिर आयी है।

गोपाल ने भले आदमी को बैठाते हुए कहा, 'बयाना कहाँ का और कब का है ?'

'झूलन का। लिखिये दो रात्रि का बयाना।'

'तुम चुप रहो योगा मास्टर। उन्हें बोलने दो।'

'मैं चुप रहूँ ? वे बोलेंगे ?'

एक क्षण सोचने के बाद योगा गायक बोला, 'ठीक है । वही कहेंगे । कहिये साहब । छोटे मैनेजर का हुक्म है ।'

भला आदमी बंगला देश के जमींदार के सिरिश्ते के कर्मचारी तबके का आदमी है । ऐसे लोगों की पोशाक और चेहरे से जो भाव टपकता है उससे कम-से-कम यात्रा-दल के मालिक पूरे तौर पर परिचित रहते हैं । भले आदमी ने कहा, 'रतनपुर जमींदार की हवेली —'

योगा मास्टर ने उसके अधूरे वाक्य को पूरा कर दिया, 'वर्धमान जिला, आमदपुर, कटोया लाइन में पांचुन्दी स्टेशन के निकट ही । समझ रहे हैं, डेढ़ेक मील का रास्ता है—हाँ, डेढ़ मील । वहाँ के सरकार बाबू लोग जमींदार हैं, समझ रहे हैं न । पुराने जमींदार । हाल में लड़ाई के बाजार में लड़कों ने काफी कमाया है । क्या बताऊँ, समझ रहे हैं न, बहुत बड़ी बात है—। आप साहब जमींदारी सिरिश्ते के कैसे आदमी हैं । अगर मैं ही सब कुछ बता दूँ तो आप क्या बताइयेगा ? बताइये न, कि फिलहाल चारों तरफ काफी चर्चा है और साथ ही साथ जी खोलकर खर्च भी करते हैं । और यहाँ गोपाल बाबू कह रहे हैं कि तुम चुप रहो । कहिये—'

भले आदमी ने हँसकर कहा, 'वह सब बात यानी बाबू के पास कितना पैसा है, कैसी उनकी हालत है, यह सब मैं कहूँ तो शोभा देगा ? आप कह रहे हैं यही अच्छा लग रहा है । आपका कहना खत्म हो जायेगा तो बाकी मैं कहूँगा ।'

रीतू बाबू ने जेब से सिगरेट निकालकर योगा बाबू को देते हुए कहा, 'लो सुलगाओ ।'

'सिगरेट ! आपकी जयजयकार हो ! समझ रहे हैं न···'

'वह बाद में होगा । अभी सिगरेट सुलगाकर उस बरामदे पर जाओ और जरा पीओ । बातचीत करने का अवकाश नहीं मिलेगा । जाओ ।'

'ठीक है, जाता हूँ ।'

योगा मास्टर गाँजे का दम लगाता है, बीड़ी पीता है मगर सिगरेट पीते ही उसे खाँसी आने लगती है । उस समय ऐसा लगता है कि उसका दम अटक जायेगा और वह मर जायेगा । फिर भी सिगरेट अगर कोई देता है तो बिना पिये रह नहीं पाता । लेकिन मंच पर उतरने के तीन घण्टा पहले से ही योगा मास्टर दूसरा ही योगा मास्टर हो जाता है । मंच पर उतरने के पहले सिर्फ एक बार गाँजे का दम लगाता है । बस इतना ही, उसके बाद धूम्रपान और नहीं । मुँह में सिगरेट लगाकर योगा मास्टर बोला, 'घोड़े पर चढ़ाया तो चाबुक लगाइये ।' यानी उसने दियासलाई जला देने को कहा ।

'चलो, बरामदे पर चलो ।'

'इसका मानी समझ गया । समझ रहे हैं न, मुझे यहाँ से हटा रहे हैं । तो फिर दिये ।'

गोरा बाबू बोला, 'लगन किस तारीख को है गोपाल बाबू ?'

भले आदमी ने कहा, '२४ श्रावन को। शुक्रवार। अंग्रेजी १० अगस्त। दो रात का बयाना है। योगा बाबू ने ठीक कहा है—बाबू के लड़कों ने लड़ाई के बाजार में बेहद पैसा कमाया है। अबकी पक्का नाट्य मन्दिर बनवाकर तैयार कराया है। अब तक चूने की पोताई का काम चल रहा है।'

'योगाबाबू की एक ससुराल रतनपुर में है। पहली शादी वहीं हुई थी। अब भी बीच-बीच में जाते हैं। मालिक स्वयं बाजा बढ़िया बजा सकते हैं, योगाबाबू गायक हैं। उसी सिलसिले में उनसे जान-पहचान हुई है। आप लोगों के दल की जानकारी थी ही। उसके बाद योगाबाबू ने काफी प्रशंसा की। बताया कि आप लोग जोर-शोर से कर रहे हैं। क्या लीजिएगा, अब यही बताइये।'

गोपाल घोष अब कलम उठाते हुए बोला, 'कहाँ उतरना पड़ेगा ? वहाँ का किराया कितना है ?'

'किराया ? बड़ी लाइन से बराबर जाने से और गंगाटिकुरी में उतरने से किराया कम लगता है—दो रुपये तीन आने। इधर से रास्ता जरा लम्बा हो जाता है। उस पर बरसात का समय है न। गंगा का किनारा—'

'हाँ, वैष्णव देश है। भक्तिमयी मिट्टी।' गोरा बाबू हँसने लगे।

'जी हाँ। पाँचून्दी होकर जाने से रास्ता भी लम्बा नहीं है और अच्छा है।'

'हम लोग गाड़ी भी देंगे। मालिक ने कहा है। चूंकि महिलाओं का दल रहेगा इसलिए गाड़ी भी रहेगी। दोनों तरफ के लिए गाड़ी मिलेगी। उस पर मछली, लकड़ी, हाँड़ी वगैरह।'

गोपाल ने कागज पर हिसाब करके कहा, 'किराये में ही तीन सौ रुपया लग जायेगा। दल में पचास आदमी है।'

बरामदे पर योगाबाबू खाँसते-खाँसते कुबड़ा हो गया है। उस पर भी वह अपने एक हाथ की पाँच उँगलियाँ दो बार दिखाने की कोशिश करने लगा। मानी हजार रुपया।

दीवार के किनारे बैठे गोपाल घोष की निगाह बरामदे की ओर ही थी। योगा बाबू का इशारा उससे अनदेखा नहीं रहा। गोरा बाबू कुछ कहें इसके पहले ही उसने कहा, 'पाँच सौ रुपया हर रात की दर से लिए बगैर हमें कोई फायदा नहीं होगा। अबकी हमने दल बहुत अच्छे ढंग से कायम किया है। हर आदमी को तनख्वाह ज्यादा है। समझ रहे हैं न ?'

भले आदमी ने कहा, 'वह सब योगाबाबू कह आये हैं। उतना ही मिलेगा। लेकिन देवता की दक्षिणा के रूप में कुछ देना पड़ेगा। वह रकम पुरोहित, ... नौकर, ब्राह्मण वगैरह को मिलेगी।'

'उसके लिए हम पच्चीस रुपया देंगे।'

'जी नहीं।' भले आदमी ने जोरों से अपनी गरदन को झटक दिया,'सौ में पांच रुपया।'

रीतू बाबू ने आगे बढ़कर कहा, 'चालीस रुपया।'

'जी नहीं।' बरामदे की खिड़की के पास खड़े योगा मास्टर ने खांसते-खांसते कहा, 'पच्चीस ही। बक-बक क्यों कर रहे हो घोपाल? तुम पांच रुपया और ज्यादा लेना। जाओ, अब ज्यादा मत बको। बयाना जितना दोगे उससे बल्कि पांच रुपया काट लो।'

खांसते-खांसते इतनी बातें बोलने के कारण योगा बाबू का चेहरा लाल हो गया था। भले आदमी ने संभवतः उसी वजह से कहा, 'ठीक है, वही रहा'। आप चुप रहिये। लिखिये बयाना अढ़ाई सौ।'

नोट की गड्डी नीचे रख कर बोला, दो एक सौ का है; बाकी दस-दस का। मुझे पांच रुपया दीजिये। और आप लोगों का फार्म दीजिए, दस्तखत कर दूँ। रसीद पर टिकट लगाकर दस्तखत कर दीजिये। जमीदारी सिरिश्ते की बात है।'

मंजरी ऑपेरा का पहला बयाना शुभ रथयात्रा के दिन हो गया। इतना ही नहीं, दल के मुहूर्त्त के दिन। मंजरी ने पूजा का पैसा बयाने के पैसे से अलग करके रखा। मोटे तौर पर दल का गठन भी उसी दिन हो गया। गोपाल ने खाते में सारे नाम लिख लिए।

प्रोप्राइट्रेस : मंजरी देवी

मैनेजर-निर्देशक : श्री विजय चक्रवर्ती

असिस्टेन्ट मैनेजर कार्याध्यक्ष : श्री गोपाल घोष

संगीत-शिक्षक : श्री योगानन्द घोषाल और नृत्य शिक्षक : डाँसिंग मास्टर बंशी दास

वाद्य संगीत और तबला इत्यादि : भूदेव घोष और हरिहर साँई

क्लेरिओनेट और बांस की फ्लूट : रमेश बोस और शिवपद हाजरा

बेहाला : हरेन दास, हब्ू मास्टर और तवेश पाल

करताल-मंजीरा : पिन्टु घोष और मन्मथ सिंह

साज-सज्जा : शिबू निकारी और राधा चरण साँकरा

प्रोम्पटर : रणजित पाल

मशालिए का रखवारा : विपिन हालदार

बेशमंदिर और डेरे का नौकर : हरू महापात्र

रसोइया : हरिदास, मधुनन्दन दास

अभिनय : श्रीमती मंजरी देवी, शोभा देवी, गोपाली बाला, आशा—

योगा बाबू बोला, 'कुमारी नायिका का पार्ट जो लड़की करेगी उसका नाम है अमला देवी। अबकी मंचन के समय देख लिया जाये। अगर ठीक से नहीं करेगी प्रथम के अभिनय के बाद उसे हटा देंगे। तब हाँ, नाचने में निपुण है, मार्वे

नाथ। मैंने देखा नहीं है, तब हाँ, सुना है। और कॉमिक ऐक्टर रहेगा बाबुल बोस—बाबुल बोस ही लिखिये।'

अबकी मौका देखकर योगा मास्टर बोला, 'लेकिन मालिक, मेरी तनख्वाह जितनी बढ़ी है उससे और अधिक बढ़ेगी। समझ रहे हैं न, बहुत दौड़-धूप की है। माताजी के भाषण की बात बतायी है, संगीत के बारे मे बताया है। समझ रहे हैं न, उस पर कहा, अच्छा जी अच्छा अबकी देखना है कि तुम्हारी मंजरी माताजी कैसी हैं। अबकी हो तो झूलन है। बस, हुक्म हो गया। पुकार हुई—देवोत्तर के नायब, सुनो नायब, झूलन में मंजरी ऑपेरा की यात्रा होगी। नायब ने कहा : भैया लोगों ने कहा था, वीणा पाणि या—। तभी डॉट पड़ी समझ रहे हैं न, उस समय मैंने मूड में आकर तीन चिलम फूंक डाली। उसी झोंक मे चिल्ला पड़े : कभी नही। मंजरी ऑपेरा होगा। मैंने कहा : तो फिर मालिक, रथ के दिन ही मेरे साथ आदमी भेज दीजिये। उस दिन, समझ रहे हैं न, दल का महूरत है। वह सज्जन उसी दिन बयाना दे जायेगा। बस, वही हुक्म हो गया। बोले, यह दल जरूर ही अच्छा दल होगा। रथ के दिन यात्रा की शुरूआत। खूब जमेगा। जय-जयकार होगी। यह कह कर बोले : जानते हो न, इसी रथ के दिन पृथ्वी की सृष्टि हुई है। मेरी दादी कहती थीं और उनका कहना झूठ नही हो सकता है। नारायण बोले : रथ पर चढ़ूँगा। विश्वकर्मा, रथ बनाओ। लेकिन रथ चलेगा कहाँ ? बुलाओ ब्रह्मा को। ब्रह्मा, मैं रथ पर चढ़ूँगा, जगह चाहिए। तैयार करो। ब्रह्मा क्या करे, पृथ्वी की सृष्टि की। रथ चला—पृथ्वी भी चलने लगी। मंजरी ऑपेरा चलेगा, खूब चलेगा। समझ रहे हैं न, मैंने भी कहा, चलेगा। समझ रहे हैं न, मैंने साधक नीलकंठ जी से यात्रादल का ककहरा सीखा है। बारह वर्ष की उम्र में चरवाहा बालक का पार्ट करता था। मुखर्जी साहब कहते थे, समझ रहे है, ओ योगानन्द—'

रीटू बाबू बोला, 'अब तुम चुप हो जाओ योगानन्द तुम्हारी तनख्वाह में चार रुपये की बढ़ोत्तरी हुई है। हुक्म हो गया है। अब नीलकंठ जी की बात रहने दो।'

रतनपुर के बूढ़े मालिक सरकार की बात संभवतः सही है। रथ का दिन शुभ है। हो सकता है इसी दिन इस पृथ्वी की सृष्टि हुई

चलना शुरू किया—नारायण ने जगन्नाथ का रूप धारण किया और मनुष्य द्वारा खींचे जानेवाला रथ उसी दिन से चलता आ रहा है। लेकिन पृथ्वी जिस कक्ष-पथ पर चलती आ रही है वह कक्ष-पथ रतनपुर की तरह कीचड़ से भरा हुआ नहीं है, महाप्रभु के रथ का पथ पुरी में समुद्र के किनारे बालू पर है और वहाँ कीचड़ नहीं है। मंजरी ऑपेरा के रंगकर्मियों ने यात्रा का अभिनय खूब उत्साह के साथ सम्पन्न किया। अभिनय बहुत ही अच्छा रहा। लेकिन अभिनय समाप्त कर बाबू लोगों के देवता का प्रसाद—पूरी, बैंगन का भुजिया, कुम्हड़ा-आलू की सब्जी और बूंदी मिठाई खाने के बाद स्टेशन आने की बारी आते ही उनका सारा उत्साह ठंडा पड़ गया।

सवेरा हो गया है। लेकिन आसमान में सघन बादल हैं। बरसाती हवा जोरों से चल रही है और बारिश होना भी शुरू हो गया है। कल से ही आसमान में बादल मँडरा रहे थे परन्तु भोर तक बरसात नहीं हुई। अभिनय का कार्य अच्छी तरह सम्पन्न हो गया है। ऐसा शायद बाबू लोगों के देवता की दया और उनके सौभाग्य से ही हुआ है। अब जो बारिश हो रही है वह यात्रादल के लोगों की बदकिस्मती के कारण ही हो रही है। बाहर निकलना ही है, पाँच बजे पाँचून्दी से गाड़ी खुलती है। यह ट्रेन नहीं मिलती है तो फिर नौ बजे ट्रेन है। इस ट्रेन से जाने से कटोया में गाड़ी बदलनी पड़ेगी और एक बजे तक ट्रेन हावड़ा पहुँच जायेगी। नौ बजे से जाने पर हावड़ा पहुँचने में शाम हो जायेगी। उठो, उठो, सब लोग उठ जाओ, गोपाल मैनेजर चिल्ला रहा है। चार बैलगाड़ियाँ आयी हैं। आने के समय बारह बैलगाड़ियाँ थीं। दो बैलगाड़ियों में माल-असबाब रखा गया था, बाकी दस में चार-पाँच-छः आदमी बैठ गये थे। रसोइया, नौकर, विन्यासकारी वगैरह माल लदी बैलगाड़ी पर माल के साथ आये थे। इसे बूढ़े मालिक की दया या महानता ही कहनी चाहिए। वरना सब लोगों के लिए गाड़ी मिले, यात्रादल के नसीब में ऐसा कम ही देखने को मिलता है। लेकिन यह सौभाग्य उस समय के बजाय अभी प्राप्त होता तो अच्छा रहता। यह सवेरे का समय था और यह है पौ फटने के पहले का समय। शरीर थकान से भर गया है। उस पर सबको कच्ची नींद से जगना पड़ा है। आज यात्रा का मंचन देर से हुआ था। हवन समाप्त होने के बाद भोग लगाया गया था और मजलिस ग्यारह बजे बैठी थी। अभिनय में चार घण्टे लगे थे। उसके बाद प्रसाद खाने की बारी थी। बाबू लोगों ने बचाने की शर्त के बाहर जाकर रात में देवता का प्रसाद पूरी-मिठाई के साथ बैंगन का भुजिया और कुम्हड़ा-आलू की सब्जी भेज दी थी। न भेजते तो सबको 'खिचिट'-खिचिट में रसोई बनाना पड़ता। यात्रादल के अधिकांश दलों में दल की ओर से रसोई नहीं पकती है, इसके अलावा यानी ऐक्टर को खुराकी दे दी जाती है। उस खुराकी की दर पहले दो आना, दस पैसा, बारह आना थी और किसी-किसी को सोलह आना यानी एक रुपया दिया जाता था। अब यह दर क्रमशः बाजार के भाव अनुसार बढ़ी-बढ़ी अन्त में इस सदाई के बाजार में छः आना से डेढ़ रुपया तक

हो गयी है। भर पेट खाकर या ऐक्टिंग करते हुए खाना खाने का काम कोई नही करता। ऐसा करना मना है। किसने मनाही की है, मालूम नही; तब हाँ, खाना खा कर जो लोग ऐक्टिंग करते हैं वे कुछ ही दिनों के दरमियान नाकाम हो जाते हैं। ज्यादातर लोगों को दमे की बीमारी हो जाती है। दमे की बीमारी पेट की गडबडी के कारण होती है और अभिनय के बाद रसोई का झमेला बेकार होता है।

जो लोग विज्ञ हैं वे उसे रात का आखिरी पहर कहते है। खाना खाने जाते हैं तो बेस्वाद मालूम होता है। इसलिए खुराकी अच्छी होती है। खुराकी लेकर छोटे-बड़े मँझोले ऐक्टर मिलकर एक एक दल बाँध लेते हैं ओर स्टोव जलाकर रसोई पकाते हैं। जितना कम हो सके, पकाते हैं। कुछ लोग रोटी, कुछ लोग पराठे, उसके साथ थोड़ा-सा भुजिया, गुड़ या मिठाई—बस इतना ही। कोई-कोई फरकी-चिउडा से काम चला लेता है। इन दलों का नाम फिलट या फिलिट है। किसने इसे चालू किया था, उसके बारे में किसी को मालूम नहीं।

उन लोगों का इतिहास नही है—किसी ने न लिखा है और न लिखेगा। सभ्य कलकत्ते में उनकी खोज खबर कोई नही रखता—वहाँ वे संस्कारहीन माने जाते है। उन लोगों की मजलिस कलकत्ते के बाहर जमती है—फूलते-फलते गाँवों में, छोटे-छोटे शहरों मे। कलकत्ता महानगरी के बाहर जिन तृष्णार्त गंगाहीन देश के लोगो की आत्मा गंगाजल की प्रत्याशी है, रुक्ष, धूसर जटा और देह लेकर जो लोग कहावत मे वर्णित शिव की तरह नहर और बिल का कीचड़ पागल की तरह मथते रहते हैं, उन्ही के मस्तक पर गंगाजल ढालने के लिए ये संस्कारहीन मजदूर दल कन्धे पर कामर लिए चक्कर काटते रहते हैं। गंगाजल ढाल, मनुष्य की तृपित आत्मा को तृप्तकर ये लोग विदा होकर चले आते हैं। रिश्ता समाप्त हो जाता है। फिर कौन उनकी खोज-खबर रखता है। इसलिए फिलिट नाम कौन याद रखता है। वे लोग भी नही रखते। वे लोग होते भी है विचित्र। अकसर मनी आर्डर फार्म भरने के समय सोचते है, पत्नी विभा का पूरा नाम विभावती है या विभारानी। पुत्र घन्ट का अच्छा नाम कुछ रखा गया था? तब हाँ झूलन की रात फिलिट रसोई की झंझट से छुटकारा पाकर प्रसन्न मन खाना खाने बैठने पर किसी-किसी का हाथ एक दो लमहे के लिए थम गया था। योगा बाबू को एक बात याद आयी थी—तब वह कण्ठजी के दल में था। सद्य युवा वय मे सहगान कर रहा है। किराये का मकान छोड़ दिया है। प्रथम विवाह पहले ही हो चुका था, अभी-अभी दूसरी शादी की है। पत्नी को घर पर रखकर ही गीत गाने मानकर आया था। उस बार मानकर की महिलाओं ने कण्ठ जी को खिल्ली उड़ायी थी। कण्ठ जी मजलिस मे उतरकर कृष्ण के सामने खड़े होकर गीत गा रहे थे—

पुरुष कहाँ करता है मान ?
महिलाएँ ही करती मान।

मजलिस मे ही गीत को स्वर-लय में बाँधकर वे गाने में निपुण थे। इस गीत को सुनकर मानकर के पुरुष-स्त्री लज्जित हो उठे थे और जी खोलकर मान-सम्मान किया था। रात में उन लोगों ने पूरी, कदम्ब फूली—मानकर की कदम्ब फूली, मिठाई खाई थी। योगानन्द मानकर को कुछेक सुप्रसिद्ध कदम्ब फूली मिठाई जेब में भरकर अपनी पत्नी के लिए ले आया था। आज भी खाना खाने बैठने पर उस दिन की कदम्ब फूली जेब मे डालने की बात याद आयी थी। नाटू बाबू को भी अपने छोटे-छोटे बच्चों की याद आयी थी। वह याद एक उसाँस के साथ ही विलीन हो गयी थी। बिना गये उपाय ही क्या है? खाना खाने के बाद ही जाने की बारी है। दुःख झाँक कर भय से भाग गया है। शर्म लग रही है। जिसके मन में दुःख झाँक रहा है वह उसे जबरन दूर भगा रहा है।

योगा बाबू ने ही खाने के समय कहा था, 'लो भैया, जमकर खा लो, कच्चा है या पका हुआ, गरम या ठण्डा—यह सब देखने की जरूरत नहीं। मतलब है कि रात तीन बजे स्टोव लेकर झंझट में फँसना नहीं पड़ा। पैसा खर्च नहीं करना पड़ रहा है, खा लो। उसके बाद सज-सँवर कर जहाँ जिसको मौका मिले, दीवार से टिककर आध घण्टे के लिए सुस्ता लो।'

किसी व्यक्ति ने कहा था, 'पूरियाँ बिल्कुल कच्ची थीं।'

बड़े-बड़े अभिनेताओं के खाने के स्थान में बूढ़े बाबू के आदमी हाजिर थे। वहाँ अच्छी तरह तली पूरियाँ ही परोसी गयी थी। इसके अलावा वे शराब पिये हुए थे।

खाना खत्म होने के एकाध घण्टे के बाद ही गोपाल ने चिल्लाना शुरू कर दिया था, 'उठो-उठो, सब लोग उठ जाओ। गाड़ी आ गयी है। विपिन, शिबू, राधा चरण, रसोइया, हरू, रीनू मास्टर, नाटू बाबू, शिवनन्दन—'

मानिक यानी गोरा बाबू को पुकारने का गोपाल मैनेजर को साहस नहीं हो रहा है। गोरा बाबू रेलगाड़ी से ही बिल्कुल गम्भीर दीख रहा है। उसने शिवनन्दन को बुलाया।

सोया कोई भी नही था। सावन का महीना, बरसात की उमस, दीवार से टिककर सभी सोने का काम निबटा रहे थे। थोड़ी देर का आराम था। लेकिन ऐसी ही हालत में बहुतों की नाक बज रही थी। कलकत्ते की बड़ी यात्रा पार्टी की एक मौखिक शर्त रहा करती है—कम से कम दो कमरे देने पड़ेंगे। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, चन्द्रमा, भानु, वरुण की तरह बड़े ऐक्टरों के लिए अलग कमरा रहता है, बाकी लोगों के लिए एक बड़ा-सा कमरा देना पड़ता है। महिला यात्रा दल के लिए तीन कमरों की जरूरत पड़ती है—एक कमरा महिलाओं के लिए। रतनपुर के मालिक ने घर से

सटा एक विशाल फूस का बंगला दे दिया था। पांच कमरे थे, दोनों किनारे दो बरामदे। कमरे भी अच्छे थे, फर्श पक्के थे और मिट्टी की दीवार होने के बावजूद चूने से पोताई की गयी थी। पक्के मकान जैसा। मकान नया-नया बना था और उच्च प्राइमरी बालिका विद्यालय था। काफी जगह रहने के कारण सभी मजे में इधर-उधर पड़े थे। मंजरी और गोरा बाबू एक कमरे में, रीतू बाबू, नाटू बाबू, मणि बाबू और नये कॉमिक पार्ट के ऐक्टर बाबुल बोस एक कमरे में हैं। शोभा, आशा, गोपाली और नयी लड़की अलीदास एक दूसरे कमरे में। बाकी दो कमरों में से एक हाल और एक छोटे कमरे में बचे-खुचे सभी लोग हैं और उनकी संख्या लगभग पैंतालीस-चालीस है। मगर उसमे उन्हें कोई असुविधा नहीं हुई—खटाल की तरह घर पर भी एक-दूसरे से सटकर रात बितानी पड़ती है। कितनी ही सर्दियों की रात रेलवे स्टेशन, मुसाफिर-खाने में चादर या कम्बल लपेट सिकुड़कर सोना पड़ा है। असुविधा यदि हुई है तो बाबुल बोस और अलीदास को। ये लोग नये हैं। इसके पहले यात्रा दल में अभिनय करने कभी बाहर नहीं निकले थे। पढ़े-लिखे जो युवक-युवती आजकल कलकत्ते के एमेच्योर थियेटर में पार्ट करते हैं, सिनेमा वाले के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहते हैं, ये लोग उसी दल के हैं। अलीदास सवेरे उठने पर बगैर मुंह धोये, बालों में कँघी किये, चेहरे पर पाउडर और होठों पर लिपस्टिक लगाये बाहर नहीं निकलती। बेचारी बिस्तर से टिककर, दोनों आपस मे जुड़े हाथों के बीच घुटने सिकोड़कर अध-सोयी हालत में पड़ी है—इसलिए कि कहीं नींद न आ जाये।

शोभा, गोपाली और आशा बँधे हुए बिस्तर पर आराम से सोयी हुई है। अलीदास का सिर तन्द्रा से बोझिल हो गया है। मन विरक्त और बेचैन जैसा हो उठा है। उस कमरे में बाबुल बोस की भी हालत अलका या अली जैसी ही है। वह भी यात्रा दल मे शरीक होकर पहले पहल मुफस्सिल में आया है। कलकत्ते की दो-चार यात्रा पार्टी की मजलिसों में उतर चुका है। लेकिन मुफस्सिल के यात्रा दल के बारे में वह कोई धारणा नहीं बना सका था। आई० ए० तक पढ़ा है। पढ़ते-पढ़ते ही नव-नाट्य के आन्दोलन के खिंचाव में आ गया था और कुछ ही दिनों के अन्दर नाम भी कमा लिया था। उसके बाद भाई से झगड़ इसी क्षेत्र में कूद पड़ा।

बाबुल ने स्वयं ही उस दिन रीतू बाबू को बताया था, 'समझ रहे हैं न सर, वेद व्यास की तरह विपुल तेजस्विता के साथ निकल पड़ा था। व्यासदेव गंगा के इस पार नवीन काशी की स्थापना करने के ख्याल से तपस्या करने बैठे थे, यह बात जानते हैं न ! सो व्यासदेव की तपस्या निष्फल तो हो नहीं सकती। किन्तु छलना-मयी का छल —। बस, काशी की स्थापना तो हो गयी परन्तु छलनामयी का छल, व्यास काशी में मरने से 'ऐस' होगा—व्यास ने ही यह निश्चित कर दिया। 'ऐस' और व्यास मे समता है—मगर सम्मान में क्या अन्तर है, समझते ही होंगे। 'ऐस' का अर्थ है गधा, व्यास का मतलब महाकवि- यानी स्वयं भगवान। सोचा था, होल कलकत्ते को थियेटर से नशे में डुबो दूंगा, फिल्म से होल बंगाल को।

मजलिस में ही गीत को स्वर-लय में बाँधकर ये गाने में निपुण थे। इस गीत को सुनकर मानकर के पुरुष-स्त्री लज्जित हो उठे थे और जो गोतकर मान-सम्मान किया था। रात में उन लोगों ने पूरी, कदम्ब पूरी—मानकर की कदम्ब पूरी, मिठाई खाई थी। योगानन्द मानकर की कुछेक गुप्रसिद्ध कदम्ब पूरी मिठाई जेब में भरकर अपनी पत्नी के लिए ले आया था। आज भी खाना खाने बैठने पर उस दिन की कदम्ब पूरी जेब में डालने की बात याद आयी थी। नाटू बाबू को भी अपने छोटे-छोटे बच्चों की याद आयी थी। वह याद एक उसाँस के साथ ही विलीन हो गयी थी। बिना गये उपाय ही क्या है? खाना खाने के बाद ही जाने की बारी है। दुःख झाँक कर भय से भाग गया है। शर्म लग रही है। जिसके मन में दुःख झाँक रहा है वह उसे जबरन दूर भगा रहा है।

योगा बाबू ने ही खाने के समय कहा था, 'लो भैया, जमकर खा लो, कच्चा है या पका हुआ, गरम या ठण्डा—यह सब देखने की जरूरत नहीं। मतलब है कि रात तीन बजे स्टोव लेकर झंझट में फँसना नहीं पड़ा। पैसा खर्च नहीं करना पड़ रहा है, खा लो। उसके बाद सज-सँवर कर जहाँ जिसको मौका मिले, दीवार से टिककर आध घण्टे के लिए सुस्ता लो।'

किसी व्यक्ति ने कहा था, 'पूरियाँ बिल्कुल कच्ची थीं।'

बड़े-बड़े अभिनेताओं के खाने के स्थान में बूढ़े बाबू के आदमी हाजिर थे। वहाँ अच्छी तरह तली पूरियाँ ही परोसी गयी थी। इसके अलावा वे शराब पिये हुए थे।

खाना खत्म होने के एकाध घण्टे के बाद ही गोपाल ने चिल्लाना शुरू कर दिया था, 'उठो-उठो, सब लोग उठ जाओ। गाड़ी आ गयी है। विपिन, शिबू, राधा चरण, रसोइया, हरू, रीतू मास्टर, नाटू बाबू, शिवनन्दन—'

मालिक यानी गोरा बाबू को पुकारने का गोपाल मैनेजर को साहस नहीं हो रहा है। गोरा बाबू रेलगाड़ी से ही बिल्कुल गम्भीर दीख रहा है। उसने शिवनन्दन को बुलाया।

सोया कोई भी नहीं था। सावन का महीना, बरसात की उमस, दीवार से टिककर सभी सोने का काम निवटा रहे थे। थोड़ी देर का आराम था। लेकिन ऐसी ही हालत में बहुतों की नाक बज रही थी। कलकत्ते की बड़ी यात्रा पार्टी की एक मौखिक शर्त रहा करती है—कम से कम दो कमरे देने पड़ेंगे। ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, चन्द्रमा, वायु, वरुण की तरह बड़े ऐक्टरों के लिए अलग कमरा रहता है, बाकी लोगों के लिए एक बड़ा-सा कमरा देना पड़ता है। महिला यात्रा दल के लिए तीन कमरों की जरूरत पड़ती है—एक कमरा महिलाओं के लिए। रतनपुर के मालिक ने घर से

सटा एक विशाल फूस का बंगला दे दिया था। पाँच कमरे थे, दोनों किनारे दो बरामदे। कमरे भी अच्छे थे, फर्श पक्के थे और मिट्टी की दीवार होने के बावजूद चूने से पोताई की गयी थी। पक्के मकान जैसा। मकान नया-नया बना था और उच्च प्राइमरी बालिका विद्यालय था। काफी जगह रहने के कारण सभी मजे में इधर-उधर पड़े थे। मंजरी और गोरा बाबू एक कमरे में, रीतू बाबू, नाटू बाबू, मणि बाबू और नये कॉमिक पार्ट के ऐक्टर बाबुल बोस एक कमरे में हैं। शोभा, आशा, गोपाली और नयी लड़की अलीदास एक दूसरे कमरे में। बाकी दो कमरो में से एक हाल और एक छोटे कमरे में बचे-खुचे सभी लोग हैं और उनकी संख्या लगभग पैंतालीस-चालीस है। मगर उसमें उन्हें कोई असुविधा नही हुई—खटाल की तरह घर पर भी एक-दूसरे से सटकर रात बितानी पड़ती है। कितनी ही सर्दियों की रात रेलवे स्टेशन, मुसाफिर-खाने में चादर या कम्बल लपेट सिकुड़कर सोना पड़ा है। असुविधा यदि हुई है तो बाबुल बोस और अलीदास को। ये लोग नये हैं। इसके पहले यात्रा दल में अभिनय करने कभी बाहर नही निकले थे। पढ़े-लिखे जो युवक-युवती आजकल कलकत्ते के एमेच्योर थियेटर मे पार्ट करते हैं, सिनेमा वाले के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहते है, ये लोग उसी दल के हैं। अलीदास सवेरे उठने पर बगैर मुँह धोये, बालों मे कँघी किये, चेहरे पर पाउडर और होठों पर लिपस्टिक लगाये बाहर नही निकलती। बेचारी बिस्तर से टिककर, दोनों आपस मे जुडे हाथों के बीच घुटने सिकोड़कर अध-सोयी हालत में पड़ी है—इसलिए कि कही नींद न आ जाये।

शोभा, गोपाली और आशा बँधे हुए बिस्तर पर आराम से सोयी हुई है। अलीदास का सिर तन्द्रा से बोझिल हो गया है। मन विरक्त और बेचैन जैसा हो उठा है। उस कमरे में बाबुल बोस की भी हालत अलका या अली जैसी ही है। वह भी यात्रा दल में शरीक होकर पहले पहल मुफस्सिल मे आया है। कलकत्ते की दो-चार यात्रा पार्टी की मजलिसों में उतर चुका है। लेकिन मुफस्सिल के यात्रा दल के बारे में वह कोई धारणा नहीं बना सका था। आई० ए० तक पढ़ा है। पढते-पढते ही नव-नाट्य के आन्दोलन के खिंचाव मे आ गया था और कुछ ही दिनो के अन्दर नाम भी कमा लिया था। उसके बाद भाई से झगड़ इसी क्षेत्र मे कूद पड़ा।

बाबुल ने स्वयं ही उस दिन रीतू बाबू को बताया था, 'समझ रहे हैं न सर, वेद व्यास की तरह विपुल तेजस्विता के साथ निकल पड़ा था। व्यासदेव गंगा के इस पार नवीन काशी की स्थापना करने के ख्याल से तपस्या करने बैठे थे, यह बात जानते हैं न ! सो व्यासदेव की तपस्या निष्फल तो हो नही सकती। किन्तु छलना-मयी का छल—। बस, काशी की स्थापना तो हो गयी परन्तु छलनामयी का छल, व्यास काशी में मरने से 'ऐस' होगा—व्यास ने ही यह निश्चित कर दिया। 'ऐस' और व्यास मे समता है—मगर सम्मान में क्या अन्तर है, समझते ही होंगे। 'ऐस' का अर्थ है गधा, व्यास का मतलब महाकवि• यानी स्वयं भगवान। सोचा था, होल कलकत्ते को थियेटर से नशे मे डुबो दूँगा, फिल्म से होल बंगाल को।

उसके बाद डब्ल एच, हाउस-हॉर्स, यानी घर, गाड़ी । वट—बही ऐस । ऐस का मानी बेलून होता है, यह नही जानता था । माई गुदा, सब फटाफट फट गया ।'

रीतू बाबू हँसते हुए बोला था, 'वाह-वाह ब्रदर ! आप बहुत अच्छा बोलते हैं । मगर घबराइये नही । दुनिया के कारखाने में एक ओर गधे को पीटकर घोड़ा बनाया जाता है और दूसरी ओर घोड़े से बोझा ढुलाकर और उसे पीट-पीटकर गधा बनाया जाता है । सोच-क्यों रहे हैं ? अहीन्द्र चौधरी ने यात्रा से ही तालीम की शुरू-आत की थी । छवि विश्वास यात्रा में पार्ट कर चुके हैं । तब हाँ, पेशेवर की हैसियत से नहीं । आपका भाग्य भी खुल सकता है । और अगर न खुले तो मुझे देखिये । दुखी जैसा दीख रहा हूँ ? अगर दिखायी पड़ूँ तो कहूँगा यह आपकी गलती है । मैं सुखी हूँ ।'

बाबुल ने कहा में कहा था, 'वण्डरफुल । शुरू दिन ही आपसे रिश्ता कायम नही किया । आप लोगों के दल का नियम है मास्टर साहब । मैं आपको बिग ब्रदर कहा करूँगा । चेहरे से भी बिग, सम्मान की दृष्टि से भी बिग, उम्र से भी बिग—यानी बहुत बड़े । जरा फ्रूट डस्ट तो दीजिए, फ्रूट डस्ट ।'

रीतू बाबू ने कहा था, 'उनसे आपने रिश्ता कायम किया है ? उनसे तो बहुत पहले से ही परिचय है ।'

'उनसे मेरा रिश्ता कायम हो चुका है । उन्हें मैं 'माइ लार्ड' कहता हूँ ।'

गोरा बाबू के घर पर ही बैठकर यह सब बात हुई थी । रथयात्रा के दिन ही नियुक्ति के अनुसार बाबुल अलका को गोरा बाबू के घर पर ले आया था ।

गोरा बाबू ने हँसकर कहा था, 'उसे मैं दिलदार कहता हूँ ।' माथे तक अपने जुड़े हाथों को ले जाते हुए गोरा बाबू ने उसके बाद कहा था, 'यह डो० एस० राय का अमर पात्र है । लेकिन अलका, तुम्हें कैसा लग रहा है ?' अलका चुपचाप बैठी थी । शर्तनामे पर दस्तखत कर जाने के समय वह बोली थी, 'मुझे अच्छा ही लग रहा है ।'

गोपाल घोष की पुकार सुनकर बाबुल ने स्वस्ति की साँस ली और उठकर बैठ गया । रीतू बाबू को पुकारा, सुन रहे हैं, सर । बिग ब्रदर !'

रीतू बाबू आँख मूँदे ही हँसते हुए बोला, 'हूँ ! लगता है गोपाल पुकार रहा है । जय तारा !' यह कह कर रीतू बाबू उठ कर बैठ गया । एक सिगरेट सुलगाकर बोला, 'लगता है तुम्हें नींद नही आयी ।'

'माई ईश्वर ! इस हालत में नींद ? इस बिस्तर से टिककर फोर्टीफाइव मिनट की नींद !'

सिगरेट का एक लम्बा कश लेकर रीतू बाबू बोला, 'आदत हो जायेगी। उसके बाद ठोड़ी खुजलाते हुए बोला, 'उफ, यह एक रोग ही है, यह दाढ़ी ! दस घन्टा बीतते न बीतते कड़ी हो जाती है और खुजलाने लगती है।'

उसके बाद बोला, 'हम लोग ऐसे में भी सो लेते हैं। शरीर जरा हल्का हो जाता है। अरे बोतल कहां है ? अभी थोड़ी सी पी लेने से ही चंगा हो जाऊंगा और नींद आ जायेगी। नाक बजने लगेगी।'

बाबुल बोला, उफ् ऐसे में नींद ! जैसे मस्टर्ड ऑयल डाल कर नींद ? माइ खुदा।'

उधर नाटू बाबू, मणिबाबू, रमणीनाग वगैरह एक-एक कर उठने लगे और अँगड़ाई लेने लगे।

बाबुल बोला, मुझे इतना 'करोध' आ रहा था बिगब्रदर, कि इच्छा हो रही थी, नाक में थोड़ी रा संघुनी डाल लूँ।'

रीतू बाबू 'खी-खी' कर हँस पड़ा।

'लीजिये, बोतल लीजिए, खोज रहे थे न।'

गोरा बाबू ने प्रवेश किया। 'उठ चुके हैं ?' गोरा बाबू क्लान्त और गम्भीर हैं।

'जरूर। इस बात पर कोई ना नहीं कह सकता।' रीतू बाबू मुसकराया। उसके बाद बोला, 'ठीक-ठीक उत्तर देना पड़ेगा।'

गोरा बाबू क्लान्त रहने पर भी हँस पड़ा और बोला, 'मैं दे सकता हूँ। नहीं तो'—जरा रुककर बोला, 'अब क्या कहूँ ? यह न तो चित्तौड़ की सरहद है और न ही तीन तुर्की सिपाहियों ने छिपकर प्रवेश किया है।'

'फुल मार्क दिया जायेगा देवता। किसी जमाने में एमेच्योर में 'पद्मिनी' खेला गया था, मैंने गोरा का पार्ट लिया था। आपने भी पद्मिनी में पार्ट किया है क्या ? याद तो ठीक से ही है। मगर सर, यह तो बताइये कि आपकी तबियत कैसी है ?'

बाबुल बोस आश्चर्य में आकर उन लोगों की बातें सुन रहा था। गोपाल घोष यमदूत की तरह आकर खड़ा हो गया, 'चार से अधिक बैलगाड़ी नहीं आयी है बाबू। सो भी उनमें से दो पर टप्पर हैं, बाकी खुली हुई हैं। आसमान में बादल है। बूंदाबांदी हो रही है। डेढ़ मील रास्ता जाना है।'

अबकी बाबुल बोल पड़ा, 'विदाउट गाड़ी पादमेकं न न गच्छामि। कह दीजिए, हम लोग नहीं जायेंगे। सब लोगों को सो जाने कहिये। जितना सब—'

गोरा बाबू रीतू बाबू से बोला, 'आइए मास्टर साहब, देखें।'

'चलिये'

दोनों व्यक्ति चले गये। बाबुल बोस बोला, 'माइ खुदा ! ये लोग तो बिना कुछ बोले चले गये। बात क्या है ? पैदल जाना पड़ेगा क्या ? मैं नहीं जाऊंगा।'

मणि बाबू और रमणी नाग अब तक निरासक्त की तरह सिगरेट के कश ले रहे थे। नाटू बाबू अपना सूटकेस खोलकर सिगरेट के दो पैकेट कम से कम दस बार अंदर डालकर बाहर निकाल रहा था और इस-उस चीज को हटाकर सहेजने के काम में मगन था, मानों इन बातों से उसका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं। अब यह बाबुल बोस की बातों के जवाब में बोला, चिन्ता नहीं करें, आपके लिए कोई न कोई इन्तजाम कर दिया जायेगा। आप नये आदमी हैं, लिये पड़े—दल में यह क्लास—'

'रविश। मानो मैं सिर्फ अपने ही बारे में सोच रहा हूँ। महिलाएँ और छोटे-छोटे बच्चे—। गाड़ी नहीं आयेगी तो हम लोगों में से कोई नहीं जायेगा।'

रमणीनाग हँसकर बोला, 'सबेरे बाबू लोगों का दरबान आकर कहेगा, जाओ, निकलो।'

'जाओ ? निकलो ? कहने से हो गया ? ट्रेन नहीं है, जायेंगे कहाँ ?'

'जहाँ ये आँखें ले जाये।'

'और खायेंगे क्या ?'

'मैदान में जा कर मरो। आप अनबुझ की तरह बातें कर रहे हैं। उन लोगों से दो दिन का बयाना था, सो हो चुका है। अब रहने ही क्यों देंगे ? या फिर खाना ही क्यों देंगे ?'

'भाई खुदा ! ईश्वर अल्ला तेरे नाम, यही तुम्हारा न्याय है ?'

'हर चीज का अपना अपना नियम होता है। यात्रादल का यही नियम है।'

उस ओर से योगा बाबू का क्रुद्ध चीत्कार सुनायी पड़ा तो बातचीत का सिल-सिला थम गया। योगा मास्टर चिल्ला रहा है, 'जी नहीं, मैं नहीं जाऊँगा, आप व्यवस्थापक हैं, आप ही जाइये। अभी अलसुबह सभी सोये होंगे। मैं 'गाड़ी-गाड़ी' कह कर नींद तोड़ दूँ और मार खाऊँ ? जरूरत के वक्त खुशामद—तुम जाओ योगा मास्टर !'

उस तरफ से सम्भवतः मंजरी और गोरा बाबू जिस कमरे में थे, गोरा बाबू की पुकार सुनायी पड़ी, 'झगड़ा नहीं कीजिए, गोपाल मामा। उसी से काम चल जायेगा।'

गोरा बाबू की वजनी आवाज सुनायी पड़ी, 'सबको उठने को कह दो, नौकरों से माल असबाब गाड़ी पर रखने को कहो। क्या करोगे, उपाय ही क्या है ?'

पूरा दल चार बैलगाड़ियाँ लेकर ही रवाना हुआ। वरना उपाय ही क्या था ? एक टप्पर वाली गाड़ी पर पाँच महिलाएँ बैठीं, दूसरी टप्पर वाली गाड़ी में वेश-भूषा का बक्सा रखा गया और उस पर बाबुल बोस बैठ गया। बारिश हो रही है। अचानक जोरों से बारिश होने लगे तो। लिबास भीग कर बरबाद हो जायेगा। बाबुल के समीप नाटू और दो छोटे-छोटे बच्चे बैठे है। एक खुली गाड़ी में छोटे-बड़े असबाब का ढेर है, उसके अलावा बर्तन, तीर-धनुष, तलवार, ढाल के वजन बक्सा उन्ही सामानों

के बीच जगह बनाकर गोरा बाबू और रीतू बाबू बैठे हैं। दूसरी खुली गाड़ी में गोपाल और लड़कों का दल । बाकी लोग इस मेघिल भोर को रोशनी में पैदल चल रहे हैं। योगा मास्टर भी पैदल चल रहा है। योगा मास्टर को गोपाल ने गाडी में बैठने नहीं दिया। योगानन्द ने कहा था, 'कुछ परवाह नहीं बाबा। योगा मास्टर इतना छोटा रास्ता बात की बात में तय कर लेगा। ब्राह्मण की सन्तान हूँ, पूजा करने के पहले चाय के अलावा दूसरी कोई चीज खाता-पीता नही, यहाँ तक कि पानी भी नहीं। अगस्त्य मुनि के वंशज हैं हम, पैदल चलकर तय कर लेते हैं।'

योगा मास्टर मन ही मन बुदबुदा रहा है। बाकी लोग चुपचाप हैं। इस भोर बेला में, बूँदाबाँदी के बीच, रात-भर के परिश्रम के बाद सब लोग अभिभूत जैसे आगे बढ़ रहे हैं। आकाश के बादल, बूँदाबाँदी, बारिश, दोनों ओर बोये गये धान को छू कर बहने वाली हवा की सरसराहट, उनके मन में कोई हलचल पैदा नही कर रही है। उनमें से बहुतों के कान में अब तक संगत का स्वर गूँज रहा है। किसी-किसी के मन में नाटक का कोई अंश तैर रहा है। सुरेन गोरोई दूत अनुचर इत्यादि का पार्ट करता है। वह रास्ते के किनारे-किनारे चल रहा था। अचानक उसका पैर कीचड भरे एक गड्ढे में पड़ गया और वह एक बारगी पछाड़ खा कर गिर पड़ा। दल के लोग चिल्लाये नहीं। सिर्फ इतना ही कहा, 'गिर पड़े ? उठ जा।' कुछ लोग रुक गये। बाकी लोग चलने लगे। सुरेन बड़ा ही अन्यमनस्क था। बेचारा दूत का पार्ट कम से कम दस साल से कर रहा है, फिर भी गाँजे का दम कस कर लगाने से पार्ट भूल जाता है। कल रीतू बाबू राजा था, उसके सामने उसे कहना था : यह रही फूलों की माला और यह तलवार। क्या लेना चाहते हैं ?

नाटक के निर्देश के अनुसार रीतू बाबू ने तलवार ली थी। फूलों की माला फेंक दी थी। सुरेन को चाहिये था कि कि वह माला उठाकर चल दे, लेकिन गलती से वह माला अपने गले में डाल कर चला आया था। रीतू बाबू ने स्थिति को सँभाल लिया था। कहा था, 'ठीक किया है। यह माला बेड़ी है, प्रभु के प्रतिनिधि के रूप में तू अपने गले में डाल रहा है, जा-जा, दूर चला जा।' मजलिस में किसी की समझ में गलती नहीं आयी थी, लेकिन वेशमन्दिर में रीतू बाबू ने बुलाकर कहा था, अरे यह क्या किया तूने ? गाँजे के कितने कश लिए थे ? अच्छा जा, कलकत्ता लौटने पर निपटा जायेगा।'

यही बात सोच रहा था वह। नौकरी चली जायेगी तो वह आखिर करेगा क्या ?

जो लोग खड़े थे उनके साथ योगा बाबू भी खड़ा था। सुरेन जैसे ही उठकर

खड़ा हुआ, उसने कहा, 'तुम्हें अक्ल कभी नहीं आयेगी ? रास्ते के किनारे-किनारे चल रहे थे ? हूं !'

इतना कहकर मुड़ते हुए बोला, 'समझ रहे हो जी, तब मैं कण्ठ जी का दल छोड़कर फकीर अधिकारी के दल में भर्ती हो गया था। समझ रहे हो न, रास्ते पर चलते समय ठोकर लगी। इसी तरह किनारे-किनारे चल रहा था। सो उन्होंने कहा था : 'योगानन्द एक बात सोच रखो, समझ रहे हो या नहीं ?' '...क्या मालिक ?' 'सुनो। दल के बीच से होकर चलना। गठरी-बिस्तर बगल में दबा लेना। हिसाब से नशे का सेवन करना। सभी मावादल के पेशे को अपनाना। बीच से, बीच से होकर क्यों चलना चाहिए ? इसलिए कि गिर पड़े तो थामने के लिए आदमी रहे। रास्ते का बिचला हिस्सा अच्छा रहता है। पीछे रह जाओगे तो कोई खड़ा नहीं रहेगा। आगे-आगे चलना ही नहीं चाहिये। आगे-आगे जो चलेगा रास्ते में सांप-बिच्छू जो भी रहेगा, उसी को डसेगा। और गठरी-बिस्तर बगल में रखो—इधर उधर नहीं खोयेगा। इसके अलावा डेरे पर पहुंचते ही मन के लायक स्थान पर दखल जमा सकोगे।'

दल चुपचाप आगे बढ़ रहा है। बंसी सबके पीछे है और उसके पीछे-पीछे चारों बैलगाड़ियाँ आ रही हैं। सबसे आगे है महिलाओं की गाड़ी। बंसी बीच-बीच में गाड़ी की ओर ताक लेता है। मंजरी सामने ही बैठी है। उसके बाद अलका। उसके बाद शोभा। उसके बाद गोपाली और आशा। वे लोग झपकियाँ ले रही हैं। वरना बंसी को ताकने की हिम्मत नहीं होती, मंजरी से आँखें मिल जातीं। बंसी अलका को देख रहा है। वह लड़की नाचती है बढ़िया। नाच के कारण उसे शाबाशी मिली है। दोष इतना ही है कि उस लड़की का माथा छोटा है और गाने का स्वर अच्छा नहीं है। आशा-गोपाली ने उसका नाम रखा है चिपटामुँही। किसी और ने रखा है कलमुँही। उस लड़की के कपाल के नीचे नाक के, अग्रभाग से लेकर आँखों की कोर तक एक गड्ढा है, इसलिए नाक का अगला भाग थोड़ा ऊँचा भी है। लेकिन बंसी को लगता है, उस लड़की के चेहरे पर वही लावण्य है। आशा अपनी लम्बी गर्दन को पाँवों की थिरकन से छिपा लेती है। इस लड़की का पूरा जिस्म थिरकता है। ताल में खामी है मगर सुधर जायेगा। तब हाँ, दिमाग आसमान पर है। कल बंसी ने उससे कहा था, बहुत अच्छा नाची हैं। सिर्फ 'धन्यवाद' कहकर वह वेशमन्दिर के अन्दर चली गयी थी। बंसी हैरत में आ गया था। केवल एक शब्द कह कर बातचीत का सिलसिला बन्द कर देने का कायदा अजीब है। ठहरो, नाच का पार्ट करना है, ऐसी हालत में बंसी बदन डाँसिंग मास्टर को लाँघकर जाओगी कहाँ ? झपकियाँ ले रही है वह। केवल वही नहीं, सभी महिलाएँ झपकियाँ ले रही हैं।

बंसी जरा किनारे सरक कर खड़ा हो गया। पॉकेट से बोतल निकालकर दो घूंट पी लेगा।

उधर गाड़ी के पिछले हिस्से में, वेश-भूषा की टप्पर वाली गाड़ी में बाबुल बोस, नाडू बाबू, मणि और रमणी नाग झपकियाँ ले रहे हैं। झपकियाँ नहीं ले रहे हैं

बल्कि सो रहे हैं। बंसी जानता है, शरीरों की वह भंगिमा झपकी नहीं है बल्कि गाड़ी के पहिये के हिचकोले से सिर हिल-डुल रहे हैं। बाबुल बोस के बारे में उसे पता नहीं, क्योंकि वह नया-नया आया है। लेकिन नाटू बाबू वगैरह की नाक बज रही है। उसे हंसने का मन हुआ, क्योंकि बाबुल बोस टप्पर का एक पट्टा गिर जाने के भय से पकड़े हुए है। उन लोगों के पीछे गोपाल घोष बच्चों के साथ बैठा है। पट्ठा बूढ़ा! मौत भी नहीं होती उसकी। नीतू नामक उस लड़के को लेकर...छि: छि:। अपनी गोद पर उसका माथा रखकर सोया है और उसका माथा हिल-डुल रहा है। उसके बाद ही खुली गाड़ी पर बाकी चार लड़कों के साथ रीतू मास्टर साहब और मालिक बैठे हैं। ओह, लगता है ये लोग जगे हुए हैं। हां, रीतू बाबू कुछ कह रहे हैं। मालिक के मुंह से लगी सिगरेट की आग बीच-बीच में सुलग उठती है। बंसी रास्ते के किनारे बैठ गया। वरना मालिक तो कुछ बोलेंगे नहीं, मगर रीतू मास्टर गला खंखार कर मजाक में कहेंगे : 'हूं हूं हूं, लगता है श्रीमान बंसी बदन हैं। पीछे की तरफ क्यों खिसक रहा है रे? उससे तो अच्छा है बैठ जा। कोई कुछ भी नहीं पूछेगा।' गाड़ी बगल से जा रही है, एक बार गरदन मोड़कर झट से देख लिया। कानों में बातचीत के टुकड़े आ रहे हैं। मालिक वगैरह बातचीत करने में मशगूल हैं। कुछ शब्द उसके कान में आये। हवा पूरब से पश्चिम की ओर चल रही है। गाँव में रहने वाले यात्रादल के आसामियो (लोगों) ने बताया है कि बाजे की आवाज है। बंसी रास्ते के पश्चिमी किनारे बैठा था, हवा के साथ शब्दों के टुकड़े साफ-साफ तिरकर आ रहे हैं। मालिक के गले की आवाज है। बंसी कान खड़ा कर सुनने लगा। क्या? मालिक क्या बोल रहे हैं? हाँ, सुनायी पड़ रहा है। कह रहे हैं, 'क्या कहूं।'

रीतू मास्टर साहब ने भारी गले से कहा, 'क्या हुआ? सुनने में आया है।'

'होगा क्या?'

'वह अगर मालूम होता तो पूछता ही क्यों? वही तो पूछ रहा हूं! यानी कैसा-कैसा—'

मालिक बोल रहे हैं मगर उनकी बातें सुनायी नहीं पड़ रही हैं। गाड़ी बगल से होकर कुछ दूर आगे बढ़ चुकी है।

उसके बाद सुनायी नहीं पड़ा। एक बार जी में हुआ कि बातें सुनने के लिए उठकर चलना शुरू कर दे। मगर उससे भी अधिक उसे पॉकेट की बोतल का आकर्षण है। शरीर थका-थका जैसा लग रहा है। धरती जैसे धुंधली हो गयी है। बोतल के द्रव्य को मुंह में ढाल कर हलक के नीचे उतारने के बाद बंसी का चेहरा विकृत जैसा हो गया। उसके बाद उसने सिगरेट जलायी। तीली जलायी ही थी कि तभी ट्रेन भोंपू बज उठा। अरे बाबा, ट्रेन आ रही है। तब हाँ, बहुत दूर, मगर उजाला दीख रहा है। बरसाती दिन की मेघिल आर्द्र वायु के दबाव से धुआं रूप धारण कर आसपास चक्कर काट रहा है। दौड़ो, दौड़ कर चलो।

पाँच

कटोया स्टेशन में गाड़ी बदलनी पड़ती है। छोटी लाइन से बड़ी लाइन में जाना पड़ता है। लगभग दो घण्टा बैठने के बाद कलकत्ते की गाड़ी मिलती है। रास्ते में असामी यानी यात्रादल के कर्मचारियों के खाने-पीने की जिम्मेदारी का बोझ दल को उठाना नहीं पड़ता है। खुराकी देकर ही वे मुक्त हो जाते हैं। उस खुराकी से जिसको जो भी मर्जी हो, खरीद कर खाओ। रास्ते में 'फिनिट' की व्यवस्था भी नहीं चलती। कौन कहाँ रसोई पकायेगा? जगह कहाँ है, कहाँ है पानी! बर्तन, चूल्हा वगैरह गठरी में बँधे हैं।

योगा बाबू कहता है, 'हम लोगों के पनासनुनी में एक बाबू था। उसके घर पर आदमी आता तो उसे लौटने की इजाजत नहीं मिलती। तब हाँ, भात वगैरह नहीं मिलेगा। कहता था, 'चावल लो, दाल लो, बैगन लो, नमक लो। जाओ, उस बरगद के नीचे जाकर रसोई पकाओ।' सो कहाँ बरगद और कहाँ बाजार? अरे भैया, नकद पैसा लो और जो मर्जी हो खरीद कर खाओ। खाना है तो खाओ, नहीं खाना है तो मत खाओ। अगर नहीं खाना है तो पैसा बचा लो, गाँठ में बाँधो। दल का कोई दोष नहीं।'

सीधी भाषा में कहता है, 'अरे भैया, चिउड़ा रखो, फरकी नहीं। चिउड़ा गुड़, बस। अँगोछे में बाँधकर तालाब में भिगो लो और बैठ जाओ। पता भी नहीं चलेगा! खा-पीकर अँजुरी से पेट भर पानी पी लो। एक बेला से अधिक समय के लिए निश्चित हो जाओगे।'

कटोया स्टेशन की दूसरी ओर जो कुआँ है वहाँ जाकर भी योगा बाबू लौट कर चला आया। उहुँ, गंगा तट पर पहुँचने के बाद कुएँ के पास? 'चलो भैया, गंगा घाट। स्नान-ध्यान कर और चिउड़ा खाकर चले आयेंगे। घाट पर केला भी मिल जायेगा। गंगा-जमुना निर्मल पानी—चलो।'

योगा बाबू को संगी मिलने में देर न हुई। अनेक नौजवान मिल गये। वयस्कों में से भी कुछेक जाने को तत्पर हो गये। बंसी उनमें सबसे अधिक उत्साही है। बंसी ने एक साइकिल-रिक्शा किराये पर ठीक कर आशा को पुकारा, 'चलो, गंगा नहा आयें।' साथ में शोभा दी उठकर खड़ी हो गयी, 'ओ गोपाली, चलोगी नहीं? कटोया के घाट में स्नान करने से बड़ा ही पुण्य होता है।'

देखते-देखते तकरीबन पूरा दल तैयार हो गया। मैनेजर गोपाल घोष स्टेशन के उत्तर के बाजार की एक चाय की दूकान में गोरा बाबू, रीतू बाबू और बाबुल बोस के लिए अण्डा तैयार करा रहा था। गोरा बाबू ने चाय और आमलेट लाने को कहा है। प्लेटफार्म पर वेश-भूषा के बक्सों को रख कर वे लोग अड्डेबाजी कर रहे हैं। फर्स्ट-सेकण्ड क्लास के बरामदे की दीवार से टिककर गोरा बाबू आँख मूँदे बैठा है। रीतू बाबू और बाबुल बातें कर रहे हैं और सिगरेट का कश ले रहे हैं। गोरा

साधारण आदमी सकते में आ जाते हैं, उस गोरा बाबू का कण्ठ-स्वर नहीं हो सकता। यह स्वर क्लान्ति और अवसन्नता का नहीं, यह तो किसी टूटे हुए आदमी की असहायता का सूचक है।

रीतू बाबू बाबुल से बोला, 'रहने दो भाई, बैठो।'

गोरा बाबू ने पुनः आँख बन्द करते हुए कहा, 'आप बल्कि उन लोगों के साथ जाइये, गोपाल बाबू। चलिये, मैं भी चलता हूँ। विपिन से एक रिक्शा बुला लाने कहिये। आप चले जाइये। कहियेगा कि गंगा-घाट से सबको एक साथ वापस आना है।'

इस बात से किसी को सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए था। बहुत तरह के सवाल और विरोध पैदा हो सकते थे, लेकिन गोरा बाबू के उस कण्ठ-स्वर और उदासी के कारण कोई एक भी शब्द बोल न सका। सभी खामोश रहे। गोपाल चुपचाप चला गया। रीतू बाबू ने बेवजह एक लंबी साँस ली। बाबुल बोस जैसा प्रगल्भ व्यक्ति भी असहाय की तरह दीवार से टिककर आँखें बन्द किये पड़ा रहा।

कुछेक मिनटों के बाद नौकर विपिन आकर खड़ा हुआ, 'बाबू, रिक्शा आ गया है।'

गोरा बाबू ने आँखें खोली, 'आ गया है? शिवनन्दन!'

शिवनन्दन वेटिंग रूम के दरवाजे पर खड़ा मंजरी और गोरा बाबू के बिस्तर, सूटकेस, बास्केट की रखवारी कर रहा था। वह आकर खड़ा हुआ। गोरा बाबू बोला, 'उनका काम हो चुका है? देख ले। अगर हो गया हो तो कहना, मैं बुला रहा हूँ। और, मेरा कपड़ा और अँगोछा एक तौलिये में लपेट दे।'

शिवनन्दन बोला, 'मैंने पानी वाले से कहा है कि पानी दे जाये। अभी तुरन्त देने को कह आऊँ?'

'नहीं, मैं गंगा-स्नान करने जाऊँगा।'

'बरसात के समय गंगा का पानी तो मटमैला होगा।'

'सो रहे। तू उन्हें बुला ला।'

बाबुल बोस अब स्वयं को संयत नहीं रख सका। बोला, 'रबिश! आपको क्या हुआ सर? कल रात से ही आप कैसे-कैसे दीख रहे हैं।'

गोरा बाबू शायद उत्तर नहीं देता। लेकिन देता या नहीं—इसका निर्णय होने के पहले ही मंजरी आ गयी। वह भी आश्चर्य में आकर बोली, 'तुम गंगा-स्नान करने जाओगे?'

'उसकी आवाज सुनकर गोरा बाबू ने आँखें खोल दी और कहा, 'एक बात कहनी थी।'

'कहो मगर—'

'पहले सुन लो।' उठकर खड़ा हो गया। बोला, 'सुनो।' थोड़ी दूर जाकर मंजरी से कुछ बतियाने लगा। बाबुल बोस स्वाभाविक उत्सुकतावश उन लोगों की

ओर ताक रहा था। लेकिन रीतू बाबू ने आँखें बन्द कर ली और दीवार से अपनी पीठ टिका दी, 'कुछ मिनटों तक सो लूं। सो नहीं सकूं तो भी कुछेक मिनटो तक आँख बन्द कर पड़े रहने से विश्राम का लाभ प्राप्त हो जायेगा। संसार में एक बात प्रचलित है—चोर खड़ा-खड़ा सो लेता है। चोरी करने जाता है तो दीवार का सहारा ले नीद ले लेता है। दो मिनट को एक दिन समझकर घण्टा पूरा कर लेता है। मेरी भी यही हालत है। तीन मिनट आंखें बन्द किये पड़ा रहता हूँ तो एक मिनट के लिए नीद आ जाती है। आदत हो जाती है तो तीन मिनट आँख बन्द किये पड़े रहने पर दो मिनट के लिए बच्चों जैसी नीद आ जाती है। तकरीबन तीस बार आँख बन्द करते ही एक घण्टे के लिए नीद आ जाती है।' यह कहते ही आँख बन्द कर ली और खामोश हो गया।

बाबुल ने ठेलते हुए पुकारा, 'रीतू बाबू!'

'क्या?'

'झगड़ा हो रहा है।'

'होने दो। खत्म हो जायेगा। आँख घुमा लो। देखना नही चाहिये।'

'आपको बुला रहे हैं।'

'मुझे?' रीतू बाबू ने आँखें खोली। देखा, सचमुच ही मंजरी उसकी ओर निहार रही है। उसकी दृष्टि में आह्वान का भाव है। रीतू बाबू उठकर गया। विपिन नौकर के पीछे-पीछे चाय की दुकान के दो छोकरे केतली में चाय और चार प्लेटों में अंडे का आमलेट और समोसे लेकर आये। बाबुल ने अपना प्लेट ले लिया और खाने लगा। भूख लगी है। दल के लोगों को, नौकर-चाकरों को फरको और चिउड़ा लिए कुएं के किनारे जाने के वक्त से ही जोरों से भूख लगी थी। अब उनसे इन्तजार नही किया गया और इन्तजार करे तो किसका? अपने-अपने पैसे से खाना खाना है। कोई किसी का न मेहमान है और नही कोई गृहस्थ है। दाम देकर खाना है, इसलिए गरम-गरम ही क्यो न खाये। प्लेट लेकर विपिन से कहा, 'देख तो आ अली स्नान कर चुकी है या नहीं। वह क्या खायेगी पूछ आ। और जो कहे, ला दे। लड़की नयी है। अन्डरस्टैण्ड?'

विपिन ने हँसकर गरदन झटकते हुए कहा, 'हाँ।'

ठीक उसी वक्त रीतू बाबू वापस आया। गोरा बाबू और मंजरी दोनों प्लेटफार्म के बाहर चले गये। बाबुल बोस आमलेट का एक टुकड़ा मुँह में डाल चबाते-चबाते बोला, 'बात क्या है बिग ब्रदर? मालिक क्या सचमुच ही गंगा नहाने गये और उनके साथ गँडेसे लक्ष्मी की तरह मालकिन भी?'

'वे दोनों गंगा नहाने गये हैं। दे भैया, प्लेट दे। एक आमलेट को तीन हिस्से मे बाँट दे। एक हिस्सा इनको, एक हिस्सा मुझको। बाकी बचे हिस्से का भी एक भाग मुझे दे दे।'

बाबुल बोस बोला, 'इसका मतलब?'

'मतलब यह कि वे लोग नहीं खायेंगे।' मालकिन ने अपनी चाय और खाना अली को दे देने कहा है। मालिक के हिस्से को तुम, मैं और अली तीनों बाँट लेंगे।

'लेकिन इसका कुछ न कुछ मतलब जरूर है!'

'है। मगर—'

'नो 'मगर' सर, नो 'मगर'। स्ट्रेट, सिम्पल, सीधी-सरल भाषा में बताइये कि वह क्या है।'

'मालिक सूतक में है। सूतक समझते हो न?'

'यैस, येस,। नो तेल, नो सेविंग, नो फिश, नो इवन प्याज। और माँ-बाप मरे तो नो शू। नो कुरता। गले में उत्तरीय। हाथ में कंबल का आसन लेकर घूमना-फिरना।'

'हाँ, यही।'

'आखिर मरा कौन है? उनका है ही कौन?'

'लो यह झमेला! उनका कोई नहीं हो सकता है? था या है, जरूर था। कोई मरा है वरना सूतक का पालन क्यों करते? और जब सूतक का पालन कर रहे हैं तो बिना किसी के मरे ऐसा होगा ही क्यों? जिसकी मौत हुई है वह गोरा बाबू का निश्चय ही कोई अपना आदमी होगा।'

'माई खुदा। माई परमेश्वर—यू आर ए प्रोफेसर बिग ब्रदर।'

'लो, अब खा लो। चाय ठण्डी हो रही है। आमलेट कड़ा हो जायेगा तो स्वाद नहीं लगेगा। अलका आ गयी। लो, यह सब तुम्हारे लिए है। खा लो।'

अलका आकर खड़ी हुई। अभी-अभी स्नान किया है, इसलिए तरो-ताजा दीख रही है। वह भले घर की लिखी-पढ़ी और फैशनेबल लड़की है—चाहे कितनी ही थकावट या तकलीफ में क्यों न रहे, उसके फैशन और स्टाइल में कोई त्रुटि नहीं रहती। खास-तौर से जो मर्द या औरत अभिनय का पेशा अख्तियार कर लेते हैं उनकी दृष्टि इस मामले में सजग रहती है। किसी नाटक में है—'बगैर खाये मौत हो जाय तो खेद मत करो, लेकिन मरने के पहले बालों की सजावट ठीक रहे, इस पर ध्यान रखो। नहीं तो नरक जाना होगा। बालों की सजावट ठीक रहेगी तो स्वर्ग जाओगे। कम से कम गंधर्व लोक या किन्नर लोक में वास करने से कौन रोक सकता है?' यह बात छोटे अभिनेता से बड़े अभिनेता तक लागू होती है, चर-अनुचर से लेकर इंद्र तक। जिन्दगी भर यही करना पड़ता है। तब हाँ, बुढ़ापे में, जब ख्याति मन्द पड़ने लगती है तो व्यतिक्रम आ सकता है। अलका कमसिन है। नया जीवन है उसका। साज-सज्जा, मेकअप, लिपिस्टिक से लेकर वेश-भूषा, केश-विन्यास तक में उसने जरा भी त्रुटि नहीं रहने दी है। जो कुछ बिखरा-बिखरा जैसा भाव है, वह भी फैशन है—इसे ही कहा जाता है सायास चेष्टाहीनता या मनोयोग के अभाव का भान। यह एक कुशल और कलापूर्ण कार्य है।

अलका ने भौंह सिकोड़ कर कहा, 'मेरे लिए? मैंने तो कहा था कि मैं आज की खुराकी लूँगी!'

रीतू बाबू बोला, 'हाय भगवान ! दुनिया में क्या सिर्फ ईंट-लकड़ी-पत्थर ही है अलका ? हरी घास की नरम मिट्टी नहीं है ?'

बाबुल बोला, 'ब्रिलियेन्ट् बिग ब्रदर !' उसके बाद कहा, 'ढोते-ढोते मेरा भी बातू प्राप्त हो गया। यह हुआ क्या ?'

रीतू बाबू बोला, 'लिखते-लिखते ही दूर होता है बाबुल, अभिनय करते-करते ही नाट्यकार हो जाओगे, इसका लक्षण दृष्टिगोचर हो रहा है। लेकिन खाना ठण्डा हो रहा है अलका। तुम खा लो।'

अलका भले घर की लड़की है और थोड़ी बहुत शिक्षा प्राप्त कर अभिनय की मजलिस में उतरी है। अप्रगल्भ वह नही है, तब हाँ, रीतू बाबू के सामने प्रगल्भ होने में भी भय लगता है, साथ ही उसके प्रति थोडी नफरत भी है। उसने बातचीत के सिलसिले को आगे नही बढ़ाया। खाने की सामग्री उठा ली। आमलेट का एक टुकड़ा मुँह में डालकर बोली, 'बाबुलदा, तुम्हारी तनख्वाह मे क्या बढोत्तरी हुई है ?'

बाबुल बोला, 'ह्वाई दिस कोश्चन ?'

अलका शायद संगति-दोष के कारण ही कह बैठी, 'तुम्हारे हृदय में हरी घास उग आयी है।'

बाबुल ने कहा, 'गॉड सेव बाबुल बोस। 'गॉड इज गुड एण्ड काइन्ड टु ऑल। बि काइन्डर टु बाबुल बोस। उसको तनख्वाह में भले ही बढ़ोत्तरी हो, मगर हरी घास पैदा न हो। फिर तो गो-वेन्ट-गॉन। शराब पीता हूँ, उसके बाद फिर पद्य लिखना शुरू करूंगा। मेरी तनख्वाह में वृद्धि नही हुई है अलका और तनख्वाह बढ़ने पर भी मेरे हृदय में हरी घास पैदा नही होगी, यह बात जान लो। भविष्य में काम देगा।'

कुछ लहमों के लिए अलका का स्नो-पाउडर-लिपिस्टिक लगा चेहरा विवर्ण और कुरूप जैसा दीखने लगा। उसके बाद गुस्सा यानी क्रोध से उसके चेहरे पर स्वाभाविक से भी अधिक लालिमा दौड़ गयी। उसने कहा, 'थैंक्यू बाबुलदा।'

इससे अधिक न तो वह बोल सकी न ही इससे अधिक बोलने के लिये उसे शब्द मिले।

बाबुल बोस ने परवाह नही की, वह निर्विकार भाव से रात में शिकार का मांस नोच-नोच कर खाने वाले उल्लू की तरह आ[illegible] रहा।

रीतू बाबू बोला, 'यात्रादल या थियेटर में प्रवेश आदमी के हृदय में हरी घास की तलाश मत करो घास दिखाई दे, थोड़ो देर के लिए आराम कर लेना। जरा हँसकर बोला, 'मान लो, घास मेरे इस बूढ़े दिल

अलका बोली, 'फिर आज से आप मेरे नाना 'एग्रीड। लेकिन आमलेट-समोसा-चाय मेरे

दूँगा। वह सब हमारे यात्रादल के मालिक-मालकिन की ओर से दिया गया है। यानी गोरा बाबू और प्रोप्राइट्रेस मंजरी की ओर से।'

अलका ठगी-सी रह गयी। अब यह बात उसके ध्यान में आयी कि यहाँ उन तीन जनों के अतिरिक्त पूरे दल का लगभग कोई आदमी नहीं है। नौकर विपिन, केश-विन्यास कारियों में से एक मुसलमान और चारेक मंजे हुए गाँजाखोरों के अतिरिक्त आसपास यात्रादल का कोई आदमी नहीं है। लेकिन उनके बीच सबसे अधिक मंजा हुआ गाँजाखोर योगा बाबू नहीं है। इतनी देर के बाद अलका को गोरा बाबू और मंजरी की अनुपस्थिति का अहसास हुआ और उसने पूछा, 'बात तो सही है, ये लोग गये कहाँ? बिना यह सब खाये? फिर मुझे ही क्यों—'

बाबुल का आमलेट खत्म हो चुका था। उसने कहा, 'मदर गंजेज़ में स्नान करने।'

'गंगा-स्नान?'

'येस।'

अलका ने आश्चर्य के साथ पूछा, 'गोरा बाबू गंगा नहाने गये?'

बाबुल बोला, 'बिग मदर ने बताया कि गोरा बाबू सूतक में हैं। यानी फादर, मदर, अंकल, ब्रदर इनमें से किसी का देहान्त हुआ है।'

'बाप, माँ, काका, भाई?'

रीतू बाबू बोला, 'यात्रा वाले के भी ये सब होते हैं अलका। तुम्हारे बाबुल के भी हैं, मेरे भी थे।'

अलका एक उसाँस लेकर कुछ देर तक गुमसुम बैठी रही। उसके बाद खाना शुरू किया। रीतू बाबू ने दीवार से पीठ टेककर आँखें बन्द कर ली। बाबुल सिगरेट का कश लेने लगा। थोड़ी देर की स्तब्धता के बाद अलका आमलेट-समोसा-चाय खत्म कर एकाएक बोल उठी, 'बाबुलदा।'

'क्या?'

'मंजरी देवी यानी प्रोप्राइट्रेस भी गंगा नहाने गयी हैं?'

'मोस्ट प्रोबेबली। यानी सम्भवतः।'

'वह तो नहा चुकी हैं।'

'आस्क योर नाना।'

नाना से पूछना नहीं पड़ा, रीतू बाबू ने आँख मूँदे-मूँदे ही उत्तर दिया, 'वह दुबारा स्नान करेंगी। यानी नियम है कि नहाने के बाद भी अगर शोक का समाचार सुने तो सूतक हो जाता है और तत्क्षण स्नान करना पड़ता है। उसके बाद किसी को दस दिन, किसी को पन्द्रह दिन और किसी को एक महीने तक अशौच का पालन करना पड़ता है। उस अवधि के गुजर जाने के बाद मृत्यु का समाचार मालूम हो तो स्नान करके शुद्ध हो जाता है।'

अलका बोली, 'लेकिन वह तो—'

बाबुल बोला, 'डोन्ट मेक बुड़-बुड़ अलका। लेकिन-वेकिन में क्या रखा है? फालतू सब—हुश।'

रीतू बाबू हँसकर बोला, 'तुम बड़े ही चिड़चिड़े हो गये हो लिट्ल ब्रदर।'

'ह्वाट सर? वह क्या पूछ रही है, समझ रहे हैं न?'

'समझता हूँ। मंजरी वेश्या की लड़की है, उसे सूतक किस बात का? मगर—'

जरा-सा चुप रहने के बाद बोला, 'उन लोगों ने शास्त्र के मतानुसार विवाह किया है। जानते हो, पत्नी होना पत्नीत्व निभाने पर निर्भर करता है। गोरा बाबू ने एक बार एक नाटक की शुरुआत की थी, उर्वशी और पुरुरवा के बारे में। उसमें लिखा था—नारी माता, नारी भगिनी, नारी पत्नी, नारी कन्या। वही नारी होती है वारांगना। वारांगना कालिमा कलुष। तपस्या के गंगा स्रोत में धो-पोंछकर लाजांजलि करके होम अग्नि से तप्त रक्तिम तन लेकर हे उर्वशी, पुरुवंश में पत्नी रूप में करो प्रवेश, मेरा वंशधर करोगी तुम धारण।'

बाबुल ने कहा, 'ब्यूटीफुल। माई लार्ड के इस क्वालिफिकेशन से मैं परिचित नहीं था।'

अलका बोली, 'वह नाटक क्या प्ले हुआ है?'

'नहीं। नाटक के कई सीन लिखकर छोड़ दिया है।'

'क्यों?'

'कहते हैं, वह यात्रा में जमेगा नहीं।'

ठीक उसी क्षण गोरा बाबू और मंजरी स्टेशन पर लौट आये। उसके बाद शोभारानी, गोपाली और आशा। गोरा बाबू नंगे पाँव है, बदन पर चादर, पहरावा है नयी बिना किनारे की धोती। मंजरी लालकोर की नयी साड़ी पहने है। गोपाली हँस नहीं रही है—आशा और शोभा गंभीर हैं।

गोरा बाबू स्टेशन के प्लेटफार्म के किनारे खड़ा है। वे लोग सभी रिक्शे से आये हैं। बाकी लोग पैदल आ रहे हैं। उन लोगों के साथ गोपाल, नाटू बाबू और मणिबाबू हैं। गोरा बाबू खड़ा ही रहा। थोड़ी देर खड़े रहने के बाद, वे लोग जब समीप आ गये, तो चिल्लाकर बोला, 'सब लोग स्टेशन पर आकर बैठ-जाओ। इसके बाद कोई बाहर जायेगा तो अच्छा नहीं होगा। और गोपाल बाबू, जो लोग यहाँ से बाहर जाना चाहें, उन्हें जाने को कह दें। दल के नये नाटक की शुरुआत पन्द्रह दिन बाद होगी। पत्र द्वारा सूचना भेज दी जायेगी। जो लोग घर जायेंगे, उनकी तनख्वाह दे दें।'

गोरा बाबू वेश-भूषा के बक्से पर एक नये कंबल का बिछाकर बैठ गया। उसके चेहरे पर उदासीनता तैर रही है।

थोड़ी दूर पर औरतें बैठी हुई हैं। सभी खामोश हैं।

उधर ताक रही है। सभी को बात मालूम हो चुकी है। सिर्फ उसे ही मालूम नहीं। बाबुल भी उत्सुक हो उठा है, मगर पूछ नहीं पा रहा है।

आशा उठकर प्लेटफार्म के दूसरे बाजू की लोहे की रेलिंग से सटकर खड़ी हो गयी। बंसी दल के साथ नहीं आया है। अचानक मालिक-मालकिन गंगा पर पहुँचे, नहाकर नया वस्त्र धारण किया, गोरा बाबू ने पुरोहित बुलाकर तर्पण किया—यह सब देखकर दल का आनन्द-उल्लास मेघिल दिल के प्रभात की तरह मलिन हो गया। यदि किसी ने थोड़ा बहुत शोर-गुल किया भी तो दूर हटकर ही किया। मालिक-मालकिन पर नजर पड़ते ही गोपाल घोष उन लोगों के पास आया था और उन लोगों के स्नान और तर्पण की सारी व्यवस्था कर दी थी। वही बीच-बीच में सबके पास गया है और कह आया है, 'चुप रहो, सब लोग चुप रहो।' चुप्पी के बीच ही उन लोगों ने गंगा-स्नान किया है और वहाँ कुछ खरीदकर खा लिया है। आने के वक्त भी गोपाल घोष शोक-शोभायात्रा की आबोहवा तैयार कर सबको बटोरे बिना शोर-गुल मचाये चला आया है। किसी ने इष्टनाम नहीं लिया है, किसी ने हँसी-मजाक नहीं किया है, यहाँ तक कि दुकान में भी दर-दाम की बाबत कोई हल्ला-गुल्ला नहीं किया है। लौटने के वक्त मंजरी ने ही कहा था, 'औरतों के लिए रिक्शा ठीक कर दें गोपाल मामा। सब एक साथ चलें।' हुआ भी यही है। इसी बीच मौका पाकर बंसी खिसक गया है। आशा को मालूम है कि वह शराब की खोज में गया है। गोरा बाबू ने कहा था, 'उसके बारे में फिक्र मत करो। वह जरूर आ जायेगा। और अगर ट्रेन नहीं पकड़ पाता है तो भी चिन्ता की कोई बात नहीं। बाद वाली ट्रेन से चला आयेगा।' आशा भी बहुत चिन्तित हो, ऐसी बात नहीं। वह बंसी को पहचानती है। फिर भी यहाँ आने पर सोच रही है कि उसे कहकर जाना चाहिए था। कैसा आदमी है वह! गया तो कहाँ गया? बंसी झगड़ालू आदमी नहीं है, पीकर नशे में बेहोश भी नहीं होता। लेकिन है तो आखिर विदेश ही। इतनी देर!

अलका आकर आशा के पास खड़ी हुई। इन लोगों से मात्र कई दिनों का ही परिचय है। इसी बीच आशा के सम्बन्ध में उसके मन में एक प्रकार की घृणा पैदा हो गयी है। यह घृणा उसी कोटि की है जो उच्च जाति के हृदय में निम्न जाति के प्रति होती है। दल में भी यह मोटे तौर पर एक स्वीकृत सत्य है। स्वयं आशा ही इसे स्वीकार करती है। इस दो दिन के अभिनय के दौरान अलका का इन लोगों के साथ पहला अभिनय था और पूरे तौर पर हिलना-मिलना हुआ है। पहले दिन दोपहर के वक्त खाने के स्थान में आशा और बंसी को एक किनारे खाते देखकर उसे अचरज हुआ था। ऐसे कुछ लोग जो चर-अनुचर का पार्ट करते हैं, जिन्हें कम तनख्वाह मिलती है, वे सबसे अच्छी जगह में बैठे थे। वह शोभा के पास बैठी थी। यह देख कर उसने आश्चर्य के साथ शोभा से पूछा था, 'आशा वहाँ क्यों बैठी है?'

शोभा ने उसकी ओर ऊब के साथ देखते हुए कहा था, 'फिर कहाँ बैठेगी?'

'क्यों? हम लोगों के साथ।'

'नहीं, वह यहीं बैठेगी। तुम्हारी इच्छा हो तो जाओ, जाकर उसके पास बैठ जाओ।'

इसका कारण उसे बाद में मालूम हुआ था। यात्रादल में भोजन के स्थान में जाति का कठोर बन्धन रहता है। चाहे बड़ा पार्ट करता हो, चाहे बड़ा गायक ही क्यों न हो, वह अगर जात की हैसियत से नीचे दर्जे का है तो अलग और अकेले बैठना होगा। आशा-बंसी उसी किस्म के हैं। यह बात जानकर शुरू में उसे क्षोभ हुआ था लेकिन बाद में इसे मान लिया था। कम से कम आशा-बंसी के सम्बन्ध में उनकी जात के कारण नहीं, बल्कि वे इसलिए कि इतनी शराब पीते हैं, इतनी बुरी बातें बतियाते हैं। सबसे खराब उसे दूसरे दिन आशा का भद्दे ढंग से दाँत माँजना लगा था।

तब हाँ, आदमी के लिहाज से वे दोनों निरीह हैं। घृणा के साथ-साथ करुणा भी होती है। आशा को रेलिंग के पास अकेली खड़ी देख अलका उसके पास जाकर खड़ी हो गयी। सीधे शब्दों में पूछा, 'तुम्हें मालूम है ?'

'क्या ?'

'किसकी मृत्यु हुई है ? कहते हैं सूतक हो गया है।'

'मंजरीदी की ससुराल का कोई आदमी।'

'कौन ?'

'सो मालूम नहीं।' उसके बाद बोली, 'देख नहीं रही हो कि रो रहे हैं। बाबू की आँखों से आँसू गिर रहे हैं। बाबू यानी गोरा बाबू।

वे दोनों आमने-सामने खड़े थे। इसलिए सिर्फ आशा ही गोरा बाबू को देख पा रही थी। अलका उन लोगों की ओर पीठ किये खड़ी थी। आशा की बात सुनकर उसने मुड़कर देखा—सचमुच ही गोरा बाबू की आँखों से आँसू गिर रहे हैं। वह बातें कर रहा था। उत्सुकतावश वह उन लोगों के सामने आकर खड़ी हो गयी।

गोरा बाबू कह रहा था, 'जानते हैं मास्टर साहब, क्षीरोद बाबू का 'बादशाह-जादी' नामक एक नाटक है। उसमें लिखा है कि बगदाद के खलीफा का ताऊ घर से लापता होकर दूसरे राज्य में दीन-दरिद्र की तरह वास कर रहा था। लेकिन दीन रहने पर भी वह हीन नहीं था। उसी की खोज में खलीफा निकल पड़ा। नजर पड़ी, लेकिन उसे पहचान नहीं सका। देखकर विस्मय-विमुग्ध होकर बोला, 'यह तो भूकंप से धराशायी मीनार का महिमायुत दर्शन है। भूकंप से धराशायी हो गया है किन्तु गगनचुम्बी महिमा का अवलोप नहीं हुआ है।' मेरे दादा उसी तरह के थे। ग्रैण्ड ओल्ड मैन—। सब कुछ बरबाद हो गया था। दुनिया में कोई अपना नहीं था, फिर भी मस्तक नहीं झुकाया। मैंने जब मंजरी से शादी की तो मुझे धर्म और कानून के अनुसार त्याग दिया था। मैंने भी उन्हें त्याग दिया था। हाँ, मैं उन्हीं का पोता हूँ। मगर हि वाज ग्रेट। यह बात अस्वीकार नहीं कर सकता हूँ। तीन दिन पहले उनका देहावसान हुआ है। चूँकि मैं त्यक्त पोता हूँ इसलिए मेरे ताऊ ने मुझे खबर नहीं

दी। चाचा लोगों से कुछ कह भी नहीं गये थे। डाक्टरी दवा का वे सेवन नहीं करते थे। उनका व्यवसाय था गुरुगीरी। गाँव के वैद्य से कह गये थे। वैद्य जी मेरे पिता के मित्र थे। उन्हीं से कह गये थे : गोरा से कहना कि मुझे क्षमा कर दे। कल रतनपुर में मंच पर उतरने के लिए वेश-भूषा धारण कर ही रहा था कि वैद्य जी आये और यह बात बता गये। कल से ही सोच रहा था कि क्या करूँ! आज स्टेशन के प्लेट-फार्म पर चाय-आमलेट का आदेश देकर आँख बन्द किये पड़ा था—। गोपाल बाबू ने बताया कि ये लोग गंगा-स्नान करने जा रहे हैं। तत्क्षण मैंने महसूस किया कि कहीं से कोई मुझे पुकार कर कह रहा है। मैंने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। हाँ, मैं अपना काम करूँगा। गंगा-स्नान करने के बाद तर्पण किया और बिना कोर की धोती पहनी। दस दिन का कार्य करूँगा। माथा मुड़वाऊँगा। पिण्ड दूँगा। इसके चलते चाहे जो हो। दो चाचा हैं, वे लोग भी पिण्ड देंगे। मैं भी दूँगा। मंत्र और पिण्ड के साथ कहूँगा : दादाजी, आपको क्षमा करने का प्रश्न ही नहीं उठता। आप मुझे क्षमा करें।'

रीतू बाबू बोला, 'बाद में बताइएगा सर। यानी—'

इतनी देर के बाद गोरा बाबू के ध्यान में आया कि उसके चारों तरफ एक भीड़ इकट्ठी हो गयी है। उस भीड़ के बीच दल के लोगों की संख्या यद्यपि अधिक थी लेकिन बाहर के भी कुछ लोग थे। चुप्पी साध कर उसने आँखें बन्द कर ली और अनमने भाव से जेब टटोलने लगा। रीतू बाबू बोला, 'सिगरेट—यह लीजिये।'

'दीजिये।' उसने अपना हाथ बढ़ाया।

दूसरी ओर प्लेटफार्म पर शोर गुल मच गया। ट्रेन आ रही है। गोपाल आकर बोला, 'आपका और मालकिन का सेकण्ड क्लास का टिकट कटाया है। आपका भी मास्टर साहब।'

बाबुल बोला, 'मेरा इन्टर क्लास का टिकट है न? दीजिये। मैं भी उन लोगों के साथ चलूँगा। एक्सेस फेयर मैं दे दूँगा।'

ट्रेन पर सवार होने के वक्त अपना सूटकेस हाथ में थामे अलका भी बैठ गई।

बाबुल बोला, 'तुम भी।'

'अली बोली, 'हाँ।'

बंसी स्टेशन के बाहर वाले रास्ते को पकड़ कर भागा-भागा आ रहा है। रीतू बाबू हँसकर बोला, 'यह पट्ठा पक्षीराज है। पहुँच गया—। ओह, लम्बे-लम्बे पाँवों से दौड़ रहा है या उड़ रहा है?'

अली खिलखिला कर हँस पड़ी, 'उफ्, आशा कितनी चिन्ता में थी! बेचारी रेलिंग के किनारे खड़ी होकर राह देख रही थी।'

उस डिब्बे से शोभा खिड़की से झाँक कर पुकार रही है, 'यहाँ-यहाँ।'

बंसी गाड़ी पर सवार होकर धम से बैठ गया और बोला, 'वाह-वाह, कितने जोर से दौड़ता आया हूँ।'

आशा और बंसी खाने के स्थान में एक छोर पर बैठते हैं मगर ट्रेन के लिए उन्हें इन्टर का किराया मिलता है। उन लोगों को इन्टर का एक छोटा-सा डिब्बा खाली मिल गया है। उसमें बैठे हैं शोभा, गोपाली, आशा, नाटू बाबू, रमणी नाग, मणि बाबू, बंसी और गोपाल घोष। गोपाल घोष खुद टेंट से पैसा निकालकर अपने उस लाड़ले बच्चे को साथ ले लेता है। डिब्बे में उन लोगों के अलावा कोई नहीं था। शोभा भद्दे मजाक में मशगूल हो गयी।

शुरूआत की बंसी और आशा को लेकर। उसके बाद मजाक के पात्र बन गये सेकण्ड क्लास के यात्री। मुख्य लक्ष्य था रीतू बाबू। बोली, 'बताओ तो भला नाटू, बंसी बंसी के खिचाव से कटोया के घाट से आकर आशा के पैरों पर पछाड़ खाकर गिर पड़ा। इसका तो कोई न कोई अर्थ निकलता है। तुम हो, गोपाली है। उस डिब्बे मे मंजरी है, गोरा बाबू हैं, बाबुल है और वह छोकरी कुसुम कली-अली है, यह समझती हूँ। मगर वह मोटा-खोखला मरद वहाँ किस मकसद से घुसा ? तुम लोगों के रीतू मास्टर के बारे में कह रही हूँ। मैंने उस मरद के इरादे को भाँप लिया। वह जरूर ही अली पर मर रहा है। खुदा कसम, सच कह रही हूँ। मगर मेरा कलेजा धड़क रहा है। मेरे सीने की दीवार पर जमा गोबर का ढेर धड़ाम से दूसरे के सीने पर जाकर गिरा। ए नाटू, कुछ उपाय करो। और अगर न करोगे तो मुझे सोने के लिए जगह दो। मैं बैठी नहीं रह पाऊँगी।'

यह कहकर वह एक बेंच पर लेट गयी।

सभी हँस रहे थे। उन लोगों के मन में कौतुक जगा ही रहता है। सम्भवतः यही उनके जीवन का मूलधन है। इस डिब्बे के बाद ही एक बड़ा-सा थर्ड क्लास है। वहाँ योगा बाबू सम्भवतः गाँजे का दम ले रहा है। गन्ध आ रही है। कोई, सम्भवतः दल का बाँसुरी-वादक शिव हाजरा, यात्रा का ही गीत गा रहा है। नाच का गीत—

नन्दन वन में चन्दन करता वास चाँदनी चमक रही है
मन किसको चाहता, वास करता है वह किस ठौर ?
सखि, मुझे बताओ !

मन है चंचल, ढल-ढल पड़ता अंचल
सारा यौवन विह्वल क्यों है सखि !
तन्द्राहीन ताकती अपलक मैं चंदा की ओर
किस सपने का किसका सुख यह
दमक रहा चंदा की ओट
सखि, मुझे बताओ !

बंसी के पाँव थिरक रहे हैं, आशा खिड़की से बाहर की ओर शून्य दृष्टि से देखती हुई उस गीत को गुनगुना रही है। गाड़ी आगे बढ़ती जा रही है। दोनों ओर वर्षा के पानी से भरे खेत हैं। अबकी अच्छी बारिश हो रही है। धान बोने का काम

बहुत आगे बढ़ चुका है। आसमान कल रात से ही बादलों से भरा है। गरमी नहीं है, ठण्डी-ठण्डी बयार चल रही है। रात में जगने के बाद गंगा-स्नान करने से सबको बड़ा ही आराम मिला है, उसके बाद ठण्डी हवा चल रही है तो सबकी आँखों में नींद उतर आयी है। बंसी शराब के घूंट हलक के नीचे उतार कर आया है। कुछ ही देर में उसकी नाक बजने लगी।

सेकण्ड क्लास का दल नींद की बाँहों में खो गया है। दो बैंक और पाँच बेंच हैं? एक बैंक पर बाबुल है, बाकी नीचे की तीन बेंचों पर रीतू बाबू, गोरा बाबू, मंजरी और अलका। गोरा बाबू और मंजरी एक बेंच पर हैं। मंजरी लेटी हुई नहीं है, गाड़ी के कोने में पीठ टिकाकर सोयी है। उसका एक हाथ गोरा बाबू के सिर पर है। बाल सहलाते-सहलाते कोने से अपनी पीठ टिकाकर नींद में डूब गयी है। इन दोनों का एक ही बेंच पर बैठने का कारण कंबल है। उनके बिस्तर में मात्र एक ही कंबल था, उसे बिछाकर गोरा बाबू लेटा है। सूतक में कंबल के सिवा सोने-बैठने के लिए किसी दूसरी चीज का इस्तेमाल करने का रिवाज नहीं है। मंजरी ने कहा था, 'तो फिर मैं भी उसी पर डिब्बे के कोने में पीठ टिकाकर बैठ जाऊँगी।' गोरा बाबू ने सबके सामने उसके सिर पर हाथ रख स्नेह के साथ कहा था, 'मैंने गलती नहीं की है। मेरे दादा स्वर्ग से यह देख-सुनकर खुश हो रहे हैं।'

मंजरी ने सलज्ज हँसी हँसकर कहा था, 'अब थोड़ी देर के लिए सो रहो। कल शाम से ही तुम कैसे-कैसे दीख रहे हो।'

गोरा बाबू ने लम्बी साँस ली थी। कुछ देर बाद बोला था, 'क्या कहूँ! मैंने बहुत सारे अपराध किये हैं।'

मंजरी ने कहा था, 'मुझसे शादी करना अगर अपराध है और बहुत बड़ा अपराध है, तो तुम्हें यह बात मालूम होगी। तुम यह कह सकते हो। इसके सिवा तुमने कोई अपराध नहीं किया है।'

'नहीं, तुम्हें मालूम नहीं है। यहाँ का बयाना लेना ही मेरा अपराध है और वह बहुत बड़ा अपराध है। तुमने मना किया था मगर मैं माना नहीं। तुम नवग्राम आयी थी तो उधर की ही बातें सोच रही थी। शिवहार का नाम जानती थी, लेकिन शिवहार इधर ही है, यह बात नहीं जानती थी। शिवहार गंगा के तीर पर ही है, लेकिन गंगा रतनपुर से तीन मील की दूरी पर है। और एक घटना के बारे में न तो तुम्हें पता था और न ही मुझे। वह मेरे जन्म के पहले की घटना है। बचपन में सुनी हो, ऐसा याद नहीं आ रहा। मेरे दादा भागवत के बहुत बड़े कथावाचक थे मगर पेशेवर नहीं थे। इसके अलावा बड़े ही कट्टर थे। रतनपुर के ये लोग पहले जाति-विचार की दृष्टि से अच्छे नहीं थे। दुर्नाम भी फैला हुआ था। सुना है, कम्पनी के जमाने में इन लोगों के पुरखे कोठी वाले साहब के खानसामा थे। कोई-कोई कहता है, मुनीम थे। और उसी वजह से 'सरकार' उपाधि मिली थी। कटोया में मीर कासिम के साथ अंग्रेजों की जो लड़ाई हुई थी, उस लड़ाई में फौज को मांस और रसद

की रूसवाई की थी। इसके अलावा गुप्त खबरों की सूचना दी थी जिसकी वजह से धन-दौलत और जमींदारी हासिल हुई थी।

'उसके बाद इन लोगों ने बहुत सारे यश के कार्य किये हैं। घर में मूर्ति की स्थापना की थी। तालाब खुदवाया था। उस जमाने में भी स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों को छात्रवृत्ति देते थे। टोल. की स्थापना करनी चाही थी मगर उस जमाने में कोई अच्छा पंडित आने को तैयार नहीं हुआ। कुछ ही बरसों के बाद टोल बन्द हो गया था। यह बात मेरे दादा के पिताजी के जमाने की है। उसके बाद दादाजी के जीवन-काल में एक काण्ड घटित हुआ। मेरे दादाजी गायक थे। शास्त्र की अपेक्षा संगीत की अधिक जानकारी थी। उनके जीवन-काल में हम लोगों का जो टोल था, बन्द हो गया। वे भागवत के कथावाचक थे और गीत उनके प्राण थे। अभिनय भी अच्छा करते थे। सुना है, भागवत सुनकर लोग रोने लगते थे। उस समय इन लोगों की माली हालत डाँवाडोल हो गयी थी। जैसी हालत थी वैसा ही सर पर जुनून सवार था। घर में तीज-त्योहार के मौके पर खेमटा नाच की धूम मची रहती थी। वैष्णव वंश था, मगर शराब पीपे के पीपे गटक जाते थे। कुछ परिचय तो देख ही आया। उस समय जिस मानिक को देख आयी हो, उसी की माँ ने सपना देखा था कि मेरे दादा जी उनकी ठाकुर बाड़ी में भागवत पाठ कर रहे हैं। लड़के से कहा तो उन्होंने दादाजी के पास सन्देश भेजा कि भागवत-गान करना होगा। दादाजी ने वचन दिया था, भागवत-पाठ के लिए आए भी थे। होली-पूर्णिमा का समय था। यहाँ से हम लोगों का गाँव शिवहार ज्यादा दूर नहीं है। चार मील का रास्ता है। तीसरे पहर घर से निकल शाम के वक्त पहुँचने पर देखा—घर में बहुत धूमधाम है। चारों तरफ लोग-बाग व्यस्त हैं। कलकत्ते से खेमटे का दल आया है। उन पर किसी की नजर नहीं पड़ी। वे कहाँ भागवत-पाठ करेंगे, उसका भी कोई ठीक नहीं। बहुत देर बाद पता चला कि शाम के वक्त उन्हें एकाध घण्टे के लिए पाठ करना है, क्योंकि उसके बाद ही नाच की मजलिस बैठेगी। नाच तीन दिन तक चलने वाला था। तीन रात के बाद एक महीने तक वह पाठ करेंगे। मालिक से मुलाकात ही नहीं हुई। दादाजी जिस तरह बगल में पोथी दबाये आये थे उसी तरह लौटकर घर चले आये। दूसरे दिन उनके पास आदमी आया तो कहला दिया कि पियक्कड़-शराबी के देवला के सामने मैं भागवत पाठ नहीं करता। बहुत पहले की बात है। मेरे पिताजी तब छोटे थे। यह सब बताते हुए वैद्य जी ने कहा, 'ताऊजी'—वैद्य जी दादाजी को ताऊजी कहा करते थे—'ताऊजी ने कहा, गोरा से कहना, मैं उसे सचमुच ही आशीर्वाद दे रहा हूँ। उस दिन मैंने अपराध किया था। गोविन्द जो कि भगवान हैं, वे ब्राह्मण के घर में भी भगवान गोविन्द हैं और अंत्यज के घर भी भगवान गोविन्द हैं। सरकार लोगों के गोविन्द मछुआरिन की टोकरी के भगवान हैं, मेरा गीत सुनना चाहते थे लेकिन मैं बिना गाये चला आया—गोरा आया है—गीत सुना कर मेरे

प्रायश्चित किया है—इसी से मैं खुश हूँ। उसे आशीर्वाद देता हूँ। तब हाँ, उससे कहना, वह इसी घर में बड़ा हुआ है। बड़ा होना, ईश्वर के निकट जाना और उनकी दया पाना एक ही बात है।' उसके बाद कुछ तान्त्रिक बातें कही थी।

गोरा बाबू हँस पड़ा और खामोश होकर उसने एक लम्बी साँस ली। गाड़ी के पाँचों व्यक्ति स्तब्ध जैसे हो गये। गाड़ी एकरस हिस-हिस आवाज कर बढ़ रही थी। बाहर की खिड़की से लग रहा है, आस-पास के पेड़-पौधे पीछे भाग रहे हैं, दूर का दिगन्त और निकटवर्ती पेड़-पौधे चक्राकार घूम रहे हैं। आदमी की देह हिल-डुल रही है। इसी के बीच रात्रि-जागरण से थकी देह और कहानी से बोझिल मन कब नींद में खो गया, उनमें से किसी को इसका पता नहीं चला।

गोरा बाबू की नींद एकाएक टूट गयी। उसने जैसे ही आँखें खोलीं, उसकी दृष्टि छत की ओर गयी – छत मे तरह-तरह की नक्काशी है। बिजली के दोनों पंखे दनादन घूम रहे हैं। माथे से किस चीज की गरम हवा टकरा रही है? ओह, मंजरी का निःश्वास स्पर्श कर रहा है। सिर के पीछे की ओर निगाह फेर कर देखा, मंजरी झुककर उसके सिर पर गिरने-गिरने जैसी हालत में है। सिर के बाल दोनों ओर हिल-डुल रहे हैं। मंजरी की बड़ी-बड़ी आँखें सोयी हालत में भी थोड़ी-बहुत खुली रहती हैं। कल रात लगाये गये रंग के मिटा देने के बावजूद उसकी हल्की छाप मंजरी के होठों पर रह गयी है। हल्की-सी चमक। उसके मन में स्नेह का आवेग उमड़ आया। बेचारी! बड़ी ही भली औरत है वह! उसके जीवन को परिपूर्ण बना देने को सदैव तत्पर रहती है। अब वह थोड़ी देर सो ले। हाथ उठाकर उसके माथे को छूना चाहा कि तभी उसने देखा, बगल की बेंच पर अलका भी जग गयी है। उसके बदन पर डिब्बे की खिड़की से धूप आकर पड़ रही है। बाहर इस बीच धूप उग आयी है। अलका का चेहरा उन्हीं लोगों की ओर है और वह उन्हीं लोगों की ओर देख रही है। गोरा बाबू को जरा शर्म-सी लगी। अलका भी शरमा गयी। झट से उठकर बैठ गयी और बोली, 'उफ्, धूप कितनी तेज है।'

गोरा बाबू ने लज्जा के आवेग को सँभाल लिया और अपने उठे हाथ को मंजरी की ठुड्डी पर रख कर पुकारा, 'सुन रही हो? मंजरी!'

मंजरी जग पड़ी, 'ऐं?'

'मेरा सिर और तुम्हारा सिर आपस मे टकरा जायेंगे। आखिर में सींग निकल आयेगी।'

मंजरी शरमीली हँसी हँस दी और सीधी होकर दीवार का सहारा ले बैठ गयी। गोरा बाबू उठकर बैठ गया और बोला, 'मैं काफी सो चुका हूँ। तुम थोड़ी देर सो रहो।'

'नहीं, मैं मजे मे सो रही हूँ।'

'नहीं, मजे में नहीं सो रही हो। जो कह रहा हूँ, सुनो। सो जाओ। मैं सिगरेट पिऊँगा और जरा सोचूँगा।'

मंजरी लेटने गयी पर लेटी नहीं, उठकर बैठ गयी। बोली, 'नहीं, फिर मैं भी बैठी रहती हूँ।'

गोरा बाबू हँसते हुए बोला, 'मैं अनुताप नहीं कर रहा हूँ मंजरी। कितना दुःख बरदाश्त कर सका हूँ, यह तो तुम्हें मालूम ही है।'

मंजरी बोली, 'जानती क्या नहीं हूँ? फटा कुरता और रूखे बाल लिए मेरे घर आये। पाँच आदमी भेजने के बाद तब कहीं तुम्हें ले आ पायी थी—उस दिन की बात मुझे याद है। भूली नहीं हूँ।'

'वह क्या अनुताप है?'

'मालूम नहीं।'

'तुम डरो नहीं। उस दिन घर-द्वार छोड़कर जिस वजह से आया था, वह घटित नहीं हुआ है। अगर वह घटित हुआ होता तो तुम्हारे साथ अशौच-स्नान कर दादाजी का तर्पण वगैरह नहीं करता।'

रीतू बाबू जाग गया था। वह आखिरी बातें सुन रहा था। उठ कर उसने उँबासी ली और चुटकी बजाकर बोला, 'तारा-तारा।' उसके बाद बोला, 'आप सो जाइये। मैं जगा रहूँगा।'

अब मंजरी लेट गयी। दूसरी ओर की खिड़की के पल्ले बन्द कर अलका फिर से लेट गयी। अब की वह पीछे की ओर मुड़ कर लेट गयी। सम्भवतः इसलिए पीछे मुड़ कर लेट गयी कि कहीं दो जन पुरुषों की निगाह उस पर न पड़े। अब उसे ठीक से नींद नहीं आ रही है।

रीतू बाबू ने बैग खोल कर बोतल निकाली और प्याली में शराब ढाली। बोला, 'सूतक में—।'

'दीजिये। उसकी मनाही होगी तो सूतक का पालन नहीं कर पाऊँगा। रतनपुर के उस बूढ़े सरकार को देखा न। अब माला जपते हैं। तकरीबन मेरे दादा जी के हम उम्र हैं। आठ-दस वर्ष के छोटे होंगे। उनके बारे में कहानी सुनी है। उन दिनों बहुत शराब पीते थे, घर पर रखैल थी। उनकी माँ जब मरने-मरने पर थी, उस समय माँ से कहा था : माँ, यह इजाजत देती जाओ कि मेरा शराब पीना बन्द न हो और मैं सिर नहीं मुड़वाऊँ। वरना श्राद्ध ही नहीं हो पायेगा। तब हाँ, हम लोग की बात अलग है। तांत्रिक वंश का हूँ। मेरे परदादा 'कारण' से तर्पण करते थे। दादा वैष्णव हो गये थे, फिर भी मेरे पात्र में नारियल का पानी ढालकर कारण बना देते थे। इसलिए मैं वीराचारी-वामाचारी जो कहें, हूँ।'

गिलास हाथ में लेने के बावजूद एक क्षण तक पकड़े रहा और फिर वापस करते हुए बोला, 'नः, रहे।'

रीतू बाबू ने गोरा बाबू को देने के बाद और एक दूसरे कप में अपने लिए ढाल बेंक के किनारे को पकड़ कर पुकारा, 'लिट्ल ब्रदर! बोस!'

'गहरी नींद में है।'

रीतू बाबू खुद ही उसे पी गया और दुबारा ढाला ।

गोरा बाबू चुपचाप सिगरेट का कश ले रहा था । एकाएक बोला, 'जानते हैं, दादाजी के पास ही मेरा ऐक्टिंग का अक्षरारम्भ हुआ था । हम लोगों के शिवहारी से दो मील की दूरी पर नवग्राम है । वहाँ के बाबू लोग तब बहुत ही फूल-फल रहे थे । कोयला-लोहे की ठीकेदारी में बेशुमार पैसा पीट रहे थे ।'

रीतू बाबू ने धीरे से कहा, 'आपकी ससुराल के लोग—'

'भूल जाइये ।' यह कहकर कविता की आवृत्ति की—

माटी के तल में जो मृत निहित
वह भी नहीं है मृत । स्मृति के मन्दिर में
प्रेम के आरति-दीप से नित्य आरति होती
है उसकी । किन्तु हाय, काल के गह्वर में
विस्मृति के मृत्तिका-स्तूप में
जो जन है निहित
वही है मृत—वही है मृत !

उसके बाद हँसता हुआ बोला, 'सो सब माटी के नीचे दब गया है । मैं उन लोगों के लिए मृत हूँ, वे लोग मेरे लिए मृत हैं । जानते हैं, यह बात मैंने नहीं बतायी है । दादाजी को कोई विशेष सम्पत्ति नहीं थी । जो भी थी, चाचाओं ने ले लिया है । और खानदानी शालिग्राम-शिला है । मेरी पहली पत्नी पालकी पर बैठ कर, दादाजी की मृत्यु के पहले आयी थी और देव सेवा के उस अंश को मेरे पुत्र के नाम लिखा कर वापस चली गयी थी ।'

'यह सब बात अभी रहने दें गोरा बाबू । नहीं तो प्रोप्राइट्रेस को फिर पुकारना होगा ।'

'नहीं । गोरा बाबू ने मंजरी के चेहरे की ओर देखते हुए कहा, 'वह मेरी जिन्दगी की क्या है, यह मैं बता नहीं सकता ।'

गाड़ी बण्डेल स्टेशन पहुँची । डेढ़ बज चुके हैं । गोपाल घोष दरवाजा खोल अन्दर आया । उनके साथ शिवनन्दन था ।

'क्या खाइएगा ? मास्टर साहब ? बाबुल बोस ? मंजरी माँ, क्या ले आऊँ ? अलका ? पूरी-सब्जी या मिठाई ?'

बाबुल झट से बेंक से नीचे उतर आया और बोला, 'मैं जाकर देख आता हूँ । राइस चाहिए भैया । कल रात से पूरी चल रही है ।'

मंजरी बोली, 'आप मास्टर साहब के लिए इन्तजाम कीजिये । शिवनन्दन, तू जाकर देख आ कि कौन-सा फल और फलाहारी मिठाई मिल रही है ।'

गोरा बाबू बोला, 'अखबार लेते आना । तीन दिन से अखबार नहीं देखा है ।'

रीतू बाबू बोला, 'क्या देखिएगा सर ! बस लड़ाई ही चल रही है ।'

दूसरी ओर करीब-करीब पूरा दल स्टेशन पर उतर आया है। कोई नल के पास चिउड़ा भिगोने जा रहा है, कोई दही की तलाश कर रहा है। बाकी लोग चना-चूर से लेकर तेल के पकोड़े और मिठाई की खरीदारी कर रहे हैं।

बंसी ने पूछा, 'क्या खाओगी आशा ?'

'आलू का दम मिले तो लेते आओ। चारेक आलू मिल जाये तो काम चल जायेगा। और अण्डा मिले तो लेते आना।'

बंसी नीचे उतर गया।

नाटू बाबू खिड़की से ही पुकार रहा है, 'ऐ-ऐ सुनो। क्या है ?'

गोपाली बोली, 'उतर कर देखो न, गाड़ी में ही क्या सब कुछ मिल जायेगा। देखो अगर अण्डा मिल जाये।'

'नाटू बाबू बोला, 'नहीं-नहीं। कब का अण्डा होगा—बासी या सड़ा अण्डा नहीं खाऊँगा।'

एकाएक खिड़की से झाँककर शोभा ने पुकारा, 'ओ बंसी। बं—सी। मेरे लिए एक अण्डा और एक आलू का दम लेते आना भाई। एक अण्डा। हाँ, और आलू का दम।' उसके बाद अपने आप बुदबुदाई, 'विशाल लकड़ी में कोई दोष नहीं होता।'

बाबुल दनदनाता हुआ डिब्बे में आया और बोला, 'मैं उतर रहा हूँ सर। राइस-करी का ऑर्डर दिया है – खाकर लोकल से गोइंग। पेट में चूहा कूद रहा है। लौटने के बाद मिलूँगा। हाँ अली यू ? विथ मि—और विथ देम। देखो तब डोन्ट से— हाफ वे से भाग आया हूँ।'

अलका उठ कर खड़ी हो गयी, मैं तुम्हारे साथ ही चलूँगी। मेरे घर की तरफ तुम्हारे सिवा कोई और जाने वाला नहीं है।'

रीतू बाबू हँस पड़ा। अलका सूटकेस हाथ में ले शिवनन्दन से बोली, 'मेरा बिस्तर उतार दो न शिवनन्दन। चलती हूँ मंजरी दी।' सिर तक हाथ ले जाकर नमस्कार किया। उसके बाद अचानक गोरा बाबू से बोली, 'आप ब्राह्मण हैं। आपको प्रणाम करती हूँ।'

उतर जाने के बाद रीतू बाबू बोला, 'यह लड़की कंबल है सर। बाबुल को छोड़ नहीं रही है।'

मंजरी फल छील रही थी। वह हँस दी।

रीतू बाबू बोला, 'आप हँस रही हैं ! देखिएगा, मेरी बात कहाँ तक सच है !'

मंजरी उस बात का जवाब न देकर बोली, 'आपको कुछ फल दूँ ?'

'नहीं-नहीं। फल इस वक्त इस मुँह में अच्छा नहीं लगेगा। गोपाल कुछ ला रहा है।' यह कहकर बोतल फिर से निकाल ली। प्याली में ढालने के बजाय बोतल में ही मुँह लगा कर पी ली और सुस्ता कर बोला, 'फल संन्यासी खाते हैं।'

मंजरी ने हँस कर कहा, 'मगर फल खाने से ही कोई संन्यासी नहीं हो जाता है। ऐसा होता तो सभी बन्दर संन्यासी हो जाते। नाटक खासा अच्छा लिया है।'

गोपाल गरम पूरी, सब्जी और एक अण्डा लिए आया और रीतू बाबू के सामने रखते हुए बोला, 'एक रुपया छह आना लगा।'

'लगने दो। बहुत गरम है। बैग से पैसा निकाल लो।' सिर के तकिये के नीचे से बैग निकाल कर गोपाल को दिया।

गोरा बाबू बोला, 'चाय वाले से कहिये। चाय। सकोरे में ही चाय ले आइये। चार सकोरे।'

'फल के साथ चाय पियोगे ?'

'चाय यद्यपि दाल-भात नही है, लेकिन जहर भी नहीं है। लाइये गोपाल बाबू चाय ले आइये।'

गोपाल शीशे के गिलास में चाय ले आया। गोपाल बाबू ने चुस्की लेते-लेते कहा, 'चाय जिन्दगी मे दो बार पी है, 'एक बार—'

कहते-कहते हँसने लगा।

रीतू बाबू बोला, लिखिये न इसी तरह की एक पुस्तक चाहे सामाजिक ही क्यो न हो। हम लोग उसे खेलेंगे।'

चाय खत्म कर गोरा बाबू बोला, 'उसी की रूपरेखा तैयार कर रहा हूँ मास्टर साहब। लेटा था, नीद नही आ रही थी। सहसा दिमाग में बात आयी। धुंधली और अस्पष्ट। लेकिन कोई बुरा नही है। फर्स्ट सीन देखिये—बाप और बेटे में बातचीत हो रही है। मान लीजिये ब्राह्मण पंडित का खानदान है। बाप वयस्क और भक्त हैं—ज्ञान से अधिक भक्ति की मात्रा है उनमें। गा सकते हैं। मान लीजिये, भागवत पाठ कर रहे हैं। मन वश के बाहर है। अचानक भक्ति में डूब कर गीत गाने लगते हैं। गीत के बीच ही लड़का आकर खड़ा हो जाता है। गीत गाना खत्म होता है तो लड़का पैर छूकर प्रणाम करता है। बाप आँख उठाता है और लड़के पर नजर पड़ते ही पूछता है, 'क्या कही जा रहे हो ? तुमने प्रणाम किया। कपड़ा-लत्ता पहने हो।'

लड़के ने कहा, 'मान लीजिये नवग्राम या नवीनहाट। हाँ, नवीनहाट ही अच्छा रहेगा। लड़के ने कहा: 'हाँ, नवीनहाट जा रहा हूँ। उन लोगों के स्कूल की नौकरी स्वीकारना मैंने तय किया है। आपसे कहने आया हूँ।'

'तय करने के बाद मुझे कहने आये हो ! तब—तब ठीक है। इससे अधिक क्या कहूँ। निर्णय ले ही लिया है तो इससे अधिक क्या कहा जा सकता है ?'

'आप मुझे आशीर्वाद दें, संतुष्ट मन से कहें।'

'संतुष्ट मन से ?' जरा-सा सोचने के बाद बोला, 'कैसे कहूँ ? हम लोगो का वंश पुराना गुरु-वंश है। शास्त्र-चर्चा एव शिक्षा या दीक्षा देना ही हमारा कर्म था, पेशा नही। पिताजी के जीवन-काल मे टोल बन्द हो गया। लड़कों का आना बन्द हो गया। सभी अंग्रेजी सीखने जाने लगे। उस पर अकाल के समय उनका देहान्त हो गया। मैं बालक था। मैं स्वयं शास्त्र-पाठ नही कर सका। गृहस्थी का बोझ माथे

पर पड़ गया। थोड़ा-बहुत सीखकर पहले पुरोहित का काम किया। उसके बाद गले का स्वर मीठा रहने और संगीत पर जन्मगत अधिकार रहने के कारण भागवत पाठ कर किसी तरह भक्ति योग के द्वारा वंश की मर्यादा को टेकनी पर टिके मकान की तरह खड़ा रखा। तुम्हें बचपन से ही शास्त्र-चर्चा करायी। काशी में वेदान्त पढ़ने को भेजा। इसलिए कि तुम गुरुगीरी को फिर से नया जन्म दोगे। शास्त्र-चर्चा और भागवत-चर्चा एक साथ होगी। लेकिन तुम कह रहे हो, स्कूल मे हेड पंडिती का काम करोगे। महीने में पैंतालीस रुपया वेतन मिलेगा। दस से चार बजे तक की नौकरी, नरः नरौ नराः सिखाओगे लड़कों को। साहब-सूबा आयेगा तो 'सर' या कुछ ऐसा ही शब्द कहोगे और उठकर खड़े हो जाओगे। बाबुओं पर निगाह जायेगी तो नमस्कार कर नौकरी बचाओगे। हमारे पुरखे रास्ते से जाते थे तो लोग धरती पर माथा टेक कर प्रणाम करते थे। किसी के घर पर जाते तो उसका घर पवित्र हो जाता था। वे लोग पानी का लोटा ले दौड़े-दौड़े पाँव धोने आते। तुम पंडित जी बनोगे बेटा, तुम पर नजर पड़ेगी तो लोग कहेंगे, प्रणाम पंडित जी। कैसे हैं? घर पर जाओगे तो कहेंगे, आइये बैठिये। वह रहा मोढ़ा, उसी पर बैठ जाइये। पाँवों मे धूल रहेगी तो खिड़की से घाट दिखाकर कहेंगे, वह रहा घाट। पाँव धो आइये। बेटा, यह सब तो बाहरी बात है। मान लो, इधर-उधर काम में फँसे रहने के कारण थोड़ी देर हो जाती है—दस बजने-बजने को है। तब इष्ट-स्मरण, पूजा, खाना-पीना और स्कूल की नौकरी – इनमे से किसको तरजीह दोगे? अगर इष्ट-पूजा को तरजीह दोगे तो वह इष्ट-स्मरण हो जायेगा — सो भी सिर पर जल डालने के दौरान ही यह क्रिया चलेगी। या फिर भोजन के आसन पर बैठने पर दो बार घाव वाले कुत्ते की तरह केरे-रे-रे कर उँगलियों की पोर-पोर पर अंगूठा दौड़ाओगे। मैं किस प्रकार संतुष्ट मन से हामी भरूँ, तुम्हीं बताओ।'

रीतू बाबू खाते-खाते सुन रहा था। उसका खाना कुछेक मिनट पहले ही रुक गया है। वह मुग्ध जैसा गोरा बाबू के चेहरे की ओर देख रहा था। गोरा बाबू जैसे ही चुप हुआ, वह बोला, 'ग्रैण्ड-ग्रै-र-ण्ड सर ग्रै-र-ण्ड। उस बूढ़े का पार्ट मैं करूँगा। लड़के का आप।'

'उहुँ, बूढ़े का पार्ट आप ही कीजिएगा। तब हाँ, लड़के का मैं नहीं करूँगा। मैं पोते का पार्ट करूँगा! मैं सेकण्ड ऐक्ट मे आऊँगा। इस ऐक्ट मे पोता बालक है। एक अच्छा-सा बालक चाहिए। रंग गोरा होना चाहिए। उसका नाम रहेगा जयधर। बूढ़े के लड़के का देहान्त फर्स्ट ऐक्ट में ही हो जाता है। बाप के मत से उसका मत मेल नहीं खा सका। लेकिन बाप की परवाह न की हो, ऐसी बात नहीं। तब हाँ, नौकरी उसने स्वीकार कर ली। उसने विनम्र स्वर मे दृढ़ता के साथ कहा: आप पिता हैं, महागुरु हैं, भागवत के प्रति आप में अगाध भक्ति है। चाहे व्याकरण, काव्य और शास्त्र की चर्चा का सुयोग आपको बहुत कम मिला हो, परन्तु विधाता ने आपको वह सम्पदा देकर दुनिया मे भेजा है। लोगों का कहना है कि भक्ति योग ज्ञान के

अभाव मे अन्धे की प्रकाश की इच्छा की तरह ही जन्म लेता है। लेकिन नही, भक्ति योग ज्ञान योग से भी बढ़ कर है। वह दुर्लभ वस्तु है। संसार में किसी भी काल मे सुलभ नही है। उस पर यह कलियुग है, विदेशी राजा है। संस्कृत भाषा का सम्मान कम हो गया है। शालिग्राम चिकना पत्थर का टुकड़ा हो गया है, मूर्ति पत्थर का पुतला हो गया है। लोग चुन कर लाते हैं और घर सजाते हैं। म्युजियम में देखा है, उसका मूल्य कला की दृष्टि से आँका जाता है और वह एक काल विशेष का निर्देशक समझा जाता है। इसके साथ ही हम लोग यानी जो लोग शास्त्र-चर्चा करते हैं, पूजा करते हैं, वे जनता और समाज की दृष्टि में लोभी, भीरु और अन्ध कुसंस्कारों से पूर्ण जीव समझे जाते हैं। आपने सम्मान की बात कही। पिता के श्राद्ध, मातृश्राद्ध, विवाह और अन्न प्राशन में हमें अनुगृहीत समझ कर बुलावा भेजते हैं। फेहरिस्त देते हैं तो बाजार के छोटे दुकानदारो से लोग जैसे दर-दाम करते हैं, वैसा ही वे दर-दाम करते हैं। कहते हैं—रफा-दफा कीजिये। हम भी पेट के अन्न के लिए वैसा ही करते हैं। श्राद्ध घर मे श्राद्ध खत्म होने पर कोई खोज-खबर भी नही लेता है। पंडित को फिर भी बैठने के लिए मोढा देते हैं, लेकिन पुरोहित और गुरु को कंबल का आसन देते हैं। सो भी सबसे अंधेरे कमरे में। हम अनादृत-लांछित हैं, पग-पग पर हमारा अपमान किया जाता है। नहीं पिताजी, इसके बाद पूरा वंश भिखारी या भांड़ चाहे न भी हो, मगर इस रास्ते पर चलने से रसोइया ब्राह्मण जरूर हो जायेगा। नये ज्ञान का रास्ता हमे अख्तियार करना ही होगा पिताजी। जयधर को मैं चाहे अंग्रेजी सिखा कर विज्ञानवेत्ता बनाऊँगा या फिर दार्शनिक काव्य-रचयिता लेखक बनाऊँगा। साथ ही साथ अपने और सब भाइयों के लड़को को। आप बाधा नही दीजिये।'

'वाह ! उसके बाद बूढा क्या बोला ?'

'मान लीजिये, बूढ़े को खोजने पर भी कोई उत्तर न मिला।'

'तो फिर हार गया।'

'हार-जीत की बात नही। यथार्थ को बड़ा बनाइए। सामाजिक नाटक है।'

रीतू बाबू बोला, 'हाँ, सामाजिक नाटक। तब हाँ, एक 'क्लैश'—प्रताड़ना जो कुछ है शुरुआत में है, यहाँ नही।'

'नही।'

रीतू बाबू अब बहुत देर के बाद खाना खाने लगा। मंजरी थाली सजाकर खामोशी के साथ भून रही है।

गोरा बाबू बोला, 'बाप चुपचाप बैठा है।' थोड़ी देर बाद सोच कर बोला, 'बाप यहाँ चिल्ला उठता है : नहीं-नहीं। उससे तो मृत्यु कहीं अच्छी है, बरबादी कहीं अच्छी है, निर्वंश रहना कही अच्छा है। समझ रहे हैं मास्टर साहब। ठीक इसी क्षण उसका वह पोता बाहर से ऊँचे स्वर मे दादा जी कहकर आता है—वृद्ध खामोश हो जाता है। कैसा रहेगा ? तब हाँ, पहरावा बिल्कुल साधारण है।'

'गुड ! गुड ! वेरी गुड !'

गोरा बाबू ने मंजरी की ओर देख कर कहा, 'तुम्हारी राय क्या है ? बताओ।'

सलज्ज भाव से सिर का घूंघट तनिक सरकाकर मंजरी बोली, 'अच्छा है। बहुत ही अच्छा। लेकिन पोते से भी कुछ कहलाना होगा।'

'क्या कहेगा ? तुम्ही बताओ। हाँ, कुछ न कुछ कहना चाहिये।'

'कहे कि दादाजी, बाबू लोगों के लड़कों ने सुन्दर कॉपिंग पेंसिल खरीदी है, नीब वाली कलम खरीदी है। मुझे भी खरीद दीजिये। दादा का गला भर आता है। दादा खामोश हो जाता है।-उसके बाद कहता है : कितनी कीमत है ? दो का आठ आना। दादा कहता है : चलो देखता हूँ, कल कुछ आदमी आये थे और गोविन्द को प्रणाम कर एक रुपया दे गये हैं। रखा हुआ है। आठ आना तुम से लो। पोता का हाथ थाम बाहर निकलने के समय बेटे से कहता है : 'तुम नौकरी स्वीकार कर लो चण्डी चरण। मैं अनुमति देता हूँ।'

गोरा बाबू बोला, 'तुम्हे तो बिलकुल याद है।' और वह हल्की हँसी हँस दिया।

मंजरी बोली, 'हैण्डल तो तुमने मुझे रखने दिया था।'

गाड़ी श्याबड़ाफुली में आकर खड़ी हुई। डिब्बे में तीनेक डेली पैसेन्जर आकर बैठ गये।

रीतू बाबू ने खाना खत्मकर हाथ धोया और उसके बाद सिगरेट सुलगायी। गोपाल नीचे उतरा और खिड़की के किनारे थोड़ी देर खड़े रहने के बाद गाड़ी में बैठ गया। वह सोच रहा था, उसके उस प्रिय बच्चे को वह पार्ट दिया जाये तो कितना अच्छा रहे। मंजरी ने गोरा बाबू के सामने शीशे की तश्तरी पर एक पत्तल बिछाकर खाना परोस दिया और कहा, 'खा लो।'

'तुम खाओ।'

'खा रही हूँ।' वह बेंच के पीछे की ओर मुड़कर बैठ गयी।

तीनों पैसेन्जर अलका की खाली बेंच पर बैठ गये। एक व्यक्ति प्रौढ़ है, दो कम उम्र के युवक। वे एक-दूसरे के संगी हैं, एक ने दूसरे के बदन में टहोका लगाते हुए कहा, 'अरे, यह तो यात्रादल की एक्ट्रेस मंजरी देवी है और वह गोरा बाबू हैं। मतलब यह कि मंजरी ऑपेरा एण्ड मंजरी दो 'बोथ' के मालिक। मैं पहचानता हूँ। दूसरी ओर रीतू बाबू हैं।'

उन लोगों की ओर गौर से देखते हुए श्रोता बोला, 'बड़ा ही चापलूस है। सेकेण्ड क्लास मारे हुए हैं। लड़ाई का बाजार है न।'

'चुप।'

रीतू बाबू सहसा उठकर खड़ा हो गया और जोरों से खँखारकर बोला, 'बड़ा ही 'प्रोमिस' है विजय बाबू। अच्छा रहेगा। लिख डालिए। और एक खासा शरारती

बालक पात्र ले आइएगा। बोस बड़ा ही अच्छा पार्ट करेगा। एक सीन मेरे साथ दे दीजियेगा जिसमें रहेगा कि मैं उसे बेधड़क पीट रहा हूँ। ठीक है न ?' रीतू बाबू का छत्तीस इंच का सीना फूलकर चालीस इंच के बराबर हो गया। रीतू बाबू प्रौढ़ हो गया है, मगर यात्रादल की आबोहवा की वजह से उसमें अब भी बचपना है। शायद रहता भी है। दस वर्ष की उम्र के लड़के से लेकर साठ-पैंसठ के बूढ़े एवं युवक-युवती का दल इस कल्पना को यथार्थ बनाने के खेल में मशगूल रहता है। इसमें बच्चे बूढ़े बनते हैं, बूढ़े बच्चे। शायद दोनों ही पक्ष यौवन के खिंचाव में बंधे रहते हैं। यानी बच्चे जवानी को पकड़ना चाहते हैं और बूढ़े भी जवानी को कसकर थामे रहते हैं।

छः

भादों महीना शुरू होने के पहले से ही मंजरी-ऑपेरा का रिहर्सल चलने लगा। रीतू बाबू रिहर्सल का संचालन कर रहा है। गोरा बाबू और मंजरी नहीं आ रहे हैं। सूतक जब तक खत्म नहीं होगा तब तक नहीं आयेंगे।

वैसा कोई तड़क-भड़क वाला मामला नहीं है। दफ्तर में वह कुरसी पर बैठता है और बाकी लोग तख्ते पर बैठते हैं। जो-जो लोग अपना पार्ट बोलते हैं, किताब थामे सुनता है और बीच-बीच में कहता है, ऊँह, उसे यों करो। बोलो।

बीच-बीच में चाय आती है। नीचे की एक दुकान का छोकरा आता है और दे जाता है। किसी को नकद किसी को उधार। उधार के मामले में मंजरी ऑपेरा का गोपाल घोष आधा जामिन रहता है।

बगल के कमरे में कलकत्ते के बाहर के वैसे रंगकर्मी रहते हैं जिनका कलकत्ते में कोई डेरा नहीं है। वैसे दसेक व्यक्ति होंगे। वे लोग होटल में खाते हैं। योगानन्द भी उन्हीं में से एक है।

नौ बजे के पहले ही रिहर्सल समाप्त हो जाता है। ब्लैक-आउट की रातें हैं। सब अपने-अपने अड्डे पर चले जाते हैं। अधिकतर लोग पैदल ही जाते हैं। कुछ लोग ट्राम या बस से। बाबुल और अलका सबसे पहले चले जाते हैं। उन लोगों को टाली-गंज जाना पड़ता है।

शोभा कहती है, 'पागल हुई हो। वे लोग चौरंगी जाकर चक्कर लगायेंगे। बारह-एक बजे घर लौटेंगे। मेरी बात झूठी हो तो मैं गोदना गोदवा लूं। यहाँ की

लौंडियों से मैंने सब सुना है। ढेर सारी भले घर की लड़कियाँ आती हैं। बाप बेटी को लेकर आता है। भाई-बहन आते है। और छिपे हुए प्रेमी-प्रेमिकाओं का तो कोई हिसाब ही नही। कम्पनी खोली है। उन लोगो की कम्पनी का नाम है – बाबुलाली।'

इतना जरूर है कि खुले आम नही कहती हैं। क्योंकि अलका से भले ही न डरे पर बाबुल से शोभा डरती है। बड़ा ही गँवार है वह। अचानक इस तरह 'ह्वाट' बोल उठता है कि आदमी चिहुँक पड़े। बाबुल बाबू ! तो कहेगा 'ह्वाट'। एकबारगी आक्रामक ह्वाट। रीतू बाबू का पार्ट देख खुश होकर उससे कहता है : जी मे हो रहा है कि एक फुलवेट घूसा जमा दूँ। और अंग्रेजी का तो ढेर लगा देता है। यही नही, चुभन भरी बातें बोलता है। योगा बाबू ने एक दिन कहा था : बाबुल बाबू सर ! बाबुल ने मुड़कर गरदन तिरछी की और सरसरी निगाह से देख लिया। बोला कुछ भी नहीं। योगा बाबू ने भी हार नही मानी। कहा, कब हमे मिठाई खाने को मिलेगी सर। अली से आपकी शादी कब हो रही है ? बाबुल ने कहा था : तुम्हारे जैसे गंदे कीड़े से मैं बातें नही करता। इस तरह बोला था कि योगा बाबू जैसा गाँजाखोर और गँवार आदमी भी बैलून की तरह पिचक गया था।

बंसी बारह-तेरह साल की दो लड़कियों को ले आया है। नाच के दल के सामने रखेगा। ये लोग झुग्गियों की लड़कियाँ हैं। बंसी आशा और उन दोनों लड़कियों को साथ ले पैदल घर लौटता है। गोपाली और नाटू भी पैदल आते-जाते हैं। नाटू पैसा खर्च करने वाला आदमी नही है। शोभा रीतू बाबू की आशा में रहती है। वह रिक्शे से लौटता है। बाबू साहब है न ! जिस दिन गोरा बाबू मंजरी के घर पर जाता है उस दिन शोभा को भी साथ ले जाता है। तब हाँ, वह दूसरे रिक्शे पर जाती है। एक ही रिक्शे से दोनों का काम नही चलता। काम चल भी जाये तो रीतू को अच्छा नही लगता। तब हाँ, आने के पहले अक्सर उधर से ही होकर आता है क्योंकि अभी यहाँ रात को शराब नही मिलती है। गोरा बाबू की तारीफ करनी चाहिये, इन कई दिनों के दरमियान उसने शराब का स्पर्श नही किया है। बैठा-बैठा पुस्तक लिखता रहा है। नयी पुस्तक है। हरदम चाय पीता रहता है—बीस-तीस कप, इसके अलावा सिगरेट। मंजरी बुड़बुड़ाती रहती है। पहले वह शराब के साथ खाना खाता था। शोभा वह नजारा देख चुकी है। एक ही घर मे रहती है, कितने ही दिन तैयार भी कर दिया है। पहले चाहिये मक्खन का खासा बड़ा एक टुकड़ा। नमकीन मक्खन। उसे शुरू में ही खा लेता है। उससे पेट का अन्दरूनी हिस्सा ठैला हो जाता है। उसके बाद पेट के अन्दर जितनी शराब जाती है, वह ज्यादा देर तक टिक नही पाती। पेट को हानि भी नही पहुँचा पाती। नीचे उतर जाती है। उसके बाद चाय, कटलेट, भीगा हुआ चना और मटर। हरे मटर के मौसम में सीझा हुआ मटर, सलाद। इतनी सारी चीजे। मगर चाय के साथ कुछ भी नहीं। मंजरी इसी वजह से बुड़बुड़ाती रहती है।

चाय के अतिरिक्त सूतक के और-और नियमों का दोनों पालन कर रहे हैं।

औरतें सब कुछ कर लेती हैं। चाहे वह वेश्या हो या गृहस्थ घर की बहू। धर्म-कर्म करने का उन्हें अभ्यास रहता है। निहायत घटिया किस्म की औरत हो तभी यह सब नहीं करती। मंजरी बेशक अलग ही तरह की है। उसकी माँ और दादी ब्राह्मण वोष्टम के रीति-रिवाज का पालन करती थी। मंजरी यात्रादल कायम नहीं करती तो गृहस्थ घर की बहू जैसी ही रहती। तारीफ है तो गोरा बाबू की। उसे काला पहाड़ की कहना चाहिए। सोने का सिंहासन छोड़ मंजरी से शादी की है और यात्रा वाला बन गया है। बड़े आदमी के कितने ही लड़के बरबाद हो चुके हैं। थियेटर की ही बात लें तो बहुत सारे बड़े आदमी के लड़के यहाँ बरबाद हो चुके हैं। तब हाँ, इन लोगों का तौर-तरीका अलहदा है।

शोभा चितपुर तरफ के बरामदे पर चुपके-चुपके सिगरेट का कश ले रही थी। वह सिगरेट पीती है, मगर सबके सामने नहीं। दल के लोग थोड़ा-बहुत आदर करते हैं, इसीलिए नहीं पीती है। आज कैसे तो उसे सिगरेट पीने की इच्छा हो गयी। रीतू बाबू से चुपके से माँग लायी है और कश ले रही है। बरामदे पर आ साँकल बन्द कर दी है और इत्मीनान से पी रही है।

यह क्या? अन्दर कोई बिलख कर रो रहा है!... 'हाय बाबू!'

कौन है? किसको क्या हुआ है? कान खड़ा कर सुनने लगी। लगता है, बंकिम साधु के गले की आवाज है। मँझोले किस्म का पार्ट करता है। सेनापति, सामन्त रानी या अधिक बात चीत करने वाले दूत का पार्ट। बंकिम सीथी में रहता है। अब के रथ के दिन नहीं आया था। किसी ने बताया था कि किसी बड़े दल में बड़े पार्ट के साथ उतर रहा है। उसका चेहरा-मोहरा अच्छा है। लगता है, वही है। शोभा ने सिगरेट फेंक दी और दरवाजा खोल कर खड़ी हो गयी।

हाँ, बंकिम ही है। बंकिम रीतू बाबू का हाथ पकड़ बिलख-बिलख कर रो रहा है—'आप कह दीजिये मास्टर साहब। मेरा लड़का, मास्टर साहब, सोलह साल का लड़का...।'

पूरे कमरे के लोग जैसे गूंगे हो गये हैं। किसी की भी पलकें झपक नहीं रही हैं। हो सकता है, साँस रोके बैठे हैं। बंकिम के सोलह साल के लड़के को क्या हुआ है, शोभा यह बात पूछ भी नहीं पा रही है।

रीतू बाबू बोला, 'तुम्हारी माँग ढाई सौ रुपये की है बंकिम। बीस-पच्चीस की होती तो मैं ही दे देता।'

'आज एक सौ दीजिये, कल बाबू और प्रोप्राइट्रेस को पूछ कर बाकी पैसा दे दीजिएगा। बाबू, डाक्टर का बकाया है, दवा के दुकानदार का भी बकाया है।

बाईस दिन में दीवाला पिट गया है। बकाया रहने के बावजूद डाक्टर देख रहा था। तीन-चार दिन के अन्दर देने की बात थी, मगर दे नहीं पाया। आज सवेरे से ही क्राइसिस चल रहा है। डाक्टर दोपहर मे कह गया है, पैसा नहीं मिलेगा

तो वह अब नहीं आयेगा। बाबू, मास्टर साहब, डाक्टर का गुनाह ही क्या है, खून वगैरह की जाँच का पैसा भी बाकी है।'

शोभा ने पूछा, 'लड़के को क्या हुआ है ? कौन-सी बीमारी है बंकिम ?'

बंकिम बिलख-बिलख कर रोने लगा। किसी तरह रुलाई का आवेग रोक कर बोला, 'टायफाइड बताया है, मैनेनजाइटिस का लक्षण दीख रहा है।'

शोभा बोली, 'हाय-हाय।' उसके बाद बोली, 'चलो, तुम मेरे साथ चलो। मालिक-मालकिन के पास ले चलती हूँ। वे लोग जरूर दे देंगे।'

'देर करने का वक्त मेरे पास नहीं है शोभा दी। वहाँ से फिर यहीं भेजेंगे।'

रीतू बाबू बोला, 'गोपाल बाबू, आप एक सौ रुपया लेकर उसके साथ जाइये। जा कर कुछ पैसा डाक्टर को दे दीजिये, कुछ दवाखाने वाले को और बाकी डेढ़ सौ के लिए कह आइये कि हम जिम्मेदार हैं। समझ रहे हैं न, साथ चले जाइये। अगर टैक्सी मिले तो उसी से चले जाइये। उसका काम जल्द हो जायेगा और आपको भी लौटने में रात नहीं होगी। जाइये। मालिक-मालकिन से जो कुछ कहना होगा, मैं कहूँगा। टैक्सी से ही वापस आइएगा। मैं यहीं रहूँगा; मुलाकात हो जायेगी। जाओ बंकिम।'

गोपाल घोष दूसरे कमरे में चला गया। शायद रुपया ले आया। उसके बाद बोला, 'चलो बंकिम।'

बंकिम के होंठ काँप रहे हैं और काँपते होठों पर हल्की-सी हँसी की रेखा उभर आयी है, मगर आँखों से आँसू की बूंदें भी लुढ़क रही हैं। वह कुछ भी बोल नहीं सका। केवल रीतू बाबू के चरणों का स्पर्श किया। रीतू बाबू बोला, 'अच्छा हो जायेगा। माँ जरूर ही अच्छा कर देंगी।'

रीतू बाबू बोला, 'इस तरह बातचीत के बीच टपक मत पड़ो शोभा। टपकना ठीक नहीं होता। मैं उसे पैसा दे देता। जरा जाँच-पड़ताल कर लेना चाहता था। क्योंकि जानती ही हो, हम लोगों की जात अच्छी नहीं है। हम मजलिस में भी उसी तरह रोते हैं, रो सकते हैं। असली-नकली...'

'शोभा फुंफकार उठी, 'तुम उस रुलाई को नकली रुलाई कह रहे हो ? उफ्, तुम बड़े लोग ऐसे ही होते हो।'

रीतू बाबू मुसकराते हुए बोला, 'तुम भी तो छोटी नहीं हो शोभा। और न ही बच्ची हो। इस तरह झूठ बोल कर यात्रा दल में किसी ने पैसा नहीं लिया है ?'

'लेता है। लेकिन इस तरह लड़के की बीमारी का नाम लेकर फूट-फूट कर रोते हुए लेता है ? तब हाँ, दूसरे दल के आदमी के बारे मे तो बात ही दीगर है।'

फिर सुनो। तब मैं यात्रादल मे पहले-पहल आया था। मेरी असली नौकरी थी म्युनिसिपैलिटी की। इसे अतिरिक्त आय ही कहा जायेगा। सिर्फ रात में—यानी जितनी रात मंच पर उतरता था, आठ रुपया रात की दर से मिलता था।

दल बड़ा था। बकाया वहीं रहने देता था और जब कुछ जमा हो जाता तो ले आता था। उस बार ऑफिस से रफूचक्कर हो कर हावड़ा से चौंसठ रुपया बकाया लेने पहुँचा। गरमी का मौसम था, चैत का महीना। मैं ऑफ़िस पहुँच कर रुपया ले ही रहा था कि उस समय का बड़ा ही नामी ऐक्टर सीढ़ियों पर से 'ओह-ओह' चिल्लाता हुआ कमरे के अन्दर आया। शराब के नशे मे धुत्त कमरे के अन्दर आते ही फूट-फूट कर रोने लगा ...मेरा शिबू नही रहा। हाय-हाय, करते हुए सिर का बाल नोचने लगा और सिर पीटने लगा। मैनेजर घनश्याम गोसाईं चिहुँक उठा और कहा, 'यह क्या ? यही तो सात दिन पहले ऑफिस आया था और कह रहा था कि आप लापता हैं और पैसा नही भेज रहे हैं।' उसने जेब से एक पोस्टकार्ड निकालकर पटक दिया और कहा—'यह देख लो।' घनश्याम ने पढ़ा। मगर वह अधिक विचलित नहीं हुआ। पोस्टकार्ड टेबुल पर रख दिया। मैंने पढ़ा। चिट्ठी के प्रारम्भ मे ही लिखा था : बहुत दिनो से आपकी खबर नही मिली। मैं भी पत्र नही लिख सका। लाचार होकर आज आपको दु:ख के साथ सूचित कर रहा हूँ आपके बड़े लड़के का देहान्त हो गया है। मामूली बीमारी थी। मगर न रहा तो जोर-जबरन कैसे रखता।' घनश्याम से उसने कहा, 'मुझे एक सौ रुपये दे घनश्याम। मैं घर जाऊँगा और उसका क्रिया-कर्म कर आऊँगा।' उसके बाद हाय-हाय करने लगा। छाती पीटने का सिलसिला चलने लगा। घनश्याम ने कहा, 'रुपया मैं नही दे पाऊँगा, मास्टर साहब। मुझे कड़ी हिदायत मिली है कि मालिक के दस्तखत के बगैर पैसा नही दूँ।' वह उठकर खड़ा हो गया और रुद्रमूर्ति धारण कर घनश्याम को कोसने लगा। उसके बाद बाहर निकल गया। मैंने घनश्याम से कुछ नही कहा। पैसा लेकर दौड़ता हुआ गया और उसे प्रणाम करते हुए उसके हाथ मे पचास रुपया थमा दिया। कहा, 'मेरे पास इससे अधिक नहीं है मास्टर साहब। रहता तो दे देता।' उसने थोड़ी देर तक मेरे चेहरे की ओर देखा। मुझे आशीर्वाद दिया और चलता बना। कह गया, बाद में तुम्हें लौटा दूँगा। वह चला गया। मैं ट्राम पर बैठने ही जा रहा था कि घनश्याम ने मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'रुपया आपने दिया न।' मैंने कहा, 'हाँ दिया है। मुझे न देने का मालिक से कोई हुक्म नहीं मिला है। आप लोग बड़े ही निष्ठुर हैं।' घनश्याम ने हँसकर कहा, 'वह सब झूठी बात थी। बँगला मे उसमें 'मारा' जो शब्द था वह असल मे 'भारा' है। बाँकुड़ा के भारा गाँव उसका घर है। लड़का नौकरी पर था, बुखार का बहाना बनाकर भारा चला गया है। यानी घर चला गया है। अगर मौत होती तो क्या यह वाक्य रहता—मारा चलिया गिया छे (मारा चला गया है) ? लिखता—'मारा गेछे' (मर गया है)। और कुछ दुःख की बातें होती। पत्र मिलने पर उन्होंने 'भारा' को मारा बना दिया है और रुपया लेने के मकसद से आये थे। पेशगी के तौर पर उन्होने जो पैसे लिए हैं उसे चुकाने की बात तो दूर की है। सच्चाई तो यह है कि पेशगी की रकम महीने-महीने बढती जाती है। आपने उन्हे पैसा दिया ? कितना ? सब ?' मैंने कहा, 'पचास रुपया दिया है, चौदह मेरे पास है।' उसने कहा, 'आप किस्मत वाले हैं,

चौदह आने की जगह चौदह रुपये बच गये।' बाद में उन्होंने स्वयं ही स्वीकार करते हुए उपदेश दिया था, 'भाई, मुझे सहज ही पैसा नही देना। इस उपदेश की कीमत पचास रुपये की वह रकम है। तुम्हारा बकाया इसी से चुक गया। ठीक है न ?'

कहानी खत्म होते ही हँसी का एक रेला उठा। योगा बाबू ने कहा, 'समझ रहे हैं, कंठ जी के दल मे—'

रीतू बाबू बोला, 'मास्टर, कंठ जी के दल की बात रहने दो।'

'जी नही, दल की बात नही है। यह कंठ जी की बात है, उनका उपदेश। सो भी बिना कीमत का।'

'फिर कह डालो। रिहर्सल बन्द हो रहा है। नौ बज चुके हैं।'

दल के लोग अब तक चीनी पर चींटी के दल की तरह जुटे हुए थे, लेकिन अभी इस बात का ढेला गिरते ही हिलने-डुलने लगे। उठकर चल देंगे। योगा बोला, 'सुनो-सुनो। काटा रधा नामा, उलटे पड़ो जामा। मतलब यह कि इसे उलटने से होगा—टाका धार माना (पैसा उधार देना मना है)। वह देना लेने के बराबर है। समझे।'

किसी ने कहा, 'दुत।'

रीतू बाबू ने कहा, 'झूटी बात है योगा मास्टर। यह कंठ जी की बात नही है।'

'जी है, कसम खाकर कह सकता हूँ।'

'फिर झूठ बोल रहे हो ? कसम खा रहे हो ?'

योगा मास्टर अजीब आदमी है। लज्जित होना तो दूर की बात, हँस दिया।

आपका अनुमान बिल्कुल सही है। लेकिन आपने पकड़ कैसे लिया ?'

अपने जुड़े हाथ मस्तक तक ले जाकर रीतू बोला, 'कण्ठ जी साधक व्यक्ति थे, जिसे सिद्ध पुरुष कहते हैं। उनके जैसे लोगों की बातें एक अलग किस्म की होती हैं; उनमें एक अलग प्रकार का स्वाद होता है।'

'सो तो सही है।'

किसी ने पीछे की तरफ से कहा, 'नम्बरी झूठा है।'

योगा बाबू तत्क्षण गरज उठा, 'खबरदार! मैं झूठा हूँ ? यह बात वे कह सकते हैं। मजाक-मजाक मे कह दिया तो मैं झूठा हो गया ?'

रीतू मास्टर उसे एक धौंहो देते हुए बोला, 'चिल्लाओ नहीं। सभी अपने-अपने घर चले जाओ। शोभा, मुझे मालिक के यहाँ जाना है। तुम मेरे साथ चल सकती हो। कहाँ हो शोभा ?'

आशा बोली, 'शोभादी शायद जा चुकी है। भरसक गोपालीदी के साथ चली गयी।'

रीतू बाबू के चेहरे पर मुसकराहट तिर आयी। सबके सामने घुमा-फिराकर

उसने शोभा का तिरस्कार किया है। इसीलिए चली गयी। रीतू बाबू ने विपिन से कहा, रिक्शा बुला लाओ विपिन।'

मंजरी के घर आकर सीढ़ियाँ चलने के वक्त रीतू बाबू ने शोभा को पुकार कर कहा, 'क्या शोभा, बिना बताये ही तुम चली आयी ?'

शोभा के कमरे का दरवाजा बन्द है। कमरे के अन्दर से उसने शुष्क स्वर मे जवाब दिया, 'क्या करूं ? अच्छा नही लग रहा था।'

मंजरी सीढ़ी की देहरी पर खड़ी थी। वह बोली, 'आइये, काण्ड देख जाइये।

'क्या ?'

'जो कुछ लिखा था, फाड़ डाला।'

'फाड़ दिया ? यह क्या ?'

'हाँ। कहा कि वह चल नहीं सकेगा।'

रीतू बाबू सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर के बरामदे पर पैर रख चुका था। वहीं से बोला, 'क्या सर, क्या हुआ ? प्रोप्राइट्रेस ने बताया आपने उसे फाड़ डाला।'

गोरा बाबू गहरी चिन्ता में मग्न हो अन्दर लेटा हुआ था। सोच रहा था। बाहर निकल, उसी चिन्ता की हालत में होंठों पर हल्की मुस्कराहट लाते हुए बोला, 'आइए। हाँ, फाड़ दिया है। कोई बुरा नही था। कब 'विकनेम' दवा ले,,यही सोच कर फाड़ दिया।'

'बुरा नही था तो फिर मंचन करने में दोष ही क्या था ?'

'मंचन किया जा सकता था। पर चलता नही। मार खाना पड़ता।'

मजरी बोली, 'मैंने कहा था, यात्रा में न चल सके तो थियेटर वाले को दे दो।'

उसमे भी नहीं चलता। यह कटु सत्य नाटक मे चल नही सकेगा मास्टर साहब। थियेटर में भी नही। कम से कम सामाजिक रूप मे नही चल सकेगा। बैठिये, बताता हूँ। शिवनन्दन, मास्टर साहब को खाना दे जाओ। मै आपके पास आदमी भेजता। फाड़ा तो बिना बताये चैन नही मिल रहा था। सो दूत आ कर कह गया कि आप आ रहे हैं।'

'कौन ? गोपाल चन्द्र ?'

'दूसरा कौन हो ही सकता है ! मैं और डेढ सौ देकर ही भेजता। लौटकर सूचित करेगा। बैठिए। तुम भी बैठ जाओ। अभी तुम्हें कौन-सा काम है ?'

मंजरी बैठ गयी। उसके बाद बोली, 'बैठ कर क्या करूंगी ? तुम तो किसी की मानोगे नही।'

'क्या मास्टर साहब, मैं बात नहीं मानता हूँ।'

रीतू बाबू हँस दिया। शिवनन्दन ने उसका गिलास भर दिया। गोरा बाबू बोला, 'मेरी चाय दे जा।'-उसके बाद बोला, 'सोचा है, नये सिरे से लिखूंगा। हम लोगों के पुराने यात्रादल के इतिहास से मिलता-जुलता रोमान्टिक बैक ग्राउण्ड रहेगा।'

'क्यों?' उसके बाद रीतू बाबू तत्क्षण बोला, 'अच्छा कहिये।'

गोरा बाबू बोला, 'एक और असुविधा हो रही थी। वह यह है कि मेरे नायक को नाटक में ठीक स्थान नहीं मिल पा रहा था। एक अंक छूट रहा था, क्योंकि पहले अंक की शुरुआत नायक के बाप यानी वृद्ध के बेटे की मृत्यु से हो रही थी।'

'हाँ।'

मंजरी बोली, 'क्यों, बालक की हैसियत से पोता प्रथम अंक में है ही। बल्कि प्रथम दृश्य में ही है। द्वितीय दृश्य में नहीं था। वहाँ बाबू लोगों का घर है। उसके बाद उस शरारती बालक का पार्ट है। उसके बाद वही बालक पोता। बाबुओं ने पोते को थियेटर में विल्व मंगल का पार्ट दिया है। दादा उसे सिखा रहा है—सस्वर बोलो। जानते हो, संलाप में छन्द और स्वर है। उसका भी ताल-लय है। वह गीत से भी कठिन होता है। समझ रहे हो? वह तो खासा अच्छा सीन है। उसके बाद बाप की मृत्यु अचानक हो जाती है। उस सीन में भी बाप कहता है, मैं हार चुका हूँ जयधर, लेकिन तुम हार नहीं मानना। लड़का स्थिर होकर ताकता रहा। रोया नहीं।'

गोरा बाबू बोला, 'ठीक है। लेकिन इसके बाद ही आठ-दस साल का एक अन्तराल है। नायक युवक हो जाता है। जयधर का वास्तविक निर्माण इसी समय होता है मंजरी। बाप की जब मृत्यु हुई उस समय उसकी उम्र ग्यारह साल है। माँ से उसके चाचाओं और चाचियों का बनाव नहीं हुआ। दादा की उम्र उस वक्त साठ साल है। सामर्थ्यहीन हो गये हैं। गला बैठ गया है। भागवत का पाठ नहीं कर पाते हैं। बाल-बच्चों के द्वारा लालन-पालन हो रहा है। किसी से कुछ कह नहीं सके—न अपने लड़कों को और न ही जयधर को। पुत्रवधू के बाप की मालो हालत बहुत अच्छी न रहने पर भी कोई बुरी न थी। बाप अब भी जिन्दा हैं, वह लड़की और नाती को अपने पास ले जाता है। बीच-बीच में आने-जाने का सिलसिला रहता है। शिवहारी अग्रद्वीप के बीच कोई खास दूरी नहीं है। पितामह भी बीच-बीच में देखने आते थे। एक दिन अग्रद्वीप के बाबुओं के घर में थियेटर का रिहर्सल चल रहा था। घर के अन्दर खिड़की के पास लड़कों की भीड़ इकट्ठी हो गयी है। विशेष आग्रह के साथ अपने गाँव के ही एक निचले तबके परिवार के लड़के को बुला कर ग्वाल-बालक का पार्ट करा रहे हैं। वह जयधर नहीं है। जयधर और-और

लड़कों के साथ देख रहा है। वह क्योंकि दुस्साहसी है इसलिए सबसे आगे खिड़की की सलाख पकड़े खड़ा है। घर के भीतर से पार्टी के लोग बीच-बीच में डाँटते-फटकारते हैं। वे लोग भागते हैं और फिर चले आते हैं। एक बार कस कर डाँटने पर जयधर का स्वाभिमान जग पड़ता है। वह कहता है, 'चलो-चलो, उससे तो अच्छा मैं कर सकता हूँ। वह क्या संलाप में कोई संलाप है।' बाबू लोग रिहर्सल में बैठे हुए थे। बोले, 'यह लड़का कौन है ? पुकारो तो।' वे लोग जयधर को बुला लाते हैं। जयधर का चेहरा देख कर वे लोग बेहद खुश होते हैं। बोले, 'संलाप बोल सकते हो—ऐसा तुमने कहा है। बोलो तो सही।' जयधर कहता है, 'कहिये, बोल रहा हूँ।' बहुत देर से सुन रहा था। सोमा और अच्छा ही बोला। बाबू लोग पता लगा कर जयधर के नाना के पास आते हैं। कहते हैं, 'उसे गोप-बालक के रूप में मंच पर उतारना चाहते हैं। दीजिएगा ? स्कूल में हम उसे फ्रीशिप दिला देंगे, इसलिए कि अच्छी तरह लिख पढ़ सके। थियेटर में रख कर उसका भविष्य खराब नहीं करेंगे। इसी तरह के बच्चे का पार्ट रहेगा तो करेगा।' जयधर के नाना कहते हैं, 'सोच कर कहूँगा।' माँ बोली, 'दूँगी।' इसके बाद इसी सीखे हुए छन्द-स्वर में दादा से उसका सलाप चलता है। दादा आते हैं तो जयधर उसे यह सूचना दिये बगैर रह नहीं पाता है। दादा कहते है, 'किसका पार्ट ले रहे हो ?' जयधर कहता है, 'गोप-बालक, छद्म वेशधारी कृष्ण का।' दादा खुश होकर कहते हैं, 'बताओ तो किस तरह बोलोगे ?' उसके बाद छन्द-स्वर, ताल-लय वगैरह की शिक्षा देते हैं। उसके बाद 'प्रफुल्ल' में यादव और 'चाँद बीबी' में जयधर बहादुर का पार्ट करता है। पढ़ने-लिखने में भी अच्छा है। फीस के लिए स्कॉलरशिप मिल जाता है। वहाँ से कटोया स्कूल में भर्ती होता है। नया जीवन उसे बहुत ही अच्छा लगता है। लेकिन रंगमंच का नशा दूर नहीं होता। फिर भी सुयोग के अभाव में थियेटर के मंच पर उतर नहीं पाता है। मैट्रिक में भी उसे दस रुपये का स्कॉलरशिप मिलता है। बरहमपुर कॉलेज में भर्ती होता है। एक तो स्कालरशिप पाया हुआ छात्र, उस पर अच्छा चेहरा। इसके अलावा अग्रद्वीप के बाबू लोग भी खत लिख कर पैरवी कर देते हैं। बरहमपुर में होस्टल चार्ज फ्री हो जाता है। सुनाम फैलने में भी देर नहीं लगती। कुमार होस्टल में उसका कविता-पाठ और नाटक का संलाप श्रोताओं पर काफी प्रभाव डालता है। वह कालेज मैगजीन में रचना देता है। शुरू में वह नाटक लिखता है—रवीन्द्र नाथ के 'कच-देवयानी' का अनुकरण-अनुसरण कर। जयधर के जीवन के दो बीज हैं—या एक ही बीज की दो पंखुड़ियाँ। एक है अभिनय का बीज और वह दादा से विरासत के तौर पर मिला है। और दूसरा है महत्वाकांक्षा, जो उसे अपने पिता से प्राप्त हुआ है। एक और है और वह है मास्टर साहब, अपरितृप्ति। यह चीज सम्भवतः सभी में रहती है। लेकिन शक्ति और साहस के अभाव में आदमी समझौता कर लेता है। जयधर का साहस, शक्ति और दुस्साहस मिलकर एकाकार हो गये।'

'यह नाटक है या आपकी अपनी बातें ?'

'शायद' अपने बारे में ही कह गया। लेकिन अच्छा नहीं लग रहा है मास्टर साहब। अब नाटक की ओर कदम नहीं रखूंगा।'

'कदम रख रहे हैं या नहीं—समझ नहीं पा रहा हूँ। तब हाँ, अच्छा लग रहा है। कहिये। प्रोप्राइट्रेस के लिए यह पुरानी चीज हो गयी है।' रीतू बाबू हँस पड़ा। बोतल सरकाकर शराब ढालते हुए बोला, 'देखा न, ऐसी चीज भी इस बीच ढालने की इच्छा नहीं हुई।'

'तो फिर मुझे फुल मार्क प्राप्त हो रहा है। नाटक भी आगे बढ़ रहा है। जयधर सेकण्ड इयर में उत्तीर्ण होने के समय अच्छा रेजल्ट नहीं करता है। तब उसने नाटक लिखना शुरू कर दिया है। नाटक समाप्त कर गरमी की छुट्टियों में वह घर आता है और नाटक ले कर नवग्राम के बाबुओं के पास जाता है। अग्रद्वीप के बाबुओं का थियेटर तब बन्द हो चुका है। नवग्राम के बड़े बाबू तब कलकत्ते से लौट आये हैं और देश में वास कर रहे हैं। थियेटर चालू किया है। फिलहाल उन लोगों की आर्थिक हालत बड़ी ही अच्छी है। छोटे बाबू का झुकाव थियेटर की ओर है। बड़े बाबू का भी झुकाव उसी ओर है और दोनों के झुकाव के कारण धूम मच जाती है। जयधर नाटक बगल में दबाये छोटे बाबू को दिखाने जाता है। छोटे बाबू उसका चेहरा देखते ही मुग्ध हो जाते हैं। उन लोगों का पूरा खानदान ही काले-कलूटे लोगों का था। काला चेहरावाला। थियेटर में अच्छा पार्ट करते थे। बड़े मालिक भी करते थे मगर थियेटर में चूंकि लोगों से मिलना-जुलना पड़ता है और इसकी वजह से लोगों का भय दूर हो जाता है, इसलिए पार्ट नहीं करते थे। घर पर तीन गाने वाले छोकरे रहते थे और लड़कियों का पार्ट करते थे। बहरहाल छोटे मालिक बातचीत सुनकर बड़े ही खुश हुए। नाटक और गीत वे खुद भी लिखते थे। आदमी के लिहाज से बड़े ही अच्छे और खुशमिजाज थे। बोले, 'कल आओ, मैं तब तक देख लूं। उसके बाद तुम पढ़ोगे और मैं सुनूंगा। ठीक है न? बहुत ही अच्छा लगा। तुम हम लोगों के यहाँ के नामी पंडित के वंश के लड़के हो। म्यान से बाहर निकली तलवार जैसा तुम्हारा चेहरा है। लिखे-पढ़े और छात्रवृत्ति प्राप्त युवक हो। बातचीत का सलीका बड़ा ही सुन्दर है। मुझे बहुत ही अच्छा लगा। अच्छी तरह पढ़ो-लिखो, फर्स्ट होकर बी० ए०, एम०ए० पास करो भैया। स्कॉलरशिप लेकर विलायत जाओ। आई० सी०एस० हो कर वापस आओ। हाँ, कल जरूर आओ, ठीक इसी समय, चार-पाँच बजे के बीच आना। नाटक सुनूंगा। कैसा हुआ है, बताऊंगा। अच्छा होगा तो हम लोग प्ले करेंगे। अरे हां, तुम तो अच्छा पार्ट भी कर सकते हो। अग्रद्वीप में गोप-बालक, यादव, बहादुर की भूमिका में उतरे थे। काफी-कुछ प्रशंसा मिली थी। अब भी पार्ट करते हो क्या?' जयधर ने कहा, 'नहीं।' दूसरे दिन जयधर गया। नाटक पढ़ा। थोड़ा-सा पढ़ा होगा कि बड़े बाबू का प्रवेश हुआ, 'छोटे हो जी? अरे, यह कौन है?'

'छोटे बाबू ने जान-पहचान करा दिया। जयधर ने खड़े हो कर प्रणाम किया। बड़े बाबू ने कहा, 'वाह, तुम्हारा चेहरा तो खासा खूबसूरत है। यों तुम्हारे

दादा और पिता के चेहरे भी अच्छे थे। तब हाँ, ऐसा नही था। वे लोग भट्टाचार्य पंडित थे। तुम तो मोडर्न युवक हो। छात्रवृत्ति मिल चुकी है। वाह्-वाह!'

छोटे ने कहा, 'नाटक लिखा है। वही सुन रहा था।'

'अयँ? लिख भी लेता है? पढो तो जरा सुनूँ।'

जयधर पढने लगा। मालिक बीच-बीच में वाह्-वाह् कर, आखिर तक सुनते रहे। बीच-बीच में आदमी आया। कहा, 'कचहरी के दफ्तर में काम है। लोग-बाग आये हैं।' मालिक ने कहा, 'बैठने कहो, आ रहा हूँ।'

समाप्त हुआ तो बोले, 'अच्छा लिखा है। मगर भाषा बड़ी साधारण है, घासलेटी जैसी लगती है। आजकल तुम लोग सभी रवीन्द्रनाथ के ढर्रे पर लिखते हो। भाषा शुद्ध करने की जरूरत है भैया।' उन्होंने बहुत-बहुत प्रशंसा की और उठ कर चले गये। जाने के समय कह गये, 'रात के आठ बज चुके हैं छोटे। उसे बगैर खिलाये भेजोगे? नही-नही, खाना खिलाकर जाने के समय आदमी साथ कर दो।'

जाते-जाते लौट आये और बोले, 'हम लोग तीनों जने बल्कि एक साथ खायेंगे। बड़ी मालकिन को खबर भेज दो। तालाब में जाल फेंकने कहो। एक बड़ी सी मछली पकड़वाओ।'

बड़े मालिक चले गये।

जयधर ने कुछ कहना चाहा मगर कह नहीं सका। साथ ही साथ यह भी नही कह सका कि वह शाकाहारी है, मांस-मछली नही खाता है।

'संसार में अलग-अलग आदमी अलग-अलग तरह का होता है मास्टर साहब। जयधर उस कोटि का आदमी है जिनमें सिर्फ शक्ति और साहस की अधिकता नही होती, आवेग की भी प्रबलता रहती है। इनमें से कौन-सी चीज उसमें अधिक मात्रा मे थी, इसका पता जयधर को भी नही है। हर प्रकार का तेल जलता है मास्टर साहब, लेकिन किरोसिन और पेट्रोल जिस तरह जलते हैं उस प्रकार सहजता के साथ दूसरा तेल नही। इन्हें आग से न बचाया जाये या इनकी लपट शान्त न की जाये तो सर्वनाश हो जाता है। मैंने जयधर की शक्ति और साहस की बात कही है, साथ-साथ मुझे उसके आवेग के बारे में बताना चाहिए था, लेकिन कहा नही है। नायक के चरित्र का उपादान याद न रहे तो चित्रण करने मे, हो सकता है कि असंगति आ जाये। यानी नाटक का प्रारम्भ पुराने जमाने की पृष्ठ भूमि में करना है। खैर, इसके बाद नही बताया है। जयधर तब निरामिष भोजन करता था, गांधी जी की अहिंसा उसे अच्छी लगती थी। बड़े लोगो के प्रति खुश नही था, खासकर नवग्राम के वडे मालिक के प्रति। यही वडे मालिक उन दिनों उस अंचल के बाघ थे। रतनपुर में जिस वृद्ध को आप देख आये, वे तब गलित दन्त-नख हो चुके थे। अग्रदीप के ये लोग देश में नही रहते थे, कलकत्ते के स्थायी बाशिन्दे थे। जयधर उन लोगो के प्रति कृतज्ञ था, इस बात मे सच्चाई है। इतना जरूर है कि आदमी के लिहाज से वे भले थे। नवग्राम के बड़े मालिक का बहुत बोलबाला है, साथ ही वे

लोग शक्तिशाली भी हैं। कलकत्ते जैसी जगह में भी 'मामी माँ का खेल' खेल आये हैं।'

मंजरी हँस दी। बोली, 'मामी माँ का खेल क्या चीज है ?'

'वह क्या चीज है; मालूम नहीं। तब हाँ, यह शब्द प्रचलित है। प्रतापादित्य नाटक में भवानन्द ने यह शब्द कहा है। उसी से सीखा है। सम्भवतः वृन्दावनी काण्ड जैसा काण्ड। लोकोक्ति है—राधा नाते में कृष्ण की मामी लगती थी।'

रीतू बाबू हँस पड़ा। बोला, 'हाँ, लोकोक्ति यही है।'

गोरा बाबू बोला, 'मोटी बात है, कलकत्ते के बाजार में बड़े मालिक ने हलचल मचा दी थी—बड़े बाजार की लोहापट्टी और क्लाइब रो की कोयला पट्टी से लेकर चितपुर सोनागाछी तक। लोहे के बाजार और कोयले के बाजार की इमारतों से शुरू कर आखिरी मुहल्ले की मकानवालियाँ और गुण्डे तक बड़े मालिक को सलाम करते थे। लेकिन आखिरकार पीठ में छूरे की मार खा कर घर को ही छह महीने के लिए अस्पताल बनाना पड़ा। जान बच गयी और कलकत्ते को सलाम कर देस लौट आये। छोटे भाई उनके सहकारी थे। वे दूर करते थे। उन्हें अपनी जगह बिठा दिया। मँझले भाई का लड़का फर्स्ट इयर में पढ़ रहा था। उसकी पढ़ाई छुड़ा कर उसे कलकत्ता ऑफिस का मैनेजर बना दिया और घर लौट आये। सोनागाछी के स्पर्श को गंगाजल मे स्नान कर धो डाला और उस ओर से एकदम मुँह मोड़ लिया, लेकिन विषय-वासना और रौब-दाब विन्ध्याचल की तरह आकाश छूने लगा। गले में तुलसी की माला, मस्तक पर चन्दन का तिलक धारण कर भोर वेला में ही स्नान-पूजा कर लेते और मजलिस में बैठ जाते थे। उनकी आँखों की दृष्टि से लोग-बाग भस्म भले ही न हों परन्तु धम से बैठ जरूर जाते थे। ऐसे थे बड़े मालिक। और वैसे बड़े मालिक ने जब उस दिन जयधर से उतने स्नेह से बातचीत की, उसकी प्रशंसा की और रात में बड़ी मालकिन के कमरे में बिठा कर खाने का निमन्त्रण दिया तो जयधर न केवल अभिभूत हुआ बल्कि विगलित-मुग्ध हो गया। उसकी समस्त धारणा बदल गयी। रात में खाना खाने के लिए बैठने पर जब उसने मछली नहीं खायी तो बड़े बाबू अवाक् हो गये। अचकचा कर उसकी ओर देखने लगे। बोले, 'क्या कह रहे हो तुम ? मछली नहीं खाते ?' बहुत देर तक उसके चेहरे की ओर ताकते रहे। और न केवल वे ताकते रहे बल्कि छोटे मालिक, मँझले बाबू का छोटा लड़का, बड़ी मालकिन और उन लोगों के सामने मछली का बर्तन और पीतल की करछी लिए खड़ी बड़े मालिक की अनब्याही लड़की भी अवाक् हो कर ताकने लगी।

'मेरे नाटक की शुरुआत यहीं से होगी। इन बातों को डायलॉग के माध्यम से व्यक्त करना होगा।

'मान लीजिये एक राजा है। पुराने जमाने में ही जाना अच्छा रहेगा। चाहे द्वापर या त्रेता या कलियुग। सत्ययुग सबसे अच्छा रहेगा। रामायण, महाभारत और भागवत—इन तीन पुराणों मे से किसी को भी इस युग में पूरी कहानी नहीं मिलती। मान लीजिये, सत्ययुग में ब्रह्मा और मानस-पुत्र का वंश देव वंश के समान

है। मान लीजिये, नाम है ब्रह्ममित्र। उनके दो भाई हैं वसुमित्र और देवमित्र। हिमालय अंचल के राजा देवद्वार हैं। उनकी राजधानी जयन्तीपुर है।'

रीतू बाबू ने हँस कर कहा, 'आप तो मुखस्थ इतिहास-भूगोल की तरह कह रहे हैं देवता। लगता है, रूपरेखा तैयार कर ली है।'

गोरा बाबू कुछ कहे कि इसके पहले ही नीचे के दरवाजे से गोपाल घोष की आवाज आयी। वह सीधी से लौट आया है। पुकार रहा है—'नन्दन, ओ शिवनन्दन।'

मंजरी की माँ शिशु शिवनन्दन को नन्दन कह कर पुकारती थीं। बहुत सारे पुराने आदमी आज भी उसे नन्दन ही कहते हैं। गोपाल भी बीच-बीच में कहता है। लेकिन सहज हो नहीं। गोपाल बीच-बीच में शराब की हल्की चुस्की ले लेता है। उसी समय वह शिवनन्दन को नन्दन और योगा मास्टर को योगेश्वर कहता है। बसी को बाँसुरीवाला। मानो हृदय का आवेग थोड़ा-बहुत छलक पड़ता है।

शिवनन्दन ने जैसे ही दरवाजा खोला कि वह ऊपर चला आया। जरा दूर ही खड़ा रह कर बोला, 'दे आया बाबू। लड़के का कन्डिशन खराब है।'

'यह काम कहाँ हुआ ?'

काम मानी मद्यपान।

गोपाल हल्की हँसी हँस कर बोला, 'काशीपुर के मसान के पास एक साधु आया है। उसी साधु बाबा के पास।'

गोरा बाबू बोला, 'इस बीच वहाँ से भी हो आये ?'

गोपाल बोला, 'हाँ। मतलब यह कि बंकिम के घर पर जाकर देखा कि लड़के की हालत कुछ अच्छी है। यानी बंकिम—मतलब है कि जिस क्राइसिस को देखकर भागा-भागा आया था—वह सँभल गया है। ऐसा उस साधु की कृपा से हुआ। डॉक्टर रुपये के बिना नहीं आ रहा था। बंकिम क्या करे, यहाँ चला आया। उधर हालत खराब। उस समय, मतलब है कि, बंकिम की औरत पागल की तरह दौड़ी-दौड़ी उस बाबा के पास गयी। बाबा के पैर पर पछाड़ खाकर गिर पड़ी। बाबा क्या करें—धुनी की थोड़ा-सी राख हाथ में रखते हुए बोले, 'जा, इसी को ले जाकर खिला दे। जिन्दा रहने को होगा तो इसी से रह जायेगा। आश्चर्य की बात है मास्टर साहब, मतलब यह कि मास्टर साहब, बंकिम की औरत जब घर पर लौट कर आयी तो हालत थोड़ी सुधर चुकी थी। उसके बाद भस्म खिला दिया। इधर जो डॉक्टर देख रहा था और पैसा बाकी रहने के कारण नहीं आ रहा था, वह भी आ गया। बोला, 'बहुत जा चुका है, न होगा तो और कुछ पैसा जायेगा। यानी सब बाबा का खेल ही है।'

शराब के नशे की वजह से रीतू बाबू की लाल आँखें फैल गयी थीं और वह सुन रहा था। मंजरी का चेहरा भी विस्मय से निश्चेष्ट जैसा हो गया है।

गोरा बाबू ने जरा हँस कर कहा, 'हूँ। तो डाक्टर फिर देख रहा है न ? या फिर उसी भस्म को खिला कर ही लड़के को छोड़ दिया गया ?'

'जी नहीं। उसके बाद डॉक्टर ने इंजेक्शन दिया है। हम लोग, मतलब है कि, जब पहुँचे तो डॉक्टर इंजेक्शन देकर घर से बाहर आ चुका था और रिक्शे पर बैठने जा रहा था। मैंने उन्हें रुपया दे दिया और रसीद लेकर कहा, 'मतलब है कि—डॉक्टर साहब, मरीज पर मेहरबानी कर देख जाइएगा। डॉक्टर आदमी के लिहाज से भला है। मतलब है, एक सौ से अधिक रुपया बाकी है। उस पर मतलब है—समझ रहे है न, उन्होंने मान लिया था कि नहीं बचेगा। इसीलिए नहीं आये थे। कहा था, बिना पैसे के नहीं आयेंगे। उसके बाद मतलब है कि बाबा की दया—समझ रहे हैं न, बाबा की दया कि डाक्टर का विचार बदल गया। सोचा इतने दिनों तक देखा है, आखिरी वक्त न जाना क्या अच्छा रहेगा ? खुद ही चले आये। आकर क्या कहे, खुद भी अवाक् हो गये कि बिना दवा के ही लड़का अच्छा हो गया। तब—मतलब है कि—इंजेक्शन दिया, प्रेसक्रिप्सन लिख कर डिसपेंसरी को लिख दिया कि दवा दे दे। वह लड़का, मतलब है कि बच जायेगा। बाबा ने, मतलब है कि मुझसे भी कहा। मतलब है कि यह काण्ड देखो। मतलब है कि, मैं रुपया-पैसा देकर, मतलब है कि एक बोतल लेकर, मतलब है कि, तभी वहाँ गया। सो मतलब है कि देखा, अजीब ही साधु है। मतलब है कि हँसते कैसे हैं कि हा-हा-हा। बिलकुल—मतलब है कि—गंगा का तीर। खिलखिलाकर हँस रहे हैं। बोले, 'बेटा तू तो भला आदमी है। बोतल ले आया है। ठीक है, ले प्रसाद।'

गोपाल अभिनय के समय अपने पार्ट में इमोशन नहीं ला पाता था इसलिए त्रैलोक्य तारिणी ने उससे कहा था, 'गोपाल, तू मैनेजमेण्ट का काम अच्छी तरह कर सकता है। यही कर। ऐक्टिंग करना तुझसे नहीं हो पायेगा। दूत-प्रहरी का पार्ट करते-करते ही मर जायेगा। बाँसुरी बजायेगा तो छाती झाँझर हो जायेगी।' बात सही है। बीच-बीच में आदमी न रहने पर गोपाल अभिनय में उतरता है, हर बार धुड़धुड़ा कर किसी तरह ऐक्टिंग का काम समाप्त कर जाता है और पोशाक खोलते-खोलते बोलता है, 'भैया, जिसका काम रहता है, उसी को शोभा देता है। लो शिबू (विन्यासकारी शिबू) अपनी पोशाक लो। अरे ओ राधा चरण, तेल दो भैया। कलंक की कालिख पोंछ लूँ। लेकिन आज उसने जो वक्तव्य दिया उससे रात की यह मजलिस जम गयी। बोलने में जितना आवेग था, बोलने की मुद्रा में उसी तरह की धारा प्रवाह प्रगल्भता भी थी।

गोरा बाबू हँस दिया—सुरीली थरथराने वाली आवाज वाले जिस आदमी की हँसी मुखर हो उठती है, उसका मन वैसा ही है। वह बोला, 'यही तो गोपाल बाबू, आपके संलाप में उन्नति का लक्षण दीख रहा है। लेकिन आपने एक बहुत बड़ी बात बतायी और यह साधु के बारे में। वह कैसा है ?'

रीतू बाबू उठ कर खड़ा हो गया। बोला, 'काशीपुर मसान किस ओर है ?'

गोपाल घोष बोला, 'उत्तर तरफ। बाबू लोगों के घर के किनारे बरगद का पेड़ है—'

गोरा बाबू चौंक उठा और गोपाल की बातों के बीच ही बोल उठा, 'वहाँ इस रात में जाइएगा क्या ?'

रीतू बाबू हँस पड़ा, 'क्या करूँ! देख आता हूँ। अभी इस रात में हावड़ा जाऊँगा। बासी गन्दा बिछावन मिलेगा, उघड़े पलस्तर, छत की टाली, अलकतरा पोता हुआ पुराना लोहे-लक्कड़ का मकान। यही सब मिलेगा। या फिर रास्ता चलते रंडियों का मुहल्ला मिलता है। वहाँ अगर कोई आँख मटकाये तब 'सोच कर देखो हे मन, तुम्हें नचाता कोई लोचन' कहते-कहते अन्दर घुस जाऊँगा। हो सकता है कल भी पड़ा रहूँ। इससे तो अच्छा है कि गंगा के किनारे मसान में चला जाऊँ और गोपाल महराज के साधु जी को देख आऊँ। नींद आये तो उसके लिए कोई कंबल या चटाई चाहिए। सो ऐ शिवनन्दन, एक कंबल ला कर दे जा। रंग-बंग नहीं चाहिये—कंबल दे जा। भादों का महीना है, माटी भीगी हुई होगी। कंबल न होगा तो तकलीफ झेलनी पड़ेगी।'

मंजरी ने सिर्फ एक बार कहा, 'मास्टर साहब—'

रीतू बाबू बोला, 'आप फिक्र नहीं करें प्रोप्राइट्रेस। कल जरूर ही आकर हाजिर हो जाऊँगा।'

'खाना खाकर जाइये।'

'उहुँ। यह काम भी वहीं होगा। बल्कि शिवनन्दन को हुक्म दें कि मुझे एक बोतल लाकर दे दे। इतनी रात में दुकान बन्द हो चुकी होगी। कहीं किसी गैर-कानूनी अड्डे पर जाने में खतरा है। वहीं आसन जमा दूँगा।

सात

यह माया प्रपंच माया यहाँ विश्व के रंगमंच पर—
लीलामय नटवर हरि जिसे सजाते जैसा वह वैसा ही सजता।

फुटपाथ से ही मोटी आवाज में गीत गाते हुए चितपुर दफ्तर में रीतू बाबू ने प्रवेश किया। उस रात जो निकला था उसके बाद आज चौदह दिन के बाद वापस आया है। लेकिन ठीक दिन पर ही आया है। आज मंजरी ऑपेरा का नया नाटक पढ़ा जायेगा, पार्ट बाँटा जायेगा। इस बीच रीतू बाबू ने एक पत्र भेजा था। बीरभूम जिले के वक्रेश्वर से। पोस्टकार्ड। पेंसिल से लिखा था, 'साधु बाबा के

साथ वक्रेश्वर आया हूँ। तारकेश्वर से यहाँ और यहाँ से संभवतः तारापीठ जाऊँगा। साधु को अच्ची तरह बिना देखे, कसौटी पर बिना कसे नहीं जाऊँगा। बारह दिन का करार है। आपके दादा जी के श्राद्ध पर नही रह सका, इसके लिए लज्जित हूँ। लेकिन उपाय नही है। मोटी बात है, तेरह-चौदह दिन लगेंगे। श्राद्ध के काम के लिए गोपाल है, अतः चिन्ता की कोई बात नही। इस बीच किताब समाप्त कर डालिये। पुस्तक की शुरुआत आपने की है, यह बात उसी दिन समझ गया था। मैं जरूर पहुँच जाऊँगा। इति। रीतू बोस'

इस तरह का काम रीतू बाबू ही कर सकता है। गोरा बाबू हँसने लगा था। मंजरी ने एक लम्बी साँस ली थी और कहा था, 'दुनिया में वे ज्यादा दिन नही टिकेंगे।'

गोपाल घोष ने गरदन हिला कर हामी भरी थी, 'वैसा वे कर सकते हैं। आप ठीक ही कह रही है माताजी।'

गोरा बाबू ने कहा था, 'वे जरूर लौट कर आयेंगे।'

मंजरी बोली थी, 'यह बात तुम कैसे कह रहे हो ?'

उस दिन बाबुल बोस और अलका भी उपस्थित थे। रीतू बाबू की अनुपस्थिति में बाबुल ने ही शाम के वक्त चितपुर ऑफिस में रीतू बाबू का काम किया था। वहाँ जाने के पहले वह गोरा बाबू और मंजरी से मिल लिया करता था। उस दिन तीसरे पहर चिट्ठी उन लोगों के सामने ही आयी थी। मंजरी की बात पर बाबुल ने कहा था, 'किस वजह से कह रही हैं ? उन्होंने हिसाब लगा कर कहा था। आई अण्डर-स्टैण्ड। सिगरेट प्लस शराब इज इक्वल टु एटलिस्ट वन रुपी ट्वेल्व आनाज। प्लस—दो बेला राइस करी। एण्ड उस पर कण्ट्रोल का बाजार। डेली बेगिंग में कितना मिलता है ? चाहे जितना मिले एक ही मिलेगा उसके बाद वाला प्लस माइनेस नही होगा। इसलिए बिग ब्रदर को लौटना ही होगा।'

गोपाल बोला, आप नही जानते बोस। मतलब है कि वैराग्य नही हुआ—'

गोरा बाबू ने हँस कर कहा था, सो तो ठीक है। वैराग्य होने से सिगरेट-शराब भी छोड़ी जा सकती है। और यह भी होता है कि शराब, गाँजा खाने-पीने का कोई अभाव नही होता। जंगल में मसान के पास मठ बन जाता है। लेकिन जानते हैं गोपाल बाबू, ऐक्टिंग करने पर तालियां नही मिलती हैं, रंग-रोगन लगाकर, वेश-भूषा पहनने से देव-दैत्य, ब्रह्मा, विष्णु, नादिरशाह, आलमगीर की भूमिका में उतरा नही जा सकता है। जो इसमें एक बार डूब जाता है, ईश्वर यदि आ जाये तो वह कहेगा, 'प्रभो, वेश-मन्दिर में जाकर रंग-रोगन लगा कर गीत गाते हुए आओ। इस तरह जमेगा नही। रंग न लगाने से चेहरा और आँखें आर्कपित नही कर पायेंगी।'

बाबुल हँस पड़ा था। गोपाल भी हँसा था। मंजरी ने स्वीकार किया था, 'सो तो ठीक ही कह रहे हो।'

अलका उस दिन गोरा बाबू की बातों पर मुग्ध हो गयी थी। बोली थी, 'बहुत ही अच्छा कहा है आपने।'

गोरा बाबू लिखते-लिखते ही बोल रहा था। उसके बाद फिर लिखने मे मशगूल हो गया था। बोला था, 'जाओ, उनके लिए चिन्ता मत करो। रीतू बाबू अगर नही आते हैं तो दूसरा आदमी रख लिया जायेगा। सोचा है, उन्हें ब्रह्ममित्र का पार्ट दूँगा। अगर वह बडा हो जाता है और छोटा नही किया जा सकता, तब मैं उस भूमिका में उतरूँगा। तरुण नायक जयन्त का पार्ट दूसरे आदमी को दिया जायेगा। बहुत सारे नये युवक मिल जायेंगे।'

बाबुल ने कहा था, 'मैं ला दूँगा। पसन्द नही हो तो मूल्य वापस। गारन्टी देता हूँ। राजू लाहिड़ी नामक एक वण्डरफुल छोकरा है।'

'सो होगा। अब जा कर मजलिस जमाओ। अलका, तुम 'जना' की मोहिनी माया का नाच ठीक कर लेना। रिहर्सल करना। वह हम लोगों का स्टॉक प्ले है। इसके अलावा सती तुलसी मे श्री कृष्ण। समझी ?'

गोपाल ने कहा था, 'नाटक के नाम का पता चल जाये तो अच्छा रहे। उन लोगों ने हैण्डबिल छपवाया है। रॉयल वीणापाणि ने बडा ही चटकदार हैण्डबिल छपवाया है। वे लोग विद्या विनोद की 'उत्तरा' खेलने जा रहे हैं।'

गोरा बाबू ने सिर उठा कर और जरा सोचते हुए कहा था, 'हम लोगों की नयी पुस्तक है 'गंधर्व कन्या'।'

रीतू बाबू आ कर खडा हो गया और हाथ जोड़ कर पहले की तरह चेहरे पर हँसी ले कर बोला, 'यथा समय प्रवेश कर रहा हूँ सर।'

गोरा बाबू ने हँसते हुए कहा, 'आइये। मैं जानता था कि आप ठीक समय पर चले आइयेगा।''

रीतू बाबू बोला, 'आपको क्या यूँ ही देवता कहता हूँ सर ?'

बाबुल बोला, 'मैंने भी कहा था। क्या मेरे लॉर्ड, कहा था न ?'

'कहा था। लेकिन वह बात सिगरेट और पेय पदार्थ के विषय में कहा था।'

रीतू बाबू बोला, 'दुत, साधु के पल्ले पड़ कर आठ दिनों तक सिर्फ बीड़ी और छोटी चिलम पर काम चलाता रहा हूँ। पॉकेट खाली था, मिले तो कहाँ से मिले ? आखिर मे हाथ की अँगूठी बेच रामपुरहाट में शा कम्पनी की दुकान से एक पाइन्ट रम खरीद लाया और बाकी पैसे से टिकट कटाया।'

बाबुल बोला, 'ऐसा होने पर भी हाफ वियड्रा कहा था सर। देव-देवता न हो पाने के कारण उपदेवता जरूर हो गया हूँ सर। ठीक है न बिग ब्रदर ?'

'जरूर। इसमें कोई सन्देह नहीं। लेकिन नाटक का नाम बहुत अच्छा रखा है—गंधर्व कन्या। खासा अच्छा नाम है।'

'इस बीच आप ने कहाँ देख लिया ?'

गोपाल ने सीढ़ी की देहरी पर, दरवाजे के पास, हैण्डबिल चिपकाया है। पढ़ कर ऊपर आया हूँ। बहुत ही अच्छा नाम है। अब नमो राम कृष्णाय कह कर शुरू कर दीजिये। देर किस बात की ?'

'अलका के इन्तजार में हूँ।'

'रीतू बाबू चारों तरफ गौर से देखते हुआ बोला, 'योगा मास्टर कहाँ है ?'

गोरा बाबू बोला, 'उसे मैंने इससे अलग ही रखा है।'

'बात क्या है ?'

गोरा बाबू के स्वर मे मालिक का भाव उतर आया। बोला, कारण मैं बताना नही चाहता, मास्टर साहब।'

मंजरी ने झुकी दृष्टि से फर्श की ओर ताकते हुए कहा, 'इस बात की चर्चा रहे।'

मजलिस में एक प्रकार का सन्नाटा छा गया। शोभा दूसरी ओर बैठी थी और अब तक बातचीत करने के सुयोग की तलाश मे थी। अलका की चर्चा छिड़ने के समय एक ही ढेले से दो चिड़ियाँ मारने की बात उसके दिमाग मे आयी थी। इन्तजार कर रही थी कि रीतू बाबू कहेगा, 'क्यो उसे क्या हुआ, या उसे देर क्यो हो रही है ?' वह तत्क्षण कहेगी, 'किले के मैदान में वह पेड के नीचे तुम्हारे विरह मे तड़प रही है।' शोभा कुछ दिन पहले नाटू और गोपाली के साथ दस बजे चिड़ियाखाना गयी थी। जाने के रास्ते में उसने अलका को एसप्लेनेड पार्क में एक भद्र वेषधारी व्यक्ति के साथ बातचीत करते देखा था। यह बात उसके पेट में कुलबुला रही है। कुछेक लोगो से कह भी चुकी है। इस तरह की मजलिस में अलका की अनुपस्थिति का सुयोग उठा कर एक साथ रीतू और उसको शामिल कर बातें करने के लिए उसका मन छटपटा रहा था। लेकिन रीतू बाबू अलका की बात दबा कर योगा बाबू का जिक्र कर बैठा। तत्क्षण मालिक और मालकिन की बातें सुन और कहने के अंदाज पर गौर कर वह सकते में आ गयी।

गोरा बाबू ने अपनी बात से निस्तब्ध मजलिस मे गतिशीलता ला दी, 'कहाँ, गोपाल बाबू, आपकी चाय-वाय कहाँ है ? मास्टर साहब आये—'

'लीजिये, तब तक सिगरेट शुरू कीजिये। लो दिलदार।'

चाय वाले और अलका ने एक ही साथ कमरे के अन्दर प्रवेश किया। आज अलका का पहरावा गहरे लाल रंग की रेशमी साड़ी है। उससे पूरा कमरा झलमला उठा। बोली, 'मुझे देर हो गयी। तीसरे पहर कितनी भीड़ रहती है ?'

'बाबुल बोला, 'रविश। तुम घर से ही नहीं निकली थी। मैं चार बजे तक तुम्हारे इन्तजार में रहा।'

शोभा बोल पड़ी, 'नहीं-नहीं बाबुल बाबू। एसप्लेनेड में पेड़ के नीचे खड़ा रहना पड़ता है। ट्राम पर ट्राम निकल जाती है, फिर भी चुपचाप खड़ा रहना पड़ता है।'

गोरा बाबू बोला, 'अब बातचीत बिलकुल बन्द। चाय दो जी। मैं शुरू करता हूँ।'

रीतू बाबू बोला, 'जयकाली! जय राम कृष्ण!'

गोरा बाबू ने अपना हाथ मस्तक से छुला कर खाते को अपनी ओर खींच लिया। बोला, 'गंधर्व कन्या।'

'पात्र-पात्री हैं—, नहीं-नहीं, उसके पहले स्थान-काल नहीं बताया है। समय—सत्ययुग। स्थान—हिमाचल भूमि का देवद्वार। राजधानी—जयन्तीपुर। इसके बाद पात्र-पात्री।

ब्रह्ममित्र : देवद्वार अधिपति, ब्रह्मा के मानस पुत्र के वंश में जन्मा हुआ।

वसुमित्र : ब्रह्ममित्र का कनिष्ठ भ्राता।

भरद्वाज : ब्रह्ममित्र का मन्त्री।

जयन्त : बृहस्पति के वंश मे जन्मा हुआ मातृपितृ हीन युवक।

कामन्दक : राज सभा का सखा (युवक)।

तत्क्षण सब की दृष्टि बाबुल पर जाकर टिक गयी। यह बाबुल का ही पार्ट है।

बाबुल बोला, 'ह्वाई तरुण सर, मेक मि ओल्ड।'

गोरा बाबू बोला, 'उहुँ, कामन्दक राजा, राजभ्राता। यहाँ तक कि राज-जमाता जयन्त का भी सखा है।'

'देख, बूढा बनाइये, बूढ़ा। दादा-पोते की तरह ठिठोली के रस से मिसरी बना दूंगा।'

गोरा बाबू बोला, 'यह सब बाद मे होगा बाबुल बाबू। बीच में इन बातों की चर्चा करने का हम लोगों का नियम नहीं है।'

'ओ-के! अब से मैं गूंगा रहूँगा यानी डम्ब।'

गोरा बाबू हंसते हुए बोला, 'थैंक्यू।'

उसके बाद सब की ओर सरसरी निगाह दौड़ाते हुए बोला, 'किसको कौन-सा पार्ट देना है, मोटे तौर पर मैंने तय कर लिया है। हो सकता है रिहर्सल में अदल-बदल कर दिया जाये। यह सब प्रोप्राइट्रेस और रीतू बाबू के परामर्श से ही किया जायेगा। पार्ट में भी कुछ हेर-फेर किया जा सकता है। उस समय सखा का बूढ़ा रहना अच्छा होगा तो वही किया जायेगा।'

'थैंक्यू।' वाबुल बोस ने इस तरह कहा जिस तरह कि बारह पर बड़ी सुई पहुँचते ही घड़ी वज उठती है। यह कह कर बोला, 'मेरा कोई दोष नहीं है सर।'

रीतू बाबू बोला, 'ओ के लिटल ब्रदर। वह रंगमंच के नटवर का कौतुक है। जो नटवर हैं, वही माधव हैं।'

'मूकं करोति वाचालं—यह माधव की दया है। लेकिन माधव जब नटवर बनते हैं तो कौतुक में ही ऐसा करते हैं। लीजिये सर, शुरू कीजिये।'

गोरा बाबू बोला, 'पश्चिम तरफ की खिड़की को किसने खोला? अच्छा! रोशनी अच्छी तरह आ रही है। तब हाँ—। अलका, तुम जरा हट कर बैठ जाओ। तुम्हारी सिल्क की साड़ी के लाल रंग पर धूप पड़ती है तो उसकी छटा मेरे चश्मे पर आकर टकराती है।'

बात सही है। गोरा बाबू के चश्मे पर आकर छिटक ही रही है, इसके अलावा पूरे कमरे में लालछाँह प्रकाश फैल गया है—चाहे कम या ज्यादा।

शोभा धीमे स्वर मे बोली, 'जरा सा हटने से ही काम चल जायेगा। छटा बाबुल और उस मोटे मरदूद के चेहरे पर फैल जायेगी।' यह कह कर उसने गोपाली के हाथ में चिकोटी काट ली। गोपाली ने शुरू में कहा, 'ठीक।' और उसके बाद ही हँसने लगी।

मंजरी ने विरक्ति के साथ उसकी ओर देखा। गोरा बाबू बोला, 'यह ठीक रहा। हाँ, उसके बाद पात्र हैं इन्द्र, ब्रह्मा, शाप भ्रष्ट बृहस्पति, जयन्त कुमार के पितामह।'

रीतू बाबू ने बहुत ही धीमे स्वर में कहा, 'हूँ। वही आदमी!'

गोरा बाबू ने अपना कथन जारी रखा, 'देव वृन्द, सेनापति इत्यादि। और नारी चरित्र है—'

सर्वाणी : राजा ब्रह्मामित्र की रानी, देवकन्या।
शुचि : यह कन्या देव अंशभूता। बाद मे जयन्त की पत्नी।
कुसुमिका : शापग्रस्त गंधर्व वंश की गायिका।
मालविका : कुसुमिका की कन्या।
इसके अतिरिक्त सखी, परिचारिका, गंधर्व कुमारीगण।

गोरा बाबू ने खाते से चेहरा हटा कर एक सिगरेट सुलगायी। रीतू बाबू ने हाथ बढ़ा कर पैकेट अपनी ओर खींच लिया। संन्यासी के साथ लौटे रीतू बाबू की जेब मे आज सिगरेट नहीं है। रुपया-पैसा भी नहीं है। गोरा बाबू ने धुएँ का गुबारा उठालने के बाद देखा—गोपाल सीढ़ियों की देहरी पर खड़ा है।

मौका देख कर गोपाल ने खँखार कर इशारा किया—'कुछ बातें करनी हैं।'

गोरा बाबू ने कहा, 'क्या?'

गोपाल घोष बोला, 'घुंघुफ केश वाला आया है। बैठने कहूँ ? अब कोई ज्यादा दिन तो है नही।'

'बैठने कहिएगा ?'

सुयोग मिल जाने की वजह से शोभा ने गोपाली के कान में कहा, 'छोकरी के लिपस्टिक की छटा उन लोगों की आँखो मे नही लग रही है ?'

गोपाली ने अपने मुँह में साड़ी की कोर दबा ली।

'देखो-देखो, ऐसा लग रहा है जैसे वह मोटा मरदूद उस छोकरी को निगल जायेगा।'

अबके गोपाली ने साड़ी की कोर को मुँह के अन्दर ठूंस लिया।

गोरा बाबू बोला, 'आज रहे, कल आने कहिये।'

मंजरी पनवट्टा खोल रही थी। वह बोली, वही अच्छा रहेगा। बल्कि कल सबेरे आने कहो।'

'ठीक है।'

'हाँ। प्रथम अंक, प्रथम दृश्य। जयन्ती पुर का प्रासाद-प्रागण। नगर की महिलाओ का एक दल पूर्ण कलश ले गीत गाते हुए चला गया। पीछे से भरद्वाज—ब्रह्ममित्र के मन्त्री—ने प्रवेश किया। उसके साथ लोगों का एक झुण्ड है। उन लोगों के हाथ मे ध्वजा-पताका है। वे लोग नागरिक हैं। पताका थामे वे दोनो ओर खड़े हो गये।

मन्त्री ने कहा—

देवद्वार राज्य का आज शुभ दिन। जयन्तीपुर के
प्रासाद का अँधकार दूर हुआ इतने दिनो के बाद !
पहनाओ प्रकाश की माला, उड़ाओ पताका—
प्रोषित पतिका जयन्तीपुरी के पति बहुत दिनों के बाद
गृह लौटे हैं। अब नही,
असुर या दैत्यदल के अभिमान का भय
प्रत्यागत ब्रह्ममित्र अमित विक्रम। नाचो-गाओ—
आलोक आनन्द से जयन्तीपुरी का मुख
प्रदीप्त हो उठे सीमन्तिनी जैसा। एक स्वर मे बोलो—
देवद्वार जयन्ती नगर जय-जय-जय—
जय महाराज अधिराज ब्रह्ममित्र जय !

प्रतिक्रिया हुई, परन्तु अत्यन्त क्षीण स्वर में।

मन्त्री बोला, 'यह क्या ? इसी का नाम जय ध्वनि है ? प्राणहीन, स्पन्दनहीन स्वर मे यह कैसी जयध्वनि हो रहा है ?'

अब एक व्यक्ति ने कहा, 'क्षमा कीजिये महामात्य ! महाराज क्या सचमुच ही वापस आये हैं ?'

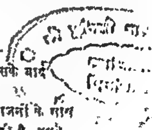
'अविश्वास का कारण श्रेष्ठीवर ?'

यह भी आपसे कहना होगा महामन्त्री ? आज दस वर्षों से महाराज ब्रह्मामित्र अमरावती वासी हैं। राज्य का अनुशासन नष्ट हो गया। असुरों और दैत्यों ने सुयोग पा कर दस वर्षों में सीमान्त के जन पदों को नष्ट कर दिया है, लूट लिया है। देव लोक संदेश भेजा गया, महाराज आये। अपराजेय दैत्य और असुरगण, दैवी कृपा से धन्य ब्रह्मामित्र के आगमन की सूचना पाकर अपने राज्य में जा कर छिप गये। महाराज ने हँसते हुए देवद्वार के अधिवासियों से व्यंग्य किया और कुछ दिनों बाद पुनः देवलोक चले गये। अमरावती का ऐश्वर्य-विलास, वहाँ का देव-प्रासाद, वहाँ का—

'भय किस बात का ? चुप क्यों हो गये ? पुण्य-भूमि सामन्तराज, आज भय की कोई बात नहीं है। साफ-साफ कहिये कि वहाँ नृत्य-गीत, गंधर्व लोक के विलास-व्यसन में तपस्याग्रन्य ब्रह्मा के वंशधर ब्रह्मामित्र पुनः देवद्वार के प्रजाजनों को भूल गये। और केवल प्रजाजनों को नहीं, अपनी महिषी को, जिन्होंने देव-कन्या देवी उर्वशी जैसी एक मात्र कन्या को छाती से लगा कर अपने अदृश्य को ही धिक्कारा। विष्णु पाद-पद्म में उन्होंने आँसुओं की धारा से नयी गंगा की सृष्टि की, फिर भी महाराज का मोह दूर नहीं हुआ। असुरों से संग्राम होने पर उनके मँझले भाई शिव-मित्र को अपने प्राणों की बलि देनी पड़ी। महाराज आये, प्रचण्ड शौर्य-वीर्य के साथ युद्ध किया और असुरों को मार कर प्रतिशोध लिया। देवद्वार के लोगों को कापुरुष कह कर, धिक्कार कर पुनः विजय दृप्त पदक्षेप से चले गये। अपने पीछे अयश का भाव छोड़ गये। उनकी कन्या ने, देवी यज्ञ से उत्पन्न देवी बालिका ने, अपने नन्हें हाथों से उन्हें बाहुओं में भर लिया। उन्होंने स्वयं ही उसके बाहु-बन्धन से अपने को छुड़ा लिया।

महामन्त्री भद्राव बोले—

सत्य—सब सत्य है नगर के नागरिक—
विजवर द्विज कुलोत्तम, सब सत्य है। उसके बाद
इतने दिन पाँच वर्षों तक वसुमित्र
कनिष्ठ कुमार को लेकर देवद्वार के प्रजाजनों के साथ
असुर-दैत्य के साथ हीन शर्त पर संधि की है, इसने
दिया है प्रति वर्ष अन्न-वस्त्रों का दाय इसने
विसर्जित किया है सम्मान-धन। सत्य है यह। लेकिन
इससे भी बड़े सत्य की अकंपित स्वर में
की है घोषणा मैंने। महाराज प्रत्यागत आ गये हैं।



लौटकर। अमरावती का मोह, विलास-वासना
सब कुछ धोकर मन्दाकिनी नीर में
लौट आये हैं देवद्वार। प्रतिज्ञा है मृत्यु पर्यन्त
देवद्वार का नहीं करेंगे त्याग।
देवद्वार के प्रजाजनों, देवद्वार की मिट्टी की
सेवा आज से तपस्या है उनकी।
इससे भी बड़ा सत्य कह रहा मैं, रक्त ढालकर—
महाराज ब्रह्ममित्र मोह-मुक्त हुए हैं आज।

सामन्त : सच, सच कह रहे हैं आप महामन्त्री ?

मन्त्री : ईश्वर का लेकर नाम, शपथ लेकर मैं कहता—
मेरा विचार मेरा यह मत
सत्य है, सत्य है, सत्य है।

श्रेष्ठी बोला—
रक्त ढाल कर धोया है विलास-विभ्रम-मोह
इसका अर्थ पूछना क्या होगा अपराध ?

महामन्त्री : अपराध नहीं है। तब है मेरा अनुरोध
इसका न पूछो अर्थ। केवल
मेरा विश्वास करो। आदर के साथ
वरण करो। जिससे कि महाराज
सिंहासन पर बैठे अतीत के कर्म-निमित्त
मन में करें न अनुभव ग्लानि का।
तब देखोगे श्रेष्ठी, महाराज
ब्रह्ममित्र उन दिनों के ब्रह्ममित्र से
गरीयमान शतगुण। न्याय, धर्म, प्रजा के कल्याण हित।
देवद्वार स्वर्ग-राज्य से शतगुण होगा
महिमा से परिपूर्ण।—ब्रह्ममित्र लौटे हैं
स्वर्ग से पूर्णतर होकर।

सामन्तपति बोले—
'तब बोलो सब जय देवद्वार
जय जयन्ती नगरी। जय-जय महाराज
ब्रह्ममित्र जय।'

सब लोगों ने एक स्वर में जयजयकार किया।

श्रेष्ठी बोले—
जलाओ आलोक माला प्रति गृह मे

गृह-गृह के ऊपर फहराओ देवद्वार-ध्वजा
उच्च स्वर में करो जय-जयकार।
नृत्य-गीत-उत्सव से मुखर करो
जयन्ती नगरी। गाओ-गाओ नर्तकीगण
गाओ, करो नृत्य। नृत्य-गीत नाट्य शास्त्र में
पारंगत ब्रह्ममित्र देवता पूजित
उनके तृषित चित्त को तृप्त करो सब।

पताका फहरा कर सबने जय-जयकार किया। उसी बीच नर्तकियों का एक दल प्रवेश करता है। वे नाचे, गीत गाया—

सजल नयन पोंछो सखि, काजल की रेखा खींचो—
विरस अधर कर सरस रंगीन माधुरी लाओ—
खींचो-खींचो, लाओ-लाओ। विरह का हुआ समापन
वह आया है, वह आया है, नहीं जानते यह क्या ?
सजो-सजो, लाज छोड़ो तुम—
कुसुम-पराग चुन-चुनकर मुख मण्डल पर लेपो
और जतन से चन्दा जैसा अंकित करो सिन्दूर का टीका।

बंसी झुककर गीत के शब्द सुन रहा था। उसकी आँखें बड़ी-बड़ी हो गयी हैं। उसकी दृष्टि में स्वर के भाव तिर आये हैं। दाहिना पैर थिरक रहा है। आशा गरदन हिला रही है। वे दोनों ही नहीं, और भी बहुत सारे लोग गीत के छन्द-लय के साथ ताल मिला कर हिल-डुल रहे हैं, गरदन हिला रहे है। अलका की आँखों में भी एक तरह का नशा उतर आया है। रीतू बाबू छन्द की लय पर हुँ-हुँ कर रहे हैं।

गोरा बाबू ने पढ़ा, 'बिखरी अलकों वाली, भुवन भुलाने वाली, हाँ, ऐसा ही करो, बात तुम मानो—।'

वह खामोश हो गया।

रीतू बाबू बोला, 'वन्डरफुल, लेकिन समाप्त नहीं हुआ देवता।'

गोरा बाबू ने सिगरेट सुलगायी। बोला, 'और कुछ पंक्तियां रहेंगी। चूंकि मन के लायक नहीं हुई हैं इसलिए मैंने लिखा नहीं है। खाली स्थान रख दिया है।'

बाबुल बोल उठा, 'लो हलुआ। बिखरी अलकों वाली, भुवन भुलाने वाली, लेकिन कल जो सब कट जायेगा माई लॉर्ड। उसमें शैम्पू करना जोड़ दीजिये माई लॉर्ड। लगता भी खासा अच्छा है।'

अलका जरा हिल-डुल कर बैठ गयी। वह बेचैनी महसूस कर रही है। वह

बालों मे शैम्पू का प्रयोग करती है। मंजरी ने अपना घूँघट तनिक नीचे सरका लिया। आज उसके बाल बिखरे हुए हैं।

रीतू बाबू उच्च स्वर मे बोला, 'ऑर्डर ! ऑर्डर !'

गोरा बाबू ने पढ़ना शुरू किया—

बन्द करो विलास भरा नृत्य-गीत—
त्यागो विलासिनी वेश — नयन के
कटाक्ष को धो डालो। यह नही आज मेरे लिए।
ब्रह्ममित्र ने नृत्य-गीत-विभ्रम, रूपसी का रूप-मोह
सब कुछ कर दिया है त्याग। यह मेरा है नया जन्म।

गोरा बाबू बोला, 'महाराज ब्रह्ममित्र का प्रवेश हुआ। संगीत, नृत्य सब कुछ शान्त हो गया। तमाम उपस्थित लोगों ने एक-दूसरे के चेहरे की ओर देखा। महाराज के शरीर पर राजवेश है, मगर उनकी मणि-मुक्ता की माला के बीच रुद्राक्ष की माला है। राजा की अपेक्षा उनका तपस्वी रूप ही अधिक उजागर हो गया है। महाराज इस खामोशी के बीच बोले : महामात्य, मैंने तो आपको कहा कि किसी प्रकार का उत्सव नहीं होना चाहिए। मैं राज-पाट करने को देवद्वार नही लौटा हूँ। मैं अमरावती से प्रायश्चित करने आया हूँ। कहा नही था ?'

मन्त्री भरद्वाज ने माथा झुकाकर कहा, 'मैं स्वीकार करता हूँ महाराज। आपका वह आदेश मुझे प्राप्त हो गया था। लेकिन महारानी ने मुझसे कहा था : महामात्य — महामात्य के शब्दों को गौण बनाकर शंखध्वनि मुखर हो उठी। सबने देखा, अन्त:पुर प्रवेश द्वार की देहरी पर स्वयं देवी सर्वाणी ने पदार्पण किया है। उनके साथ अन्तःपुर चारिणी का दल है। उनके हाथों में वरण-माला है, शंख है। एक चारिणी के हाथ में शृंगार है। महारानी बोली, 'मैंने कहा है महाराज, मैंने कहा है। दीर्घकाल की अनावृष्टि के बाद जिस दिन बादल घिर आते हैं उस दिन समस्त प्राणी, तृण-गुल्म-लता और उद्भिदो में जो आनन्द-उत्सव सहज रूप में संचारित होता है, उस आनन्द को व्यक्त करने की निषेधाज्ञा क्या बादलों को ही देने का अधिकार है ?'

महाराज बोले—

देवि, नही मुझे कुछ कहना, देव-वंश की कन्या
तुम हो। यह बात तुम्हारे मुख मे शोभा देती। तुम सकती हो
मुख पर ले हास अनुतप्त व्यक्ति का—अपराध
भूल कर उसे क्षमा करना। मानव ऐसा नही कर सकता।
महाशक्ति—आद्या शक्ति हैं जो—वही तो हैं भ्रान्तिरूपा।
मानव को भ्रान्ति में निमग्न कर—
कुतूहल अपार उन्हें है होता। यह देखो देवि,

पीठ में मेरी कितना है गम्भीर क्षत चिह्न !
इस क्षत मुख से ही भ्रान्ति देवता की
पूजाकर—उपलब्ध किया है परम सत्य ।

महारानी सिहर कर बोली—

यह क्या महाराज ! कितना है गहरा क्षत-चिह्न
हाय प्रभु—कितनी कठिन यन्त्रणा भोगी है तुमने !

महाराज बोले—

उससे भी अधिक देवि, पायी है मैंने कठोरतर
मानस-यंत्रणा । देह की यंत्रणा से
कठिन सहस्र गुण । सुनो देवि, सुनो
अमात्य सब । सत्य बात कहने की है
आवश्यकता । देव लोक में अवस्थान-काल में
विद्रोही असुरवंश के दमन का पुरस्कार
ब्रह्ममित्र ने प्राप्त किया था—देवराज की प्रीति—
अनुग्रह अपार । देवता कुमार सम·
प्राप्त किया था अधिकार । उसी अधिकार के बल
और नृत्य-गीतशास्त्र में अधिकार हेतु
अपरा-गंधर्वभूमि में ब्रह्ममित्र
हुआ था देवता समान । विलास विभ्रम
नृत्य गीत सुधापान प्रलाप प्रमोद और
प्रमोद-लीला मे दिन होते थे व्यतीत ।
इसी बीच गंधर्वलोक-प्रान्त में
विष्णु मंदिर के प्रांगण मे देखा मैंने
अपरूप एक कन्या को—विष्णुनाम-गान
गाकर करती पूजा । पूछा मैंने
परिचय । ज्ञात हुआ वह है अभिशप्त ।
गंधर्व कन्या, नाम उसका कुसुमिका ।
देवलोक में अभिशप्ता वह । कारण यह कि
देवताओं का करना मनोरंजन किया है उसने
अस्वीकार । देवता-प्रसाद मणि-रत्नमाला
लौटा दी है विनय के साथ । प्रान्त में
मुग्ध हो उससे किया प्रणय-निवेदन ।
नाम उसका कुसुमिका । सुन कर परिचय मेरा
सागह मेरा प्रेम किया उसने स्वीकार ।
वहीं—आज दीर्घ सोलह वर्ष

व्यतीत हुए हैं मेरे। देवकुल महिषी मेरी
देव अंशोद्भुता कन्या मेरी—लक्ष्मीरूपा शुचि
राज्य देवद्वार, वंश की गरिमा—सब कुछ करके तुच्छ
गंधर्व लोक-प्रान्त में उद्यान की रचना कर मैंने
किया है वास। इहलोक परलोक सब हो गये थे
तुच्छ। सहसा मोह भंग हुआ।
एक दिन देवराज कुमार जयन्त ने—
निमंत्रित किया मुझे एक अप्सरा-निकेतन में
गीत-वाद्य के कठिन राग की चर्चा हेतु।
गया मैं। रात्रि समापन के बाद लौटने के पथ पर
पीठ में किया छुरि का आघात। आततायी
गया भाग—लेकिन परिचय उसका
मुझसे रहा नहीं अज्ञात। आततायी—
ईर्ष्यातुरा कुसुमिका द्वारा था नियुक्त।
पत्नी मेरी देवकन्या ने सह्य की है मेरी त्रुटि,
मेरा अक्षम्य पाप। किन्तु हाय,
देह-व्यवसाय जिसकी होती वृत्ति—उसने सहा नहीं
दूर हुआ मेरा भ्रम। प्रतिज्ञा की मैंने
प्रायश्चित तपस्या और देवद्वार के कल्याण हेतु—
अवशिष्ट काल व्यतीत करूँगा मैं।
नृत्य-गीत नहीं, आलोक-उत्सव नहीं—
शान्त अनुतप्त व्यक्ति को
बिना आडम्बर करो स्वीकार
धन्य हूँगा मैं।

द्विजवर ने कहा—
धन्य-धन्य तुम महाराज—सत्यवादी ब्रह्ममित्र
सत्य को रखा है मस्तक पर। भ्रान्तिरूपा
महामाया सुकठिन निष्ठुर
उसके भ्रान्तिरूप में भूलकर जो उसके पीछे धावित होता
ले जाती है वह उसको मृत्यु-द्वार पर—उसके बाद
मुड़कर खड़ी हो जाती है कालरात्रि
महातामसिनी के रूप में। एक मात्र तुमने सत्य-निष्ठा से
उससे की है प्रीति। उसी के वरदान से सार्थक होगा
तुम्हारा जीवन। महारानी, जननी हमारी—
महाराज का करो वरण। बन्द करो नृत्य-गीत।

बन्द करो विलास-विभ्रम । महाराज के साथ—
देवद्वार की जनता का हो प्रारम्भ
सुकठिन चरित्र-तपस्या नवजीवन की ।
आशीर्वाद देता हूँ—अथमारंभ शुभाय भवतु ।

महारानी नतजानु हो कर बैठ गयी और प्रणाम किया । मस्तक पर तिलक लगाया । शंखध्वनि हुई । बोली, 'आइये महाराज, नगर में प्रवेश कीजिये ।'

महाराज ने कहा, 'लेकिन महारानी—'

'क्या महाराज ?'

'मेरे मन में कठिन प्रश्न जगा है । मेरे पाँव उठ नहीं रहे हैं ।'

'क्यों महाराज ?'

'सच-सच बताओ, जिन लोगों को मैं रख गया था उनमें से शिवमित्र मारा गया है, यह मैं जानता हूँ । बाकी सब लोग कहाँ हैं ? वे लोग मिलेंगे न मुझे ?'

'हाँ महाराज, सभी सकुशल हैं ।

'वसुमित्र कहाँ है—मेरा प्यारा कनिष्ठ अनुज ?'

मन्त्री ने कहा, 'कुमार वसुमित्र सीमान्त से रवाना हो चुके हैं । वे सीमान्त पर थे । सम्भवतः किसी आवश्यक कार्यवश ठीक समय पर नहीं पहुँच सके ।'

'महारानी !' इतना कह कर चिल्ला उठे, 'शुचि, शुचि कहाँ है ? मेरी लक्ष्मी—अंशोद्भुता कन्या ! कहाँ है ?'

रानी : देवता मन्दिर में है शुचि, देव-सेवा में निरत ।

ब्रह्ममित्र : चलो जाऊँगा देव मन्दिर में । ओह कितने काल—कितने काल—
नयन-आनन्द नवनीत की पुतली शुचि
नहीं देखा है उसको । आज कितनी ही बातें आती याद
सन्तान के लिए तपस्या की थी मैंने,
कठिन तपस्या । लक्ष्मी-नारायण दोनों
आये देने वरदान । बोले, सन्तान
नहीं है तुम्हारे अदृष्ट विधान में । फिर भी तुम्हारी
तपस्या से होकर प्रसन्न एक दे सकता हूँ सन्तान
यदि चाहते पुत्र—मेरे अंश से
होगा जन्म उसका । और यदि चाहते कन्या तो
लक्ष्मी के अंश से होगी एक कन्या तुम्हें ।
यह कौन है देवि ? कौन ? महारानी ! आज पुनः
महालक्ष्मी आविर्भूता क्यों है मेरे सम्मुख ।
वही है—हाँ, वही है रूप ! विटिया-विटिया !

शुचि प्रवेश करती है । उसका वेश पुजारिनों का है ।

महारानी ने कहा, 'वही—वही है तुम्हारी शुचि महाराज ।'

शुचि अपने पिता की ओर स्थिर दृष्टि से ताकती हुई खड़ी रही।
महाराज ब्रह्ममित्र ने आवेग भरे स्वर में कहा—

ओ शुचि ! तू मेरी वही नन्ही शुचि है। नन्हें-नन्हें
हाथो के अपने घेरा डाल मेरे कण्ठ में। तू अस्फुट भाषा में
गाती थी—जय जगदीश हरे—
नारायण के दस अवतार का स्तुति-गान। अनुभव
करता मैं जननी लक्ष्मी का मधुर स्पर्श
आ-आ बिटिया मेरी—आ
समीप मेरे आ—

अब शुचि ने जहाँ वह खड़ी थी, वहीं से भूमिष्ठ हो कर प्रणाम किया—

परम आराध्य आप—आप मेरे पिता—यह देह आपका दान
इस भुवन मे साक्षात् ईश्वर—स्वीकारिये प्रणति मेरी।

ब्रह्ममित्र तेज कदमों से आगे बढ़ कर गये और प्रणाम करती हुई शुचि को अपने हाथ से पकड़ कर उठाना चाहा—

नही-नही-नही। प्रणाम नही, आ
मेरी बाँहों मे आ।

शुचि ने उठकर नतजानु स्थिति मे ही हाथ बढ़ाकर मना करते हुए कहा—

'नही-नही पिता, नही। मेरा नही स्पर्श कीजिये। नही।'

महाराज ठिठक कर खड़े हो गये। सब लोग चौंक पड़े। महारानी ने तिरस्कार भरे स्वर में कहा, 'शुचि !'

शुचि बोली, 'देवकार्य में रत हूँ मैं।'

महाराज ने कहा—

धन्य-धन्य तुम बिटिया हो मेरी। माया के वश
प्राणो के आवेग से तुम अपना देव-कर्म-कर्तव्य
नही भूली हो। महारानी, करो मेरे स्नान का आयोजन
स्नान के बाद विष्णु को कर प्रणाम बिटिया को
बाँहों में भर लूंगा। महामात्य, अन्य सब कार्य, सब समारोह
संप्रति रहेगा स्थगित।

महामात्य बोले—

वही होगा महाराज। अविलम्ब मैं
करूँगा घोषणा। अपराह्न में महाराज प्रजावृन्द को
देंगे दर्शन।

वे चले गये। दूसरी ओर उनकी बात समाप्त होते ही शुचि बोल उठी—

'पिता !'

'कहो बिटिया !'
'और कुछ मेरा निवेदन है आपसे ।
कहिये पिता, मेरा अपराध क्षमा कीजिएगा ?'
'तेरा अपराध ? अरी कन्या मेरी, तू क्या जानती है कि तू मेरी क्या है ?
तू क्या है ?'
'कहिये पिता जी, मैं हूँ कौन ?'
'सच है कि तू मेरी कन्या है, अपनी देह तू ने पायी है ।
मुझसे । किन्तु जन्म तेरा है लक्ष्मी अंश से ।'
'सत्य बात है पिता ?'
'सत्य, हाँ सत्य । तपस्या की थी मैंने
सन्तान के निमित्त ।'
'वह कहानी जानती मैं, सब कुछ सुना है मैंने :
फिर भी मेरा है प्रश्न—आपके मन के उस
विश्वास को जानने के निमित्त । सुनिये पितृवर, सत्य
पर यदि करते आप विश्वास, जन्म मेरा लक्ष्मी अंश से
और इसीलिए नाम है मेरा शुचि । तो प्रश्न मैं
करूँगी आपसे—दीर्घ सोलह वर्षों तक
अमरावती में पतिता गंधर्व नारी के साथ
करने से वास आपकी देह, आपके मन में वही अपवित्रता
वही पाप हो गया है सचारित, वह पाप
वह अपवित्रता जितने दिनों तक होती है नहीं दूर —
उतने दिनों तक आप नहीं करें मेरा स्पर्श ।'
रानी : शुचि, शुचि, अरी ओ सर्वनाशिनी !
शुचि : चुप रहो माता । देवकन्या हो तुम— देवेन्द्राणी
शचि देवी है मातृश्वसा तुम्हारी । माता, देवेन्द्राणी
शचि ने अपने व्यभिचारी पति सहस्राक्ष इन्द्र के साथ
सिंहासन पर बैठ किसी दिन, तनिक भी ग्लानि का
नहीं किया है अहसास । उसी की भागिनेयी हो तुम,
तुम नहीं समझ पाओगी लक्ष्मी का मानस, उसकी पवित्रता
जीवन-धातु का है मर्म । यह जीवन-धातु अपवित्रता के
स्पर्श मात्र से स्वर्ण से हो जायेगा लोह-पिण्ड में परिणत ।
महारानी स्तब्ध हो जाती है ।
ब्रह्मित्र बोले—
वही होगा, वही होगा बिटिया मेरी !
बस केवल एक अनुरोध—यदि इस जीवन में

तपस्या न हो पाये सिद्ध— तब
मेरे मृत्यु-काल के अन्तिम क्षण में
अपना शीतल करतल
रखना मेरे ललाट पर क्षण भर के लिए।

ठीक उसी क्षण दूत ने प्रवेश किया और अभिवादन करते हुए कहा—

'महाराज आया हूँ लेकर दुःसंवाद !'
'दुःसंवाद ?'
'पूज्यपाद कुमार, कनिष्ठ आपका, देव वसुमित्र
बन्दी बना लिए गये असुरों के द्वारा।'
'बन्दी असुरो के द्वारा ?'
'देव वसुमित्र आपकी आगमन-वार्त्ता सुन
सीमान्त से राजधानी की ओर अल्प सेना ले
कर रहे थे यात्रा। असुरगण शंकित थे मन में
आपके प्रत्यावर्तन के समाचार से। उन्होंने मध्यपथ मे
बना लिया बन्दी उन्हे। सीमान्त की राजधानी श्रीपुर नगरी को
घेर चारों ओर से अग्नि काण्ड के अत्याचार से
राख मे कर दिया परिणत। महाराज उर्ध्वश्वास के साथ
आ रहा हूँ मैं। शीघ्र ही सैन्यदल
भेजा नही गया यदि—तब सीमान्त प्रदेश
हाथ से चला जायेगा !'

ब्रह्ममित्र : प्रायश्चित ! प्रायश्चित लगता है स्वयं ही
आ गया है सम्मुख ! विदा होता हूँ महारानी
अलविदा, लक्ष्मीरूपा बिटिया मेरी !

प्रस्थान करते-करते लौट आये और बोले—
'बिटिया शुचि !'
'पिता !'
'तुमने उत्तर नही दिया मुझे।
कहो बिटिया, क्या है उत्तर तुम्हारा !'
'वही होगा पिता ! जानती हूँ मैं प्रायश्चित कर समाप्त
अराति का कर दमन लौटेंगे आप विजयी होकर।
फिर भी—फिर भी पिता ! यदि आप नही लौटते हैं
प्राणमय देह लिए, तब—शुचि तब आपके मृत्यु से हिम
ललाट पर रख ललाट अपना
अश्रुजल से धो देगी आपकी समस्त ग्लानि।'
बाहर रणवाद्य बज उठा।

प्रथम दृश्य समाप्त हो गया। गोरा बाबू ने खाते को रख दिया और सिगरेट सुलगाते हुए कहा, 'चाय चाहिये।'

बंसी बगल के बरामदे पर आया, जेब से बोतल निकाल थोड़ी सी ढाल ली और सिगरेट सुलगाकर चुपचाप खड़ा रहा। गीत की तीसरी पंक्ति को खींचो-खींचो, लाओ-लाओ, काजल की रेखा, रंगीन माधुरी, खींचो लाओ कहने से कैसा रहेगा ? रुक-रुककर, शब्दों को तोड़-तोड़कर। खींचो-खींचो,—कमर से माथे तक एक थिरकन दौड़ गयी, उसके बाद एक बार फिर—लाओ-लाओ, एक बार उसके बाद एक बार और। उसके बाद काजल की रेखा—दाहिने हाथ से आँखों में काजल लगाने की भंगिमा, उसके बाद रंगीन माधुरी—होंठों पर हाथ से लकीर खींचने की भंगिमा। उसके बाद खींचो-लाओ। उसके बाद 'विरह का हुआ समापन पर।' उसके बाद नयन वाली पंक्ति सजल आँखों को पोंछकर। इसके बाद बंसी को याद नहीं आ रहा। उसने मुड़कर देखा। कमरे में चाय का दौर चल रहा है। आशा बैठी ही है। भौचक-सी अलका की ओर ताक रही है। प्रोप्राइट्रेस मंजरी देवी भी अलका की ओर ताक रही हैं।

अलका फर्श की ओर ताक रही है। अब उसके ही चेहरे पर उसकी साड़ी का लालछौंह प्रकाश पड़ रहा है। छत के शहतीर से लटके बिजली के बल्ब के प्रकाश की छाप उसके कपड़े पर पड़ रही है। बाकी लोग फुस-फुसाकर बातचीत कर रहे हैं। सहसा गोरा बाबू के शब्द उसके कानों में आते हैं।

'अच्छे मेकअप से उसमें सुधार लाया जा सकता है। और अलका का सिर जरा छोटा है, यह देख ही लिया गया है। इसलिए—। तुम्हारा कहना क्या है मंजरी ?'

मंजरी बोली, 'पार्ट की बात अभी रहने दो। बाद में होगी।'

शोभा बोली, 'गोपाली अलका से लम्बी है।'

बाबुल ने शोभा की बात जैसे सुनी ही नहीं। उसने कहा, 'माई लॉर्ड, वह लम्बी होती तो क्या यात्रादल में आती ? फिल्म शूट कर निकल जाती।'

गोरा बाबू सोच रहा था। एकाएक बोल उठा, 'हो जायेगा। ठीक हो जायेगा। कम से कम तीन इंच लम्बा दिखने का ट्रिक मैं कर दूँगा।'

मंजरी बोली, 'वह बात अभी रहने दो। किताब पढ़ना खत्म करो।'

उसके स्वर में और चेहरे पर स्पष्टतः एक कठोरता उभर आयी। गोरा बाबू ने एक बार उसकी ओर देखा और कहा, 'शुचि का पार्ट तुम्हारे अलावा किसी से नहीं हो सकता।'

'तो फिर शुचि का पार्ट मैं ही करूँगी। तुम अभी पढ़ो।'

रीतू बाबू बायें हाथ पर भार दिये, पीछे की ओर पीठ टिकाये,

ओर मुँह किये सिगरेट का धुआँ फेंक रहा था। एक प्रकार की बनावटी निस्पृहता ओढ़े चुपचाप सुन रहा था। अबके उसने कहा, 'प्रोप्राइट्रेस का कहना ही ठीक है सर। किताब पढ़ना खत्म कीजिये। प्रथम सीन में ही जमा लिया है। लेकिन रात धीरे-धीरे आगे खिसक रही है।'

गोरा बाबू ने शुरू किया,—'द्वितीय दृश्य। देवद्वार सीमान्त प्रदेश का एक गाँव। आहत वसुमित्र को थामे जयन्त कुमार और कामन्दक ने प्रवेश किया। जयन्त कुमार एक युवा रूपवान ब्राह्मण कुमार। वह है शापभ्रष्ट बृहस्पति, शान्ततप नामक ब्राह्मण का पौत्र। कामन्दक वसुमित्र का सखा है, वह देवद्वार की राजसभा का भी सखा है।'

एक क्षण के लिए चुप हो गया। उसके बाद बोला, 'कामन्दक न तो युवा है और नहीं वृद्ध। उसे प्रौढ़ बनाया जाता है।'

'वेरी गुड माई लॉर्ड। एण्ड आई शैल मेक ए नरम गुदेदार तोंद। तोंद बनाना इज इजी थिंग। ढनढन बजने वाला चाहिये? बजाकर देख लीजिएगा। बिलकुल नरम चाहिए? तो फिर वैसा ही बनाया जायेगा। यहाँ तक कि फतुही का बटन खुला रहेगा और वह बाहर निकली रहेगी। पाँच नंबर फुटबॉल का ब्लाडर होना चाहिये बस। आस्क असका—मैं वह ट्रिक जानता हूँ। देखिएगा मैं क्या करता हूँ।'

गोरा बाबू बोला, 'नाऊ साइलेन्स। तीन व्यक्तियों ने प्रवेश किया। यहाँ आप पूरे तौर पर निरापद कुमार वसुमित्रदेव हैं। इत्मीनान के साथ प्रवेश कीजिये। मैं यह देखने जाता हूँ कि हमारे गाँववासियों ने असुर आततायियों को लड़ाई में पूरे तौर पर पराजित किया या नहीं।'

वसुमित्र बोले—

ब्राह्मण कुमार, जीवन-भर के लिए बाँध लिया तुमने कृतज्ञता-बंधन में
असुरों के कारावास से मुक्त किया है मुझे
रक्षा की है तुमने देवद्वार राज्य के सम्मान की।

जयन्त : समय नहीं है, नेतृत्वहीन है हमारा दल
असुरों से युद्ध कर पहले लौट आऊँ। लौट आऊँ
हाँ, लौट आऊँ।

कामन्दक : पिता पितरौ पितरः, पिता पितरौ पितरः
अरे बाप रे, बाप रे, बाप रे
भो-भो ब्राह्मण कुमार, न गच्छ, न गच्छ
भयां अहं मरिष्यामि। भय से मर जाऊँगा।

जयन्त : भय का कारण नहीं है देव। भय नहीं किसी प्रकार का।

कामन्दक : भयं नास्ति? कथितं सत्य? सत्य कह रहे तुम?
किन्तु कहो महाभागः, इस वन में कुत्र भरोसा?

दुहाई है तुम्हारी भो-भो विप्रवर
मा कुरु पलायनं, इस प्रासाद को परित्याज्य कर।

वसुमित्र क्रुद्ध स्वर में बोले—

कामन्दक, इस कठिन घड़ी में तुम प्रगल्भता त्याग करो
वीर ब्राह्मण कुमार को जाने दो।

(ठीक इसी क्षण जयन्त के साथीगण ने जय जयकार करते हुए प्रवेश किया।)

जय जगदीश हरे। हम विजयी हुए हैं प्रियवर। पाँच असुर मारे गये हैं।
एक बन्दी है बाकी सब भाग गये हैं।

जयन्त कुमार : जय जगदीश हरे। हम लोगों के भी कुछ लोग हताहत हुए हैं?

साथी : एक व्यक्ति मारा गया है, चार व्यक्ति घायल हुए हैं। हम लोगों की अवस्थान-भूमि से युद्ध किया जाता तो एक भी व्यक्ति नहीं मारा जाता। परन्तु शिवदास उत्तेजनावश भागते हुए असुरों के बीच कूद पड़ा। उन्होंने भाले से उसे बेध दिया। लेकिन सांत्वना की बात है, मैं गिरि-पथ के पास हम लोगों की अवस्थान-भूमि में शिवदास के निकट ही था। मैंने खड्ग चलाकर उसे आहत कर दिया।

वसुमित्र : हे आश्चर्य जनक ब्राह्मण कुमार! तुम कौन हो?

जयन्त : मेरा नाम है जयन्त कुमार। पितृमातृहीन ब्राह्मण कुमार, देवद्वार की प्रजा, इसी ग्राम का अधिवासी हूँ।

वसुमित्र ने पूछा, 'इस युद्धविद्या को कहाँ सीखी तुमने ब्राह्मण कुमार! जितना कौशल है उतनी ही क्षिप्रता, वैसी ही अस्त्र-निपुणता और वैसा ही साहस। अकस्मात् वनभूमि में वृक्षान्त के अन्तराल से तुम लोग मृत्तिका के वक्ष को विदीर्ण कर जैसे खड़े हो गये। असुरों को घेर लिया। सबसे पहले मुझे जो बन्दी बनाया था, छुड़ा लिया। आश्चर्य! किसने तुम लोगों को इस आश्चर्य जनक रण-कौशल की शिक्षा दी है?'

बंसी तभी से बरामदे पर होकर स्वर के बारे में सोच रहा है, राग आलाप रहा है। इस बीच गीत के बारे में सब कुछ भूल चुका है। लेकिन उससे उसका काम रुका नहीं है। क्योंकि गीत का ढाँचा और रूपरेखा उसने तैयार कर ली है। याद है खींचो-खींचो लाओ-लाओ। और याद है उसे आखिर की पंक्ति। उसे काफी अच्छी लगी है। बड़े ही समझदार रसिक के शब्द हैं। 'बिखरी अलकों वाली, भुवन भुलाने वाली। बहुत ही अच्छा। अलक का मतलब बाल, निरक्षर होने के बावजूद बंसी यह बात जानता है। कोई पुस्तक पढ़ता है तो डांसिंग मास्टर बंसी उसे समझ ले जाता है। खुद पढ़ता है तो कठिन शब्द रहने पर उच्चारण करने में परेशानी ।

लेकिन वह पक्ति बडी ही अच्छी पंक्ति है। बिखरी अलकों वाली, भुवन भुलाने वाली।' बहुत ही अच्छा ! मालिक अमीर और रईस आदमी है। यानी प्रेमी। हाँ, यही बात है। पूरी पीठ पर बिखरे हुए बाल, यह पक्ति कितने नशे मे विभोर कर देती है। आज उसकी समझ मे आ रहा है कि प्रोप्राइट्रेस अपने बालों को अधिकांशतः बिखेरे क्यो रखती है, बाँधती क्यो नही है। उस पंक्ति को दुहराते-दुहराते उसे अफसोस हो रहा है, कि सखीदल के प्रायः सभी सखी छोकरे ही हैं। वही पेटेन्ट जरी-दार फीता बाँध वेणी वाला उपकेश पहन उतरेंगे। एकमात्र आशा को ही घने और लम्बे बाल है। अबकी उसने और दो बारह-तेरह साल की लड़कियों को रखा है लेकिन उनके बाल लम्बाई मे आधे हाथ से ज्यादा नही हैं। उन लोगो.की उम्र बढ़ जायेगी तो उनके बालो मे चोटी बाँधकर उन्हे बड़ा बनाया जा सकता है। और जब वह पक्ति आयेगी तो उन दोनो के जूड़ो को खोलकर बिखेर देगा। उसके बाद सिर्फ एक बार चक्राकार घूमना।

'अरे, बंसी हो क्या ? बसी !'

बिडन पार्क के फुटपाथ से बंसी को कौन बुला रहा है ? पहचानी जैसी आवाज है। कौन है ? कहाँ ?

'बसी।'

अरे यह तो योगा मास्टर की आवाज है। हाँ, लाइटपोस्ट के नीचे खड़ा है। ब्लैक आउट की ढक्कनदार बत्ती की तमाम रोशनी उसके सिर पर पड़ रही है।

बसी ने रेलिंग से छाती टिकाये झुककर कहा, 'मास्टर जी।'

'तुम लोग क्या कर रहे हो ? नयी पुस्तक पढने का काम चल रहा है ?' योगा बाबू एकबारगी बरामदे के नीचे आकर खड़ा हो गया।

'हाँ। आप किस दल मे हैं ?'

'सारे शाह लोग बेईमान हैं जी। मतलब यह कि घर चला गया था। लेकिन वहाँ मन नही लगा।'

'यहाँ कहाँ आये थे ?'

'शाम से ही उस पार्क मे बैठा हूँ। तीन चिलम फूक डाली है। लेकिन अन्दर जाने की हिम्मत नही हो रही है। मालिक का हँसता चेहरा देख मुझ पर न जाने क्या हो जाता है। जीभ सूखने लगती है। मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गयी है जी।'

'कौन सी गलती ?'

'उहुँ। वह बात नही बता पाऊँगा। यात्रादल के रंगकर्मियों के पेट मे बात नही पचती। शराब या गाँजे के नशे की वजह से मुँह से बात निकल जाती है।

'फिर ?'

'फिर क्या ? चलता हूँ अभी। वरना सोने की जगह नहीं मिलेगी।'

'कहाँ टिके हुए हैं ?'

'रास्ते का चक्कर काटता रहता हूँ। राम नारायण में सत्यनारायण गणेश की पूजा करता हूँ। जो कुछ मिल जाता है, खा लेता हूँ। बाबू लोगों की ठाकुर बाड़ी में जाकर सो रहता हूँ। बहुत सारे लोग सोते हैं। देर होने से किनारे सो रहना पड़ता है, रात में बारिश होती है तो उसके छींटें लगते हैं।'

बंशी खामोश रहा। वह क्या कहे ? योगा बाबू की मालिक से पैरवी करने का उसे साहस नहीं है। अपने घर में टिकाये, इसका भी साहस नहीं है। योगा मास्टर ब्राह्मण है। यात्रादल में उसका और आशा का चाहे जो भी स्थान हो लेकिन ब्राह्मण को अपने घर पर बुला नहीं सकता। योगा मास्टर गायक है। चूंकि गांजे का सेवन करता है इसलिए गुस्सवर किस्म का आदमी है। साथ ही थोड़ा बहुत खुदगर्ज भी है।

'वंसी, योगा मास्टर लौट आया है ?'

'अयं ? आप कुछ कह रहे हैं ?'

जो कुछ कह रहा है, वंसी को उसका पता है। कर्ज के तौर पर रुपये-पैसे की माँग कर रहा है। उस दिन कह रहा था—'रक्षा माता उलट कर पहनो जामा !' सो माँगेगा तो कुछ न कुछ देना ही पड़ेगा। सोच कर उसने कहा, 'ठहरिये, आता हूँ।'

'तुम्हें आने की जरूरत नहीं। रीतू मास्टर आ गया है ?'

'आ गया है। आज शाम के वक्त आ गया है।'

'तब पार्क मे बैठे एक चिलम और फूंक लूं। उन्हें पकड़ना है। जानते हो, नौकरी चली जायेगी तो मेहतर जैसी हालत हो जायेगी। घर पर दो-दो पत्नियाँ हैं, तीन वयस्क कुमारी लड़कियाँ और एक बेवा।'

योगा मास्टर सड़क पार कर दूसरी ओर पार्क के दरवाजे की ओर चला गया।

बंसी मुड़ कर खड़ा हो गया। सोचने लगा, रीतू बाबू से किसी तरह कहा जा सकता है या नहीं, उनके निकट थोड़ा-सा स्थान मिलता है या नहीं। रीतू बाबू छत की ओर ताकता हुआ सिगरेट फूंक रहा है और पुस्तक सुन रहा है। बंसी को लगा, पुस्तक बहुत जम रही है। सब लोग ध्यान से सुन रहे हैं।

बंसी का अनुमान गलत नहीं है। नाटक खूब जम रहा है। गोरा बाबू खासे आवेग के साथ पढ़ भी रहा है। द्वितीय दृश्य में उर्मिला को जयन्त ... परिचय बता चुका है। पितृमातृहीन ब्राह्मण कुमार है वह, ... पितामह। कोई उसे पागल कहता है, कोई शापभ्रष्ट। बीच-बीच में

बातें याद आती हैं और तब वह तरह-तरह की बातें कहता है। जयन्त स्वयं शास्त्रों का अध्ययन कर चुका है। लेकिन देवद्वार को इस कमजोर हालत में असुरों के अत्याचार को रोकने के लिए उसने गाँव के युवकों का एक दल संगठित किया है। शस्त्र-विद्या का अध्ययन कर उन्होंने उसका अनुशीलन किया है और वे बहुत सारे अस्त्रों मे पारंगत हैं। तब हाँ, रीति-रिवाज ही उनके लिए सब कुछ है। यहाँ के अरण्य, गिरिपथ सब कुछ से वे लोग परिचित हैं। वे बारी-बारी से पेड़ो के ऊपरी हिस्से में बैठ कर दूर-दूर तक निगाह दौड़ाते रहते हैं। किसी चीज पर नजर पड़ते ही संकेत-ध्वनि करते हैं। उस ध्वनि को सुन वे इकट्ठे हो जाते हैं और यत्न से बनायी गयी अपनी गोपनीय चौकियों में अस्त्र सँभाल कर बैठे रहते हैं। वे पहाड़ी असुरों और दैत्यो से परिचित हैं। उस संकेत का पता चलते ही उन्हें अपने घेरे में ले आते हैं और पराजित कर देते हैं।

वसुमित्र ने विस्मय के साथ पूछा था, 'ब्राह्मण कुमार, तुम तो राज्य की स्थापना कर सकते हो?'

जयन्त कुमार ने कहा था, हो सकता है कर लूँ। लेकिन राज्य ले कर क्या होगा? राजा बनने से क्या होगा?'

'क्या कह रहे हो तुम! राजा बनना नही चाहते?'

'नहीं, उसकी कल्पना में मुझे आनन्द नही मिलता।'

'फिर? जीवन की कल्पना बताने मे क्या बाधा? विचित्र युवक चित्र तुम्हारा, उदासीन वैरागी जैसा। इसीलिए जगता है कौतूहल।'

जयन्त कुमार कुछ देर तक भौंचक-सा सामने की ओर ताकता रहता है। उसके बाद कहता है—

नही जानता हूँ। इस क्षण उस पर्वत शिखर की ओर
मन है मेरा भागा जाता, इच्छा होती
जीवन के बाकी दिन वही एक छोटी सी
कुटिया में करूँ व्यतीत। ऊपर अनन्त आकाश
निम्न लोक में श्यामा-सी भूमि। निश्चिन्त जीवन
और मैं कुछ नही चाहता।

वसुमित्र : समझ गया मैं, पूर्व जन्म की असमाप्त ईश्वर-तपस्या
तुम्हे खीच है रही पूर्ण सिद्धि के पथ पर—

जयन्त : नही कुमार, ईश्वर के प्रति नही कोई आग्रह है मुझमें
ईश्वर को पा कर क्या होगा? नही—

कामन्दक : कथितं परमं सत्यं इसमे सन्देह नास्ति
ईश्वर है झंझट श्रेष्ठ—दूर से ही उसे वर्जनं श्रेय
मानो कंबल रूपी पकड़ता है कस कर पकड़ लेता

छुड़ाने से भी नहीं छोड़ता, अन्त में होता मरणं ध्रुव।

जयन्त : कितनी ही बार जा चुका हूँ उस शिखर पर। लेकिन जाने पर अच्छा नहीं लगा। समतल हाथ के संकेत से बुलाता रहा। लौट आया हूँ लम्बी-लम्बी साँसें लेता हुआ। आनन्द यही है। शास्त्र-चर्चा में कई दिनों तक निमग्न रहा हूँ। एक दिन ऐसा आया कि उससे भी विरक्त हो उठा। शास्त्र-चर्चा त्याग कर मित्रों के साथ शास्त्र-चर्चा करता रहा। संगीत के आनन्द में तल्लीन हो चुका हूँ। कुछ दिन बाद वह सब भी फीका पड़ गया। निर्जन नदी के तीर या प्रान्तर में जाकर चिल्ला-चिल्ला कर कहा है, कौन बतायेगा कि मैं क्या चाहता हूँ। बीच-बीच में लगता है, मैं सब कुछ चाहता हूँ। इस विश्व ब्रह्माण्ड में जो कुछ है, मैं सब को चाहता हूँ। कभी-कभी लगता है, नहीं-नहीं, मैं कुछ भी नहीं चाहता। मैं सिर्फ देना चाहता हूँ—स्वयं को निःस्व कर देना चाहता हूँ। लेकिन न जाने किसके पास।'

वसुमित्र अवाक् हो गया। कामन्दक निकट आकर बोला—

सावधानी से स्थानं त्यागं क्रियताम द्रुत पदक्षेपे—

निश्चय बद्ध उन्माद दर्शनं न असंभवं।

भागिये। घोर पागल है। मन कभी पहाड़ की ओर दौड़ता है और कभी मैदान की ओर। कौन जानता कि मन अभी हम लोगों की नाक पर दाँत बिठाने के लिए छटपटा न रहा हो। भागिये। मम ईश्वर! श्राम रक्ष।

रीतू बाबू 'फू-फू' कर हँस पड़ा और उसे हिचकी आ गयी। छत की ओर आँख टिकाये पुस्तक सुन रहा था, एकाएक दो बार 'फू-फू' कर उठा, यानी बन्द मुँह से दबायी हुई हँसी जबरन बाहर निकल आयी। उसके बाद हँसी दबाने की कोशिश छोड़ वह खुल कर हँस पड़ा। बाबुल ने मेज़ पर घूँसा जमा कर कहा, 'अच्छा अच्छा, बहुत अच्छा, लांग लिव गोरा बाबू।'

शुरू में इसका कारण किसी की समझ में ठीक से नहीं आया। इतनी हँसी के लायक कोई चीज उन्हें ढूँढे भी नहीं मिली। इस बात को रीतू बाबू ने ही स्पष्ट कर दिया। बोला, 'बाबुल ब्रदर के अंग्रेजी बघारने की आदत का आपने सही इस्तेमाल किया है देवता। उसी के हाथ से उसे मार डाला। बाबुल ने खुद मेज पर घूँसा मार कर और भी स्पष्ट कर दिया।'

पूरी मजलिस अब ठहाके से गूँज उठी।

गोरा बाबू बोला, 'साइलेन्स' उसके बाद फिर शुरू किया, 'अबकी ब्रह्ममित्र ने सेना के साथ प्रवेश किया।'

आठ

नाटक पढ़ना जब खत्म हुआ तो रात के साढ़े दस बज चुके थे।

पूरी मजलिस भौंचक सी है। सबको अच्छा ही लगा है। गोरा बाबू ने पुस्तक बन्द कर कहा, 'बताइये मास्टर साहब, कैसा लगा?'

'लेकिन—'

रीतू बाबू चुप हो गया।

गोरा बाबू ने कहा, 'बताइये लेकिन क्यों?'

'जरा ऊँचे दर्जे का नहीं हो गया है? यानी युद्ध-विग्रह नहीं है। तत्व जटिल हो गया है।'

'आप जटिल कह रहे हैं?'

'अच्छा, यहाँ पढ़ जाइये—शुचि और जयन्त के दृश्य को।'

बाबुल बोल उठा, 'रात लगभग हाफा-हाफी हो चुकी है। ट्राम-बस बन्द होने-होने को है। हमें डायरेक्ट साउथ जाना है। राइट में केवड़ातल्ला, लेफ्ट में लेक पार कर साउथ।'

शोभा गोपाली से बोली, 'सुन रही हो न, मुझे नहीं हमें।'

'सुन चुकी हूँ।'

'ठीक है, तुम दोनों जाओ। तुम्हें कामन्दक का अपना पार्ट कैसा लगा, बताते जाओ।'

'बहुत ही अच्छा।'

'तुम्हें अलका? अगर तुम्हें माधविका का पार्ट दिया जाये?'

'मुझे बहुत ही अच्छा लगा है। मैं जी-जान से बढ़िया करने की कोशिश करूँगी।'

'अच्छा, तो फिर तुम लोग जाओ।'

बाबुल और अलका उठ कर खड़े हो गये। सड़क के फुटपाथ पर आ कर खड़े हुए। ट्राम का पड़ाव पूरब की ओर है। बस का पड़ाव भी। रात के साढ़े दस बज चुके हैं, सड़क एक तरह से सूनी ही है। दुकानों की भी बत्तियाँ बुझती जा रही हैं। ब्लैक आउट की ढक्कनदार बत्तियों की रोशनी इतनी कम है कि ऊपर के प्रकाश से भरे मकान से उतरने के बाद यह हल्की रोशनी मुतहा रोशनी जैसी लग रही है। दक्खिन तरफ से एक ट्राम आ रही है। दोनों सड़क पार कर दूसरे किनारे चले आये और ट्राम के पड़ाव की ओर बढ़ने लगे।

एकाएक अलका ने कहा, 'नाटक कैसा लगा बाबुलदा?'

'वेरी गुड। चाहे सत्ययुग क्यों न हो। बट वेरी मोडर्न।'

'लेकिन माधविका के साथ अन्याय किया गया है। जबरन शुचि को बड़ा बना दिया है।'

'येस। मगर इसका अब उपायं कहाँ है ? कठिनं स्थानं। वह प्रोप्राइट्रेस का पार्ट है। हुँ-हुँ।'

अलका खिलखिला कर हँस पडी। बोली, 'इसी बीच तुमने पार्ट का रिहर्सल करना शुरू कर दिया।'

'पार्ट बहुत ही बढिया है।'

'मगर तुम्हें तो भाँड़ बना दिया गया है।'

'बाबुल बोस इज ए स्पोर्ट। वैसा न होता तो—'

'तो ? चुप क्यों हो गये ?'

'अब तक तुम्हारी मुहब्बत में रस-बस गया होता।'

'कोशिश कर के देखा क्यों नहीं ? अलका उस किस्म की लड़की नहीं है।'

'दैट आइ नो।'

'माँ और बाबू जी दोनों जने अब मेरी शादी कराना चाहते हैं। कहा है, अभी शादी नहीं होगी तो इसके बाद नहीं होगी। मैंने कहा है, भले ही न हो। याद रखिये, मैं काम कर कमाती हूं तो खाने का खर्च चलता है। चुप हो गये।'

'हूँ। आज आने में तुमने देर कर दी। लाल चटकदार साडी पहने हो। कहाँ गयी थीं ? ह्वाट्स दि आइडिया ?'

'एक फिल्म में नाच का पार्ट करने को बुला भेजा था।'

बाबुल ने चुप्पी साध ली। अकसर अलका इन बातों की चर्चा बाबुल से करती रहती है। बाबुल पता लगा कर सूचना देता है।

अलका ने एकाएक कहा, 'अरे लो।'

'क्या हुआ ?'

'चप्पल का स्ट्रैप टूट गया।'

'सो फादर।' उसने ठिठक कर चारों तरफ देखा कि कहीं जूता सीने वाला है या नहीं। लेकिन दिखायी नहीं पड़ा। बोला, 'हाथ में ले लो। एसप्लेनेड में देखेंगे।'

अलका ने चप्पलों को हाथ में लेते हुए कहा, 'कितनी परेशानी की बात है ?'

बाबुल बोला, 'गोरा बाबू इज ग्रेट। लिखा है नाइस। झंझटं झंझटं सत्यं झंझटं जगत्‌ मयं—सो हलुआ, अब याद नहीं है।'

अलका बोली, 'वह सब बहुत अच्छा नहीं हुआ है, चाहे तुम जो कहो। तब हाँ, फालतू आदमी खुल कर ठहाका लगायेंगे।' वह झुक कर चप्पलों को उठाने जा रही थी, एकाएक कोई सामने आकर खड़ा हो गया।

'नमस्कार !'

अलका चिहुँक उठी, 'बाप रे !'

बाबुल भी चौंक उठा था। लड़ाई का ज़माना, ब्लैक आउट की रात, साढ़े दस बज चुके हैं। चितपुर रोड, राम बागान का छोर और साथ में अलका। उसने खासे जोर के साथ ही कहा, 'कौन ?'

'डरने की बात नहीं है सर, मैं, बाबुल बाबू, योगा मास्टर हूँ।'

'योगा बाबू, हाँ योगा बाबू ही है।'

उन दोनों पर नजर जाते ही योगा बाबू पार्क से बाहर चला आया है। योगा बाबू बोला, 'नाटक पढ़ना खत्म हो गया बाबू ? मजलिस उठ गयी ?'

बाबुल ने तनिक अचकचाते हुए कहा, 'उठ चुकी है। नाटक पढ़ना भी खत्म हो चुका है। हम लोग चले आये। बहुत दूर जाना है न। लेकिन आप ? यहाँ इतनी रात में ?'

योगा बाबू ने दयनीय स्वर में कहा, 'रीतू बाबू के लिए खड़ा हूँ। वे—?'

'अभी तक बाहर नहीं निकले हैं। विचार-विमर्श चल रहा है।'

'ओ।'

'जरूरत है उनसे ?'

'हाँ। मुझे हटा दिया गया है, यह जानते हैं न ?'

'सुना है।'

'हाँ। इसीलिए एक बार उन्हें पकड़ना है। वे अगर—'

'हाँ। उनकी बात वे लोग मानते हैं।'

अलका चुपचाप खड़ी थी। उसने सहसा सवाल किया, 'आपने तो कॉन्ट्रैक्ट किया था न ?'

'हाँ, कान्ट्रैक्ट ही था।'

'फिर ? उन लोगों ने एकाएक हटा क्यों दिया ?'

योगा बाबू ने हँसते हुए कहा, 'वह तो बिटिया, कदली पत्र है—केले का पत्ता। जब तक नौकरी है तब तक कीमत है। केले का पत्ता तभी तक अच्छा रहता है जब तक उसमें भात खाओ। भात खत्म होते ही उसे कूड़ेदान में फेंक दिया जाता है। तब हाँ, मुझसे एक गलती हो गयी है।'

बाबुल बोला, 'ट्राम आ रही है।'

'उत्तर की ओर, सोना गाछी से दक्खिन, जहाँ यात्रा दल के दफ्तर का अड्डा है, वहीं ट्राम की बड़ी बत्ती दीख रही थी। ब्लैक आउट के कारण बड़ी बत्ती भी धुँधली रोशनी फेंक रही है। ट्राम आ रही है, आवाज भी सुनायी पड़ रही है। बाबुल ने अलका को सतर्क किया। लेकिन अलका तब भी कहे जा रही थी, 'वैसी कौन-सी गलती की थी आपने ?'

बाबुल बोला, 'गलती का है, की है। अभी तुम झंझट बढ़ा रही हो। तैयार

हो जाओ और आपने राइट मैन सेलेक्ट किया है। अगर कुछ कर सकते हैं तो विग ब्रदर ही कर सकते हैं।'

'बाबुलदा !'

'क्या ?'

'नंगे पाँव ट्राम पर कैसे चढ़ूँगी ?'

'माई खुदा। तो फिर क्या पैदल चलोगी ?'

देखते-देखते ट्राम आ गयी। बाबुल एक तरह से अलका को खींचते हुए ट्राम में बैठ गया। ट्राम लगभग वीरान है। वह एक बेन्च पर बैठ गया और बगलवाली जगह की ओर इशारा करते हुए बोला, 'सिट डाउन।'

अलका बोली, 'कितनी मुसीबत की बात है ! हाथ में चप्पल ले—'

'वैनिटी बैग में डाल लो।'

'धत् ! दुनिया भर की गन्दगी—'

'देन थ्रो इट अवे। और नहीं कर सको तो मुझे दो।'

'एक महीना भी नहीं हुआ है। शौक से खरीदा है। थ्रो इट अवे ! इससे तो बेहतर है कि तुम अपना रुमाल दो। उसी में बाँध लूँगी।'

'लो। आलरेडी डर्टी हो गया है। लेकिन बाद में रुमाल वापस कर देना।'

कन्डक्टर निकट आकर खड़ा हो गया, 'टिकट !'

चितपुर रोड, ब्लैक आउट की रात, लड़ाई का जमाना। लगभग सारी दुकानें बन्द हो चुकी हैं। एकमात्र पान की दुकानें खुली हैं। दुकानों के आसपास, घर के दरवाजे पर, धुँधली रोशनी में देह-व्यवसायिनी नारियों की भीड़ लगी है। वे दोमंजिले के बरामदे पर झुक कर खड़ी हैं। बीच-बीच में गली के अन्दर रिक्शा-टैक्सी आते हैं। बीच-बीच में दुकानदारों का जत्था। एक दरवाजे की देहरी पर लड़कियाँ बेतरह हँस रही हैं। वे जैसे लड़खड़ा रही हों। अलका बोली, 'बाप रे !'

बाबुल बोला, 'ह्वाई ?'

'हँस रही हैं, देख नहीं रहे ?'

'लुक देअर।'

'क्या ?'

'देअर !'

अलका ने देखा, दो फिरंगी सैनिक पान की दुकान पर खड़े हो कर पान खा रहे हैं। कुछ दूर और जाने के बाद यह सिलसिला खत्म हुआ। इस ओर लगभग

सन्नाटा रेंग रहा है। हैरिसन रोड पार कर नाखुदा मसजिद का इलाका भी करीब-करीब सूना जैसा ही मिला। सिर्फ एक इत्र की दुकान खुली है और एक तम्बाकू की दुकान। दो-चार विशाल पगड़ी वाले पेशवारी पोशाकधारी आदमी ज़ाकरिया स्ट्रीट के मोड़ पर खड़े थे। दो व्यक्ति ट्राम में बैठ गये। अलका सरककर बाबुल से सटकर बैठ गयी। बाबुल बोला, 'उहुँ।'

अलका ने ध्यान नहीं दिया, बोली, 'देख नहीं रहे ?'

बाबुल चुपचाप बैठा रहा। एसप्लेनेड पहुँचने पर ट्राम से नीचे उतर कर बोला, 'देखो, जूता सीने वाला अब भी है या नहीं ?'

एक छोकरा मिला। वह उस वक्त भी एक पोस्ट से पीठ टिकाये सो रहा था। दूसरी ओर फिटनवाला पुकार रहा है, 'फिटन चाहिए बाबू ?'

बाबुल ने जवाब नहीं दिया। एक फिटनवाला निकट आकर बोला, 'मैदान की सैर करा दूँगा बाबू। बारिश नहीं हो रही है—आसमान क्लियर है। चाँद भी बड़ा अच्छा दीख रहा है।'

'माइ गॉड। यह तो मून शोइंग है फादर।'

'बाबू—'

'तंग मत करो।'

बाबुल ने मोची से कहा, 'जल्दी कर भैया।'

अलका आसमान की ओर निहार रही है। मोची ने चप्पल आगे बढ़ा दी, 'दो आना बाबू।'

लेड लॉ इमारत का दीर्घदीप बुझ चुका है। मेट्रो के सामने पोर्टिको के नीचे लोग-बाग नहीं हैं। ब्रिस्टल हॉटल के सामने दो-चार व्यक्ति हैं। बाबुल की कलाई-घड़ी में ग्यारह बज रहे हैं। झट से एक दुअन्नी फेंककर बाबुल बोला, 'चलो।' और खींचकर पूरब मुँह चौरंगी रोड की तरफ ले चला।

अलका बोली, 'कहाँ उस तरफ ?'

'ट्राम कब आयेगी, ठीक नहीं। ग्यारह बज चुके हैं। टैक्सी से—'

ब्रिस्टल के सामने चौरंगी रोड के पश्चिम तरफ तब कतारबद्ध टैक्सियाँ खड़ी थीं। कलकत्ते के काम के तकाजे से टैक्सियों को छह बजे छुट्टी मिल चुकी है। बॉनेट खोल दिया है। वहाँ कई टैक्सी झाड़ने-पोंछनेवाले लड़के हैं। वे लोग झाड़-पोंछ रहे हैं। एक टैक्सी में बैठकर बाबुल बोला, 'टालीगंज।'

अलका बोली, 'मैदान का एक चक्कर लगाते हुए सरदारजी।'

सरदारजी बोला, 'ठीक है। एक बार, दो बार, चार बार जितना भी कहियेगा, चक्कर लगा दूँगा।'

बाबुल बोला, 'नहीं-नहीं।'

अलका ने बाधा दी, 'चुप रहो।'

अलका ने बाबुल का हाथ कसकर दबा लिया। बाबुल ने पेशानी पर बल

ताकर उसकी ओर देखा। अलका आँख बन्द कर पीछे की ओर टिककर बैठ गयी है। लगा, मन ही मन उसे बेहद तृप्ति का अहसास हो रहा है। कुछ कहना चाहा, मगर बोली नहीं। लेकिन बाबुल चुपचाप रह नहीं सकता है। उसने शुरू किया—

झंझटं झंझटं सत्यं झंझटं जगतंमयं—
पैदल चलं मैदाने घाटं गृहं झंझटं नास्तिकुत्रो वा।
माइ लॉर्ड ने ग्रेण्ड लिखा है। झंझटं दिवसे रात्रे झंझटं च पदे-पदे। ग्रैंड।'

टैक्सी तब मैदान के रेड रोड पर दक्खिन की ओर मुड़ चुकी थी।

अलका बोली, 'गंगा किनारे चलिये ड्राइवर साहब।'

'बहुत अच्छा।'

ड्राइवर स्टीयरिंग घुमाकर झट से मुड़ गया।

बाबुल बोला, 'तुम्हारा रोमांस जोर मार रहा है।'

'चुप रहो। पार्ट मुझे बहुत ही अच्छा लगा है। देखो, मैं कैसी गंधर्व कन्या हूँ। देखना, शुचि को मारकर मैं निकल आऊँगी।'

'नौकरी चली जायेगी।'

'जाये।'

गंगा के किनारे अँधेरे में जहाज खड़े हैं। चाँदनी में वे अजीब तरह के दीख रहे हैं। उसी समय से बाबुल का हाथ थामे अलका उठंग कर बैठी हुई है। बाबुल ने एकाएक सवाल किया, 'इसी तरह चक्कर काटने की तुम अभ्यस्त रही हो। है न ?'

'उससे तुम्हारा क्या बिगड़ता है ?'

'नथिंग। सिर्फ जानने के लिए पूछा। जान गया। माइलेज जानना चाहता हूँ। कितनी दूर आगे बढ़ चुकी हो ?'

'तुमने तो जमकर शराब का सेवन करना शुरू कर दिया है।'

'सो किया है। और तुम ?'

'तुम्हारे घ्राण से कभी अर्ध भोजन और कभी-कभी एक-दो सिप हो जाता है।'

'आइ सी। एण्ड यही प्रमोद घूमने-फिरने में। इसे ही जय राइड या कुछ ऐसा ही कहते हैं।'

'स्टेज पर अभिनय का प्रेम जितना रहता है, उससे अधिक नहीं।'

'हुँ।'

अलका बोली, 'अब सीधे टालीगंज चलिए सरदारजी। सीधे।'

टालीगंज रेल लाइन पुल के नीचे से पार होने के बाद अलका बोली, 'रुक जाइये सरदार जी, यहीं उतरना है।'

बाबुल बोला, 'क्यों पूरा जिगर गटक जाने के बाद तलछट बाकी रखने से फायदा ही क्या ? बारह बज चुके हैं। घर चलो।'

'नहीं; रोक दीजिये सरदारजी।'

ड्राइवर ने गाड़ी रोक दी। अलका नीचे उतरी। बोली, 'कितना हुआ सरदारजी ?'

बाबुल ने दस रुपये का एक नोट निकाल सरदारजी को दिया और कहा, 'रहने दो। मैं दे रहा हूँ। ठहरो, मैं तुम्हें पहुँचा देता हूँ।'

अलका खड़ी हो गयी। बाकी पैसा लेकर बाबुल ने कदम बढाया, 'चलो।'

'मैं मजे में चली जाती बाबुलदा।'

'नहीं।'

अलका थोड़ी दूर जाकर ठिठक कर खड़ी हो गयी, 'नहीं। तुम जाओ।'

'क्यों ?'

अलका ने पेशानी पर बल लाते हुए कहा, 'घर घुसते ही—तुम चले जाओ बाबुलदा।' नहीं, चले जाओ। बाबूजी चिल्लाने लगेंगे।'

'चिल्लाने लगेंगे ?'

अलका ने एकाएक कहा, 'मेरे लिए एक मकान ढूंढ़ दे सकते हो ?'

'मकान ?'

'हाँ। जहाँ मैं आजादी से रह सकूं। या—'

'क्या ?'

'नः। वह तुमसे नहीं हो सकेगा। इसके अलावा उससे क्या होगा ? दोनों जने ही डूब जायेंगे।'

'मतलब ?'

अलका ने अत्यन्त सहज स्वर में कहा, 'मैं शादी के बारे में कह रही थी। कालीघाट में माला बदलकर और सिंदूर पहनाकर। घर पर अब मैं टिक नहीं पा रही हूँ। बिलकुल परेशान हो गयी हूँ।'

बाबुल अवाक् हो गया। उसने कभी यह नहीं सोचा था। बल्कि शादी की बात की उसे याद ही नहीं आयी थी। अन्ततः अलका जैसी लड़की से शादी करने की बात। अलका ने उत्तर का इन्तजार नहीं किया। 'चलती हूँ ?' यह कहकर वह पीछे की ओर मुड़ गयी।

अलका चली गयी। छोटी सड़क से थोड़ी दूर जाने के बाद ही उसका घर मिलता है। वह घर के दरवाजे पर पहुँची। बरामदे पर कदम रखा। रोशनी जल उठी। निस्तब्ध आधी रात। कलकत्ते के संख्याहीन नींद में खोये हुए हैं। सड़क पर जितनी भी दूर तक आँखें जाती हैं, सन्नाटा ही रेंगता हुआ नजर आ रहा है। रात के सन्नाटे में एक बात तिर कर आयी—

'इतनी रात ?' उसके बाद ही पुरुष कंठ की आवाज सुनायी पड़ी, 'उफ्, चिल्ला क्यों रही हो ?'

अलका के पिता हैं।

बाबुल खड़ा हो गया।

'तुम्हारा फिल्म का कॉन्ट्रैक्ट हो चुका ?'

अलका ने क्या उत्तर दिया, बाबुल को सुनायी नहीं पड़ा।

'फिर ? फिर इतनी रात तक कहाँ थीं ?'

दरवाजा बन्द हो गया। बाबुल लौटने लगा। अलका से शादी ? हे ईश्वर ! न:, ऐसा नहीं हो सकता।

अलका ने अच्छे घर में जन्म लिया था। उसका बचपन, शैशव और कैशोर लाड़-प्यार में ही व्यतीत हुए थे। उसके पिता—योगेन दास शौकीन आदमी थे। तीस-बत्तीस साल की उम्र के दौरान गुणी मनुष्यों की मजलिस में आते-जाते थे। सरकारी मुलाजिम थे। चुरुट, शराब पीते थे, पाजामा पहनते थे और जब धोती पहनना होता तो चुन्नटदार धोती पहनते थे। पत्नी को लेकर तरह-तरह की मजलिसों का चक्कर लगाते थे। थियेटर के अभिनय और नाच के प्रति बेहद झुकाव था। लेकिन पब्लिक थियेटर नहीं जाते थे —सिवाय शिशिर बाबू के थियेटर के। ज्यादा से ज्यादा मोडर्न एमेच्योर थियेटर जाते थे। दो-चार इस तरह की समितियों से जुड़े हुए भी थे। उससे भी अधिक झुकाव डांस-ड्रामा के प्रति था। उदयशंकर, कथकली, भारत नाट्यम के समझदार की हैसियत से प्रसिद्धि भी थी। सन्तान के तौर पर एक मात्र अलका ही थी। उसको बचपन से ही नाच और कविता-पाठ करना सिखाया था। पढ़ने के लिए पहले मिशनरी स्कूल में प्राइमरी तक भेजा था, उसके बाद लॅरेटो किस्म के एक स्कूल में। १९३८-३९ ईसवी से योगेन दास के भाग्य का दरवाजा एकाएक सिंह द्वार होकर खुल गया। पी० डब्लू० डी० का ओवरसियर था। साहब की कृपा-दृष्टि से सुपरवाइजर हो गया। साहब भारतीय नृत्य का भक्त था। उसी सिलसिले में साहब ने उसे पकड़ना चाहा तो खुद पकड़ में आ गये। अलका का नाच देख कर इसकी शुरुआत हुई। उसके बाद कहाँ किस नाच की मजलिस जमने जा रही है, यह देख कर योगेन दास उनके लिए कार्ड का इन्तजाम करते और उन्हें ले जाते। साहब बीच में बैठते थे और उनके अगल-बगल में मिस्टर दास और मिसेज दास। तब अलका पंद्रहवें साल में कदम रख चुकी थी। कुछ दिन के बाद वह भी शामिल होने लगी। बीच-बीच में साहब उसके घर पर भी आते थे। दास साहब इसके लिए घर पर एक साइन बोर्ड लटका कर रखे हुये थे। उसमें लिखा था—प्राच्य नृत्य संघ। देखते-देखते लड़ाई का जमाना आ गया। दास साहब ने आव देखा न ताव, टालीगंज में जमीन खरीद कर मकान बनवा लिया। अलका मैट्रिक पास कर कॉलेज में दाखिल हुई। एकाध साल के दरमियान दास साहब की जिन्दगी पेट्रोमैक्स की तरह चारों तरफ

रोशनी बिखेर कर जल उठी। लेकिन चालीस की शुरूआत में ही वह रोशनी एकाएक बुझ गयी। कॉन्ट्रैक्टर से रिश्वत लेने के वक्त रंगे हाथ पकड़ लिये गये। हालाँकि रिश्वत की रकम उस वक्त ज्यादा नहीं थी, लगभग डेढ़ हजार। पकड़ में आ गये तो खुद को बचाने में, जो कुछ था स्वाहा हो गया। यहाँ तक कि जिस मकान को बनवाया था, अपने को बचाने के लिए उसे भी बेचना पड़ा। सब कुछ स्वाहा होने के बाद बच तो गये, मगर नौकरी से हाथ धोना पड़ा। एकमात्र बांगर कॉलोनी में पत्नी के नाम से खरीदी गयी थोड़ी सी जमीन ही हाथ में रह गयी। लेकिन इतना कुछ होने के बावजूद योगेन दास चौधरी ने इंश्योरेन्स कम्पनी के पास जमीन और भावी मकान गिरवी रख कर मकान बनवा लिया और कहा, 'परवाह नहीं। मैं आज भी यंग मैन हूँ।' यह कहकर फिर से जुट गये। तब लड़ाई छिड़ चुकी थी। बयालीस ईसवीं। योगेन दास ने नये सिरे से पैरों पर खड़े होने की कोशिश की। एक ओर कॉन्ट्रैक्ट का काम और दूसरी ओर जोर-शोर से अंग्रेजों का विरोध करना शुरू किया। कॉन्ट्रैक्ट में कोई सुविधा नहीं हुई, लेकिन योगेन दास चौधरी अंग्रेजों के घोर विरोधी बन कर और अधिक प्रगतिशील हो गये। नृत्य-नाट्य और प्रगतिशील संस्कृति से योगेन दास का सम्बन्ध बहुत पुराना था, अब सरकारी नौकरी जाने के बाद वे उसके नेता हो गये। लेकिन गृहस्थी चलाने के लिए जो कुछ कमाया-धमाया था, आय-व्यय में तारतम्य न रहने के कारण सब बर्बाद हो गया और वे मुँह के बल गिर पड़े। योगेन दास का एकमात्र खूँटा, प्रगतिशील संस्कृति ही रह गयी। तब अलका का अपने और दूसरे-दूसरे मुहल्लों में नाच की वजह से ख्याति फैल चुकी थी। १९४३ ई० में कलकत्ता शहर में आइ० पी० टी० की स्थापना होने के कारण देखते न देखते चारों तरफ संस्कृति संघ फैल गया। इन दो बरसों के दरम्यान योगेन दास इस तरह टूट गये कि ठेकेदारी पा कर भी तनकर खड़े नहीं हो सके। प्रोग्रेसिव योगेन दास चौधरी हमेशा शराब की चुस्कियाँ लेते थे। अब वे नामी पियक्कड़ हो गये। इंश्योरेन्स कम्पनी का ब्याज महीने दर महीने मोटी रकम में बदलता गया। मुकद्दमे का नोटिस मिला। अलका के कालेज का शुल्क सात महीने तक नहीं दिया गया और उसका नाम कट गया। अलका भी पढ़ने-लिखने के प्रति कोई खास उत्साहित नहीं थी। उसके मन में सिनेमा-स्टार होने की इच्छा जोर मारने लगी। हाल ही में दो-तीन फिल्मों में नामी परिवार की लड़कियाँ भाग ले चुकी थीं और रातों-रात स्टार भी हो चुकी थीं। उस पर बाप कॉलेज का शुल्क न दे सके तो कालेज के प्रति उनमें घोर आक्रोश उभर आया और गुस्से भरी आवाज में बोले, 'तुम्हें कालेज नहीं जाना है। सारे के सारे प्रोफेसर धोखेबाज हैं। उनमें से ज्यादातर नोट पढ़ कर पढ़ाते हैं। सब के सब प्रतिक्रियावादी हैं। मैं तुम्हें पढ़ाऊँगा।'

माँ ने कहा था, 'तुम पढ़ाओगे? तब तो हो चुका।'

दास चौधरी ने कहा था, 'देखना। मैं उसे क्या बना देता हूँ।'

अलका को खुशी हुई थी। बाप एकाध महीने तक पढ़ाता रहा। लेकिन

उसके बाद नहीं। अभाव से पीड़ित क्षुब्ध दास सम्भवतः मन ही मन लड़की को पढ़ाने की जिम्मेदारी से छुटकारा पाना चाहते थे। तब हाँ, लड़की को अपने साथ ले कल्चरल-शो या सभा-समिति में जाना बन्द नहीं किया। डाक से उनका पत्र आना तब बन्द हो चुका था, मगर अलका के नाम से पत्र आने शुरू हो गये थे।

इसी बीच दास को दिल का दौरा पड़ा। किसी तरह सँभल गये, मगर लकवे का शिकार हो गये। तीनेक महीने तक उन्हें बिस्तर पर रहना पड़ा। इसी बीच अलका ने अपने रास्ते का चुनाव कर लिया।

दास के इलाज में ज्यादा रकम खर्च हुई हो, ऐसी बात नहीं। तब हाँ, कुछ पैसे अवश्य खर्च हुए थे। दरअसल वे अपनी देह या आयु के जोर से बच गये थे। लेकिन पत्नी और लड़की के अन्न की समस्या कोई दूसरा हल तो नहीं कर देगा, स्वयं ही उसका हल निकालना पड़ा था। इस सम्बन्ध में बाबुल बोस ने मदद की थी।

बाबुल बोस इसी मुहल्ले में रहता है। बाप पेंशनयाफ्ता थे। एक अदद मकान बनवाया था। वे लोग तीन भाई हैं। काबुल, डब्लू, बाबुल। दोनों बड़े भाई मोटे तौर पर गृहस्थ हैं, नौकरी करते हैं। लिखे-पढ़े भी हैं। दोनों ग्रेजुएट हैं। बाबुल अपने मुँह से हालांकि कहता है कि वह मैट्रिक फेल है, मगर दरअसल टेस्ट की परीक्षा भी पास नहीं कर सका था। बचपन में ही माँ चल बसी थी। बाप के लाड़-प्यार में पला है। घर में खाना खाता था और मुहल्ले-मुहल्ले की सैर करता था। उसके ह्यूमन का दर्रा कैसे और किस चीज के प्रभाव से ऐसा हो गया, इसका विश्लेषण वह स्वयं भी नहीं कर पाता है। तब हाँ, अंग्रेजी के शब्दों का पुट देकर बातचीत करने का तौर-तरीका उसने अपने परिवार के सदस्यों से ही सीखा है। उसका बाप भी इसी तरह बातचीत करता था। लेकिन वे गम्भीर मामलों में इस प्रकार का काम करते थे। बाबुल ने उसे सिरिओ-कॉमिक बना लिया है जो उसके चरित्रगत और जमाने की हवा के कारण है। बचपन से ही बाबुल शब्दों को तोड़-मरोड़ कर बातें करता है, ऐसा करना उसे अच्छा भी लगता है। लोग हँसते हैं और उसे स्नेह की दृष्टि से देखते हैं। अभिनय के प्रति बचपन से ही रुझान है। अभी १९४४ ई० में उसकी उम्र बत्तीस-तैंतीस है। इसका मतलब यह कि शैशव के पाँच-सात वर्ष बाद, अठारह-उन्नीस साल की उम्र से रुचि अपने आप ही दिखायी पड़ने लगी है। इसकी पहली शुरुआत स्कूल में पारितोषिक वितरण के समय सुकुमार राय की हास्य-कविता पाठ करने से हुई थी। इसके अलावा उसका एक विचित्र स्वभाव था—बिल्ली की आवाज की नकल करना। घर-भर के लोग बैठ कर बातचीत में मशगूल रहते थे कि वह तख्त के नीचे घुस कर बिल्ली की आवाज की नकल करना शुरू कर देता था। लोग चकित हो जाते और उसी में उसे आनन्द मिलता था। स्कूल में उसे पढ़ने-लिखने के मामले में

पारितोषिक नहीं मिलता था, लेकिन कविता-पाठ में पारितोषिक अवश्य मिलता था। इसीसे उसके भविष्य का दरवाजा खुला। 'पुरातन भृत्य' 'केस्टो बेटा ही चोर' की आवृत्ति करने के कारण उसका नाम फैल गया। उसके बाद कविता-पाठ प्रतियोगिता में कप-मेडल पाने की झोंक उस पर सवार हो गयी। उसके बाद थियेटर के प्रति रुझान पैदा हुआ। पूजा के समय मुहल्ले के थियेटर में चन्द्रगुप्त-नाटक में वैचलर का पार्ट पा कर उसने बहुत अच्छा अभिनय किया। उसी समय से वह एमेच्योर में प्रतिष्ठित हो गया। सोचा, इसी को पेशे के तौर पर अख्तियार कर लूंगा। वह पहले से ही बोल-चाल के तौर-तरीके का, हाथ-पाँव हिलाने-डुलाने की भंगिमा करने का अभिनय करता था। और यही उसकी स्वाभाविक भंगिमा के रूप में बदल गया। छुटपन में ही माँ का देहान्त हो चुका था। बाप नौकरी करता था। पेंशन मिली और उसके बाद जब उसने अपने छोटे लड़के की ओर देखा, तब उसे अपने इच्छानुसार ढालने का वक्त जा चुका था। फिर भी झगड़ा-टंटा कोई कम नहीं हुआ। और जब अपने दोनों बड़े लड़कों के कहने पर घर से भगा देने का भय दिखाया तो वह स्वयं ही घर छोड़ कर निकल गया। दोस्त बनाने की कला में निपुण था। इसके अलावा उसमें एक और गुण था। वह यह कि घर पर चाहे मान-अपमान का बोध उसमें कितना ही अधिक क्यों न हो, बाहर दोस्तों के घर पर वह सब उतना ही कम रहता था। किसी भी दोस्त के घर पर पाँच दिन टिकने के बाद यदि महसूस करता कि दोस्त के घर वाले विरक्ति का अनुभव कर रहे हैं तो वह सूटकेस उठा कर कहता, 'स्प्रेडिंग विंग्स। फ्लाइंग टु नार्थ।'

दोस्त-मित्र उसकी बातों को समझते थे। किसी की समझ में उसकी बात न आती तो वह पूछता, 'इसका मतलब ?'

'मतलब यह कि डैने फैला चुका हूँ—उत्तर दिशा की ओर उड़ूँगा। हंस-बलाका। साइबेरियन गैण्डर।'

किसी दूसरे मित्र के घर पर जा कर सीधे कहता, 'देखो, कुछ दिन ठहरना है—यही फाइव-सिक्स डेज। अण्डरस्टैण्ड !'

बीच-बीच में कलकत्ते के बाहर भी चला जाता। उस समय इसकी भी सुविधा हासिल हो गयी थी। थियेटरों में तब उसके नाम का बोलबाला हो चुका था। वह सब कुछ कर सकता है। डायरेक्शन, प्रोडक्शन, मेकअप, मोशन, मास्टरी वगैरह सब कुछ कर लेता था, इसके अलावा सिरिओ का पार्ट तो था ही। सब जगह एक ही बात दुहराता था, 'उत्तर की ओर जाऊँगा, पेड़ मिलेगा तो बैठ जाऊँगा। समझ रहे हो न ? और भगा दोगे तो तत्क्षण उड़ कर चला जाऊँगा।'

इसी बीच बाप दिल के दौरे से चल बसा। बाबुल बोस घर लौट आया और जमकर बैठ गया।

फादर्स सन इक्वल राइट।

अपना हक उसने प्राप्त किया। मकान में चार कमरे थे। एक कमरा अपने लिए

रख लिया। एक कमरे के तिहाई हिस्से के लिये अपने बड़े भाइयों से डेढ़ हजार रुपया वसूल कर बैंक मे जमाकर दिया और कहा, 'नाउ ए कैपिटलिस्ट। डेढ़ हजार का मालिक।' स्टोव खरीद कर रसोई पकाता या—फिर होटल में खाना खाता था। और थियेटर पर घूमता-फिरता रहता था। इसके अलावा फिल्म स्टूडियो का चक्कर लगाना शुरू किया। इसी बीच १९४२ ई० का आगमन हुआ। रुपया नोट के रूप में बदलकर उड़ने लगा। मैदान, होटल, बार के इलाके मे नोट उड़ने लगे। और उनमें से कुछ नोट उड़कर उन इलाकों से मनुष्य के इलाके में पहुँच गये। वहाँ आमोद-प्रमोद, सांस्कृतिक समारोह आदि बरसात के बाद के कुकुरमुत्ते की तरह उगने लगे। बाबुल बोस ने कुकुरमुत्ते की सब्जी खायी है, अब देखा, उसके नीचे धूप वर्षा से बचकर खड़ा हुआ जा सकता है। इतना जरूर था कि उसे और एक बात की याद आयी थी। लगा था, जितने भी आदमी हैं, वे मेढक हैं। बड़े-बड़े मेढ़क पानी और गड्ढे मे रहते हैं—तालाब डबरा से लेकर घर के गड्ढे तक में दखल जमाये पड़े हैं। और ये लोग बेंगची हैं जिनकी पूँछ अभी कटी नही है। अगर कटी भी है तो मटर के दाने या उससे बड़ी किस्म का उनका आकार है और इस कुकुरमुत्ते के नीचे भीड़ इकट्ठी कर मजे से हैं। अब वे बेशक बहुत कुछ बढ़ चुके हैं। नाम-यश कमा लिया है और उछलते-कूदते हुए आगे बढ रहे हैं। इसी बीच एक दिन अलका दास चौधरी से जान-पहचान हुई। एक ही मुहल्ले में मकान है, थोड़ी दूरी पर। अलका दास चौधरी, चौधरी साहब की लड़की बहुत ही अच्छा नृत्य करती है—यह उन दिनों बहुत ऊँचे दर्जे की बात थी। कथकली या भारतीय नाट्यम् की चर्चा होते ही न्यू एम्पायर की याद आ जाती है। यानी बाकायदा होटल के प्रांगण में दोपहर की रंगीन छतरी के तले बेंत की कुरसी-मेज की बात। वहाँ आँखों पर धूप का चश्मा लगाये सरोवरवासिनी हरे रंग की लम्बी यानी दीर्घांगी मेढ़की जैसी अलका की सब लोग कल्पना करते हैं। कुकुरमुत्ते के नीचे की नीरस बेंगची को उस ओर कूदने-फाँदने का साहस नहीं होता। उसी समय बाबुल बोस को एक दिन इसी तरह की रंगीन छतरी की मजलिस में स्वयं चौधरी साहब ने बुलावा भेजा था। वे एक दावत दे रहे थे और उसी में आने को आमन्त्रित किया था। अलका नाचेगी, आधुनिक गायक मन्टी सेन गीत गायेगा। कॉमिक करने के लिए बाबुल की जरूरत पड़ी थी। मुहल्ले के ही किसी सज्जन ने उसका नाम बताया था। मन्टी सेन नामी गायक है, दो गीत गाकर ही चल देगा। अलका के दो नाच हैं, बाबुल बोस रिक्त स्थानों को भरेगा। लेकिन उस मजलिस में बाबुल ही बाजी मार ले गया था। उसी सिलसिले में जान-पहचान हुई थी। उसके बाद जान-पहचान मे प्रगाढ़ता नही आयी थी। अचानक आठेक महीने के दरमियान चौधरी साहब कलाबाजी दिखाते हुए थ्रम्बोसिस के शिकार हो गये। तभी वह एक दिन अलका के नये डेरे के सामने से होकर जा रहा था। अलका ने ही उसे पुकारा था। बाबुल ने अचकचाकर कहा था, 'यहाँ! मैटर क्या है?'

'आजकल हम लोग यहीं रहते हैं।'

'मतलब ?।'

'यह लम्बी दास्तान है। आइये बैठिये।'

लम्बी दास्तान की कुछ बातें वह उसी दिन बता गयी। आने जाने के क्रम में कुछ ही दिनों के दरमियान जान-पहचान थोड़ी-बहुत प्रगाढ़ हो गयी। तब उसकी माँ ने भी उसके सामने निकलना शुरू कर दिया था। बाबू जो उस समय पूरे तौर से स्वस्थ नहीं हुए थे। कुछ दिन बाद उस दिन अलका की माँ एकाएक पूछ बैठी, 'किसी ने बताया कि तुम सिनेमा में उतर रहे हो।'

'जी हाँ, अभी मैं लकी कैट हूँ—भाग्य से छींका टूटा है और मुझे एक पार्ट मिल गया है।'

'पार्ट बढ़िया है ? हीरो का ?'

'हीरो ! माई ईश्वर ! बाबुल बोस को खुदा ने स्वार्थ से 'कैट' बनाया है। हमेशा टाइगर मासी नहीं कह सकता, मामा मानिये तो मेटरनल अंकल। मतलब यह कि कॉमिक के अलावा कुछ कर भी नहीं सकता और मेरा चेहरा भी टाइगर—यानी हीरो की तरह नहीं है। एक छोटा सा कॉमिक पार्ट मिला है। तब हाँ, इसी में वे लोग 'वाह गुरुजी की फतह' कर देंगे। समाँ बाँध देंगे। डायरेक्टर ने कहा है—गुड। और उस दिन कहा है—वेरी गुड।'

अलका की माँ ने कहा था, 'वाह। बैठो, मैं चाय ले आती हूँ।'

आदर के साथ चाय पिलाकर माँ ने कहा था, 'देखो, मेरी कोई खास इच्छा नहीं है, मगर अली की इच्छा है कि वह सिनेमा में दाखिल हो जाये। उसके बाप के बारे में सुन चुके हो, सब कुछ जानते भी हो। एकबारगी अल्ट्रामोडर्न है, किसी चीज को नहीं मानता। कहता है, 'दुनिया के किस रास्ते में पाप नहीं है, बशर्ते पाप के मायने अपनी हानि न कर दूसरे की हानि करना है।' झूठ को वह कितनी नफरत भरी निगाह से देखता है ! यही तो, उसके डिपार्टमेंट के पाँच आदमी उसके पीछे पड़ गये। क्यों ? उन लोगों के साथ मिलकर कुछ करने को तैयार नहीं था। साहब स्नेह की दृष्टि से देखते थे, ऑनस्टी के कारण तरक्की हो रही थी। वे लोग पीछे पड़ गये। जिद्दी आदमी है। एक दिन वापस आने के बाद बोला, आइ हैव किक्ड देम आउट। नौकरी छोड़ दी। दुःख या दुर्दशा होगी—कोई परवाह नहीं। मकान बनवाया है, बेच दूँगा। छोटा-सा मकान किराये पर लेकर उसी पैसे से व्यवसाय करूँगा। बीमार पड़ गया है, उस पर भी कहता है, ठीक है। कहता है, अली ने सही लाइन का चुनाव किया है। लड़कियों के लिए सबसे अधिक शाईनिंग लाइन। वह उसी लाइन पर चलेगी। क्या करूँ, बताओ !'

बाबुल अवाक् होकर सुन रहा था। अली की माँ जैसे ही चुप हुई, उसने कहा था, 'बात तो सही है। टेल मि नॉट इन मोर्नफुल नम्बर्स—उदासी भरे स्वर में कुछ न कहें। यानी दुःखित नहीं होइये। फिल्म में आने दीजिये। उन्होंने ठीक कहा है—शाईनिंग लाइन ही है। दाखिल हो जाओ अली। अच्छा मैं चलता हूँ।'

'तुम जरा पता लगाओ। कोई अच्छी-सी फिल्म हो और हीरो
मिले तो मुझे कोई आपत्ति नहीं। समझे ? मैंने उससे कहा है कि तुम्हीं
सी फिल्म, बना डालो। लेकिन उसे यह अच्छा नहीं लग रहा है।'

'येस-येस, ओ येस, मैं बिल्कुल समझ गया। आपने राइट कहा है। ट्विंकल, ट्विंकल लिट्ल स्टार हमेशा लिट्ल स्टार ही रह जाता है, सन, मून, बृहस्पति, शुक्र नहीं हो पाता। एकबारगी हीरोइन का पार्ट ही अच्छा रहेगा। अच्छा मैं चलता हूँ। उस फिल्म में मुझे एक अच्छा-सा कॉमिक पार्ट दीजियेगा। चौधरी साहेब अच्छे हो जायें तो एक अच्छी-सी फिल्म प्रोड्यूस कर डालिए। बस, एक ही फिल्म में अलका दि न्यू मून !'

यह कहकर वह चला आया था, रुका नहीं था। सड़क के पीछे की ओर से अलका ने पुकारा था, 'सुनिये।'

'माई खुदा, तुम हो !'

'हाँ।'

अलका ने निकट आकर कहा था, 'आप तो दसियों एमेच्योर में पार्ट करते हैं। मुझे उनमें पार्ट करने का सुयोग दिला दीजिएगा ?'

बाबुल की जबान से विस्मय के आधिक्य के कारण सीधी देशी भाषा निकल आयी थी, 'तुम हम लोगों के साथ इन एमेच्योरों में पार्ट करोगी ?'

'करूँगी। नहीं तो हम लोगों की गृहस्थी चलेगी नहीं।'

'गृहस्थी नहीं चलेगी ?'

हाँ, वह सब बहुत बड़ी दास्तान है। जैसे, आज ही एक दवा खरीदनी है। इटालियन दवा। बाजार में नहीं है। डॉक्टर ने बताया, एक आदमी के पास है, लेकिन कीमत लेगा बीस रुपया। असली दाम है ढाई रुपया। बाबू जी को गठिया की नयी बीमारी ने धर दबाया है। बिलकुल पंगु जैसे हो गये हैं। डॉक्टर ने कहा है, दो इंजेक्शन देने से ठीक हो जायेगा। लेकिन पैसा कहाँ है ! यहाँ तक कि घर में बेचने लायक भी कोई चीज नहीं है। मेरे बदन पर जो कुछ भी है सब गिलट के है।'

बाबुल उसे उसी दिन एक एमेच्योर पार्टी के पास ले गया था। तीन दिन अभिनय होगा, अलका उसमें पार्ट करेगी। नाच का पार्ट था—उसके लिए डेढ़ सौ रुपया दिला दिया था। अनुग्रह का डेढ़ सौ रुपया। और अलका से कहा था 'देखो, असली पार्ट स्टेज के बाहर होता है। थोड़ी सी चूक हो जाये तो यू आर गॉन।'

अलका उसके चेहरे पर आँख गड़ाये खड़ी रही।

बाबुल बोला था, 'नॉट अण्डर स्टैण्ड ? थोड़ी-सी भी चूक हो जायेगी तो तुम गये। या तो दिस साइड या फिर दैट साइड। एक साइड में बृहस्पति है दूसरे में माटी। मानी दैट प्रोड्यूसर लम्बे बाल वाले डिरेक्टर के साथ हँसी मजाक करना पड़ेगा, मतलब यह कि रिस्क और फिश-फेवर प्ले। ठोकर मारेगा मगर

समझ रही हो ? निगल गया तो गॉन और अगर ठोकर न मारे तो रस्कल चारे पर ढेला मारकर भगायेगा। इसके बाद पार्ट नही मिलेगा।'

अलका हल्की हँसी हँसकर बोली थी, 'मालूम है।'

'मालूम है ? माई खुदा। मैंने सोचा था अनाड़ी—'

अभाव के तकाजे से परिपक्व हो गयी हूँ बाबुलदा। तुम्हें दादा ही कहा करूँगी, ठीक है न ?'

'ओ के। बट दादा कहने से आजकल लोग सन्देह करते हैं।'

'करने दो।'

'आपत्ति नही है। लेकिन दुहाई तुम्हारी, मुझे फिश मत समझना। वह मुझसे बरदाश्त नही होगा।'

उसी दिन उसे अपने साथ इधर-उधर ले गया और पार्ट दिला दिया था। अलका ने एमेच्योर में नाम भी कमाया है। लेकिन सिर छोटा रहने के कारण सिनेमा में सहूलियत न हो पायी। थोड़ी-सी मोटी भी लगती है। अब के मंजरी ऑपेरा में दाखिल होने के समय उसे भी दाखिल करा दिया है। अलका के प्रति उसके मन में एक प्रकार की ममता है। लेकिन आज अलका ने जो कुछ कहा और उसके माँ-बाप का जो कथन वह सुनकर आया, वह उसकी कल्पना के बाहर की बात थी।

अलका के किराये के मकान से उसका घर तकरीबन आधा मील दूर है। टालीगंज के इलाके में रसा रोड के दोनों किनारे दो नयी कॉलनी बन रही है। अलका पश्चिम में रहती है, बाबुल का घर पूरब मे है। सड़क सुनसान हो गयी है, उस पर ब्लैक आउट का अँधेरा। लेकिन इससे बाबुल को कोई खास डर नही लग रहा है। मुहल्ले के रास्तेपर और बरामदे पर अड्डेबाजी करने वाले उसे पहचानते हैं। नजर पड़ते ही हँस देते हैं—वह हाथ हिलाता है तो भी हँसते हैं और गुस्सा करता है तो भी हँस देते हैं। डर इसी बात का है कि किसी दिन वह अगर बेधक यंत्रणा से रोये तो उसे भी नया कॉमिक मानकर हँसते-हँसते लोट-पोट हो जायेंगे। उसके भाई लॉर्ड, मानी गोरा बाबू ने अपने नाटक में उसके पार्ट के लिए ऐसा ही एक सीन लिखा है। कामन्दक बीमार होकर पेड़ के नीचे पड़ा है और कराह रहा है। शबर-कन्याएँ जंगल में लकड़ी चुनने आयी हैं। प्यास से कातर हो वह पानी माँग रहा है। तब हाँ, अपनी ही भंगिमा में :—

मुमुर्षु मुमुर्षु अहं, जलंजलं सुशीतलं—
शीघ्र देहि ओ शबरी, नचेत मरणं ध्रुव।

शबरी कह रही है, 'तुम्हारी जात चली जायेगी ठाकुर—'

कामन्दक कहता है, बृहत काष्ठे दोषं नास्ति आतुरे नियमो नास्ति
तथापि यदि जाये—शबरोहं भविष्यामि।

अरी राक्षसी, तेरे ही घर की तब हाँड़ी छोनूँगा।'

लड़कियां हँसते-हँसते लहालोट हो जाती हैं। कहती हैं, 'ठाकुर का नखरा देखो।'

कामन्दक चिल्लाता है, 'पानी-पानी-पानी। अरे जान जा रही है।'

वे लोग ही-ही कर जोरों से हँस पड़ती है। तभी नायक गोरा बाबू प्रवेश करता है। पानी देता है। इसी वजह से राज-सखा कामन्दक नायक ब्राह्मणपुत्र का मित्र बन जाता है। ब्राह्मण कुमार राज जमाता अन्ततः राजकन्या की धर्म-परायणता और पवित्रता की निष्ठुरता से पीड़ित होकर घर छोड़ देता है। उस गन्धर्व कन्या से प्रेम कर पतित बन जाता है और अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देता है। तब भी वह उसका साथी बन कर रहता है।

पार्ट अच्छा है। गोरा बाबू ने उसकी अंग्रेजी बुकनी के मुद्रादोष या स्वभाव का गलत संस्कृत की बुकनी से भरे संलाप में बड़े ही अच्छे ढंग से इस्तेमाल किया है। जगह-जगह ज्यादती हो गयी है—झंझटं झंझटं सरवं झंझटं जगतमयं—। यह बात बाद में श्रोताओं की जबान पर नाचती रहेगी। और बात भी सही है, बिल्कुल सही।

घर जाकर कमरे का ताला खोल अन्दर घुसा। स्विच दबाने पर पता चला कि रोशनी नहीं जल रही है। बार बार कोशिश करने पर भी रोशनी नहीं जली। अब वह चिल्ला कर कहने लगा, 'रोशनी क्यों नहीं जल रही है। क्यों! रोशनी जल क्यों नहीं रही है? घर के सब लोग डेड हो गये? उत्तर नहीं देता है। अरे ओ गोपाल। गोपला रे! ओ—'

ऊपर से मँझली भाभी की आवाज सुनायी पड़ी, 'लो झंझट! इतनी रात में साँड़ की तरह चिल्ला रहा है। पूरा मकान फ्यूज हो गया है। बत्ती जले तो कैसे!'

उन लोगों से यानी दोनों भाइयों की पत्नियों से उसकी बोलचाल बन्द है। भाइयों के साथ भी यही बात है। भतीजे और भतीजियों से बातचीत होती है। वे लोग उसके भक्त हैं।

झंझटं झंझटं सारं झंझटं जगतमयं। माई खुदा, हे गॉड, ए भगवान, दियासलाई में कई तीलियाँ ही बाकी बच गयी हैं।

अँधेरे में ही टटोलते हुए बाबुल बोस लेट गया। पैतृक मकान में ऊपर-नीचे मिला कर चार कमरे हैं। उसने बाहर के कमरे को लेकर बाकी उन लोगों के लिए छोड़ दिया है। बाहर से ही दरवाजा बन्द कर निकल जाता है, उसके बाद वापस आने पर ताला खोल अन्दर घुसता है। अन्दर का दरवाजा बन्द ही रहता है। बाबुल का नल पाखाना घर के निकट की चार फीट की गली में है। सिर्फ इलेक्ट्रिक मीटर एक साथ है। इसे भी खत्म करना है। अबकी करूँगा। मंजरी [illegible] नौकरी के सात-आठ महीने हो चुके हैं। बाहर निकलेगा तो पैसा [illegible] रोजहा खुराकी मिलेगी, एक पैकेट सिगरेट मिलेगी। सिर्फ शराब [illegible] जायेगा। बिग ब्रदर है, माई लार्ड है। वे दोनों रईस आदमी हैं। [illegible] लार्ड हुनरमन्द है। नाटक—

बिग ब्रदर ने कहा था, यह नाटक एक तरह से माई लार्ड का ही जीवन है। गरीब आदमी के गुणी पुत्र थे, गुण देख कर बड़े आदमी ने दामाद बना अपने घर पर रखा था। लेकिन धनी घर की शुचिताग्रस्त लड़की का रोब बरदाश्त नहीं कर सके। भाग आये। और मंजरी के प्रेम में फंस कर मंजरी ऑपेरा खोला। यात्रा में मंजरी उस स्त्री का पार्ट करेगी। असी मंजरी का पार्ट। कोई बुरी बात नही है।

नौ

गंधर्व कन्या का प्रथम अभिनय कलकत्ते में हुआ—मंजरी ऑपेरा के पेट्रन पाकपाड़ा के राजा की हवेली के आँगन में। कुमार विमल सिंह पंडित आदमी हैं, गुणी और ममतालु। इस युग में ऐसे आदमी बहुत ही कम मिलते हैं। उसके दोनों भाई अमरेश सिंह, वृन्दावन सिंह तथा चाचा जगदीश सिंह उच्च शिक्षा प्राप्त और रसिक व्यक्ति हैं। उन लोगों की हवेली का नाट्य प्रेम और मनोरंजन बहुत दिनों से विख्यात है। उन लोगो के बेलगछिया मकान में ही पहला थियेटर हुआ था। राय के समय मुर्शिदाबाद के उन लोगों के पुराने महल में आज कई वर्षों से मंजरी ऑपेरा नियमित तौर पर अभिनय करता आ रहा है। शुरू में किसी नाटक का उद्घाटन यात्रादल वाला इसी तरह किसी बड़े आदमी के घर में करता है और अभिनय करके देख लेता है कि नाटक कैसा हुआ। मोटे तौर पर यह एक प्रकार का ड्रेस-रिहर्सल है। इतना जरूर है कि अभिनय के कुछ अंश को काटा-छाँटा जाता है—यह देखने के लिए कैसा जमेगा, लोगों को कैसा लगेगा।

खूब जमने वाला नाटक था। शुरू में ही समा बँध गया। बंशी की कारवाई से ही जम गया। गीत को उसने ऐसे स्वर मे बाँधा था कि पहले गीत से ही मजलिस में रंग छा गया। आशा स्वयं सखी दल मे उतरी थी। उसकी दूसरी ओर चौदह-पंद्रह साल की वह नयी लड़की आयी थी। नयी रहने के बावजूद उस लड़की का गला सुरीला है और नाचने लायक जिस्म भी है। अब भी वह पूरे तौर पर जवान नही हुई है लेकिन आशा ने उसे युवती बना कर ही उतारा था। और मोटे तौर पर ताल के साथ उसने पद-संचालन किया था।

लाओ लाओ रंगीन माधुरी लाओ
खींचो खींचो काजल की रेखा खींचो—

यह कह कर आँखों के निचले हिस्से मे अँगूठा और तर्जनी फिरा, चितवन से चोट करते हुए, जरा झुक कर, जरा सा रुक कर 'सजल नयन पोंछो सखि, काजल

की रेखा खींचो, विरस अधर कर सरस रंगीन माधुरी लाओ' शुरू करते ही पूरी मजलिस जैसे नाचने और थिरकने लगी। बायाँ तबले की संगत ने जैसे सबको आन्दोलित कर दिया। मजलिस के लोगों के पीछे रीतू बाबू ब्रह्ममित्र की वेश-भूषा धारण कर खड़ा था, उसकी बगल में सर्वाणी की वेश मे शोभा थी। उन लोगों को थोड़ी देर बाद ही प्रवेश करना है। ब्रह्ममित्र को इसी गीत के बाद प्रवेश करना है। उसके आगे भी दल के कई लोग खड़े हैं। योगा बाबू भी है। योगा बाबू का झमेला खत्म हो चुका है। वह फिर से दल में चला आया है। रीतू बाबू ने पैरवी कर उसका अपराध क्षमा करा दिया है। अपराध जान-सुन कर न करने पर भी योगा बाबू अपनी बेवकूफी से ऐसा कर गया था। पाँचून्दी के पास से ही वह बयाना ले आया था, लेकिन सब कुछ जानने-सुनने के बावजूद वह समझ नहीं सका कि यह काम उसने गोरा बाबू के बूढ़े दादा और उसके ससुर को चोट पहुँचाने के लिए किया है।

गोरा बाबू ने उससे पूछा था, 'आप तो जानते थे कि वहाँ आपकी ससुराल है तथा मेरा घर और ससुराल भी वहीं है।'

योगा ने तत्काल स्वीकार किया था, 'जी हाँ। जानता था, जरूर जानता था। न जानता था, यह कहना अन्याय और असत्य होगा। मैं जानता था। किसी जमाने में आपका अपनी ससुराल से झगड़ा चल रहा था, यह भी जानता था। फिर झगड़ा हो सकता है, यह भी जानता था।'

'मेरे दादा ने जो काम किया था, उसकी आपको जानकारी नहीं थी ?'

'झूठ नहीं बोलूँगा। जानता था। सुना है। हाँ, सुना है।'

'फिर ?'

'मैंने इतना कुछ नहीं सोचा था बाबू'। नहीं, मैंने नहीं सोचा था।'

'सोचा नहीं था ?'

'कैसे सोचूँगा बाबू ? मैं तो खुद यात्रावाला हूँ। यात्रा का गीत गाकर अपना भरण-पोषण करता हूँ। उन लोगों के यहाँ आता-जाता हूँ। मालिक खातिर करते हैं। मुझे अपमान का बोध नहीं होता है।'

यह कह कर उसने गोरा बाबू के पैर पकड़ लिये थे, 'दुहाई बाबू, बूढ़ा ब्राह्मण हूँ, घर पर दो-दो औरतें हैं, एकाध दर्जन लड़कियाँ। उनमें से कई वयस्क कुमारियाँ हैं, एक विधवा—'

'छोड़िये। जाइये, काम कीजिये।'

'ईश्वर आप का भला करे बाबू। मंजरी आपेरा का जय-जयकार हो नहीं, सब कहूँगा। मालिक से मंजरी ऑपेरा की बड़ाई की थी। इस पर उन्‍ था, 'दल ले आओ। अगर ला सकोगे तो तुम्हें बीस रुपया बख्शीश दूँगा।

था, जरूर लाऊँगा। समझ नहीं सका बाबू। मैं बेवकूफ गाँजाखोर ब्राह्मण हूँ न, गहरी चाल मेरी समझ में नहीं आती है।'

गोरा बाबू ने कहा था, 'ठीक है, जाइये।'

योगा ठाकुर शोभा का नाम पुकारते-पुकारते चला आया था, 'शोभा दी, मेरी जीत और तुम्हारी हार।'

रीतू बाबू योगा ठाकुर को ले आया था। उसने कहा, 'अन्याय किया दयामय। क्षमा करना उचित नहीं था। उसने रुपया लिया था। अगर मैं जानता होता तो उसे ले आता ?'

'उससे अधिक मेरा अन्याय है मास्टर साहब। मुझे बयाना नहीं लेना चाहिए था। लेकिन मेरे ससुर का इससे अपमान होगा इसके लिए, तथा मंजरी से जो शादी की है और यात्रा करता हूँ—इसके लिए अपने को दोषी नहीं मानता हूँ। यही सब देखने के लिए मैंने बयाना लिया था। मैंने मास्टर साहब, यही सोचा था। लेकिन यह नहीं सोचा था कि इसकी चोट से दादा की मृत्यु हो जायेगी। तब हाँ, मेरे लिए सांत्वना की बात यह है कि मैंने मंजरी को अपमानित नहीं किया है।'

जरा चुप रहने के बाद कहा था, 'योगा बाबू को मैं स्वयं ही बुला भेजता। आप ले आये, यह अच्छा हुआ। बेवकूफ आदमी है, लेकिन है सीधा। समझ नहीं सका था। उसकी कैफियत पर मुझे सोलहो आना विश्वास है।'

योगा बाबू दर्शकों के ठीक पीछे लोगों के सामने खड़ा होकर तारीफ कर रहा था, 'वाह बेटे, वाह ! पट्ठा स्वर के खेल में खासा अच्छा मँजा हुआ है।'

पट्ठा यानी वंसी। इन बातों की रौ में साथियों की देह की थिरकन के साथ उसकी देह की थिरकन भी एकाकार हो रही है। बड़ा ही भद्दा लग रहा है, इसका उसे ख्याल नहीं है।

रीतू बाबू के हाथ की सिगरेट जल रही है, जल रही है।

शोभा बगल में खड़ी हो धीमे स्वर में कह रही है, 'मेरे पाँव थिरक रहे हैं मास्टर।'

रीतू बाबू ने भलमनसाहत की खातिर कहा, 'हूँ।'

'चलो न, इसके बाद हम दोनों डुयेट नाच नाचते-नाचते प्रवेश करें।'

रीतू बाबू का मुँह एकाएक बिगड़ गया। उसने गरदन घुमा कर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा और कहा, 'चुप रहो।'

शोभा सकते में आ गयी। उसे लगा, रीतू बाबू ने उसके चेहरे पर जैसे एक थप्पड़ जमा दिया है। वह चुप हो गयी। यहाँ रोशनी मद्धिम है वरना दिखायी पड़ता कि शोभा के मुखड़े के पेन्ट का सफेद रंग ज्यादा गाढ़ा हो गया है।

गीत समाप्त होते ही रीतू बाबू ने प्रवेश किया, 'राजा ब्रह्ममित्र, गाना बन्द करो, बन्द करो गाना। बन्द करो उत्सव-विलास।'

रोबीले गले का आवेग पूर्ण स्वर गूंज उठा। मजलिस का परिवेश सुन्दर है। प्रशस्त प्रांगण के चारों ओर गोल खम्भों का घेरा है। बरामदे के पूरब महिलाओं की मजलिस है और दूसरी ओर दोनों तरफ विशिष्ट दर्शकगण कुर्सी पर विराजमान हैं। प्रांगण के बीच सफेद फर्श। चारों तरफ दूधिया रोशनी। ऊपरी हिस्सा करीने से ढँका हुआ है—इसलिए कि ब्लैक आउट में जरा भी रोशनी बाहर न जा सके। रीतू बाबू को प्रथम संलाप में ही हाथों की तालियां मिली। उसके बाद शोभा आयी—महारानी सर्वाणी के वेश में और उसके साथ मंजरी। वह राजकन्या शुचि का अभिनय कर रही है। शान्त धीर स्वर में मंजरी अपने पिता की प्रसारित बाहु-सीमा से छिटक कर बोली :

क्षमा करो पिता, देवकार्य में रत मैं
हाथ में मेरे पूजा-उपचार

बाधा देकर सर्वाणी ने कहा, 'शुचि-शुचि ! पिता को प्रणाम करो।'

ब्रह्ममित्र बोले :

नहीं-नहीं रानी। गन्धर्व-निकेतन से
प्रत्यागत मेरी देह में, मन में है पाप ग्लानि—

शुचि ने बाधा देते हुए कहा :

फिर भी नहीं है बाधा मेरे लिए। मैं हूँ कन्या, आप पिता।
किन्तु पिता, नगर में प्रवेश कर किसी का प्रणाम और भक्ति
स्वीकारने के पूर्व आप स्वयं भक्तिपूर्ण प्रणाम
निवेदित करें आकर गृह-देवता के चरणों में।
गंगा-वारि है प्रस्तुत आपके स्नान के निमित्त
कीजिये स्नान, धारण कीजिये पट्टवस्त्र, खोलिये मुक्ताहार—
कृतांजलि पुट से आप के द्वारा ही स्थापित
देवता के चरणों में प्रणाम निवेदित कर स्वीकारिये
उनका आशीर्वाद। उसके पश्चात्
खड़े होइये आकर राजासन पदपीठ पर, प्रणत हो
जिससे कि धन्य हों हम सब लोग।

चारों तरफ से आवाज आयी, 'वाह्-वाह, बहुत अच्छा।'
स्वयं गृहस्वामी ने ही सबसे पहले साधुवाद दिया।

दूसरी ओर नेपथ्यशाला में गोरा बाबू ठगा-सा खड़ा था और स्वयं को तैयार कर रहा था। अब उसे प्रवेश करना है। नाटू बाबू वसुमित्र की भूमिका में उतर रहा है, बाबुल कामन्दक की भूमिका में। नाटू बाबू अपने पार्ट के बारे में सोच रहा लेकिन बाबुल को यह सब चिन्ता नहीं है। वह बाहर खड़ा होकर देख रहा

लौटकर आया और कान से टार्च लगा कर कहने लगा, 'हैलो, हैलो। जल्दी से फायर ब्रिग्रेड भेजिए। मेक हेस्ट! फायर! कहाँ? हम लोगों के नाटक—हाँ गन्धर्व कन्या—एकदम से फायर! फायर ब्रिगेड न रहे तो किसी को मेघ-मल्लार गाने कीजिये। येस-येस-येस - *गन्धर्व कन्या फायर! हाँ, राम फायर!*'

सचमुच अभिनय खूब जम रहा था। वंसी के द्वारा प्रस्तुत गीत, नाच उसके आस्वाद और गन्ध ने सौन्दर्य को चमका दिया था। सबों के बीच सिर्फ अलका ही नर्वस हो गयी है। उसका गला सूख रहा है और वह रह-रह कर पानी पी रही है। वही हीरोइन है, गन्धर्व-कन्या मालविका। शोभा उदास है। गोपाली से उसकी एक झड़प हो चुकी है। मंजरी बेहद गम्भीर है, लगता है उसके पार्ट की छाया उस पर पड़ी हो जैसे। राजकुमारी शुचि विवाह की रात में जयन्त से कोहबर में कह रही है:

जीवन में चाहा था श्रेष्ठ पुरुष को—नारायण-अवतार
राम के समान परम पुरुष को। पिता मेरे तुम्हें लाकर
बोले, तुम हो उनके प्रतिनिधि। नारायण को बना साक्षी
तुम्हे प्रणाम कर देह-मन सौंप दिया थामकर तुम्हारा हाथ।
धर्मपथ पुण्यपथ मे मिलेंगे एक दिन साक्षात्
लक्ष्मी नारायण के साथ। तुम हो मेरे साक्षात् देवता
स्वीकारो मेरा प्रणाम।

जयन्त उसके मुखड़े की ओर स्थिर दृष्टि से ताकता रहा।

शुचि बोली: हृदय को हृदय से नहीं—तुम्हारे चरणों के तले किया है अर्पित।

जयन्त बोला: नही।
—नहीं? शुचि नही है मिथ्याभाषिणी।
—मिथ्याभाषिणी नहीं। सत्य को उसने समझा है नही।
—सत्य को नही समझा है शुचि ने?
—नहीं। तुम्हारी बात है प्रमाण उसका।
हृदय होता है वाक्य का उत्स देवी।
हृदय अर्पित किया है तुमने धर्म के चरणों पर।
मैं धर्म नही हूँ।
—स्वामी, क्या कह रहे हो तुम?

—सत्य बात कह रहा हूँ देवी। मैं नही हूँ धर्म।
सामान्य मानव हूँ मैं। जयन्त मेरा नाम।
धर्म के होते हैं नियम, वह नियम को तोड़ता नही, मरोड़ता नही
नियत बन्धन-पीडा, मुझे करती है पीड़ित
मैं सब कुछ तोड़-फोड़ कर चाहता हूँ मुक्ति।
धर्म के प्रति नही है तृष्णा—मेरी तृष्णा है अशेष

जयन्त खोजता चलता है सुख । दुःख से
परितृप्त रहता है धर्म—सुप्त रहता है निद्रानिमग्न । धर्म मेरा है
किन्तु मैं उसे गढ़ लेता हूँ ।

शुचि अब भौंचक सी उसके चेहरे की ओर देखने लगी ।

जयन्त बोला :

कहो देवी, जो माला पहनायी है तुमने गले में
लौटा दूँ; इस निस्तब्ध निशीथ-प्रहर मे—
सबकी आँखों से दूर चला जाऊँ मैं
और तुम जाओ अपने पथ पर । अपनी तपस्या
पूर्ण करो तुम । नारायण को प्राप्त करो ।

शुचि ने आगे बढ कर हाथ पकड़ लिया और कहा :

मेरी तपस्या कहती है
तुम्हें ही बनना है सनातन धर्म का प्रतिभू ।
तुम्हे छोड़ूँगी नही । आज से
यही होगी तपस्या मेरी ।

तालियों की तड़तड़ाहट से मजलिस गूंज उठी ।

लेकिन मंजरी लौट आयी । उसके चेहरे पर हँसी नही है, उसका चेहरा बुझा-बुझा सा है ।

अलका गंधर्व-कन्या मालविका है, कुसुमिका उसकी माँ जिसने कि राजा ब्रह्ममित्र से गंधर्व मतानुसार विवाह किया है । इस भूमिका में गोपालीवाला उतरी थी । दल के सभी लोगों की धारणा थी कि छोटा सिर और हृष्ट-पुष्ट शरीर के कारण अलका को यह पार्ट शोभा नहीं देगा, विशेषकर गोरा बाबू जैसे लंबे-चौड़े शरीर-वाले नायक की तुलना में नायिका बेमेल जैसी लगेगी । रिहर्सल में उसने पार्ट कोई बुरा नही किया था और नयी लड़की रहने के कारण गोरा बाबू ने रीतू बाबू और मंजरी से सलाह-मशविरा कर उसका पार्ट छोटा कर दिया था । लेकिन मजलिस में में उल्टी ही बात हुई । अलका मेकअप की कला जानती है, उसने जूड़ा बाँधने के तौर-तरीके में थोड़ा-सा परिवर्तन कर एक ऐसा जूड़ा तैयार किया जिससे कि वह अधिक बौनी नही लगती थी और अपना लिबास उसने इस तरह चुस्त पहन रखा था कि वह छरहरी जैसी ही लग रही थी । मगर उसने एक गलती भी की थी । अपने पार्ट से ताल-मेल बिठाते हुए उसने जो साज-सज्जा की थी उसमें चमक-दमक नहीं थी । चमक-दमक न रहने के कारण वह म्लान जैसी लग रही थी । उसके बाद पार्ट के समय बुझी-बुझी जैसी हो गयी । पार्ट था शान्त स्निग्ध पून जैसी कोमल एक सद्य युवती का ।

देव-परिचर्या करने के लिए जाने पर कुसुमिका गंधर्व-कन्या की नजर देव अंशोद्भुत मानववंश के वीर्यवान राजा ब्रह्ममित्र पर पड़ी थी। और एक दूसरे के प्रेम से मुग्ध होकर उन्होंने विवाह कर लिया था। देवताओं की साजिश की वजह से ब्रह्ममित्र कुसुमिका को विश्वासघातिनी मान देवलोक गंधर्वलोक त्याग कर अपने राज्य में लौट आये हैं। लेकिन कुसुमिका विश्वासघातिनी नहीं है, उसने ब्रह्ममित्र को अपराधी नहीं माना है। अपनी नियति को इसके लिए जिम्मेदार ठहराकर कन्या को लेकर जीवन की तपस्या कर रही है। देवताओं के अजस्र प्रसाद के प्रलोभन की उपेक्षाकर नारायण-मन्दिर में नारायण-महिमा का कीर्तन गाती हुई जीवन जी रही है। कन्या को भी उसने उसी व्रत की दीक्षा दे रखी है। वह रात में नारायण मन्दिर जाती है और आरती-नृत्य करती है। उसकी आँखों में सपना है कि नारायण दर्शन देंगे। चाँदनी से आलोकित मन्दिर-प्रांगण में आरती के लिए पंचप्रदीप थामे उसका यह प्रथम आगमन है। आरती नृत्य करने के बाद वह नतजानु हो गीत के माध्यम से प्रार्थना करती है—

पूर्ण करो, पूर्ण करो —पुण्य करो, पुण्य तुम पुण्यमय—।

नृत्य उसने अच्छा ही किया। गीत धीरे-धीरे मलीन होने लगा। गीत अच्छा नहीं रहा। उसके गले का स्वर साधारण है, उस पर वह स्वर को ऊपर उठा नहीं सकी। जमे-जमाये अभिनय की मजलिस में प्रवेश किया था। शुरू में नाच था। उसके बाद गीत। वह यह बात भूल नहीं सकी कि उसका स्वर मंजरी जैसा अच्छा नहीं है। ठीक एक ही दृश्य पहले मंजरी गीत गाकर एनकोर पा चुकी है। लोगों ने शुरू में सोचा था कि स्वर आहिस्ता-आहिस्ता ऊपर उठेगा। लेकिन कुछ देर बाद ही 'लाउडर —सुन नहीं पा रहा हूँ'—शोरगुल मचते ही वह चंचल हो उठी, स्वर ऊपर उठाने की चेष्टा में उसका स्वर बेसुरा हो गया। बहरहाल गाना खत्म होते ही माँ कुसुमिका ने प्रवेश किया और उसे उसकी जन्म-कथा का वृत्तांत बताया। इसके अलावा अपने व्रत के सम्बन्ध में बताया। बोली :

मालविका, गंधर्व के कुल में जन्म—देवतालोक की हम हैं
विलास-सामग्री। विधाता का आदेश—
कि इसी के लिए सृष्टि हुई है हमारी - कोई पाप हमें नहीं छूता।
फिर भी, फिर भी चित्त लोक में नारी-मन करता हाहाकार
स्वामी-पुत्र और गृह के लिए। मन चाहता है तुलसी के चौरे पर
दीप जलाकर करूँ प्रतीक्षा
स्वामी-देवता के हित। सहसा साध मिटी। एक दिन
देवलोक में समादृत नर श्रेष्ठ महाराज ब्रह्ममित्र के—
साथ हुई भेंट। दिव्य कान्ति वीरवपु—
मनुष्य के चित्त लोक में रुदन-हास,
सुख-दुख—बादल धूप के खेल सम विचित्र

नयनों में प्रेम-दृष्टि, आकांक्षा की मणि-दीप-शिखा।
उनका मैंने किया वरण।—मुझसे गंधर्व-विधान से
विवाह कर बसाया उन्होंने घर।
तू उसी का है परिणाम। आधी गंधर्व आधी मानवी है तू।
इसीलिए तेरे मनोलोक में सतीत्व की साधना-पिपासा
गंभीर अन्तस्थल में होती है प्रवाहित—पाताल की
गंगाधारा भोगवती के समान।

मालविका चिहुँक उठती है, 'माता! सच है यह? मानव की कन्या मैं सचमुच ही मानवी। मेरे पिता का नाम ब्रह्ममित्र राजा?'

थोड़ी देर गुमसुम रहने के बाद कहती है, 'इसीलिए, इसीलिए।'

कुसुमिका पूछती है: 'इसीलिए क्या मालविका?'

इसीलिए देवता मुझे लगते नहीं अच्छे। वेदना नहीं है उनमें
माता, आनन्द-स्पर्श से वेदना-स्पर्श मुझे
मधुर मधुरतर लगता। इसीलिए माता मेरे नयनों के जल में
लवणयुक्त है स्वाद। तुम्हारे जैसा स्वादहीन जल-बिन्दु नहीं।
मैं हूँ मानवी।

कुसुमिका: हाँ मालविका, मानव-श्रेष्ठ की कन्या तुम मानवी।

मालविका एक क्षण तक खामोश रह कर सोचती है और फिर कहती है:

इसीलिए माँ, इसीलिए माँ।
इसीलिए मेरा स्वर्ग शिला से गढ़ा हुआ विग्रह यह—
नारायण की मूर्ति यह भी जैसे—

—चुप रहो मालविका, चुप रहो।

मालविका धीरे-धीरे कहती है:

यह भी मेरे मन को नहीं सुहाती। इसी के युग चरणों पर
अर्पित करना चाहती देह-मन-प्राण। किन्तु देने को जाने पर भी
आती हूँ मैं लौट। कह आती हूँ, क्षमा मुझे कर दो तुम—
भय लगता है, हाँ भय बहुत, दे नहीं सकी मैं।
जाती हूँ लौट। इसीलिए माँ, इसीलिए
मन मेरा, दृष्टि मेरी यह जितनी जाती है ऊर्ध्वलोक को—
तृप्ति प्राप्त करती जितनी मैं आलोक-धार में करने में स्नान—
उतनी ही देखती कृष्ण रूप धारण कर मेरी काया
पदतल में वसुधा के वक्षस्थल में चिपकी है।
इसीलिए माँ, इसीलिए।

कुसुमिका कहती है: इसीलिए!

मालविका कहती है :

इसीलिए माता मन की कल्पना में जगती है
किसी एक अनजाने की छवि, मुख पर जिसके आधा प्रकाश
आधी छाया खेल रही है मेघ-धूप सम। वक्षस्थल के जिसके
तट-प्रदेश मे आनन्द उमंगों की लहरें खाती पछाड़
कल-कल शब्दों में—और अन्तस्थल में गहरी
वेदना रुदन करती है म्लान कलरव मे।
जिसकी काया की छाया होकर घनी घेरती मुझे
कर देती अवलुप्त कृष्ण जलधि के तल-प्रदेश में
सपनों से आवेष्टित नगरी में प्रवाल की।

कुसुमिका कहती है :

उसी का स्वप्न साधना तुम्हारी कन्या—नर श्रेष्ठ
ब्रह्ममित्र की तुम हो तनुजा। करो तपस्या उसकी ही। इसीलिए
लायी हूँ गैरिक वसन। दीक्षा के साथ दे रही यह वसन—
तपस्या सार्थक करो तपस्या अपनी।

कुसुमिका गैरिक वस्त्र देती है, मालविका उसे उत्तरीय की तरह अपने अंगों पर धारण कर लेती है और कहती है, 'आशीर्वाद दो।'

'आशीर्वाद !'

इतनी अच्छी-अच्छी बातें वह कह गयी लेकिन जोर और आवेग के साथ नहीं कह सकी। वेश-मन्दिर मे लौटने के बाद किसी ने भी उत्साह के साथ उसका स्वागत नहीं किया। बाबुल बोला, 'मैटर क्या है ? बिलकुल डैम्प मार गया !'

रीतू बाबू बोला, 'ठीक है, दूसरे सीन से जोर से आवाज को ऊपर उठाते हुए बोलो। लोगों को सुनाने आयी हो, सुनाना ही सबसे बढ़ कर चीज है। आवाज ऊपर उठाओ।'

गोरा बाबू बोला, 'बोली हो तुम ठीक ही। वह पार्ट चिल्लाने का पार्ट नहीं है। उस दृष्टि से ठीक ही हुआ है। जरा और थोड़ी लाइफ देनी है। समझ रही हो न ?'

अलका अपनी जगह पर चुपचाप बैठी रही। उसके हाथ-पाँव से पसीना छूट रहा है।

अलका से अब बरदाश्त नहीं हुआ। वह जैसे बिलकुल बुझ-सी गयी है। आखिरी दृश्य जो मालविका एवं जयन्त के मिलन का दृश्य था—उसमें पूरा नाटक जैसे एकदम से मुँह के बल गिर पड़ा। गोरा बाबू को लोग सम्मान की दृष्टि से देखते हैं मगर किसी ने आवाज कसी - 'धत्त।'

गोरा बाबू चेहरे पर चिन्ता लिए लौट आया। अलका ग्रीन-रूम में रोनी सी सूरत ले कर आयी और अपने बक्से पर गरदन झुका कर बैठ गयी। किसी ने कहा,

'देखो नखरा।' उसकी आँखों से टप-टप कर आँसू की बूँदें टपकने लगी। थोड़ी दूर पर मंजरी भी सिर पर हाथ रख कर बैठ गयी।

रीतू बाबू बोला, 'नही हो सका मालिक। अन्त न केवल भीगा रहा, बल्कि बिलकुल डूब गया।'

नाटू बाबू ने कहा, 'हीरोइन बदल दीजिये सर।'

धाबुल ने कहा, 'रबिश। मैं ही रेसपॉनसिबल हूँ सर। लेकिन ऐसा होता नही है। पार्ट तो अच्छा ही करती है।'

गोरा बाबू खामोशी ओढे बैठा रहा।

शोभा ने एक भी शब्द न कहा। रीतू बाबू ने जब से फटकारा है, तब से वह खामोश ही है। लेकिन पार्ट अच्छा ही किया है।

एकाएक मंजरी ने पुकारा, 'गोपाल मामा!'

मैनेजर गोपाल बाहर बरामदे पर बस के इन्तजार में चुपचाप चहल-कदमी कर रहा था। सारा सरो-सामान बटोरना है। रात के बारह बज रहे हैं। पहली रात के अभिनय में तीन घण्टे की जगह साढे चार घण्टे लग गये है। उस पर अभिनय खराब हो जाने के कारण उसका मूड बिगड़ा हुआ है। मंजरी की पुकार सुन वह उसके पास आ कर खड़ा हो गया। मंजरी बोली, 'सुनिये।'

जरा अलग हट कर मंजरी बोली, कौन अच्छी मिल सकती है, बताइये तो। नयी नही चाहिए, पुरानी होनी चाहिए—मानी मँजी हुई ऐक्ट्रेस।'

'देखूँगा। कुमारी नायिका की बात है। वरना अभाव ही क्या है? यही तो स्टार की हरिमती है, संध्या है—'

गोरा बाबू आकर खड़ा हुआ। बोला, 'कुमार साहब बुला रहे हैं। उन्हें ऊपर जाना है। बुलावा भेजा है कि मुलाकात कर के जाइएगा।'

मंजरी उठ कर खड़ी हुई। बातें बाद में होंगी। पश्चिम तरफ के बरामदे पर उन लोगों का ड्राइंग रूम है। खासा लम्बा हाल। अन्दर पुराने जमाने का कीमती असबाब। जैसी लकड़ी है, वैसे ही पालिश, वैसी ही वजनदार और आकार भी वैसा ही विचित्र। उस विशाल कमरे मे कम से कम पचास-साठ आदमी बैठ सकते हैं। उसी के बीच वे लोग चार व्यक्ति बैठे हैं। तीन भाई और ताऊ कुमार जगदीश सिंह। सोने जैसा देह का रंग, वैसा ही सौम्य मधुर चेहरा। बैठकर बातचीत कर रहे थे, हँस-बोल रहे थे। गोरा बाबू और मंजरी कमरे के अन्दर जाकर नमस्कार करें कि इसके पहले ही नमस्कार करते हुए बोले, 'आइये। आप लोगों के बारे में ही बातचीत चल रही थी। आप ने बड़ा ही अच्छा किया है साहब—संसारं संसारं सारं संसारं जगतमयं, घाटं मैदानं हाटं गृहं संसारं नास्ति कुत्रोवा। संसारं दिवसे रात्रे चापि; मरणे मृत्युलोके च संसारस्य आस्फालनं। बहुत ही अच्छा हुआ है

एक आदमी ने कहा, 'उसने पार्ट भी किया है खासा अच्छा। है। बैठिये।'

बडे कुमार ने कहा, 'मंजरी देवी का पार्ट बहुत बढ़िया हुआ है। आपके बारे नही कहूँगा, क्योंकि आप स्वयं नाटककार हैं।'

कुमार जगदीश ने कहा, 'तब हाँ, जनाब, अन्तिम दृश्य अच्छा नही हो पाया।'

गोरा बाबू ने कहा, 'जी हाँ। अन्तिम दृश्य मार खा गया। हम लोग सोच रहे हैं।'

मंजरी ने मद्धिम स्वर में कहा, 'हीरोइन फेल करने से मार तो खायेगा ही।'

'उहूँ।' गोरा बाबू ने कहा, 'हीरोइन फेल हो गयी है, यह सच है। मगर—'

बडे कुमार ने हँस कर कहा, 'हाँ, कुछ और 'मगर' है। उसी को कहने के लिए बुला भेजा है। यानी यथार्थ जीवन मे चाहे जो भी घटित हो मगर नाटक का यथार्थ वह नही है। घटना यह है कि उसने शुचि जैसी धर्मपरायणा स्त्री को छोड़ दिया है। वह नायिका चाहे जितनी ही रोमान्टिक क्यों न हो, उससे मिलन होना लोगो के लिए आपत्तिजनक होगा। अन्ततः इस देश में। शुचि को केवल दुष्ट बनाइये, इसी से काम चल जायेगा। सूरज चाहे गर्मियों का ही क्यों न हो, उसे अस्त होना पड़ेगा; चाहे पूर्णिमा क्यों न हो फिर भी रात ही कहलायेगी। रात आदमी के लिए नही है, वह उसके लिए आँख बन्द कर सोने का समय है।'

कौतुक के साथ हँसते हुए बोले, 'पूर्णिमा की रात में भी भूत बाहर निकलते हैं और लोगों को दिखायी पडते हैं। इसलिए मेरा कहना है कि शुचि को आग बनाइये तभी चलेगा।'

एक व्यक्ति ने कहा, 'तो फिर यह लड़की पानी होगी?'

'उहूँ, 'तुलसी चौरे का प्रदीप!' इतना कह कर बोले, 'एक काम कर सकते हैं। पौराणिक नाटक मे सुविधा हो तो अन्तिम दृश्य में नारायण को शुचि का हाथ थामे हुए ले आइये। आकर कहे, झगडा किस बात का है? शुचि जो है वही मालविका है। वे दोनों मिल कर सम्पूर्ण बनते हैं। धर्म-कामना, पुण्य और जीवन-कामना-प्रेम—ये दो मिलते हैं तो नारी सम्पूर्ण होती है। लक्ष्मी और राधा। समझे न? मालविका शुचि में समाहित हो जाये। देखिएगा, लोग इसे कैसा लेते हैं। मैंने मज़ाक नही किया है, सोच कर देखिएगा।'

एक भाई ने कहा, 'तुमने मजाक नही किया है, लेकिन आदमी की बेवक़ूफ़ी का फायदा उठाना बहुत बड़ा मजाक है। आपका ड्रामा जनाब, पौराणिक होने के बावजूद बड़ा ही मॉडर्न है। साहस है तो चलाइये, वरना ड्रॉप कर दीजिये।'

अचानक सब कुछ जैसे कठोर हो गया, सरसता जैसे ऊब गयी और समस्या, समस्या के कारण बातचीत की मजलिस—सब कुछ गम्भीर होकर पेशानी पर बल लिए सामने खड़ी हो गयी।

बड़े कुमार ने कहा, 'आप लोगों को दक्षिणा के तौर पर कुछ देने को मैंने मैनेजर साहब से कह दिया है। अच्छा, तो आज फिर चलता हूँ।'

मंजरी ने उनके पैरों को छूकर प्रणाम किया। गोरा बाबू नमस्कार कर बाहर निकल आया। बाहर दरवाजे के पास गोपाल, योगा बाबू, बंसी, मणि बाबू वगैरह इकट्ठे हो कर बातचीत सुन रहे थे।

मंजरी ने गोरा बाबू से कहा, 'जरा आगे चलो।'

चलते-चलते बोली, 'नाटक जैसा है वैसा ही रहेगा। मालविका का पार्ट मैं करूँगी। शुचि के पार्ट के लिए किसी दूसरे की तलाश करो।'

'तुम मालविका का पार्ट करोगी?'

'हाँ।'

'मगर शुचि का पार्ट तुम्हें करना है—'

यह कहकर योगा बाबू चुप हो गया।

बात काटते हुए मंजरी बोली, 'लेकिन मालविका तो मैं बनूँगी।'

'तो फिर शुचि को आग हो बना देता हूँ।'

'नहीं। उसके प्रति अन्याय क्यों करोगे? उसने तो सचमुच ही धर्म के लिए इतना किया है।'

'वह तो गलत धर्म है।'

'सच भी तुमने नहीं कहा है। जैसा है वैसा ही रहेगा। इसके अलावा नाटक में अभी फेर-बदल करोगे तो बदनामी होगी। दूसरे-दूसरे दल मजाक उड़ायेंगे। पार्ट बदल कर पूजा के पहले एक दिन और प्ले कर लो। दल के बारे में सोचो।'

दस

मंजरी ने सही कहा था। यह बात यात्रा दल के लिए नितान्त सही है। सिर्फ यात्रा ही क्यों, थियेटर फिल्म वगैरह में भी यह बात लागू होती है। जिस नाटक को अभिनय के बाद बदलना पड़ता है उसकी बदनामी फैल जाती है। जिस फिल्म में सेंसर की कैंची नहीं चलती है उसकी बड़ाई होती है। माना थियेटर में यद्यपि थोड़ा बहुत हेर-फेर और कुछ काट-छाँट होती है लेकिन उससे ज्यादा हो तो दूसरा दल मुसकरा कर कहता है: नये सिरे से तैयारी करनी पड़ी है। दल के साधारण आसामी या ऐक्टर भी हताश हो जाते हैं। वे लोग भी इस सम्बन्ध में आपस में बातचीत करते हैं। यही नहीं, किसी भी दल के—सब हाँ, बड़े दल के—कुछ, नये नाटक के प्रथम अभिनय की रात आते हैं और चुपचाप देख कर

लोग लौट कर पूरे वृत्तान्त को प्रस्तुत करते हैं। पाकपाड़ा की मजलिस में तीन-चार बड़े दलों के जासूस आये थे और नाटक देख गये थे। इन लोगो ने कई दिनों के दरमियान बाजार में प्रचारित कर दिया है कि अप्सरा कन्या नही, आसमान से गिरी हुई कन्या है—आखिरी सीन मे ताड़ की फुनगी से कन्या धम् से जमीन पर गिर पड़ी है और उसकी गरदन टूट गयी है।'

गोपाल मैनेजर ने आ कर यह बात बतायी। बोला, 'योगा मास्टर शा कंपनी के युवक गायक देबू से बुरी तरह पेश आया है। आखिर में मारने के लिए तैयार हो गया था। देबू ने उसे ठेल दिया। योगा मास्टर गिर पड़ा और उसके घुटने का चमड़ा छिल गया है। मैंने उसे फटकारा। वह टूटा पैर लिए ही तड़प रहा है।'

गोरा बाबू अखबार पढ़ रहा था। सारा कुछ लड़ाई का ही समाचार आज का समाचार है, योरोप में जर्मनी हार रहा है। वह जीत के लिए लंदन-इंगलैण्ड में बम बरसा रहा है। दूसरा कोई समाचार नही मिल रहा है। गोरा बाबू का मूड बिगड़ गया है। गोरा बाबू को राजनीति के प्रति बहुत अधिक रुचि है। तब हाँ, सैकड़े मे सत्तर आदमी यही चाहते हैं कि अंग्रेजों की हार हो। इसीलिए जर्मनी हारता है तो उसका मूड खराब हो जाता है। इस पर पूरबी सीमा पर नेता जी के आविर्भाव और आजाद हिन्द सेना के गठन के समाचार से मन और अधिक धुरी शक्ति के प्रति खिंच गया है। योरोप मे रूस से जर्मनी ने मुंह की खायी है। रूसियों ने जम कर लड़ाई की है। जर्मनी को हटना पड़ा है। रोमेल गोरा बाबू का प्रिय जेनरल है। रीतू बाबू कहता है : वह शेर का बच्चा है। रोमेल का समाचार नही मिल रहा है। वहाँ भी कुछ दिनों से ये लोग जीत रहे हैं।

पन्ना उलट दिया। दूसरे-तीसरे पृष्ठ में विज्ञापन और सभा-समिति, कानून-अदालत की खबरें हैं। कानून-अदालत के समाचार को एक बार सरसरी निगाह से देख लिया। वहाँ भी कुछ नही है। पाकेटमार को जेल की सजा, बैंक में धोखाधड़ी, नकली चेक से रुपया निकालने के लिए जाने पर रंगे हाथों गिरफ्तार—

चौथे और पाँचवें पृष्ठ में देश की खबरें। खबर का मतलब, देश का दुःख—अनाज का अभाव, वस्त्र का अभाव, महामारी का प्रादुर्भाव। घर के दरवाजे पर चौबीस परगना के दक्षिण अंचल के चार-पाँच आदमी डेरा डाले हुए हैं। फुटपाथ पर सोते हैं। इसके अलावा जेल में कैद नेताओं की खबर। जिन्ना साहब बम्बई में बैठे-बैठे चिल्ला रहे हैं और बंगाल में नाजीमुद्दीन, सुहारवर्दी, फजलुल हक़।

मंजरी ने कहा, 'सुना, गोपाल मामा क्या कहते हैं ?'

'गोपाल बाबू कब आये ?'

'यही थोड़ी देर पहले। तुम्हारे सामने से होकर हो गये। तुम अखबार में डूबे हुए थे। बिना कुछ बोले मेरे पास चले आये थे।'

'ओह! मैंने पैरों की आहट तो सुनी थी। सोचा शिवना होगा। उन्होंने क्या कहा ?'

गोरा बाबू शिवनन्दन को कभी-कभी शिवना कहता है। मंजरी ने बचपन में उसका यही नाम रखा था। पूरा नाम मुँह से नहीं निकलता था, कहती थी शिवना।

मंजरी बोली, 'अपने कान से सुन लो। अखबार रख दो। अखबार में तो बस लड़ाई की ही खबरें हैं, हारजीत होती तो कोई बात थी।'

गोरा बाबू हँसता हुआ बोला, 'यह क्या यात्रा का दल है कि पाँच मिनट तलवार घुमाते ही एक आदमी गिर जाये और लड़ाई खतम। तब हाँ, लगता है कि अब कोई न कोई फैसला हो जायेगा।'

'बाप रे, तब तो जान बचे। इस ब्लैक आउट से मुक्ति मिले।' यह कह कर उसने पुकारा, 'गोपाल मामा !'

गोपाल आकर खड़ा हुआ और बेरोक-टोक कह गया, 'नाटक में कोई फेर-बदल नहीं होगा बाबू। नहीं तो मान-सम्मान नहीं बचेगा।'

'क्या हुआ ?'

जो कुछ घटित हुआ था, कह कर गोपाल बोला, 'योगा बाबू का घुटना सूज कर ला—ल हो गया है। हम लोगों के छोकरों का कहना है कि वे देबू बाबू को पीटेंगे। वह हम लोगों के घर के पीछे के झोंपड़े में आता-जाता है। कल ही पिटाई करते, लेकिन रीतू बाबू ने मना कर दिया।'

'मैंने क्या किया ? मेरा नाम लिया जा रहा है।'

सीढ़ी से मास्टर साहब की आवाज आयी। लेकिन उनके पैरों की आहट से पता चला कि कुछ और भी आदमी हैं। गोरा बाबू ने पुकारा, 'आइये मास्टर साहब।'

मंजरी ने सिर का घूंघट जरा नीचे खींच लिया। गोपाल मुसकरा कर सीढ़ी की ओर मुँह किये इन्तजार में खड़ा रहा। मास्टर साहब के पीछे बाबुल बोस है। गोपाल घोष की नजर उसकी छाती तक ही पड़ी होगी कि वह बोला, 'कल के उसी काण्ड के बारे में बता रहा था मास्टर साहब।'

रीतू बाबू हँस कर बोला, 'छोकरे मुझ पर बिगड़ गये हैं। मेरी बात ठीक से उनकी समझ में नहीं आयी। समझ रहे हैं न देवता, आदमी का रस योग कम हो गया है। मैंने कहा, मारना है तो कहीं दूसरी जगह मारो भैया—बल्कि युद्ध करके मारो। इस हालत में मारना मना है। वह तो एक चिड़िया है।'

गोरा बाबू हँसने लगा। मंजरी मुसकरा दी और अपना मुँह घुमा लिया। बाबुल बोस यानी बाबुल बोला, 'बट दैट बूढ़े का 'नी' एकदम से लखनऊ का मेलन —यानी तरबूज हो गया है, माइ लार्ड। लगता है 'रायट' करेगा। बदन में 'फीवर' है। कलकत्ते की सड़क पर पड़ा हुआ है। कोई इन्तजाम कर दीजिए। बिग ब्रदर किसी महलम के बारे में कह आये हैं।'

रीतू बाबू ने कहा, 'नये यात्रादल में घुसे कामन्दकं प्रेमं प्रारम्भं कुरु। धीरे-धीरे समझ में आ जायेगा। आदमी में यात्रादल के आसामी, अम-अन्तु में बबर्दी

मछली और पेड़-पौधों में नागरमोथा की मौत आसानी से नहीं होती। इन्तजाम मैंने ठीक-ठीक कर दिया है—गरम पानी और कार्बलिक साबुन से धोकर हारान वैद्य का 'क्षतारि मलहम' लगा दिया है। इससे मेरे पैर की उसी तरह की सूजन ठीक हो गयी थी। यह यही एकाध साल पहले की बात है। डाक्टर को दिखाया था, उसने कहा सेलुलाइटिस है। हारान वैद्य मेरा दोस्त है। उसके पास गया। कहा, वैद्य, क्या करूँ? एक डिब्बा मलहम दे कर कहा, सेलोलाइटिस तो सेलोलाइटिस, तमाम बीमारी बात की बात में खत्म हो जायेगी। सिर्फ चौबीस घण्टे लगे। बारह घण्टे में ही पता चल गया था कि कम हो रहा है। तीसरे दिन मैंने पट्टी बाँध स्ट्रैप वाली चप्पल पहन ली। इसके अलावा योगा मजबूत है। गया तो देखा, सूजे हुए घुटने को हाथ से सहला रहा है और गीत गा रहा है—'हाय रे, भ्रम से अन्धे दोनों लोचन, रंगा हुआ देखते ही सोचा, होगा अधर, नहीं पहचान सका श्री चरण! यानी 'जरा-व्याध' का गीत।'

'वह कौन है बिग ब्रदर? हु इज दैट जरा पट्टा?'

'वह बहुत बड़ी दास्तान है ठाकुर। माना के भतीजे के पोता का दादा।' गोरा बाबू ने हँस कर कहा, 'तुम्हें यह समझाने के लिए रामायण से लेकर महाभारत तक पढ़ना पड़ेगा दिलदार! यह बात विंसेण्ट स्मिथ की इंडियन-हिस्ट्री में नहीं है। यात्रादल में रहते-रहते जान जाओगे।'

मंजरी ने बाधा देते हुए कहा, 'यह सब बात अभी रहने दो। योगा बाबू की तकलीफ अगर बढ़ जाती है और कल तक कमने का नाम नहीं लेती है तो डाक्टर से दिखा देंगे।' लेकिन बात दब कर रह गयी। इसके बाद मंजरी बोली, 'नाटक के बारे में कह रही हूँ। मास्टर साहब, ये कुमार विमल सिंह की बात पकड़े हैं। नाटक में फेर-बदल लायेंगे। सोचते हैं, शुचि और मालविका को मिला कर एक बना देंगे।'

'उहूँ-उहूँ! बड़ी बदनामी फैल जायेगी। लोग वह नाटक सुनना ही न चाहेंगे। अगर हेर-फेर लाते हैं तो जोर-जबरन सुनाने से नहीं जमेगा। लोग जमने नहीं देंगे।'

गोरा बाबू चुप होकर सोच रहा है। मन ही मन रूपरेखा तैयार कर रहा है। मंजरी ने कहा, 'मैं उसी दिन से कह रही हूँ। आज भी कह रही हूँ। नाटक जैसा है वैसा ही रहे। मैं मालविका का पार्ट करूँगी। शुचि के पार्ट के लिए आदमी की तलाश कीजिए। आदमी मिल जायेगा।'

गोरा बाबू फिर भी चुप रहा। रीतू बाबू ने कहा, 'ठहरिये, सोचने दीजिये। मन में आपको एक बार मालविका सजा कर देखने दीजिये।'

'मेकअप ठीक होगा मास्टर साहब। इसके अलावा—'

'हाँ, पार्ट तुम्हारा है। तुमने सच कहा है। लेकिन यह क्यों नहीं सोचती कि उस समय से अब तक कितने साल बीत चुके हैं। वजन बढ़ गया है।'

'तो फिर इस नाटक को ही बन्द कर दो।'

गोरा बाबू ने एकाएक कहा, 'हाँ यही किया जायेगा। तुम्ही मालविका का पार्ट करो। सिर्फ उसमें जो नाच है, उसे तुम्हें नहीं करना है। समझ रहे हैं मास्टर साहब, मालविका के फर्स्ट एपिअर में नाच है न ?'

'हाँ आरती नृत्य।'

मंजरी हाथ या माथे पर आरती का प्रदीप जला हुआ थाल लेकर खड़ी होगी। सखी उसके चारों तरफ नाचेगी। नाच खत्म होते ही वह चली जायेगी, मालविका का पार्ट शुरू होगा।'

'ऐसा होने से भी लोग वाग चर्चा करेंगे।'

'चर्चा करने दो, इससे हानि नही है। मगर—'

गोरा बाबू चुप हो गया।

'क्या, बताओ।' मंजरी ने कहा।

नाचने से तुम पार्ट में कामयाब नहीं हो सकोगी। और नाच की कोई जरूरत नही है। यह तो इसीलिए दिया गया था कि उसका चरित्र नरमती है।'

मंजरी ने दृढ़ता के साथ कहा, 'तो फिर नाच हटा दो। खड़ी होकर मैं आरती करूंगी और उसके बाद थाल नीचे रखकर प्रणाम करूंगी। उसके बाद गीत गाऊंगी। या इसे भी हटा देना है ?'

'तुम अनुचित बातें कर रही हो। ऐसी स्थिति में मालविका का गीत और बढ़ा दूंगा। मगर—'

'मगर क्या ?'

'बाबुल बाबू मेरी ओर ताक रहे हैं।

'समझी नहीं।'

'उसका को हटा दोगी ?'

'इस पर सोचना पड़ेगा।'

'लेकिन वह अन्याय होगा।'

'अन्याय होगा ?' मंजरी ने गोरा बाबू के चेहरे की ओर

गोरा बाबू ने कहा, 'हाँ, होगा। कम से कम मेरा मन यही कहता है। मास्टर साहब से पूछकर देख लो। कहिये मास्टर साहब ?'

इसके पहले ही मंजरी ने कहा, 'तुम कह रहे हो तो इसके बाद बात नहीं हो सकती है। होगी भी नहीं। नाच-गाने का पार्ट तो है ही। 'जना' में मोहिनी माया। 'सती तुलसी' में भी कृष्ण का पार्ट। रिहर्सल में अच्छा किया है। और फबेगी भी खूब। मुंह पर एक तरह का मर्दाना भाव है। वह रहेगी। इसमें भी नाच देने की बात कह रहे थे, सो दे दो। कहिये मास्टर साहब ?'

रीतू बाबू बोला, 'बिल्कुल प्रोप्राइटेस जैसी बात है। बस-बस, वह रहेगी।'

बाबुल बोस बोल पड़ा, 'गॉड सेव दि प्रोप्राइट्रेस। सत्य बोलने के लिए मैं बड़ा ही चिन्तित था।'

मछली और पेड़-पौधों में नागरमोथा की मौत आसानी से नहीं होती। इन्तजाम मैंने ठीक-ठीक कर दिया है—गरम पानी और कार्बलिक साबुन से धोकर हारान वैद्य का 'क्षतारि मलहम' लगा दिया है। इससे मेरे पैर की उसी तरह की सूजन ठीक हो गयी थी। यह यही एकाध साल पहले की बात है। डाक्टर को दिखाया था, उसने कहा सेलुलाइटिस है। हारान वैद्य मेरा दोस्त है। उसके पास गया। कहा, वैद्य, क्या करूँ? एक डिब्बा मलहम दे कर कहा, सेलोलाइटिस तो सेलोलाइटिस, तमाम बीमारी बात की बात में खत्म हो जायेगी। सिर्फ चौबीस घण्टे लगे। बारह घण्टे में ही पता चल गया था कि कम हो रहा है। तीसरे दिन मैंने पट्टी बाँध स्ट्रैप वाली चप्पल पहन ली। इसके अलावा योगा मजबूत है। गया तो देखा, सूजे हुए घुटने को हाथ से सहला रहा है और गीत गा रहा है—'हाय रे, भ्रम से अन्धे दोनों लोचन, रंगा हुआ देखते ही सोचा, होगा अधर, नहीं पहचान सका श्री चरण।' यानी 'जरा-व्याध' का गीत।'

'यह कौन है बिग ब्रदर? इज दैट जरा पट्टा?'

'यह बहुत बड़ी दास्तान है ठाकुर। नाना के भतीजे के पोता का दादा।' गोरा बाबू ने हँस कर कहा, 'तुम्हें यह समझाने के लिए रामायण से लेकर महाभारत तक पढ़ना पड़ेगा दिलदार! यह बात विसेण्ट स्मिथ की इंडियन-हिस्ट्री में नहीं है। यात्रादल में रहते-रहते जान जाओगे।'

मंजरी ने बाधा देते हुए कहा, 'यह सब बात अभी रहने दो। योगा बाबू की तकलीफ अगर बढ़ जाती है और कल तक कमने का नाम नहीं लेती है तो डाक्टर से दिखा देंगे।' लेकिन बात दब कर रह गयी। इसके बाद मंजरी बोली, 'नाटक के बारे में कह रही हूँ। मास्टर साहब, ये कुमार विमल सिंह की बात पकड़े हैं। नाटक में फेर-बदल लायेंगे। सोचते हैं, शुचि और मालविका को मिला कर एक बना देंगे।'

'उहूँ-उहूँ! बड़ी बदनामी फैल जायेगी। लोग वह नाटक सुनना ही न चाहेंगे। अगर हेर-फेर लाते हैं तो जोर-जबरन सुनाने से नहीं जमेगा। लोग जमने नहीं देंगे।'

गोरा बाबू चुप होकर सोच रहा है। मन ही मन रूपरेखा तैयार कर रहा है। मंजरी ने कहा, 'मैं उसी दिन से कह रही हूँ। आज भी कह रही हूँ। नाटक जैसा है वैसा ही रहे। मैं मालविका का पार्ट करूँगी। शुचि के पार्ट के लिए आदमी की तलाश कीजिए। आदमी मिल जायेगा।'

गोरा बाबू फिर भी चुप रहा। रीतू बाबू ने कहा, 'ठहरिये, सोचने दीजिये। मन में आपको एक बार मालविका सजा कर देखने दीजिये।'

'मेकअप ठीक होगा मास्टर साहब। इसके अलावा—'

'हाँ, पार्ट तुम्हारा है। तुमने सच कहा है। लेकिन यह क्यों नहीं सोचती कि उस समय से अब तक कितने साल बीत चुके हैं। वजन बढ़ गया है।'

'तो फिर इस नाटक को ही बन्द कर दो।'

गोरा बाबू ने एकाएक कहा, 'हाँ यही किया जायेगा। तुम्हीं मालविका का पार्ट करो। सिर्फ उसमें जो नाच है, उसे तुम्हें नहीं करना है। समझ रहे हैं मास्टर साहब, मालविका के फर्स्ट एपियर में नाच है न ?'

'हाँ आरती नृत्य।'

मंजरी हाथ या माथे पर आरती का प्रदीप जला हुआ थाल लेकर खड़ी होगी। सखी उसके चारों तरफ नाचेगी। नाच खत्म होते ही वह चली जायेगी, मालविका का पार्ट शुरू होगा।'

'ऐसा होने से भी लोग बाग चर्चा करेंगे।'

'चर्चा करने दो, इससे हानि नहीं है। मगर—'

गोरा बाबू चुप हो गया।

'क्या, बताओ।' मंजरी ने कहा।

नाचने से तुम पार्ट में कामयाब नहीं हो सकोगी। और नाच की कोई जरूरत नहीं है। वह तो इसीलिए दिया गया था कि अलका बढ़िया नाचती है।'

मंजरी ने दृढ़ता के साथ कहा, 'तो फिर नाच हटा दो। खड़ी होकर मैं आरती करूँगी और उसके बाद थाल नीचे रखकर प्रणाम करूँगी। उसके बाद गीत गाऊँगी। या इसे भी हटा देना है ?'

'तुम अनुचित बातें कर रही हो। ऐसी स्थिति में मालविका का गीत और बढ़ा दूँगा। मगर—'

'मगर क्या ?'

'बाबुल बाबू मेरी ओर ताक रहे हैं

'समझी नहीं।'

'अलका को हटा दोगी ?'

'इस पर सोचना पड़ेगा।'

'लेकिन वह अन्याय होगा।'

'अन्याय होगा ?' मंजरी ने गोरा बाबू के चेहरे की ओर देखा

गोरा बाबू ने कहा, 'हाँ, होगा। कम से कम मेरा मन यही कहता है। मास्टर साहब से पूछकर देख लो। कहिये मास्टर साहब ?'

इसके पहले ही मंजरी ने कहा, 'तुम कह रहे हो तो इसके बाद बात नहीं हो सकती है। होगी भी नहीं। नाच-गाने का पार्ट तो है ही। 'जना' में मोहिनी माया। 'सती तुलसी' में भी कृष्ण का पार्ट। रिहर्सल में अच्छा किया है। और फबेगी भी खूब। मुँह पर एक तरह का मर्दाना भाव है। वह रहेगी। इसमें भी नाच देने की बात कह रहे थे, सो दे दो। कहिये मास्टर साहब ?'

रीतू बाबू बोला, 'बिल्कुल प्रोप्राइट्रेस जैसी बात है। बस-बस, वह रहेगी।'

बाबुल बोस बोल पड़ा, 'गॉड सेव दि प्रोप्राइट्रेस। सत्यं बोलने के लिए मैं बड़ा ही चिन्तित था।'

रीतू बाबू बोला, 'मगर एक काम कीजियेगा। इस दीन-दरिद्र की बात पर ध्यान दीजिएगा। शुचि का पार्ट और भी कड़ा और शुष्क बना दीजिये। और मालविका के बारे में उसकी माँ का जो यह वाक्य है—एक ही जगह कमलालक्ष्मी-तपस्विनी सरस्वती देवी की कर अर्चना प्राप्त किया था तुम्हें—उसे जरा उभार कर प्रस्तुत कीजिये।'

'शुचि का पार्ट कठोर बना दूँ ?'

मुंह नचाकर हँसते हुए मंजरी ने कहा, 'उस पार्ट के प्रति तुममें ममता है न ? लेकिन असल में उसे कठोर और शुष्क होना ही उचित था। या नहीं ? कलेजे पर हाथ रखकर कहो।'

शिवनन्दन कायदे के साथ अण्डा, पावरोटी और चाय लाकर रख गया।

रीतू बाबू ने कहा, 'थोड़ा-सा अदरक का रस दे सकते हो शिवना ?'

'हाँ। ले आता हूँ।'

मंजरी बोली, 'उसे आप पीजिये। नयी चाय अदरक देकर बना लाओ शिवना।'

'व्हाइ नॉट विथ तेजपात विथ प्रदर ?'

'उहूँ, वह पाचक हो जायेगा।'

रीतू बाबू चाय की चुस्कियाँ लेने लगा।

'क्या सोच रहे हो ?' मंजरी ने गोरा बाबू से कहा।

गोरा बाबू सचमुच ही सोच रहा है। खाने की सामग्री, चाय वगैरह की ओर उनकी दृष्टि नहीं गयी। इतनी-इतनी बातें हो चुकी, 'फिर भी उस ओर निगाह नहीं गयी। मंजरी से यह अनदेखा न रहा।

गोरा बाबू बोला, 'हाँ सोच रहा हूँ।'

'क्या, यही तो पूछ रही हूँ।'

'मैं कहूँ दयामय ?'

जरा सा हँसा। वह हँसी भी चिन्ता से परिपूर्ण है। बोला, 'मैं ही बता रहा हूँ। सोच रहा हूँ, अन्याय हो रहा है।'

'कौन अन्याय ?' मंजरी ने पूछा।

'अन्याय यही हो रहा है कि शुचि का पार्ट जब कि कड़ा करना है, मालविका को सरस्वती का अंश बताना है तो ऐसी स्थिति में अलका को एक चांस देना क्या उचित नहीं है ? इसमें वह खड़ी हो सकती है।'

मंजरी ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा, 'नहीं, नहीं हो सकती है।'

'यह तो अनुमान है।'

'नहीं, अनुमान नहीं, माई लॉर्ड। प्रोप्राइट्रेस राइट। अली से शान्त सीरिअस पार्ट नहीं हो पायेगा। कल उसने मुझसे कहा था। कल वह मेरे घर पर आयी थी, क्राइ-क्राइ चेहरा लिए। बोली, मुझसे यह पार्ट नहीं होगा बाबुलदा। मेरे द्वारा वोन्ट

है। और मैंने भी देखा है, नाचे, थोड़ा-बहुत गीत, जो-सो, मतलब —चंचला-चंचला वगैरह का पार्ट रहने पर एक्सेलेन्ट करती है। उसके बाद कहा, मुझे क्या हटा दिया जायेगा ? उसका होम लाइफ 'टेरिबल' हो गया है। फॉदर-मदर दोनों मिलकर चूस रहे हैं, खा डालना चाहते हैं। फॉदर तो अब हाफमैड हो गया है। कल कह रहा था, रुपया चाहिये। जहाँ से जैसे भी हो, लाना होगा। एक सौ रुपये का कोई सर्टिफिकेट है। कल रुपया देना होगा। एकबार दो रुपया ग्राईबिंग कर बैक किक कर दिया है। अदालत में मिसेज और मिस ने दरख्वास्त भेजा था कि ऑल स्वावर्स उन लोगों का है। गृहस्वामी इनसोलवेन्सी फाइल करेंगे, बट पावनादार वेरी हैवी वेट चैम्पियन पावनादार है। उसने वॉडी वारन्ट निकलवा दिया है। खबर मिल चुकी है। कहाँ फ्लाइ कर छिपेंगे, इसका उपाय नही है। रास्ते में चक्कर काटेंगे, ऐसी सामर्थ्य नही है। अब एसेट है डाउटर। तुम मनी ले आओ, ह्वेयर टु गेट—यह हम क्या जाने ! मदर ने कल बाल मुट्ठी में पकड़कर लेडी दुःशासन का पार्ट किया है। बगैर द्रौपदी बने अब कोई उपाय नही है। रुपया मैंने दे दिया है मगर वह अब उस मकान में नही रहेगी। अभी नौकरी चली जाये तो जम्पिग के अलावा कोई दूसरा रास्ता नही है—या तो मदर गंगेज में जंप करना पड़ेगा या समबाडी के कंधे पर।'

'तुम ऐफेड हो ?' रीतू बाबू बोला।

'सो लिट्ल-लिट्ल ऐफेड होना पड़ रहा है।'

मंजरी ने कहा, 'आप उससे शादी कर लें बाबुल बाबू।'

'शादी ? ओ मेरे लार्ड, हे माइ ईश्वर ! ऐ माइ खुदा ! मैं उस झमेले मे पड़ने वाला नहीं हूँ मैडम।'

'लेकिन वह तो तुम्हें नही छोड़ेगी लिट्ल ब्रदर। और तुम भी —'

'देअर इज दि मुसीबत बिग ब्रदर। उस लड़की के प्रति मुझमें एफेक्शन है।'

गोरा बाबू ने अन्दर जाकर मंजरी को पुकारा, 'सुनो।'

कुछ देर बाद दोनों बाहर निकलकर आये और मंजरी ने दो सौ रुपया बाबुल के हाथ में थमाते हुए कहा, 'आपने अलका को जो एक सौ रुपया दिया था, वह ले लीजिये और बाकी एक सौ रुपया उसे दे दीजियेगा। कहिएगा, कहीं कोई डेरा खोज ले।'

रीतू बाबू ने कहा, 'बालिग है न ? अठारह पार कर गयी है ? वरना नाबालिग रहने से बाप हंगामा खड़ा कर देगा।'

गोरा बाबू बोला, 'सबसे अच्छा यही है कि उसकी कोई नकली शादी करा दो। हो सकता है कि लडकी मे काफी कुछ दोष हो, परन्तु तमाम दोषों के लिए वह जिम्मेदार नही है। गुण भी उसमें बहुत हैं। भविष्य में वह अच्छा पार्ट करेगी। एक खास ढर्रे का पार्ट। नाचती अच्छा है। गला मँज जायेगा तो अच्छा करेगी। दो न

भाई दिलदार उसे एक चान्स। तुम दोनों से हम एक साल का कान्ट्रैक्ट करने को राजी हैं।'

बाबुल बोला, 'जहाँपनाह, इसका आन्सर तो दिलदार के कोश्चन में ही है। अगर दुम ही कुत्ते को चलाती तो कुत्ते का क्या होता। माई लॉर्ड, उस समस्या के समाधान के लिए डुब्रूराइन के कुत्ते की दुम काट ली गयी है। आइ एम ए दुमकटा जीव माई लॉर्ड। दुम जोड़कर हंगामा खड़ा करना मुझसे बरदाश्त नहीं होगा। उससे बेहतर है कि वन थिंग कीजिये। अली ने ही कहा था। कहा था, उन लोगों को—मीन्स आप लोगों को—कह-सुन कर मेरे रहने के लिए कोई इन्तजाम करा दो। मैं पुलिस को सूचना देकर वहाँ चली जाऊँगी। उसके बाद जो करने को होगा, करूँगी। यानी बिलकुल जीने-मरने पर उतारू हो गयी है।'

मंजरी ने कहा, 'पागल है क्या! वैसा कहीं होता है? नहीं, ऐसा नहीं हो सकता है।'

रीतू बाबू ने खाना खाने के बाद परितृप्ति की एक डकार ली और कहा, 'जाने दो महेन्दर, यह सब बात जाने दो। यह सब फालतू बात है। छोड़ो। वह लड़की अपना प्रॉब्लेम अपने आप सॉल्व कर लेगी। 'शील-वक्ष की जलराशि ज्यों बाँध तोड़ आती समतल में।'

गोरा बाबू ने कहा :

> सभी क्षेत्र में सत्य नहीं यह देख, ब्रह्मपुत्र को मुक्ति देने को
> परशुराम के भीम कुठार का भी होता प्रयोजन।
> ब्रह्म-कमण्डल मे वन्दिनी गंगा की मुक्ति
> भगीरथ के तप की प्रतीक्षा में रहती।

मंजरी बेवजह ही सिर का घूँघट नीचे सरकाकर बोली, 'तुमने तो 'रुक्मिणी हरण' का गीत गाना शुरू कर दिया। वह सब अभी रहने दो और असली बात के बारे में विचार-विमर्श करो। अब देर करने का वक्त नहीं है, भादों का महीना खत्म हो रहा है। दस आसिन को पूजा है। अष्टमी की रात अभिनय की शुरुआत होगी। नया नाटक चलाने का वक्त नहीं है। चलाये तो बहुत बदनामी होगी। ज्यादा काट-छाँट करने से भी यही होगा। काट-छाँट करना, उसके बाद रिहर्सल में उसका कौन-सा रूप खड़ा होता है—यह सब झमेला है। इसके अलावा दूसरे दल बदनामी फैलाना शुरू कर देंगे—वह नाटक फालतू है, बेकार है।'

'प्रोप्राइट्रेस ठीक कह रही हैं माई लॉर्ड। कहिये बिग ब्रदर?'

'मैं तो पहले ही कह चुका हूँ।'

गोरा बाबू बोला, 'ठीक है, आप लोग जो कुछ कह रहे हैं, उसे ही मान लेता हूँ। आज ही मैं नाटक में आवश्यकतानुसार संशोधन कर देता हूँ। हाँ, तो यह बताइये कि शुचि का पार्ट जरा कठिन बना देना है?'

'हाँ।'

'कितना ?'

मंजरी बोली, 'प्रथम सीन में, सबसे आखिर में जहाँ ब्रह्ममित्र सीमान्त को लड़ाई पर जाने के समय कहता है—कहो शुचि, अपना हृदय शुद्ध करने के पहले इस लड़ाई में यदि मारा जाऊँ तो तू अपवित्र समझ कर मेरा स्पर्श नही करेगी ? शुचि कह रही है—वैसा होगा पिता तो आपके हिम-शीतल ललाट पर अपना ललाट रख मैं आँसू के जल से आपको समस्त ग्लानि धो दूँगी।'

'उसे हटा दूँ ?'

'हटाओगे ?'

गोराबाबू खामोश होकर सोचने लगा।

'ममता लगती है ? लेकिन सच्चाई यह नही है। जो सच है वही लिखना होगा। मुझे चूँकि शुचि का पार्ट करना था इसीलिए तुमने इसे जोड़ दिया था। तुमने खुद ही मुझे बताया था।'

'ठीक है, वही किया जायेगा।'

'उसके बाद जयन्त कुमार से विच्छेदवाला सीन।'

'उसमें से क्या छाँटने कह रही हो ?'

'पढ़ो।'

'जबानी ही बताओ न।'

'तो फिर जबानी बताने की जरूरत ही क्या है ? खुद ही याद कर जो सच है लिख डालो। छाँटने की जरूरत नही। वहाँ शुचि कहती है :

गंधर्व-कन्या का मोह कलंकित अजन जैसा
गाढ़े कृष्ण रेखाकन से अंकित नेत्रो में तुम्हारे।
धिक्-धिक्-धिक् ब्राह्मण-तनय तुम्हें
कर सकते क्या अस्वीकार ? गये नही थे
उसके भवन मे ?

गोरा बाबू बोला, 'जयन्त कहता है, गया था। अस्वीकार क्यों करू ? तुम्हारे पिता के अनुरोध पर ही गया था।'

'हाँ। शुचि का उत्तर है—इससे तुम्हारे धर्म की पवित्रता की रक्षा नही हुई है। तुम उस घर में गये हो, वहाँ बैठे हो, उन लोगों को छूने से तुम्हारी देह अपवित्र हो गयी है। और केवल देह नहीं, उसके रूप पर मुग्ध होने के कारण अन्तर-मन-चित्त अपवित्र हो गये हैं।'

'जयन्त का उत्तर : नही। उसके बाद क्या है, कहो।'

गोरा बाबू बोला,

नही, भूल है भूल, वह शास्त्रविधि है भूल, दर्प से भरे मन की
है सृष्टि,

इस संसार में, इस सृष्टि में विधाता की सम दृष्टि धूप-आलोक समान
चण्डाल-ब्राह्मण, राजकन्या-भिखारिणी मस्तक पर रहेंगे एक-सी
दीप्ति से
एक-सा उत्ताप-स्नेह से।
चण्डाल नहीं, चण्डाल जन्म के विपाक से। यह भेद समाज के द्वारा
निर्मित
सत्य बात है—ब्राह्मण भी होता चण्डाल अपने कर्म-कलुष से।
देह-व्यवसायिनी नहीं यह कन्या गंधर्व की
स्वर्ग-देवता की मनतुष्टि-भृत्ति को तुच्छ दूर कर
कर उपेक्षा प्रासाद की
संन्यासिनी जैसी तपस्विनी। राजकन्या ब्राह्मण-तनया वह।
फिर भी वह नहीं वही समाज के विभ्रान्त विधान से।
सुनो शुचि, पवित्र वह तुम जैसी ही
किन्तु श्रेष्ठ वह तुमसे नारी-अन्तर की
कोमलता, स्नेह, प्रेम सब धर्म-गुणों में।

गोरा बाबू ने अपना कथन जारी रखा, 'शुचि बाधा दे कर कहती है :

चुप रहो, चुप रहो कामार्त पुरुष।
रूप मोह से भ्रान्त बने तुम।
सुन लो मेरी बात। नहीं देह की अभिलाषिणी मैं
नारी मानव-लोलुपा। लक्ष्मी अंश से
मेरा जन्म। कामार्त प्रेमार्त हो किया नहीं है वरण
मैंने तुम्हें कभी है। मैं नारायण
अभिलाषिणी साधिका, साक्षी बना धर्म को
वरण तुम्हारा कर चाहा था तुममें
नारायण को खींच लाने को। वह साधना
कर दी निष्फल तुमने। आज से
तुमसे सम्बन्ध इसी क्षण से ही
छिन्न कर रही। जाओ चले सामने से तुम
जाओ चले देवभूमि राज्य से। जाओ चले,
चले जाओ तुम।

अब मंजरी ने कहा, 'अब यहाँ यही जोड़ दो कि शुचि कहती है, 'तुम मेरे पिता के अन्नदास थे, अब मेरे अन्नदास हो। जो अन्नदास है उसके मुँह में इतनी बड़ी बात शोभा नहीं देती।' मैं सच्चाई के बाहर जाने नहीं कह रही हूँ। यानी जो सच है, वही लिखो। देखना, ठीक हो जायेगा। मैं कोई शुचि का पार्ट करने नहीं जा रही हूँ। तो फिर ममता किस बात की ?'

गोरा बाबू ने पुकारा, 'शिवना !'

'आया।'

'नाटक का खाता, कलम-कागज और बोतल-गिलास ले आ। आइये मास्टर साहब, लीजिये।'

सिगरेट के डिब्बे को दिलदार ने खोला।

उन लोगों ने सिगरेट ली। रीतू बाबू ने कहा, 'फिर आप काम कीजिये। चलता हूँ।'

'हाँ। मगर बोतल आ रही है। थोड़ी-थोड़ी ले लीजिये।'

मंजरी बोली, 'इसके पहले एक बात खत्म कर डालो। शुचि के पार्ट के लिए बुंचीदी कैसी रहेगी। बुंचीदी से शिवना की मुलाकात हुई थी। शिवना गङ्गाघाट की ओर जा रहा था। बुंचीदी ने पुकारा, शिवना, सुनते जाओ। पता चला है कि मंजरी के दल में आदमी लिया जायेगा। मजरी जो पार्ट कर रही है, उसी पार्ट के लिए ? बड़ी ही गर्वीली स्त्री का पार्ट है। शिवना ने कहा, तय नहीं हुआ है, तब हाँ, बातचीत चल रही थी। बुंचीदी ने कहा, मेरे बारे में कहना। मैं बहुत दिनों से बेकार बैठी हूँ। थियेटर में तो आये दिन गृहस्थ-हाफ गृहस्थ लोग इकट्ठे हो गये हैं। अब दासी से थियेटर नहीं चल रहा है, देवी चाहिए। कहना। समझे ?'

गोरा बाबू गिलास पर आँखे टिकाये था। शिवनन्दन तीन गिलास मेज पर रख शराब ढाल रहा था, मगर ऐसा लग रहा था जैसे शराब ढालना वह न देख रहा हो। सम्भवतः वह लिखने की चिन्ता में मशगूल था। उसने उत्तर नहीं दिया। मंजरी बोली, 'तुम खामोश क्यों हो गये ? मास्टर साहब, आप क्या कह रहे हैं ?'

गोरा बाबू ने बेवजह एक लम्बी साँस लेते हुए कहा, 'हूँ। सो—'जरा चुप रहने के बाद बोला, 'बुंची की उम्र चालीस पार कर गयी है। वरना ऐक्ट्रेस के लिहाज से वह अच्छी है।'

'ले लीजिये।' गिलास उठाते हुए रीतू बाबू ने कहा, 'ले लीजिये। पार्ट वह अच्छा करेगी। उसका चिपटा चेहरा फबेगा। उस औरत का चेहरा गजब का है। जितना आकर्षण है उतना ही विकर्षण। सजती है तो खासी अच्छी लगती है, लेकिन वह चिपटा भाव यानी ठुड्डी सामने की ओर निकले रहने की वजह से लगता है कि बड़ी ही निष्ठुर है। उम्र हो चुकी है, अच्छी तरह से पेण्ट किया जाये तो मजे से बीस साल चुरा लेगी। उफ्, उसकी चढ़ती जवानी के सखी दल के नाच की थिरकन आपने नहीं देखी है। बाप रे बाप, शील का एक शौकीन छोकरा—'

मंजरी बोली, 'उफ्, आखिर बुंचीदी को जूते से पीटा था। उसके बाद छोड़ दिया था। शील का वह लड़का बड़ा ही गुस्सेवर था। मरा भी वैसे ही।'

बाधा देकर गोरा बाबू बोला, 'वैसे ही मरता है। वह सब बात रहने दो। फिर बुंची को ही ले लो। बिलायती बढ़िया पेन्ट लाने से काम चल जायेगा। गोपाल

मामा, आप बुंची के पास चले जाइये। तनख्वाह कितनी बताइएगा ? अलका के बराबर ही बताइएगा। कहो, ठीक है न ?'

'यह क्या ? ऐसा कहीं होता है ? ज्यादा देना होगा। कितनी बड़ी ऐक्ट्रेस थी !'

'ठीक है। अच्छा मास्टर साहब, मैं बैठता हूँ। इहासने शुष्यतु मे शरीरं—। मिथना खत्म करने के बाद ही उठूँगा। गोपाल बाबू, माणिकतल्ला के कारखाने की विश्वकर्मा पूजा का बयाना ले लीजिये। कह आये कि उन लोगों के यहाँ हमने पहला गीत गाकर दल की स्थापना की है, वे लोग जो भी देंगे, ले लेंगे। उसी मजलिस में गंधर्व कन्या का टेस्ट हो जाये। बुंची पाँच दिन में वह पार्ट ठीक कर लेगी। हाँ, एक बात और। आरती नृत्य अलका करेगी न ? दो-चार वाक्य जोड़ दूँ ?'

'फिर सिल्ल-सिल्ल वाक्य—यानी हंगुआ की तरह टेढ़ी-मेढ़ी और कर्कश बातें दीजिये। जोक ह्यूमर हिट करके बातें—जरा नाज-अदा के साथ—। आः फादर, वन ग्लास में ही टकरा कर अटक रहा है।'

बाबुल स्वयं नाज-अदा दिखाने गया था। पैर से पैर टकरा गया है। कुछ तो चंचलता के कारण और कुछ शराब के असर के कारण भी।

गोरा बाबू बोला, 'फिर समये एस गच्छ। और ट्राम से उतर रिक्शा कर लेना।'

दल का प्रमुख नौकर विपिन आकर खड़ा हुआ। बोला, 'बयाना करने के लिए आदमी आया है।'

रीतू बाबू ने पुकारा, 'गोपाल !'

जवाब नहीं मिला। रीतू बाबू ने पुकारा, 'शिवनन्दन !'

'बाबू !'

'गोपाल कहाँ है ? छत पर गया है ?'

'हाँ। इस बीच गाँजा चल चुका है।' उसने मैनेजर बाबू कह कर पुकारा। दूसरे ही क्षण कहा, 'नीचे उतर गये हैं। जाइये, बयाना लेकर आदमी आया है।'

गोपाल ने सीढ़ी पर खड़े हो ऊपर की ओर मुँह उठाकर दबा हुआ दम आसमान की ओर छोड़ा। थोड़ा-सा धुंआ बाहर निकल आया। गोपाल भी छत पर नशे का सेवन करने गया था। उसका नशा है गाँजा। गाँजा वह चिलम में भी पीता है और बीड़ी के तम्बाकू के साथ मिला कर भी पीता है। गोपाल जल्दी-जल्दी नीचे उतरा और बरामदे पर इन लोगों की मजलिस में खड़ा न रह कर सीधे विपिन से कहा, चलो। कहाँ का आदमी है ? बिठाया है न, चाय-वाय पिलायी है न ? चलो।'

विपिन के जवाब का इन्तजार न कर वह नीचे उतरने लगा। गोरा बाबू, बोला, 'ढ़ाई सौ रात, उससे कम में राजी नहीं होइएगा। और—'

'और अगर आने-जाने के रास्ते में हो ?'

'वही बीस-पच्चीस कम। और बुंची के बारे में बातें की हैं ? आप को पता

है ? आप छत पर थे। तनख्वाह की बात यहीं आने पर होगी। आज ही शाम को से आइएगा।'

गोपाल ने गरदन हिला कर हामी भरी।

नीचे उतर हो रहा था कि रीतू बाबू ने पुकारा, 'ठहरो मैनेजर। हम लोग भी चल रहे हैं।'

फुटपाथ पर आकर गोपाल ने एक बीड़ी सुलगायी। गाँजे का आखिरी दम सब से मजे का होता है। उसे ही वह नहीं ले सका।

रीतू बाबू, बाबुल सीढ़ियाँ उतर दरवाजे के सामने आये ही होंगे कि नीचे के तल्ले के कमरे से शोभा की आवाज सुनायी पड़ी। पाकपाड़ा की अभिनय की रात रीतू बाबू ने जब उसे फटकारा है तब से वह गुमसुम है। रीतू बाबू से बातचीत करना बन्द कर दिया है। वह कमरे के अन्दर से कह रही थी, 'चलने के धमाके से सीढ़ियाँ क्या थरथरा नहीं रही हैं ? कहावत है, ज्यादा मत बढ़ो वरना आँधी में टूट जाओगे। घर कँपाते हुए चलना ! सीना तान कर ! बाप रे !'

बाबुल ने कहा, 'बिग ब्रदर !'

'सुनो ब्रदर, तुम सुनो। मा कुरु गर्वं। सिर्फ तुम्हारे पीछे अलका नहीं पड़ी है। मेरे प्रेम में फँसने वाली नायिका भी है। देख लो, इसके अलावा श्रीमती बुँची आ रही हैं—'

'वह भी—'

'हाँ। किसी जमाने में पटली चारु के मरने के बाद उसके चारे के लोभ में मँडराता था। बात बनते-बनते बैठकबाजी खत्म हो गयी। थियेटर का ऐक्टर रूपेन आया और थियेटर में ले गया।'

गोपाल बोला, 'कहिये।'

वह दरवाजे के सामने इन्तजार में खड़ा था।

रीतू बाबू बोला, 'चलो, आज आफिस में ही दिन बेला का भोजनं शयनं। सोचा था, दिन यहीं बीतेगा। सो देखा, मालिक लिखने बैठ गये। चलो, एक साथ चलेंगे। तुम तो लिट्ल ब्रदर, ट्राम पकड़ोगे। चलो, वहीं पकड़ोगे।'

'चलिये।'

'तुम क्या, श्रीमती अलका की नौकरी के लिए आये थे ?'

'येस। नहीं तो मेरे 'शोल्डर' पर चाहे मृत सती की तरह नहीं लेकिन सोयी या बेहोश सती की तरह सवार हो जाये तो मैं क्या करूँ ? माई फादर, यह मैं सोच भी नहीं सकता।'

'फिर इस लाइन में आये ही क्यों ?'

'अरे, इसीलिए कामिक ऐक्टर बन गया। वरना सीरियस पार्ट कर हीरो बनता और वेम्बूफ्लुट बजाता। प्रेम से मैं बड़ा ही डरता हूँ।'

'तो फिर गृहस्थ कन्या देख कर शादी कर डालो।'

'आपने 'माइन्ड' की बात कही है। कहूँगा। कुछ जमा कर लूँ, उसके बाद। हो सकता था, करता। मकान के शेयर की आमदनी हुई के तौर पर बड़े भाइयों से डेढ़ेक हजार रुपया जब 'सेट' किया तब एक बार 'विश' हुआ था। लेकिन लड़ाई का मार्केट—ह्वाइट मार्केट में सॉग—सम्बा ब्यू और 'ब्लेक थ्रोट कटिंग साइफ' की धार देख कर 'वाइफ' की चिन्ता को पोस्ट डिपोजिट कर दिया। तब हाँ, वाइफ के अभाव में 'वाइन' की आदत लग गयी—मतलब यह कि बहुत ज्यादा। शादी करता तो उसमें वृद्धि नहीं होती। अलका सड़ने पकने लगी है वरना हो सकता था—'

'गले में बाँध कर झूलते ?'

'येस। आप ने 'कैच' कर लिया।'

'लव' करने में दोष क्या है ?''

'माई खुदा। ऐ भगवान। हे गॉड। लव तो आ ही नहीं रहा है बिग ब्रदर। हँसने का मन करने लगता है।'

गोपाल घोष चुप्पी ओढ़े सुनता जा रहा था, अब वह खिक-खिक कर हँस पड़ा। गोपाल सरस हँसी हँसता है तो खिक्-खिक् कर ही हँसता है, उस हँसी में मानो एक छिपी गुदगुदी है, वह दूसरों को बहुत देर तक हँसा देती है। उस हँसी से रीतू बाबू, बाबुल—यहाँ तक कि विपिन शुष्क हँसी हँसने लगे। रीतू बाबू ने कहा, 'तुम्हारे गले के रस में खाँसी पैदा होती है गोपाल ? ऐसा खिक्-खिक् शब्द पैदा होता है !'

अबकी गोपाल तक ने जोरों से ठहाका लगाया। सचमुच वह हँसते-हँसते कुबड़ा हो गया। रीतू बाबू ने कहा, यह ट्राम-लाइन है गोपाल, उधर से ट्राम आ रही है। गिरोगे तो दब जाओगे। मंजरी ओपेरा का दाँत टूट जायेगा।'

गोपाल जरा दंतुला भी है। उसके दाँत टूट चुके हैं पर सामने के दोनों बड़े दाँत हैं। रीतू बाबू ने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया। बाबुल बोला, 'मैं इसी ट्राम पर सवार हूँगा। दस बज चुके हैं।'

बिडन स्क्वायर में भीड़ जम गयी है। बहुत सारे लोग हैं। रीतू बाबू ने कहा, 'वह क्या है ? क्या बात है रे विपिन ?'

विपिन ने कहा, 'एक भिखारी औरत सवेरे से ही तड़प रही थी। कुछ देर पहले मौत हुई है।'

रीतू बाबू बोला, 'बेहतर तो यही होगा भैया कि कुछेक बम गिरा कर सब खत्म कर दो। जापानियों ने क्या किया—कई दिन फटाफट गिरा कर रुक गये।

बोलते-बोलते ऊपर पड़ गया। नायक पक्ष यानी बयाना करने वालों का

आदमी बैठा है। उस कमरे में लेटा हुआ योगा मास्टर उसे मंजरी ऑपेरा की अनर्गल प्रशंसा सुनाये जा रहा है। और उसका उपलक्ष्य है नया नाटक गन्धर्व कन्या।

कह रहा, 'हाँ, लाजवाब नाटक है यह! अरे जनाब, नाटक का बाप है बाप! देखिएगा कि मंजरी देवी कैसा पार्ट करती हैं। साला, आग है, आग। वैसे ही गोरा बाबू के जयन्त का पार्ट। और वह नया छोकरा बाबुल—झंझटं झंझटं सत्यं झंझटं जगतंमयं झंझटं दिवसे रात्रे—उसके बाद क्या है? और कुमारी हीरोइन का एक नाच देखिएगा, लोग पागल हो जायेंगे, पागल। पाकपाड़ा के राजकुमारों ने आह, कितनी प्रशंसा की! कलकत्ता का 'फस्ट' दल है। कालीयदमन में कंठ जी ने जैसा दल बनाया था, शौकिया यात्रा में मंजरी ऑपेरा ने वैसा ही दल गठित किया है। महिलाएँ ही महिला का पार्ट करती हैं। और वे लड़कियाँ भी कैसी! जितनी खूबसूरती है वैसी ही जवानी, वैसी ही चितवन। वह जो कुमारी हीरोइन है, वह जनाब, भले घर की बाकायदा लिखी-पढ़ी लड़की है।'

गोपाल और रीतू बाबू ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया और नमस्कार कर बैठ गये। गोपाल ने बक्सा खोला और सिगरेट का पैकेट निकाल देते हुए कहा, 'पीजिये।' खुद ही तीली जला कर सिगरेट जला दी और बोला, 'विश्वकर्मा पूजा का बयाना, दो बयाना मिल चुका है। इसके बाद भी बयाना आया था, लेकिन मैंने लौटा दिया। उन लोगों ने जाकर मालिक और प्रोप्राइट्रेस को पकड़ा। इसीलिए उन्होंने बुला भेजा था और मैं वहीं गया था। अन्यथा न लें।'

वह आदमी बोला, 'नहीं-नहीं—'

'अन्यथा क्या लीजिएगा? मैं हाजिर हूँ। मान-सम्मान में कोई त्रुटि नहीं हुई है। कण्ठ जी की कितनी ही कहानियाँ सुनायी। वे कहते थे, 'कालदमुन का कौतुक, सात खून माफ। यानी यात्रादल के दोष को दोष के रूप में नहीं लेना चाहिए। जितना दुःख होता है उतना ही सुख। रात में राजा, दिन में फकीर।'

'मास्टर बहुत बक चुके हो। बीमारी बढ़ जायेगी, चुप रहो।' रीतू बाबू ने कहा।

गोपाल ने पूछा, 'कहाँ से आ रहे हैं?'

'भीमरापुरा कोलियारी से। बराकर से उत्तर में नयी कोलियारी है।'

'कब का बयाना करना चाहते हैं?'

'बराकर बाजार तो आप लोग लक्ष्मी पूजा में जाइएगा?'

'हाँ, वहाँ का बयाना दो रात का है।'

'हम यदि लारी दें तो दो दिन दस बजे से हम लोगों के यहाँ अभिनय कर सकते हैं?'

'पहले दिन एक बजे के पहले नहीं हो सकेगा। उन्हीं लोगों ने बताया है कि उनके यहाँ आठ बजे से शुरू करना है। एक-डेढ़ बज जायेगा। और अगर चार बजे से करें तो हो सकता है। दूसरे दिन ग्यारह बजे से। इसके अलावा यहाँ जो यात्रा

होगी वहाँ भी कहीं यात्रा होगी। दल का साजोसामान और आदमी जायेंगे, उसके बाद लौट कर बराकर आयेंगे। उसके लिए लारी रहनी चाहिए। चार मदद। एक बस यानी ढँकी हुई गाड़ी चाहिए।'

कितना लीजिएगा।'

'ढाई सौ। बराकर में दो सौ पच्चीस लिया है। वे लोग हर साल हम लोगों के नायक बने रहते हैं। उन लोगों के साथ किसी की तुलना नहीं हो सकती।'

'तो फिर नहीं हो सकेगा।'

'उससे कम होने पर हम लोगों की तनख्वाह का खर्च नहीं चल पाता है सर। आखिरी रात में संगीत रूपक है, रंगकर्मियों को ज्यादा देना पड़ेगा। दूसरा दल ज्यादा नहीं देता। लेकिन हम लोगों के साथ ऐसी बात नहीं है।'

'तो फिर चलता हूँ।'

गोपाल ने रीतू बाबू की ओर देखा। रीतू फर्श की ओर ताक रहा है।

गोपाल खाँसा, फिर भी उसने आँखें नहीं उठायीं।

दूसरे कमरे से योगा मास्टर लँगड़ाते-लँगड़ाते आया और बोला, 'मन में बात जँच गयी है मैनेजर बाबू। ये लोग मन से आये हैं, हमें भी करने का मन है। अब दर-दाम न करें, दो सौ में तय कर लें। समझ रहे हैं न, कण्ठ जी कभी वापस नहीं करते थे। कहते थे उन लोगों को गाना सुनने की पिपासा है—इसलिए मुरकी का दाम दे सकते हैं, दुकानदारों की तरह पानी नहीं देंगे। अरे बाबा, पैर तो टीसने लगा—'

असली बात तो यह थी कि गोपाल घोष उसकी ओर सीधी निगाहों से ताकने लगा था।

रीतू बाबू ने कहा, 'इतना ही ले लो जी। बूढ़ा योगा मास्टर बोल चुका है, ले लो।'

आँखों से इशारा किया—ले लो।

'आप लोग कह रहे हैं तो ले लेता हूँ। हाँ, बयाना कितना दीजिएगा?'

'एक सौ रुपया।'

गोपाल ने बक्सा खोल अपने दल का लेटरपैड निकाला।

बयाना कर वह आदमी चला गया। गोपाल मैनेजर ने एक बार योगा मास्टर को फटकारा। योगा मास्टर गुस्से में नहीं आया, स्वीकार करते हुए कहा, 'हाँ, अन्याय हो गया है मैनेजर। हाँ, हो गया है।'

गोपाल बात को पकड़े रहा, 'होगा ही क्यों?'

रीतू मास्टर नाई बुलवा कर बरामदे पर दाढ़ी बनवा रहा था और चुपचाप

सुन रहा था। अचानक विस्फोट हो गया। योगा मास्टर बोला, 'क्यों हुआ, यह कहना तो मुसीबत बुलाना है। गीत का ताल क्यों कटता है, ताल में व्यवधान क्यों आता है, बेहला का तार क्यों टूटता है ? मेरा परम पुरुष बहरा है, फिर भी मन क्यों उसके पीछे-पीछे भटकता है ? यह जिसकी-तिसकी बात नहीं है मैनेजर, कण्ठ जी की बात है।'

गोपाल को अब बरदाश्त नहीं हुआ। उसने कहा, 'ब्राह्मण जानकर कुछ भी नहीं कहा है। फिर कण्ठ जी-कण्ठ जी बोले तो रफा-दफा कर दूँगा।'

'क्यं ? क्या ? कण्ठ जी ने कहा है सो तुम रफा-दफा कर दोगे ? तुम पापी हो, महापापी ! चण्डाल हो चण्डाल ! तुझे मैं जनेऊ तोड़ कर शाप दूँगा।'

यह कह कर उसने जनेऊ दोनों हाथों में कस कर पकड़ लिया। काले मैले मोटे जनेऊ का धागा मजबूत है। गोपाल का चेहरा बुझ गया। रीतू बाबू ने नाई के उस्तूरे को सावधानी से हटा दिया और खड़े होकर गम्भीर स्वर में पुकारा, 'योगा मास्टर !'

इस पुकार पर योगा मास्टर स्थिर हो गया। रीतू बाबू ने कहा, 'जनेऊ छोड़ दो।'

'कैसे उसने कण्ठ जी को अपमानित किया ? बोला, कण्ठ जी को रफा-दफा कर दूँगा।'

'नहीं। मैनेजर ने ऐसा नहीं कहा है। कहा है, बार-बार कण्ठ जी-कण्ठ जी करोगे तो तुमको रफा-दफा कर दूँगा। कण्ठ जी को नहीं कहा है। वे साधक और पुण्यात्मा थे। छोड़ो, जनेऊ छोड़ दो।'

योगा मास्टर ने तत्काल जनेऊ छोड़ दिया। रीतू बाबू बोला, 'जाओ, उस कमरे में चले जाओ। मैनेजर से माफी माँग लो। वरना—'

योगा मास्टर तत्क्षण बोल उठा, 'मुझे माफ कर दो मैनेजर। मैं समझ नहीं सका। हाँ, समझ नहीं सका। यानी अक्ल कम है न !'

उसके बाद जरा झुक गोपाल का हाथ थामकर बोला, 'माफ कर दो भाई। एक ही साथ कितना गाँजा पी जाते हैं। दोस्त हो। दूसरी बात है कि तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगड़ता, जनेऊ तोड़ने से भी नहीं बिगड़ता। कसम खाकर कहता हूँ, कितनी ही बार जनेऊ तोड़ा है, लोगों को शाप दिया है, किसी का भी कुछ नहीं बिगड़ा है।'

गोपाल हँस दिया।

रीतू बाबू दाढ़ी बनवाने को फिर से बैठ गया। नाई उस्तरा छुआये कि इसके पहले ही पूछा, 'बयाना की क्या हालत है ? कितने दिन के लिए तय हुआ ? मायने यह कि ढोल पीटने से कुछ काम निकला ?'

'हालत अच्छी है मास्टर साहब।'

'कैसी ?'

'पूजा में कलकत्ते में अष्टमी-नवमी को दो अभिनय। सात बजे मल्लिक के

मकान में, बारह बजे शोभा बाजार सार्वजनिक पूजा में। और दशमी बाद दे कर एकादशी-द्वादशी को कलकत्ते में। उसके बाद दो दिन नहीं। पूनम के सबेरे कूच करेंगे। लक्ष्मी पूजा मे दो दिन बराकर। उसके साथ यह दो दिन हुआ। उसके बाद कई दिनो का अन्तराल। काली पूजा से लगातार सात दिन तक—किसी दिन दो शो, किसी दिन एक।'

'जगद्धात्री पूजा में कहाँ होना है ?'

'आसनसोल के पास।'

'रात में ?'

'कान्दी राजा की हवेली में।'

दाढ़ी बनवाना खत्म होने पर उठकर बोला, 'तो फिर अच्छा ही है।' यह कहकर विपिन को पुकारा, 'विप्पन रे, विप्पन !'

रीतू बाबू विपिन को स्नेह से विप्पन कहता है।

'जी ?'

'एक बार चले जाओ भैया। एक अदद ले आओ। छोटा-सा एक। मांस-भात का इन्तजाम करते आओ। रामू महराज से कह आओ। लो, दो रुपये का यह नोट रख लो। एक सिगरेट चाहिए। ज्यादा लगे तो दे देना। बाद में दे दूंगा।'

सीढ़ी के सामने योगा मास्टर का कमरा है। योगा ने कहा, 'अरे शिवनन्दन ! क्या खबर है ? यही तो अभी मैनेजर आया, फिर तू क्यों आया है भैया ?'

'चिट्ठी है। बड़े मास्टर बाबू यहाँ है ?'

'रीतू मास्टर ? हैं। एक बयाना हो गया।'

शिवनन्दन ने इस कमरे में प्रवेश किया। गोरा बाबू का खत ले आया है। गोपाल ने पढ़ा : आपको बुंची के यहाँ नहीं जाना है। बुंची खुद ही आयी थी। बात तय हो गयी है। मास्टर साहब हों तो उन्हें रोक रखिएगा। यहाँ भेज दीजिएगा। यही उनको भोजन करना है। बराकर की साहब कोलियारी से खत आया है, उसके कालीपूजा के दिन मे फेर-बदल हुआ है। विलायत से साहब आ रहा है, वह काली-पूजा के दस दिन बाद कोलियारी आयेगा। उत्सव उसी समय होगा। साहब यात्रा देखेगा। हिसाब करके देखना है कि कहीं दूसरी जगह का कोई बयाना है या नहीं। इति।—विजय चक्रवर्ती।

ग्यारह

अबकी पूजा आखिरी क्वार में है। २८ आश्विन, अक्टूबर १४ को। बयालीस-तैंतालीस ईसवी में लड़ाई चल रही है, देश में अकाल और सूखे का दौर चल रहा है। न तो लड़ाई खत्म हुई है और न ही अकाल और सूखा। तब हाँ, उस वक्त की तरह अब बम का हादसा नहीं है और न ही अकाल और सूखे का वह रूप। राशन और क्यू जारी हो गया है, कपड़ा कंट्रोल में मिलता है, किरोसिन और कोयला कंट्रोल में मिलता है—साथ ही ब्लैक मार्केट भी फल-फूल रहा है। फलस्वरूप युद्ध के आतंक से इन सबों के हालात ऐसे हो गये हैं जिस तरह कि हैजे से बचा आदमी कंकाल जैसा हो जाता है। बहुत सारे लंगर खुल गये हैं। महिला आत्म-रक्षा समिति दूध वितरण कर रही है, कम्युनिस्ट इसे जन-युद्ध कह कर चिल्ला रहे हैं, लेकिन दूसरी ओर लोग बिलकुल सुस्त हो गये हैं। लगता है, ताकत नहीं रह गयी है। काले बाजार का बोलबाला है, उसके साथ ही सार्वजनिक पूजा—मिलेटरी कॉन्ट्रेक्टर और व्यवसायियों के घर की पूजा और समारोहों में वृद्धि हो गयी है। हवा में नोट उड़ रहे हैं, जिनके पास गाड़ी है वे दौड़ कर पकड़ रहे हैं और जो लोग पैदल चलते हैं वे दौड़ते हैं तो ठोकर खाकर गिर पड़ते हैं। कुछ फालतू नोट उन पुरुषों और महिलाओं को प्राप्त हो रहे हैं जो गली-कूचे में घुसने की हिम्मत करते हैं, उन्हें जानते-पहचानते हैं। इन गलियों के दोनों तरफ की दीवारों से नोट टकराते हैं और दस-बीस नीचे गिर पड़ते हैं। मंजरी ऑपेरा का दो सौ-दो सौ पच्चीस रुपये का बयाना मार खा गया है। यह बात विश्वकर्मा-पूजा में ही समझ में आ गयी। माणिकतल्ला के नहर के किनारे बिस्कुट के कारखाने में मंजरी ऑपेरा की मजलिस जमने वाली थी। इसी कारखाने में मंजरी ऑपेरा ने अपने प्रथम व्यवसाय की मजलिस की शुरुआत चार वर्ष पहले की थी। 'सती तुलसी' खेला गया था। दक्षिणा के तौर पर पचहत्तर रुपये मिले थे। तभी से विश्वकर्मा-पूजा में नियमित तौर पर उन लोगों की मजलिस जमती है। कारखाना का आदमी न भी आता है तो गोपाल खुद जाकर बयाना ले आता है। उसके पहले पाकपाड़ा के राजा के महल में उनकी जो मजलिस जमती है वह व्यावसायिक मजलिस नहीं होती है। वास्तव में वह ड्रेस-रिहर्सल है। अबकी बिस्कुट कम्पनी के आदमी खुद ही थियेटर कर रहे हैं, इसलिए वे नहीं आये। गोपाल घोष स्वयं गया था और दावा जताया गया था कि ठीक है, हम लोग बिना पैसे का अभिनय कर जायेंगे। प्रोप्राइट्रेस ने यही कहा है। हम लोग चार से आठ बजे के बीच मंचन करके चले जायेंगे। उसके बाद आप लोगों का थियेटर होगा। अगर कुछ देना चाहें तो दीजिएगा और नहीं तो नहीं। हम लोगों के आने-जाने, असबाब लाने, ले जाने और मजलिस का खर्च दीजिएगा।'

उन लोगों ने कहा था, 'आप लोगों का नाटक क्या गंधर्व कन्या है? लोग कहते हैं कि जमा नहीं था।'

'किसने कहा ?'

'दूसरे दल के लोग कह रहे हैं।'

'ठीक है, पाकड़पाड़ा के कुमार का सर्टिफिकेट देख लीजिये।'

सर्टिफिकेट गोपाल के पास ही था। गोरा बाबू खुद जाकर कुमार साहब से लिखा लाया है। रीतू बाबू ने सलाह दी थी। क्योंकि दूसरे दल वालों ने जोर-शोर से अफवाह फैलायी थी। कुमार साहब ने खासा अच्छा प्रशस्ति पत्र दिया है। लिखा है—आखिरी दृश्य को बुरा नहीं कहा जा सकता, तब हाँ, जमा नहीं। लेकिन जमना ही एकमात्र गुण नहीं है। दूसरी बात है कि उसमें संशोधन भी किया गया है।

'जी हाँ, संशोधन किया गया है। हीरोइन को बदल दिया गया है।'

'हाँ, वह लड़की बड़ी ही अनाड़ी है। तब हाँ, नाचती बहुत अच्छा है।'

'उसका नाच रखा है। वह है।'

'यह कैसे हुआ ?'

'थोड़ी बहुत चतुराई करने से हुआ। मंजरी स्वयं मालविका की भूमिका में उतर रही है।'

'यह क्या! शुचि की भूमिका में कौन उतरेगी ?'

'बुंची नामक एक पुरानी ऐक्ट्रेस है, वही उतरेगी। अच्छी ऐक्ट्रेस है। थियेटर में थी। अच्छा रोल अदा करेगी।'

'अच्छा करेगी ? सो कर भी सकती है। शुचि से बुंची शब्द मिलता-जुलता है।'

वह हँस दिया था। कुमार साहब दिल्लगी-ठिठोली बहुत पसन्द करते हैं। उन्होंने जो कुछ लिखकर दिया है वह रखने लायक है। उसे बँधवाकर रख देगा, गोरा बाबू ने यही तय किया है। उसके पहले ब्लॉक बनवा लिया है। इश्तहार के लिए पैम्फलेट छपवायेगा। प्रेस के काम से ही गोपाल निकला था।

सर्टिफिकेट पढ़ते हुए कारखाने का मैनेजर बोला, 'इसका मानी क्या है ?, पण्डित-विद्वानों का पेचीदा वाक्य समझ में नहीं आता है—परितुष्ट हुआ, लिखने के बाद लग रहा है कि वाक्य ठीक नहीं हुआ, संतुष्ट लिखूं सो वह भी ठीक नहीं होगा। तृप्ति—परम तृप्ति हुई है, लिखना ही ठीक रहेगा। नाटक के अभिनय से परितुष्टि मिली है। जितना सुन्दर नाटक है, भाव-भाषा-बुनावट-अभिनय भी वैसे ही हैं। बंगाल के लोगों को सुधा-पान का आनन्द मिलेगा।

गोपाल बोला, 'गोरा बाबू ने कहा था, उसका अर्थ समझ कर भी नहीं समझा जा सकता है। गंध की तरह पकड़ना होगा।'

'बापरे! वह तो और मुश्किल है। ठीक है, वही कीजिएगा।'

थियेटर बने-बनाये मंच पर ही अभिनीत हुआ था। एक परदा पीछे की ओर रख वादक वृन्द मंच पर मजलिस की तरह ही चारों तरफ बैठ गया। उसी के बीच अभिनय हुआ। प्रवेश-प्रस्थान विंग्स के भीतर से हो कर। अभिनय की दृष्टि से अच्छा हो रहा। इसमे असुविधा बस यही होती है कि तीन तरफ बन्द रहता है और एक ओर, सामने की ओर, चेहरा रख कर यात्रा का गीत गाना पड़ता है। इससे यात्रादल की जो हिलने-डुलने की अदा है वह मेल नही खाती है। यात्रा की मजलिस में चारों तरफ चेहरा घुमा-फिरा कर गीत गाना पड़ता है। योगा मास्टर कहता है, 'कण्ठ जी कहते थे, घूम-घूम कर भैया और वह भी ताल-ताल पर। यात्रा-दल में अभिनय करने से चारों तरफ चार चेहरे होने चाहिए, चतुर्मुख ब्रह्मा होना पड़ता है।'

रौतू मास्टर ने यह कथन कण्ठ जी को प्रणाम निवेदित करते हुए स्वीकार किया है, वह यह भी सुनाता है। रिहर्सल में उसका अभ्यास करना पड़ता है। मंच पर उस अभ्यास को परे रख कर अभिनय करना पड़ता है। उसमें कोई खास असुविधा नही होती। बड़ों को तो कतई नही। छोटों को थोड़ी-बहुत हुई है। इसमे सुविधा भी बहुत है। सीधे सामने की ओर शब्द उछालने से तमाम लोग सुन सकेंगे, तीन ओर से बाधा पाने के कारण एक ओर उसकी गति तीव्र हो जाती है।

प्रथम दृश्य से ही खेल जमने लगा था। यहाँ भी बंसी के गीत ने समाँ बाँध दिया। सखियों के दल मे दाहिनी ओर आशा थी, बायी ओर अलका। अलका का मुँह हालांकि जरा छोटा है मगर उसके चेहरे पर परिमार्जित सौंदर्य का एक लावण्य है। उस पर वह मेकअप करना जानती है। उसके पास हमेशा अपना एक छोटा-सा बक्सा रहता है। अबकी उसे अच्छी तरह सहेज कर रखा है। उससे भी बढ कर बात यह है कि उसकी उम्र कम है, उसमे जवानी की खूबसूरती है। इस तरह की सखी यात्रादल में नही रहती है। यात्रादल की सखियाँ छोटे-छोटे लड़को की होती है। चौदह वर्ष बीतते न बीतते लड़कों की आवाज मोटी हो जाती है, चेहरे पर फुंसी निकल आती है। किसी-किसी के चेहरे पर दाढी-मूँछ की हल्की हरे रंग की झलक दिखायी पड़ने लगती है। और वे छोकरे युवती तो दूर की बात, किसी भी हालत मे किशोरी जैसे भी नही लगते हैं। फिर भी उनके सीने मे कंचुकी पहनायी जाती है। लेकिन फबती बिलकुल नहीं। यहाँ दोनों ओर सचमुच ही दो युवती-सखियाँ हैं। उन्हें ओट मे रख खड़े होते ही दर्शकों का समूह खुश हो उठा था। उनके मन और आँखें परितृप्त हो गयी थी। इस सखीदल मे नाचने मे अलका को असुविधा हुई थी। वह हमेशा अकेले ही नाचने की अभ्यस्त रही है। उसमें अदाकारी ही ज्यादा रहती है। सब के साथ पैरों का ताल मिलाते हुए, देह की थिरकन को एक जैसा रखते हुए, नाचना उसके लिए पहला मौका है। इसके अलावा बार-बार चितवन चलाते हुए जरा अदाकारी के साथ बदन को थिरकाते और हँसते हुए नाचना उससे ठीक-ठीक

हो पाता है। वंशी विम्स के पास से बार-बार प्राम्टिंग की तरह कह रहा है, 'जरा मिर्च-मसाला मिलाते हुए। हँस कर, आँख नचाते हुए।'

शुरू में अलका समझ नहीं सकी कि उसी से यह बात कही जा रही है। उसने मुँह घुमाया नहीं था। वंसी ने अब की खँखार कर कहा, 'उहुँ-उहुँ'। अलका को वह क्या कह कर पुकारे, यह बात वंसी जैसे विनत और अनपढ़ डाँसिंग मास्टर के दिमाग में नहीं आयी थी। अब वंसी के पीछे से गोरा बाबू की आवाज आयी, 'अलका! अलका!'

अलका ने जैसे ही गरदन घुमायी और वंसी कुछ कहे कि इसके पहले ही गोरा बाबू ने अपनी बात अदा के साथ—यानी नाच की अदा में देह को नचाते, चितवन चलाते हँसते हुए कहा, 'इस तरह। आशा की तरह। जरा सेक्स मिला दो।'

अलका फिक् से हँस दी थी।

गोरा बाबू ने कहा, 'हाँ इसी तरह। चलाते जाओ।'

'दूसरी ओर सामने के विंग्स में ब्रह्ममित्र रीतू बाबू खड़ा था और सर्वांगी शोभा। गोरा बाबू को नाच दिखाते देखकर वे लोग हँस पड़े। शोभा ने मुँह में कपड़ा दबा लिया। तो भी खिक्-खिक् शब्द बाहर निकल पड़ा। उसके पास योगा बाबू था। वह विस्मय से कुबड़ा हो गया और कौतुक के साथ बोल पड़ा, 'बापरे!' उसके बाद अपना मुँह हाथ से ढँक लिया। रीतू बाबू नहीं हँसा। उसके लिए यह हँसने लायक घटना नहीं थी। गोरा बाबू नहीं दिखाता तो, हो सकता था, वही नाच कर दिखा देता। दिखाना ही पड़ता है। खास कर स्टेज पर। पार्ट में खामी होने से, गलती होने से कुशल अभिनेता विंग्स की फाँक से चुप के से अथवा फुसफुसाकर बोलने की अदा और अंगों की भंगिमा दिखा देते हैं। यात्रादल की मजलिस में भी सहअभिनेता फुसफुसाकर कह देते हैं कि जोर से बोलो या आवाज ऊपर उठाओ। प्ले जम जाता है तो बड़े-बड़े ऐक्टर तक बच्चे की तरह नाचने लगते हैं।

दूसरी ओर ग्रीनरूम में वही हुआ।

नृत्य के घुंघरू और गीत के स्वर के ताल-ताल पर पाँव थिरकने लगे। जो लोग बैठे थे वे खड़े हो गये और जो लोग खड़े थे वे मंच की ओर आगे बढ़ गये। बाबुल बोस मेकअप करते-करते एक बार चक्राकार घूम जाता है और अपने सिर पर एक थप्पड़ जमा कर कहता है, 'अहो-अहो। हा हतोस्मि। देख पाया नहीं।'

मजरी बुंची से बातचीत कर रही थी।

बुंची मँजी हुई अभिनेत्री है। घुंघराले बाल, नाक छोटी, गोल चेहरा, बड़ी-बड़ी आँखें, ठुड्डी का हिस्सा जरा सामने की ओर निकला हुआ, चालीस साल में भी जवानी बरकरार, सिर्फ जरा अधिक भारी-भरकम देह। मजरी ने कुछ दिनों तक मिनर्वा थियेटर में अभिनय किया था—लगभग आठ वर्ष पहले। उन दिनों मंजरी तरुणी नायिका थी, यंग हीरोइन। यात्रादल में जिसे कुमारी नायिका कहते हैं।

बूंची उस समय बड़ा और प्रमुख पार्ट करती थी। ठीक जैसे आज कर रही है। आज वह शुचि है और मंजरी मालविका। तब वे एक दूसरी को रश्क की निगाह से देखती थीं। यह उसको मारने की कोशिश करती—यानी अपने से छोटी बना देने की कोशिश करती। एक दिन मंजरी ने अभिनय के बीच एकाएक नये ढर्रे से बूंची की बात मानकर प्रवेश किया था और उसे तालियाँ मिली थीं। पहले वे लोग तीन-चार एक साथ प्रवेश करती थीं, बूंची को अधिक महत्त्व दिया जाता था। वह जो कुछ कहती थी वह न्यायसंगत नहीं था, मगर किसी को विरोध करने का साहस नहीं होता था। अन्ततः मंजरी को यह बात बरदाश्त के बाहर महसूस हुई थी और उसने कहा था, 'यह अन्याय है, मैं इसका विरोध करती हूँ।' उससे फलाफल जरूर निकलता लेकिन तालियाँ नहीं बजती। नाटककार उस दिन मंच पर था। उसने कहा था, 'तुम उन लोगों के साथ प्रवेश मत करो। पात्र के अन्तिम शब्द के साथ प्रवेश करो। देखो, क्या होता है।' मंजरी ने वैसा ही किया था।

बूंची का पार्ट था : यह मेरा कठिन आदेश है। जो व्यक्ति आदेश को नहीं मानेगा, उसका विरोध करेगा—

तत्क्षण मंजरी ने प्रवेश किया था और अभिमानिनी की भंगिमा में खड़ी होकर कहा था, 'विरोध मैं कर रही हूँ। तुम्हारे इस अन्याय आदेश का सबसे पहले मैं ही उल्लंघन करूँगी।'

इसका फलाफल बिजली की कौंध के स्पर्श जैसा काम कर गया था। दर्शकों का समूह उसके स्पर्श से चकित और उल्लास से प्रदीप्त हो उठा था और उसका अभिनन्दन करते हुए तालियाँ बजायी थीं। बूंची का चेहरा लटक गया था। उसके बाद जी-जान से उत्तेजना संचारित करने के बावजूद मंजरी के पार्ट के व्यक्तित्व के ऊपर उठ नहीं सकी। मंच से बाहर आने के बाद बाघिनी की तरह उस पर टूट पड़ी थी, 'क्यों तुमने इस तरह प्रवेश किया? क्यों?'

मंजरी ने नाटककार को इशारे से दिखा दिया था। बूंची ने इस पर भी हथियार नहीं डाला था। उसने थियेटर के मैनेजर के पास जाकर शिकायत की थी। और उसकी जीत हुई थी। नाटककार गुस्से में आ गया था मगर मैनेजर ने पूर्ववत् व्यवस्था जारी रखी थी। प्रतियोगिता और होड़ के बावजूद प्यार था। मंजी हुई ऐक्ट्रेस रहने पर भी मंजरी के द्वारा किये गये पार्ट के सम्बन्ध में थोड़ा-बहुत पूछ लेती थी। रिहर्सल में मंजरी ने एक बार दिखा दिया था और उसी से उसने पार्ट को अनायास ही स्वयं में ढाल लिया था।

नौकरी में जिस दिन घुसी ठीक उसी दिन तीसरे पहर ऐसा कर लिया था। तनख्वाह एक सौ पच्चीस रुपये माहवार निश्चित हुई थी। खुराकी एक रुपया। बूंची ने प्रसन्नता के साथ नौकरी स्वीकार की थी। बोली थी, 'मंजरी, तुमने मेरी इज्ज़त रख ली। ऐसी हालत हो गयी थी कि क्या कहूँ?'

थियेटर-यात्रा में तब हाल-हाल में तनख्वाह में बढ़ोतरी आयी थी।

थियेटरों में बड़ी-बड़ी अभिनेत्रियों को भी एक सौ पच्चीस रुपया नहीं मिलता था। उस दिन मंजरी के घर पर रिहर्सल हुआ था। रीतू बाबू, गोरा बाबू, मंजरी और बुंची उपस्थित थे। शोभा को मंजरी ने बुला भेजा था, मगर तबीयत ठीक न रहने की वजह से वह नहीं आयी थी। सचमुच ही बिस्तर पर लेटी थी। अपने आप बुदबुदा रही थी। बीच-बीच में जोरों से 'बापरे, बापरे' चिल्लाती थी। शुरू में रिहर्सल करते-करते ये लोग खामोश हो गये थे। शिवनन्दन वहाँ था और फरमाइश पूरी कर रहा था। उसने हँसकर कहा था, 'आज उसने पी है।'

'पी है ?'

'हाँ। मैं ही तो ले आया था।'

'अच्छा।' रीतू बाबू ने कहा था, 'लीजिये, चलने दीजिये। मेरी तकदीर ही ऐसी है !'

बुंची मुँह मटकाकर हँस रही थी। मंजरी भी। गोरा बाबू ने कहा था, 'विचित्र चरित्र हो तुम नारी। छिन्नमस्ता धूमावती तुम्हीं हो सकती हो। लीजिये, बोलिये मास्टर साहब।'

रीतू बाबू ने हँसकर बुंची से कहा था, 'हँस क्यों रही हो ?'

'क्यों नहीं हँसूंगी ?'

'हँसोगी इसलिये नहीं कि आज तुम आग की लपट में घी की आहुति की तरह आ गयी हो।'

'मुझे जैसे और कोई काम नहीं है।'

'तुम्हें काम शायद है लेकिन वह सोच रही है कि उसे है।'

'सच ?'

'वह बात वही बतायेगी। मैं कैसे कहूँ। लो, अब बोलो। कहलाइए सर।'

किताब थामे प्राम्प्टिंग कर रहा था। गोरा बाबू प्रथम दृश्य में ब्रह्ममित्र है। सर्वाणी मुखि। गोरा बाबू ने कहा, 'कहिये मास्टर साहब, आ बिटिया आ, गोद में आ, छाती से लग जा।'

रीतू बाबू ने इन शब्दों को खड़ा होकर, हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा। गोरा बाबू ने प्राम्प्टिंग की, 'नहीं-नहीं पिता। नहीं।'

मंजरी ने घुटने के बल बैठ उन शब्दों को कहकर दिखा दिया। पूरे पार्ट को आखिर तक कर गयी। उसके बाद बुंची उठी। बोली, 'एक बात कहूँ ?'

'बोलिए।'

'घुटने के बल बैठने के बजाय अगर मैं प्रणाम करने जाऊँ और तभी वे उन शब्दों को कहें और मैं पीछे की ओर खिसकती हुई देखूँ—तो यह क्या अच्छा नहीं रहेगा ?'

'फिर लड़की के बाप को प्रणाम करने का 'मोमेन्ट' नहीं रहेगा। इसके अलावा उस तरह आगे बढ़ना और पीछे हटना खराब दीख सकता है।'

'हाँ, सो तो सही है। आपने ठीक कहा है।'

रिहर्सल में उसने अच्छा किया था और शुचि की मानसिकता उसके चेहरे की बनावट के कारण अच्छी तरह उजागर हुई थी। बीच-बीच में मंजरी से भी अच्छा किया था। मंजरी ने भी उस मजलिस में मालविका का रिहर्सल किया था। सचमुच ही रिहर्सल में मंजरी की आँखों की तन्द्रा बोझिल, अवसन्न हो जाने की उस तरह की क्रिया ने अन्तिम दृश्य में जान ला दी थी।

रीतू बाबू ने कहा था, 'शाबाश ! सिर पर पगड़ी या टोपी रहती तो नीचे उतार कर रख देता। अहा, देवता भी आज एक और जयन्त बन गये।'

मंजरी ने हँसकर कहा था, 'यह पार्ट मेरा है मास्टर साहब !'

'हाँ।'

'आठ वर्ष के पहले के मैं और तुम होते तो देखती कि क्या होता। उस नाटक की बहुत-सी बातें मुझे अच्छी लगती हैं, लेकिन एक बात बहुत ही अच्छी लगती है। जीवन मे समाप्ति है, रुका जा सकता है, लेकिन मुड़ा नही जा सकता पीछे।'

'फिर भी बहुत चल चुके हैं। अच्छा हुआ है। बुंची कह रही थी, बढ़िया हुआ है।'

'बहुत ज्यादती हो तब तो हो चुका।' गोरा बाबू ने कहा था।

रीतू बाबू ने कहा था, 'यात्रादल को उसे छोड़ने में काफी कुछ वक्त लग जायेगा सर। चाहे मेलोड्रामा ही क्यों न हो मगर नाटक जमा है भरपूर ! अब कुमार विमल से एक प्रशस्ति-पत्र लेकर इश्तहार छपवा कर बंटवा देना है। इसी नाटक से हम लोगों का जयजयकार होने लगेगा।'

मंजरी ने कहा था, 'बुंचीदी शुचि का पार्ट मुझसे भी अच्छा करेगी।'

बुंची ने कहा था, 'तुम क्या कह रही हो बहन ! तुम काफी तरक्की कर चुकी हो। अभी —'

उसकी बात काटते हुए मंजरी ने कहा था, 'मैंने झूठ नही कहा है बुंचीदी। कसम खा कर कहती हूँ। वह पार्ट मुझे अच्छा नही लग रहा था। मन के लायक अच्छा होगा कैसे ?'

'क्यों, पार्ट तो अच्छा ही है बहन।'

'वह तो बहन मन की बात है।'

'समझ गयी। सुना भी था। मालविका जयन्त के मिलन में उत्ताप है। हाँ, उत्ताप है।'

गोरा बाबू सहसा उठकर खड़ा हो गया था और बरामदे की रेलिंग से पीठ टिकाये आकाश की ओर देखते हुए बोला था, 'ओह, कितने तारे हैं और कितनी सुन्दर चाँदनी से भरा आकाश ! बादल तैर रहे है—'

रीतू बाबू बोला, 'इस वक्त साइरन भी कर उठे तो वश के बाहर की बात

हो जायेगी। आइये, वापस आकर बैठिये। शिवनन्दन गला सूख गया है भैया। बस, डेरे पर ही रुक गये? रिहर्सल ओवर हो चुका।'

रिहर्सल के दौरान शराब पीना वर्जित है। शिवनन्दन ने उत्तर दिया, 'मैंने सब कुछ रेडी रखा है मास्टर बाबू।'

'तो फिर एवररेडी बैटरी की रोशनी दिखाओ, शाम बहुत पहले बीत चुकी है।' मंजरी उठकर खड़ी हो गयी थी, 'बापरे, पूजाघर जाकर मैंने प्रणाम नहीं किया है।'

'मैं भी चल रही हूँ बहन। जाकर रिक्शा ला दो न भैया शिवनन्दन।'

'गोरा बाबू पेय पदार्थ के मजमे में भी अनमना जैसा था। रीतू बाबू ने पूछा था, 'देवता, आप इतने गुमसुम क्यों हैं? नाटक जमा और बेहद जमा। फिर भी—'

गोरा बाबू ने हँसते हुए कहा था, 'जरा सोच रहा हूँ।'

'क्या?'

'शुचि के पार्ट के प्रति अन्याय हो गया है। कैरेक्टर में खामी आ गयी है।'

'बात क्या है? ममता हो रही है जी? क्यों?'

मंजरी ने कहा था।

'तुम?'

'हाँ सुन चुकी हूँ।'

'मैं क्या झूठ कह रहा हूँ?'

'मैंने भी झूठ नहीं कहा है। उसके प्रति ममता न होती तो तुम यह बात नहीं कहते। दादा के श्राद्ध के समय तुमने जो पत्र लिखा था मुझे नहीं दिखाया था, लेकिन मैंने देख लिया था। उसके बाद भी अगर कहो कि शुचि का पार्ट कठोर बनाकर तुमने अन्याय किया है तो फिर मैं क्या कहूँ। इसका कारण या तो तुम्हारी ममता या मेरे प्रति वितृष्णा है।'

गोरा बाबू ने स्थिर दृष्टि से मंजरी की ओर देखा था। उसकी बात समाप्त होते ही कहा था, 'उस पत्र को तुमने देखा था?'

'हाँ।'

'लेकिन—'

'लेकिन क्या? इसके बाद भी लेकिन?'

'हाँ। वह लेकिन यह है कि कमला और शुचि एक नहीं हैं। कमला रक्त-मांस की मानवी है और शुचि नाटक का चरित्र—मेरी सृष्टि। कमला के प्रति अन्याय, करुणा, घृणा वगैरह करने का मुझे अधिकार है, लेकिन शुचि के प्रति नहीं।'

'अरे बाबा! बड़ी-बड़ी बातें! ठीक है, जिन बातों को छाँट दिया है, उन्हें रख दो। बुंबीदी को तालियाँ मिलेंगी।'

'मैं चुप्पी धारण कर रहा हूँ।'

मंजरी का पार्ट पाँचवें अंक के अन्तिम दृश्य में है। वह मेकअप करा रही थी। यूंथी की ओर उसने जिज्ञासु मुद्रा में आँखें उठा कर देखा। यूंथी ने उस सवाल का जवाब न देकर पूछा, 'मालिक की ब्याहता औरत इतनी दबंग थी ? बाप रे !'

मंजरी ने हँस कर कहा, 'हम लोगों के मास्टर साहब सदाशिव हैं।'

यूंथी हँस पड़ी। हँसते हुए कहा, 'उस पार्ट की बात से ही चर्चा छिड़ी। वे खुले दिल के आदमी हैं न। उस पर नशे का सेवन करते हैं। पूछते ही कहा, 'प्रारम्भ की बातें बिलकुल सही हैं।' वह कैसी रमणी है, यह गोरा बाबू ही जानते हैं। उफ्, मुझसे कहा है, लेकिन मंजरी से शायद नहीं कहा है। बताया था : मास्टर साहब, मंजरी से मुलाकात न हुई होती तो आखिरकार मुझे गुदकुशी ही करनी पड़ती। तुमने भी शायद देखा है।'

'देखा है। हम लोगों के पिता एक ही व्यक्ति थे। वह ऐसे वैसे नहीं थे, बड़े ही कठोर थे। उन्हीं को वह जो—'

ठीक उसी समय मंच के किनारे से ग्रीन रूम तक उल्लास और कौतुक की लहरें तैरती हुई आयीं। मंजरी के परदे से घिरे छोटे कमरे को भी ये लहरें आन्दोलित कर गयीं।

बाँसों से बँधे थियेटर के स्टेज का ग्रीन रूम है। तिरपाल से आफिस-स्टोर के बरामदे के आस-पास के हिस्से को घेरकर स्टेज संबद्ध कर दिया गया है। एक छोटी सी गली औरतों के लिए है, बाकी पुरुषों के लिए। पहली ओर मर्द लोग हैं; औरतें बिलकुल एक किनारे। वरना दस के मर्द झाँकेंगे। उसी के बीच मंजरी आँपेरा के मैनेजर के आदेश पर एक छोटी-सी परदा घिरी झोपड़ी प्रोप्राइट्रेस के लिए तैयार की गयी है। वहीं एक मेज और एक कुरसी भी है। बाकी लोग यात्रादल के रिवाज के अनुसार वेश-भूषा के लम्बे बक्से पर अपना-अपना मेकअप बॉक्स और टीन का छोटा सूटकेस लिए बैठे हैं। लोगों को बैठने के लिए वेश-भूषा का काला ट्रंक नहीं मिलता है। वे फर्श पर बिछावन दरी या जो भी मिल जाये, लेकर बैठते हैं। स्टेज के विंग्स के किनारे से मर्दों के ग्रीन रूम को गुंजाते हुए गोपालीबाला उस लहर को ढोकर ले आयी थी। तब औरतों के ग्रीन रूम के एक किनारे मंजरी के लिए घिरे कमरे में मंजरी और यूंथी के अतिरिक्त कोई दूसरी औरत न थी। शोभा सर्वाणी है, वह स्टेज पर अभी तुरन्त जाने वाली है। ब्रह्ममित्र के बाद ही। आशा अलका और वह किशोरी लड़की मजमे में नाच रही है। गोपाली भी वहीं थी, वह बहुत हँसा करती है। हँसी का उसे मर्ज है। रौतू बाबू उसे दिखावटी हँसी कहते हैं, योगा ठनकदार हँसी। इस पर भी वह हँसती है। आयेदिन बावुल ने आकर उसका नाम विस्कारणी टूथपेस्ट, थर्टी टु रखा है। मैनेजिंग एजेन्ट नाट्य कम्पनी। इस पर वह आजकल हँसकर लोट-पोट हो जाती है। ही-ही कर हँसते हुए गोपाली ने ग्रीन रूम में प्रवेश किया और हँसी जारी रखा।

मंजरी चकित हो उठी, 'इतनी हँस क्यों रही है ? अभी तो कोई कॉमिक

सीन नहीं, सीरिअस सीन है। गीत हो रहा है ?' बुंची और मंजरी दोनों के पाँवों के तलवे छन्द और ताल पर गोपन नृत्य कर रहे हैं। अभी हँसी की कौन-सी बात है ? किसी ने कुछ हँसने वाला काम किया है ? पाँव फिसल गये क्या ? या किसी के बाल या दाढ़ी खुल गयी ? या कोई बेतुकी बात बोल गया ? ऐसा होता है। थियेटर में भी होता है। एक बार एक नामी ऐक्ट्रेस प्रभावोत्पादक पार्ट करते-करते 'तुम्हारा छिन्न सिर' की जगह 'तुम्हारा छिन्न छिर' बोल गयी थी—। फिर अचानक रुक गयी थी। स्टेज के ऐक्टरों से शुरू कर ऑडिटेरियम तक हँसी के ठहाके से लोट-पोट हो गया था। वैसा होने से प्ले के बारह बज जाते हैं। सर्वनाश ! पहली मजलिस में ऐसा हुआ तो आज का प्ले जम नहीं पायेगा। नये नाटक का अभिनय समाप्त हो जायेगा। मंजरी ने पूछा, 'क्या हुआ ?'

बुंची ने परदा हटा कर देखा और कहा, 'गोपाली हँस रही है। वैसी कोई बात नहीं है।'

लेकिन मंजरी चुपचाप नहीं रह सकी। वह बाहर निकल आयी और उसके साथ बुंची भी। उसका पार्ट भी इस सीन में है।

पुरुषों के कमरे में बाबुल बोस उस समय भी चक्राकार घूम रहा था और गा रहा था—टाइमायर डायर डायर, डब्ले सडर डाइनो मोनाई—। टाइमा—। गीत था बङ्गला का—तिमिरे धीरे धीरे डुबलो दिनमणि। मेम साहब रोमन स्क्रिप्ट में लिख कर सीखने ले गयी थी और उसका यही रूप बना डाला था। यह बाबुल का पेटेन्ट कॉमिक है। बाकी लोग भी हँस रहे हैं। मंजरी सीधे स्टेज के विंग्स की फाँक में जाकर खड़ी हो गयी। बोली, 'क्या हुआ, क्या ?'

रीतू बाबू घुसने के लिए पाँव बढ़ा रहा था, उसने झट से कहा, 'प्ले जम गया है।' यह कहकर उसने प्रवेश किया।

> बन्द करो, बन्द करो गीत ! बन्द करो उत्सव उल्लास—
> निर्वापित कर दो आलोक की माला।

एक ही क्षण में सब लोग शान्त और गम्भीर हो गये। मंजरी ने भौंह सिकोड़ कर शोभा से पूछा, 'क्या हुआ था ? सभी इतना हँस क्यों रहे हैं ?'

शोभा ने फिर मुँह पर कपड़ा दबा लिया। उसे फिर हँसने का मन हो रहा है।

योगा मास्टर बोला, 'मालिक ने नाचकर दिखा दिया।'

'किसने ?'

'मालिक ने। गोरा बाबू ने। ओह ! वह नाच भी नाच ही था ! वे नाचना भी जानते हैं ?'

'चुप रहो। यहाँ बुड़बुड़ा क्यों रहे हो ? प्राम्प्टिंग सुन नहीं पा रहा है।'

गोरा बाबू इस तरफ आकर खड़ा हो गया है।

'नहीं, माता जी—'

'फिर ?'

मंजरी बोली, 'मैंने पूछा था कि इतना हँस क्यों रहे हैं।'

'चलो अन्दर चलकर बताता हूँ।'

अन्दर जाकर गोरा बाबू ने हँसते हुए कहा, 'मेरा नाच देखकर सब लोग हँस रहे हैं।'

'सुना, तुम नाचे, सो कैसे ? खुशी में ? इस बीच कितनी शराब ढाल गये ?'

'ओह !'

'ओह करने से क्या होगा ? शराब पिये बगैर कोई अपना पोजिशन भूलकर नाच सकता है ?'

'नहीं, शराब पीकर नहीं। लाचार होकर ही ऐसा किया। समझीं ? मैं दल का मैनेजर हूँ। नाटक मेरा है— अतः जिम्मेदारी बहुत बड़ी है ?'

मंजरी चुप हो गयी। गोरा बाबू बोला, 'सखियों के बैच में अलका कभी नाची नहीं है। पहली बार उतरने के कारण आशा के ताल से ताल नहीं मिला पा रही थी।'

'उसका तो नाच में ताल कटता नहीं है। नाचती तो ठीक ही है।'

'वस सोलो डान्स। और सखीदल का नाच वह नहीं है। ताल ठीक-ठीक कट नहीं रहा था, लेकिन शिथिल हो रहा था। न तो देह में थिरकन थी और न आँखों में। वंसी विश्व से कह रहा था पर उसे सुनायी नहीं पड़ रहा था। तब मैंने नाम लेकर पुकारा और नाचकर दिखाया कि इस तरह करो।'

'सफल हो सकी ?'

'हाँ। शायद मेरा नाच देखकर उसे प्रेरणा मिली।'

अब मंजरी हँसने लगी। बोली, 'मेरा भाग्य ऐसा है कि मैं देख नहीं सकी।'

उस ओर, मंजरी के कमरे के बाहर, महिलाओं के ग्रीनरूम के अन्दर आशा, किशोरी लड़की और अलका ने घुंघरू झनकाते हुये प्रवेश किया। घुंघरू के शब्दों के साथ हँसी का रेला बह रहा है। अलका ने कहा, 'इतना हँस क्यों रही हो ?'

आशा बोली, 'अरे बापरे, मालिक का नाच ! आँखें कैसे नचा रहे थे !'

गोरा बाबू ने खँखार कर प्रतिक्रिया व्यक्त की। वे लोग खामोश हो गयीं। गोरा बाबू ने पुकारा, 'अलका !'

अलका ने उत्तर दिया, 'जयें।'

'प्रोप्राइट्रेस के कमरे में आओ।'

उसने परदे को हटाया। अलका गोरा बाबू का हँसता चेहरा देखकर आश्वस्त हुई। वरना वह भयभीत हो गयी थी। उसकी वजह से गोरा बाबू को नाचना पड़ा है। चेहरे पर मुस्कराहट ले वह आकर खड़ी हो गयी।

उसकी पीठ पर होले से धौल जमाते हुए गोरा बाबू ने कहा, 'वेल डन।' बढ़िया नाची हो। इतना 'शाई' क्यों ? यह अभिनय है। सब असत्य है। और अभि-

नय में घृणा, लज्जा और भय ये तीन चीजें नहीं होनी चाहिये। अभिनय में सिर्फ देवी की भूमिका में उतरने से काम नहीं चलेगा, खलनायिका की भूमिका में भी उतरना पड़ेगा। अगर सफल हो सके तभी कोई ऐक्ट्रेस है।'

'सफल होगी, जरूर होगी। बेचारी नयी है, यह बात तुम लोग भूल जाते हो।' मंजरी ने कहा।

अलका अभिभूत हो गयी। इतनी अभिभूत कि उसकी जैसी शिक्षित-दीक्षित, तीन और गर्वीली लड़की भी एकाएक झुककर मंजरी को प्रणाम कर बैठी।

मंजरी घबरा गयी, 'अर बस, मुझे क्यों प्रणाम कर रही हो बहन? नहीं-नहीं। प्रणाम करना है तो उन्हें करो। ब्राह्मण, पंडित और नाटककार हैं। आज तुम्हें नाच कर बता दिया है।'

गोरा बाबू ने कहा, 'वह नाच चोटी खींचने लायक था। सभी हार गया। वह यथासाध्य देह नचाकर, चितवन चलाकर—'

गोरा बाबू हँसने लगा।

अलका शरमा गयी थी, इसी मौके से लाभ उठाकर झट से प्रणाम कर चली जा रही थी। मंजरी ने पुकारा, 'सुनो।'

अलका खड़ी हो गयी। मंजरी ने कहा, 'लास्ट सीन में नाच खूब—क्या कहते हैं जी?—मतलब कि बहुत प्रफुल्लित होना चाहिए। आरती-नृत्य है न! और पूरा दृश्य मिलनान्त होने के बावजूद बड़ा ही पवित्र है। सखी की बातें बहुत – हाँ, हम उसे चोंचो कहते हैं—चोंचो नहीं होनी चाहिये।'

'अच्छा।'

अलका पुनः जाने को उद्यत हुई। अबके गोरा बाबू ने कहा, 'तुम अच्छी ऐक्ट्रेस होओगी। जरा स्टडिंग करो। और तुम अपने नये डेरे पर ठीक से हो न? अच्छा लग रहा है?'

'बहुत ही अच्छा लग रहा है।'

मंजरी बोली, 'माँ-बाप—'

'नहीं। मुझे आजादी मिल गयी है, आप लोग यह बात नहीं जानते। पुलिस में डायरी करने के बाद मैं चली आयी हूँ। जान में जान आयी है।'

यह कहकर वह चली गयी। यह अलका संकुचित विमुग्ध अलका नहीं है, एक दूसरी ही अलका है।

'बाबू!' परदे के बाहर से गोपाल ने पुकारा, 'बाबू।'

'गोपाल बाबू! आइये।'

'अब आपका पार्ट है।'

'फर्स्ट सीन हो चुका?'

'खत्म हो रहा है। बंकिम को तालियाँ मिलीं। दूत का पार्ट था।'

'बंकिम बाबू?'

'हाँ, बोला अच्छा है।'

बंकिम साधु बराहनगर का है। इसी के लड़के की बीमारी के समय मंजरी अपेरा ने पैसा दिया था।

मंजरी हँसकर बोली, 'समझो, ईश्वर जरूर ही है। बेचारे को पैसा दिया था। उन्होंने दिखा दिया कि लोगों का उपकार करने से तुम्हारा भी उपकार होगा।'

गोरा बाबू उस बात की ओर नहीं गया। पूछा, 'शुचि ने कैसा किया ?'

'फर्स्ट क्लास। चाहे साथ हो, है तो पुराना ही चावल। रीतू बाबू ने कोशिश की है।'

गोरा बाबू जरा सा हँस पड़ा। पुकारा, 'शिवना !'

'हाँ। लेकर खड़ा हूँ।'

शराब का गिलास है। गोरा बाबू जैसे ही जाने को तैयार हुए कि मंजरी ने कहा, 'हुँ-हुँ—'

'क्या ?'

'मस्तक पर सफेद टीका लगाना है।'

सफेद पेन्ट से उसने बहुत ही अच्छा टीका बना दिया। गोरा बाबू बाहर निकल आया। शिवनन्दन ने गिलास आगे बढ़ा दिया। उसे पीकर उसने सिगरेट सुलगायी। और जुड़े हाथों को मस्तक तक ले जाकर प्रणाम किया और विंग के किनारे खड़ा हो गया। उसके पीछे-पीछे मंजरी भी आयी।

अब दूसरे दृश्य में नाटू बाबू और बाबुल बोस हैं—वसुमित्र और विदूषक। तत्क्षण गोरा बाबू को प्रवेश करना है। जयन्त कुमार और उसके साथियों को।

सिगरेट फेंक उसे पैर से रौंद दिया।

बूँचीदी बाहर निकल आयी है, रीतू बाबू के साथ हँसती हुई ग्रीन रूम की ओर जा रही है। अब मास्टर साहब बोतल खोलेगा। और बूँचीदी ? बूँचीदी पीती है, पीती भी थी। शोभा भी पीती है और गोपाली भी। आशा के बारे में कहना ही क्या ! लेकिन अभिनय जब चलता रहता है तो एकमात्र आशा लुक-छिप कर पीती है। उसके अलावा और कोई नहीं। बूँचीदी इसके बाद एक से दो हो जाये तो बुरा होगा। इसके लिए मना करना होगा।

इस ओर अब द्वितीय दृश्य शुरू हो गया है। लोग हँस रहे हैं। बाबुल ने खासे अच्छे ढंग से गाना शुरू किया है—

बाप, बापरे बाप, पिता पितरौ पितरः—
भो-भो ब्राह्मण कुमार, नहीं गच्छ, नहीं गच्छ—
एकाकी इस वन के बीच भया ध्रुवामि मरिष्यामि।

वह खासी अच्छी भंगिमा के साथ बोल रहा है।

गोपाल ने आकर कहा, 'सज-संवर लीजिये माता जी। विपिन खड़ा है, उसे कहने का साहस नहीं हो रहा है।'

'आती हूँ ।'

अलका भी सज-सँवर रही है । वाह, यह सचमुच सजना सँवरना जानती है । मंजरी कमरे के अन्दर गयी । उसे भी सजना-सँवरना है । यह साज-सँवार बड़ा ही कठिन काम है । चमक-दमक को परे रखकर सजना है । रजनी गंधा की तरह । वसंत कुमार मालविका को चाँदनी रात में नारायण-मन्दिर में देखकर कहेगा—

रजनीगंधा के शुभ्र अनुपम स्निग्ध लावण्य में गठित तन

मृदुगंधा, मृदुच्छन्दा अपरूप कोमल माधुरी

तरंगिनी जैसा रस वेश-भार—

बालों को शेम्पू किया है मंजरी ने । पीठ पर फूलों का गुच्छा लटक रहा है । कपाल पर दो लट बाल जान-बूझ कर लटका लिए हैं जो बिखर कर उड़ रहे हैं । चेहरे पर विलायती पेन्ट लगाया है । रंग की मात्रा जरा अधिक हो गयी है । हो हो । बड़ी ही कमसिन लग रही है । कपड़ा और कंचुकी जरा करीने से पहनेगी तो सब ठीक हो जायेगा । मस्तक पर उसने कुमकुम का टीका लगाया ।

आईने में छाया पड़ी । कौन ? अलका ।

'आऊँ ?'

मंजरी ने मुड़कर देखा । उसकी आँखें थिर की थिर रह गयीं । इस तरह सजने-सँवरने के बावजूद अलका के पास खड़ी होगी तो उसकी उम्र ज्यादा ही लगेगी ।

'मेकअप आपको दिखाने आयी हूँ ।'

'अच्छा हुआ है ।'

'आपके चेहरे के रंग पर पाउडर का पफ देकर थोड़ा-सा रंग लगा दूँ ? बालों को ठीक कर दूँ ? और भी अच्छा लगेगा ।'

'दो । तुम अच्छी तरह सज-सँवर सकती हो ।'

'ब्यूटी सैलून जाकर मेकअप कराती थी । वहीं सीखा है ।'

उसने ठीक कर दिया । मंजरी ने देखा, सचमुच ही पहले से अच्छा हुआ है ।

एकाएक उसने कहा, 'यात्रादल में तुम्हारा आना ठीक नहीं हुआ । मतलब यह कि यह सब सीखने के बाद ।'

'क्या करूँ ?' अलका ने उदास हँसी हँसकर कहा, 'कोशिश कम नहीं की । एक बार भी चान्स न मिला हो, ऐसी बात नहीं । लेकिन कामयाब कहाँ हो सकी ? चूँकि यात्रादल का सहारा मिल गया इसलिए ज़िन्दा रह पायी हूँ । वरना ऐसे कसाई माँ-बाप के पल्ले पड़ी थी कि क्या कहूँ ! उन लोगों ने ही आगे बढ़ने नहीं दिया ।'

इसके बाद दोनों चुप हो गये ।

बाहर हँसी का रेला बह रहा है । ध्यान से सुनने के बाद अलका ने चकित हो कर कहा, 'बाबुलदा है । कंसर्ट कंसर्ट सत्यं । जाऊँ, जाकर देख आऊँ ?'

'जाओ ।'

थोड़ी देर बाद ही गोरा बाबू अन्दर आया। बोला, 'बाबुल वण्डरफुल। मार्वलस !'

उस कमरे में रीतू बाबू बाबुल की पीठ थपथपाकर कह रहा है, 'जीते रहो, जीते रहो मास्टर। लॉग लिव माई लिट्ल ब्रदर।'

बाबुल ने कहा, 'ट्विंकल ट्विंकल लिट्ल स्टार—। ओप्न ओप्न बोटल सून। योर लिट्ल स्टार इज थर्स्टी।'

'लो, रेडी करके रखा है।'

'इसी बीच इस बोतल का चौथाई भाग आपने खत्म कर डाला है !'

'सो किया है।'

'मुझे लेकिन मना कीजिये। ऑल व्यर्थ हो जायेगा।'

गोरा बाबू ने मंजरी से कहा, 'तुम सोच रही हो ! नर्वस हो गयी क्या ?'

'हाँ, जरा-सा हो गयी हूँ।'

'नयी बात है। कुछ मत सोचो। रिहर्सल में मैंने हिसाब मिलाकर देखा है। प्ले जमेगा ही। तुम्हें लास्ट सीन में क्लेप नहीं मिलेगा,-मगर लोग तुम्हारे लिए पागल हो जायेंगे।'

'जरा-सा अड़चन खड़ी हो रही है।'

'वह क्या ?'

'अलका को देखा है ?'

'देखा जरूर है।'

'उहुँ। अलका ! ओ अलका ! शोभादी, आशा, कौन है ? अलका को भेज दो।'

'मुझे पुकार रही हैं ? आऊँ ?' परदे की दूसरी ओर से अलका की आवाज आयी।

'हाँ। अन्दर आओ।'

अलका भीतर आकर खड़ी हुई, 'क्या ?'

'उन्हें तुम्हारा मेकअप दिखा रही हूँ। देखो।'

'वाह ! उस दिन तो राजा की हवेली में तुमने ऐसा मेकअप नहीं किया था।'

'आपने कहा था कि मालविका उदासी की प्रतिमूर्त्ति होगी। वह अपने सौंदर्य से नहीं जीत रही है। पवित्र-परिच्छन्न होगी, रजनीगंधा की तरह, मगर चमक-दमक नहीं रहेगी। इसलिए इस तरह का मेकअप नहीं किया था।'

'हुँ ! तुम बड़ी एक्ट्रेस होओगी।'

मंजरी बोली, 'अच्छा, जाओ।'

अलका चली गयी।

मंजरी ने मद्धिम स्वर में कहा, 'मेकअप करने के बावजूद मेरी उम्र उसकी जैसी नहीं दिखेगी।'

'नहीं-नहीं, तुम्हारा मेकअप बहुत ही लाजवाब हुआ है। मुझे पुराना समय याद आ रहा है।'

फिर भी मंजरी ने कहा, 'उहुँ। उस सीन मे उसकी बातें न रहती तो अच्छा होता। मतलब यह कि नाच खत्म करने के बाद ही वह चली आती तो अच्छा रहता। तुम सोचकर देख लो।'

'कुछ चिन्ता मत करो। तुम पार्ट करती जाओ। श्रोता तुम्हारी खूबसूरती मेरी आँखों से देखेंगे। अपनी आँखों से नही।'

शिवनन्दन आकर खड़ा हुआ, 'मास्टर साहब, बाबुल बाबू आपको बुला रहे हैं।'

'चलो।'

सचमुच ही प्यास लगी है। सिगरेट भी बहुत देर से नहीं पी है।

मंजरी की बात सही साबित नही हुई। गोरा बाबू की बात ही सही साबित हुई। गंधर्वकन्या का अन्त बड़ा ही प्रभावोत्पादक रहा। और, गधर्वकन्या तपस्विनी मालविका ने सचमुच ही शाम के अँधेरे मे दर्शकों के मन में अपने रूप-गंध से सद्यः प्रस्फुटित रजनी-गंधा की तरह ही एक रोमान्टिक नशा जगा दिया। मंजरी स्वयं भी अभिभूत हो गयी थी। स्टेज से लौटने के बाद वह बहुत देर तक ठगी-ठगी-सी रह गयी थी। बुंची ने आकर कलेजे से लगा लिया था और चूम कर कहा था, 'मुझे इच्छा हो रही थी कि मर्द बन कर तेरी मुहब्बत मे डूब जाऊँ।' शोभा बोली, 'सती तुलसी' में भी ऐसा ही है मगर इतना अच्छा नही।' उसके बाद कान मे कुछ ऐसी बात कही जिससे मंजरी का अभिभूत भाव दूर हो गया और शोख बनते हुए उसने कहा, 'जा-जा! बापरे कितनी असभ्य है!'

शोभा हँस कर लहालोट हो जाती। न सुनने के बावजूद गोपाली हँसी से लोट-पोट हो रही थी। अलका समझ नही सकी। वह मुग्धा की तरह खड़ी थी। वह सचमुच ही मुग्ध हो गयी है।

'मंजरी।'

'गोरा बाबू अन्दर आया। सभी औरतें बाहर चली जा रही थी। गोरा बाबू बोला, 'बयाना कल का मिला है। एक नही दो। दोनों दो सौ पच्चीस की दर से। मजलिस का खर्च पच्चीस, लॉरी और बस भी लूं?'

गोपाल भी आकर पीछे की तरफ खड़ा हो गया है। मोठी हँसी हँस रहा है, मगर वह हँसी बेवकूफ जैसी है। आशा ने फुसफुसाकर गोपाली से कहा, 'दो चिलम

गांजा एक साथ फूंक डाला है। हँसी देख नही रही हो कि बेवकूफ जैसी है। हाय-हाय !'

गोपाली खिलखिला कर हँस दी।

'थियेटर-पक्ष बड़ा ही गुस्सा गया है। कह रहा है, इसके बाद उन लोगों का प्ले नही जमेगा। और वे लोग अलका को माँग रहे हैं। उन लोगों के दो अंक में यदि वह नाचे तो रुपया देगा। चालीस रुपया। क्या कहूँ ?'

'सो—'

'खैर, उसे कुछ मिल जायेगा। ठीक है न ?'

'ठीक है।'

दूसरे दिन अन्य दो कारखानों मे दो अभिनय होंगे। एक ही नाटक। एक ही नाटक न हो तो दो जगहों में अभिनय करने में बहुत असुविधा होती है। वेश-भूषा सब कुछ बदलना पड़ता है। इस प्ले में जो युवक है, हो सकता है कि दूसरे प्ले में बूढ़ा हो। एक व्यक्ति एक प्ले मे अनार्य या दैत्य है। (पिछली बार से मंजरी ऑपेरा में दैत्य अनार्य की पेन्टिंग नीला रंग मिलाकर की जाती है।) उसे दूसरे नाटक में देवता की भूमिका में उतरना पड़ता है तो पेन्ट हटा देना पड़ता है। उसके बाद नाटक के सरो-सामान का प्रश्न खड़ा होता है। उसके बाद वेशभूषा। झमेला ढेर सारा है। एक ही प्ले हो तो, एक जगह प्ले खत्म कर उसी मेकअप के साथ ऐक्टर-ऐक्ट्रेस वेश-मंदिर में जाकर पन्द्रह मिनट के दरमियान मंच पर उतर सकते हैं। जो लोग वादक हैं, उन्हे भी एक प्ले का गीत स्वर आदि ताक पर रख कर नये प्ले का गीत और स्वर नही लेना पड़ता है। इसके अतिरिक्त दोनों कारखानों ने स्वयं ही गंधर्वकन्या की माँग की है। दोनो कारखाने के आदमी देखने आये थे।

उन लोगो की चेष्टा अन्ततः सफल हुई है। पहलेवाले दल को बयाना नही दे सके थे। अभी युद्ध के बाजार मे कारखानो की हालत बहुत अच्छी हो गयी है। लगभग सभी कारखानो मे यात्रा होती है। लगभग सभी दल आज अभिनय कर रहे हैं। आर्य ऑपेरा, नवरंजन, रॉयल वीणापाणि वगैरह। दोनो कारखाने के लोगों ने कई जगह यात्रा देखी है और टेलीफोन से अपने अपने मालिकों से बातचीत की है और अन्ततः मंजरी ऑपेरा को ही बयाना देने का निश्चय किया है।

मंजरी एक अजीब काण्ड कर बैठी। नाटक के सम्बन्ध में उसने अपनी जानकारी का प्रमाण प्रस्तुत कर दिया। इसे उसने संभवतः विश्वकर्मा-पूजा के बाद ही तय कर लिया था। बाबू बोस, रीतू बाबू, नाडू बाबू और बुंचीदी से कह रखा

था कि सवेरे ही वे लोग घर पर आयें। कहा था, 'चाय पीजिएगा, इसके अलावा मुझे कुछ बातें करनी हैं।'

सब लोग आये। रीतू बाबू सबके बाद आया। बुँची ने बताया, 'मेरे यहाँ आकर कुछ ही देर बैठा था और फिर घर चला गया था।' घर का मतलब हावड़ा की टीन की एक चाल, ईंट की दीवार बनी लकड़ी के दो मंजिले पर एक कमरा।

बाबुल बोला, 'यसटरडे से बिगब्रदर का मेन्टीकेन्टी मूड हो गया है। प्ले के बाद गुमसुम बैठे थे। ऑल ऑफ ए सडेन बोल उठे—लिट्ल ब्रदर। मैंने कहा, यैस बिगब्रदर। बोले, तुम क्या फील कर रहे हो, बताओ। मैंने कहा, भादों का महीना है, बड़ी ही गरमी फील कर रहा हूँ। एण्ड पेय पदार्थ ज्यादा चल गया है, सारे रील पों-पों कर रहे हैं। वे बोले, रबिश। तुम एक पत्थर हो—स्टोन। प्रेम फील नहीं कर रहे ? मैंने कहा, नहीं। बिग ब्रदर बोले, मैं फील कर रहा हूँ प्रेम के सिवा कुछ भी नहीं है, कोई नहीं है। इच्छा होती है, प्रेम के लिए संन्यासी बन जाऊँ। प्रेम के अलावा सब कुछ असत्य है। मैंने कहा, बुँचीदी को बुला लाऊँ ? उन्होंने कहा, तुम उल्लू हो। वरना अलका के प्रेम में नहीं पड़ते। मैं पचा गया जहाँपनाह। दिलदार सब कुछ कर सकता है—एवरीथिंग। एनीथिंग। बट प्रेम नॉट। उससे टायफाइड, टी० बी० बेहतर है।'

सब लोग हँसने लगे। रीतू बाबू की आवाज सुनायी पड़ी, 'भागो, बहुत दिया है। जाओ।'

रिक्शे की टुन-टुन आवाज हुई। रिक्शेवाले को डाँट रहा है। उसके बाद ही आवाज सुनायी पड़ी, 'यह माया प्रपंच माया यहाँ विश्व के रंगमंच पर। लीलामय नटवर हरि जिसे सजाते जैसा, वह वैसा ही सजता। नटवर की जय हो। कितना सुन्दर नाटक लिखा है नटवर! धन्य-धन्य तुम धन्य, धन्य तुम्हारी राधा प्रिया, तुम्हें बाँध रखा है रंगीन चरण अपने धरवा कर।' सीढ़ियाँ तयकर ऊपर आया और बोला, 'वण्डरफुल सर, कल से नशा चढ़ गया है। जी में होता है, वैरागी हो जाऊँ।'

सब लोग हँस पड़े। गोरा बाबू ने कहा, 'बाबुल कह रहा था। लेकिन—'

'कहिये। लेकिन क्या ? ठहरिये, पहले मैं अपना लेकिन कह लूँ। शिवनदन भैया, मुझे जरा बोतल दे जाओ। चाय नहीं चलेगी। कल प्रेम-प्रेम कर सिर्फ गटकता ही रहा। सिर दर्द कर रहा है। पेट जल रहा है। खाना भी नहीं खाया है।'

'लीजिये, खाइये।'

मंजरी ने एक तश्तरी आगे बढ़ा दी। समोसा, कचौरी और मिठाई से सजी एक तश्तरी पहले से ही मेज पर रखी हुई थी।

समोसा उठा कर मुँह में डालते-डालते रीतू बाबू रुक गया और बोला, 'मुझे दो अण्डे दे जा। हाँ दयामय, आप क्या कह रहे थे ?'

गोरा बाबू ने कहा, 'कह रहा था दुहाई है आपकी, अभी सन्यासी-वैरागी बनकर मंजरी ऑपेरा को डुबो मत दीजिये।'

शोभा बोल उठी, 'प्रेम करके संन्यासी ही क्यों होना होगा गुणमय? प्यार करने से प्यार करना मैं भी जानती हूँ, बुंची भी जानती है।'

रीतू बाबू बोला, 'उहुँ, प्रेम करके संन्यासी-संन्यासिनी बनना पड़ेगा। न होने से फिर परीक्षा क्या? और प्रेम की माधुरी ही कहाँ रह जाती है?'

बुंची बोली, 'जान बख्शो। मैं संन्यासिनी नहीं हो पाऊँगी। गोरा बाबू, बोलो न, तुम्हीं भैया। उसकी जरूरत पड़ती है? हम लोग सन्यासी को लौटा लाते हैं। है न यह बात?'

बाबुल बोल उठा, 'राइट-राइट-राइट। डार्क नाइट में ब्राइट लैंप के संकेत से खींच लाती है और कहती है, पथिक आओ। कम इन वैगेबण्ड।'

'हुँ, जो जायगा वह खत्म। घर पर जाने से ही गले में रस्सी बाँध भेड़ा बना दूँगी।'

'जो नहीं जाता है, वह क्या कहता है, जानते हैं?' गोरा बाबू ने कहा।

'हाँ, अयि पापिनी।'

'नहीं-नहीं। समय जिस दिन होगा जाऊँगा उस दिन कुंज में तुम्हारे।'

'बहुत अच्छा। आप ने याद दिला दिया। कल बुंची ने भी मुझसे यही कहा था। मैंने कहा, 'बुंची, प्रेम कर हम सब कुछ छोड़-छाड़ दें और कहीं कुटिया बना कर बस जायें। चलो। चलोगी? बोली, अभी नहीं। उम्र थोड़ी और बढ़ जाये। मैं चला गया। सोचा, रात में ही निकल पड़ूँगा। लेकिन ऐसा नहीं कर सका। डर लगा। हावड़ा के कोटर में चला गया। एक रुपया ब्लैक देकर एक बोतल शराब लाया और आकण्ठ पी कर लेट गया। नशे के सरूर में सिर्फ आपको सलाम किया है। आप सचमुच ही किसी दिन संन्यासी बन कर निकल आये थे।'

'इसीलिए गन्धर्वज डाउटर निकला है।'

गोरा बाबू गुमसुम हो आकाश की ओर ताकने लगा। शरद ऋतु का आकाश दिन के अति शुभ्र प्रकाश से झिलमिला रहा है। कुछेक सफेद बादल द्रुत गति से उड़ रहे हैं। गाँवों के आकाश में इस समय बगुलों का झुण्ड श्वेत पद्म—माला की पंखुड़ियाँ जैसे उड़ कर चले जाते हैं।

रीतू बाबू ने कहा, 'आप ने आकाश पर दृष्टि टिका दी! कहिये, क्या कहना चाहते हैं?'

'वह कहेगी। मुझसे कल कहा था।'

'आपने क्या कहा?'

'कुछ नहीं। आप लोग कहिएगा। मैं ऑथर हूँ। नाटक काटने-छाँटने के सम्बन्ध में गलती कर सकता हूँ।'

'तो फिर आप ही कहिये प्रोप्राइट्रेस।'

मंजरी बोली, 'मैं उस हैसियत से नहीं कह रही हूँ। मैं ऐक्ट्रेस हूँ, नाटक की हीरोइन। मैं इसी हैसियत से कह रही हूँ। मेरे सीन चार हैं, उनमें से दो में सखी है। अलका का पार्ट। उसका आरती-नृत्य ठीक है। नाचती बहुत अच्छी है। मेरा स्थिर होकर आरती की डलिया थामे खड़ा रहना भी अच्छा ही है। लेकिन मेरे गीत के बाद कुसुमिका प्रवेश करती है। उससे मालविका की जन्म के बारे में बातचीत होती है। वहाँ सखी रहेगी क्यों? मुझे बड़ी ही बेचैनी लगती है।'

रीतू बाबू ने कहा, 'बात तो आपने सही कही है। बेचैनी लगने की बात ही है।'

गोरा बाबू बोला, 'अन्त में उसका कला-कौशल है, बातें हैं। जयन्त स्वर्गपुरी में दौत्य कर्म करने के निमित्त जाने को राह में नारायण मन्दिर के अन्दर प्रणाम करने जाता है। उस पर दृष्टि पड़ते ही मालविका मुग्ध हो जाती है और कहती है, यह कैसा अपरूप सौन्दर्य! नारायण? यह क्या नारायण मुझे छलने आये हैं। सखि, सखि!'

उस समय दिल्लगी के स्वर में मंजुलिका कहती हैं: 'आँखों को धो लो सखि, आँखों को सुराही के पानी से धो लो।' मालविका कहेगी, क्यों? वह कहेगी, चाँदनी की माया धुल जायेगी। मालविका कहेगी, चाँदनी की माया? यह मेरा भ्रम है? मंजुलिका कहेगी, वरना तुम मनुष्य को क्यों नहीं देख पा रही हो? मालविका कहेगी, नहीं-नहीं। भ्रम नहीं है, माया नहीं, मोह नहीं। बाधा देकर मंजुलिका कहेगी, दो हाथों पर दृष्टि जमा नहीं जा रही? देवता होता तो कम से कम चार हाथ होते। बन्दर होता तो पूँछ होती। अप्सरा होती तो डैने होते। यह सब नाटक का अंग है। उसके अलावा रिलीफ। लोग हँसते हैं।'

'विदूषक पर और भी हँसी की जिम्मेदारी है? इसके अलावा यह मालविका का मोह नहीं है। इसमें वह सचमुच ही जयन्त में नारायण को देख रही है? इसलिए इसे बाद कर देने से नाटक में और अधिक उभार आ जायेगा। सावित्री सत्यवान याद है? वहाँ वे एक दूसरे को देखकर विह्वल हो जाते हैं। सब कुछ भूल जाते हैं। वहाँ कामिक घुसाने से टिक सकता है? कहिये मास्टर साहब?'

'आज उसे बाद देकर देखिये न।'

'कहिये नाटू बाबू।'

'मुझे आपकी बात बिलकुल सही लग रही है।'

'और तुम्हें बुंचीदी?'

'तुम हीरोइन हो, तुम असुविधा महसूस करती हो तो काटना ही पड़ेगा।'

'कहीं मेरा मन रखने के लिए तो नहीं कह रही हो?'

'नहीं-नहीं। मुझे उपाहरण प्ले की बातें याद आ रही हैं। उमा

धारण करने पर मुझे एक सीन में ऐसी ही असुविधा महसूस हो रही थी। अनिरुद्ध के प्रथम साक्षात्कार का सीन था।'

मंजरी ने अब शोभा से पूछा, 'शोभा दी ?'

शोभा बोली, 'मुझे बहन, यह सब बात समझ में नहीं आती। तुम पर नाटक आधारित है, असुविधा हो रही है तो हटा दो। लेकिन बहन, वह लड़की सजती है अच्छी, और है बड़ी ही फुर्तीली। स्थिर होकर बेहद चक्कर काटती है, कौतुक भी बहुत अच्छा करती है। मजमे में सरसता ला देती है। तेल-झोल के साथ हरी मिर्च जीभ में छुलाने से सुई जैसा कुछ चुभे, ठीक वैसी ही।

'बाबुल बाबू ?'

'अयँ ?'

'आप ?'

'कहूँगा तो मजाक कीजिएगा।'

'क्यों ?'

'कहिएगा, मैं अली के प्रेम मे सराबोर हो गया हूँ।'

'तो कहोगे नहीं ?'

'उसका उत्साह बुझ जायेगा। हो सकता है सुन कर रो दे।'

गोरा बाबू ने कहा, 'तुम समझाकर कहो दिलदार। उसका नाच हटा देने से पार्ट मे कुछ रह नहीं जाता है।'

मंजरी बोली, 'सती तुलसी मे उसे कृष्ण का पार्ट दिया है। अच्छा पार्ट है। 'जना' मे उसे मोहिनी माया का पार्ट मिला है। बल्कि गन्धर्वकन्या के प्रथम नाच में आशा-बंसी को हटाकर उसे ही दे देंगे। इसके अलावा कल उसे थियेटर में नाचने दिया है। हमने उसके साथ जरा भी अन्याय नहीं किया है—'

'तो फिर यही तय रहा। मजलिस खत्म कीजिये। रात दो बजे प्ले है।' रीतू बाबू ने उस चर्चा को समाप्ति पर ला दिया।

मजलिस टूट गयी। सब अपने-अपने घर चले गये। लॉरी-बस साढे पाँच बजे आयेगी। छह बजे रवाना होना है। साढे सात बजे अभिनय शुरू होगा। पहली मजलिस नारकेलडांगा मे होगी, दूसरी बराहनगर में। वहाँ बगलवाले कारखाने मे न्यू शाहा कम्पनी की यात्रा पार्टी अभिनय करेगी। प्ले में जरा-भी खामी रही तो चल नहीं पायेगा।

ऐसा हुआ भी नहीं। मंजरी की बात सही साबित हुई। सखी का पार्ट हटा देने से हीरोइन मे और अधिक निखार आ गया। और मिलनान्त रहने के बावजूद आख्यान-वस्तु मे जो एक पवित्रता का स्वर शुभ्र गन्ध-पुष्प के समान घुला-मिला था, वह स्वर गन्ध और रंग की शुभ्रता के कारण और अधिक उभार पर आ गया। अलका ने गम्भीरता ओढ़ ली। वह मंजरी के पास एक बार भी नहीं आयी। मंजरी

ने उसे मीठी बातों से समझाया। उसने बस इतना ही कहा, 'ठीक है। जैसा कहिएगा, वैसा ही करूँगी। इसमें दुःख की कौन-सी बात है?'

उसके शब्द प्राणहीन जैसे थे। मंजरी को दुःख हुआ। बुंची वही थी। उससे कहा, 'बेचारी को दुखित करना पड़ा। क्या करूँ?'

प्ले के अन्त में भी मंजरी ने अलका को बुला कर कहा, 'देखा?'

'हाँ।'

'अच्छा नहीं रहा?'

'रहा है। बहुत ही अच्छा। इसके बाद और भी अच्छा रहेगा।'

'मतलब?'

'मतलब यह कि यह प्ले काट-छाँट के बाद का पहला प्ले है। दूसरे प्ले में जरूर इससे भी अच्छा रहेगा।'

यही हुआ। रात तीन बजे अभिनय समाप्त कर दल बेहद खुशी के साथ वापस आया। शाहा कम्पनी के बगल वाले कारखाने में बेहद मार-पीट और खून-खराबा का 'उत्तरा' प्ले मचित किया गया था। उसका अन्त कुरुक्षेत्र से हुआ। वियोगान्त करुण रस का नाटक। लोग रो पड़े। फिर भी प्ले लोगों को बहुत अच्छा लगा। परीकथा जैसा। कारखाना तीन पदक देगा। इस कारखाने ने भी चार पदक देने की इच्छा जाहिर की है। मालविका, जयन्त और विदूषक को मिले हैं। अलका को भी बढ़िया नाच की वजह से पदक मिला है।

मंजरी ने कहा था, 'अब खुश हुई न?'

अलका ने अजीब सवाल किया था। मंजरी की ओर ताकते हुए उसने कहा था, 'आप लोगों ने दिलाया क्या?'

'तुम यह क्यों कह रही हो?'

'मन में आया, इसीलिए कह रही हूँ।'

गोरा बाबू ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा, 'बि ए स्पोर्ट। यह सब शक क्यों हो रहा है? मैं नायक पक्ष होता तो तुम्हें गोल्ड सेन्टर मेडल देता। तुम्हारा नाच बड़ा ही बेहतरीन रहा है। और मैं कह रहा हूँ, सती तुलसी में भी तुम्हें मेडल मिलेगा। कोलियारी के अंचल में जाने दो। मेडल देने की होड़ देखना। कंपिटिशन होने लगता है।'

गाड़ी आकर चितपुर दफ्तर में खड़ी हुई। रात ज्यादा नहीं हुई है। बाकी रात सब लोग यहीं बितायेंगे। गोरा बाबू, मंजरी और उनके साथ बुंची घर चली गयी।

अलका बोली, 'टैक्सी मिले तो मैं भी घर चली जाऊँ।'

'लेकिन इतनी रात में टैक्सी कहाँ मिलेगी?'

गोरा बाबू बोला, 'कल सवेरे हिसाब करने के बाद आप दस बजे जाइएगा गोपाल बाबू। इसके पहले नहीं।'

बारह

दल के लोगों की तनख्वाह का हिसाब करना है। अब पूजा तक का कोई बयाना नही है। पूजा तक छुट्टी रहेगी। तकरीबन सब लोग घर जायेंगे। तनख्वाह लेकर जायेंगे, पूजा का कपड़ा-लत्ता खरीदेंगे, घर का काम-धाम देखेंगे। मुफस्सिल के बहुत सारे लोग गृहस्थ घर के हैं। योगा बाबू, नाटू बाबू की तरह और भी कुछ लोग घर के अभिभावक हैं। क्वार का महीना है, खेती-बारी का थोड़ा-बहुत काम देखेंगे। दुकानदारों का बकाया चुकायेंगे। तनख्वाह मिलती ही कितनी है! हो सकता है कि कर्ज भी लेना पड़े। अभी कोई-कोई पेशगी रकम लेगा।

शहर के लोग भी लेंगे। उन्हे भी पूजा के समय खर्च वगैरह करना है। रीतू बाबू जैसे कितने आदमी हैं? कोई नही। फिर भी रीतू बाबू का खर्चा ज्यादा है। अबकी बुँची को एक कीमती साड़ी देगा ही। आज भी वह इन लोगों के साथ नही गया। दफ्तर मे ही टिक गया। बुदबुदा रहा है। प्रेम के नशे ने इस उम्र में घर दबाया है। सो दबाये। संन्यासी नही बनेगा। फिर भी एक नया स्वाद मिल रहा है। पटली चारु के साथ उसने भी कभी गृहस्थी बसायी थी। उसमें भी प्रेम था? हाँ, था। लेकिन इसमें जो है वैसा नही था, यह बात वह नही कह सकता। तब हाँ, किसी चीज का अभाव नही था। यह नाटक केवल नाटक नहीं है, इसमें गोरा बाबू और मंजरी इस तरह घुले-मिले हुए हैं कि नाटक सचमुच ही एक सच्चाई बन गया है।

एकाएक याद आया, रथ के दिन गोरा बाबू अचानक संलाप की आवृत्ति कर रहा था। बुद्धदेव नाटक के 'मार' का संलाप था। याद आया कि उसने स्वयं एक बार इस पार्ट को किया था। इस किस्म के जोरदार खलनायक के पार्ट के प्रति उसे रुझान था। आदमी को भावावेश में लाकर ऐक्टिंग की जाती है, स्वयं भी भावावेश मे आ जाता है।

'मृत्युपथ के यात्री हैं वे—'

बात तो सही है। मृत्युपथ के यात्री सब लोग हैं। कौन ऐसा है जो मरेगा नही! फिर भी वह सबसे अधिक स्वतंत्र है। बहेतू का मन है—कहीं भी स्थिर नहीं रह पाता है; उसके लिए दिन दिन नही और रात रात नही है। आदमी के मन को जो खुशियों से भर देता है, जिसमे विचित्र-विचित्र कहानी और घटनाएँ रहती हैं—जिसके बारे मे लोग कहते है कि समारोह के साथ अभिनय कर रहा है, वह सब रात्रि के प्रकाश में झलमलाता रहता है और दिन की बेला में झूठा हो जाता है। शायद सब कुछ झूठ ही है। सब कुछ असत्य।

ढेर सारा पैसा होता या रहता तो रीतू बाबू एक दल संगठित करता। और जितने भी बहेतू किस्म के आदमी हैं उन्हे स्वस्ति-शान्ति देने की व्यवस्था करता।

बाग बाजार के एक आदमी ने किया भी था। वह एक गरीब मजदूर था।

हावड़ा के बर्नर डॉक पर जहाज की मरम्मत और रिपेरिंग करता था। एक जहाज आया हुआ था। फोरमैन ने कहा था कि तीन-चार दिन के अन्दर काम खत्म कर उसे पानी में उतार देगा। कॉन्ट्रेक्टर ने कहा था, यह नामुमकिन है। जिसमें कम से कम दस दिन लगेंगे वह काम तीन-चार दिन मे न होता है और न ही हो सकता है। डॉक के फोरमैन ने इस आदमी को बुलाकर कहा था, 'तुम कारीगरों का इन्तजाम कर सकते हो ? तीन गुना आदमी। कर सकोगे ? उसने कहा था, 'हाँ कर लूंगा।' साहब ने कहा था, 'तुम कॉन्ट्रेक्टर का काम शुरू कर दो।' उसने कहा, 'साहब, कॉन्ट्रेक्टर रुपया बाँटता है, मैं इन लोगों को क्या दूंगा ? रोज कमाता हूँ तो दिन-भर का खर्च चलता है।' साहब ने ढेर सारा पैसा बतौर पेशगी दे दिया था। मजदूर था—तीन दिन में काम खत्म कर कॉन्ट्रेक्टर बन गया। बँधा-बँधाया शौक था उसे। यात्रादल बनाने का शौक था। बनाया भी और दल के सभी लोगों के अभाव को दूर करने की चेष्टा की। यात्रादल का जो भी आसामी आकर कहता, 'बाबू मुसीबत मे फँस गया हूँ।' वह कहता, 'डर की कोई बात नही। रुपया चाहिए ? तो फिर रुपया ले जाओ।' लोगो के घर की खोज-खबर लेकर कहता, 'उसकी औरत और बाल-बच्चे निराहार रह रहे हैं। रुपया भेज दो। वह वहाँ एक कसबी लेकर रहता है। उसे भी पैसा दे दो, बन्द मत कर देना। उस औरत को भी तो पेट का खर्च है। पेट के चलते खून-खराबा करेगी। नील कण्ठ जी से मिलने गया तो उन्हें साष्टांग प्रणाम किया और कहा, 'प्रभो, आप साधक सिद्ध भक्त हैं। मुझे आशीर्वाद दिये बगैर जो लोग यात्रा करते हैं, उन्हे आशीर्वाद दीजिये, ताकि उन्हें शान्ति प्राप्त हो।'

शान्ति ! शान्ति है क्या चीज ? उसके जीवन मे क्या शान्ति नही है ? समझ में नही आता। है तो वह अच्छी ही तरह। दुःख है। ढेर-सारा पैसा नही है। पैदल चलना पड़ता है। भादों महीने की गरमी में उमस महसूस होती है, बीमार पड़ जाता है, दाँत हिलते हैं। लगता है अब टूट जायेंगे। सिर दर्द होता है। मगर अशान्ति है कहाँ ? फिलहाल प्रेम का नशा सवार न हो रहा है तो कैसा-कैसा लग रहा है—चूँची के घर जाना अच्छा नही लग रहा है। रात मे नींद नही आती है। लेकिन कुछ दिन बीतते न बीतते यह चीज दूर हो जायेगी।

'मास्टर साहब, आप यहाँ ?' गोपाल मैनेजर छत के कोने में आ धमका। इस ओर चटाई बिछा कर रीतू बाबू अकेला बैठा है। दल की ओर से बहुत-सी चटाइयाँ खरीद कर रख ली गयी हैं। उन्हें बिछा कर रिहर्सल किया जाता है। यात्रा की रात अभिनय खत्म होने के बाद एक-एक आदमी एक-एक चटाई लेकर सो जाता है। नाटू बाबू, रमणी नाग वगैरह के पास अपनी-अपनी चटाइयाँ हैं। उन पर नाम लिखा हुआ है। रीतू बाबू के साथ यह सब झमेला नही है। तब हाँ, आम तौर पर वह यहाँ रात नहीं गुजारता। ज्यादातर मालिक-मालकिन उसे अपने साथ ले जाते हैं। आज वह किसी भी हालत में जाने को राजी नहीं हुआ।

गोपाल बोला, 'आप यहाँ ?'

'जरूर । यह बात कोई नहीं कह सकता ।' क्षीरोद प्रसाद के पद्मिनी नाटक का वाक्य है यह । अपने आप मुँह से बाहर निकल गया ।

गोपाल बोला, 'मैं आप की तलाश कर रहा था । एक बार छत पर आया था । कैसे समझ लेता कि आप इस कोने मे बैठे हैं ?'

'बात क्या है ? मैनेजर इतनी रात में खोज रहा है ? शक कर रहे थे कि छिपकर प्रेम कर रहा हूँ ?'

'राधे-राधे ! आप क्या कहते हैं !'

'फिर ?'

'बच्चे को बहुत बुखार आ गया है । कराह रहा है । बताइए, क्या करूँ ?'

'किसको ? तुम्हारे नीतू को ?'

'जी हाँ ।'

'बुखार आ गया है ?'

'तेज बुखार आ गया है । होश-हवास नहीं है । बुखार की हालत में ही गीत गाया था न ।'

'इतनी रात में क्या करूँ ? सिर धो दो । और एसपिरिन हो तो आधा टिकिया खिला दो । स्टॉक मे है न ?'

'है ।'

'फिर वही दो । एक अदद मुझे भी दे जाओ जी ।'

गोपाल चला गया । रीतू बाबू हल्की हँसी हँस दिया । यात्रावल का यह एक निराला सिलसिला है । इस मामले को वह समझता है । इसमें भी एक तरह का रंग है, छोकरे रंग लगा कर, बाल और कंचुकी धारण कर लड़की सजते हैं और लड़की का हाव-भाव प्रदर्शित करते हैं, प्रेम का अभिनय करते हैं, गाना गाते हैं, नाचते हैं । उस वक्त नशा धर दबाता है । और यह तो है भी नशे का राज्य ही । नशा दूर नही होता है ।

उसे अपने प्रारंभिक जीवन की बातें याद आ गयीं । दल के साथ मुफस्सिल गया था । दिन के वक्त सब सो रहे थे, उसे नीद नही आ रही थी । तब वह तरुण नायक था । नीद क्यों नही आयी थी, याद नही । बगल में मैनेजर था । आखिर में झपकी आ गयी थी और वह झपकी रुलाई की आवाज से दूर हो गयी । उठकर बैठने पर देखा, एक ऐक्टर बारह-चौदह वर्ष के एक लड़के को चुपचाप पीट रहा है । गरदन दबाये है । लड़का चिल्ला नही रहा है, दर्द से कराहते हुए रो रहा है ।

उसने कहा था, 'यह क्या, उसे मार क्यों रहे हैं ?'

उस आदमी ने मुड़कर रीतू बाबू को ओर हिकारत भरी दृष्टि से देखा था और दोबारा उसकी गरदन मोड़ दी थी ।

मैनेजर ने एकाएक सिर उठाया था और कहा था, 'सो रहिये मास्टर साहब। वह जो कुछ कर रहा है, करने दीजिये।'

'बात क्या है? एक लड़के को इस तरह—'

'अरे साहब, दया कर इस अधम की बात सुनें। आँख बन्द कर पड़े रहिये, वह सब मत देखिये। वह सब—। बताऊँगा, बाद मे बताऊँगा। आप नये आदमी हैं, बाद में अपने आप मालूम हो जायेगा।'

बात उसने सुनी थी और सो गया था। सुनी हुई बात याद भी आ गयी थी। यह भी याद आया था कि वह छोकरा सखीदल का मुख्य पात्र है।

बाद में मैनेजर ने उसे यात्रादल की व्याधि के बारे में बताया था। उस छोकरे ने शाम के वक्त उसे अचानक प्रणाम किया था। उसने पूछा था, 'प्रणाम क्यों कर रहा है रे?'

मुझे नयी कमीज और रूमाल मिला है।'

लड़कियों को गहना मिलने पर जैसे प्रणाम करती है, वह प्रणाम भी वैसा ही था।

गोपाल को उस बच्चे के प्रति बेशुमार ममता है। यात्रादल के सब लोगों का यही विश्वास है। लेकिन रीतू बाबू को एक प्रकार का सन्देह होता है। हो भी तो क्या किया जाये!

यह मृत्युपथ के यात्रियों का काफिला है। बाजार के काला बाजार, संन्यास के ढोंग, आदमी की चोरी-डकैती, औरतों और मर्दों में से उसके जैसे मर्द और बुँधी जैसी देह व्यवसायिनी—इन सबो को छोड़ भी दिया जाये तो भी बेहिसाब किस्म के पाप मिल जायेंगे। यात्रादल मे यह पाप या व्याधि काल के बीच कलि, खाद्य के बीच विष और रास्ते के किनारे शराब की दुकान, दुनिया मे अभाव, जीवन में दुःख-दुश्चिन्ता और मन में ईर्ष्या और लोभ की तरह है। विकृत जीवन, विकृत प्रेम-कामना, विकृत देह-लालसा!

गोपाल लौटकर आया, 'लीजिये मास्टर साहब, एक गिलास पानी भी ले आया हूँ।'

'दो।'

'पानी ले आया हूँ, पानी के साथ लीजिएगा या—'

'शराब खत्म हो चुकी है।'

'ला दूँ?'

'नहीं जी। मन अभी आसमान में उड़ रहा है। 'फटिक जल, फटिक जल' चिल्ला रहा है।'

'प्यास लगी है?'

'लगी है। लेकिन वह तुम समझ नही सकोगे।'

पानी के साथ एसपिरिन लेकर रीतू बाबू बोला, 'बैठो, अलका वहाँ है न?'

'हाँ। मंजरी माताजी कह गयी, उन लोगों को आदत नहीं है, जरा जतन करना। बाबुल मास्टर पूरब के बरामदे पर सोया है। आशा, गोपाली और उस छोटी लडकी को छोटा कमरा दे दिया है। अलका तख्ते पर सोयी है।'

'प्रोप्राइट्रेस अच्छी औरत है।'

'सो - एक बार।'

'तुम्हें एक बात कहूँ ? तुम भी भले आदमी हो। वरना नहीं कहता।'

'नीतू के बारे मे कहना है न ?'

'तुम तो सब समझते हो गोपाल—फिर भी ?'

गोपाल चुप रहा। रीतू बाबू बोला, 'इससे तो बेहतर यही होता कि तुम किसी औरत के साथ गृहस्थी बसा लेते। इस उम्र में सेवा-जतन करती।'

'मास्टर साहब !'

'कहो।'

'लड़के—बच्चे को प्यार करने से क्या वही होना पडेगा ?'

'रीतू बाबू चिहुँक उठा। आरक्त आँखों को फैला कर बोला, 'गोपाल !'

'उसे मैं अपने लड़के के समान प्यार करता हूँ।'

'लडके की तरह ?'

'वह मेरा लडका है मास्टर साहब।'

'मेरा बदन छूकर कह सकते हो ? फिर वह तुम्हें बाबू जी क्यों नही कहता है ? इसमे दोष ही क्या है ?'

'आपका बदन छूकर कह रहा हूँ। तब हाँ, वह मेरी पत्नी का लडका है, मेरा नही। इसलिए उसके मुँह से बाबू जी शब्द सुनता [illegible] तो मेरा मन नफरत से भर जाता है। किसी को मालूम नही है। कह नही पाता हूँ। आज आपसे कह दिया है तो पूरी कहानी सुन लीजिये।'

'बोलो। सुनते-सुनते पूरी रात कट जाये।'

'क्या हुआ ?'

'आसमान मे एक तारा टूट कर गिर पड़ा।'

उसके बाद ही कहा, 'अलका कहाँ है जी ?'

उसके बाद कहा, 'नही रहने दो। तुम अपनी बात कहो। सुनूं—तुम्हारी यह बात गोपाल, आज मुझे अमृत जैसी लग रही है। सुनने से पुण्यवान हूँगा। बोलो।'

'डालिम के बारे मे तो आप जानते ही होंगे ! उसके खिचाव से त्रैलोक्य माँ के दल मे दाखिल हुआ था।'

'वह कहानी तो जग जाहिर है।'

'डालिम की मृत्यु हो गयी। मैं कुछ दिन इधर-उधर भटकता रहा, उसके

बाद गणेश ऑपेरा का मैनेजर हो गया। अचानक मन मे विचार आया कि शादी—'

बाधा उपस्थित हुई।

'बिग ब्रदर।'

छत के दरवाजे से बावुल ने पुकारा। गोपाल चुप हो गया। एकाएक सीढ़ी के कोने के कमरे में चक्कर लगाकर बावुल सामने आकर खड़ा हो गया।

रीतू बाबू ने कहा, 'मेस ब्रदर ?'

'यहाँ हैं ? काउन्टिंग स्टार्स ?'

'सुन रहा था। एकाएक एक तारा टूट कर गिर पड़ा तो चुप हो गया। गोपाल से गपशप कर रहा हूँ। वह आ गया है।'

'ह्वाट गपशप ? यहो चले। मुझे नींद नहीं आयी—नाक की आवाज होने के कारण। बहुत देर से—लेकिन शुरू वाले कमरे में औरतें स्लिपिंग, दरवाजा बन्द है, आऊँ तो कैसे! लास्ट, अलका को पुकार दरवाजा ओप्न कराया और उठकर चला आया। वह भी नहीं सोयी है।'

'बात क्या है ?'

'आइ थिंक, आज की बात ही है। मेडल से पीड़ा खत्म नहीं हुई है। हो सकता है छोड़ दे।'

'उस लड़की में पार्टस है।'

'छोड़िये 'देम' उसकी बातें। बताइए, गोपाल बाबू क्या कह रहे थे।'

'क्यों ?' गोपाल सोच नहीं सका कि क्या कहे। 'वह बात—'

रीतू बाबू बोला, 'मान लो, कलकत्ते में महाष्टमी-नवमी दो के हिसाब से चार शो होते हैं। दशमी छोड़कर एकादशी-द्वादशी दो दिन दो रात। शायद एक दिन दक्षिणेश्वर में। है न ?'

'हाँ।'

'उसके बाद ?'

गोपाल की जान बची। वह बोला, 'उसके बाद कलकत्ते से मुफस्सिल। कोजा-गढी और बराकर में दो रात। उसके बाद आसनसोल में अड्डा। काली पूजा तक कोई निश्चित बयाना नहीं है। दो-चार मान लिया जा सकता है। रानीगंज, अण्डाल, का-जोड़ा और उधर बर्नपुर कुल्टी। कच्चा पैसा है। दो-चार रात होगा, दो-चार दिन बैठे भी रहना पड़ेगा। उसके बाद काली पूजा से लगातार दस दिन। काली पूजा से चार दिन तक दो-दो शो चलेंगे। खत्म होगा साहब कोलियारी में वहाँ तीन दिन अभिनय करना है। आप तो उन लोगो से परिचित हैं। अबकी और अधिक धूमधाम है। विलायत से साहब आ रहे हैं। उन्हे यात्रा दिखायेंगे।'

रीतू बाबू बोला, 'उन लोगों का दिल बहुत बड़ा है। एक दिन खाना खिलाता है और वह खाना बहुत ही ऊँचे दर्जे का होता है।'

सड़क पर घर्र-घर्र आवाज होने लगी।

रीतू बाबू ने पूरब तरफ के आसमान की ओर देखते हुए कहा, 'भोर हो गयी ?'

'कूड़ा-कचरा फेंकने वाली गाड़ी सड़क पर जा रही है।'

'बाबुलदा !'

अलका उठकर बाबुल की खोज में आयी है।

'येस !'

'देखो न, कोई टैक्सी या रिक्शा मिल जाये।'

'डेंजरस। माई फादर। इस भोर में निकल कर लाल बाजार के लॉकअप में जाना है ?'

'क्यों ?'

'रास्ते मे पुलिस कैच करेगी—कहेगी, भगाकर ले जा रहे हो। वेट—'

'बापरे ! जानते हो मेरी जान निकल रही है। रात-भर सोयी नही हूँ।'

'डोण्ट बॉदर। दो दिन बाद आदत लग जायेगी।'

रीतू बाबू ने कहा, 'योगा मास्टर एक बड़ी ही अच्छी बात कहता है—उसको तो तमाम बातें कण्ठ जी की हुआ करती हैं। तब हाँ, यह हो भी सकती है। वे कहते थे, 'तेल चुपड़ कर लगाओ। यानी लोटे में हाथ डुबोकर थोड़ा-सा यहाँ-वहाँ थपथपा कर लगा लो। उसके बाद मालिशकर मिला लो। चित होकर सोओ भैया। चित होकर सोने से जगह पर ठीक से कब्जा होगा। और नाला नहर नजर आये तो पत्ता तोड़ना। मतलब यह कि मिट्टी का नाला हो तो पेड़ की डाल कसकर पकड़ो। तब खाओगे कालदमन का भात। कालदमन का मतलब कालीयदमन यानी कृष्णयात्रा। तब कुल मिलाकर शौकिया यात्रा होती थी। 'कालीयदमन' कृष्णयात्रा ही उन दिनों यात्रा थी। इसमें बहुत तकलीफ होती है अलका। तकलीफ कलंक और बहुत कुछ। यह भोर का वक्त है—रात के समय मन आकाश मे उड़ रहा था। एक तारा आँखों के सामने टूटकर गिर पड़ा। तुम्हारे चेहरे की याद आ गयी। गोपाल से पूछा, अलका कहाँ है ? उसके बाद सोचा, वह टूटेगी ही। कहा, नही रहने दो। दूसरी बात पर चला आया। तुम इस भोर बेला में आयी—रात भर सो नहीं सकी। ममता हो रही है। तुम इस रास्ते को छोड़ दो।'

अलका बोली, 'नही रीतू बाबू—'

'ऐ शटअप।'

'क्यो ? मैंने क्या किया ?' अलका ने आश्चर्य में आकर कहा। मगर वह क्षुब्ध या व्यथित नही हुई। बाबुल को वह पहचानती है।

बाबुल बोला, 'मास्टर साहब जो—वही करो। मतलब कि बोलो।'

'अभी अभ्यस्त नही हुई हूँ। हो जाऊँगी। तब हाँ, वापस नहीं जा सकूँगी मास्टर साहब। बहुत आगे बढ़ चुकी हूँ। बहुत—'

'धोखा खाओगी। अभी तक सप्तपदी नही हुई है। यात्रादल के साथ सात फेरे नही लगाये हैं।'

'पता नहीं, कितने डग आगे बढ़ चुकी हूँ। माँ-बाप जितना धोखा दे चुके हैं, उससे बढ़कर धोखा क्या होगा! तब हाँ, छोड़ूँगी लेकिन कुछ दिन बाद। यहाँ नाम कमाकर दिखा दूँगी। तभी छोड़ूँगी।'

रीतू बाबू बोला, 'बहुत अच्छा। तुम औरत हो वरना कहता कि यह मर्द की बात है। आज बहुत चोट पहुँची है?'

अलका ने जवाब नही दिया।

अलका ही नही, सब लोग चुप हो गये। बाबुल बोल उठा, 'हरि हे, राजा बना दो। मेक मि ए किंग प्लीज!'

देखते-देखते पूरब मे लाली छिटक आयी थी। एक ट्राम आयी और चली गयी। बाबुल बोला, 'लो, अब उठो। ट्राम निकल चुकी है। चाय की दुकान पर चाय पीते-पीते ट्राम आ जायेगी। कल आऊँगा बिग ब्रदर।'

दो मञ्जिले के तकरीबन सभी आसामी उठ गये हैं। कल किसी को भी अच्छी नीद नही आयी थी। मन मे एक उत्कंठा है और है हिसाब। पूजा के कपड़े के लिए तीस चाहिये। नही-नही, तीस मे कैसे होगा? लड़ाई का बाजार है। कन्ट्रोल में कपड़ा मिल नही रहा है—यूनियन बोर्ड के प्रेसिडेन्ट का इसमें हाथ है। उसकी मर्जी पर सब कुछ निर्भर करता है। कोई-कोई रिश्वत लेता है। ब्लैक मे खरीदने से गला काट लेता है। चालीस-पैंतालीस ले लेता है। किसी-किसी का बीस-पच्चीस। किसी की हालत बहुत पतली है, दर्जनों बच्चे हैं। यहाँ कुछ छीट खरीदनी पडेगी। किसी की मालगुजारी बाकी है। मालगुजारी देनी है। दुकान का बकाया है। बढते बढ़ते सख्या तीन अंकों में पहुँच जाती है। काले परदे की तरह सब कुछ अँधेरे से ढंक जाता है। पेशगी की माँग भी कैसे करेगा? लगभग पचास-साठ व्यक्तियों की तनख्वाह तीस-चालीस रुपया है। सौ-दो सौ रुपये कुछ ही व्यक्तियों की है। उन लोगों को कोई चिंता नहीं है। लेकिन ये लोग सोच रहे हैं। चिन्ता के मारे अच्छी तरह नीद नही आयी। भोर में ही जगकर गुमसुम बैठे हैं और सोच रहे हैं। सामने एक काला परदा झूल रहा है। भोगा मास्टर गुनगुना कर गीत गा रहा है। कण्ठ जी का गीत है यह—

मेरे घर में हैं दो सौत—झगड़ा करती दिन-रात
घर के दरवाजे पर दोनों सौतें—करती दान अतः अपने गुण से दोनों
सौत डूबे पानी में।

कण्ठ जी के दरवाजे पर खिड़की-तालाब दो सौतें आज भी हैं। उस तालाब में बाढ़ का पानी आता था। उस बाढ में किसी जमाने में दो सौतें झगड़ाकर डूब गयी थीं—इसलिए उसका नाम था दो सौतों का तालाब। वह जमीदार का तालाब था। जमीदार के घर पर अभिनय करने गये थे। जमीदार ने खुश होकर कहा था, 'कण्ठ

जी, आपकी जो भी इच्छा हो, माँग लें। मैं स्वयं को धन्य समझूँगा। तब हाँ, मेरी सामर्थ्य की बात होनी चाहिये।' कण्ठ जी ने उस तालाब को माँग लिया था। उन्होंने भी दो शादियाँ की थी। घर मे दो सौतें थी। योगा मास्टर की दो शादियाँ हुई हैं। घर में दो सौते हैं। आज पेशगी के लिए पकड़ना होगा, इसलिये उसे वह गीत याद आया है और वह उसे गुनगुना रहा है।

बाबुल फर्श पार करते-करते ठिठककर खड़ा हो गया और बोला, 'मैटर क्या है ? ग्रेण्ड ओल्ड मैन, मार्निंग में उठते ही दोनों औरतों को याद क्यों कर रहे हो ? रोज करते हो क्या ?'

'बाबुल बाबू ! अरे अलका बिटिया ! अहा हा, कल कितना अच्छा नृत्य किया ? वाह-वाह ! और किसकी भूमिका मे उतरी थीं ? मुनियों तक का मन डोल जायेगा।'

अलका शरमा गयी। उसे गुस्सा भी आया मगर बिटिया कहने से गुस्सा जाहिर नही कर सकी।

'घर जा रहे हैं ?'

'हाँ। चलो अलका।'

'दस बजे आ रहे हैं न ?'

'क्यों ?'

'ओह ! लगता है, आप लोगों को पेशगी नहीं लेनी है। आज दस बजे देंगे। कल ऑर्डर हो गया है। आप आते तो मुझे सुविधा होती। मेरे लिए कह देते। घर मे दो औरतें हैं, दोनों के आठ बेटियाँ। उनमे से चार मर चुकी हैं और चार मौजूद हैं। एक विधवा है, उसकी जिम्मेदारी मेरे कंधे पर है। एक सधवा है, उसे सौगात भेजनी है। दो अखंड युवती हैं, अभी तक कुमारी ही हैं। उस पर शौक कितना—कहती हैं, 'बाबू जी चटकदार साड़ी लेते आइएगा। जरा पैरवी कर देते। रीतू मास्टर बिगड़े हुए हैं, इसलिए कि मैंने रतनपुर में रुपया लिया था।'

'आऊँगा तो डील टेल ऑल्ड बैण्ड मास्टर। चलो।'

सीढी पर खड़ी अलका ने पीछे से कहा, 'तुम नही आओगे ?'

'नो। मुझे पेशगी नही लेनी है।'

'तुम्हारा बैङ्क मे रुपया है। तुम्हे चिन्ता नही है। मुझे आना होगा।'

'मतलब ? ऑलरेडी टु हन्ड्रेड दे चुका है। दुबारा क्या कह कर 'आस्क' करोगी ?'

'मैं आस्क नही करूँगी। तुम मेरी ओर से करोगे।'

'माई खुदा। वह आइ वॉन्ट।'

'तो फिर तुम एक सौ रुपया दो। पूजा के समय उसके बिना मेरा काम नही चलेगा।'

एकाएक अपने स्वर में प्रगाढ़ता लाते हुए अलका ने कहा, 'मेरा दर्द तुम नही जानते बाबुलदा। मेरे आने के बाद सब कुछ बेच दिया गया है। माँ और बाबू जी

निराहार रह रहे हैं। बाबू जी सम्भवतः एक-दो महीने में ही विदा हो जायेंगे। एक-दो दिन में भी हो सकते हैं। कुछ रुपया देना ही पड़ेगा। तुमने भाइयों से रिश्ता तोड़ लिया है। वे लोग अभाव में हैं भी नहीं। ये लोग माँ-बाप हैं। चाहे जो हो, मैं उनकी लड़की हूँ।'

प्रगल्भ बाबुल बोस खामोश हो गया। नीचे उतर कर बोला, 'चलो, दुकान में चाय पी लें।'

चाय पीते-पीते अलका बोली, 'तुम दोगे ?'

'उहूँ, शैल कम। क्या करूँ ? परसों थियेटर में तुम्हें थर्टी मिला है।'

'मुझे दो सौ की जरूरत है।'

'दो सौ ! नो बॉडी विल मैरी यू।'

अलका ने हँसकर कहा, 'तुम तो एवररेडी नहीं हो ! देखो।'

'मैं उन लोगों से कह दूँगा।'

'फिर भी वे लोग शादी करेंगे।'

'जहन्नुम में जायें वे। विल गो टु हेल। लो, पी लो। ट्राम की आवाज आ रही है।'

'आज जूता ठीक है न ? चलो।'

ट्राम में बैठ बाबुल सो गया। अलका सोयी नहीं। झपकी आ रही थी और वह अपने बारे में सोच रही थी। मन में कल रात से ही एक प्रकार का क्षोभ जम गया है। उसके पार्ट को काट-छाँटकर उसे पूरे दल की निगाह में छोटा बना दिया गया है। गन्धर्वकन्या की हीरोइन ने उसका पार्ट छीन लिया। वह कुछ कह नहीं सकी। कह नहीं सकती है, यह महसूस किया था। सखी का पार्ट पाकर उसे खुशी ही हुई थी। इसी किस्म का पार्ट उसे प्रिय है। गोरा बाबू ने बड़े ही अच्छे-अच्छे शब्द रखे थे। किया भी उसने अच्छा था। लोग हँस पड़े थे। वह बाबुल की भद्दी भाँड़ जैसी हँसी सुनकर हँसने जैसी हँसी न थी। वास्तविक रसिकता की बात सुन कर हँसने जैसी वह हँसी थी। 'चिरकुमार सभा' जैसी। मंजरी खड़ी नहीं हो पा रही थी, उसे असुविधा हो रही थी। उसकी अक्षमता की वजह से ही ऐसा हो रहा था, न कि इसकी अक्षमता से। वह हीरोइन है—प्रोप्राइट्रेस है, इसलिए इसका पार्ट काट कर उड़ा दो। एस्प्लेनेड आने पर बाबुल को पुकार कर जगाया, 'उठो, एस्प्लेनेड आ गया।'

तब टालीगंज में ट्राम खड़ी थी। अलका उठकर बैठ गयी और बोली, 'तुम अगर—'

'अगर ह्वाट ? चुप क्यों हो गयी ?'

'खस के जंगल में मोती छिटकने से लाभ ही क्या होगा ?'

'मोती का वृक्ष होगा। कह डालो।'

'तुम अगर मुझसे शादी कर लेते तो—'

'माई भगवान !'

'सारी बात सुन लो। तो फिर हम दोनो मिलकर एक यात्रादल की स्थापना करते।'

'स्काई फ्लावर ! इससे बेहतर है कि दस बजे 'कम' । ले आऊँगा । एण्ड गोरा बाबू से कहकर अनादर टु हण्ड्रेड एडवान्स करा दूंगा। मेरे बैंक के उन कुछ रुपयों पर नजर मत गड़ाओ।'

'ठीक है। मगर मैं किसी न किसी दिन यात्रादल अवश्य गठित करूँगी।'

'देन कैप रोतू बाबू।'

'यस !'

'देन शट अप।'

ट्राम तब जग्गू बाजार आ चुकी थी। लोगों का एक झुण्ड ऊपर चढ़ चुका है।

दस बजे वहाँ आने पर अलका अवाक् हो गयी। उससे भी अधिक अवाक् हुआ बाबुल बोस। पेशगी की मजलिस में लोग-बाग नहीं हैं, बरामदा एक तरह से सूना ही है। एकमात्र गोरा बाबू बैठा है और उसके सामने एक पगड़ीधारी आदमी।

गोरा बाबू बोला, 'अरे आ गये ! तुम्हारे यहाँ शिवनन्दन को गाड़ी के साथ भेजने जा रहा था।'

'मि ?' बाबुल ने छाती पर हाथ रखकर कहा।

'नो। अलका। ये बैठे हुए हैं। कल रात इन्होंने हम लोगों का प्ले देखा था। आप नारकेलडांगा के कारखाने के सप्लायर हैं, साथ ही वहाँ माल भी खरीदते हैं। सिनेमा में उतरेंगे। पौराणिक पुस्तक है। अलका का नाच अच्छा लगा है। दो-चार नाच रखेंगे। अलका से कॉन्ट्रैक्ट करेंगे। कल रात मुझसे मेरे बारे में कह रहे थे। आज सवेरे आकर कह रहे हैं कि अलका को रखेंगे। वे कॉन्ट्रैक्ट पर दस्तखत कराना चाहते हैं। मैंने कहा है, दो नाच के लिए पाँच सौ रुपया देना होगा। वे कह रहे हैं, दो सौ।'

बाबुल बोला, 'रबिश !'

अलका की आँखें चमक रही थीं। उसने कहा, 'साढ़े तीन सौ दे दीजिएगा। उन्होंने पाँच सौ कहा है और आपने दो सौ। सात सौ का आधा साढ़े तीन सौ होता है। दीजिएगा ?'

'लीजिये, दस्तखत कीजिये। अभी एक सौ दूंगा। बाकी काम खत्म होने के बाद।'

'नहीं बीच में और एक सौ देना होगा।' गोरा बाबू ने कहा।

'दस्तखत कीजिये।'

'और हम लोगों का डेट रास के बाद रहेगा। बड़े दिन की छुट्टी के पहले नही, उसके बाद सरस्वती पूजा के पहले। ठीक है न?'

'हाँ ठीक है।'

वह आदमी दस्तखत कराकर और रुपया देकर चला गया। गोरा बाबू का भी दस्तखत हो चुका है। मेज पर ढाई सौ रुपया पत्थर के नीचे दबा है। उसका अनुबन्ध हजार रुपये का है।

मंजरी अब बाहर निकलकर आयी। बोली, अब अलका खुश है। कल तुम गुस्से में थी।'

अलका को लज्जा का अनुभव हुआ, 'नही, गुस्से में मैं नही थी। तब हाँ, दुःख हुआ था।'

'होने की बात है। यह मैं महसूस करती हूँ। लेकिन नाटक का खयाल तो रखना ही होगा।'

अलका चुप्पी ओढे रही।

बाबुल बोला, 'वह एडवान्स के लिए आयी है।'

गोरा बाबू ने कहा, 'यही तो हो गया।'

'मेरे पिता जी बीमार हैं। बहुत ही बीमार। सोचा था, उन लोगों के बारे मे कभी नही सोचूँगी। मगर—'

'कितना चाहिए?'

'पहले दो सौ दे चुके हैं। अभी और दो सौ चाहिए।'

बाबुल की आँखें फैल गयी। लेकिन जबान से उसने कुछ नही कहा। उसका अनायास ही माँग बैठना, उसे आश्चर्यजनक लगा। मगर अलका को किसी प्रकार का संकोच नही हुआ। अशोभनीय इसलिए भी न लगा क्योंकि सिनेमा का कॉन्ट्रेक्ट मिल गया था।

मंजरी ने ही कहा, 'ठीक है। ले जाओ। दफ्तर जाने की जरूरत नही, मैं यही दे देती हूँ। बाद मे रसीद दे देना और खाते में हस्ताक्षर कर देना। जानती हो, तुम्हारी बात बहुत ही अच्छी लगी। कौन-सी बात, जानती हो? तुम्हारे पिता जी बीमार हैं—घर-गृहस्थी से बाहर निकल जाने के बावजूद आज भी बगैर दिये रह नही पा रही हो। बहुत ही अच्छा लगा।'

गोरा बाबू की दृष्टि सामने की ओर थी। बोला, 'मुझे कुछ एडवान्स दो न प्रोप्राइट्रेस। मैं मंजरी के लिए साड़ी खरीदूंगा।'

'मैं भी मैनेजर से माँगूंगी कि मुझे दिया जाये—।'

'फालतू बात! आओ अलका, अन्दर आओ।'

'गोरा बाबू बोला, 'समथिंग चलेगा दिलदार?'

'लीजिये। नो ऑफर तो नो वान्ट। ऑफर तो अब रेडी। तब समथिंग मेनीयिंग हो जाता है।'

'शिवना!'

शिवनन्दन आकर हाजिर हुआ। सब हाँ, वह मँजा हुआ आदमी है। उसकी माप सीमित रहती है और सोडा डालना वह भूलता नहीं। उसने दो गिलास लाकर रख दिये।

मंजरी और अलका कमरे से बाहर निकल आयीं। मंजरी बोली, 'तुम्हारी यह प्यास बहुत बढ़ती जा रही है।'

'अनन्त तृष्णा है जी।'

'पानी की तृष्णा बुझ जाती है। यह तो मरीचिका की तृष्णा है।'

'हाँ तृष्णा दौड़ लगाती है, मरीचिका पीछे छूट जाती है। तृष्णा रुकती है तो मरीचिका भी रुक जाती है। तृष्णा पीछे रह जाती है तो मरीचिका आगे बढ़ती है। बढ़कर पुकारती है।'

अलका बोली, 'बड़े ही सुन्दर शब्द हैं।'

'रबिश! हि इज एन ऑथर।'

मंजरी ने कहा, 'ऑथर, अब एक जोरदार विज्ञापन तो लिखिये—मंजरी ऑपेरा का। बाबुल बोस : सिनेमा आर्टिस्ट, अलका चौधरी : सिनेमा आर्टिस्ट।'

'उहुँ अलका नहीं, अली चौधरी। लिखूंगा, जरूर लिखूंगा। लिखना पड़ेगा।'

'हम लोग चल रहे हैं जहाँपनाह।'

'डुबकी मत मार देना। आना। समझे?'

'मरीचिका के खिंचाव से आऊँगा। अच्छा, हिरन झुण्ड बनाकर मरीचिका के पीछे दौड़ते हैं या नहीं, यह बता सकते हैं माई लॉर्ड?'

'जरूर। हिरनी के पीछे दौड़ते हैं तो एक-दूसरे को सींग मारते हैं। इससे बिरादरी में वृद्धि होती है।'

'राइट-राइट-राइट। चलता हूँ। हाँ, एक बात।'

'वह क्या? तुम्हें भी रुपये की जरूरत है क्या?

'बाबुलदा तो महाजनी करता है।'

डेंजरस। वह सब डोन्ट से। मनी लेंडर्स एक्ट के तहत पकड़ लेगा।'

बाबुल का बातचीत करने का तौर-तरीका अद्भुत है। एक ही निश्वास में उसी बात के साथ कहा, 'मैं उस बूढ़े योगा मास्टर के बारे में कह रहा था। दो बड़ी और कुल मिलाकर पाँच लड़कियाँ हैं। रस्कल कहता है बेटी।'

'राढ़ का रहनेवाला है न। राढ़ के लोग यही कहा करते हैं। मैं भी राढ़ हूँ। वह डेढ़ सौ ले चुका है। कण्ठ जी का गाना सुनाकर, पंच कन्या की दुहाई देकर अदा करके ले गया है।'

'ओ के। चलता हूँ।'

'मैं भी चल रही हूँ।' अलका बोली।

'अच्छा चलो।'

मंजरी बोली, 'देखो, पार्ट उठाकर छीके पर रख नहीं देना। सती तुलसी के श्रीकृष्ण का पार्ट बढ़िया और बड़ा है। पूजा तक रिहर्सल नहीं होगा। पूजा में ही सती तुलसी का मंचन किया जायेगा।'

गोरा बाबू बोला, 'वह ठीक ही करेगी। मैं कहे देता हूँ। चिन्ता मत करो प्रोप्राइट्रेस, अबकी मंजरी ऑपेरा का विजय अभियान है। गन्धर्वकन्या, सती तुलसी, जना। विजय चक्रवर्ती द्वारा रचित अनुपम नाट्य आवेदन। नाट्य-सम्राज्ञी मंजरी देवी। विख्यात चलचित्र-अभिनेत्री...उर्फ छोटी बुंची, नट-चूडामणि बसी, सिनेमा-स्टार लावण्यमयी अली चौधरी।'

बाबुल बोला, 'नट-चूड़ामणि.. भट्टाचार्य जैसा शब्द लग रहा है और जबान में अटक रहा है।'

मंजरी बोली, 'उसकी टाइटिल है नट सुधाकर।'

'वण्डरफुल।'

गोरा बाबू बोला, 'सिनेमा-अभिनेता बाबुल बोस। तुम्हारी टाइटिल दूँगा, नट रसराज।'

'और बिग ब्रदर ?'

'वे सिर्फ रीतू बाबू हैं। यात्रादल के भीष्म। उन्होंने टाइटिल स्वीकार नहीं की है।'

मंजरी के चेहरे पर चमक खेल गयी। मंजरी ऑपेरा का विजय-अभियान मानो उसकी आँखों में तैर रहा है।

द्वितीय पर्व

एक

मंजरी ऑपेरा का सचमुच ही विजय अभियान शुरू हुआ।

पूजा की महाष्टमी, महानवमी से शुरू करके लक्ष्मी पूजा में बराकर में अभिनय का कार्यक्रम चला, उसके बाद आसनसोल और उसके इर्द-गिर्द। इसके बीच विराम भी था। लेकिन कालीपूजा के दिन से लगातार दस दिन में से सात दिन तक रात में दो-दो अभिनय करने के बाद अन्ततः बराबर के समीप साहबों की विशाल कोलयारी में आकर उपस्थित हुआ। वहाँ लगातार दो रात तक अभिनय चलता रहा। यहाँ अभिनय की शुरुआत साढ़े आठ बजे होती है और समाप्ति होती है साढ़े बारह बजे। जम कर आतिथ्य किया जाता है। कालीपूजा के मंचन का अवशेष समाप्त हो गया है। अतः हर रात एक ही अभिनय करना है। इन लोगों के यहाँ प्रथम वर्ष से ही कालीपूजा के अवसर पर अभिनय होता चला आ रहा है। कालीपूजा की रात से तीन दिन तक अभिनय चलता है। अबके इन लोगों ने साहबों के कारण तिथि आगे बढ़ा दी है। विलायत से साहब आया है। उसका इंस्पेक्शन जिस दिन खत्म होगा, उसी दिन से यात्रा की शुरुआत होगी। उसके पहले इन लोगों का थियेटर हो जायेगा। साहब लोग लड़कों द्वारा लड़कियों का अभिनीत पार्ट नहीं देखेंगे या वे खुश नहीं होंगे, यह सोच कर थियेटर न दिखा कर महिला-यात्रादल ही दिखायेंगे।

मंजरी ऑपेरा का इसे सचमुच ही विजय-अभियान कहना चाहिए। हर जगह बड़ा ही नाम कमाया है। भोगा मास्टर कहता है, 'फिर भी तो चंदन नहीं लगाया है। यानी चन्दन नहीं लगाया है। उसके गाँव में एक बेवकूफ था। उसे अपनी खूबसूरती यानी चेहरा के सम्बन्ध में एक बीमारी थी। अगर कोई कहता कि तुम बड़े ही खूबसूरत दीख रहे हो तो वह जी भर हँसकर कहता, 'हुँ-हुँ, फिर भी तो चंदन नहीं लगाया है।' इसका कारण यह था कि बराकर के चार अभिनय के बाद से अलका नहीं है। वह भूमिका में उतर नहीं सकी है। उसके पिता की दिल के दौरे से मृत्यु हो गयी है। टेलिग्राम पाकर चली गयी है। उपाय नहीं था, जाने देने पड़ा। उससे हानि जरूर हुई है। बराकर की लक्ष्मी पूजा के बाद ही विधु नन्दी आसनसोल में एक बयाने का इन्तजाम कर आया था।

विधु नन्दी पहले यात्रादल में महिला का पार्ट करता था। आवाज औरतानी थी। अब उम्र हो चुकी है, यानी वह पार्ट नहीं करता है, तब हाँ, कमी होती है तो कर देता है। वरना दल के बयाने के लिए चक्कर काटता रहता है। चेहरा भी खूबसूरत था। अब भी चमक-दमक है। करीने से माँग काढ़ता है और बातचीत बड़े सलीके से करता है। कहीं मुलाजिम के तौर पर नहीं रहता है। उसके दो कारण हैं। उनमें से एक कारण यह है कि तमाम मर्दों का दल होता है तो उसका महिला-पार्ट के छोकरों से झगड़ा हो जाता है, और दूसरा यह कि महिला-यात्रादल होने से महिलाओं से झगड़ा हो जाता है। और वह झगड़ा पार्ट के चलते होता है। वह

महिला पार्ट का निष्ठुर आलोचक है। बात-बात मे स्वयं पार्ट करके दिखाने जाता है। ये लोग हँसती हैं। वह कहता है, 'अरे उस जमाने के लोगों से पूछ कर देखना, वे लोग बतायेंगे। आज भी वे विधु नन्दी को भूल नही सके हैं। उन दिनों विधु का नाम ही विधु बदनी था। दल के लोग उसे 'विधे' कहते थे।'

उसकी औरतानी मुद्रा के कारण मर्द लोग उसे पसन्द नही करते हैं। खास कर महिला-यात्रा के मर्द। उसमे एक और दोष यह है कि उसके पास अपना एक छोटा-सा सूटकेस है, इसके अलावा तकिया, दरी का बिछावन, दो कपड़े और एक कुरता। लेकिन बयाने के इन्तजाम में निकलने के पूर्व उसे चुस्त-दुरुस्त सजना-सँवरना पड़ता है। उसी तरह वह सजता-सँवरता भी है। तब हाँ, जिसके पास जो भी अच्छी चीज होती है उसे लेकर चल देता है। यहाँ तक कि छड़ी भी। इसका कुरता तो उसकी धोती और जूता। बड़ा होता है तो भी विधु सँभाल लेता है। कुरता की बाँह मोड़ कर सहेज लेता है। गला बड़ा रहता है तो चादर से ढँक लेता है, जूता बड़ा होता है तो उसमें कपड़ा ठूँस देता है। जूता तंग रहे तो भी कोई बात नही, छाला पड़ जाने से लँगड़ाकर चलता है। फिर भी चेहरे पर हँसी बनी रहती है। वापस आता है तो उस पर निष्ठुर लाछना की तलवार की चोट पड़ती है, शब्दो का समूह बरसने लगता है, लेकिन उसके जीवन मे सहन-शक्ति कवच कुण्डल की तरह है। उससे वह आहत नही होता। तब हाँ, दल उसकी खातिर करता है, न करने का उपाय भी नही है। क्योंकि बातचीत करने और बयाने का इन्तजाम करने मे वह माहिर है।

आसनसोल बाजार के लिए दो रात, उसके आसपास के गाँव के जमींदार के लिए दो रात, अण्डाल स्टेशन के लिए एक रात और रानीगंज के लिए दो रात का बयाना उसने ला दिया। कोजागढ़ी के अभिनय के बाद कालीपूजा की रात तक के बारह दिन मे से पाँच रात के लिए बयाना ले आया। उम्मीद थी कि आसपास की कोलियारी या बाजार के बड़े आदमियो के घर मे और भी दो-तीन रात अभिनय करने को मिल जायेगा। अच्छा गायक हो और उसकी प्रसिद्धि हो तो यही होता है। इस मुहल्ले में अभिनय होता है तो उस मुहल्ले का बयाना मिल जाता है। इस गाँव मे देखकर उस गाँव वाले ले जाते है। सब लोग चन्दा वसूल कर अभिनय कराते हैं। अभिनय हुआ भी था दो रात के लिए। बारह रात मे से आठ रात तक अभिनय का दौर चलता रहा। दल के लिए यह गौरव की बात है, साथ ही साथ उसे फायदा भी होता है। तब हाँ, दक्षिणा कुछ कम मिलती है। लेकिन ढाई सौ की जगह दो सौ से कम लेने को तैयार नही होता है। दो रात का बयाना छोड़ दिया है।

उसका कारण है अलका। उनकी जिद थी, अलका को लाना ही होगा। गोरा बाबू ने कहा था, 'कैसे लाऊँ? उसके बाप का देहान्त हो गया है और वह चली गयी है।'

उन लोगों ने झगडा किया था, 'फिर विज्ञापन बडे-बडे हरूफों में क्यों किया था ?'

'वह हम लोगों के दल मे है, बराकर में अभिनय किया था। सूतक खत्म हो जायेगा तो फिर पार्ट करेगी। विज्ञापन पहले का छपा है। अतः यह आप लोगों की अन्यायपूर्ण मांग है।'

'फिर रुपया कम लीजिये। डेढ सौ।'

'हमें अभिनय् नहीं करना है, क्षमा करें। आप लोगों की जरूरत नहीं है।'

वह एक जमींदार घर का लड़का है। तीन पुरखों से जमींदारी है। कोयले की रॉयल्टी मिलती है। कार चलाकर आया है। वह 'डैम इट' कह कर मोटर चलाता हुआ चला गया था। योगा मास्टर ने कहा था, 'बलैया लेने का मन करता है। नटवर यात्रावाला कहता था, कौन चढ़े हाथी, हम हैं बड़े आदमी के नाती। हाथ डिग-डिग, पाँव डिग-डिग, पहलवान की छाती। बात यही है।'

अलका की वजह से और दो-चार जगहों मे असुविधा का सामना करना पड़ा था। लेकिन बात उनकी समझ में आ गयी थी। अभिनय भी कोई बुरा नहीं हुआ था। कम से कम जिन लोगो ने अलका का नाच नहीं देखा था उन्हें बुरा नही लगा। 'सती तुलसी' मे अलका ने जो पार्ट किया था वह अच्छा ही किया था लेकिन अभिव्यक्ति की दृष्टि से बुंची ने उससे अच्छा किया। मगर उसकी देह के कारण 'कृष्ण' के रूप मे वह जँची नही। इसके अलावा अलका जैसी छाप नही छोड़ सकी। गोपाली ने सखी का पार्ट किया था। एक दिन 'जना' का अभिनय हुआ था जिसमें मोहिनी माया का पार्ट गोपाली ने किया था। इसमें भी अलका के उतरने की बात थी, पर आज तक मौका नही मिला। क्योंकि 'जना' उन लोगो का पुराना नाटक है और थियेटर की वजह से लोगों के लिए भी पुराना हो चुका है। इसलिए लगातार तीन रात तक प्ले न हो तो 'जना' अभिनीत नहीं किया जाता है। अब तक तीन रात के लिए एक जगह का बयाना ही मिला था। इसके अलावा इस साहब कोलियारी में तीन रात तक अभिनय होना है। कोलियारी के बड़े बाबू प्रवीण व्यक्ति हैं। यहाँ प्रायः तीस बरसों से नौकरी कर रहे हैं। मैनेजर साहब, असिस्टेन्ट मैनेजर, बंगाली युवक वगैरह उनके हाथ की मुट्ठी में है। कभी स्वयं थियेटर में उतरते थे। बडे-बड़े पार्ट कर चुके हैं। थियेटर देखने कलकत्ता जाते थे। पूजा कमिटी के प्रेसिडेण्ट हैं, असिस्टेन्ट मैनेजर सिर्फ नाम के हैं, वे ही सर्वेसर्वा हैं। उत्सव कमिटी के वे ही प्रेसिडेण्ट हैं। बराकर में वे इन लोगों का प्ले देख चुके हैं। अलका का नाच देखकर आनन्दित हुए थे। मंजरी का अभिनय उन्हें बहुत पसन्द आया है। चार बरसो से उसे मेडल देते आ रहे हैं। बिटिया कह कर पुकारते हैं। दल जैसे ही कोलियारी में आया, वे बोले, 'सब ठीक है न ? सुना था, उस सिनेमा स्टार के पिता का देहान्त हो गया है। वह लौटी नहीं है ?'

गोरा बाबू ने इस सम्बन्ध में इन्तजाम करके रखा था—अलका को पहले ही

पत्र लिख चुके थे। दो दिन पहले तार भेजा है कि वह बराकर स्टेशन चली आये। गोरा बाबू ने कहा, 'वह आज पहुँच जायेगी।'

'ठीक है। मतलब यह कि इन साहब पट्टों का मनोरंजन माँ भवानी से ही होता है। इसे ही विलायती खान-मजदूर कहते हैं। हम लोगों के यहाँ जेनरल हो गये हैं। उन लोगों को और कुछ समझ में नहीं आता। समझते हैं तो बस लड़ाई और नाच। मतलब यह कि नाच अच्छा होना चाहिए।'

'वह जरूर आयेगी।'

'बस-बस, तब तो हो गया। वरना आप हैं, मतलब यह कि मंजरी बिटिया है—आप लोग प्ले अच्छा करते हैं। जमेगा ही। कब क्या करने जा रहे हैं?'

वह ठीक ही था। पहले दिन गन्धर्वकन्या, दूसरे दिन सती तुलसी।

'ठीक है। मतलब यह कि आखिरी दिन 'जना' रखो। सती तुलसी पिछली बार देख चुका हूँ। जना नाटक, मतलब यह कि जैसा लिखा गया है, वैसा ही, मतलब कि उसकी विषय वस्तु है। और मतलब यह कि जना का पार्ट वे जैसा करती हैं, आप भी वैसा ही प्रवीर का पार्ट करते हैं। बहुत अच्छा रहेगा। आखिरी दिन सब रोयें। जगह-वगह मतलब यह कि आप लोगों की देखी हुई है, जानी-पहचानी है। फिर भी देख लो भैया, किसी प्रकार की कोई असुविधा तो नहीं है। वह लड़की आ जायेगी न?'

'निन्यानवे प्रतिशत निश्चित है? हम लोगों का आदमी स्टेशन जा चुका है।'

'मतलब यह कि वह लड़की नाचती बहुत अच्छी है। हाँ, बहुत ही अच्छी। उस दिन, मतलब यह कि, बराकर में मैंने उस दिन उससे कहा था, मतलब यह कि, हम लोगों के यहाँ और भी अच्छा नाचना होगा। मतलब यह कि, भले घर की लड़की है न?'

'हाँ।'

'अच्छा-अच्छा। मतलब यह कि, कोई असुविधा हो तो मुझे सूचित कीजिएगा।'

'करूँगा।'

कोलियारी के एक छोर पर लम्बे बैरेक की तरह एक लम्बा मकान है। दोनों तरफ दो बरामदे। यह कोलियारी कम्पनी का ही अपर प्राइमरी स्कूल है। बहुत बड़ी कोलियारी है, स्टॉफ में बहुत सारे लोग हैं। लड़के भी लगभग सत्तर हैं। स्कूल के आसपास १६ कमरे हैं। केवल एक किनारे के ऑफिस रूम को छोड़कर पाँच कमरे

छोड़ दिये गये हैं। चार बड़े-बड़े कमरे हैं—लगभग बीस बाइ बत्तीस के। एक छोटा-सा कमरा है जो उस ओर के छोटे ऑफिस-रूम से सामंजस्य रखते हुए बनाया गया है। उसमें मास्टर लोग बैठते हैं। वह उन लोगों का विश्राम गृह है। उस कमरे में दो तख्ते बिछाकर मंजरी और गोरा बाबू के लिए स्थान बनाया गया है। बगल वाला कमरा औरतों के लिए है। उसके बगल वाले कमरे में रीतू बाबू, बाबुल, नाटू बाबू और रमणी नाग हैं। दो-चार और व्यक्ति भी टिकते मगर जगह रहने के कारण उस कमरे के अन्दर कोई नहीं गया। बाद वाले दो कमरों में भीड़ लगाकर वे घुस पड़े हैं और अपनी-अपनी जगह पर दखल जमा लिया है। इन कई दिनों के दरमियान—कई दिनों के दरमियान ही क्यों, कहा जा सकता है कि आसनसोल से अब तक वे लोग गठरी बनकर सोते थे। इस तरह की खुली जगह नहीं मिली थी। शोर-शराबा करते हुए वे अपना-अपना बिस्तर बिछा रहे हैं। यात्रादल का नियम है कि जो व्यक्ति, बाँस-गाड़ने की तरह अपना अधिकार जताने के लिए, जिस जगह को दखल कर ले, वह उसी की हो जाती है। विपिन इस कमरे का एक किनारा गोपाल मैनेजर के लिए दखल कर चला गया है। बगल में नीतू है। गोपाल के रहने की बात रीतू बाबू के कमरे में थी, लेकिन वह नीतू को छोड़कर नहीं जायेगा। बेहलावाला उसकी बगल में है। वह गोपाल को गाली-गलौज कर रहा था—'बूढ़ा भूत कहीं का।' उसी के साथ भद्दी बातें नीतू के सम्बन्ध में कह रहा था। विपिन चुपचाप है। बातें नहीं करनी चाहिए, बोलने का नियम नहीं है। यह बात यात्रादल में रहकर वह बीस-पच्चीस बरसों से समझ रहा है। दल के आदमी अभिनय के लिए मुफस्सिल की ओर निकलते हैं तो मिलेटरी के घोड़े बन जाते हैं।

रीतू बाबू ने कहा, 'अरे भैया, लड़ाई का घोड़ा बीयर पीकर नशे में न रहे तो वह लड़ सकता है ? यात्रादल के आसामी वैसे ही होते हैं। समझ रहे हो ? रात में अभिनय, रात-भर का जागरण, और टिकना कहीं खटाल में, कहीं गोमार में और कहीं शामियाने के नीचे। उसके बाद सवेरे ही चलो मुसाफिर—पाँच मील दूर अभिनय करना है। यान नहीं, वाहन नहीं, मैदान के बीच से पैदल चलना है। दो-चार बैलगाड़ियों पर माल-असबाब रहेगा और युद्ध के जख्मी बच्चे, औरतें और दो-चार प्रमुख व्यक्ति बैठेंगे। रास्ते में भात मिल जाये तो जिसके पास चिउड़ा-फरको है वह खाये। वरना निराहार रहो। पीने को है तो बीड़ी, चरस-गाँजा, शराब। किसी का मूड बिगड़ा है तो गुस्से में मत आओ। उसका बिगड़ा हुआ मूड तुम बरदाश्त करोगे तो तुम्हारा बिगड़ा हुआ मूड मैं बरदाश्त करूँगा।'

उस पर मैनेजर है गोपाल। उससे दल के लोगों का छोटा-मोटा झगड़ा लगा ही रहता है। किसी को आठ, किसी को दस, किसी को सोलह, किसी को एक बण्डल बीड़ी मिलती है—लेकिन हर किसी को इसके लिए शिकायत रहती है। किसी की एक टूटी रहती है तो किसी की दो। किसी को एक कम रहती है। गोपाल कहता है, 'बीड़ी टूट जाये तो मैं कहाँ से दूँ ? मैं अपनी गाँठ से दूँ।'

'ऐसा हो तो भी टूटी हुई क्यों लूँगा ?'

'अगर तेरी जेब में टूट गयी होती ?'

'तो मेरी टूटती। तुम्हारी जेब में टूटती है तो मैं क्यों लूँ ?'

दल के जो लोग सिगरेट पीते हैं, डिब्बा रहने से उनकी सिगरेट में कोई गड़बड़ी नही होती। वे लोग बडे ऐक्टर हैं। इसके अलावा डिब्बा टूटा हुआ नही रहता। दो-चार डिब्बों में धब्बेदार सिगरेट रहती है। उस मामले मे रीतू बाबू या बाबुल के रहने से कोई चर्चा नही होती। गोपाल बदल देता है। यदि वह कहता है कि क्या करूँ मास्टर साहब, यहाँ सारा का सारा पुराना स्टॉक है तो रीतू बाबू कहता है, 'रख लो लिट्‌ल ब्रदर, कारण को जरा कड़ा तैयार करो, पानी कम डालना। धब्बेदार सिगरेट दो ही दम में जलकर इत्ती-सी हो जायेगी।'

दल के लोगों से और एक बात के चलते गोपाल का झगड़ा लगा ही रहता है और वह है खुराकी का मामला। यात्रा के लोगों को बाहर निकलने पर तनख्वाह के अलावा खुराकी भी मिलती है। दो आना से लेकर एक रुपया तक। बहुत पहले चार पैसे से शुरुआत होती थी। इस लड़ाई के पहले कोई दल तीन आना, कोई दस पैसा देता था। जिस दल का अधिक बोलवाला था वह चौदह पैसा देता था। अब वह रकम छह आने पर आ गयी है, बड़े ऐक्टरो के लिए बढ़कर आठ आने से लेकर एक रुपया तक हो गयी है। मंजरी ऑपेरा ने अबकी बढ़ाकर सात आने से लेकर सवा रुपये तक कर दिया है। गोपाल को तनख्वाह बढ़ाने में आपत्ति न थी, लेकिन खुराकी बढ़ाने मे उसे आपत्ति थी। लेकिन गोरा बाबू और मंजरी ने उसकी बात नही मानी थी। अभी इसी बात के सम्बन्ध में गड़बड़ी मची हुई है—तीन जगह एक-एक कर तीन रात उन्हें निमन्त्रण पर बुलाया गया था। गोपाल उन रातों की खुराकी देना नहीं चाहता। वह कहता है, 'खुराकी खाने के लिए मिलती है न कि बाँधकर ले जाने के लिए। खाना जबकि मिल रहा है तो खुराकी किस बात की ?' दल के लोग कहते हैं, 'वाह जी, तुम खिला रहे हो ?' गोपाल कहता है, 'वह तो दल की वजह से ही मिल रहा है। इसलिए नही मिल रहा है कि तुम भले आदमी हो या नायक की ननेरा बुआ हो।'

गोपाल का तर्क जितना जोरदार नही है, उससे जोरदार उसकी जिद है, 'ऐसा करने से दल कायम नहीं रह सकेगा। दिवालिया हो जायेगा। फिर मैं नहीं रहूँगा।' वह अपनी जिद पर अड गया। अतः बेहला-वादक का गाली-गलोज उस सीमा पर पहुँच गया जिस सीमा पर नही पहुँचना चाहिए था। नीतू बड़ी-बड़ी आँखो से उसकी ओर ताकता रहा। यात्रादल का लड़का दस साल की उम्र में ही काफी परिपक्व हो जाता है। गोपाल रसोई का काम करने गया है। महाराज एक नौकर के साथ बरामदे के एक कोने की घिरी जगह मे सरो-सामान उतरवा रहा है। मछली और लकड़ी की आपूर्ति यहाँ का नायक-पक्ष ही करता है। उन लोगो ने यह सब

चीज काफी मात्रा में भेज दी है। कोलियारी मे ही पंसारी की दुकान है। एक छोटा-सा बाजार भी लगता है। वहाँ सिधु नन्दी फेहरिस्त और रुपया लेकर चला गया।

शिवनन्दन मंजरी और गोरा बाबू का बिस्तर बिछाकर रीतू बाबू के कमरे में आया, 'कुछ हुक्म है मास्टर साहब ?'

'हुक्म और क्या होगा ? मालिक-मालकिन के लिए चाय बनेगी ? बने तो देना। बिस्तर बिछ चुका है। विपिन चन्द्र इसका इन्तजाम कर गया है।'

'हटो, बिछाया क्यो नही ? बाबुल मास्टर साहब का है।'

'हाँ। बिछाकर लेट जाये और क्या ? बिछावन के साथ क्या लिपटा हुआ है, कौन जाने।'

'वे तो अभी अलका को लाने गये।'

'गये नही, आ चले। साइकिल रिक्शा का हॉर्न बज रहा है। देखो, अलका आ गयी ?'

उसके उत्तर में गोरा बाबू की आवाज सुनायी पड़ी, 'आ गयी ? गुड।'

अलका आ गयी है।

बाबुल अन्दर घुसा, 'बिग ब्रदर सैड न्यूज।' उसके हाथ में एक अखबार है।

'क्या ? लन्दन में बम गिराया गया है ? या रोमेल का पुनः आविर्भाव हुआ है ?'

युद्ध के मामले मे रीतू बाबू हिटलर का उपासक है। वह कहा करता है, 'मैं मजबूत का भक्त हूँ। अंग्रेजों की जो पिटाई करेगा, मैं उसकी तरफ हूँ।' बाबुल मित्र पक्ष की तरफ है, तब हाँ, रूस की खातिर। आई० पी० टी० ए० की स्थापना के समय वह कुछ दिनों तक उन लोगों के साथ था। उसी समय से रूस का पक्षधर हो गया है। मगर आई० पी० टी० ए० अब उसे अच्छा नही लगता। उस पर वह बिगड़ा हुआ है।

'नहीं ब्रदर, गणनाथ सेन वैद्य नो मोर। देहान्त हो गया।'

'यह क्या ?'

'लीजिये, देखिये।' अखबार बढ़ा दिया। 'परसों रात चल बसे हैं, बुधवार ८ कार्तिक की रात। आज अखबार में सम्पादकीय प्रकाशित हुआ है। रीतू बाबू वैद्य का भक्त था। वैद्य जी भी अभिनेता-अभिनेत्रियों को स्नेह की दृष्टि से देखते थे। बिना पैसे की बहुतों की चिकित्सा की है। अहा हा, गोरा बाबू-मंजरी ने भी उनसे इलाज कराया था। वे लोग भी उनके भक्त हैं।'

नाटू बाबू और रमणीनाग सो रहे हैं। रीतू बाबू बाहर निकलकर गोरा बाबू के कमरे की ओर चल दिया।

'गोरा बाबू, बड़े ही दुःख का समाचार है। हम लोगों के गणनाथ सेन अब नहीं रहे।'

गोरा बाबू के कमरे में मंजरी नही है, वह नहाने गयी है। अलका खड़ी होकर

बातें कर रही है। गोरा बाबू ने कहा था, 'यह तुम्हारी कठिन परीक्षा है। साहबों को अच्छा लगना चाहिए।'

'ठीक है, परीक्षा दूँगी।'

समाचार सुनकर गोरा बाबू भी चिहुँक उठा था, 'आप क्या कह रहे हैं?'

'लीजिये, देखिये।'

उस दिन की दोपहर में अखबार महत्त्वपूर्ण हो उठा। इन लोगों के लिए रात दिन होती है और दिन रात। वास्तविक संसार, समाज, देश सब कुछ किसी अन्तराल में चला जाता है। ये लोग गन्धर्वलोक में विचरण करते हैं या शंखचूड़ के शैल राज्य में। और कभी महारानी जना की माहिष्मती पुरी में। समय पीछे की ओर मुड़कर कभी द्वापर चला जाता है, कभी त्रेता और कभी सत्ययुग। यथार्थ दुनिया का सब कुछ यवनिका के बाहर रख ये लोग यवनिका के अन्तराल के कल्पलोक में हँसते हैं, रोते हैं और खेल का घर बनाकर खेलते हैं। खेल की पाली खत्म होती है, प्रकाश बुझ जाता है, यवनिका गिरती है और ये लोग सोते हैं। रात समाप्त होती है, सूर्य उगता है, आँख में रोशनी लगती है और ये मुड़कर सो जाते हैं। इसी बीच एकाएक किसी वस्तु को उपलक्ष्य बनाकर ये लोग इस समय, इस धरती पर, जग जाते हैं।

आज के अखबार के कारण उसी तरह कुछ लोग जग पड़े थे। केवल गोरा बाबू, रीतू बाबू और बाबुल नहीं, योगा मास्टर तक आकर बैठ गया था। भाई दूज का एक कार्टून है—चर्चिल बहिन का वेश धारण कर स्तालिन के मस्तक पर टीका लगा रहा है। रोमेल की मृत्यु। हिटलर की घोषणा—दुश्मनों का सफाया कर डालूँगा वी टु रॉकेट छोड़कर। वी टु रॉकेट की गति घण्टे में तीन हजार मील है। वह रॉकेट दक्षिण इंगलैण्ड में गिरा है। जर्मनी की करारी हार आगामी वसन्त ऋतु या गरमियों में। यह ध्रुव सत्य है। रूस में तकरीबन नब्बे लाख जर्मन सैनिक मारे गये हैं या बन्दी बना लिये गये हैं। इन खबरों के कारण तमाम आदमी कुछ क्षणों के लिए जैसे इस काल के आदमी हो गये। गणनाथ सेन की मृत्यु पर लम्बी साँस ली। भारती नामक एक बहू की रहस्यमय मृत्यु के सन्दर्भ में एक भिखारिन की गवाही और सास के अत्याचार की कहानी तथा सुमति नामक एक बाँझ औरत की आत्महत्या के पीछे सास के उकसावे का हाथ रहने के कारण ये लोग इस देश की सासों की आलोचना करने लगे। इसीके साथ इस बात की तारीफ की कि 'किस्मत' फिल्म सत्तावन हफ्ते तक चलती रही, 'उदय का पथ' सत्तर सप्ताह तक चलता रहा। आलोचना करते-करते आलोचना कब धीमी से धीमी होकर थम गयी, इसका पता नहीं चला। रीतू बाबू बैठे-बैठे ही सो गया और उसकी नाक बजने लगी। गोरा बाबू अपने कमरे में जाकर लेट गया। वहाँ मंजरी गाढ़ी नींद में बेहोश जैसी पड़ी है। मंजरी की जवानी धाराधार पर है। कपाल पर पसीने की कई बूँदें छलक आयी हैं। मुँह जरा-सा खुला

है। बड़ी-बड़ी आँखें अधमुँदी हैं। कुछ देर तक देखने की कोशिश की, मगर नींद को रोके नहीं रह सका। सो गया। एकमात्र अलका जगी हुई थी। वह सवेरे सोकर उठी है, ट्रेन पकड़कर आयी है। उसके देह मन में रात्रि-जागरण की थकावट नहीं है। नाक इतने जोर से बजे तो उसे नींद नहीं आती। शोभा, वुँची, गोपाली और आशा की नाक बज रही है। वह बरामदे पर चली आयी और कोलियारी की ओर आँखें टिका दीं। दूर से ही उसने कोलियारी देखी है, इस तरह की कोलियारी के अन्दर नहीं गयी है। आसमान में सिर उठाये तीन चिमनियाँ खड़ी हैं। दो लोहे की हैं एक ईंट से बनी। सभी के ऊपरी हिस्से से धुएं का गुबारा निकल रहा है। दो चिमनियों से ज्यादा और एक से कम। प्रत्येक चिमनी का जाल हावड़ा ब्रिज के फ्रेम की तरह लोहे से बना है और ऊपर की ओर खड़ा है। प्रत्येक चिमनी में दो चक्के हैं और उनमें स्टील की डोरी लिपटी है। बीच-बीच में दोनों डोरी घूमती है। एक खुलती है और दूसरी लिपटती है। बराकर बाजार के पास वह यह दृश्य देख आयी है। उसमें से होकर कोयले का खाली टब नीचे उतरता है और कोयले से लदा टब ऊपर जाता है। ऊपर शून्य में फैली लोहे की डोरी बहुत दूर तक चली गयी है और उनमें लटके टब आगे बढ़ रहे हैं। एक तरह की फक्-फक् आवाज अविराम गूँज रही है। खदान के अन्दर से पम्प द्वारा पानी खींचे जाने की यह आवाज है। जब चक्के घूमते हैं तो घर्र-घर्र शब्द होता है।

अजीब ही दुनिया है यह। दूर शामियाना दीख रहा है। वहाँ यात्रा होने वाली है। आज उसे बढ़िया नाच नाचना है। वह नाचेगी। उसका नाच अच्छा ही होता है। यह बात वह गोरा बाबू का चेहरा देख कर समझ लेती है। आज वह बहुत अच्छी तरह नाचेगी। साहबों को दिखा देगी कि इस मुल्क का नाच कितना सुन्दर होता है। मंजरी ऑपेरा का झण्डा ऊँचे फहरायेगी।

उसे स्वाद मिल गया है। सिर्फ स्वाद ही नहीं, वह एक सीढ़ी ऊपर चढ़ चुकी है। सिनेमा का एक कॉन्ट्रैक्ट मिल चुका है। इसके पहले दौड़-धूप करने के बावजूद नहीं मिला था। थियेटर गयी थी मगर लौटा दी गयी थी। हर आदमी उसके जिस्म की ओर हाथ बढ़ाता है। उसे नफरत होती है। सबसे ज्यादा नफरत थियेटर के मैनेजर, डायरेक्टर और ऐक्टर के प्रति हुई थी। उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा था, 'तुम्हें हीरोइन बना दूँगा। तब हाँ, मेरी बात पर चलना होगा। समझ रही हो?'

वह चली आयी थी। यहाँ बहुत तकलीफ है, यात्रा पार्टी में रहने के कारण लोग उसे ओछी निगाह से भी देखते हैं। देखने दो। वह यहीं से उन्नति के पथ पर कदम बढ़ायेगी। उसे सिनेमा-थियेटर में पार्ट पाना ही है। दीवार पर उसका नाम और तसवीर चिपकी रहेगी। उसके बाद? उसके बाद की बातें रहें।

घड़ियाल की डिंग-डांग आवाज आ रही है—एक-दो तीन-चार-पाँच। हाँ, पाँच बार बजा। उफ, फिर पाँच बज गये। ये लोग अब भी नींद की बाहों में लिपटे

हैं। नहीं, कोई जग कर उठ गया है। पुकार रहा है—विपिन, विपिन, उठो। महाराज को चाय का पानी डालने कह दो। पाँच बज रहे हैं, उठो।'

वह खिचड़ी बाल, मोटे-सोटे बदन वाला गोपाल मैनेजर है। हाँ, गोपाल घोष अब बाहर निकल आया है। उस पर नजर पड़ती है तो हँस कर कहता है, 'उठ गयी? या फिर सोयी ही नहीं?'

'कुछ देर तक सोती रही।'

'आप खड़ी हैं? कोलियारी देख रही हैं?'

'हाँ।'

'इसके पहले नहीं देखा था?'

'बराकर में देख चुकी हूँ। ट्रेन से देखा है।'

'वह भी कोई देखना है। नीचे उतर कर देखिएगा?'

'दिखायेगा? देखने देगा?'

'दिखायेगा नहीं? कृतार्थ होकर दिखायेगा। खासकर आपको। उफ्, आपके कारण कितनी ही जगह कैफियत देनी पड़ी। सिनेमा-स्टार अली चौधरी कहाँ हैं? अभी तक यहाँ के लोगों को पता नहीं है कि आप आ चुकी हैं। पता रहता तो मजमा इकट्ठा हो जाता।'

अलका हँस दी।

गोपाल बोला, 'एक बार वेश-मन्दिर देख आता हूँ। साज-सज्जा करने वालों को जगा दूँ। वेश-भूषा निकाल कर सजायें। उन लोगों से कहिएगा कि अच्छी-सी पोशाक दें। वरना वे ठीक नहीं देते हैं।'

अलका बोली, 'अबकी मैं अपनी पोशाक ले आयी हूँ। मेरा अपना सेट तो था ही।'

'लेकिन दिखा लीजिएगा। मतलब यह कि पार्ट के उपयुक्त होनी चाहिए। ठीक से फबे, ऐसी होनी चाहिए। प्रोप्राइट्रेस या किसी दूसरे को दिखा लीजिएगा। वह देखिये, कितने सारे युवक आये हैं, आपको देख रहे हैं। इशारा कर रहे हैं, आप देख नहीं रही हैं?'

गोपाल हँसने लगा। हँसते-हँसते वेश-मन्दिर की ओर चला गया।

अलका उस तरफ के बरामदे से हट कर दूसरी ओर चली आयी। इस ओर सूनसान है, सामने कुछ दूरी पर बराकर नदी है। उस पार कुछ छोटी पहाड़ियाँ दीख रही हैं। पहाड़ी के शिखर से सूरज लाल होकर नीचे ढल रहा है। कार्तिक का महीना, आज दस तारीख है। अंग्रेजी की सताईस तारीख। वेला छोटी हो गयी है। अर्थ-प्रधान युग में दुनिया के काम का समय छोटा हो गया है। लेकिन इन लोगों की इस अजीब दुनिया के काम का समय बढ़ गया है। काम करने के सन्दर्भ में प्रकृति अनुकूल है। गरमी नहीं है इसलिए पेन्ट नहीं गलेगा, सर्वाङ्ग में अस्वस्ति का अहसास नहीं

होगा। पोशाक पहनने से आराम मिलेगा। दो अभिनय करने के बाद भी थोड़ी देर तक लेटा जा सकता है। यथार्थ जगत में सूरज डूब चुका है, इन लोगों की दुनिया में रोशनी जल रही है। यहाँ बिजली की रोशनी है। अभी झट से तमाम कोलियारी में जल उठेगी। इन लोगों की मजलिस मे कई हजार पावर की बत्तियाँ जल उठेंगी। सफेद ही नहीं, लाल, नीली, हरी, हर रंग की। कुल मिलाकर चाहे दिन की रोशनी की तरह प्रखर न हो लेकिन उनकी जगमगाहट से इन लोगो के गले का कांच का हीरा माणिक की तरह झलमलाने लगेगा। दूसरी जगह होती तो अब तक मिस्त्री दस-पन्द्रह डेलाइट, मेण्टल, पोकर, स्पिरिट कैन लेकर बत्ती जलाने बैठ चुके होते। स्पिरिट की गन्ध आती। यात्रादल के लोग सूंघ-सूंघ कर सांस लेते। उसके बाद नजर पड़ने पर कहते, 'नहीं, वह चीज नही है।'

'विपिन, विपिन !' रीतू बाबू के गले की आवाज है।

'अरे ओ विपिन ! योगा मास्टर ! उठ हे श्याम, उठ।' किसके गले की आवाज है ? बेहला के तार पर कों-कों कर कोई तार खींच रहा है। खट-खट। ओह, कोई गला खँखार रहा है। किसी की खाँसी की खक्-खक् आवाज आ रही है।

'शिवना' किसी नारी की मीठी आवाज आती है। स्वयं प्रोप्राइट्रेस की।

इन लोगों की दुनिया मे जागरण की प्रतिक्रिया जगी है, जग रही है।

'यहाँ खड़ी हो ?'

मंजरी की आवाज सुनकर अलका ने मुड़कर देखा। मंजरी के चेहरे पर मुसकराहट है। वह भी मुसकरा दी। वह कुछ कहे कि इसके पूर्व ही मंजरी ने अपने शब्दों से प्रश्न को पूरा कर दिया, 'इस तरह खड़ी हो ? इधर तो सूनसान है। प्रकृति की शोभा देखी है ?'

'ठीक से नही। उस तरफ कुछ छोकरे सिनेमा-स्टार को देख रहे थे।'

मंजरी के चेहरे पर कौतुक की हँसी उभर आयी। क्या कह रही है यह लड़की ? अपने बारे में बहुत सचेत है। सिनेमा-स्टार का मतलब उसे ही देखने आये हैं। महिला-यात्रादल है - यात्रादल की औरतो को देखने को काफी भीड़ इकट्ठी हो जाती है। सिर्फ भीड़ ही नही, ढेले मे बँधा प्रेम-पत्र भी झप से आकर गिरता है। इन लोगो का दल अभिनय करने के बाद चला जाता है। भक्त और प्रेमियो का दल साथ-साथ चलता है। ट्रेन रहती है तो ट्रेन से, पक्की सड़क होने से साइकिल से और कच्ची सड़क या मैदान हो तो पैदल। कुछ दूर चलने के बाद थक कर, हताश होकर घर लौट आता है। कितने ही गीत सुन चुका है ! - 'आज आया हूँ बन्धु हे— लेकर यह हास्य रूप गीत से—।' किसी ने जो गीत गाया है उसकी पंक्ति भी दुहराते हुए आता है। संलाप की पंक्तियाँ भी दुहराता है—'पापाणी, मैं चलूंगा तेरे पीछे-पीछे, लो आँखों के आंसू। तुम लेकिन जा रही फेर कर अपना मुखड़ा।'

श्रीमती अलका की धारणा है, आज जो लोग यहाँ आ रहे हैं वे उसी को देखने

आ रहे हैं। उसके चेहरे की मुसकान लमहे-भर में वंकिम और धारदार हो गयी। कौतुक के साथ खासी अच्छी धारदार आवाज में बोली, 'ऐसी बात है ?'

'चाय पी चुकी हो मंजरी ?' गोरा बाबू की आवाज आयी, 'वहाँ क्या कर रही हो ? आओ, चाय तैयार है।'

अलका मंजरी के बिछावन पर बैठ गयी। चाय की प्याली हाथ में थाम कर बोली, 'आज सखी के पार्ट में कौन-सी पोशाक पहनूं ?'

'ड्रेसर वह सब दे देगा।' गोरा बाबू ने कहा।

अलका बोली, 'मेरी तैयार करायी हुई कुछ अपनी पोशाकें हैं। वह सब घर पर थी, अबकी ले आयी हूँ। माप दे कर तैयार कराया है।'

'साड़ी पहनोगी—माप से क्या लेना देना ! हाँ, ब्लाउज पहन सकती हो।'

'साड़ी भी ले आयी हूँ।'

'वाह ! तुम बड़ी ऐक्ट्रेस होओगी। अभिनय में मेकअप बहुत बड़ी चीज है। हम उस पर ध्यान ही नहीं देते। लेकिन जानती हो, जब मैं एमेच्योर में काम करता था तो ड्रेस माप देकर तैयार कराता था।'

मंजरी बोली, 'अब भी तुम्हारा ड्रेस माप दे कर ही तैयार कराया जाता है।'

'नहीं कराया जाता है, मैं यह नहीं कह रहा।-सब हाँ, एक ही ड्रेस को आजकल दो प्ले में इस्तेमाल करता हूँ। मैं ही करता हूँ। ऐसा न करूं तो खर्च बढ़ जाये। और ज्यादातर लोग ऐसा भी नहीं कर पाते हैं। बुँची तुमसे मोटी है, तुम्हारा ब्लाउज उसे तंग आता है। सेफ्टीपिन लगा कर काम चला लिया जाता है। पीठ साड़ी के आँचल से ढंकी रहती है। बुँची अपना ब्लाउज नहीं लायी है, लायेगी भी नहीं। मैं यही कह रहा था और क्या !'

इसके बाद सब लोग कुछ क्षण तक चुप हो गये। थोड़ी देर बाद, चाय की प्याली नीचे रख कर अलका बोली, 'लाल बनारसी साड़ी है—'

'लाल बनारसी ! उससे काम कैसे चलेगा ? मैं भड़कदार पोशाक पहनने नहीं जा रही हूँ। तुम सखी होकर पहनोगी ! और यह तो आरती नृत्य है।'

'अगर लाल कोर की सफेद मुर्शिदाबादी सिल्क पहनूं तो ?'

'ब्लाउज किस रंग का पहनोगी ?'

'वह भी सफेद। सफेद साटिन।'

'बॉर्डर ?'

'बॉर्डर साड़ी की कोर की तरह।'

'लाल बनारसी छोड़कर कोई भी लाल रंग का कपड़ा पहन लो।'

'आपका भी तो लाल रहेगा। एक तरह का नहीं हो जायेगा ?'

'बल्कि लाल किनारे की सफेद गरद मैं पहनूंगी। तुम्हें नाचना है न ?'

'हाँ। मेरे पास वैसी भी है। तब हाँ, लाल नहीं, हल्की गुलाबी। सिल्क नहीं, अरगैण्डी।'

'बाप रे! कितनी ले आयी हो?'

'बहुत सारी तैयार करायी थी। पहले ख्वाहिश थी, रागिनी या रुक्मिणी जैसी डान्सर बनूंगी। योरोप-अमरीका जाऊंगी। इच्छा तो बहुत कुछ होती है।'

'उसके लिए जो पार्टनर चाहिए, टू पस होना चाहिए। बाबुल के पीछे-पीछे न घूमकर किसी की तलाश करती, तो हो सकता था, वैसा मिल गया होता।'

मंजरी ने गोरा बाबू की बात को दरकिनार कर कहा, 'एक बार दिखा लेना। तुम सजती हो अच्छी ही। तब हाँ, यह पार्ट कोई अलहदा पार्ट नहीं है, इसे गन्धर्वकन्या की छाया कहा जा सकता है। तुम अच्छा नाचती हो—मैं नहीं नाचूंगी—इसीलिए तुम्हें दिया गया है। है न?'

'हाँ, सो तो है।' अलका इन बातों को सुनकर सचमुच ही सप्रशंस हो उठी।

गोरा बाबू बोला, 'तुम्हे नाच में सजने-सँवरने का स्कोप जना और मोहिनी माया में है। जान रखो। देखना है।'

यह कह कर गुनगुनाने लगा, 'चाह रही थी आऊं पकड़ में पर न सकी मैं। सोने की मैं हिरनी। वायु की तरंग हूँ, मरीचिका मनोहारिणी।'

अभिनय शुरू होने में रात हो गयी थी। दल ठीक समय पर वेश-भूषा धारण कर बैठा हुआ था। आज काली-मूर्त्ति विसर्जन का दिन था। दस दिन तक रखी गयी है, अब नहीं रखी जा सकती। विलायत के साहब देख चुके हैं, आज विसर्जन है। बैण्ड बजा कर आतिशबाजी और धूम-धड़ाके के साथ विसर्जन होगा। दल के बहुतेरे लोग देख भी आये। साहब लोग उधर संतालों का नाच देखने बैठ गये हैं। उन लोगों के आते ही शुरू हो जायेगा। दस बज चुके हैं। लोगों की भीड़ से मजलिस भर गयी है। बहुत बड़ी मजलिस है। बहुत बड़े-बड़े शामियाने टंगे हैं—चारों तरफ चार शामियानें और बीच में लाल सालू का बेल-बूटा कढ़ा हुआ झालरदार शामियाना। मजलिस के बीच तख्ते बिछा कर मंच जैसी यात्रा की महफिल बनायी गयी है। एक ओर कोलियारी के साहब-सूबा और आसपास की कोलियारी के अतिथियों के बैठने के लिए कुरसियाँ हैं। उसके पीछे बेंचों की कतारें हैं। उन पर बाबू लोग बैठेंगे। उसके पीछे एक तख्ता बिछा कर मंच तैयार किया गया है। उस पर बेंच है। उस घर की औरतें बैठेंगी। बाकी तीन ओर तिरपाल बिछे हैं। उन पर आम लो।

सब भर गया है—केवल साहबों के लिए रखी गयी आठेक कुरसियाँ खाली हैं। वह सब सोफासेट की सीट हैं। बड़े बाबू और असिस्टेन्ट मेनेजर घर से बुला लिये गये हैं। आदमी तीन बार गया और लौट कर चला आया है। साहब लोग संथाली नाच देखने में मशगूल हैं। अन्ततः बड़े बाबू खुद गये और लौट कर बोले, 'इसी को कहते हैं' इसी बीच क्रुद्ध हो गये। बोले—'मतलब यह कि, नोट टु दे बड़ा बाबू, पोस्टपोन योर जात्रा टिल टुमॉरो—दिस इस वेरी इन्टरेस्टिंग। मतलब यह कि जाये मरे। आप लोग शुरू करें। नहीं और कुछ देर तक—इसी को कहते हैं—'

गोरा बाबू ने कहा, 'और देर करने कहिएगा तो हम लोग आज स्थगित कर देंगे। दस बज रहे हैं। खत्म होते-होते दो बज जायेंगे।'

'तो फिर शुरू कीजिये, क्या कहते हैं।'

रीतू बाबू बोला, 'पट्ठे बीच में आकर यह तो नहीं कहेंगे कि फिर से शुरू करो?'

रीतू बाबू इसी बीच बैठे-बैठे आधी बोतल शराब गटक चुका है। अकेले नहीं, बाबुल बोस के साथ।

बाबुल बोला, 'देन वी विल जापानी का वेश धारण कर हाथ में शोर्ड ले कर खड़े हो जायेंगे। अन्डरस्टैण्ड? वन मिनट एण्ड साहब लोग रन अवे।'

'पिस्तौल निकाल लें तो?'

'कैप उतार कर कहूँगा, फ्रेण्ड। यह तो वेश धारण किया है। और अली को अन्दर घुसा दूँगा—रुनझुन घुंघरू बजाती हुई घुस जायेगी।'

उस ओर मजलिस में घण्टा बज उठा। सब लोग एक मिनट के लिए चुप हो गये। प्रणाम का कार्यक्रम चल रहा है। बादलों से भरे आसमान में सहसा बादलों को तनिक हटाकर एक चमकता तारा कुछ क्षण तक जगमगा कर विलीन हो गया। उसके बाद हवा-पानी के झोंके की झड़ी की तरह अभिनय शुरू हो गया। कनसर्ट का बाजा थम गया। घण्टा बजा। उन लोगों के रात्रि-जीवन के कल्पलोक की यवनिका उठी, आसपास से कोलियारी का दफ्तर और भौतिक जगत आहिस्ता-आहिस्ता विलीन हो गया। किसी एक कल्पलोक का देवद्वार वास्तविक हो उठा। महामन्त्री वेशधारी रमणी नाग का कण्ठ-स्वर मुखर हो उठा—

देवद्वार राज्य का आज शुभ दिन। जयन्तीपुर के
प्रासाद का अंधकार दूर हुआ इतने दिनों के बाद।

किसी तरफ से आवाज आयी—लाउडर।

वेश-मन्दिर निकट ही है। छोटा-सा एक बँगला। यानी दोनों तरफ खपरे की छावनी के तीन कमरे। इसीको दो तरफ से तिरपाल से घेर कर वेश-मन्दिर बनाया गया है। एक बड़ा-सा कमरा औरतों के लिए है। एक बड़ा और एक छोटा कमरा मर्दों के लिए। मर्दों के छोटे कमरे में चार कुरसियाँ और चार मेज हैं। औरतों के कमरे

के अन्दर ही परदा घेर कर मंजरी के लिए कमरा बनाया गया है। उसमें कुरसी-मेज है। औरतों के लिए बेंच और हाइ बेंच है। यहाँ के बडे बाबू का इस ओर काफी ध्यान रहता है। वे लोग थियेटर में जैसा करते हैं वैसा ही कर दिया है। ग्रीनरूम से मजलिस तक के प्रवेश-पथ को बाँस के खूंटे गाड़कर, सालू से लपेटकर, रस्सी से बाँध दिया गया है। मर्दों के छोटे कमरे की ओर ही मजलिस है। 'लाउडर' शब्द बहुत जोर से बोला गया था। वह शब्द वेश-मंदिर भी पहुँचा। गोरा बाबू के सिर पर विन्यासकारी शिवू निकिरी बाल फिट कर रहा था। उसके हाथ को हटाकर गोरा बाबू ने मजलिस की ओर ताका। बाबुल बोल उठा, 'ऐ आई डायड डायड ! मर गया नागनन्दन ?'

रीतू बाबू बोला, 'रमणी ने जरूर ही शराब के साथ गाँजे का दम लिया होगा। योगा बाबू ने सेवन कराया है। आवाज दब गयी है। दूसरे ही क्षण रमणी नाग का कण्ठ-स्वर तीव्र हो उठा—'पहनाओ आलोक की माला, उड़ाओ पताका।'

रीतू बाबू बोला, 'शावाश ! गाँजे की झपकी दूर हो गयी है।'

गोरा बाबू ने शिवू से कहा, 'लो फिट करो। सामने की ओर मेरे बालों पर जिस उपकेश को फिट करना है वहाँ नया मजबूत क्लिप दे देना। पुराना क्लिप रहेगा तो बाहर निकल आयेगा।'

बाबुल खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया था। परदा हटाकर देखा रहा था, 'माई फादर ! पिता हे ! स—र्व—ना—श !'

'क्या हुआ ?'

'लोगों का तो हुजूम उमड़ आया है बिग ब्रदर ! इसमें नागनन्दन का दोष ही क्या ! सब मिलकर छोटा सा चूँ भी करेगा तो कोरस में मैन आफ वार का भोंपू बज उठेगा।'

'घबराओ नही। बंसी के जत्थे को घुसने दो। ऑल साइलेन्स। वह गीत जम जायेगा। अहा, देवता ने जैसा गीत लिखा है, हरामी बंसी ने वैसा ही स्वर दिया है।'

गोरा बाबू को कुछ याद हो आया। बोला, 'शिवू।'

'जी !'

'अलका को पुकारो तो।'

'बात क्या है ?'

'उसको जरा साहस दे दूँ। आदमी देखकर—'

गोरा बाबू हँस पड़ा।

अलका ने नाच के वेश मे सिंगार किया है। घाघरा-ब्लाउज और दुपट्टे मे है। यह सब दल की पोशाक है। प्रथम दृश्य में वह दल के साथ नगर-नर्तकी की भूमिका मे उतरने जा रही है। उन लोगो से ताल-मेल बिठाकर सजना पड़ा है। तब हाँ, चेहरे के पेन्ट, आँख की लकीर और भौह के मेकअप से उसकी विशेषता टपक रही

है। उसके द्वारा खरीदे गये मेकअप बॉक्स में उसका अपना रंग और कॉसमेटिक्स है।

गोरा बाबू ने कहा, 'गलती तो नहीं करोगी ?'

'क्या ?'

'जो कुछ स्टेज पर दिखाया था। यहाँ स्टेज नही है कि नाचकर दिखाऊँ।'

अलका हँस दी। बोली, 'उसके बाद तो कलकत्ता में किया है और लक्ष्मीपूजा में बराकर में भी।'

'किया है। उसके बाद तुम घर गयी थी। उसके अलावा भीड़ देख रही हो न ? जाओ, परदे की फाँक से जाकर देख आओ।'

मंजरी ने अन्दर प्रवेश किया, 'पहले ही 'लाउडर' आवाज आ चुकी है ?'

'हाँ।' गोरा बाबू ने कहा, 'लेकिन वह सुधर गया है। अब ठीक से चल रहा है।'

'भीड़ बहुत है ?'

'देख लो। अलका से देख लेने को कहा है। पहले से ही उसे चंगा बना दे रहा हूँ।'

मंजरी ने भी जाकर देखा। हाँ है। लेकिन पिछली बार गौहाटी की रेलवे कॉलोनी में जैसी थी वैसी नही है। 'मास्टर साहब कहाँ हैं ?' मंजरी ने कहा।

'हाँ, भीड़ बेशुमार थी। मेरी आवाज लाउडस्पीकर है लेकिन उसे भी हार मानना पड़ा था। तब हाँ, यहाँ भी काफी लोग हैं। खैरियत यह है कि संताली नाच अब भी चल रहा है। मादल बज रहा है।'

मंजरी अलका का हाथ थामकर बोली, 'भय की कोई बात नहीं। तुमको उसका मन्त्र सिखा दूँगी। आओ।' अकेले में कहूँगी, सबके सामने नही।'

एकान्त में ले जाकर बोली, 'कोई खास बात नहीं है। नर्वसनेस महसूस हो तो एक बार आँख मूँदकर रामकृष्ण देव को स्मरण करते हुए कहना—जय रामकृष्ण। समझी। दूसरी बात है कि किसी के चेहरे की ओर नही ताकना। आँख उठाकर देखना ही नही।'

प्रथम दृश्य में अलका नर्वस हो गयी। लेकिन सँभाल लिया और कोई बुरा नहीं नाची। मुद्रा से लेकर नृत्य तक में ताल-मेल बिठाकर नाच आयी। शुरू में मंजरी ने ही वाहवाही दी।

वह खुश होकर मालविका की सखी के वेश में सजने लगी। चेहरे के रंग से लेकर आँख-भौंह आदि को एक बार फिर से ठीककर लिया। जूड़ा बँधे बालों को खोलकर फैला दिया। उसके बाल घने हैं और पिछली बेला में उसने जतन से शैम्पू

किया है। अपनी कंघी से बालों को झाड़कर, उन पर ब्रश फेरकर उसने सामने के हिस्से को फुला लिया था और गुलाबी अरगेंडी साडी ब्लाउज निकाल उन्हें पहन साज-सिंगार का काम समाप्त कर लिया था। अब स्वयं को निरख-परख रही थी। अचानक मजा किरकिरा हो गया। ऐसा किया शोभा ने।

इस तरह मजा किरकिरा कर देना—खास तौर से अभिनय के समय ग्रीनरूम के अन्दर—एक साधारण बात है। मजा किरकिरा कर देने का मतलब है मजलिस की जमी-जमायी कामयाबी की खुशियों के बीच इसका उससे झगड़े की शुरुआत हो जाना। झगड़ा कारण-अकारण छिड़ जाता है।

योगा मास्टर भौंह नचाकर नाडू बाबू को इशारा कर रहा है—'गाँजा तैयार है, पी लो।' रमणी नाग बोल उठा, 'इशारा करके आप क्या कह रहे हैं? मैं क्या कुछ समझता नहीं।'

'भारी मुसीबत है! तुम क्या कह रहे हो नाग?'

'क्या कह रहा हूँ? सबकी बात अटक सकती है।' इस सन्दर्भ में इशारा-मजाक कर रहा है। 'डाँट क्यों रहे हैं? रमणी नाग किसी से भी नहीं डरता।'

योगा मास्टर ने कहा, 'और योगा मास्टर किसी से डरता है क्या?'

रीतू बाबू नहीं है, इसलिए गोरा बाबू आकर खड़ा हो जाता है, 'शोरगुल हो रहा है। क्या कर रहे हैं आप लोग? बाहर मजलिस तक आवाज पहुँच रही है। चुप हो जाइये।'

चुप्पी छा जाती है। अभिनय समाप्त होने के बाद देखने को मिलता है कि रमणी, नाडू और योगा तीनों एक साथ सिगरेट का कश ले रहे हैं और हँस रहे हैं! रमणी विनम्रता के साथ योगा से कह रहा है, 'जरा-सा पिलाओ न योगा!'

'नहीं भाई। मैं उसमें नहीं हूँ। जानते हो, कण्ठ जी से मैंने वैष्णव-मन्त्र की दीक्षा ली है। वह चीज पीने का उपाय नहीं है। उन्होंने कहा था—योगानन्द सब कुछ पीना मगर शराब मत पीना। उसे पीकर प्रभु का वंश तीर से आहत होकर नष्ट हो गया था। सिगरेट दी हैं, यही काफी है।'

हो सकता है कि मजलिस से निकलते ही यादव माधव नामक व्यक्ति ग्रीनरूम में घुसते ही भेड़े जैसे खडे हो जायें। यादव को तालियाँ मिली हैं, मगर भावावेग में आकर उसने इस तरह हाथ नचाया है कि माधव की पगडी खुलने-खुलने पर हो गयी थी। माधव को भी हाथ फैलाना था लेकिन पगड़ी दबाकर रखने के क्रम मे वैसा नहीं कर सका। या फिर माधव की बात खत्म होते न होते यादव ने अपना संलाप शुरू कर दिया है। माधव पूरी बात नहीं कह सका है, अचल यादव को उसी में तालियाँ मिल गयी हैं।

हो सकता है, हड़बड़ाकर जाने के समय किसी के बदन में धक्का लगा दिया हो। वह कहता है, 'सीना दिखा रहे हो?'

उत्तर तत्क्षण मिल जाता है, 'जरूर दिखा रहा हूँ। सीना है तो दिखा रहा हूँ।'

'शटअप!'

'तुम शटअप!'

गोपाल दौड़ता आया और एक व्यक्ति का हाथ पकड़कर कहता है, 'बाद में होगा। पार्ट—पार्ट करना है।'

बिना कुछ बोले वह चला जाता है। अभिनय खत्म होने पर वे एक ही प्लेट में खाना खाते हैं और खाते हुए ठठाकर हँसते हैं।

दो-चार झगड़े ऐसे होते हैं जो खत्म नहीं होते हैं। दो-चार दिन बीत जाते हैं तब खत्म होते हैं। इस तरह की घटना साल में एकाध ही घटती है, वह भी आमतौर से नहीं। किसी को सन्देह होता है कि उसके प्रेम का पात्र या प्रेम की पात्री किसी के साथ इंगितपूर्ण हँसी हँस रहा है या हँस रही है। झगड़ा उस सन्दर्भ में नहीं होता। किसी दूसरे सन्दर्भ से उसकी शुरुआत होती है और स्थायी झगड़े के रूप में बदल जाता है। उसके फलस्वरूप हो सकता है विच्छेद हो जाये। आदमी दल छोड़कर चला जाता है—जिस तरह कि पिछली बार कॉमिक ऐक्टर बोकर चला गया था।

छोटे-मोटे और एक ही ढर्रे के झगड़े की शुरुआत ज्यादातर योगा और शोभा करते हैं। उन लोगों में फालतू मजाक करने का मर्ज है, और वह मर्ज वे छोड़ने को तैयार नहीं हैं। और इसीलिए पुआल की तरह आग भक् से जल उठती है। शोभा अलका से भी उलझ गयी। अलका की कल्पना की इमारत ढहा दी। अलका ने मेकअप करके अपनी पोशाक की ओर देखा और उसके बाद आईने में चेहरा देख रही थी।

बुंची और शोभा अभिनय कर कमरे के भीतर आयीं। बुंची ने उसे देखकर कहा, 'देखूँ-देखूँ, मुड़कर खड़ी होओ तो। वाह, बहुत ही अच्छा हुआ है। तुम सिंगार करना जानती हो बहन।'

शोभा बोल पड़ी, 'आह, हाय रे हाय!'

अलका ने अचकचाकर उसकी ओर देखा।

शोभा बोली, 'इतना सिंगार तो किया बहन, लेकिन देखेगा कौन?'

'मतलब?' अलका के मन में यह बात तीर-सी चुभ गयी। उसकी पेशानी पर सलवटें पड़ गयीं। बुंची की बात भूल ही गयी। उसकी ओर देखा भी नहीं।

शोभा बोली, 'साहब लोग तो देखेंगे नहीं। काले जामुन से मन लुभ गया है और रंगीन सेब जमीन पर लोट रहा है। फिर हाय-हाय क्यों नहीं?'

अलका मुँह बिदका कर बोली, 'क्यों और देखने वाले आदमी नहीं हैं?'

'वही खदान के मजदूर और कोयला बाबुओं का दल।'

'उहूँ, वे ही क्यों?'

'फिर?'

'सोच कर देखो न। नाच कौन देख रहा है ?'

'बापरे! गोरा बाबू ? जयन्त कुमार ? पेट में इतना पेच है !'

'शोभा दी !' अलका चिल्ला उठी।

शोभा एक क्षण के लिए चौंक उठी मगर दूसरे ही क्षण क्रोध में आ गयी। उसने चिल्लाकर कहा, 'क्या ? अपने मुंह से कहती हो और फिर डांटती हो ! तुमने कहा नही ?'

'नही।' अलका चिल्ला उठी।

बुंची ने घबरा कर कहा, 'शोभादी, अलका !'

'क्या हुआ ? क्या ?' मंजरी बाहर निकल आयी।

'आप इतनी बड़ी बात कह रही हैं ? मालूम है, मैं भले घर की लड़की हूं।'

आग भक् से जलकर लपट फेंकने लगी। शोभा बोली, 'हां-हां, जानना बाकी नही है।'

'चुप रहो, चुप रहो। शुभादी चुप हो जाओ।' मंजरी ने कहा।

'शोभा दी !' गोरा बाबू ने गंभीर स्वर में पुकारा और वहां चला आया।

शोभा चुप हो गयी।

गोरा बाबू ने कहा, 'क्या है ?'

गोरा बाबू मजलिस से प्रस्थान करने के बाद आया है। आते ही शोरगुल सुना तो हड़बड़ाता हुआ आ धमका। उसे फिर जाना है।

'उन्होंने मुझे अपमानित किया है।'

'तुमने नहीं कहा था—'

'क्या कहा था ? यही तो बुंचीदी थी। वही बतायें। मैंने कहा था, नाटक में मैं उसी को नाच दिखाऊंगी जिसे दिखाना है। वे ही देखेंगे।'

'हां-हां ! कौन देख रहा है ? जयन्त कुमार क्या देख नही रहा है ?'

'नहीं। मैं नारायण मन्दिर में नारायण की आरती कर रही हूं। वे देख रहे हैं, मैं उन्हें दिखा रही हूं। आप जयन्त कुमार कहतीं तो भी मैं गुस्से मे नही आती। आपने गोरा बाबू का नाम लिया है। लिया है न बुंचीदी ?'

गोपाल ने आकर पुकारा, 'आपका पार्ट है।'

गोरा बाबू बोला, 'चलता हूं।' अलका से कहा, 'बि ए स्पोर्ट। मंजरी तुम देखो।'

गोरा बाबू चला गया।

मंजरी अलका का हाथ थाम उसे अपने कमरे में ले गयी, 'धत्त, मजाक कर रही है।'

'इस तरह का मजाक क्यों करेंगी ?'

शोभा की आंखों से एकाएक आग छिटक पड़ी, 'ठीक जगह को कुरेदा है न !'

कहा तो उसने जरूर, परन्तु कुछ मिनटों के बाद उसकी आंखों से आंसू टपक पड़े। उसका पक्ष लेकर किसी ने एक भी शब्द न कहा।

इस घटना ने कांटा नहीं बल्कि तीर जैसा काम किया। अलका का नाच अच्छा नहीं हुआ। तब हाँ, चार जनों का अभिनय अच्छा रहा। जैसा शुचि और विदूषक ने किया वैसा ही जयन्त कुमार और मालविका ने। अभिनय के दौरान मंजरी ऑपेरा के रथ को विजय अभियान में एक छोटे से पत्थर से मात्र एक हलका-सा झटका लगा, इससे अधिक कुछ भी नहीं। रथ समान गति से अग्रसर होता रहा।

दूसरे दिन साहब लोग आये। आसनसोल के चारेक साहब और मेमों को डिनर पर बुलाया है—डिनर खत्म होने के बाद उन्हें भी साथ ले आये और जमकर बैठ गये। सामने की तिपाई पर बोतल-गिलास सजाकर, सोफा सेट पर आसनसोल की महिलाओं को अपनी बगल में लेकर, ये लोग बैठ गये। आसनसोल के साहब अलग-अलग कुरसियों पर बैठ गये। आज 'जना' का अभिनय होगा। बड़े बाबू ने पहले से कह रखा है। जना उनका प्रिय नाटक है। किसी जमाने में स्वयं प्रवीण की भूमिका में उतरते थे। इसके अतिरिक्त सती तुलसी और जना की विषय वस्तु का अंग्रेजी में अनुवाद कर साहबों को दे दिया गया है। वे लोग सती तुलसी समझ ही नहीं सके थे। कहा था, 'वल्गर' है। भगवान पति के वेश में आकर तुलसी का सतीत्व नष्ट कर गया—यह उन्हें दुर्बोध और 'वल्गर' लगा। मेमों ने आंखों में आश्चर्य लाकर कहा था, 'माइ गॉड। नो-नो-नो। स्टॉप दैट बुक। दिस बुक 'जाना'—गुड बुक!'

साहब ने पूछा था, 'डान्स?'

'हियर सर।'

आलेख के एक स्थान पर उंगली रखते हुए बड़े बाबू ने कहा था, 'ए फेयरी डान्स विल कम, एण्ड डान्स वेरी वेरी ब्युटीफुल डान्स बिफोर दि हीरो प्रवीर—'

'दैट्स गुड! वण्डरफुल!' जरा-सा और पढ़ने के बाद बोला था, 'येस दिस इज ए गुड बुक। प्रवीरा फाइट विथ अर्जुना टेरिबल फाइट। दैट्स गुड। फेयरी डान्स। टेरिबल फाइट! गुड बुक।'

मजलिस में आने के पूर्व यह सब बात बंगले पर हुई थी। बड़े बाबू आकर ग्रीनरूम के अन्दर गये और बोले, 'मतलब है कि मैनेजर साहब कहाँ हैं?'

'कहिये।'

गोरा बाबू कुरसी पर बैठे-बैठे सिगरेट का कश ले रहा था। वह उठकर

खड़ा हो गया। रीतू बाबू के हाथ में गिलास था, बाबुल गाल की दाढ़ी पर हाथ फेरकर देख रहा था कि दाढी बनाना ठीक हुआ या नही। नाटू आज मिले हुए सिगरेट के डिब्बे को खोल, कुरते के अन्दर रख, कुरते को सहेज रहा था। रमणीनाग अपनी नाक के सामने हथेली रख यह देख रहा था कि किस नथुने से साँस जोरों से निकल रही है। वह एक वशीकरण मंत्र जानता है, उसी की अजमाइश करेगा।

बड़े बाबू आये तो कहा, 'बैठिये।'

'आप बैठिये। मैं—मतलब यह कि—कह कर ही चला जाऊँगा। इस बूढ़े के माथे पर कोई कम काम नही है। इस बूढे को, मतलब यह है कि साहब पट्ठों के पास जाना है। मजलिस मे, मतलब यह कि शोरगुल हो रहा है। पट्ठे कहेंगे, मतलब यह कि, हे बड़ा बाबू, प्लीज सी, इट इज वेरी नाएजी। प्लीज सी। उधर रसोई घर में महराज कहेंगे, बड़े बाबू कहाँ हैं? एक बार बुला लाइये। मांस मे कितना नमक डालना है, दिखा लूँगा। खड़े-खड़े ही, मतलब यह कि, बोलना अच्छा रहेगा। नही तो जनाब, मतलब है कि, मैं गप्पी आदमी हूँ, बैठते ही जमकर बैठ जाऊँगा।'

'कहिये।'

'जना ही होगा। जना, मतलब है कि, हमारा भी यही विचार है। लेकिन सती तुलसी के बारे में, मतलब यह कि, वे मूरख लोग क्या कहते हैं, जानते हैं? मतलब यह कि बल्गर कहते हैं।'

यह कह कर कुरसी पर बैठे गये और बताने लगे कि यह व्यक्ति क्या कहता है, वह क्या कहता है। यह कह कर बोले, 'तो फिर वही हो। जना ही, मतलब है कि होना चाहिए। उस लड़की को—अरे यही तो है, हाँ तुम्ही, मतलब यह कि, ओल्डमैन हूँ। 'तुम' ही कह कर सम्बोधित कर रहा हूँ—मतलब यह कि गुस्साना मत। हाँ?'

मंजरी, बूंची, अलका, शोभा और बहुतेरे लोग इसलिए खड़े हो गये थे कि वे जानना चाहते थे कि किस यात्रा का अभिनय होने वाला है। अलका सामने ही थी। वह बोली, 'नहीं-नही। तुम ही कहिये न। अन्यथा क्यों लूंगी?'

'नही जी, तुम लोग मॉडर्न गर्ल हो। मतलब यह कि कह सकती हो, 'तुम' किसको कह रहे हैं—मतलब यह कि, 'आप' कह कर सम्बोधित नहीं कर सकते?' यह कहकर हँस पड़े। उसके बाद बोले, 'नाच वण्डरफुल होना चाहिए'''मतलब यह कि, पट्ठों का सिर चकराने लगे—। समझी?' उसके बाद उठकर खडे हो गये और बोले, 'मतलब यह कि, अब चलता हूँ। मतलब यह कि, रेडी हो जाइये—'

अलका बहुत बेहतरीन नाची। साहबों से लेकर आम आदमी और दल के लोग भी दंग रह गये। जना का रिहर्सल नही हुआ था। नाच और गाने का रिहर्सल उसने किया था मगर सज-सँवर कर रिहर्सल नहीं किया था। उसके मेकअप, उसके सिंगार—नाच के बीच उस मेक और नृत्य की व्यंजना और मुद्रा ने कमाल कर दिखाया। प्ले बेशक शुरू से ही जम रहा था। बंशी और आशा प्रारम्भ में ही महिषासुर

वद्य नृत्य-नाट्य की भंगिमा में नाचे थे। आम लोगों को तो अच्छा लगना ही चाहिए था और लगा भी। एक व्यक्ति ने सिंह का वेश धारण किया था, बदस्तूर पूंछ और केसर के साथ। गरदन हिला, हाथ-पैर चारों के बल पर चतुष्पद की तरह खड़े होकर, उछल-कूदकर, खासा अच्छा कौतुक किया था। साहबों तक को मजा आ गया था। बड़े बाबू बगल में बैठ अपने तकिया कलाम 'मतलब है' के साथ व्याख्या करते हुए अंग्रेजी में समझाते जा रहे थे। कह रहे थे, 'डेमन दि वकेलो एण्ड इटरनल मदर एण्ड गॉडेस ऑफ ऑल पावर—वि कॉल हर सृष्टि स्थिति लयरूपिणी। मतलब है कि—बेग योर पार्डन—आइ मीन—।' बहरहाल किसी तरह समझा दिया था।

उसके बाद अभिनय शुरू हुआ। रीतू बाबू नील ध्वज की भूमिका में उतरा। मंजरी जना की, गोपाली स्वाहा की, रमणीनाग अग्नि की, गोरा बाबू प्रवीर की, बुंची मदनमंजरी की, शोभा गंगा की, नाटू अर्जुन की और बाबुल विदूषक की भूमिका में।

अपने गुरु गंभीर स्वर के संलाप से रीतू बाबू ने ही एक अमिट छाप छोड़ दी। उसके बाद विदूषक बाबुल ने आज शब्दों से अधिक अंगभंगिमा पर जोर दिया। शुरू से ही उसने लँगड़ाने की मुद्रा अख्तियार की थी—मानो विदूषक गठिया की बीमारी से पीड़ित हो। घुसते ही घुटने पर हाथ रखकर कहा था, 'गठियाम्।'

तभी पूरी मजलिस ने एक ठहाका लगाया। उसे पिछले कल का झंझटं झंझटं शतं झंझटं जमातं भयो—याद आ गया था। साहबों ने बड़े बाबू से पूछा था, 'ह्वाट्स दैट? लेम मैन?'

'नो सर। मतलब है कि—ऑल्डमैन हैज रिउमेटिज्म।'

'हु इज हि?'

'कोर्ट क्लाउन।'

साहब तालियाँ बजाकर बोला था, 'वण्डरफुल।'

रीतू बाबू की भौंहों पर बल पड़ गये थे। किसी को ताली मिलती है तो दूसरे की भौंहों पर अवश्य ही बल पड़ जाते हैं। उस पर बाबुल नाटक के बाहर चला गया है। लेकिन उसके बाद ही हँस दिया, 'होशियार है लिट्ल ब्रदर। साहब हँस रहे हैं तो हँसने दो।'

इसके बाद ही जना और प्रवीर आये। पूरी मजलिस में सन्नाटा छा गया। बड़े बाबू बोले, 'जना एण्ड प्रवीरा, मदर एण्ड सन। मदर ए ग्रेट हीरोइक लेडी।'

साहब बोला, 'स्टॉप बड़े बाबू, स्टॉप।'

शब्दों के स्वर और संगीत के प्रभाव ने विदेशियों को अभिभूत कर लिया था। बीच-बीच में वे उसी टाइप किये हुए कागज को देखकर विषय को समझ से रहे थे। फुसफुसाकर मेमों को बता देते थे। उन लोगों ने कहा था, 'दैट्स वण्डरफुल! ब्यूटीफुल एक्टिंग येस।'

हर दृश्य के बाद गिलास पूर्ण हो जाता था और उसे हाथ से थामकर सिप

करते हुए अगले सीन को समाप्त करते थे। बूंची जैसे ही मदन मंजरी की भूमिका में उतरी, उन्होंने उत्साहित होकर कहा, 'हाउ ब्युटीफुल ! लवली क्वीन !'

'बट दि मदर—दि ग्रेट हीरोइन—इज लवलियर। शि इज वण्डरफुल।' यह कहकर साहब बोला, 'आइ विश हर ऑल सक्सेस। बडे बाबू, टेल देम हर सन मस्ट विन दि बैटल। मस्ट। बोथ ऑफ देम आर ग्रेट ऐक्ट्रेस। आइ ड्रिंक देअर हेल्थ। वेल—'

गिलास-गिलास से टकराया और आवाज हुई—ठन-ठन।

बडे बाबू ने महसूस किया, पट्ठे क्या बक कर मर रहे हैं ! मर रहे हैं तो मरें। मतलब कि इसमें कोई सन्देह नहीं।

एकाएक मजलिस में मोहिनी माया वेशधारिणी अलका का आविर्भाव हुआ। एक चादर से सिर से पैर तक का हिस्सा ढँककर वह मजलिस में, यात्रादल के लोगों की बगल मे कब बैठ गयी थी, मालूम नहीं। प्रवीर युद्ध में अर्जुन जैसे योद्धा की तरह लड़कर और पाण्डवों को मारकर माँ के पास घर वापस आ रहा था। जना गंगा की उपासिका है। गंगा से उसे वरदान मिला है कि गंगा पूजा के प्रसाद से धन्य जना के हाथ से अपने मस्तक को स्पर्श कराकर उसका पुत्र यदि युद्ध करने जायेगा तो स्वर्ग-मर्त्य-रसातल में वह अजेय रहेगा। आज भी वह अजेय होकर ही लौटा है। कल वह जरूर ही विजयी होगा। कल माँ का गंगा-पूजन व्रत समाप्त होगा। माता जननी को गंगा से महास्त्र प्राप्त होगा। उसी महास्त्र से प्रवीर अर्जुन को मार डालेगा या उसे पराजित करेगा। वह प्रासाद की ओर लौटकर जा रहा है। वहाँ उसकी पत्नी मदन मंजरी हाथ में माला ले उसकी प्रतीक्षा कर रही है—वरण करेगी। औषधियुक्त चन्दन प्रस्तुत करके रखा है। वीर पति की अस्त्र से आहत देह पर लेप लगायेगी। सखियाँ अपने नृत्य और गीत से उसके चिन्ताकुल मन को आनन्दित करेंगी। अचानक रास्ते में देवता द्वारा भेजी गयी मोहिनी माया का आविर्भाव होता है। प्रवीर मजलिस मे प्रवेश-पथ के पीछे की ओर मुड़कर अपना स्वगत-भाषण समाप्त कर जब उस रास्ते से लौटने लगेगा तो मोहिनी माया गीत गाती हुई आहिस्ता-आहिस्ता मजलिस की ओर आयेगी और प्रवीर पीछे की ओर खिसकता जायेगा—नाटकीय निर्देश यही था। अलका से यह कह भी दिया गया था। अलका ने रिहर्सल किया था, लेकिन अभिनय नहीं। रिहर्सल के समय शिशिर कुमार द्वारा दी गयी नयी अभिव्यक्ति की भी चर्चा चली थी। अलका ने यह सब देखा नहीं था, सुना था। गोरा बाबू और मंजरी ने उस अभिनय को देखा था। वे लोग उनकी खुलकर प्रशंसा करते हैं। करेंगे क्यों नहीं ? तारा सुन्दरी जना की भूमिका मे उतरी थी, शिशिर कुमार प्रवीर की भूमिका में। जीवन के आखिरी दौर मे पुत्र की मृत्यु हो जाने के कारण तारा सुन्दरी ने सब कुछ छोड़-छाड़ दिया था और मौत का इन्तजार कर रही थी। तय किया था, अब और अभिनय नहीं करेगी। शिशिर कुमार ने आकर उनसे अपने दल में शामिल होने का अनुरोध किया था और कहा था, 'हम भी तो आपके

पुत्र के समान ही हैं। हम लोगों को लेकर इस शोक को भूल जाइये। अभिनय ही आपकी साधना है। शोक के कारण साधना को त्याग दीजियेगा ?' तारा सुन्दरी ने क्षण भर सोचा था और कहा था, 'ठीक है, यही रहा। तुम लोग ही मेरी सन्तान हो। मैं तुम्हारे साथ उतरूँगी। तब हाँ, पहला नाटक जना होना चाहिए। तीन कौड़ी दासी—तब हम लोगों को दासी ही कहा जाता था—उन्होंने जना का अभिनय किया था और इतना अच्छा किया था कि तीन कौड़ी के मरने के बाद भी मुझे पार्ट करने का साहस नहीं होता था। पुत्र शोक विह्वल हृदय लेकर उतरूँगी और वहीं पार्ट मैं सबसे पहले करूँगी।'

वही किया था—और वह बंगाल के इतिहास में एक स्मरणीय अभिनय है। मंजरी ने उस अभिनय को देखा है। वह उन्हीं का अनुसरण करती है और आज भी कर रही है। इसी वजह से उसने काफी नाम कमाया है। अलका ने भी आज मन ही मन बहुत सोचा-विचारा है। आज अभिनय के प्रारम्भ से ही अधिकांश ऐक्टर-ऐक्ट्रेस मजलिस के कोने में श्रोताओं के बीच खड़े हैं। अभिनय पुराना है लेकिन मजलिस में आज साहब और मेम जमकर बैठे हैं, शराब पी रहे हैं, तारीफ कर रहे हैं। नशे की बहक में कुछ कर बैठेंगे, इसी मजे का वे उपभोग कर रहे हैं। चूँकि वे विलायती साहब-मेम हैं, इसलिए संभ्रम और सम्मान की दृष्टि से देखे जा रहे हैं। इसी बीच अलका ने सोच-सोचकर अपने प्रवेश के सन्दर्भ में एक नया रास्ता खोज निकाला है। वह मोहिनीमाया है, माया की तरह ही प्रकट होगी।

प्रवीर मुड़कर खड़ा हुआ—निकलकर प्रासाद-पथ की ओर जा रहा है। इस ओर वादकों ने मोहिनीमाया के गीत के स्वर को बजाना शुरू कर दिया है। बेहला, बंशी वगैरह का स्वर धीमा है और हारमोनियम के स्वर के साथ एकाकार हो गया है। मजीरा-वादक मजीरा बाँधकर तैयार है और प्रवेश-पथ की ओर ताक रहा है। लेकिन अलका कहाँ है, मोहिनीमाया अलका कहाँ है ? मजलिस के कोने में दल के जो लोग खड़े थे, वे विस्मय के साथ ग्रीनरूम की ओर ताक रहे हैं—कहाँ है वह ? गोपाल दौड़ता हुआ अन्दर गया, 'विपिन, मोहिनीमाया ? कहाँ है ?'

एकाएक मजलिस में तालियाँ बजने लगीं। ताली बजाने लायक बात ही थी। अलका एक सफेद चादर से अपने सिर से पैर तक के हिस्से को ढँक कब उस प्रवेश-पथ के किनारे *अभिनय-मुग्ध दर्शकों के बीच आकर बैठ गयी थी*, इसका पता किसी को नहीं था। प्रवीर और वादक उत्कण्ठित हैं। प्रवीर सोच रहा था कि वह ग्रीन-रूम जाकर उसे पहले भेज दे और मन्त्र मुग्ध की तरह उसके पीछे-पीछे आये। उसके सिवा और कोई चारा न था। उसी क्षण श्वेत वस्त्र से आवृत वह मूर्ति प्रकट होने की तरह ही एक हाथ बढ़ाये रास्ता रोककर खड़ी हो गयी और उसका सफेद आवरण खिसककर नीचे गिर पड़ा।

वेश-भूषा भी उसकी विचित्र है। बहुत ही सुन्दर मेकअप और साज-सिंगार किया है।

झीना-सा गुलाबी अरगैंडी का एक दुपट्टा उसके सिर पर है। देह का उर्ध्व भाग अनावृत जैसा लग रहा है लेकिन अनावृत नहीं है। पेन्ट के रंग से मिलता-जुलता रेशम की इलेस्टिक गंजी के जैसा उसके पास नाच का एक कुरता था। उसे पहनने से लगता है कि उसकी देह अनावृत है। वक्षस्थल पर अजन्ता के चित्र की नारी जैसा ही कपड़े का एक टुकड़ा बंधा है। पहरावा है बेहद महीन, नीले अरगैंडी की साड़ी, जिससे कमर तक का हिस्सा ढंका है। उसमें इतनी चुन्नटें हैं कि घाघरे जैसी दीख रही है। उस पर उसे ऊपर चढ़ाकर ऐसे पहना है कि पाँवों के टखने बाहर निकल आये हैं। एक बार एम्पायर में देवदासी नृत्य में उसने इसी तरह सिंगार किया था। सिर के बाल उसके ठीक ही हैं। लटें कान के बगल से होती हुई कन्धा और छाती तक झूल रही हैं। एक लट पीठ पर झूल रही है। बाकी बालों को उसने एक सुन्दर जूड़े की तरह इस किस्म से ऊपर उठाकर बांधा है कि उसके शरीर का नाटापन दूर हो गया है। वह दीर्घांगी जैसी दीख रही है।

गोरा बाबू अवाक् हो गया। सिर्फ गोरा बाबू ही नहीं, दर्शक और दल के लोग भी। तालियाँ बजने लगीं। रीतू बाबू बोला, 'अरे बप्पा रे, क्या किया इसने?'

मोहिनीमाया त्रिभंगी मुद्रा में खड़ी है—एक हाथ छाती पर है, दूसरे हाथ की मुट्ठी बँधी है और उस पर ठुड्डी टिकी है जो होले-होले हिल रही है। चेहरे पर मीठी मुसकराहट है। वादक अवाक् होकर सोच रहे हैं कि वह गीत गाना कब शुरू करेगी।

मोहिनीमाया अशरीरी जैसी हिल-डुल रही है। साहबों के हाथ का गिलास हाथ में ही थमा है। उँगलियों में पड़ी सिगरेट जल रही है, जल रही है। गोरा बाबू ने बार-बार सवाल किया, 'कौन? तुम कौन हो?'

इसी बीच गीत को भाषा का स्वरूप प्राप्त हुआ।

अलका ने गाया—

चाह रही पकड़ी जाऊँ मैं लेकिन नहीं पकड़ में आती
मैं सोने की हरिणी—
मरु-अंचल वायु-तरंग में मरीचिका मनोहारिणी।

दो

मंजरी अपने कपड़े से घिरी कोठरी में अभिभूत जैसी बैठी थी। तारा सुन्दरी के अभिनय का स्मरण कर रही थी। मन ही मन पूरे पार्ट को सोच रही थी—अनु-भव करना चाह रही थी कि एक बहुत बड़ा, हाँ, बड़ा से बड़ा, उलट-फेर उसके जना जीवन को लीलने आ रहा है।

वुंवी भागी-भागी आयी, 'मंजरी !'

मंजरी चौंक उठी, 'क्या हुआ ?'

'अलका ने जो कुछ किया है वह आश्चर्यजनक है। उफ् आश्चर्यजनक

मंजरी ने जरा हँसकर कहा, 'खूब अच्छी तरह नाच रही है ?'

'आकर देख लो। न देखोगी तो समझ में नहीं आयेगा। यह किसका डाय-रेक्शन है ? और वह मेक-अप ? ऐसा लगता है जैसे बदन पर कुरता न हो। छाती सिर्फ कपड़े से बँधी है। गोरा बाबू तक पार्ट का पोज भूल रहा है, अवाक् होकर देख रहा है। साहब लोग जैसे मुँह बाये निगल रहे हों। निगल रहा है हर कोई। सब सोच रहे हैं कि बदन नंगा है। ज्यादती-सी हो गयी है।'

मंजरी उठकर खड़ी हो गयी। आकर वह मर्दों की खिड़की से लगकर खड़ी हो गयी। विन्यासकारी शिबू खिड़की के पास खड़ा होकर देख रहा था—वह ऐसा मग्न था कि मंजरी के पैरों की आहट उसे सुनायी नहीं पड़ी।' मंजरी बोली, 'जरा-सा हट जाओ तो शिबू। मैं जरा देखूँ।'

मंजरी को भ्रम हुआ, विस्मय भी हुआ—यह अलका है ! नाटी लड़की लम्बी-छरहरी कैसे हो गयी ? कुरता या इलास्टिक गंजी के अस्तित्व का पता ही नहीं चल रहा है, एक बेहद खूबसूरत लड़की अर्धनग्न स्थिति में खड़ी है, वक्ष पर मात्र एक अपर्याप्त गाढे नीले रंग की कचुकी है। सिर के स्वच्छ महीन दुपट्टे का आवरण और अधिक विभ्रम पैदा कर रहा है। घाघरे जैसी पहनी हुई साड़ी भी कम चमक नहीं लग रही है—घुटने के नीचे का तमाम हिस्सा दिखायी पड़ रहा है। बाँकपन लिए लीला-मयी मुद्रा में खड़ी होकर नागिन जैसी हिल-डुल रही है। उसका चेहरा दीख नहीं रहा है। सामने प्रवीर खड़ा है। गोरा बाबू भी सचमुच ही—नर्वस हो गये क्या ?

अलका ने गाया—

चिर चंचल पग मेरे क्लान्त अति क्लान्त
नहीं संभाल पा रही स्वयं को ओ पांथ, ओ पांथ,
मुझे बाँध बन्दिनी बना लो, मैं बन्धन-भिखारिणी—

उसने अपने हाथ फैलाये। अब गोरा बाबू होश में आ गया है। वह आगे बढ़ा। उसने कहा—

पहचान गया, हाँ, पहचान गया मैं तुमको। तुम हो राजलक्ष्मी
त्रिभुवन की गरिमा-सुषमा। गौरव से गठित तुम्हारा तन
समस्त अंगों में अपरूप सुख की सुषमा। बन्धन में बँधना चाहती पर
बँधती नहीं,

पूर्ण विजय नहीं प्राप्त होती है मानव को। कुरुक्षेत्र-रण में विजयी धनंजय
फिर भी उसके वक्ष में शूल-सा चुभता अभिमन्यु का शोक। तुम्हें वह पाकर भी नहीं पा सका।
अश्वमेध रण का उद्यम हो रहा इसीलिए। किन्तु वह भी उसे न होगा प्राप्त
कल मैं पराजित करूँगा उसे। इसीलिए तुम—इसीलिए तुम
मेरे बन्धन में बँधने आयी हो। क्लान्त हो तुम, अति क्लान्त
आओ, आओ वीरों की मानसी मेरे वीरवक्ष में
रखो अपनी क्लान्त-श्रान्त देह, करो देवी विश्राम।

वह आगे बढ़ा।

मोहिनीमाया का नृत्य ताल-लय-गति के साथ मुखर हो उठा। और तत्क्षण महीन दुपट्टा खिसककर फर्श पर गिर पड़ा। जैसे वह देह के तमाम आवरण को उतार नग्न वक्ष की सुषमा-सुरभि के द्वारा प्रवीर का आह्वान कर रही हो।

विलायती साहबों ने तालियाँ बजायी। यहाँ का ऐंग्लो इण्डियन मैनेजर हेली साहब बोल उठा, 'इया! दैट्स वण्डरफुल। इया!'

यहीं अन्त नहीं हुआ। वह नाचने लगी। नाचते-नाचते बढ़कर प्रवीर के पास चली आयी—और ठीक उसी समय कचुकी का नीला कपड़ा खुलकर फर्श पर गिर पड़ा। तत्क्षण अलका ने प्रवीर की पीठ से झूलते मखमल के 'टेल' को खींचकर स्वयं को ढँक लिया और प्रवीर को पकड़ उसे खींचती हुई ले गयी।

तमाम मजलिस ताली, सीटी और सिसकारी से मुखर हो उठी। कोई एक व्यक्ति बोल पड़ा, 'हरिबोल'—

तत्क्षण हरिबोल और उल्लास के ठहाके गूँज उठे। हेली साहब उठकर खड़ा हो गया और बोला, 'इया! दिज इज ए डान्स—ए रियल डान्स!'

इसके बाद भी नाच था। इसके बाद ही मोहिनीमाया का अनुसरण करता हुआ प्रमत्त प्रवीर मजलिस में घुसेगा और उसकी भयंकर मूर्ति देख बेहोश होकर गिर पड़ेगा। सवेरे उठकर दोषारोपण करते हुए, अपने आत्म-संयम को धिक्कारते हुए प्रस्थान करेगा।

ग्रीनरूम के अन्दर आते ही अलका ने जूड़ा खोल दिया। जरा-सा लाल रंग चेहरे पर लगाकर एक काली चादर ओढ़कर निकल आयी। प्रवीर खड़ा-खड़ा इन्तजार कर रहा था। उससे कहा, 'आइये।'

मजलिस मे पहुँच अपनी काली चादर सिर से उतार स्वयं को प्रकट किया। उसके बाल लाल रंग से रँगे चेहरे पर झूल रहे हैं। वह अट्टाहास कर उठी। प्रवीर बेहोश होकर गिर पड़ा।

लेकिन वह अट्टहास ठीक से नही कर पायी।

फिर भी तालियों की गड़गड़ाहट हुई।

विलायत के साहब ने बड़े बाबू से कुछ कहा। तब प्रवीर बेहोश पड़ा हुआ था। वाद्य संगीत मुखर हो उठा। तभी बड़े बाबू ने खड़े होकर कहा, 'हमारी कम्पनी के विलायत से आये साहब नाच के लिए मोहिनीमाया अभिनेत्री को सोने का एक मेडल देंगे।'

'दुबारा तालियों की गड़गड़ाहट हुई। हेली साहब उठकर खड़े हो गये और अपनी छाती पर अँगूठा रखकर कहा, 'मी टू।'

उसके बाद उन्होंने बेहद उत्साह के साथ गिलास में शराब डाली। दोनों मेमें भौंचक जैसी बैठी रहीं।

सिर्फ साहब ही शराब लेकर नहीं बैठे, रीतू बाबू, बाबुल बोस, नाटू वगैरह भी वेश-मन्दिर मे आकर बैठ गये। रीतू बाबू बोला, 'यह तो ऐसी-वैसी लड़की नही है। यह क्या किया तुमने लिट्ल ब्रदर ?'

बाबुल बोस हेली साहब की भंगिमा की नकल करते हुए बोला, 'मी टू। मुझे भी हैरत मे डाल दिया है।'

'डालो, गिलास भर दो। नाटू को भी दो।'

योगा गीत गाते हुए कमरे के अन्दर आया, 'यह कैसी लीला करते तुम श्याम, लीला देख बदन में लग जाती है आग। हाँ, लीला दिखा दी।'

'जोर से दम लगाओ परमानन्द।'

'जरूर। सुती, भाती, प्रभाती। यह है सवेरे का वक्त—भात खाने के बाद, सोने के पहले नियम से लेना चाहिए। इसके अलावा आताती—उल्लासी। आताती—'

'कहना नहीं होगा, मालूम है। आताती का मतलब दोस्त की खातिर—उल्लासी का मतलब उल्लास हो तब। कैसा रहा ? यह उल्लासी है।'

यह उल्लासी है। रीतू बाबू के अतिरिक्त कौन जान सकता है ?

'जरूर, रस-मर्मज्ञ की बात रस-मर्मज्ञ ही समझता है। तुम भी रसिक हो और मैं भी रसिक हूँ।'

'हाय-हाय। क्या नाच नाचा है, बताइये तो ? और गोरा बाबू की आँखों से जो प्रशंसा टपक रही थी, उसके बारे मे बताइये तो। रस-मर्मज्ञ की बात रस-मर्मज्ञ ही समझता है। रीतू बाबू कहाँ हैं ? कहाँ हैं रीतू बाबू। सब सुना, रीतू बाबू यहाँ।'

बाबुल बोला, 'रबिश ! ह्वाट नॉन सेन्स टॉकिंग बिग ब्रदर ? गिलास खत्म कीजिये।'

गोपाल ने आकर कहा, 'योगा बाबू, तुम्हारा गाना है। भूल गये हो क्या ?'

'हाइ बाप रे ! वैसा कर सकता हूँ। ठहरो।'

चुन्नट की गाँठ में बुझा कर रखी चिलम को निकाल, हाथ से थामते हुए बोला, 'तोलो जला दो भाई मैनेजर। नहीं, आकर पियूँगा। वही अच्छा रहेगा।'

यह कह कर वह हड़बड़ाता हुआ चला गया।

रीतू बाबू बोला, 'मालिक कहाँ हैं गोपाल चन्दर ?'

गोपाल ने कहा, 'प्रोप्राइट्रेस के कमरे में। प्रोप्राइट्रेस गुस्से मे आ गयी थी, इसलिए कि बिना बताये अपनी मर्जी से मेकअप किया था। साथ ही साथ उस तरह एन्ट्रेन्स किया था।'

बाबुल बोला, 'जेलसी। वूमेन आर ऑल जेलस। मेडल मिलने के कारण।'

रीतू बाबू सिगरेट जला कर बोला, 'मालिक क्या बोल रहे हैं ?'

'प्रोप्राइट्रेस को समझा रहे हैं। अन्याय किया है, मगर प्ले अच्छा किया है। अद्भुत किया है। प्रोप्राइट्रेस कह रही है, सो नहीं होता—अद्भुत के बजाय भूत होता। लेकिन तुम रुक जाते तो क्या होता ? थम तो गये थे।'

'मालिक क्या कह रहे हैं ?'

'कह रहे हैं, हाँ ज्यादती थोड़ी हो गयी है।'

'अलका ?'

'वह चुपचाप खड़ी है।'

नाटू ने गिलास का पेय पदार्थ पीकर उसे नीचे रख दिया और कहा 'मैनेजर खुराकी के सम्बन्ध में आज साफ-साफ बता दो। तुम बहुत उलझाये रखते हो।'

गोपाल बोला, 'ठीक है, कर लीजिये। मालिक से कहिये, प्रोप्राइट्रेस को लेकर बैठिये। जो हो कर डालिये। वे लोग जो कहेंगे, मैं वही करूँगा। मुझे क्या लेना-देना ! उस बार जब तनख्वाह बढ़ायी गयी तो मैंने कुछ कहा था ?'

बाबुल बोस हाथ में सिगरेट लिए सोच रहा था। आज अलका की कुशलता देख सिर्फ अवाक् ही नहीं हुआ है बल्कि उसे भी नशे ने धर दबाया है। उसके पास एक कलाकार का मन है मगर वह उसे यथार्थ बुद्धि के बन्धन से बाँधकर रखता है। बार-बार लेखा-जोखा करके रखता है। लेकिन आज बन्धन खुल गया है। तमाम हिसाब को मिटा देने की इच्छा हो रही है। बीच मे उत्साहवश कुछ ज्यादा ही पी गया है। रीतू बाबू ने उसके गिलास मे बहुत ज्यादा ढाल दी थी और उसने आपत्ति नहीं की थी। उसका मन खासे-अच्छे सरूर में आ गया है। अचानक बात कान में जाते ही सिर उठा कर मुड़ते हुए देखा और बोला, 'ह्वाट बात ? नो बात। बात यह है कि फर्स्ट बयाना रतनपुर मे। देअर दैट ओल्ड मैन बड़े बाबू ने झूलन की रात पूरी खिलायी। नॉट जैसी तैसी पूरी, नॉट डालडा का मामला—रिअल घी मे फ्राइड। लेकिन उस रात खुराकी एवरी वन गॉट। यू आपने पे किया था। नहीं किया था ?'

गोपाल बोला, 'वह साल का पहला अभिनय था। मालिक के दादा के मरने की खबर मिली थी। उन पर मुर्दनी छा गयी थी। मैंने जाकर कहा कि आज की खुराकी नहीं दी जायेगी !, तो वे बोले, मेरी तबियत ठीक नहीं है गोपाल बाबू! जो कुछ करना है, जाकर कीजिये। दूसरी बात है कि प्रथम अभिनय के समय काट कर लोगों का मूड बिगाड़ना ठीक नहीं रहता।'

'येस-येस, वही मिसाल है। बात छिड़ने पर भी फाइनल नहीं हुआ था।'

मजलिस में अभी-अभी योगा बाबू का एक ध्रुपद का गीत समाप्त हुआ है। मदनमंजरी और स्वाहा का संलाप चल रहा है। अचानक एक तरह का शोरगुल मच गया। समुद्र के ज्वार की बड़ी-बड़ी लहरें जिस तरह ऊपरी तट पर आकर पछाड़ खाती हैं और बहुत दूर तक आकर निश्चिन्तता के साथ गपशप में मशगूल लोगों को भी चंचल बना देती हैं, उसी तरह शोरगुल ने वेश-मन्दिर से अन्दर पहुँच कर इन लोगों को चंचल बना दिया।

'क्या हुआ ?'

गोपाल लम्बे-लम्बे डग रखता हुआ बाहर निकल आया। रमणी नाग खिड़की के परदे को सरका कर खड़ा हो गया।

रीतू बाबू ने पूछा, 'मजलिस में कौन है रमणी ? अभी तो मदनमंजरी और स्वाहा होंगी ? वूंची और गोपाली ?'

'हाँ, वे ही हैं।'

'हूँ।'

'हूँ के मानी ?' बाबुल ने पूछा।

'मानी यह कि इस स्थान में 'हल' हमेशा होता है। उस नाच-गाने के बाद मदनमंजरी की करुण रुलाई सबको मलिन बना देती है, ऑडियेन्स के नाच के घुँघरू से बँधे मन को रुलाई अच्छी नहीं लगती। आज तो तुम्हारी अली चौधरी ने फायर कर दिया है।'

रमणी ने खिड़की पर से कहा, 'हाँ, मदनमंजरी जैसे ही सखी से कह रही है, नहीं-नहीं, रोने को मुझे न करो कोई मना, मुझे रोने दो, वैसे ही कोई कह रहा है, लो अब मरने चली। तत्क्षण कोई बिल्ली की आवाज की नकल करने लगा।'

बाबुल बोला, 'गुड अल्मा—'

गोरा बाबू ने घबराहट के साथ कमरे के अन्दर प्रवेश किया, 'शिबू ! शिबू आँखों में काजल लगा दे। यह सब ले।'

उसके बाद बोला, 'मंजरी ने ठीक ही कहा था मास्टर साहब, मैंने अलका को सपोर्ट किया था। मंजरी ने कहा था, कोई एक आदमी बहुत अच्छा पार्ट करता है तो उसका भी फलाफल होता है। लेकिन वह अभी तुरन्त फलीभूत हो जायेगा, यह मैंने नहीं सोचा था।'

'इसी स्थल में 'डल' है, ठीक उस नाच के बाद । महाकाल के उस ध्रुपद गीत से नाच का अवशेष बिलकुल समाप्त नहीं हुआ था ।'

'लेकिन हमेशा तो ऐसा ही चलता आ रहा है ।'

'हाँ । लेकिन अली के पैटर्न में कोई नाचा नहीं था ।'

'बात सही है । मैं भी शुरू में आश्चर्य में आ गया । बापरे, यह क्या है !'

'देख चुका हूँ ।'

'चान्स मिले तो जनाब, यह लड़की बड़ी ऐक्ट्रेस होगी ।'

पुनः एक तेज आवाज शब्दों के संकेत से बिजली जैसी चमक उठी—

धिक्कार है, तुम्हें माहिष्मती कुलवधू
वीरश्रेष्ठ प्रवीर प्रेयसी क्षत्रिय नन्दिनी
नयनों में आँचल दबाये कातर क्रन्दन
धर्म नहीं तुम्हारा, शोभा नहीं देता तुम्हें । तुम हो वीरांगना
किस लिए यह रोदन ? क्यों यह रोदन तुम्हारा ? लौटा नहीं है प्रवीर
आओ मेरे साथ । यह देखो मेरे हाथ में तीक्ष्ण तलवार—
यह देखो वक्ष में बाँध रखा है वर्म । जा रही हूँ रणक्षेत्र को ।
बाघिनी यदि जीवित है तो शक्ति है किसमें
कि वध करे उसके शावक का ?
नर व्याघ्र प्रवीर की पत्नी हो यदि तुम सचमुच ही—तो तुम हो बाघिनी
तुम्हारे कण्ठ में शोभा नहीं देता यह रोदन ।
क्रुद्ध स्वर में मरण-हुँकार से
कंपित कर चतुर्दिक—बाघ-नख, तीक्ष्ण धारदार कृपाण से
आओ—आओ मेरे साथ ।

स्तब्ध मजलिस की स्तब्धता भंगकर कोई बोल उठा—'कैपिटल !'

उसके बाद दनादन तालियाँ बजने लगीं ।

ये लोग ग्रीनरूम में स्तम्भित होकर चुपचाप सुन रहे थे । मजलिस की हवा जैसे यहाँ तक आ गयी हो और सब कुछ का स्पर्श कर रही हो । तालियों की गड़गड़ाहट से इन लोगों की स्तब्धता का भाव दूर हो गया । रीतू बाबू बोल उठा, 'शाबाश ! शाबाश !!'

बाबुल बोल उठा, 'वण्डरफुल !'

गोरा बाबू की आँखों में काजल पहनाया जा चुका था और बालों को बिखेर कर दूसरे दृश्य के लिए उसे सजाया जा रहा था । उसने कहा, 'मंजरी गुस्से में आ गयी है । पिच को जोर से ऊपर उठा दिया है । नाटू बाबू, इसी पिच में पकड़ना होगा ।'

नाटू बाबू अर्जुन है ।

गोपाल घबराते हुए आया और बोला, 'आप लोगों का—'

'हम लोग तैयार हैं।'

गोपाल बोला, 'इसके बाद अब उत्ताप नहीं आने दीजिये। ऐसी हालत हो गयी थी कि क्या कहूँ। कोई बिल्ली की आवाज की नकल कर चिल्ला उठा। लोग हो-ही-हा-हा करने लगे और बुंची जैसी ऐक्ट्रेस का गला बैठ गया, गोपाली थरथरा रही है। तत्क्षण, समझ रहे हैं न, उन्होंने प्रवेश किया। स्वाहा का इसके बाद संताप नहीं हो सका। विनोद ने बताया, प्रोप्राइट्रेस का चेहरा और आँख उस समय ऐसी हो गयी थी कि क्या कहा जाये!'

'वैसा होता है, समझे! इल्म रहने से वैसा होता है। बारीकी देखो, मगर उसकी जगह बिल्ली की बोली बोलने लगे। अभागिन की औलाद कहीं के!'

योगानन्द ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया, 'इसी तरह बदला लिया जाता है। कण्ठ जी ने लायलपुर में लिया था। तब मैं दल में दाखिल नहीं हुआ था। सुना है। समझ रहे हैं, उनके भाई सितिकण्ठ को छोकरों ने उस बार गीत नहीं गाने दिया, शोर-शराबा कर यात्रा बन्द करा दी। भाई के अपमान के कारण कण्ठ जी ने स्वयं बाबुओं को पत्र लिखकर तीन रात का बयाना लेकर छोकरों से बदला लिया था।'

गुस्से से सचमुच ही मंजरी सुध-बुध खो बैठी थी। वेश-मन्दिर में अलका से बात करते-करते गुस्से में आ गयी थी। शिक्षित लड़की होने के कारण अहंकार होना अस्वाभाविक नहीं है, मगर दूसरों को छोटा समझने और उनकी अवहेलना करने का अधिकार है क्या? वह सिर्फ प्रोप्राइट्रेस ही नहीं है, आज पाँच-छह वर्षों से यात्रा में पार्ट करती आ रही है, उसके पहले थियेटर में पार्ट किया है। वह क्या कुछ समझती नहीं?

'एक तो पौराणिक नाटक, उस पर भले आदमियों की मजलिस—वहाँ तुम मोहिनीमाया का साज-सिंगार कर रही हो तो क्या इस तरह सज-सँवर कर आओगी कि लगे नंगी हो? इस तरह का मेकअप करने को तुमसे किसने कहा?'

अलका के क्षोभ की भी कोई सीमा नहीं है। वह प्रशंसा बटोर कर आयी है और वह प्रशंसा उसके अकेले की नहीं है—दल की प्रशंसा है। गले में गरमाहट आ गयी है।

साहबों ने कहा है कि वे दो मेडल देंगे। और वे तिरस्कार करती हुई कह रही हैं—किसने ऐसा मेकअप करने कहा था! उनकी समझदारी है ही कितनी? तमाम बात वह समझ पाती हैं? क्षोभ के कारण उसने कहा, 'कहेगा कौन? उस पार्ट का यही मेकअप होना चाहिए। इसीलिए मैंने किया था। अच्छी तरह समझ-सोचकर बताइये कि देवताओं के द्वारा भेजी गयी मोहिनीमाया क्या है—कौन है?

उस युद्ध के समय संयमी प्रवीर को मुग्ध करना कितना कठिन है ! उसके बाद उसकी सुन्दरता के बारे मे सोच कर देखिये वह किस तरह आकर खड़ी हुई थी और मुग्ध किया था ।'

मंजरी अपना क्रोध बड़ी तकलीफ से मन में दबाये, भौंहों को सिकोडे देखती रही । कुछ बोली नही । कही कोई तीखी बात मुंह से न निकल जाये । यह लडकी उसे नाटक के बारे में समझा रही है ! अभिनय के बारे मे सिखा रही है ?

अलका फिर बोली, 'उसके अलावा गन्धर्वकन्या की सखी का जब सिंगार किया, उस समय आपने कहा था—यह आरती-नृत्य है और यह नाच दरअसल गंधर्वकन्या का नाच है । वह पुजारिनी तपस्विनी है । उसके नाच से भक्ति-पवित्रता के अतिरिक्त कोई दूसरी चीज जाहिर नही होगी । पोशाक भी अत्यन्त पवित्र होगी । आपने गेरुआ रंग का कपड़ा पसन्द करके दिया, मैंने उसे ही पहना । आप सफेद वस्त्र पहनने वाली थी, इसलिए मैंने सफेद वस्त्र नही पहना । मैंने आपकी बात पूरे तौर पर मान ली । उस समय आपने कहा था, मोहिनी माया के समय तुम अपने इच्छानुसार सजना-सँवरना । आज भी मैंने मैनेजर-डायरेक्टर से कहा था—अजन्ता की तस्वीर में जैसी पोशाक है, मैं अगर उस तरह साज-सिंगार करूँ तो चलेगा ? उन्होंने कहा था, गुड-गुड-गुड, बहुत ही बेहतरीन आइडिया है । इसीलिए मैं उस तरह सजी-सँवरी थी ।'

'उन्होंने यह बात कही थी ?'

गोरा बाबू मजलिस से लौट ग्रीनरूम के बाहर खुली जगह मे गया हुआ था । एक छोटी-सी घिरी जगह में एक ओर औरत-मर्दों के लिए मुंह हाथ धोने की जगह है । बाकी यों ही पडा है । यहाँ साधारण ऐक्टर और सखी वेशधारी लडके बीड़ी पी रहे हैं । गपशप कर रहे हैं । जो सब गपशप ग्रीनरूम में नही किया जा सकता है वही सब गपशप कर रहे है । अभिनय के वक्त इन लोगो की जिन्दगी तीन हिस्सों में बँट जाती है । वृक्ष की तरह । अभिनय की मजलिस मे ये लोग फूल खिलाते हैं । ग्रीनरूम मे उनका काम सजना-सँवरना और आलोचना करना होता है । और वेश-मन्दिर के आसपास की ऐसी ही जगह उनका मूल स्थान हुआ करती है । पापरस का पान करते हैं । छोकरे बीड़ी धौंकते हैं । सखी वेशधारी छोकरों की ठुड्डी पकड़ उम्रदार दो-चार आदमी लाड़-प्यार और मजाक करते हैं । कभी-कभी भीड़ लगाकर किसी बड़े ऐक्टर की बखिया उधेड़ते हैं । दुश्चिन्ता से बोझिल होकर कोई व्यक्ति एकान्त में बैठ आसमान की ओर ताकता रहता है । या तो घर के धान-चावल, रुपया-पैसे के अभाव के बारे में सोचता है, या बुखार से पीड़ित जिस पुत्र को देख आया है, उसके बारे मे सोचता है । दो-चार व्यक्ति मजलिस में खराब पार्ट करने के कारण उदास मन लिए सिर झुकाये बैठे रहते हैं ।

गोरा बाबू हाथ-मुंह धोने की जगह से बाहर आ ठिठककर खड़ा था । यहाँ बहुत ही कम रोशनी है । धुंधलापन तिर रहा है । छोकरे और कुछ

नेता अतिशय उल्लास मे आकर अश्लील हो उठे हैं। अलका के नाच के बारे मे चर्चा चल रही है। उसका सारांश है— हाँ, अलबत्ता एक नाच दिखा दिया। इतने बड़े ऐक्टर को भेड़ा बना दिया।

एक व्यक्ति बोला, 'भेड़ा नहीं, तिलचिट्टा। कसम, ठीक उसी तरह जिस तरह मक्खा तिलचिट्टा को पकड़कर ले जाये, उसी तरह ले गयी।'

गोरा बाबू को हँसने का मन हुआ। यात्रादल मे अभिनय के दौरान इन बातो से क्रोध नही आता, हँसने का मन करता है। गुस्ताने का काम होता है वेश-मंदिर में। वह हँसी दबाकर चला आया। उसका मन खुश ही था। अलका के इस बेहतरीन अभिनय की वजह से वह खुश था। यह लड़की उसी का आविष्कार कही जायेगी।

ग्रीनरूम में घुसते ही शोभा की अंग-भंगिमा पर नजर पड़ी। वह आशा के सामने अलका के नाच का केरिकेचर दिखा रही थी। मोटी-सोटी शोभा की अंग-भंगिमा और इसके पीछे उसके ईर्ष्या से आतुर मन की बात उससे छिपी नहीं थी। हो सकता है आज सबका चेहरा लटका रहे। यहाँ एक व्यक्ति को ताली मिलती है तो बाकी लोगों का चेहरा लटक जाता है।

उसका भी लटक जाता है। तब हाँ, रीतू बाबू के अलावा किसी दूसरे को ताली मिलती है तो नही लटकता है। लेकिन अलका कहाँ है? हूँ, रीतू बाबू और बाबुल से वह अपनी प्रशंसा सुन चुकी है। नये आर्टिस्ट के इस मोह के बारे मे वह जान चुका है। वह स्वयं सबके पास जायेगी और प्रशंसा सुन आयेगी। मुसकराती हुई जायेगी और कहेगी, 'क्या कर रहे हैं?' या फिर कहेगी, 'बापरे अब सामर्थ्य नहीं है! उफ्!' सो सुने, अलका प्रशंसा सुने और खुश होवे। गोरा बाबू मंजरी को सूचना देने जा रहा था कि अलका ने सचमुच ही अच्छा किया है। सिर्फ वही नहीं, मजलिस का हर व्यक्ति उसके सामने दिग्भ्रमित हो रहा था।

गोरा बाबू कमरे के अन्दर गया और अन्दर जाते ही सुना, मंजरी विस्मित रहने के बावजूद तीखे स्वर मे पूछ रही है, 'उन्होने कहा था?'

गोरा बाबू जानता है, मंजरी ने 'उन्होने' शब्द का प्रयोग उसी के लिए किया है। उसने कहा, 'क्या?'

मंजरी ने उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा, 'लो आ गये! तुमने क्या अलका से उस तरह का मेकअप करने कहा था?'

अलका ने कहा, 'मैंने आपसे नही पूछा था कि मैं अजन्ता की लड़की की तरह पोशाक पहन सकती हूँ? आपने क्या नही कहा था—'

गोरा बाबू कुछ बोले कि इसके पूर्व ही मंजरी ने कहा, 'घुटने से पाँवों के टखने तक के हिस्से को बाहर निकाल, पेन्ट से मिलती-जुलती इलास्टिक टाइट गंजी पहन और छाती पर कपड़े का एक टुकड़ा बाँध तुमने उतरने कहा था?'

गोरा बाबू जरा चौक उठा। अब उसे खयाल आया कि पोशाक के मामले मे जरा ज्यादती हो गयी थी। मंजरी के गले की आवाज तीखेपन के साथ उसके कलेजे में चुभ गयी। गोरा बाबू बोला, 'वह जो कुछ कह रही है उसमें सच्चाई है। मैंने इसलिये कहा था कि वह आर्ट की दृष्टि से अच्छा रहेगा। साहब लोग भी हैं। इस किस्म का नाच उन्हे अच्छा लगेगा। और—'

मंजरी बोल उठी, 'छि. छिः। लेकिन इसके बाद ? इसके बाद और जमा सकेगी ?'

ठीक इसी वक्त योगा बाबू का महाकाल का गीत समाप्त हुआ। मजलिस मे चुप्पी छा गयी है। गोरा बाबू बोला, 'लो, योगा बाबू ने चुप करा दिया है।'

दूसरे ही क्षण कोलाहल समुद्र के बड़े-बड़े ज्वार की तरह ग्रीनरूम तक पहुँचकर पछाड़ खाने लगा। दोनों अचकचाकर ध्यान से सुनने के लिए खड़े हो गये। अलका का चेहरा क्षोभ से तमतमा आया है। उसने कोलाहल की ओर ध्यान नही दिया था।

मंजरी तेज कदमों से बाहर निकल आयी। उसका पार्ट भी है। जाने के समय कह गयी, 'लो, फिर से सुन लो।'

वह मजलिस के प्रवेश पथ की देहरी पर आकर खड़ी हो गयी। बगल में वराहनगर का बंकिम खड़ा था। पूछा, 'क्या हुआ बंकिम ?'

उसकी आँखें मजलिस की ओर हैं। बुंचीदी और गोपाली का चेहरा कैसा-कैसा तो हो गया है। गोपाली जैसे काँप रही है। पूरी मजलिस मे व्यंग्य का उल्लास जैसे छलक पड़ा हो। अब वे दुःख की बातें और रुलाई नही सुनेंगे। उन लोगों का मन मादक द्रव्य मिश्रित फेनिलताड़ी के रस से धुत हो गया है। उन लोगो ने आकण्ठ आदिम रस का पान किया है। मोहिनीमाया ने आदिम रस के पात्र को उलटकर उलीच दिया हैं। चोली के बदले छाती पर बंधे उस नीले रंग के छोटे से कपड़े को जैसे खोलकर फेंका नही गया है बल्कि पात्र के मुँह के आवरण को फाड़कर फेंक दिया गया है। फिर भी उसे क्रोध हो आया। निष्ठुर क्षोभ से उसमें तीव्रता और प्रखरता आ गयी। बुंची या गोपाली ही नही, पूरा मंजरी ऑपेरा पिट रहा है। लेकिन करू क्या ? जो होने को था हो चुका है। बुंची स्वाहा की बाते रहे, अब वह उन्हें बोलने नही देगी। उसी क्षण अपने कर्तव्य का निर्णय कर वह अपने कंठस्वर को सर्वोच्च ग्राम तक ले जाकर बोल उठी—

धिक्कार है तुम्हे माहिष्मती कुलवधू
वीरश्रेष्ठ प्रवीर महिषी !

यह कहते-कहते वह मजलिस के प्रवेश की देहरी पर खड़ी हुई, जहाँ प्रथमबार आविर्भूत होने वाली मोहिनीमाया स्वयं को कपड़े से ढँककर खड़ी हुई थी। उसकी आँखें जल रही हैं। चेहरा क्षोभ-आक्रोश से बेहद तमतमा आया है। उसके हाथ में

नंगा कृपाण है। कुछ क्षण तक ठिठककर चुपचाप खड़ी रही। देखना चाहा कि क्या होता है। और हुआ वही जो वह चाहती थी। मजलिस में सन्नाटा छा गया। वह आश्वस्त हुई। उसके विश्वास में दृढ़ता आयी। अबकी अपनी आवाज को नीचे उतार उसने तीव्र तिरस्कार के स्वर मे कहा,

क्षत्रिय नंदिनी, नयनों में आंचल दबाये कातर क्रन्दन
धर्म नहीं तुम्हारा, शोभा नही देता तुम्हें !

यह कहते-कहते उसने मजलिस में प्रवेश किया और मदनमंजरी और स्वाहा के बीच जाकर खड़ी हो गयी। मदनमंजरी को छाती से लगा लिया। मीठे स्वर में बोली, 'तुम हो वीरांगना, किस लिए यह रोदन ? क्यो यह रोदन तुम्हारा ? लौटा नही है प्रवीर ?'

अचानक गले के स्वर को दृढ़ बनाकर जरा जोर से कहा—'आओ मेरे साथ। यह देखो मेरे हाथ मे तीक्ष्ण तलवार। यह देखो वक्ष में बांध रखा है वर्म। जा रही हूँ रणक्षेत्र को।'

इसके बाद ही उसके कण्ठस्वर मे एक प्रकार का संकल्प, एक प्रकार का आक्रोश, हाथ की उस झलमलाती रांगे की तलवार की चमक की तरह जगमगाने लगा। उसका स्वर ऊपर उठने लगा। उसने कहा—'बाघिनी यदि जीवित है तो शक्ति है किसमें कि वध करे उसके शावक का ?'

उसके चेहरे पर तीक्ष्ण निष्ठुर हँसी तिर आयी। एक क्षण पहले के आदिम रस से मत्त दर्शक उस क्षुब्ध मूर्ति के सामने जैसे विह्वल हो उठे। वह हाथ मे तलवार और-और मौके पर इस वक्त धारण नहीं करती है। लेकिन आज उसे उठा लिया है। उत्तेजना से उसका हाथ थरथरा रहा है। वह अब रुकी नही, आखिर तक बोलती चली गयी। और मदनमंजरी का हाथ पकड़ उसे खींचती हुई तेज कदमों से चली गयी।

मजलिस तालियों की तड़तड़ाहट से गूँज उठी। वह कहीं रुकी नहीं। अब प्रवीर और अर्जुन को प्रवेश करना है। वे लोग निकलकर बाहर आ रहे हैं। पहले प्रवीर आयेगा, वह स्वयं को धिक्कारेगा। कहेगा—मूर्ख मैं, भ्रष्ट हूँ मैं—क्षत्रिय साधनाभ्रष्ट कुलांगार, वीरांगना गंगा-पुजारिनी जननी जना का अयोग्य तनय। छिः छिः छिः ! यह क्या किया ! तब भी, तब भी जाना होगा जननी के सम्मुख अपराध कर स्वीकार। युद्धक्षेत्र में प्राण त्याग कर समर मे, प्रायश्चित करूँगा इसका।

सामने आकर अर्जुन रास्ता रोक लेगा। प्रवीर को जना के सामने जाकर आशीर्वाद नही लेने देगा। नही तो वह नयी शक्ति से पुनः बलवान हो जायेगा।

प्रवीर वेशधारी गोरा बाबू प्रवेश करेगा। वह मजलिस से ग्रीनरूम की ओर घुसने जा रही है। गोरा बाबू ने उसे देखकर प्रसन्नता के साथ उसका स्वागत किया और कहा, 'सलाम है तुम्हें !'

मंजरी बोझिल और अभिभूत हो गयी थी। अब भी उसमें उत्तेजना का आवेग और क्षुब्ध मन का अवशेष है। उसने उत्तर नहीं दिया। हल्की हँसी हँसकर गोरा बाबू के स्वागत को जैसे छूकर अलग रख दिया और चली गयी। मंजरी कहीं खडी नही हुई। पुरुषों के वेश-मन्दिर में रीतू बाबू, मास्टर साहब, और बाबुल से शुरू कर छोटे-बड़े सब सहकर्मी आकर खड़े हैं। सबके चेहरे पर मुस्कराहट है।

रीतू बाबू ने मुसकराकर कहा, 'अद्‌भुत ! आश्चर्यजनक मोड़ दे दिया आपने !' कहते-कहते रीतू बाबू चुप हो गया। उसके गले की आवाज में उत्कण्ठा उभर आयी। चुप होकर उत्कण्ठा भरे स्वर में बोला, 'क्या हुआ ? आपकी तबीयत—'

मंजरी ने धीमे स्वर में कहा, 'सिर कैसा-कैसा तो कर रहा है।' यह कहकर वह झटपट कुरसी पर आकर बैठ गयी और मेज पर अपना सिर टिका दिया।

रीतू बाबू ने पुकारा, 'शिवनन्दन !'

उसके बाद रीतू बाबू अपने आप बोलने लगा, 'जना का जो पार्ट है वह इसके बाद ही है। सर्वनाश हुआ !'

बाबुल बोला, 'माई खुदा, फिर क्या कीजिएगा ?'

जरा सोचकर रीतू बाबू बोला, 'ठहरो पूछ आता हूँ।'

'क्या ?'

'पार्ट काटकर छोटा कर दिया जायेगा या नही।'

मेज पर से ही सिर हिलाकर मंजरी ने इशारे से जताया, 'नही।'

रीतू बाबू बोला, 'चला सकिएगा ? बड़ा-बड़ा संलाप है।'

'देखूं !' मंजरी ने अब सिर उठाकर कहा, 'देखूं।' उसके बाद एक उसाँस लेकर कहा, 'शायद सकूँगी।' उसके बाद फिर बोली, 'सकना ही होगा।' यह कहकर जरा उदास और अजीब-सी हँसी हँस दी और फिर से मेज पर सिर रख दिया।

बुँची ने कहा, 'थोड़ी-सी ब्रॉण्डी पी लो मंजरी। एक बार मुझे भी ऐसा हुआ था। एक औंस ब्रॉण्डी पीते ही सब ठीक हो गया।'

उसकी बात खत्म होने के पहले ही मंजरी ने सिर हिलाकर जताया—'नही।' इसके बाद जरा चुप रहने के बाद बोली, 'शिवना, पीने का थोड़ा पानी दे। और बुँचीदी, जरा मुझे अकेले रहने दो।'

बुँची चली गयी। मंजरी ने शिवनन्दन से कहा, 'रहने दो शिवना, हवा अच्छी नही लग रही है। यह कह कर वह ग्रीनरूम के बाहर चली गयी और उस खुली जगह मे जाकर खड़ी हो गयी। मजलिस मे तालियाँ बज रही हैं। प्रवीर, हां

प्रवीर को तालियाँ मिल रही हैं। रणक्षेत्र में घायल होने के बावजूद प्रवीर लड़ रहा है और स्वयं को धिक्कार रहा है, माँ को प्रणाम निवेदित कर रहा है। इस स्थल पर प्रवीर को तालियाँ मिला करती हैं। गोरा बाबू इस स्थिति का पार्ट अच्छा ही करता है। उसने ध्यान से सुना। आज गोरा बाबू भी बहुत अच्छा अभिनय कर रहा है। करना ही होगा। वरना वह जैसा कर आयी है, उस उत्ताप में थोड़ी-सी भी कमी आयेगी तो पिट नहीं पड़ेगा। इसके बाद ही मंजरी का है। एक तरह से आखिर तक। पुत्र शोक से विह्वल जना हृदय विदारक स्वर में पुकारेगी—प्रवीर ! प्रवीर ! उसके बाद पागल की तरह हाथ में तलवार लिए दौड़ेगी—'कहाँ है मेरा पुत्र घाती कपटी पाण्डव रथी !' उसे तारा सुन्दरी की उन दो मर्म वेधी पुकारों की याद आ रही है—प्रवीर ! प्रवीर ! नहीं, प्रवीर ! प्र-वी-र ! याद आ रहा है, उस पुकार को सुन छाती का अन्दरूनी हिस्सा ऐंठने लगता था। उसकी नकल नहीं की जा सकती है। मगर आज कोशिश करनी ही है। कोशिश नहीं, बल्कि सफल होना ही है। वरना इसके बाद अभिनय बिलकुल कृत्रिम हो जायेगा, घटिया हो जायेगा। हो सकता है कि दर्शकगण शोर-शराबा मचाना शुरू कर दें। हो सकता है कि जैसे ही वह प्रवीर कहकर पुकारे, बिल्ली-कुत्ते की बोली बोलना शुरू कर दें। वे विदेशी विधर्मी और घमण्डी साहब, जो इस भाषा को नहीं समझते हैं, वे कहेंगे—'नाच बुलाओ बड़ा बाबू !' बड़े बाबू दौड़े-दौड़े आयेंगे और कहेंगे—मतलब है कि, नाच देना ही होगा, नहीं तो मतलब है कि—ये गँवार लोग उठकर चले जायेंगे। नहीं, वह ऐसा नहीं होने देगी। सब कुछ एकमात्र उसी पर निर्भर करता है। उसका अपना यात्रादल है। अलका—वह उद्धत लड़की मुसकरायेगी। उसका मन उस लड़की पर बेहद खफा हो गया है। गंधर्वकन्या के दिन भोमा ने उससे मजाक किया था, जवाब में अलका बिगड़ खड़ी हुई थी। कहा था वह भले घर की लड़की है। इसके मायने ? वे लोग''''उसके अलावा बाकी सब वेश्या हैं। मगर आज भले घर की लड़की मजलिस में कैसा नाच नाची ? वह भद्रता है ? पूरी मजलिस को शराब के नशे की तरह मदमस्त कर दिया !

सबसे ज्यादा क्षोभ उसे इस बात का है कि गोरा बाबू ने गद्गद् होकर उसके उस नाच की बड़ाई की।

उसका सिर फिर से चकराने जैसा लगा। वह खुली जगह से चली आयी। सखीदल के कुछ लड़के बीड़ी फूँक रहे थे, हँस रहे थे, बातचीत कर रहे थे, मगर उन बातों का एक भी टुकड़ा उसके कान में नहीं पहुँचा। सखीदल के लड़के प्रोप्राइटेस पर नजर पड़ते ही घबरा कर बोल उठे, 'अरे चुप, चुप।'

'क्या ?'

किसी ने 'हुश' कह कर दबी सिसकारी दी और संभवतः उसकी ओर इशारा किया। कमरे की ओर जाते ही गोपाल घोष से मुलाकात हुई।

'पार्ट है माताजी।'

'समय हो गया ?'

'हाँ ।'

'कैसा हुआ ?'

'मालिक के पार्ट के बारे में क्या कहना !'

'ठीक है।' कहकर वह मजलिस की ओर मुखातिब हुई। कमरे के अन्दर जाना नही हो सका। पानी पीने का वक्त नही है। सिर चकरा रहा है तो चकराने दो। वह स्थल आ गया है। पुकारना होगा—प्र-वी-र ! प्र-वी-र ! छाती फटकर निकलने वाली वह पुकार होगी।

पूरी मजलिस चौंक उठी। मनुष्य का मन हाय-हाय कर उठा। सन्तान खोयी माँ की हृदय-विदारक पुकार थी वह !

तालियाँ नही बजी। मजलिस मे स्तब्धता छा गयी। अव्यक्त पीड़ा छाती के अन्दर बरसात के बादलों की तरह मँडरा रही है।

'शी इज वीपिंग ! टीअर्स इन हर आइज।'

'साइलेन्स !'

मजलिस में एक बूढा बिलख-बिलखकर रोने लगा।

मंजरी रो रही है। मंजरी क्रोध-आक्रोश और तीक्ष्ण कण्ठ स्वर से प्रतिशोध का संकल्प ले रही है। मदनमंजरी आयी। बुँची भी रो रही है। मंजरी जना है, उसने शान्त स्वर में कहा, 'आओ, लेकिन यह कैसी दीन साज-सज्जा तुम्हारी माहिष्मती राजवधू प्रवीर-प्रेयसी ? कहाँ, कहाँ है तुम्हारी पुष्प-सज्जा—सर्वांग भरी हुई ? वितानल में बिछाओगी मिलन-सेज ? कहाँ ? कहाँ है उसका आयोजन उपयुक्त ? सजो, सजो, सजलो बिटिया मेरी। कहाँ हैं सहचरी ? लाओ—लाओ, पुष्प-आभरण। लाओ बहुमूल्य क्षौम वस्त्र माणिक्य खचित। पुत्रवधू जायेगी मेरी स्वर्गपुरी संभाषण को पति से। लाओ, लाओ, करो नही विलम्ब।'

स्तब्ध अवाक् अभिभूत मजलिस को अपने पीछे छोड़ वह वेशमंदिर में आयी और मेज पर सिर टिकाकर लेट गयी। शिवनन्दन पंखा झलने लगा। अब मंजरी ने कहा, 'पानी दे।' पानी पीकर फिर से मेज पर सिर टिका दिया। मानो सीधी होकर नही बैठ पा रही है।

गोरा बाबू उपकेश खोल, तेल लगे हाथ को मुँह में रगड़, रंग मिटाते-मिटाते आकर खड़ा हो गया। बोला, 'तबियत खराब कर डाली अपनी ?'

मंजरी चुप रही। गोरा बाबू बोला, 'थोड़ा-थोड़ा कर इमोशन कम कर दो। नही तो आखिर तक रख नहीं सकोगी या फिर मजलिस में ही बेहोश होकर गिर पड़ोगी।'

मंजरी ने इस बात का भी कोई जवाब न दिया।

प्रवीर को तालियाँ मिल रही हैं। रणक्षेत्र में घायल होने के बावजूद प्रवीर लड़ रहा है और स्वयं को धिक्कार रहा है, माँ को प्रणाम निवेदित कर रहा है। इस स्थल पर प्रवीर को तालियाँ मिला करती हैं। गोरा बाबू इस स्थिति का पार्ट अच्छा ही करता है। उसने ध्यान से सुना। आज गोरा बाबू भी बहुत अच्छा अभिनय कर रहा है। करना ही होगा। वरना वह जैसा कर आयी है, उस उत्ताप में थोड़ी-सी भी कमी आयेगी तो पिट नही पडेगा। इसके बाद ही मंजरी का है। एक तरह से आखिर तक। पुत्र शोक से विह्वल जना हृदय विदारक स्वर में पुकारेगी—प्रवीर! प्रवीर! उसके बाद पागल की तरह हाथ मे तलवार लिए दौड़ेगी—'कहाँ है मेरा पुत्र घाती कपटी पाण्डव रथी!' उसे तारा सुन्दरी की उन दो मर्म वेधी पुकारो की याद आ रही है—प्रवीर! प्रवीर! नही, प्रवीर! प्र-वी-र! याद आ रहा है, उस पुकार को सुन छाती का अन्दरूनी हिस्सा ऐंठने लगता था। उसकी नकल नही की जा सकती है। मगर आज कोशिश करनी ही है। कोशिश नहीं, बल्कि सफल होना ही है। वरना इसके बाद अभिनय बिलकुल कृत्रिम हो जायेगा, घटिया हो जायेगा। हो सकता है कि दर्शकगण शोर-शराबा मचाना शुरू कर दें। हो सकता है कि जैसे ही वह प्रवीर कहकर पुकारे, बिल्ली-कुत्ते की बोली बोलना शुरू कर दें। वे विदेशी विधर्मी और घमण्डी साहब, जो इस भाषा को नही समझते हैं, वे कहेंगे—'नाच बुलाओ बड़ा बाबू!' बड़े बाबू दौड़े-दौड़े आयेंगे और कहेंगे—मतलब है कि, नाच देना ही होगा, नही तो मतलब है कि—ये गँवार लोग उठकर चले जायेंगे। नही, वह ऐसा नही होने देगी। सब कुछ एकमात्र उसी पर निर्भर करता है। उसका अपना याताादल है। अलका—वह उद्धत लड़की मुसकरायेगी। उसका मन उस लड़की पर बेहद खफा हो गया है। गंधर्वकन्या के दिन शोभा ने उससे मजाक किया था, जवाब मे अलका बिगड़ खड़ी हुई थी। कहा था वह भले घर की लड़की है। इसके मायने? वे लोग····उसके अलावा बाकी सब वेश्या हैं। मगर आज भले घर की लड़की मजलिस मे कैसा नाच नाची? वह भद्रता है? पूरी मजलिस को शराब के नशे की तरह मदमस्त कर दिया।

सबसे ज्यादा क्षोभ उसे इस बात का है कि गोरा बाबू ने गद्‌गद होकर उसके उस नाच की बड़ाई की।

उसका सिर फिर से चकराने जैसा लगा। वह खुली जगह से चली आयी। सखीदल के कुछ लड़के बीड़ी फूँक रहे थे, हँस रहे थे, बातचीत कर रहे थे, मगर उन बातो का एक भी टुकड़ा उसके कान में नही पहुँचा। सखीदल के लड़के प्रोप्राइट्रेस पर नजर पड़ते ही घबरा कर बोल उठे, 'अरे चुप, चुप।'

'क्या?'

किसी ने 'हुश' कह कर दबी सिसकारी दी और संभवतः उसकी ओर इशारा किया। कमरे की ओर जाते ही गोपाल घोष से मुलाकात हुई।

'पार्ट है माताजी।'

'समय हो गया ?'

'हाँ।'

'कैसा हुआ ?'

'मालिक के पार्ट के बारे में क्या कहना !'

'ठीक है।' कहकर वह मजलिस की ओर मुखातिब हुई। कमरे के अन्दर जाना नहीं हो सका। पानी पीने का वक्त नही है। सिर चकरा रहा है तो चकराने दो। वह स्थल आ गया है। पुकारना होगा—प्र-वी-र ! प्र-वी-र ! छाती फटकर निकलने वाली वह पुकार होगी।

पूरी मजलिस चौंक उठी। मनुष्य का मन हाय-हाय कर उठा। सन्तान खोयी माँ की हृदय-विदारक पुकार थी वह !

तालियाँ नही बजी। मजलिस में स्तब्धता छा गयी। अव्यक्त पीड़ा छाती के अन्दर बरसात के बादलों की तरह मँडरा रही है।

'शी इज वीपिंग ! टीअर्स इन हर आइज।'

'साइलेन्स !'

मजलिस में एक बूढ़ा बिलख-बिलखकर रोने लगा।

मंजरी रो रही है। मंजरी क्रोध-आक्रोश और तीक्ष्ण कण्ठ स्वर से प्रतिशोध का संकल्प ले रही है। मदनमंजरी आयी। बुंधी भी रो रही है। मंजरी जना है, उसने शान्त स्वर में कहा, 'आओ, लेकिन यह कैसी दीन साज-सज्जा तुम्हारी माहिष्मती राजवधू प्रवीर-प्रेयसी ? कहाँ, कहाँ है तुम्हारी पुष्प-सज्जा—सर्वांग भरी हुई ? वितानल में बिछाओगी मिलन-सेज ? कहाँ ? कहाँ है उसका आयोजन उपयुक्त ? सजो, सजो, सजलो बिटिया मेरी। कहाँ हैं सहचरी ? लाओ—लाओ, पुष्प-आभरण। लाओ बहुमूल्य क्षौम वस्त्र माणिक्य खचित। पुत्रवधू जायेगी मेरी स्वर्गपुरी संभाषण को पति से। लाओ, लाओ, करो नही विलम्ब।'

स्तब्ध अवाक् अभिभूत मजलिस को अपने पीछे छोड़ वह वेशमंदिर मे आयी और मेज पर सिर टिकाकर लेट गयी। शिवनन्दन पंखा झलने लगा। अब मंजरी ने कहा, 'पानी दे।' पानी पीकर फिर से मेज पर सिर टिका दिया। मानो सीधी होकर नही बैठ पा रही है।

गोरा बाबू उपकेश खोल, तेल लगे हाथ को मुँह मे रगड, रंग मिटाते-मिटाते आकर खड़ा हो गया। बोला, 'तबियत खराब कर डाली अपनी ?'

मंजरी चुप रही। गोरा बाबू बोला, 'थोड़ा-थोड़ा कर इमोशन कम कर दो। नही तो आखिर तक रख नहीं सकोगी या फिर मजलिस में ही बेहोश होकर गिर पड़ोगी।'

मंजरी ने इस बात का भी कोई जवाब न दिया।

गोरा बाबू मंजरी के सिर पर हाथ रखने जा रहा था, लेकिन हटा लिया। हाथ मे तेल है। मंजरी का मेकअप खराब हो जायेगा। पीठ पर हाथ रखा।

'मंजु !'

मंजरी बोली, 'देखना, बाबुल बाबू मजलिस में गये हैं, कहीं ज्यादा मसखरी नही करने लगे।'

रीतू बाबू न मालूम कब दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया था। बोला, 'सो मैंने कह दिया है। इसके अलावा यह सीन कृष्ण के साथ है। भक्ति रस की मात्रा अधिक है। मसखरी करने की सुविधा नही मिलेगी। दूसरी बात है कि वह अक्लमन्द है।'

मंजरी ने एक लंबी सांस ली। गोरा बाबू बोला, 'कहीं बुखार तो नही आ गया है ? सिर नही उठा पा रही हो ?'

मंजरी बोली, 'नही।'

गोरा बाबू बोला, 'फिर भी इमोशन कम कर दो।'

रीतू बाबू ने पीठ दबायी। गोरा बाबू ने जैसे ही मुड़कर देखा, वह बोला, 'उन्हे पार्ट करने दें गोरा बाबू। आज उन्हे ध्यान आ गया है। स्वयं भी कहती हैं। आपको मालूम ही है। आइये। वे ठीक हैं। अगर मजलिस मे बेहोश होकर गिर जाये तो मैं नीलध्वज—जना का पति—उठाकर ले आऊंगा। किसी को भी पता न चलेगा कि क्या हुआ है। आइये।'

दूसरे कमरे में आ शराब का पूरा गिलास हाथ में थमा दिया, 'पीजिये। जना के सक्सेस के लिए। ऐसा सक्सेस कभी-कदा ही होता है। पीजिये।' अपने गिलास को भी उसने भर लिया।

रीतू बाबू ने कहा, 'शिबू !'

विन्यासकारी शिबू ने कहा, 'मास्टर साहब !'

'खिड़की का परदा हटा दो। प्ले देखूं।' गोरा बाबू से कहा, 'बैठे-बैठे पीजिये और देखिये। उन्हें डिस्टर्ब नही कीजिएगा।'

बाबुल बाहर निकल रहा है। जना प्रवेश करेगी।

पुत्र-शोक से विह्वल जना और कृष्ण।

उसके बाद गंगा से जना का साक्षात्कार होगा। गंगा उसका हाथ पकड़ेगी। जना का जीवन गंगा के पदतल मे विलीन हो रहा है। कृष्ण कहेंगे—

क्षमा, क्षमा करो जननी मुझे। क्षमा !
अपराध करता हूँ स्वीकार। क्षमा चाहता। क्षमा !
वीर श्रेष्ट तुम्हारा पुत्र पुत्रवधू के साथ
अमरावती में इन्द्रत्व का कर रहा उपभोग। इतिहास मे भारत के
प्रवीर का नाम चिर दिन स्वर्णाक्षरों मे रहेगा अंकित।
क्षमा करो मातः।

जना गंगा का हाथ थामे जाते-जाते कहेगी—क्षमा ! क्षमा ! वासुदेव नही है किसी प्रकार का क्षोभ । क्षमा !

कृष्ण कहेंगे—
जाओ सती पुण्यवती गंगा अंशोद्भुता
महियसी जननी मेरी—जाओ तुम अपने स्थान में ।
हे प्रवीर वीरश्रेष्ठ, महेन्द्र के साथ समान सुख समान गौरव के साथ—
स्वर्ग के राज्य में करो सुख का भोग मदनमंजरी के साथ ।
मैंने यहाँ पत्थर मे बाँध रखा है अपना हृदय—इस पुण्यभूमि
भारत में करूँगा धर्मराज्य की स्थापना—
यही है मेरा चिर दिन का कार्य । इस भूमि मे संभवानि युगे-युगे !

पूरी मजलिस में हर्ष-ध्वनि होने लगी । नाटक समाप्त हुआ, मजलिस समाप्त होने वाली है ।

बड़े बाबू उठकर खड़े हो गये, 'सब लोग जरा रुक जायें । हमें घोषणा करनी है ।

घोषणा की गयी—'बड़े साहब सोने का एक पदक जना को देंगे । मोहिनी-माया को देने की चर्चा पहले ही कर चुका हूँ । मैनेजर जना को एक गोल्ड सेन्टर मेडल और विदूषक को एक चाँदी का मेडल देंगे । और बेंगाली क्लब जना, मोहिनी माया, प्रवीर और विदूषक को एक-एक चाँदी का मेडल देगा । मैं स्वयं जना को एक मेडल दूँगा । बड़ा ही बेहतरीन अभिनय किया है । ऐसा मैंने जमाने से नही देखा ।'

ग्रीनरूम मे अब तक जैसे एक उमस भरा माहौल था । पता नही, क्या होगा, क्या होगा—ऐसा ही एक भाव । एक उत्कण्ठा । अभिनय का अन्त इतनी सफलता के साथ होने के कारण सारी उमस दूर हो गयी और खुशियों का कोई इन्तहा न रहा ।

योगा बाबू बोला, 'बा। रे' यह क्या हुआ ! नाचने की इच्छा हो रही है ।'

बाबुल ने कहा, 'बिग ब्रदर, लाओ बिग डोज दो । गिर पड़ूँ तो उठाकर ले जाना ।'

गोरा बाबू ने एक भरपूर गिलास हाथ में उठा लिया है, 'मंजरी ऑपेरा की जय ! जिन्दाबाद !'

गिलास खत्म कर गोरा बाबू मंजरी के कमरे मे आया, 'कहाँ हो मंजरी ?'

बूँचो बोली, 'वह तो शिवनन्दन को लेकर चली गयी । बोली, मैं जाकर सोऊँगी । खड़ी नही रह पा रही हूँ ।'

तीन

सचमुच ही मंजरी ने वेश मंदिर में प्रवेश करने के साथ ही मुँह रगड़, तौलिये से उसे पोंछ शिवनन्दन से कहा था, 'चल । अब मुझमें शक्ति नही है । सब उठाकर ले चल ।'

वह न केवल शारीरिक थकान का अनुभव कर रही है बल्कि उसका मन भी थककर चूर हो गया है । अच्छा नही लग रहा है । आज उसने इतना अच्छा पार्ट किया है—मंजरी ऑपेरा का जयजयकार हुआ है, यह सब जैसे उसके लिए कोई अहमियत नही रखता हो ।

देह थकान से चूर हो गयी है । मन क्षोभ से भर उठा है ।

आज मैनेजर प्रमुख ऐक्टर गोरा बाबू न होता तो हो सकता है कि मंजरी कहती, 'आपसे मेरा काम सुचारू से चल नही सकेगा । विचारो मे मेल नही खायेगा । अन्यथा न लें । पौराणिक नाटक है । धार्मिक पुस्तक । उस पुस्तक में यह नाच ! यह वेशभूषा ! माफ कीजिएगा । आर्ट । इसे आर्ट कहते हैं ?'

वह कहेगी । गोरा बाबू से कहेगी, अलका से भी कहेगी । लेकिन आज नही । आज जो तिरस्कार करना था, कर चुकी है ।

मंजरी बोली, 'चल शिवनन्दन ।'

बाहर मजलिस के सामने अब भी भीड़ इकट्ठी है । बाबू लोगों के कमरे मे शराब का दौर-चल रहा है । ठहाके की आवाज आ रही है । औरतें शोर-गुल मचा रही हैं । गोपाल और किसी व्यक्ति मे गरमागरम बहस चल रही है । लड़के भीड़ लगा कर खड़े हैं । सिर का पल्ला खींचकर मंजरी दुबारा बोली, 'चल ।'

'बाबू—'

'उन्हें रहने दे । बाद मे आयेंगे । चल । सुन रहा है ?'

गले के स्वर से चौंक कर शिवनन्दन सरो-सामान उठा कर बोला, 'कह आऊँ ?'

'नही ।'

यह कहकर वह बाहर निकल आयी । शिवनंदन से कहा, 'चल आ ।'

वेश-मन्दिर का यह हिस्सा महिलाओं के लिए है । शोभादी, गोपाली, आशा, बुँचीदी कोई वहाँ नही हैं । सभी पुरुषो के वेश-मन्दिर मे जाकर जमा हो गयी हैं । मंजरी जानती है, औरतों का स्वभाव ही ऐसा होता है । मजलिस की तालियो से भी उनका मन नहीं भरता—वे दल के पुरुषों की प्रशंसा बटोरने जाती हैं । कुछ न कुछ बहाना बनाकर चली जाती हैं । उफ़, औरतें क्या नही कर सकती हैं ! उनके लिए दर्शक का मायने ही पुरुष है । वे कितने हास्य-लास्य, यौवन की कितनी ही छलनाएँ प्रदर्शित करती हैं । वह भी करती है । किया भी है । लेकिन इस सच्चाई को छिपा

में आज अलका ने पेश किया है उससे लगता है, अब तक वह सब आँखों की स्पष्ट रोशनी के अभाव में कीड़ा जैसा महसूस हो रहा था। आज आँख में उँगली डालकर अलका ने दिखा दिया कि वह कीड़ा नहीं, तक्षक है। छिः छिः छिः !

दल के लोग तब भी मजलिस के इर्द-गिर्द थे। शायद कुछ लोग डेरे पर चले गये हैं। उसके मन की आंखों में रात के यात्रादल के डेरे की तसवीर तैर उठी। डेरे के बरामदे पर अब तक स्टोव जलाकर विभिन्न फिलट बैठ चुका होगा और रात का भोजन तैयार कर रहा होगा। चुपचाप थका शरीर ले कोई आटा गूंध रहा होगा, कोई स्टोव जला रहा होगा, कोई चाकू लेकर सब्जी काट रहा होगा। रोटी, पराठा या खिचड़ी, जिसका जैसा फिलट है, बनायेगा। गोरा बाबू और उसकी रसोई शिवनन्दन पकाता है—पूरी, सब्जी और अण्डा। अण्डे के बगैर गोरा बाबू का काम नहीं चलता। शराब पियेंगे। प्ले के दरमियान कई बार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में पी चुके हैं—अब तब तक पीने का दौर चलेगा जब तक नशा न आ जाये। उसके अनुपात को मंजरी को ही रोकना पड़ता है। कभी छीन लेना पड़ता है, कभी झगड़ा करना पड़ता है, कभी अभिमान करना पड़ता है। वह भी अभिनय ही है! लेकिन अब अभिनय बरदाश्त नहीं हो रहा है। मजलिस के अभिनय से परिश्रम की क्लान्ति होती है, शरीर टूट जाता है, फिर भी स्वयं को खींचकर ले जाना पड़ता है। वह बरदाश्त होता है, और अभिनय के आनन्द के कारण ही बरदाश्त होता है। मगर इस सहज जीवन में अपने एकान्त प्रियजन के साथ अभिनय चलता है तो वह जीवन को ही असत्य बना देता है। उफ्, यह उसकी कैसी सजा है! हर रोज अभिनय के बाद उसे इस सच्चाई का अहसास होता है, लेकिन आज के जैसे निष्ठुर रूप में उसे इसका अहसास नहीं हुआ था।

थके कदम रखती हुई वह डेरे की तरफ जा रही थी। कोलियारी के बाबुओं के मेस के एक बैरेक में उन लोगों का डेरा है। पीछे की तरफ यात्रादल की मजलिस का हो-हल्ला अब भी खत्म नहीं हुआ है। चारों तरफ से लोगों के जत्थे अपने-अपने डेरे की ओर चले जा रहे हैं। थोड़ी देर पहले से ही पिटमाउथ में एक बड़ी-सी बिजली की बत्ती जल रही है। पम्प चलने की आवाज हो रही है। साहब कम्पनी की बड़ी कोलियारी है—खदान के नीचे से सड़क के किनारे तक रोशनी जल रही है। अँधेरी रात में चारों तरफ रोशनी जल रही है। ठहरी हुई रोशनी, बिजली के बल्ब। पत्थर और ईंट के रोड़े की बनी सड़क है। बीच-बीच में दायें-बायें उसकी शाखा—प्रशाखा निकल गयी है। वे लोग एक लम्बे बैरेक के पास पहुँच गये थे। मंजरी ठिठककर खड़ी हो गयी और बोली, 'यह कहाँ चले आये ?'

शिवनन्दन बोला, 'यही तो हम लोगों का डेरा है।'

मंजरी भौंह सिकोड़कर बोली, 'तू महा पंडित है! यहाँ बैरेक और मकान दोनों एक जैसे हैं। कहाँ आना था और कहाँ आ गया। लौटो।'

'अरे बाप ! क्या कहूँ ! यही हम लोगों का डेरा है। वह तुम्हारा कमरा है। वही।' उसने अपने हाथ के टॉर्च की रोशनी निकट के एक दरवाजे पर फेंकी। दरवाजे पर लिखा है—मेस मैनेजर।

लगता है, शिवनन्दन ने गलती नहीं की है। क्योंकि मेस के एक बैरक के चार कमरे उन लोगों को डेरे के तौर पर दिये गये हैं और उनमें से एक कोने के छोटे कमरे के दरवाजे पर मेस मैनेजर लिखा हुआ है। वही कमरा उसके और गोरा बाबू के लिए रखा गया है। उसके बादवाला अपेक्षाकृत बड़ा है। उसमें बाकी औरतें टिकी हैं। उसके बाद एक बड़ा हॉल है। वहाँ मँझले तबके से निचले तबके तक के रंगकर्मी टिके हैं। उसके बगलवाले मँझले आकार के कमरे में बाबू ऐक्टर लोग टिके हैं। यही तो, हाल के तख्तों को बाहर निकाल सामने की खुली जगह में रखा गया है। बड़े हॉल में लोग-बाग फर्श पर एक-दूसरे से सटकर, एक-दूसरे की ओर पाँव रखकर, कतारबद्ध होकर पड़े रहेंगे। लेकिन इस तरह वीरान क्यों है ? दल के लोग कहाँ हैं ? पूरे बरामदे पर गिलट में रसोई कहाँ पक रही है ?

इसीलिए मंजरी ने कहा, 'लगता है कि यही मकान है। लेकिन इन लोगों को हुआ क्या ? सब लोग कहाँ गये ?'

'मेडल-वेडल देगा। बाबू लोग तारीफ कर रहे हैं, बातें कर रहे हैं। सब लोग वहीं गये हैं। तुम तो देख आयी।'

'भारी मुसीबत है ! रसोई पकायेंगे ? खाना कब खायेंगे ? सोयेंगे कब ?'

शिवनन्दन बोला, 'आज नायक-पक्ष की ओर से न्योता है। सब लोग पूरी-कचौरी माँस खायेंगे।...'

ओह, मंजरी भूल गयी थी। उसने एक लंबी साँस ली। मन की अशान्ति के कारण सब कुछ भूल रही है। आज नायक-पक्ष की ओर से दल को निमंत्रित किया गया है। खिलायेंगे। और-और साल नहीं खिलाते थे, इसी वर्ष यह नया इन्तजाम हुआ है। वह भूल गयी थी। अली चौधरी ने आकर उसके मन को चंचल व बेचैन बना दिया है। गलती हुई है, उसे रखना उसकी गलती हो गयी है। आज उसका सारा सन्देह दूर हो गया। वह समझ नहीं सकी थी कि अली चौधरी पूरे दल को उछृंखल बना देगी।

शिवनन्दन ने घर का ताला खोला और स्विच दबाकर रोशनी जला दी।

कमरे के अन्दर दो तख्तों पर दो बिस्तर हैं। एक छोटी-सी मेज। उस पर शिवनन्दन ने उन लोगों की जरूरी चीजों को सहेज कर रखा है। कोने में दोनों सूटकेस अगल-बगल रखे हुए हैं। इसके अलावा बेंत का बास्केट, एक मजबूत टीन का ट्रंक और कितनी ही छोटी-मोटी चीजें। प्रवास में यात्रादल के घुमक्कड़ी जीवन के लिए जितनी वस्तुओं की आवश्यकता पड़ती है, उनसे कुछ ज्यादा ही।

'बाबा !' कहकर वह बिस्तर पर लेट गयी। पेट के बल लेट, तकिये में मुँह

दबाकर बोली, 'मेरा सिर दर्द कर रहा है शिवनन्दन। तू रोशनी बुझाकर दरवाजा भिड़ा दे और बाबू को जाकर बुला ला। कहना, मैं बुला रही हूँ। जहाँ खाना बन रहा है वहाँ जाकर उनके लिए खाना ले आना। वरना रीतू बाबू, बाबुल बोस के साथ हो सकता है नशे में चूर हो जायें।'

'तुम्हारा भी खाना ले आऊँ? बाबू यहाँ खाना खायेंगे तो तुम किस तरह खाना खाने जाओगी? या फिर तुम्हारा खाना बना दूँ? मेस में तो इतने सारे लोगों का खाना बनेगा। तुम वह खाना खा सकोगी?'

मंजरी उदास हँसी हँसकर बोली, 'तू मेरे लिए इतना सोचता है शिवनन्दन! इतना मत सोचा कर।'

'तुम्हारी दादी मुझे रास्ते से उठाकर ले आयी थी। मैं बीमारी से मर रहा था, मुझे डॉक्टर को दिखाया, अपने हाथ से सेवा की। मैंने बचपन से पालकर तुम्हें बड़ा बनाया है। वह सब बात तुम मुझसे क्यों कहती हो? मत कहो। मैं तुम्हारे लिए कुछ तैयार कर देता हूँ।'

'मैं कुछ भी नहीं खाऊँगी। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। तुझसे जो कहा है वही कर। जा, बाबू को लेते आ।'

शिवनन्दन बिजली के स्विच पर हाथ रखने जा ही रहा था कि तभी बाहर से किसी ने फँसी हुई आवाज में पुकारा, 'मंजरी माताजी, कमरे में हैं?'

'गोपाल मामा!'

'हाँ माताजी।'

'आइये, कमरे के अन्दर आइये। क्या हुआ?'

कमरे के अन्दर दाखिल हो गोपाल घोष ने बिना भूमिका के फँसी हुई आवाज में कहा, 'मुझसे अब नहीं हो सकेगा। इस तरह का हुआ तो बीच रास्ते में मृदंग, तबला, हारमोनियम, वेश भूषा बेचकर कलकत्ता लौट जाना पड़ेगा। मुझे आप हटा दें। मैं खुद ही इस्तीफा दे रहा हूँ।'

मंजरी उठकर बैठ गयी। उत्कण्ठा के साथ पूछा, 'किसने क्या किया? क्या हुआ है?'

गोपाल बोला, 'नायक पक्ष निमंत्रण देकर खिला रहा है। दल के लोग खुराकी के बारे में तकाजा कर रहे हैं। रात में पूरे दल की रसोई का झमेला रहता है। इसके अलावा इतनी रात में सबको चावल बर्दाश्त नहीं होता। कोई रोटी खाता है, कोई चिउड़ा, कोई फरकी—जो व्यक्ति जो कुछ खायेगा उसकी खुराकी देना पड़ेगा। है न यह बात?'

उसके चेहरे की ओर देखकर मंजरी बोली, 'वे लोग क्या आज की खुराकी की भी माँग कर रहे हैं?'

'वे लोग करें तो फैसला मैं कर सकता हूँ। यात्रादल की मैनेजरी पैंतीस बरसों तक कर चुका हूँ। सिर के बाल सफेद हो गये हैं। वह सब मैनेज करना जानता हूँ, कर भी सकता हूँ। उन लोगों के हाँ में हाँ मालिक मिलाये तो मैं क्या कर सकता हूँ ?'

'इसका मतलब ?' दूसरे ही क्षण बात मंजरी की समझ में आ गयी और उसने कहा, 'उन्होंने कहा है क्या ?'

'तो फिर आपके पास आता ही क्यों ?'

'रीतू बाबू के साथ शराब का दौर चल रहा है ?'

'रीतू बाबू, बाबुल बोस, नाट्ट बाबू कौन नहीं है ? सब लोग बेहद खुश हैं। दो-दो मेडल मिले हैं। और क्या चाहिये ! आकर वेश-मन्दिर में ही बैठ गये। मौका देखकर पुन्टे चाकी, सुरी मित्तिर, चना संतरा वगैरह ने हंगामा मचाना शुरू कर दिया, 'नायक पक्ष न्योता देकर खिला रहा है मगर वे लोग खुराकी का पैसा नहीं काट रहे हैं तो फिर दल ही हम लोगों की खुराकी क्यों काट लेगा ?' चाणक्य जैसी बुद्धि है न उनकी ! बस, उस अली चौधरी को अगुआ बनाकर वे लोग मालिक के पास पहुँच गये। एक तो अली चौधरी, उस पर नाचकर उसने बाजी मार ली है। उसका चेहरा लटका है, क्योंकि आपने उसे फटकारा था। उसने भी जाकर कहा, यह कैसा अन्याय हो रहा है ! बस तत्क्षण मुझे पुकारा गया, गोपाल बाबू, इन लोगों की खुराकी दे दे। बात तो ठीक ही कही है। मैं क्या बोलूँ ! जरा चुप रहने के बाद मैंने कहा, ठीक है, मंजरी माताजी से एकबार पूछ आता हूँ। सो बाबुल बोस ने शराब का गिलास रखकर मुझसे कहा, आर यू ए जिराफ ? मैंने कहा, मतलब ? तो इस पर बोला, गोरा बाबू पांच फीट आठ इंच लम्बे हैं—खाँटी उच्चैःश्रवा हॉर्स। इस हॉर्स को फलांग कर आप मंजरी देवी के 'फुट' के तले घास चरिएगा। इसीलिए साफ-साफ पूछ रहा हूँ, आप क्या जिराफ हैं ? आपका गला क्या आठ फीट लम्बा है ? माँ मंजरी, मैं गोपाल घोष, पैंतीस साल के दौरान यात्रादल में बहुत सारे जन्तु देख चुका हूँ, उन जन्तुओं को लेकर कारोबार चला चुका हूँ। बाबुल बोस कल का छोकरा है—रोहू-कतला मछली नहीं, बल्कि झिंगा मछली। उसे मैं सबक सिखा सकता था। मगर गोरा बाबू खुद हाजिर हो गये। मैंने कुछ नहीं कहा। मैं उसके चेहरे की ओर ताक ही रहा था कि उन्होंने हँसते हुए उसके सिर पर होले से स्नेह की एक चपत लगायी और बोले, बातूनी कहीं के। वाचलता के बगैर बात नहीं कर सकते। उसके बाद मुझसे कहा, जो कुछ कहने को होगा, मैं उनसे कहूँगा—आप खुराकी दे दें। आज सबने इतना अच्छा पार्ट किया है, दल का सुनाम हुआ है, इसलिए आज जो कुछ कह रहे हैं, दे दीजिये। मैं उठकर चला आया। अब आपको क्या करना है, बताइये। तब हाँ—'

जरा खामोश रहने के बाद फिर बोला, 'तब हाँ, यह सब देने से इसके बाद मैं दल नहीं चला सकूँगा।'

मंजरी फर्श की ओर ताक रही थी और बातें सुन रही थी। सुनते-सुनते इच्छा हो रही थी कि वह चिल्ला उठे। उसका क्लान्त-थान्त, तिक्त और विरक्त मन वैशाख के सूखे पुआल के ढेर की तरह असहनीय अस्वस्तिकर उत्ताप से तप्त हो चुका था। गोपाल घोष के चुप हो जाने के बावजूद वह खामोश ही रही।

गोरा बाबू, अलका चौधरी, बाबुल बोस ! गोरा बाबू से पूछताछ कर ली जायेगी। यह कोई पहला अवसर नहीं है, पहले भी पूछताछ की है और अबकी भी कर ली जायेगी। अलका और बाबुल बोस को आज ही दल से भगा देने की इच्छा हो रही है। लेकिन कल ही मजलिस जमने वाली है—यहाँ से बीस मील दूर कच्छी लोगों की कोलियारी में। अलका दल की कुमारी हीरोइन है, बाबुल बोस प्रमुख कॉमिक ऐक्टर। वे हर नाटक में हैं। इसके अलावा एग्रीमेन्ट है, आठ महीने का एग्रीमेन्ट। यात्रादल का यही नियम है। वह क्या करे ? यात्रा का दल विचित्र चरित्र वाले लोगों का दल होता है। इन लोगों का नाम ऐक्टर नहीं, खाते में लोगों का नाम आसामी रहता है। घर रहने के बावजूद ये लोग घुमक्कड़ होते हैं, किसी-किसी को घर में रोटी-भात मिल जाता है, फिर भी ये लोग 'हाय भात, हाय रोटी' करते रहते हैं। रात इन लोगों के लिए दिन होती है, दिन रात होता है; इनके जीवन में नाटक नहीं होता, नाटक करके ये लोग जीवन जीते हैं। इन लोगों में से कौन क्या करता है, देखकर भी यह अनदेखा कर देना चाहिये; कौन क्या कहता है, सुनकर भी अनसुना कर देना चाहिए। दल उसका अपना है, क्रोध में आने का उपाय नहीं है। वह जो अलका चौधरी है, जिसने नाच में नग्न हो जाने का अभिनय किया, उसके जीवन में मंजरी ने जीवन का नाटक देखा है। उसने बाहर से प्रवीर वेशधारी गोरा बाबू की आँखों की भूख को देखा है। मोहिनीमाया वेशधारिणी अलका की आँखों की दृष्टि ही नहीं देखी है, होंठों की तिरछी मुसकराहट में जीवन का संकेत भी देखा है। यह कैसी यातना है ! कैसी लाचारी ! यह भी उसे बरदाश्त करना होगा !

गोपाल बोला, 'कहिये, आप क्या कह रही हैं ?'

मंजरी ने सिर उठाया—गोपाल को लगा, उसके आँख-मुँह, दबे हुए क्रोध, विरक्ति और दर्द से निष्ठुर जैसे हो गये हैं। दूसरे ही क्षण लगा, नहीं, निष्ठुर नहीं हैं। लगता है, मंजरी की आँखों का बाँध तोड़ अभी तुरन्त आँसू निकल आयेंगे। मंजरी ने अपना सिर झुका लिया, 'क्या कहूँ ? बाबुल बोस और अली चौधरी को मुझे रखने की इच्छा नहीं थी। रखा आप लोगों ने।'

गोपाल ने स्वीकार किया, 'हाँ, सो रखा है माताजी। गलती हो गयी है। समझ नहीं सका था।'

'मैं समझ गयी थी।' उसने एक लम्बी साँस ली।

'रखने का आग्रह गोरा बाबू में अधिक था। मैंने हामी भरी थी।'

'सो तो रहेगा ही गोपाल दादा। चितपुर रोड में तुम्हारी जिन्दगी बीती है, महिला यात्रादल में इतने दिनों तक मैनेजरी कर चुके हो। मगर तुम समझ नहीं

सके। गोरा बाबू बिलकुल जवान हैं, काफी नाम है। शराब पीते हैं, हीरो का अभिनय करते हैं। ऐसी खूबसूरत कुमारी हीरोइन—भले घर की लिखी-पढ़ी लड़की है—'

यह बात शिवनन्दन कह रहा था। लेकिन मंजरी ने उसे बात पूरी नहीं करने दी। उसने डाँटा, 'शिवनन्दन!'

शिवनन्दन अब तक मंजरी के भोजन का इन्तजाम कर रहा था। थोड़ी-सी आलू की सब्जी और पूरी बना देगा। मंजरी के घर में ही वह बूढ़ा हो चुका है। उन लोगों के तीन स्तरों को देख चुका है—मंजरी की दादी, उसके बाद माँ और उसके बाद मंजरी को। मंजरी की दादी नामी कीर्तनिया थी। उसकी माँ भी कीर्तन करती थी। यही उन लोगों का बुनियादी और एकमात्र पेशा था। वे लोग मछली खाती थीं मगर मांस, प्याज, अण्डा नहीं खाती थीं। उन लोगों के रसोई घर में इन चीजों का प्रवेश भी नहीं था। मंजरी की भी बचपन से यही आदत है। मांस-प्याज की बू रहे तो वह खाना नहीं खा पाती है। निमन्त्रण की मजलिस में मांस-प्याज वगैरह रहता है। मंजरी न तो वहाँ जाती है, और न खाना खाती है। निराहार रह जाती है। यह चीज उससे बरदाश्त नहीं होती। तबीयत खराब होना मंजरी का बहाना है, असल में उसका मन ठीक नहीं है, यह बात वह समझता है। इसका कारण भी उसे मालूम है। मालूम होने के बावजूद वह अब तक चुप था—उन लोगों की बात-चीत के दौरान वह एक कोने में बैठा चाकू से आलू काट रहा था। खुराकी का जिक्र छिड़ने पर वह कुछ नहीं बोला था, मगर अलका का जिक्र होते ही वह चुप नहीं रह सका। अलका को दल में लेने के समय वह भी आनाकानी कर रहा था। मंजरी से ही कहा था। उसकी आपत्ति थी, 'यह क्या कर रही हो? यह गृहस्थ घर की लड़की है, उस पर शादी भी नहीं हुई है। इस छोकरी को लेकर—।' उस दिन मंजरी ने उसे बोलने से रोक दिया था। कहा था, 'यह सब बात मत करो शिवनन्दन! वे और गोपाल मामा जब कह रहे हैं कि दल के लिए अच्छा होगा, नाम फैलेगा, तब देख लेना चाहिये। अगले साल न लेने से भी काम चल जायेगा।' आज भी उसने डाँटकर चुप करा दिया। लेकिन आज शिवनन्दन चुप नहीं हुआ। बोला, 'मुझे धमकाने से क्या होगा? धमकाना है तो उस आदमी को धमकाओ। अपने मालिक को टाइट करो। तुमने उनसे शादी की है, यह अच्छी बात है, धर्म की बात है। लेकिन वह आदमी स्वामी का अपना धर्म नष्ट न करे, यह देखना भी तो तुम्हारा धर्म है।'

मंजरी सिर झुकाकर सोच रही थी कि वह क्या करे। गोपाल घोष की बात के सन्दर्भ में ही सोच रही थी। खुराकी माँगकर उन लोगों ने अन्याय नहीं किया है। उन लोगों की दलील भी ठीक है—नायक पक्ष के जो लोग बयाना करके ले आये हैं वे ही खाना खिला रहे हैं। यह खिलाना आदर का भोज है, इसके लिए बयाने के अनुसार उन लोगों को रकम में से कोई कटौती नहीं की जाये। खुराकी का पैसा

पावने में ही है । । खुराकी का वह पैसा दल के लोगों को नहीं दिया जायेगा तो वह मालिक का हो जायेगा । वही बल्कि अन्याय पावना होगा । मगर जिस तरह अली को अगुआ बनाकर उन लोगों ने अपना दावा पेश किया है, यही आपत्ति का विषय है । अलका आज जिस तरह स्वेच्छा से नाची है वह इसमे भी ज्यादा खतरनाक है । दर्शकों के बीच से मजलिस में आते-जाते समय दर्शकों की कुछेक टिप्पणियाँ उसके कान में आयी थी । उस नृत्य और नर्तकी के सम्बन्ध में वे लोग अश्लील उल्लास प्रकट कर रहे थे । वेश-मन्दिर में बैठे दल के लोगों ने भी इसी तरह की राय जाहिर की थी । गोरा बाबू ने भी की है । उसकी बगल में कुरसी पर बैठ वेइन्तहा खुशियों में करीब-करीब अश्लील राय ही जाहिर की थी । शराब के नशे और उल्लास की अधिकता के कारण भूल गया था कि मंजरी उसकी बगल में बैठी हुई है । चालाक गोरा बाबू ने दूसरे ही क्षण होश में आकर उस गलती को सुधारने की कोशिश की थी । कहा था, 'मतलब यह है कि उस लड़की ने ज्यादती की है । यानी चाहे लाख हो, है तो बच्ची ही । सब हाँ, जमा दिया है ।' मंजरी के मन में यह सब विचार अव्यवस्थित रूप में किसी बिल में आपस में गुँथे कुछ साँपों की तरह टेढ़े-तिरछे चक्कर काट रहे थे । शिवनन्दन की बातें सुनकर भी जैसे नहीं सुन रही थी । जैसे ऊपर से फेंके गये ढेले निशाने से चूककर इधर-उधर गिर रहे थे, मगर आखिरी बात ने उसे चोट पहुँचायी । उसने चौंक कर सिर उठाया और क्रुद्ध स्वर में कहा, 'तुम्हें मुझे धरम नहीं सिखाना है शिवनन्दन ! तू जैसा है वैसा ही रह । जो कर रहा है, वही कर । तू यह सब क्या कर रहा है ?'

'तुम्हारे लिए खाना पका रहा हूँ । इसके अलावा और क्या करूँगा ?'

'नहीं, नहीं पकाना होगा । तुमसे मैंने कहा नहीं था ?'

'सो नहीं होगा, कुछ न कुछ तुम्हें खाना ही होगा ।'

'नहीं ।'

यह कहकर वह उठकर खड़ी हो गयी । उसकी दृष्टि में जैसे छुरे की धार खेल रही हो । अचानक उसने जैसे असली सत्य को समझ लिया है जो अपने आप बाहर निकल आया है । लिखी-पढ़ी भले घर की लड़की इस टेढ़े-मेढ़े रास्ते से अपमान और तिरस्कार का प्रतिशोध लेने को कमर कसकर खड़ी हो गयी है । हुँ ! गोपाल घोष से बोली, 'चलिए, मैं चलती हूँ । जो कुछ करने को होगा, मैं जाकर करूँगी । चलिये ।'

वह कमरे से बाहर निकल आयी । चाहे जो हो, वह कुछ न कुछ अन्तिम निर्णय करेगी । क्या कहेगी ? कहेगी—'दल को तुम अपने हाथ में लो । चलाओ । मैं कलकत्ता लौटकर जा रही हूँ—कल तड़के या सवेरे । पहली ही गाड़ी से । तुम्हारे ही लिए मैंने दल का गठन किया था, अपने लिए नहीं । तुम इसे सँभालो ।'

चार

गोरा बाबू ने प्रमत्त हो अली का ही समर्थन किया है। गोपाल ने कहा था कि वह मंजरी से पूछेगा। मगर यह बात उसे बरदाश्त नहीं हुई। अगर वह यह बात मान लेता तो इसका मतलब अली के सामने यह मानना होता कि प्रोप्राइट्रेस का दर्जा उससे बड़ा है। मानती हूँ कि बड़ा है। मंजरी तो तुम्हारी अनुगता-अनुगामिनी ही है। लेकिन दल ? दल के स्वार्थ का तुमने खयाल नहीं किया। दल तो तुम्हारे ही लिए है। मंजरी वेश्या की लड़की होने के बावजूद तुम्हारी रखैल नहीं है। तुम उसे पत्नी के रूप में मानो, चाहे न मानो, मगर वह तो जानती है कि तुम उसके पति हो।

डेरे से निकल रास्ते पर आने के बाद उसे कुछेक बातें याद हो आयीं। जिवनन्दन डेरे पर ताला लगा रहा है। विपिन नौकर बरामदे पर सो रहा है। कमरे के अन्दर सिर्फ सरा सामान ही नहीं, ट्रंक के अन्दर कैश बॉक्स में दल का रुपया-पैसा भी है। चारों तरफ अँधेरा है। शायद शुक्ल पक्ष की षष्ठी या सप्तमी तिथि है। लेकिन चाँद डूब चुका है। गहरा अँधेरा छाया है, आकाश में नक्षत्र झिलमिला रहे हैं। लेकिन उनसे रोशनी नहीं हो रही है। कोलिमारी के इर्द-गिर्द बिजली की बत्तियाँ जल रही हैं—इस पर भी अँधेरा ठहरा हुआ है। मंजरी के मन में भी क्रोध या क्षोभ या कि दुःख—इनमें से कोई एक ठहरा हुआ है।

इस यात्रा दल की नींव उसने सचमुच ही गोरा बाबू की खातिर डाली थी। गोरा बाबू सचमुच ही उसका पति है। ईश्वर को साक्षी बना विधि-विधान से उन लोगों की शादी हुई है। लोग-बाग हँसते हैं, व्यंग्य करते हैं – हो सकता है कि गोरा बाबू भी मन ही मन व्यंग्य करते हों कि देह-व्यवसायिनी की लड़की, उससे शास्त्रमत से विवाह ! पहले कभी उसको उन बातों की याद नहीं आयी थी। आज लग रहा है कि गोरा बाबू शायद मन ही मन स्वयं से इस तरह की बातें करता है। करे। वह नहीं करती है। उसकी माँ भी नहीं करती थी। मंजरी ने गोरा बाबू को प्यार किया था और वह प्यार कैशोर में किया था। अनाघ्रात फूल की तरह ही तब वह किशोरी थी और कुल मिलाकर यौवन की देहरी पर कदम रखे थे।

मंजरी की माँ का नाम तुलसी था। उसकी माँ—मंजरी की दादी विख्यात कीर्तनिया थी। उसके गीतों का रेकार्ड किया गया था। वह ब्राह्मण की बाल-विधवा लड़की थी। खूबसूरत थी। बाप गायक था। कीर्तन के दल के मूल गायन का अधिकारी। उसी दल के एक नौजवान सहकारी गायक के मोह से उसमें कमजोरी आ गयी थी। परिणाम स्वरूप मंजरी की माँ गर्भ में आयी। उस जमाने का समाज

था। एक दिन वह घर से भाग गयी। उस सहकारी गायक ने कुछ दिनों तक उसके साथ घर-गृहस्थी बसाने की कोशिश की थी और अपनी जिम्मेदारी का पालन किया था। लेकिन वैसा उसने न तो अपने गाँव में किया था और न ही किसी दूसरे गाँव के समाज मे। शहर चला आया था। युवक के पास थोड़ी-बहुत रकम थी। राधारानी भी कुछ ले आयी थी। कुछ महीने तक उससे काम चलता रहा। जितने दिनों तक चलता रहा, उतने दिनों तक मंजरी का दादा रहा। उसके बाद वह लापता हो गया। गीत गाकर उपार्जन की चेष्टा करने से भी कुछ नहीं हुआ—गाँजे का नशा ही मूल लक्ष्य हो गया। उसके लापता हो जाने से राधारानी को घर से रास्ते पर आकर खड़ा होना पड़ा। तब वह आसन्न प्रसवा थी। रास्ते से उसे एक देह-व्यवसायिनी मुहल्ले की मौसी अपने घर ले गयी थी। उन दिनों राधारानी चन्दन नगर के गंगाघाट पर घूँघट खींच हाथ फैलाये बैठी रहती थी। सामने एक अँगोछा बिछाकर रखती थी। गंगा-स्नान के पुण्यार्थियों में से कोई उस पर चावल और कोई पैसा डाल जाता था। उसकी खूबसूरती पर मौसी की नजर पड़ी। उससे मीठी-मीठी बातें कर उसके दुःख की बातों का पता लगा लिया था और भविष्य की उम्मीद दिखाकर उसे अपने घर ले आयी थी। राधारानी ने अलबत्ता शुरू में तमाम बातें नहीं बतायी थीं। बता नहीं सकी थी। मगर मौसी के घर आकर सब कुछ बता दिया था, कुछ छिपाकर नहीं रखा था। उसी घर मे मंजरी के माँ का जन्म हुआ था। उसके बाद जीवन के एक पंकिल अध्याय की शुरुआत हुई। दादी कहती, पाप का प्रायश्चित नरक-भोग है। लेकिन उसके बाप के नाम-कीर्तन के पुण्य, उसके यौवन-काल की गोविन्द-सेवा और गोविन्द-अनुराग की सुकृति के फलस्वरूप नरक का दरवाजा अकस्मात् खुल गया।

शिवनन्दन ने ताला बन्दकर उसे खींचकर देख लिया और [illegible] उतरकर कहा, 'चलो।'

गोपाल सामने है, बीच में मंजरी और सबसे पीछे शिवनन्दन। गोपाल बोला, 'देखकर चलियेगा। बड़ी ही पथरीली जगह है और उस पर कोयले की खदान।'

शिवनन्दन बोला, 'मैं पीछे से टार्च की रोशनी फेंक रहा हूँ।'

मंजरी कुछ भी नहीं बोली। उसके क्षुब्ध मन के अन्दर वही चिन्ता जैसे उसकी वास्तविक लज्जा के चारों तरफ एक आवरण डाले है। रास्ते पर चलने पर भी वह जैसे गोपाल के खिंचाव और शिवना के तकाजे से चल रही थी। उसकी आँखें भी रास्ते पर न थी। आँखें खुली ही थी। मगर उसकी दृष्टि सुदूर अतीत की ओर चली गयी है। उसकी माँ यह सब बात उससे कहती और वह सुनती थी। माँ अपनी माँ की बात बताती थी।

दादी कहती, 'बिटिया, उस पाप के जीवन में गोविन्द का नाम लेती थी—नरक कुण्ड में पाप करते-करते। लेकिन उसका फल भी मिल गया।'

लगभग चालीस वर्ष पहले के चन्दन नगर की देह-व्यवसायिनों का मुहल्ला। उस समय वहाँ निहायत देह को लेकर ही कारोबार चलता था। उसी बीच एक दिन वहाँ कलकत्ते का एक पैसे वाला आदमी आया। कलकत्ते में ही उसके रूप-गुण का नाम सुनकर आया था। उसका रूप देखकर मुग्ध हो गया और बोला, 'नाच-गाना नहीं जानती हो? ऐसी खूबसूरती!'

राधारानी सिर झुकाये बैठी थी—हाँ-ना कुछ नहीं कहा। उसके बाद बहुत दबाव डालने पर कहा था, 'नाचना नहीं जानती हूँ, थोड़ा-बहुत गीत-गाना जानती हूँ और वह भी कीर्तन का गीत।'

'जानती हो? गाओ तो सही।'

उसने मीठे स्वर में गाया था। उसका रूप ही नहीं, गले की आवाज भी बहुत सुन्दर थी। विरासत के तौर पर मिली थी। सिर्फ मीठे स्वर में ही नहीं गाया, बल्कि कीर्तनिया बाप की बेटी पदावली कीर्तन गाते-गाते रो दी—

चण्डीदास कहे सुनो विनोदिनी सुख-दुख हैं दो भ्राता
सुख से करे प्रीत जो दुख भी पास उसी के आता।

उसी गीत के कारण उसे उस दिन वहाँ से मुक्ति मिली। वही पैसावाला आदमी उसे कलकत्ता ले आया था। शुरू में प्रगाढ़ प्रेमवश उसे बहुत-कुछ दिया। उसके बाद नयी औरत की खोज में निकल पड़ा था। राधारानी को पुनः नरक में उतरना पड़ा। फिर भी चन्दन नगर जैसी हालत न थी। फिर एक नया आदमी आया। वह भी धनी और प्रौढ़ था। पत्नी के मरने के बाद राधारानी जैसी एक औरत की तलाश में था। उसने राधारानी से कहा था, 'तुम विश्वासघात मत करना। मैं तुम्हें छोड़ नहीं दूँगा।' राधारानी ने विश्वास रखा था, उसने भी अपने वचन का पालन किया था। कहा था, 'तुम्हारी आवाज इतनी मधुर है, तुममें इतनी भक्ति है। तुम कीर्तन के दल की स्थापना करो। जिन्दगी में तुम्हें किसी के भरोसे नहीं रहना पड़ेगा। उसी आदमी ने उसे गड्ढे से ऊपर उठाया था। अपने घर पर पहली मजलिस बिठाकर कलकत्ते के खास-खास लोगों को गीत सुनवाया था। और उसी से उसका नाम और ख्याति फैल गयी थी। धीरे-धीरे मकान भी बन गया था। केवल गायिका की हैसियत से नहीं, भक्तिमती शुद्धाचारिणी की हैसियत से भी उसे यथेष्ट सम्मान मिला था। इसीलिए उसने अपनी लड़की का नाम तुलसी रखा था। जब वह धनी व्यक्ति मर गया तो राधारानी ने विधवा का वेश धारण कर लिया। दादी ने जीवन भर विधवा के आचरण का भी पालन किया था। अपनी लड़की को भी गीत सिखाकर दल की उत्तराधिकारिणी बनाया था। अपने जीवन की बात को ध्यान में रखकर अपनी ही तरह लड़की को भी एक व्यक्ति की देख-रेख में रखने की कोशिश की थी।

इसके अलावा उपाय ही क्या था ? अपने लोगों का एक समाज अवश्य था, लेकिन उस समाज में लड़के की अपेक्षा लड़की को अधिक स्नेह मिलता था। लड़की भविष्य जीवन का भरोसा, सम्बल वगैरह सब कुछ थी। लड़के गँवार और दुश्चरित्र होते थे। साधारण विद्यालय में उन्हें स्थान नहीं मिलता था। कोई तबला वादक होता था, कोई हारमोनियम वादक और कोई पान का दुकानदार। साथ ही गैर कानूनी शराब भी बेचता था। कोई कोकन बेचता। कोई गुण्डा होता था। सभी नशे का सेवन करते थे। जो लोग गा-बजा सकते थे वे शौकिया थियेटर के किराये पर खटने वाले डांसिंग बैच की सखी या यात्रादल की सखी बनते थे। बड़े होने पर जिन लोगों का गाने के लायक गला होता, चेहरे पर लावण्य रहता, वे लोग पहले कुमारी हीरोइन बनते—उसके बाद हीरोइन। या फिर छोटा-मोटा पार्ट करते थे। उम्रदार हो जाने पर या तो भिखमगे बन जाते या फिर जुआरी।

जो औरतें पतिता होती थीं, उनके लड़कों के भाग्य में अँधेरे लोक का चिर निर्वासन बदा रहता था। पैदा होते ही कितने लड़के कूड़ेदान में दबकर मर चुके हैं, इसका कोई हिसाब नहीं। आज के जमाने में, फिर भी कोई न कोई रास्ता मिल जाता है लेकिन उस जमाने में पतिता के पुत्र से बढ़कर खोटा किसी का भाग्य नहीं होता था।

इसलिए जो औरतें अपनी लड़की के लिए शान्त और निरापद जीवन की तलाश करती थीं वे किसी धनी-मानी व्यक्ति के पुत्र की तलाश में रहती थीं, जो उसे अपनी निजी सामग्री के तौर पर स्वीकार कर सके। लेकिन वैसे लोग मिल नहीं पाते थे। नित्य नये मधु के लिए तृषित धनी-मानी व्यक्तियों के पुत्र कुछ महीनों तक—कोई-कोई एक-दो वर्ष, कोई-कोई उससे भी कुछ अधिक समय तक—अपनी सामग्री के तौर पर रख लेते थे और अकस्मात् एक दिन उसे ठुकराकर नयी सामग्री के पास चले जाते थे। जब वे निजी सामग्री के तौर पर ग्रहण करते तो मकान किराये पर लेते थे, दरवान रखते थे। असबाब देते—कपड़ा लत्ता और गहना ढेर सारा देते। अभागिन लड़कियाँ स्वयं को सौभाग्यवती समझती। उसके बाद जिस दिन विदा हो जाता उस दिन उदास चेहरा ले अपने मुहल्ले में लौट आती और एक मकान में महफिल जमाती थी। देह-व्यवसाय के दौरान हर पहर नया कोहबर सजाकर रात बिताती। इतना जरूर है कि बहुत-सी लड़कियाँ बचपन से कुछ देख-सीखकर, स्वयं अपने नारीत्व को तराजू पर तौल, सोने के मूल्य में खरीद-फरोख्त करने की पद्धति की तालीम लेती थी। मन को भी उसी तरह तैयार कर लेती थी। छल-प्रपंच से मोहग्रस्त सौन्दर्य-लोभी मर्दों को पैसे-पैसे का मुँहताज बना देती थी और आज भी बनाती हैं। उस जमाने में और अधिक देते थे। इसलिए उस जमाने में राधारानी साग्रह एक ऐसे व्यक्ति की तलाश में थी, जो उसे अपने चरणों-तल स्थान देगा, ठोकर मार कर नहीं भगायेगा—पुरानी हो जाये तो भी लात मार कर नहीं भगायेगा। और अपनी लड़की को कीर्तन सिखाने के साथ-साथ इस बात की भी तालीम दी थी कि एक व्यक्ति

अगर ठुकरा दे तो दूसरे की वह तलाश कर सके। कहा था, 'मेरे दुर्भाग्य का आगमन तेरे चलते ही हुआ। तू पेट में आयी और मुझे बाप का आश्रय छोड़ना पड़ा। उसके बाद तेरा बाप मुझे छोड़कर भाग गया। उसके बाद ही चरम दुर्भाग्य का सूत्रपात हुआ। निष्ठुर विभीषिका थी वह! चरम यातना। उन्हें गीत सुनाने के बहाने बुलाने के बाद उस यातना और नरक से छुटकारा मिला। हाँ, इसे छल ही कहा जायेगा। मैंने गीत गाया था उनका मन रखने के लिए। गीत की पूँजी थी, इसीलिए बुलाकर ले गया था।'

लड़की के बचपन से ही वह इसी तरह की बातें उसे सुनाती थी। उसका अपना जीवन भी संयत था। जितने दिनों तक उस प्रौढ़ सज्जन का अनुग्रह रहा तब तक उसके किराये के मकान में रही। वहाँ कोई दूसरा नहीं रहता था। उसके बाद अपने घर पर चली आयी थी। उस मकान में किरायेदार थे, लेकिन वे किसी न किसी की अनुगृहीता थी। तुलसी कान से जो कुछ सुनती उसका उल्टा उसने कुछ भी नहीं देखा।

मंजरी को याद है, उसकी माँ अपनी बात बताती थी। जब वह बड़ी हुई तो अपनी एकान्त सखी की तरह अपने मन की बातों का भण्डार खोल देती थी। कभी उसका जूड़ा बाँधने के लिये बैठने पर और कभी रात में उसकी बगल में लेटकर कहती, 'मंजरी मेरी माँ जात की ब्राह्मिन थी, धर्म के अनुसार वैष्णव बाप की लड़की। लेकिन वह इतना सारा रुपया-पैसा, गहना-जेवरात, मकान और ख्याति रहने के बावजूद रोती रहती थी। कहती, किसी अपराध की क्या इतनी बड़ी सजा हो सकती है जिससे जिन्दगी भर निष्कृति न मिल सके, क्षमा प्राप्त न हो सके? बहरहाल उस सजा को मैं भोगूँगी, मगर अपराध की मात्रा बढ़ने नहीं दूँगी। मैं उन्हें नहीं भूलूँगी। तेरा नाम मैंने तुलसी रखा है। कितने ही लोगों ने कहा था, 'नाम जो रखा है वह तो रख ही चुकी हो मगर कोई पुकारू नाम रखो—अंगूर, बेदाना, डालिम—ऐसा ही कुछ! धनी लोगों के जिन लड़कों की तलाश करती हो, वे मलेरिया के रोगी नहीं हैं कि तुलसी के पत्ते के रस की खोज करें। मैंने तो यह नाम नहीं रखा है। तुलसी का पत्ता न हो तो उनकी पूजा कैसे हो सकती है? उसका नाम सुनकर जो आयेगा वह हो सकता है कि वही हो। तेरा नाम मैंने तुलसी रखा है। तुझे लड़की होगी तो उसका नाम मैं तुलसी मंजरी रखूँगी।'

वह सिर्फ मंजरी नहीं है, उसका नाम तुलसी मंजरी है। यह नाम उसकी दादी दे गयी है। मंजरी को अपनी दादी की याद आती है। दादी अपनी लड़की के लिए प्रतिज्ञा ठाने बैठी थी।

दादी की आशा विफल नहीं हुई, उसकी प्रतिज्ञा पूरी हुई थी। एक दिन मन के लायक एक भद्र धनी लड़के का प्रस्ताव लेकर आदमी आया।

माँ कहती थी, 'आदमी का मतलब दलाल। दलाल तब तरह-तरह का प्रस्ताव

लेकर आता था। कलकत्ते का धनी लड़का है, उसके पास दो घोड़े वाली बग्घी है, बीस-पच्चीस अदद मकान। जमींदार का लड़का है, मारवाड़ी सेठ—उसके पास रुपये-पैसे और जेवर जेवरात की फेहरिस्त है। मगर माँ की एक नहीं, अनेक शर्तें हैं। लड़की से गन्धर्व मत से शादी करनी होगी। लड़की अपना घर छोड़ दूसरे के घर नहीं जायेगी। जरूरत पड़े तो एक मंजिले मकान को दो मंजिला बनवाकर दो मंजिले पर रहो। लड़की शराब नहीं पियेगी, मांस नहीं खायेगी, नाचेगी नहीं। उधर मेरा नाम तब बाजार में फैल चुका था। सोलह की उम्र पार कर चुकी थी। माँ के साथ कीर्तन की मजलिस में जाती थी, बैठी रहती थी और स्वर से स्वर मिलाती थी। अनेकों की मुझ पर नजर भी पड़ी। लेकिन माँ की शर्त सुन हर कोई पीछे हट जाता था। अन्ततः एक दिन आदमी आया। उसने आकर कहा, 'लगभग हर शर्त मंजूर है माता जी। आपकी लड़की को देखकर पागल हो गया है। भले घर का भले आदमी का लड़का है। स्वयं भी भला है। वह अगर पसन्द न हो माताजी, तो आप जगन्नाथ जी जाकर अपनी लड़की को दासी बना दें। मनुष्य के द्वारा यह काम नहीं हो सकेगा।'

मंजरी का बाप इसी भले घर का भला आदमी था।

लोहापट्टी में लोहे का कारोबार है। घर वर्द्धमान जिले में। देश में बहुत बड़ी जोत और जमींदारी है। कलकत्ते का व्यवसाय बड़े ही लाभ का है। प्रथम युद्ध के बाजार में तीन-चार लाख रुपया फायदा हुआ है। वह हर शर्त पर राजी है, तब हाँ, कुछ बातों को स्पष्ट कर लेना चाहता है। पहली बात, राधारानी ने कहा है कि उसकी लड़की शराब नहीं पियेगी, मगर वह शराब पी सकता है या नहीं ? दूसरी बात, गंधर्व मत से शादी करनी है। माला बदलने के अलावा और क्या करना पड़ेगा ? उसका कहना है, माला बदलने के लिए वह तैयार है, एक वर्ष की तनख्वाह भी पेशगी के तौर पर देने को राजी है। इसके अलावा महीने-महीने तनख्वाह देता जायेगा, मगर उससे अधिक कुछ भी नहीं देगा। बाल-बच्चे होंगे तो वे उसके उत्तराधिकारी नहीं होंगे। इस पर राजी हों तो बाकी तमाम शर्तों को वह मानने को तैयार है। मकान को वह दो मंजिला बनवा देगा।

मंजरी की दादी राधारानी को इसी पर राजी होना पड़ा था। इससे अधिक की उसने प्रत्याशा नहीं की थी। तब एक दिन मंजरी का बाप आया था। लगभग पच्चीस वर्ष उम्र, साँवले रंग का मजबूत काठी का आदमी, वेश-भूषा से रईस जैसा। अपनी कंपस यानी एक घोड़े वाली गाड़ी पर चढ़कर आया था।

दादी ने शुरू में ही उससे कहा था, 'एक बात पूछनी है भैया, अन्यथा तो नहीं लोगे ?'

वह एक संकोचहीन आदमी था। हँसकर कहा था, 'एक क्या, दसियों बात पूछ लीजिये।'

'तुम्हारी शादी हो चुकी है न ? घर पर पत्नी है न ?'

'है। जरूर है। इधर मेरी शादी हुई और उधर लड़ाई छिड़ गयी। पहले से ही लोहा खरीदकर रखा था, बेहद लाभ हुआ। लोग-बाग भी कहते हैं कि इसीलिए पत्नी को—'

'फिर ?'

'तो फिर आ क्यों रहा हूँ ?' हँसकर मँजे हुए व्यवसायी रामकृष्ण चौधरी ने उत्तर दिया था, 'सो तो ठीक-ठीक नहीं कह पाऊँगा। मगर आता हूँ। यानी मैं चक्कर काटता रहता हूँ। उससे भी शान्ति या सुख—जो कहें, नहीं मिलता है। अचानक मल्लिक के घर पर आपके साथ कीर्तन की मजलिस में आयी आपकी लड़की पर नजर पड़ी। खोज-पड़ताल की, आपका परिचय मिला। शर्तों के बारे में पता चला। सोचा, क्यों न यहाँ देख लूँ कि वह चीज यहाँ मिलती है या नहीं जिसकी मैं तलाश कर रहा था। तब हाँ, शादी और शराब पीने की अपनी बात आपको बता चुका हूँ। इस पर आप राजी हैं ? बाल-बच्चों की जिम्मेदारी—'

राधारानी ने दाँतों से होंठ काटते हुए कहा था, 'नहीं-नहीं भैया, मैंने यह नहीं कहा है। यह तो तुम्हारी न्यायसंगत बात है। थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद बोली थी, 'भैया, मैं स्वयं ब्राह्मण की लड़की हूँ, भक्त ब्राह्मण की लड़की। मुझे पता है कि जात क्या चीज है। वह ऐसी चीज है जिसे कोई किसी को नहीं दे सकता। गलती से मैंने इसे खो दिया। जिन्दगी-भर प्रभु का नाम-कीर्तन करती रही, फिर भी वह चीज वापस नहीं मिली। मैंने लड़की के लिए जात की तलाश नहीं की थी, धर्म की तलाश कर रही हूँ। तुम्हें भजकर शायद वह धर्म की रक्षा कर ले। तब हाँ, दो महीने बाद छोड़ कर चले तो नहीं जाओगे ?'

चौधरी ने कहा था, 'मान लीजिये, दो महीने बाद मेरी मृत्यु हो जाती है।'

'शिव-शिव ! यह बात मत बोलो।'

'नहीं-नहीं, मैं 'यदि' की बात कह रहा हूँ। दुनिया में आश्चर्यजनक कोई बात नहीं है।'

'हाँ, नहीं है।'

'फिर आपकी लड़की क्या करेगी ?'

'तुम्हीं बताओ।'

'देखिये, यह बात वही बतायेगी। इच्छा हो तो मन में मुझे भज सकती है। और अगर नहीं तो फिर विधवा-विवाह तो हो ही सकता है—वैसा सोचकर दूसरे के प्रति वफादार रह सकती है। फिर—यानी उसकी जो मर्जी हो। उससे जैसा बन पड़ेगा, वैसा ही करेगी। जिन्दगी भर मैं उसके साथ रहूँगा, यह बात मैं नहीं कह सकता। इसीलिए एक साल की तनख्वाह दो हजार रुपया बतौर पेशगी जमा कर रहा हूँ। इसलिए कि पेट के कारण लाचार होकर वैसा कुछ न करना पड़े जो वह नहीं चाहती है।'

थोड़ी देर चुप रहने के बाद राधारानी ने कहा था, 'ठीक है भैया, मुझे मंजूर है। तुम भैया, सीधी और साफ-साफ बातें करने वाले आदमी हो। अब रही लड़की की किस्मत और तुम्हारी मेहरबानी। तब हाँ, मेरी लड़की मेरे साथ दल में जायेगी। कहने का मतलब है कि तुमने जो कुछ कहा, उसकी वजह से आगे चलकर अगर उसे रोजी-रोटी की बात सोचनी पड़े तो फिर वह दल रखकर मेरी ही तरह गुजर-बसर कर सकेगी। उसका गला भी कोई बुरा नहीं है।'

चौधरी इस बात पर भी राजी हो गया था।

उसके बाद तीन साल बीत गये थे।

मंजरी को याद है, माँ अपने इन तीन बरसों की बात खुलकर नहीं बताती थी। सिर्फ इतना ही कहती, दुनिया में शायद चतुर और साफ-साफ बोलने वाले आदमी की दया-ममता और प्यार ठीक नहीं रहता है मंजरी। खुद ही शराब पीने की बात बतायी थी मगर इतनी अधिक मात्रा में पीता था कि मेरी लांछना की कोई सीमा नहीं रही थी। शुरुआत के कुछ महीने ठीक से बीते थे। उसके बाद ही—। कहना शुरू किया, 'माँ के साथ कीर्तन गाने जाती हो यह तो ठीक बात है। लेकिन उस्ताद रख देता हूँ, दूसरे-दूसरे गीतों की भी तालीम लो। सिर्फ कीर्तन से काम क्या चल सकता है?' उस्ताद आया। दो-चार मित्र भी बीच-बीच में आते थे। उसके बाद तेरा जन्म हुआ। तेरी पैदाइश के बाद मैं बीमार पड़ गयी। डॉक्टर ने हवा-पानी बदलने को कहा। हवा-पानी बदलने के लिए उसी ने भेजा। वहाँ से लौटकर आयी तो पता चला कि उसने दूसरी जगह आना-जाना शुरू कर दिया है। माँ ने कहा, इस सम्बन्ध मे हंगामा मत मचाना तुलसी। वह तो घर की पत्नी को छोड़े तेरे घर मे आता है। उसने तो यह नहीं कहा है कि तेरे साथ नहीं रहूँगा। आँख बन्द कर सहती रही। आखिर मे एक शाम उसका आदमी विलायती खाना और शराब लेकर आया। संवाद भेजा कि किसी एक कम्पनी के साहब मैनेजर या ऐसे ही किसी व्यक्ति को यहाँ गीत सुनवाने ले आयेगा। मुझे डर लगा। मैंने कहा, नहीं, वैसा नहीं होगा, बाबू से जाकर कह दो। एकाध घण्टे के बाद खुद ही गुस्से से तमतमाया हुआ आया। जो-सो कहने को बाकी नहीं रखा। आखिर में मेरे गाल पर एक तमाचा रसीद कर दिया। मैंने कहा, मैं शिवनन्दन को बुलाऊँ इसके पहले ही तुम यहाँ से चले जाओ। बस, वह जो निकलकर बाहर गया तो फिर लौटकर नहीं आया। उस समय मेरी माँ की हाल-हाल मे मृत्यु हुई थी। मंजरी की माँ तुलसी कहती, जब वह चला गया तो मैंने सर पीटा था, रोयी थी। सात दिन तक बिस्तर छोड़कर नहीं उठी। तीन दिन तक खाना नहीं खाया। उसके बाद उठी थी, उठना पड़ा था। मन-ही-मन एक संकल्प लेकर उठी थी और वह यह कि मैं सती बनकर ही रहूँगी।

मंजरी की माँ ने इसके बाद कीर्तन दल लेकर ही रहने का संकल्प किया था। लेकिन माँ से वैसा नहीं हो सका। उसकी जिन्दगी में नये आदमी का आगमन हुआ था। माँ राधारानी ने जो कुछ कहा था, तुलसी ने स्वयं मन ही मन जो कुछ

सोचा था, जिसका संकल्प लिया था, उसकी रक्षा नही कर सकी। मंजरी ने जब गोरा बाबू से शादी की थी, उसी समय तुलसी ने अपनी लड़की से यह बात कही थी—'हम लोगों की जात का पतन होने वाला है मंजरी। मैं अपने को संयत नही रख सकी। तेरा बाप चला गया तो कुछ दिनों तक मैं कठोर हो बनी रही। उसके बाद वैसा नही रह सकी। उस समय मेरी उम्र ज्यादा नही थी, यही चौबीस पच्चीस साल की रही हूँगी। एक व्यक्ति के सौंदर्य और बातों पर मैं सुध-बुध खो बैठी। उस समय मुझे पैसे की तंगी का सामना नही करना पड़ा था। हम लोगों की जात का मन है न, उस आदमी को मैं प्यार कर बैठी। उसके पास पैसा नही था। मैंने कहा, तुम्हें पैसा नही देना होगा, तुम आया करो। उसी चौधरी का दोस्त था। गायकी में माहिर। चार साल के बाद उसे बीमारी ने घर दबाया और वह बीमारी थी नित्य नूतन की तलाश। अब मैं उसकी निगाह से गिर गयी। क्या कहूँ? बहुत रोयी-धोयी, उसके पैर पकड़े, झगड़ा किया मगर न तो उसे लौटा सकी और न ही उसे बाँधकर रख सकी। हम लोगो को देखकर लोग सुध-बुध खो बैठते हैं, घर-द्वार की सुध बिसरा कर भागे-भागे आते हैं और कहते हैं, मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। प्यार नही, खाक। हम लोगो के अन्दर ही भूलने के मर्ज की छूत है—इसी मर्ज की झोंक से ही कोई व्यक्ति मुझे भूलकर उसके पास जाता है—उसको भूलकर किसी और के पास। इस भूल मे ही स्वयं को भुलाकर जिन्दगी-भर भागा-भागा फिरता है।

मंजरी जानती है—उसे याद है—इसके बाद माँ के जीवन में एक आदमी आया था। वह एक मारवाड़ी था। उसके साथ कोई झमेला नही था। मछली-मास, शराब का सेवन नही करता था, फल-मिठाई खाता था और नशे के तौर पर भाँग का सेवन करता था। वह हिन्दी भजन सुनता था। कीर्तन सुन प्रशंसा करता था मगर खुश नही होता था।

मगर—। यह सोचने पर मंजरी का मन नफरत से भर उठता है। उस आदमी की जिन्दगी शराबी से भी बदतर थी। तुलसी को इस आदमी को पैसे के लिए स्वीकार करना पड़ा था। कीर्तन का दल अच्छी तरह नही चल रहा था। जमा-पूँजी को तुड़ाकर खर्च चलाना पड़ता था। इसलिए जिस दिन उस देहकामी आदमी ने महीने में ढाई सौ रुपया देकर प्रवेशाधिकार की माँग की, तुलसी ने ससम्मान दरवाजा खोल दिया।

वह बहुत दिनों तक था। मंजरी ने अपनी उम्र के बारह-तेरह वर्षों तक उसे हर रोज आते देखा था। अपने जैसे लोगो के जीवन का अर्थ भी तब उसकी समझ में आ गया था। माँ ने भी स्वयं उसे अपने जैसे लोगों के बारे मे बताना शुरू कर दिया था। वैसे लोगो की जिन्दगी और जात के संदर्भ मे वह बहुत कुछ जान गयी थी। तब वे लोग घर के उपरेल तल्ले मे रहते थे, नीचे का तल्ला किराये पर लगा दिया गया था। तीन कोठरियो मे तीन औरतें रहती थी। उन सबों को मंजरी मौसी कहकर पुकारती थी। राजलक्ष्मी मौसी, दुनिया मौसी और एक औरत थी अंजलि मौसी।

उन लोगों ने चेष्टा की थी और उन्हें सुयोग भी मिला था कि एक ही के साथ गृहस्थी बसायें। दादी राधारानी के जमाने से ही इस किस्म की किरायेदार औरतों के अतिरिक्त किसी दूसरे को घर किराये पर नही लगाया जाता था। गाने-बजाने का कार्यक्रम चलता, शराब का भी दौर चलता लेकिन हो हल्ला या उठा-पटक का सिलसिला नही चलता था। वह घर भी उन लोगो की जात के मुहल्ले के मोड़पर, गृहस्थों के मुहल्लो से सटा हुआ था। हो-हल्ला या उठा-पटक होने से पुलिस का डर रहता था—गृहस्थ लोग दरख्वास्त भेजेंगे। मकान सेण्ट्रल एवन्यू के बिलकुल निकट ही था। एक छोटी-सी सड़क पर दो मकान के बाद।

उसकी माँ तुलसी, अपनी माँ राधारानी की तरह जात-धर्म की बातों की कोई खास चर्चा नहीं करती थी। मजरी को कीर्तन दल मे भी नही रखा था। उसे गीत की तालीम दिलाने का इन्तजाम कर दिया था और उसके साथ-साथ लिखाई-पढ़ाई की भी तालीम दिलाने की कोशिश की थो। बहुत सोचने-विचारने के बाद तय किया था कि उसे थियेटर मे भर्ती करायेगी। एक वही पथ उसे मिला था—जो पथ उसे समाज के राजपथ पर पहुँचा दे सकता था। उन लोगो के मुहल्ले मे तारा सुन्दरी मौसी, छोटी सुशीलादी, चारु शीलादी, नीहारबालादी है। तुलसी उनसे परिचित है। दो चार से प्रेम का भी रिश्ता है। कलकत्ते की बड़ी सड़क के कितने ही मकानों की दीवार पर इन लोगों के नाम के बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे पोस्टर झलमलाते रहते है। माँ एकबार मंजरी को लेकर तारा सुन्दरी मौसी के पास गयी थी। मजरी को तारा सुन्दरी का चेहरा याद है। चेहरा कोई बुरा नही, अच्छा ही था—लेकिन बात-चीत करने का तार-तरीका कितना सुन्दर था! कितनी सुन्दर थी हाथ हिलाने-डुलाने की भंगिमा!

माँ ने कहा था, 'मैं राधारानी कीर्तनवाली की लड़की तुलसी हूँ, मौसी जी।'

तारा सुन्दरी ने अपनी बड़ी-बड़ी आँखे फैलाकर कहा था, 'ओह, आओ-आओ। बैठो। राधा दीदी कितना सु-न्द-र कीर्तन करती थी। गाती थीं, 'स-खि किसने सुनाया श्याम ना-म!' लगता साक्षात् रा-धा भाव में वि-भोर होकर गा रही हैं। वैसी ही थी खूबसूरती! सो-तुम? तुम गा सकती हो?'

'थोड़ा-बहुत। मगर वह कोई खास बात नही है।'

'फिर? फिर क्या राधारानी की लड़की के भाग्य मे भी आखिरकार धनी व्यक्तियों का मनोरंजन ही बदा है? रुपया के बदले रूप बेचना?'

'नही। कीर्तन लेकर ही हूँ। तब हाँ, कुछ हो नही पाता है, तकलीफ से ही दिन बीतता है।'

'ठीक है। यह—यह कौन है?'

'इसी के लिए आयी हूँ। इसे थियेटर में भर्ती कराना चाहती हूँ। इसी के सम्बन्ध में आपसे पूछताछ करने आयी हूँ।'

मंजरी अवाक् हो गयी थी। वह बात सुनते ही तारा सुन्दरी उठकर खड़ी हो गयी थी और दोनों हाथों को दो तरफ फैलाकर भाषण देने की भंगिमा में बोल उठी थी, 'थियेटर ? अभिनय ?'

'लोग कहते हैं अभिनय। अभिनय कभी भी निन्दनीय नहीं है। निन्दा के पात्र अभिनेता और अभिनेत्रियाँ हैं।'

अचानक आँख घुमाकर उसकी ओर ताकती हुई बोली थी, 'फिर भी आस्वाद है, रूप है, एक तरह का नशा है। अगर तुम टिक सको तो आग की तरह जल उठोगी, आग की लपट की तरह। झुण्ड के झुण्ड परवाने आकर कुर्बान हो जायेंगे। जलेंगे। उसके बाद तुम्हारी लौ बुझ जायेगी। कुछ दिनों तक चिनगारी जलती रहेगी, उसके बाद राख पड़ने लगेगी। उसके बाद सिर्फ अंगार रह जायेगा। यह काँटों से भरा सिंहासन है।'

भाषण की मुद्रा बदल अबकी बातचीत करने की सहज भंगिमा में कहने लगी, 'तब दुनिया झाड़ू लगाकर फेंक देगी।'

मंजरी को उनकी बात का अर्थ समझ में आ गया था, लेकिन उस अर्थ का वजन समझ नहीं सकी थी। मगर वह नाट्य सम्राज्ञी उसे अतुलनीय जैसी लगी थी। थियेटर के पोस्टर में उसके नाम के साथ यही विशेषण जुड़ा रहता था।

माँ तुलसी ने कहा था, 'सबकी यही हालत है मौसी जी। किसमें ऐब नहीं है ? मेरी हालत पर गौर कीजिए ! अब कहाँ कौन बुलावा भेजता है। साल में कितने बयाने मिलते हैं ? इसीलिए अपनी लड़की को कीर्तनिया नहीं बनाऊँगी।'

तारा सुन्दरी ने कहा था, 'लड़की को अभि-ने-त्री बनाओगी ? जिसका जैसा पूर्वजन्म का फल रहता है वह वैसा ही बनता है। तो फिर लड़की को थोड़ी-बहुत शिक्षा-दीक्षा दो। कुछ नहीं, बल्कि बहुत कुछ। कविता पाठ करना सिखाओ। कविता-पद्य सस्वर बोलना सिखाओ। गाना जानती है ? जानना चाहिये। राधारानीदी की पोती है। नाच सिखाओ। अभिनय-कला सिखाओ। हँसने के लिए कहने से हँस सके। हँस सकती है ? मुन्नी, यह देखो, मैं हँस रही हूँ।' यह कहकर ठहाका लगाया—'हा-हा-हा-हा। हा-हा-हा।'

एकाएक तारा सुन्दरी खामोश हो गयी थी। कमरे की खिड़की पकड़ कुछ देर तक खड़ी रही। उसके बाद फिर मुड़कर खड़ी हो गयी और बोली, 'है-है, एक और महान् तत्त्व, महान् शिक्षा बाकी है। वह अगर कर सको, समझ सको तो दुनिया का सब कुछ समझ सकोगी। स-ब कुछ स-रल हो जायेगा। जानती हो, हर अभिनय की रात अभिनेता-अभिनेत्री के लिए नये-नये जन्म की तरह है। आज के अभिनय में जो व्यक्ति तुम्हारा पति है, कल के अभिनय के परजन्म में हो सकता है कि वह तुम्हारा पिता, पुत्र या भाई हो। इस अभिनय-जन्म में तुम्हारा जो दुश्मन है, कल के अभिनय—परजन्म में वह तुम्हारा मित्र हो सकता है। कितना वि-चि-त्र है यह !

यह माया, प्रपंच माया यहाँ विश्व के रंगमंच पर, लीलामय नटवर हरि जिसे सजाते जैसा वह वैसा ही सजता। फिर भी - फिर भी अबोध मनुष्य जन्म-जन्मान्तर तक प्रेम की तपस्या करते रह जाता है। सी-ता पाताल-प्रवेश के समय कह गयी थी कि उसकी यही इच्छा है कि जन्म-जन्मान्तर तक उसे राम प्राप्त होता रहे। रा-धा कहती है—'मरूँगी-मरूँगी सखि निश्चय मरूँगी, कान्हा जैसा गुणनिधि किसको दे जाऊँगी।' दुबारा हा-हा-हा-हा कर अट्टहास कर उठी। यही – यही अभि-नय है! दुनिया का सब कुछ अभिनय है।'

मंजरी आश्चर्य-चकित हो गयी थी। जी में आया था कि पूछे, आप कैसे हँस लेती हैं? मगर डर के कारण पूछ नहीं सकी थी। बल्कि माँ ने कहा था, 'आश्चर्य होता है मौसी जी, आप ऐसा कैसे कर लेती हैं। मैं थियेटर कम जाती हूँ—किसी जमाने में नियमित तौर पर जाती थी। उस समय आपका पार्ट देखा था—दुर्गेशनन्दिनी में आयशा का।'

'हाँ। यह बन्दी ही है मेरा प्राणेश्वर।'

'उसके बाद रजिया—'

'यह सब बात रहने दो। वह जमाना गुजर चुका है।' हँसकर बोली थी, 'आग की लौ बुझने-बुझने को है। नया जमाना नये-नये तौर-तरीके लेकर आया है। बीच-बीच में ख्वाहिश होती है एक बार और—एक बार जरा उड़ूँ। खैर, सुनो, लड़की को अभिनेत्री बनाओगी, यह अच्छी बात है। लिखना-पढ़ना, नाच-गाना सिखाओ। अभिनय दिखलाओ।'

'उसे अभी से सखीदल में दूँ मौसी जी?'

'नहीं। सखीदल से ऊपर उठकर अभिनेत्री होना आसान बात नहीं है। दो-चार औरतें—नीहार, रानी वगैरह सफल हो सकी हैं। मगर यह आसान बात नहीं है।'

माँ ने अत्यन्त विनम्रता के साथ कहा था, 'बीच-बीच में इसे आपके पास ले आऊँ मौसी जी? थोड़ा-बहुत सिखा दीजिएगा?'

ताराशुन्दरी एकाएक अनमनी जैसी हो गयी—दीवार की एक तसवीर की ओर देखने लगी।

'मौसी जी!'

एक-एक कदम रखती हुई वे तसवीर की तरफ बढ़ गयी। जाते-जाते ही कहा, 'अब मैं यहाँ ज्यादा नहीं रहती हूँ। मुन्ना की मृत्यु के बाद—।' तसवीर ओर उँगली से इशारा करती हुई बोलीं, 'जिन्दगी की सारी आग उसके शोक के आँसू से बुझ गयी है। अब मैं अंगार हूँ। अपनी ही लौ नहीं है मेरी

उसका प्रदीप कैसे जलाऊँगी ? यहाँ रह भी नही पाती हूँ। भुवनेश्वर चली जाती हूँ। जानती हूँ, यह माया, प्रपंच माया है। वह इस जनम में मेरा बेटा बन कर आया था लेकिन मेरा कोई नही था। फिर भी—फिर भी आँखों के आँसू से आग बुझ गयी। हो सकता है पिछले जनम मे वह मेरा शत्रु रहा हो। लेकिन—'

जरा रुक कर बोली, 'एक साध थी वह पूरी हो गयी है। एक सम्मान दे गया है। शिशिर भादुड़ी के साथ जना मे पार्ट किया था। तीन कौड़ी ने जना का पार्ट किया था। मैंने वह पार्ट नही किया था, करने की हिम्मत नही हुई। मुन्ना की मृत्यु के बाद उसका शोक कलेजे में लेकर पुन शोकातुर जना का पार्ट कर अभिनय की साध पूरी कर ली है।' तसवीर के किनारे खड़ी होकर बोली, 'तुम लोग चली जाओ, अब नहीं। अब बरदाश्त नही कर पाऊँगी। जाओ। नही, जरा रुक जाओ। आखिरी बात कह लूँ। थियेटर स्टेज रंगमंच पर अभिनय करना छल का राज्य है। यहाँ छल का माया जाल फैला कर लुभाना पड़ता है, स्वयं नहीं लुभ जाना चाहिए। और याद रखो, यह दुनिया भी एक रंगमंच है, लेकिन वह जीवन का राज्य है, छल का नही। वहाँ छल मत करो। जाओ, तुम लोग चली जाओ।'

उसने जीवन के साथ छल नहीं किया है। उसने गोरा बाबू को छल से नही लुभाया है। वही लुभ गया था। गोरा बाबू ने उससे छल किया है। मंजरी ने एक लंबी साँस ली। हाँ, वह छल के भुलावे में ही आ गयी थी। गोरा बाबू का अभिनय देखकर ही वह भुलावे में आ गयी थी।

आश्चर्य है ! नही आश्चर्य नही, अपने भाग्य के खोटेपन के कारण उसने गोरा बाबू को थियेटर के स्टेज पर देखा था। या फिर इसे कर्म का फल ही कहना चाहिए—उसका कर्मफल नही, उसके माँ-बाप का कर्मफल। या फिर उसके माँ-बाप का कर्मफल और उसके भाग्य – दोनों का हाथ रहा है। अजीब तरह से घटना घटी। उस समय वह सत्रह साल की थी। मिनर्वा थियेटर मे उसे काम मिला था। उसकी माँ की इच्छा थी कि शिशिर बाबू के थियेटर या आर्ट थियेटर में रखवा दें। लेकिन वहाँ नाच के सखीदल मे पार्ट देने के अलावा कोई दूसरा पार्ट नही देना चाहा। हो सकता है माँ इसी पर राजी हो जाती, लेकिन उसकी खूबसूरती और आवाज की शोहरत सुनकर मिनर्वा थियेटर वाले ने उसे बुलावा भेजकर काम दिया था। उन्हें रोमान्स की नायिका के पार्ट के लिए एक सुरीले कण्ठवाली खूबसूरत युवती की आवश्यकता थी। माँ ने इस मौके को हाथ से जाने नही दिया। मिनर्वा की तब गिरती हुई हालत थी—तो भी उसने मंजरी को वही काम करने दिया था। तरुणी राजकन्या का पार्ट था और उस राजकन्या के कारण नाटक मे जटिलता

आती थी। तब हाँ, पार्ट उसका अधिक नहीं था—तीनेक गीत और थोड़ा-बहुत पार्ट था। मगर थोड़ी-बहुत गड़बड़ी का सामना करना पड़ा। कण्ठ सुरीला और पार्ट की मोटे तौर पर जानकारी रहने तथा कम उम्र होने के बावजूद निदेशक वगैरह को लगा कि यह पार्ट मंजरी के लिए भारी हो जायेगा—उतना अच्छा नहीं हो सकेगा, जितना अच्छा होना चाहिए। मंजरी की माँ और दादी खूबसूरत थी, मगर देह भारी थी। मंजरी के साथ भी यही बात थी। वह नयी जवानी में ही खासी बड़ी हो गयी है, सेहत अच्छी है। जरा हल्की देह, जरा उससे कद में छोटी यानी छरहरे बदन की युवती होने से यह पार्ट जिस तरह खुल सकता है, वैसा नहीं खुलेगा। तब उस भूमिका के लिए मंजरी से ज्यादा उम्र की एक नामी छरहरे बदन की महिला को लाकर मंजरी को राज्यलक्ष्मी की भूमिका में उतारने का निश्चय किया गया। वह मानवी नहीं देवी है। इसमें पार्ट था, लेकिन गीत नहीं। राजकुमार की सुप्तावस्था में देवी आती हैं, आशीर्वाद दे जाती हैं। आदेश दे जाती हैं। राजकुमार नींद की विभोरावस्था में वह आदेश सुनता है, नींद टूट जाती है। तब तक देवी ओझल हो चुकी हैं। राजकुमारी के पार्ट से वह पार्ट कुछ ज्यादा था। उसके साथ निदेशक ने गीत जोड़ दिया। राजकुमारी के पार्ट की नामी महिला का गला सुरीला नहीं है—उसका एक गीत रखकर बाकी गीतों को हटा दिया गया। मंजरी को जरा दुःख हुआ। बड़ा पार्ट पाने के बावजूद उसका मन असन्तुष्ट रहा। राजकुमारी के पार्ट में उसके चारों तरफ रोमांच का जो एक सतरङ्गा आवरण है, दुख उसे उसी के लिए हुआ। डायरेक्टर ने कहा, 'उस पार्ट में तुम बहुत अच्छा करोगी, देख लेना। और कुछ साल बाद तुम मूल हीरोइन का पार्ट करने में समर्थ हो जाओगी। तुम्हारा जन्म रोमांटिक हीरोइन बनने के लिए नहीं हुआ है।'

पार्ट वह बहुत अच्छा नहीं कर सकी। फिर भी बुरा नहीं हुआ। नाटक कुछ दिन चलने के बाद नहीं चल सका। नये नाटक का रिहर्सल होने लगा। उसमें उसे पार्ट पसन्द नहीं आया। मंजरी थियेटर से अलग हो गयी। तब उसका विज्ञापन किया जा चुका है। माँ के पास उसके बारे में दर-दाम चल रहा है। माँ कह रही है, 'मेरी माँ ने मना किया है। मैंने भी निश्चय नहीं किया है। मैं कीर्तन गाती हूँ। लड़की को इस रास्ते पर उतारने की इच्छा नहीं है। अगर उतारना ही होगा तो सोच-विचार कर कदम रखूंगी। रुपया, आदमी हर चीज पर गौर करूँगी।'

इसी बीच अचानक एक गाड़ी आकर उसके दरवाजे पर खड़ी हुई। शिवनन्दन ने बताया, 'कीर्तन का बयाना लेकर एक भले आदमी आये हैं।'

मंजरी बगल के कमरे में बैठी थी। सहसा माँ ने उसे बुलाकर कहा था, 'मंजरी सुन, इस कमरे में आ।'

मंजरी ने जैसे ही कमरे के अन्दर प्रवेश किया, माँ ने कहा था, 'प्रणाम कर। ये तेरे चाचा हैं।'

उसे आश्चर्य हुआ था। उसके चाचा! वह उसी आश्चर्य-भरी दृष्टि से माँ की ओर ताकने लगी थी। माँ ने कहा था, 'हाँ तेरे पिता के भाई हैं, अपना छोटा भाई। हरेकृष्ण चौधरी। ले, प्रणाम कर।'

उसने साष्टांग होकर प्रणाम किया था। चाचा हरेकृष्ण ने कहा था, 'वाह, अच्छी लड़की है, बहुत ही अच्छी। इसे भी अपने साथ लेते चलिएगा। हाँ, देख आयेगी। भैया को देखेगी, भैया भी देख लेंगे।'

माँ ने कहा था, 'नहीं बाबू, वहाँ कौन क्या कह बैठे—'

'लीजिए, बाबू क्यों कह रही हैं? देवर जी कहिये न।'

माँ ने शरम से सिर झुका लिया था।

चाचा ने कहा था, 'बगैर किसी तरह की फिक्र किये लेते आइये। कोई कुछ नहीं बोलेगा। किसी को यह सब बात मालूम भी नहीं है। एक मात्र भाभी को मालूम है, लेकिन वह सीधी-सादी औरत है। मुझे भी ठीक से मालूम नहीं था। यहाँ थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त हुई थी, यहाँ यानी इस मुहल्ले में। इसके अलावा दफ्तर के पुराने चपरासी से। इसके अलावा इस मुहल्ले में भी—'

'लगता है, इस मुहल्ले में आप भी आते-जाते हैं।'

चाचा ने हँसकर कहा था, 'बड़े का छोटा अनुकरण करता है। सो है।'

'किसके घर में आते हैं?'

'थियेटर की सुरमा के मकान में मैं नाटक वगैरह लिखता हूँ। इसीलिए उन लोगों से अधिक जान-पहचान है। सो हाँ, उसे ले चलिएगा। मतलब यह कि भैया की भी यही इच्छा है। बात आपको खुलासा करके ही बताता हूँ। आपसे रिश्ता तोड़ने के बाद भैया कुछ दिनों तक बड़े ही बदमिजाज हो गये थे। उसका फल भी उन्हें भोगना पड़ा। बंगला बनवाने के दौरान मारपीट कर बैठे। उसमें पुलिस केस हुआ। बहुत पैसा खर्च करने के बाद वह मामला दबा, तो एक निर्वाह-भत्ता का मामला खड़ा हुआ। यह जरूर है कि मुकद्मा दायर नहीं किया गया था, एटर्नी का नोटिस मिला था। इसके पीछे हमीं लोगों के व्यवसाय का एक आदमी था जो भैया का मित्र था साथ ही व्यवसाय का प्रतिद्वन्द्वी भी। भैया को काबू करने के लिए उसी ने यह काम कराया था। उसे दबाने के लिए मोटी रकम देनी पड़ी थी। इस पर भी भैया को होश नहीं आया। आखिर में एक घर में मारपीट हुई। भैया तब किसी के घर में आते-जाते थे। उस औरत के घर में बहुत पहले से ही कलकत्ते के एक गिरती आर्थिक अवस्था वाले बाबू के आने-जाने का सिलसिला था। घर जितना ही ह्रासोन्मुख होता है उसमें गुस्से की मात्रा उतनी ही अधिक होती है। भैया को पैसे की ताकत थी, इसलिए उनकी ज्यादा खातिर होती थी। यह उससे बरदाश्त क्यों होने लगा? एक दिन भैया उस घर में थे, गाना सुन रहे थे, शराब भी काफी मात्रा में पी चुके थे। तभी वहाँ गुण्डा आया। भैया से कहा, यहाँ से आपको उठना पड़ेगा। इसी के चलते मारपीट हो गयी। भैया को सीढ़ी से ठेलकर नीचे गिरा दिया। भैया का पैर टूट

गया । फिर भी तकदीर का जोर कहा जायेगा कि सिर नही फूटा । उसके बाद किसी तरह डेरे पर आये । उसके बाद अस्पताल ले जाया गया । पैर बुरी तरह जख्मी हो गया था । ढाई महीने तक अस्पताल में रहना पड़ा था । अब भी लँगड़ा कर चलते हैं । लेकिन उसी समय से उनमे बदलाव आ गया । व्यवसाय मँझले भाई के हाथ मे सौंपकर देस चले गये । शराब से नाता तोड़ लिया । एकदम से वैष्णव हो गये ।'

मंजरी अवाक् होकर सुन रही थी । बगल के कमरे मे वह साँस रोके खड़ी थी । अपने पिता और चाचा से चाहे जितना ही कमजोर रिश्ता क्यों न रहे, उन पर चाहे कोई दावा न रहे, फिर भी उसका कलेजा कैसा-कैसा तो कर रहा था । गले में जैसे कुछ अटका हुआ था और बाहर निकलने को छटपटा रहा था । यह सब उन लोगों की जात के लिए थोड़ी बहुत लज्जा की बात है मगर घृणा की नही । हर रोज इस तरह की घटना उन लोगो के मुहल्ले मे घटित होती है । एक दो नही, दसियों । फिर भी उस बात से उसे उस दिन रोने का मन होने लगा था ।

उसकी माँ अचानक बोल पड़ी थी, 'शायद अपने को रोक नही सके ।' मजरी हालाँकि देख नही सकी थी मगर समझ गयी थी कि माँ अपने गाल पर हाथ रखकर कह रही है, 'बाप रे, इतना काण्ड !'

'हाँ, काण्ड बहुत सारे किये थे । लेकिन उसके बाद जो कुछ घटित हुआ वह और भी अधिक आश्चर्यजनक है । देस लौटने के बाद दीक्षा लेकर जो वैष्णव बने तो बिलकुल बदले हुए आदमी हो गये । फिर कलकत्ता नही आये । खेती-बारी और जमींदारी के कामों में दत्तचित्त हो गये । जमींदारी बढायी है । खेती-बारी का काम बढा लिया है । मकान के इस-उस टूटे हिस्से को नये सिरे से बनवा रहे हैं । घर पर देव-मूर्ति थी । उसकी सेवा धूमधाम से करने लगे । हम लोगों का घर शाक्त घर है । शक्ति की पूजा की जाती है । शालग्राम की नित्य सेवा होती है । वे वैष्णव बन गये हैं । बोले, राधा-गोविन्द की मूर्ति की प्रतिष्ठा करूँगा । मँझले भैया ने आपत्ति की, सेवा में अब वृद्धि नही करूँगा । थोड़ा-बहुत झगड़ा भी हो गया । इसी के चलते यह योजना उस समय स्थगित हो गयी । लेकिन उसके बाद ही मँझले भैया की दिल के दौरे से मौत हो गयी । सबके मन में एक खटका पैदा हुआ । पिछली बार मूर्ति प्रतिष्ठित की गयी । मँझले भैया की मृत्यु के बाद ज्यादा धूमधाम नही हुआ । उसके बाद ही भैया जोरों से बीमार पड़े । ज्वर की बेहोशी में बकने लगे, मुझे क्यों ले आये ? धूमधाम नही है, आनन्द नही है – मुझे क्यों ले आये ? इसलिए अबकी होली पर धूमधाम होगा । थियेटर होगा । थियेटर हमीं लोगों के गाँव का होने वाला है । कहा जा सकता है कि यह मेरे और भैया के दामाद के शौक के चलते हो रहा है । भैया के एक ही लड़की है । शादी कर दामाद को सिर पर बिठा रखा है । बहुत ही अच्छा थियेटर करता है । वह भी नाटक लिखता है । थियेटर तीन दिन तक होगा । इसके अलावा कीर्तन । आपके बारे में खुलकर नहीं कह पा रहे थे ।

एक दिन बोले, 'कीर्तन तो यहाँ होता है लेकिन संगीत-कीर्तन नहीं होता है। अगर हो तो कैसा रहेगा हरेकृष्ण ?' समझ गया कि आपको लाने की इच्छा है। मैंने कहा, 'ठीक है, अच्छा रहेगा, बहुत ही अच्छा। अच्छे संगीत-कीर्तनिया का भी पता है। विख्यात संगीत कीर्तनिया राधारानी की लड़की बहुत ही अच्छा गाती है।' इस पर बोले, 'फिर जाकर बयाना कर आओ। मैंने कलकत्ते में उसका गीत सुना है। उसके एक लड़की भी है। मैंने हाल में—समझ रहे हो—याद नहीं है पर किसी से सुना है। वह भी बहुत अच्छा गाती है। तुलसी से कहना कि वह अपनी लड़की को भी साथ लेती आये। मूल गायिका के गीतों को दुहरायेगी। समझ रही हैं न—वे इस लड़की को देखना चाहते हैं।'

माँ ने एक दीर्घ निश्वास लेकर कहा था, 'ठीक है, वही किया जायेगा। मंजरी जायेगी। यह उसके लिए सौभाग्य की बात है। जब वह दो साल की थी तो वे चले गये थे। मंजरी को तो याद नहीं है। देखेगी।'

पिता को देखने के लिए जाने पर मंजरी की नजर गोरा बाबू पर पड़ी। वहाँ जाने पर पिता का वैभव देखा तो मंजरी को आश्चर्य हुआ। तीन महला मकान—अन्दर महल, कचहरी घर, ठाकुर बाड़ी। सुन्दर बगीचा। विशाल बँधा हुआ घाट, दीघि जैसा ही तालाब। घोड़ा गाड़ी, मोटर। स्टेशन से कई मील जाना पड़ता है। उन लोगों के लिवाने के लिए मोटर आयी है। माँ तुलसी ने दमकता हुआ चेहरा लिए उससे कहा था, 'देख रही है, तेरे लिए उन्होंने मोटर भेज दी है।'

मंजरी को याद है, उसके चेहरे पर मुसकराहट तिर आयी थी। लेकिन उसने माँ से यह नहीं कहा कि तुम्हारे लिए भी आयी है।

पाँच

किसी चीज में मंजरी की साड़ी की कोर फँस कर अटक गयी। वह ठिठककर खड़ी हो गयी। क्या ? किस चीज में अटक गयी ?

शिवनन्दन बोला, 'कँटीले तार का एक बोझा पड़ा हुआ है। तुम्हारे शरीर में लगा क्या ?'

वह साड़ी की कोर को छुड़ाने लगी।

मंजरी बोली, 'नहीं-नहीं, शरीर में नहीं लगा है। मगर कँटीले तार का बोझा कहाँ से आया ?'

'अरे बाबा, कोयला-लकड़ी और लोहा-लक्कड़ का तो यहाँ काम ही होता है।'

'हम लोग कहाँ चल रहे हैं ?'

'क्यों माता जी, ग्रीनरूम के पास ही तो नायकों के खाने-पीने की जगह है।'

'लेकिन हम पैदल कब से तो चल रहे हैं। इतनी दूर तो नहीं है !'

'नहीं-नहीं, हम तो अभी-अभी बँगले के अपने डेरे से निकले हैं।'

'अभी-अभी निकले हैं ?'

'तुम चुपचाप चल रही थीं, इसलिए लगता है कि बहुत दूर तक पैदल चल चुकी हो।'

बात सही है। वह चुपचाप सोच में डूबी हुई चल रही है। सोचती आयी है तीस-चालीस वर्ष पहले की बात। इतने कम अरसे में तीस-चालीस साल गुजर गये। गुजरे। एक पार्ट की बात याद आ गयी। 'मन तुरंग पर चढ़, कर आया भ्रमण अनादि अतीत काल तक। देखा लोगों को अनन्त ब्रह्माण्ड में, सब मिथ्या। सत्य मात्र है विरह-वेदना। प्रेम जहाँ हो उठता सत्य। वहाँ भी आती मृत्यु छीन कर ले जाती है एक व्यक्ति को और बना जाती सत्यतर विच्छेद-विरह को।'

मन का तुरंग पल-भर में ब्रह्माण्ड घूम आता है, अनादि अतीत काल तक घूम आता है तो फिर तीस-चालीस वर्ष उसका कितना छोटा अंश है !

यहाँ तो एक ही क्षण में वह मन ही मन आठ वर्ष पहले चली आयी है।

हाँ, आठ वर्ष।

आठ वर्ष पहले होली के दिन वे लोग सुबह के वक्त रंग के भय से गाड़ी के खिड़की-दरवाजे बन्दकर हावड़ा रवाना हो रही थीं। सुबह क्यों, थोड़ी रात ही थी। तय किया था, जाकर स्टेशन पर बैठी रहेंगी। ट्रेन भी सवेरे खुलने वाली थी, सात बजकर कुछ मिनट पर। वहाँ के स्टेशन पर ग्यारह बजे उतरी थीं। स्टेशन पर आदमी था। सिर्फ चौधरी भवन का आदमी ही नहीं, और भी बहुत सारे लोग कलकत्ते की कीर्तनवाली को देखने आये थे। माँ बिलकुल सादे लिबास में सिर पर तिलक लगाकर आयी थी। साथ वाली औरत के साथ भी यही बात थी। मंजरी भी बहुत ही शालीन लिबास में आयी थी।

कर्मचारी ने कहा था, 'डेढ़ेक कोस का रास्ता है। लेकिन मोटर है। यही आधा घण्टा लगेगा।'

मोटर !

'हाँ, बाबू बोले, मोटर ले जाओ वरना आने में देर होगी।'

माँ ने मंजरी की ओर आँख टिकाकर हँसते हुए मीठे स्वर में कहा था, 'यह सब तेरे लिए है।'

मंजरी ने प्रतिवाद करते हुए यह नहीं कहा था कि तुम्हारे लिए भी है। याद है, यह तो सोचने में उसे भी अच्छा लगा था। सच भी प्रतीत हुआ था। वरना उसकी

माँ उसकी दादी की तरह पिताजी की स्मृति संजोये बैठी नहीं रही थी। अगर दावा कहा जाये तो एक मात्र उसी का है।

मोटर पर वह सबसे पहले जाकर चेहरे पर हँसी लिए बैठ गयी थी। एक आश्चर्यजनक खुशी से वह थोड़ी-बहुत चंचल हो उठी थी। दस के लोगों के लिए घोड़ागाड़ी थी। काटोया की छकड़ा गाड़ी। वह मोटर पर बैठ जो कुछ देख रही थी उसी की ओर इंगित कर माँ को कह रही थी, 'देखो माँ, देखो।'

माँ ने उसके मन को समझ लिया था। उसने मीठी हँसी हँसकर उसकी बातों का जवाब दिया था।

अचानक पेड़-पौधों के ऊपर आकाश में बनायी गयी तसवीर जैसी सफेद अटारी पर दृष्टि पड़ी थी। एक नहीं, तीन चार थी। सब की सब सफेद थी।

'देखो माँ, देखो कितना बड़ा मकान है!'

कर्मचारी ने कहा था, 'यह हम लोगों के बाबू का मकान है।'

'वही मकान है!'

आश्चर्य की कोई सीमा न थी। एकाएक मोटर दाहिने मुड़कर एक सुन्दर सुर्खी बिछे घुमावदार रास्ते पर चलने लगी थी।

मोटर विशाल तालाब के दक्खिन तरफ के किनारे पर से होकर गाँव के रास्ते को तय करती हुई ईंटे के टुकड़ों से पटे और सुर्खी बिछे उस रास्ते पर आती है जिसका अन्त कचहरी घर के फाटक के पास हुआ है। कचहरी घर के सामने ही तालाब है। चारों किनारे पर फल-फूल के बगीचे। बँधा हुआ घाट। घाट के ऊपर वाले चबूतरे पर तब बहुत सारे लोग थे। पूरब-पश्चिम की तरफ लम्बाई में फैले तालाब के दक्खिन किनारे से मोटर पश्चिम दिशा की ओर आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ रही थी। मंजरी आश्चर्य भरी आँखों से देख रही थी—तालाब के उत्तर-दक्खिन दोनों किनारे से, पानी से बिलकुल सटकर, तंग पनहे की धोती पहलवान की तरह कसकर पहने, काले-काले लोगों के दो जत्थे डोरी खींचते, शोरगुल मचाते पश्चिम की तरफ जा रहे हैं। वे डोरी क्या खींच रहे हैं, शुरू में यह बात उसकी समझ में नहीं आयी। एकाएक पानी से एक बड़ी मछली ऊपर की ओर उछल शून्य में कुछ सेकेण्डों तक तैरती हुई सशब्द पानी पर गिर पड़ी, साथ ही साथ एक दूसरी भी। दोनों किनारे के लोग शोर मचाने लगे। उसने माँ का हाथ पकड़ कर खींचा था और कहा था, 'देखो-देखो माँ, मजा देखो। कितनी सुन्दर मछलियाँ उछल रही हैं!'

माँ ने कहा था 'जाल से मछली पकड़ी जा रही है। देखो, शोले की गुठलियाँ पानी मे तैर रही हैं।'

शोले की कतारबद्ध गुठलियाँ तैर रही थीं। डोरी के खिचाव के कारण पश्चिम की ओर बह रही थी और उस ओर पहुँचने में देर नहीं थी। मछलियों ने उछलना शुरू कर दिया। वह बड़ा ही सुन्दर दृश्य था। चाँदी के पत्तर के रङ्ग की जैसी मछलियाँ शून्य में उछलती है, दुम एक-दो बार हिलती-डुलती हैं और उसके बाद पानी में गिर पड़ती हैं। खपड़ी में जैसे मुरकी भूजी जा रही हो। अहा, कितनी मछलियाँ!

गाड़ी जैसे ही फाटक पर खड़ी हुई, एक चपरासी ने आकर दरवाजा खोल दिया। उसने प्रसन्नता भरे शब्दों में स्वागत किया, 'आइये।'

मंजरी नीचे उतरते ही भागी-भागी घाट की ओर गयी थी। तब उसका जीवन चंचल-चपल था। उसकी चंचलता और चपलता की धारा को उस दिन स्नेह और आदर की वायु स्पर्श कर गयी थी। उसे लगा था, उसके पिताजी हैं, यह उनका मकान है, उन्होंने इन लोगों को बुलाया है, यह सब उसी का है। वह भागी-भागी मछली देखने गयी थी। सिर्फ वही नहीं गयी थी, माँ को भी पुकारा था, 'देखो माँ, कितनी मछलियाँ!'

लेकिन घाट के चबूतरे पर पहुँचते ही उसे संकोच ने धर दबाया। लज्जा की कोई सीमा न रही। संकोच से वह अपने आप ठिठक कर खड़ी हो गयी।

घाट के चबूतरे पर एक विशालकाय प्रौढ़ कुरसी पर बैठे थे। उनकी बगल की कुरसी पर पच्चीस-छब्बीस वर्ष का एक छरहरा युवक बैठा था, जिसके बदन का रंग खाँटी सोने जैसा था। बड़ी-बड़ी आँखें। आँखों पर सोने के फ्रेम का हल्के नीले रङ्ग का चश्मा था जो सुन्दर गोरे रङ्ग पर बेहद फब रहा था। घाट की सीढ़ी पर एक और व्यक्ति खड़ा है। वह जाना-पहचाना व्यक्ति है उसका चाचा। पीछे के लोगों की कतार की ओट के कारण मंजरी उन्हें देख नहीं सकी थी। छोटी लड़की की तरह उमंग से दौड़ते हुए आने पर उन पर नजर पड़ी और सकोच ने उसे घेर लिया।

कुरसी पर बैठे उस प्रौढ़ सज्जन ने जरा हँसकर कहा, 'कितनी मछलियाँ हैं! इतनी मछलियाँ तुमने कभी नहीं देखी हैं बेटी? बताओ कौन-सी मछली लोगी? जाओ, देखकर पसन्द कर लो।'

मंजरी सिर झुकाये खामोश रही। क्या कहे, समझ नहीं सकी। शर्म की कोई हद नहीं हो जैसे।

'बोलो बेटी? बोलो कौन-सी लोगी?'

अबकी वह बोली, 'नहीं। मैंने कभी इस तरह मछली पकड़ते नहीं देखा है।'

यह कहकर वह भागी-भागी लौट आयी थी। लौटने के रास्ते पर माँ खड़ी थी। वह आगे बढ़ आयी थी।

माँ ने उससे कहा था, 'यह रहे वे, तुम्हारे पिताजी।'

यह बात वह समझ गयी थी, परन्तु घबराकर शर्म से उनकी ओर देख नहीं सकी थी। माँ की बात सुनकर उसने मुड़कर एक बार देखना चाहा। लेकिन वे दीख

नही पडे । अबकी उन्हें ओट मे कर खाँटी सोने जैसे रङ्ग वाला युवक इसी ओर आ रहा है । लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ और अपने पीछे ढेर सारी मीठी खुशबू छोड़ वह आगे बढ़ गया । जिन कर्मचारी ने उन लोगों की अगवानी की थी उसने युवक से कुछ कहा और फिर लौट कर चला गया । वह सिर्फ सुन्दर ही नहीं, सुवेश भी है—बदन पर फ्लानेल की डब्ल कफ बाँहदार कमीज, पहरावा चुन्नटदार धोती, पाँवों में वार्निश की हुई चप्पलें, देह से निकलती हुई एसेन्स और सिगरेट के धुएँ से मिली-जुली एक मदिर गन्ध । उन लोगों की बगल से घाट की तरफ वापस जाने के समय एक बार खड़ा होकर बोला था, 'आप लोगो के ठहरने के डेरे का सारा इन्तजाम कर दिया गया है । जाकर मुँह-हाथ धो लें । शायद चाय तैयार हो चुकी होगी ।'

उसने उन लोगों की ओर ताका नही था । मंजरी ने ही उसकी ओर ताका था । अच्छा लगा था । इससे अधिक कुछ भी नही ।

कचहरी घर से संलग्न गेस्ट हाउस के निकट रेस्ट-हाउस मे उन्हे ठहराया गया था । हाउस यहाँ ढेर सारे हैं । तीन कमरे वाला पुआल का मकान, पक्का फर्श । पुआल की छाजन होने के बावजूद खिड़की और दरवाजे पक्के मकान जैसे हैं । अपना डायनामो बिठाया गया है—बिजली के पंखे और बत्तियाँ हैं । किसी चीज का कोई अभाव नही । छोटे अहाते के अन्दर ही बाथरूम और कुआँ है । दोनों छोर के दो कमरे में महिलाओं के ठहरने का इन्तजाम था, बीच के बड़े हॉल में मर्दों के लिए । उसके और माँ के अलावा कलकत्ते की नामी गायिका हरिमती और पुष्पोबाला साथ मे थी । माँ ने उन्हे ही पसन्द किया था और अपने साथ ले आयी थी । कीर्तन गाने में उन लोगो ने ख्याति अर्जित की थी । माँ तुलसी को भय था कि कहीं गाने के चलते दुर्नाम न हो, इसलिए वह इस सन्दर्भ मे काफी सतर्क थी । चौधरी भवन की ओर से भी स्वागत-सत्कार में कोई कमी नही रहने दी गयी थी । गुसलखाने में सुगन्धित तेल-साबुन से लेकर नया तौलिया तक रखा गया था । खाने-पीने की प्रचुर सामग्री थी । घर के छोटे मालिक हरेकृष्ण चौधरी ने स्वय खड़े होकर खाना खिलाया था । रामकृष्ण बाबू उस स्थान में व्यस्त थे जहाँ ब्राह्मण-भोजन हो रहा था । उन लोगों के दल का खान-पान डेरे पर ही हुआ था । ब्राह्मण भोजन की पाकशाला से दो ब्राह्मण ढोकर ले आये थे और खाना परोस कर दिया था । चाचा हरेकृष्ण चौधरी चुन्नटदार धोती पहने और रेशमी बनियाइन पर तौलिया रखे सामने आकर खड़े हुए थे । हँसकर उसकी माँ से कहा था, 'खाने बैठिये । थोड़ा बहुत दोष या त्रुटि हो सकती है, कृपया बुरा नही मानिएगा ।'

माँ ने कहा था, 'आप यह क्या कह रहे हैं बाबू, हम लोगों को यह सब कहना अपराध है । जो कुछ किया है वह राजकीय स्वागत है । किसी प्रकार की कोई कमी नही है, इन्तजाम बहुत ही अच्छा है ।'

'नहीं-नही । मालिक के मन मे सन्देह हो रहा था । बोले, 'मेरा जाना उचित था, मगर ब्राह्मण-भोजन का आयोजन है । इसे छोड़कर कैसे जाऊँ ? सो तुम

चले जाओ हरे। तुलसी दासी से कह आओ कि अन्यथा न ले। जाऊँगा, जरा फुरसत मिलते ही मैं जाऊँगा। वे आयेंगे।'

पत्तल मे तब चावल डाला जा चुका था। वह माँ की बगल में ही खाने बैठी थी, उसके बाद हरिमती मौसी और उसके बाद चुन्नी मौसी बैठी थी। माँ ने चाचा से कहा था, 'हाँ, कितने ही काम होंगे। कितना बड़ा आयोजन है !'

ठीक इसी समय एक परोसने वाला आदमी एक बड़े कटोरे में मछली का एक विशाल माथा लेकर आया। साथ मे गोरा बाबू था। गोरा बाबू ने उसकी पत्तल की ओर इशारा करते हुए कहा था, 'यहाँ दो।'

परोसने वाले ने कटोरे को रख दिया था। कटोरा बहुत ही बड़ा था और उससे भी बड़ा था मछली का माथा। उसको बेहद आश्चर्य-लज्जा और संकोच ने दबा लिया था। उसने सिर्फ इतना ही कहा था, 'यह क्या !'

गोरा बाबू ने कहा था, 'मालिक ने भेजा है। खोले, बिटिया को जाकर दे आओ। बिटिया मछली देख कर बड़ी खुश हुई थी। कहा है, जाने के समय बड़ी मछली पकड़वा कर साथ में दे देंगे।'

यह कहकर वह चला गया था। जाने के समय कह गया था, 'छोटे चाचा, वहाँ चलिये। लाठी थामे पंगत मे घूमने-फिरने मे मालिक को तकलीफ होगी।'

चाचा हरेकृष्ण कुछेक मिनटों के बाद चला गया था। खाना खाकर वे लोग सो गयी थी।

लेकिन उसके बाबूजी नहीं आये थे। उन्हें मजलिस में देखा था। रात दस बजे कीर्तन-गायन की मजलिस बैठी थी। उन दिनों बङ्गाल के गाँवों मे शहरों की तरह रङ्ग-अबीर नहीं खेला जाता था। शाम के बाद ठाकुरबाड़ी मे झूलन होता था। हिन्डोले पर कृष्ण को राधा के साथ बिठाया जाता था। उसके बाद अबीर-गुलाल चलता था। मूर्त्ति के चरणों मे अबीर-गुलाल लगाने के बाद नाट्य मन्दिर में लोगो को अबीर-गुलाल लगाया जाता था। कीर्तन की मजलिस में बड़े थाल में अबीर-गुलाल लाकर रख दिया गया था। उसके पिता चौधरी मालिक ने उस अबीर गुलाल को मुट्ठी मे लेकर कई मुट्ठियाँ मजलिस में छिड़क दी थी। उसके बाद वह थाल पूरी मजलिस में घुमाया गया था। दूसरी ओर मृदङ्ग धीरे-धीरे बज रहा था। इसी बीच माँ ने जाकर उन्हें प्रणाम किया था। उन्होंने जरा हँस कर कहा था, 'मेरे यहाँ कोई तकलीफ तो नहीं हो रही है न ?'

माँ ने कहा था, 'इतना बड़ा राजमहल है, यहाँ हम लोगों को तकलीफ कैसे होगी ? खुद छोटे बाबू खोज-खबर ले रहे थे।'

माँ के इशारे पर उसने आकर उन्हें प्रणाम किया था। उन्होंने चश्मे से अपनी नजर ऊपर उठाकर उसकी ओर देखा था और कहा था, 'बिटिया ! वाह,

बड़ी अच्छी लड़की है ! मछली का माथा खाया था ? जाने के वक्त एक बहुत बड़ी मछली साथ में दे दूँगा ।'

उसके बाद माँ की ओर आँखें टिकाते हुए बोले थे, 'हम लोगों के पास मारवाड़ियों की तरह रुपया-पैसा नहीं है । तब हाँ, यह सब काफी मात्रा में है ।'

माँ ने सिर झुका लिया था । इशारा उसकी समझ में भी आ गया था । इसके बाद माँ सिर झुका कर मजलिस में बैठ गयी थी । अबीर-गुलाल छिड़कने का दौर खत्म होते ही कीर्तन का दौर शुरू हो गया था ।

कीर्तन समाप्त होने के बाद 'बहुत अच्छा' कहकर उन्होंने तारीफ की थी और लाठी का सहारा लिए सबसे पहले वहाँ से उठ कर चले गये थे । उनके न उठने के पहले तक मजलिस से कोई आदमी उठकर नहीं गया था । इसलिए कि कहीं मालिक के शरीर में भीड़ का धक्का न लग जाये । मंजरी देख कर अवाक् हो गयी थी कि ये ही उसके पिता हैं ।

और दो दिनों तक कीर्तन का दौर चला था । कीर्तन की मजलिस में ही उन्हें देखा था । अलग से मिलने के लिए न तो उन्होंने बुलावा भेजा था और न ही आये थे । माँ-बेटी को साक्षात्कार करने का साहस भी नहीं हुआ था । संगीत की मजलिस सुबह बैठी थी । साढ़े ग्यारह बजे खत्म हुई थी । मजलिस में उन्होंने उस दिन एक बात कही थी । माँ को ही बुला कर कहा था, 'हम लोगों के यहाँ का सब कुछ देख लो । हरेकृष्ण से कह दिया है । मामूली कारोबार है, फिर भी देखकर जाना । देहात के सियार राजा की कहानी प्रचलित है । श्री सियार की माँद देखती जाओ, इस सम्बन्ध में गपशप कर सकोगी ।'

माँ का चेहरा बुझ गया था । जिस दिन उसके पिता ने उस साहब को लाना चाहा था और जिसकी वजह से झगड़ा हुआ था—पिता की उपस्थिति में माँ ने कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया था—उसी दिन उसकी माँ ने उनसे यह बात कही थी । 'गाँव-देहात के सियार अपने को शेर समझते हैं । गरजना है तो गाँव में जाकर गरजो ।' यह कह कर दरवाजा बन्द कर लिया था । उस दिन उन्होंने उसी बात की याद दिला दी थी ।

इस बात का सम्पूर्ण अर्थ तब वह समझ नहीं सकी थी मगर आभास से महसूस किया था कि जिस मारवाड़ी को उन्होंने घर पर आते देखा था, बाबूजी का इशारा उसी की ओर था । कुछ-कुछ बेचैनी का अहसास उसे भी हुआ था । दिन-भर माँ डरी-डरी और बुझी-बुझी सी रही । रात में थियेटर हुआ था । छोटे बाबू निमंत्रित कर गये थे । 'हम लोगों का थियेटर देखने आइएगा । बुरा नहीं लगेगा । हम लोग अच्छा थियेटर करते हैं ।'

माँ ने शुरू में कहा था, 'कल सवेरे फिर गीत गाना है । रात में जगूंगी—'

छोटे बाबू बोले थे, 'थोड़ी देर देख आइएगा। बुरा नहीं लगेगा। हम लोग अच्छा थियेटर करते हैं।'

मां ने अनिच्छा से कहा था, 'जाऊँगी।' उसके बाद इस तरह बोली थी जैसे अपने आपसे कह रही हो, 'वही अच्छा रहेगा। समझी मंजरी।'

उसने पूछा था, 'क्या मां ?'

'थियेटर देखने जाऊँगी। बहुत सारे लोगों के बीच रहूँगी। वही अच्छा रहेगा।'

मगर वह समझ नहीं सकी थी। अवाक् होकर मां की ओर ताकती रह गयी थी। मां ने कहा था, 'सब लोग थियेटर देखने जायेंगे और हम लोग सो रहेंगे। अगर कोई—'

मां चौधरी साहब से डर गयी थी। यह बात उसने कलकत्ता लौटने के बाद बतायी थी। बोली थी, 'मंजरी, वह सब कुछ कर सकता है। मुझे डर क्यों लगा था, जानती है—मजलिस में उनकी वह बात सुनकर और आंख-मुंह देख कर। लगा था, तू तो उनकी बेटी है। तुझे रख ले इसका उपाय नहीं है, साथ ही उन्हें यह भी बरदाश्त नहीं हो रहा है कि उनकी बेटी हम लोगों का पाप कर्म करे। या फिर उनके पाप की निशानी तू है और यह बात उनसे बरदाश्त नहीं हो रही है। ऐसी हालत में वे तुझे अगर मार डालें तो मैं क्या कर सकती हूं ? वरना तुझे बुलाया क्यों नहीं, बातचीत क्यों नहीं की, हालांकि छोटे चौधरी साहब ने जाने के बारे में इतना आग्रह किया था।'

'इसीलिए रात बिताने के लिए थियेटर चली गयी थी। नाटक हो रहा था—छोटे बाबू का लिखा हुआ नाटक। नाम था पानीपत। अहमदशाह अब्दाली दिल्ली लूट कर जा रहा है। पानीपत में मराठे पराजित हो रहे हैं। बस, इतनी ही ऐतिहासिक घटना है। अब्दाली कुछ मुगल शाहजादियों को अपने साथ ले गया था। साथ में बहुत सारी बांदियाँ और हिन्दू-मुसलिम लड़कियाँ थीं। उनके बीच एक किसान मुसलमान की लड़की थी। उस लड़की का शौहर एक खेतिहर खुशमिजाज मुसलमान था। गाँव में मे वे लोग सुख और आनन्द से थे। शौहर खेत पर जाता था, उसकी बीवी खाना लेकर गीत गाते हुए शौहर को खिलाने जाती थी। बीबी की गीत की प्रतिक्रिया में शौहर भी दूर से गीत गाना शुरू कर देता था। उसके बाद वह आगे बढ़ आता था, झरने के किनारे बैठ कर खाना खाता था। सुख की जिन्दगी थी। अब्दाली आ रहा है, यह सुनकर शौहर लड़ने गया। वह बन्दी बना लिया गया। बीवी को खबर मिली तो उसे छुड़ाने के लिए निकल पड़ी। वह भी बन्दिनी बना ली गयी। उस समय शौहर भाग चुका था। घर पर बीवी को न पाकर वह फिर बाहर निकला। रात में वह अफगानों के तम्बू में घुस गया। बीबी के हाथ का बन्धन खोल उसके हाथ में एक छूरा थमा दिया। 'भाग नहीं सको तो यह तुम्हारे पास रहा। इसे जैसे ही कहोगी, तुम्हें आजाद कर देगा।' उसने कहा। उसके बाद रास्ते में लड़ाई हुई। शौहर जख्मी

हो गया, बीबी ने सीने में छूरा घोंप लिया। मरने के वक्त एक दूसरे के चेहरे की ओर देख कर मुसकराते हुए बोले, 'मौत में इतना सुख है! इतना सुख! ऐ अल्ला, ऐ खुदा, जन्म-जन्मान्तर तक तमाम दुखों को जीत कर इसी तरह दोनों एक साथ मरें, यही दुआ दो। खेद नहीं है, किसी भी प्रकार का खेद नहीं। हसन ने पुकारा, 'लुत्फा!' लुत्फा ने पुकारा, 'मेरे अजीज।' उनका अन्त हो गया।

उन लोगों ने हँसते-हँसते मृत्यु का वरण कर लिया, दर्शकगण रोते-रोते हैरान हो गये। मंजरी सम्भवतः सबसे अधिक रोयी। कितना सुन्दर, कितने सुख का था उनका जीवन! कितने सुन्दर हैं वे! दोनों कितने फब रहे हैं। किसान के लड़के की भूमिका में गोरा बाबू उतरा। वह जब 'लुत्फा-लुत्फा' कह प्रान्तर से होकर दौड़ रहा था तो उसकी उस पुकार में कितनी रुलाई थी। आश्चर्यजनक रोमांचकारी ममता से दर्शकों की मजलिस झूमने लगी। क्षण-भर में ही किसान का वह लड़का पूरी मजलिस का सबसे प्रिय व्यक्ति हो उठा।

थियेटर खत्म होने पर भी उसके कानों में गूँजता रहा, लुत्फा! हसन! मेरे अजीज! एकाएक उसके मन में आया था, काश, यह नाटक मिनर्वा में हो और उसे लुत्फा का पार्ट मिले! हसन? हसन कौन रहेगा? यही, यही आदमी यदि हसन की भूमिका में उतरे तो कितना अच्छा रहे!

रात के बाकी पहरों में वह एक उदास पीड़ा आछन्न रही। सपना देखा था। अकेले हसन का नहीं, लुत्फा और हसन दोनों का।

दूसरे दिन कुल मिलाकर माँ और बेटी जब सोकर उठीं तो और-और लोग सोकर उठे नहीं थे और उठे भी थे तो अपने-अपने कमरे में थे। तभी छोटे चौधरी उन लोगों की सुख-सुविधा के बारे में पूछताछ करने आये। थियेटर में वे खुद भी उतरे थे और अहमद शाह अब्दाली की भूमिका में उतरे थे। बढ़िया पार्ट किया था। सचमुच ही बादशाह की तरह।

हँसकर उसकी माँ से पूछा था, 'हम लोगों का थियेटर कैसा लगा?'

माँ का उत्साह बुझा हुआ था, फिर भी हँसकर अपना उद्गार प्रकट किया था, 'बहुत ही अच्छा। आप लोगों का थियेटर बहुत अच्छा है। और कौन-सा नाटक लिख रहे हैं? खासा-अच्छा नाटक था।'

'फिर भी कलकत्तेवाले यह सब नाटक नहीं लेंगे।' उसके बाद मंजरी से कहा था, 'तुम्हें कैसा लगा लड़की? तुम तो थियेटर में उतरती हो।'

'बहुत ही अच्छा।'

'अपने मैनेजर से जाकर कहो कि इस नाटक का मंचन करें।'

'मैंने आजकल छोड़ दिया है।'

'ओह! किसका पार्ट तुम्हें अच्छा लगा?'

'आपका बहुत ही अच्छा लगा।'

'हाँ। यहाँ कुछ लोग शिशिर बाबू के नादिरशाह का अनुकरण करते हैं। लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया है। बहुत बड़ा अन्तर है।'

'मैंने उनका नादिरशाह नहीं देखा है।'

'होने पर देखना। हसन-लुत्फा कैसे लगे ?'

'बेमिसाल। बहुत ही सुन्दर !'

'हसन अतुलनीय रहा। वह भैया का दामाद है।'

माँ ने कहा था, 'बड़ा ही सुन्दर युवक है। बड़े बाबू ने बहुत ही अच्छा दामाद खोजा है। जरा रुक कर एकाएक माँ ने कहा था, 'बोलने का साहस नहीं हुआ। दो बातें करना चाहती थी। कल बडे बाबू द्वारा भेजे गये मछली के कटोरे की बात कह कर ही चले गये। रुके नहीं। बडे ही गम्भीर हैं।'

हँसकर छोटे चौधरी ने कहा था, 'नहीं-नहीं, खुशमिजाज युवक है। लेकिन—'

जरा रुक कर आवाज धीमी करते हुए चुपके से बोलने की तरह कहा था, 'मेरी भतीजी का बड़ा ही कड़ा शासन है। कुछ अधिक ही। आप को भी तीखी बातें कहती है'। कहती है, आप लोगों को जानना बाकी नहीं है बाबू जी। अन्यथा न लें। बचपन रहने के बावजूद माँ का उन दिनों का दुःख मुझे याद है। भैया जैसे सिंह राशि के व्यक्ति को भी खामोश रहना पड़ता है। दामाद गरीब आदमी का लडका है। स्वभाव अच्छा है। जब आइ० ए० में पढ रहा था उस समय शादी हुई। आइ० ए० पास किया। लेकिन मेरी भतीजी के कारण आगे की पढ़ाई रुक गई। कहा, कलकत्ते मे पढने से खराब हो जायेगा। मुझे भी नहीं बख्शती है। मुँह के सामने न कहने पर भी कहा करती है, छोटे चाचा के बारे मे सब कुछ मालूम है, सबको मालूम है। दादा ने कहा था, तू साथ जाकर रह। लेकिन जाने को वह राजी नहीं है। घर की देव मूर्त्ति को छोड कहीं नहीं जायेगी। उसकी धारणा है कि वह चली जायेगी तो देवता की सेवा ठीक तौर से नहीं होगी। यही नहीं, देवता असन्तुष्ट हो जायेंगे। इसके अलावा यह भी कहती है, वैसा होने से भी कलकत्ते मे कौन रोक कर रख सकेगा। छोटी चाची तो वहाँ है, क्या छोटे चाचा को रोक पाती हैं ? शैतान, वे लोग सभी शैतान हैं। समझ रही हैं न, वह एक मर्ज है। भैया जो मिल नहीं पा रहे हैं या नहीं आ पा रहे हैं, उसका भी कारण वही लड़की है।'

माँ खामोश थी। मंजरी स्वयं बडी बेचैनी का अहसास कर रही थी। जरा डर भी लगा था। छोटे चौधरी—उसके चाचा—के चले जाने के बाद वह बोली थी—जैसे अचानक ही बोल पड़ी थी—अपने आप बोल पड़ी थी, 'यहाँ क्यों आयी माँ ?'

माँ ने कहा था, 'हाँ, न आना ही अच्छा रहता। समझ नहीं सकी खैर, अब एक ही बेला की बात है। तीसरे पहर तो चल ही देना है।'

एक ही वेला कम समय ही है। लेकिन स्थान और काल के समावेश से कम समय में ही कितना उलट-फेर हो जाता है। शान्त समुद्र में अचानक बादल का एक टुकड़ा उठकर, कुछ ही घण्टों के दरमियान आँधी-तूफान पैदाकर, नाव-डोंगी-जहाज को अतल में डुबोकर लापता कर देता है। वही हुआ।

उस दिन भी कीर्तन का गीत चल रहा था। गीत ठीक से जम नहीं रहा था। श्रोताओं की संख्या भी अधिक नहीं थी। रात में थियेटर देख कर लोग शायद थके हुए थे। गीत समाप्त होने के बाद वे लोग डेरे पर चली आयी थीं और रवाना होने के लिए सरो-सामान सहेज रहे थे, तभी छोटे चौधरी ने आकर कहा था, 'आइये।'

'कहाँ ?'

'ठाकुर बाड़ी में। बड़ी भाभी बैठी हैं।'

माँ ने डरते हुए कहा था, 'वे—'

बड़े भैया ने इन्तजाम किया है। भाभी आपको विदा करेंगी। यानी गरद की साड़ी देंगी। लड़की को बड़े भैया ने एक-अदद गहना दिया है। उसे भी आपके ही हाथ में देना है। चलिये।'

'गड़बड़ तो नहीं होगी न ? मतलब है—लड़की—'

'नहीं-नहीं, इस सम्बन्ध में वह क्या कहेगी ? इसीलिए आप लोगों को अन्दर नहीं बुलाया गया है, ठाकुर बाड़ी में इन्तजाम किया गया है। भाभी के हाथों विदाई का आयोजन होना है। चलिये। इसके अलावा रात से ही भैया की तबीयत खराब है। अभी और कुछ नहीं होगा। चलिये। चलो लड़की, तुम भी चलो। उन लोगों को बुला लें।'

चौधरी भवन की बड़ी मालकिन मोटी-सोटी थीं। एक कीमती गरद की साड़ी पहने देव-मन्दिर के बरामदे पर कार्पेट के एक आसन पर बैठी थीं। रंग काला, देखने में भी खूबसूरत नहीं, लेकिन चेहरे पर एक प्रसन्नता का भाव था। नाक और कान में हीरे की कील और टॉप्स। नाक का हीरा झलमला रहा था। सामने एक नयी दरी बिछी थी। उन लोगों को लिवाकर आने के बाद छोटे चौधरी ने दरी की ओर इशारा करते हुए कहा था, यहाँ बैठ जाइये। आप मेरी भाभी हैं—चौधरी भवन की मालकिन। आप लोगों का गीत सुनकर बहुत ही खुश हुई हैं। साधारण विदाई देनी है ताकि याद रहे कि चौधरी भवन आयी थीं।'

मालकिन ने कहा था, 'बैठो बहन। तुम लोगों का गीत बहुत अच्छा लगा है।'

माँ ने कहा था, 'आपको प्रणाम करना चाहती हूँ।'

मालकिन फिक् से हँस पड़ी थीं, 'परनाम करोगी ? लो कर लो।'

माँ ने झुक कर प्रणाम किया था और हाथ बढ़ा कर चरणों का स्पर्श किया था। माँ के सिर पर हाथ रख कर बोली थीं, 'लम्बी उम्र हो, सुखी रहो।' यह

कहकर उस जमाने की उस सीधी-सादी औरत ने कहा था, 'तुम्हें बहन, मुझे देखने की ख्वाहिश थी। सो कहा जा सकता है कि तुममे रूप-गुण दोनो थे। यह गहना लड़की को देना और यह रही तुम लोगो की विदाई।'

अचानक पीछे से किसी ने जोर से कहा था, 'छिः छिः छिः, माँ छिः। विदाई करना है तो विदाई करो, मगर तुम यह सब क्या कह रही हो। कहने मे सकोच नही होता ?'

छोटे चौधरी बोल उठे थे, 'कमला, क्या कह रही है तू ?'

इसके बाद देव-मन्दिर के अन्दर से एक मोटी-सोटी लड़की बाहर निकलकर आयी थी। मजरी से कुछ बडी ही होगी। उसका रङ्ग भी काला था। चेहरे पर बेहद रूखापन। बोली थी, 'जो कुछ कह रही हूँ, अपनी माँ से कह रही हूँ। आपसे नही कह रही हूँ। घर मे देवता हैं, वे इस अनाचार को बरदाश्त नही करेंगे। तुम जाकर स्नान कर लो माँ। यह सब छू-छाकर तुम देवी-देवता के काम में हाथ मत लगाना।'

यह कहकर वह दनदनाती हुई चली गयी थी।

उन लोगो में से हर व्यक्ति का चेहरा बुझ गया था। कलेजे के अन्दर जैसे चोट पर चोट पड़ रही थी। आकस्मिक भय और आतंक से छाती जिस प्रकार धडकने लगती है, उसी प्रकार धड़कने लगी थी। हाथ-पैर मे जैसे शक्ति न रह गयी हो। हथेली और तलवे से पसीना छूटने लगा था। किसी मे बात करने की शक्ति भी नही रह गयी थी।

सबसे पहले छोटे चाचा के मुँह से बात निकली थी। बोले थे, 'उसका दिमाग जरा खराब है। आप लोग अन्यथा न लें। मैं क्षमा माँगता हूँ।'

मालकिन ने कहा था, 'मैं हाथ जोड़ती हूँ बहन।'

उन लोगों ने क्या कहकर उस प्रसंग को टाल दिया था, मंजरी को यह बात याद नही है। याद है सिर्फ इतना ही कि वह थर-थर काँप रही थी। किसी तरह डेरे पर लौट आयी थी। डेरे पर लौटने के बाद कलह का सूत्रपात हो गया था—हरिमति और चुन्नी ने साँप की तरह फुंफकारकर माँ से कहा था, 'इस तरह से अपमानित कराने के लिए तुम हमें क्यों ले आयी थी ? स्वयं जूता खाती, हम लोगों को क्यों खिला रही हो ?'

चुन्नी ने भद्दी अश्लील बातें कही थी।

माँ चुपचाप सिर झुकाये बैठी रही। वह मुँह के बल लेटकर रोने लगी थी। कलकत्ता लौटने के बाद हरिमती और चुन्नी ने जूता मारने की बात का ही प्रचार किया था। तुलसी कीर्तनवाली को उसकी जवानी में मुहब्बत करने वाला बाबू बयाना देकर ले गया था और अपनी लड़की से जूते से पिटवाया। माँ ने चुप्पी धारण कर ली थी।

एकाध महीना बीतते न बीतते छोटे चौधरी आये। गाड़ी आकर खड़ी हुई। शिवनन्दन ने आकर कहा, 'छोटे चौधरी बाबू और वही जमाई बाबू आये हैं।'

'माँ आज गुस्से में थी। कहा था, 'नहीं। घर के अन्दर घुसने मत देना।'

उनके घर पर कोई मर गया है। चौधरी बाबू के पाँव नंगे हैं, बदन पर कुरता नहीं, चादर है।'

'मरा है! मरने दो। कह दो बयाना मैं नहीं ले सकूँगी।'

तब तक वे लोग घर के अन्दर घुस चुके थे। बात शायद उनके कानों में भी पहुँच चुकी थी। क्योंकि उस बात के सूत्र को ही पकड़ कर बोले थे, 'क्या कहूँ, कहने लायक मुँह नहीं है। यह बात नहीं कहनी है। भैया अचानक चल बसे!'

'चल बसे!'

'हाँ। ऐपोप्लेक्सी हुआ, जिसे संन्यास रोग कहते हैं।'

'बैठिये-बैठिये।'

'नहीं, बैठूंगा नहीं। खड़े-खड़े ही कह जाऊँ।'

'एकदम अचानक! उफ्!'

'एकदम अचानक नहीं। वही आप लोगों के साथ जो घटना घटी थी, उसी के कारण। लड़की के प्रति दबा हुआ क्रोध था। अचानक एक दिन किसी बहाने सवाल-जवाब चलने लगा। मेरी भतीजी को तो आप देख ही चुकी हैं। अपने बाप से सवाल-जवाब करते-करते दौड़ती हुई देव मन्दिर के अन्दर चली गयी और देवता के सामने खड़ी होकर बोली, 'हे प्रभो, यदि पाप या अपराध कुछ हुआ हो, पापी को पापी कहना यदि अपराध है तो मुझे सजा दो। मुझे एक ही सन्तान है, उसके सिर—।' भैया चिल्ला उठे, कमला! इसके बाद मुँह से एक भी शब्द न निकला। धड़ाम से गिर पड़े। श्राद्ध का सरो-सामान खरीदने आया हूँ। भाभी ने कहा था, भैया, तुम तो उस मुहल्ले में आते-जाते हो, सो तुलसी से कह देना कि वह मन में कोई दुःख न रखे। दुःख उसे मिल चुका है। दामाद आये हैं। मैं चल रहा हूँ, यह सुनकर बोले, मुझे अपने साथ ले चलिएगा छोटे चाचाजी। पूछा क्यों? जवाब में कहा, कमला मेरी पत्नी है। उसके अपराध के लिए माफी माँगना मेरा काम है, चाहे घर जमाई ही क्यों न रहूँ।'

माँ ने कहा था, 'तुम क्यों आये बेटा? यह बात उसके कानों में पहुँचेगी तो बहुत बड़ा काण्ड हो जायेगा।'

गोरा बाबू अब तक चुपचाप खड़ा था। अब वह बोला, 'होगा तो वह मुझे बरदाश्त करना पड़ेगा।' उसके बाद हाथ जोड़ कर कहा था, 'कहिये आप—'

'नहीं-नहीं बेटा। हम लोग नफरत करने लायक जात ही है। फिर भी तुम मेरे लिए स्नेह और सम्मान के व्यक्ति हो। मेरे पेट से जनमी लड़की मंजरी अगर ऐसी होती तो मैं क्या करती? तुम इस तरह हाथ जोड़ते हो तो मैं खुद को बहुत ही छोटी महसूस करने लगती हूँ।'

छोटे बाबू बोले, 'एक बात और। भैया जी आपको वहाँ ले गये थे, उसके पीछे उनकी एक और गोपनीय इच्छा थी। जिस दिन वह काण्ड हुआ और आप लोग चली आयी, उसी दिन रात के वक्त उन्होने मुझे बुलाकर कहा था, 'इतना बड़ा अन्याय हो गया हरेकृष्ण, फिर भी मुझे इसलिए मुँह बन्दकर सहना पडा कि कही कोई झमेला न खड़ा हो जाये। पहले यह बात समझ मे आती तो तुलसी को बुलावा नही भेजता।' तुम्हे खुल कर कहता हूँ, मुझे इच्छा थी और आज भी है कि उस लड़की को कुछ दूँ। समझ रहे हो न, वह मेरी लडकी है। तीन बरसो तक उसे कमला से भी ज्यादा लाड-प्यार किया है। इच्छा थी कुछ रुपया, मान लो पाँच हजार देकर तुलसी से प्रतिज्ञा करा लूँ कि किसी सुपात्र से उसकी शादी कर उसे गृहस्थ बनाये। तुलसी के पास अपना मकान है। एक मंजिले को मैंने दो मंजिला बनवा दिया है। समय भी अब बदल रहा है। कोशिश करने से पात्र मिल जा सकता है। एक मोटा-सा लिफाफा तकिये के नीचे से निकाल मेरे हाथ मे देते हुए बोले थे, यह देखो, रुपया भी मैंने रख लिया था। इसे ले जाकर तुम तुलसी के हाथ में दे सकोगे? मैंने वचन दिया था। अगर वह—'

माँ ने बहुत देर तक मौन रहकर सोचा था। उसके बाद कहा था, 'अगर प्रतिज्ञा का पालन न हो सके छोटे बाबू? हम लोगो के समाज में भी शादी होती है। आजकल थियेटर के ऐक्टर-ऐक्ट्रेस की भी शादी होती है। मगर आखिर तक सिलसिला नही चल पाता है। माला बदल कर मेरी भी शादी हुई थी।'

और कुछ देर तक मौन रहने के बाद फिर बोली थी, 'नही छोटे बाबू, जरूरत नही है। बड़े बाबू अगर हमारे दु:ख से दु:खित होकर इस तरह न मरे होते तो हो सकता है कि ऐसी स्थिति में स्वीकार कर लेती। सोचती, उसने जबान देकर जब कौल नही निभाया तो मैं उसे दिये हुए जबान को क्यो निभाऊँ या इसमें पाप ही क्या है? लेकिन अब ऐसा नही कर पाऊँगी।'

गोरा बाबू ने कहा था, 'मैंने कहा था, आप स्वीकार नहीं कीजिएगा।'

छोटे बाबू ने कहा था, 'उनकी आत्मा को शान्ति मिलती और क्या?'

मंजरी कमरे के कोने मे बैठी थी। पान का सामान फैला कर पान बना रही थी। अब वह उठ कर चली आयी। हाथ फैला कर बोली, 'दीजिये, मुझे दीजिये। मेरे पिताजी मुझे दे गये है। मैं ले रही हूँ।'

उसने संकोचहीन होकर छोटे चाचा की ओर देखते हुए हाथ फैलाया था। छोटे चाचा, विस्मय भरी आँखो से उसकी ओर देख रहे थे और महसूस कर रहे थे कि एक और आदमी की विस्मित दृष्टि अपलक होकर उसके चेहरे पर टिकी हुई है। उसने एक बार मुड कर देखा था। आँखो से आँखें मिलते ही कान के इर्द-गिर्द का हिस्सा उत्तप्त हो उठा था और एक गहरी लज्जा के भार से वह दृष्टि फर्श की ओर झुक गयी थी। कानो से सुना, 'वाह! बहुत ही अच्छा कहा आपने। अपने दिया हुआ रुपया आप लीजिएगा। लीजिए, थामिये।'

हाथ के पोर्टफोलियो बैग से एक लिफाफा बाहर निकाल इसी गोरा बाबू ने उसके हाथ मे दिया था। उन लोगों के चले जाने के बाद माँ ने कहा था, 'रुपया तो तूने लिया मंजरी, मगर कौन-सी जिम्मेदारी ली है इसका पता है ?'

उसने कहा था, 'पता है माँ। तुम कोशिश करो।'

माँ ने कहा था, 'मैं कोशिश करके क्या करूँगी ? तू थियेटर में जायेगी। तू अगर खुद ही किसी को बुला लायी तो—'

'मैं जबान देती हूँ माँ। थियेटर छोड चुकी हूँ। अब जाऊँगी भी नही।'

उस दिन उस क्षण और उसके पहले उसकी माँ ने उसके बारे में जो कल्पनाएँ की थी, उनमे दरार पड गयी। अब थियेटर नही जाना है। उसके लिए पात्र की तलाश करना शुरू कर दिया था। पात्र उन लोगो के समाज में भी मिलता है। बडे-बडे वकील-डॉक्टर और दो-चार धनी व्यक्तियों के ऐसे लडके-लडकी मिलते हैं जिनकी माँ समाज के मत के अनुसार शादी कर पत्नी नही बनी हैं, परन्तु सौभाग्यवश उन्हें अपने पिता की औरस सन्तान जैसा स्नेह प्राप्त हुआ है। वैसे लोगों की सचमुच ही शादी होती है। उनके बीच पढे-लिखे अच्छे लडके मिल जाते हैं। माँ ने वैसे ही युवक की खोज करना शुरू कर दिया था। उस रकम मे से एक भी पैसा खर्च नही किया था—बैंक में जमा रख दिया था। लेकिन कोई सुविधा हासिल नही हुई थी। उसकी माँ के मन में सन्देह पैदा हुआ था। इन लडके-लडकियो की कोई बाजारू पहचान नही थी, लेकिन उसकी माँ की थी। वह कीर्तनवाली की लड़की कीर्तनवाली थी। एक डॉक्टर की इसी किस्म के लडके के साथ बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ा था। लड़का अच्छा था। बाप ने दवा की एक छोटी-सी दुकान खोल दी थी। दुकान चलाता था, मैट्रिक पास भी था। लेकिन उसकी माँ डॉक्टर की मृत्यु के बाद एक धनी मुसलमान के साथ रहती थी। उसकी माँ की इसी खोट के कारण बातचीत का सिलसिला टूट गया। उसी तरह के एक वकील का भी लड़का उसकी माँ को पसन्द नही आया। बाप की मदद से वह अदालत के इर्द-गिर्द चक्कर काटता था, रोजगार भी कोई बुरा न था लेकिन उन लोगो के घर से संलग्न मुहल्ले में उसकी बदनामी फैली हुई थी।

छः

अंधेरे मे चलते-चलते मंजरी मुसकरा पडी। निःशब्द हंसी हंस दी। हाय-हाय !

इतने दिनों के बाद बात याद आने से मंजरी को हँसी आ गयी। विवाह के मामले मे वे लोग भी चरित्र देखते हैं ! लेकिन उससे क्या मर्द को रोका जा सकता

है ? लड़की को ? उसको भी नहीं। गोरा बाबू से उसकी भी शादी हुई है। जब शादी हुई थी उस समय वे एक-दूसरे को प्यार करने लगे थे। तब वह शुद्ध थी और गोरा बाबू का भी चरित्र निर्मल था। वह व्यभिचार का प्रस्ताव लेकर नहीं आया था, पैसे से उसका जिस्म खरीदने नहीं आया था। आया था शादी का प्रस्ताव लेकर। पैदल चलकर, अधमैले कपड़े पहने आया था—स्वयं को उसके निकट समर्पित कर देने के खयाल से।

एक गोरा बाबू वह था और एक गोरा बाबू यह है।

गोरा बाबू से आकस्मिक तौर पर मिनर्वा थियेटर में मुलाकात हुई थी। छः महीने के बाद विवाह-प्रस्ताव में दरार आ गयी थी। उसे काम मिल गया था—थियेटर के पदाधिकारियों ने बुलावा भेज कर उसे काम दिया था। धमकी चौधरी भवन के छोटे बाबू थियेटर के एक साझीदार हो गये हैं। नाटक उन्हीं का है। वही नाटक। नाम नया रखा गया है—हजरत बेगम। बादशाह महम्मद शाह की अपूर्व सुन्दरी कन्या हजरत बेगम को अहमद शाह दिल्ली की मसनद लौटा देने के एवज में शादी करके ले गया था। इस पार्ट के लिए छोटे बाबू—उसके चाचा ने उसे बुलावा भेजा था। उन्हीं के हाथ की चिट्ठी लेकर आदमी आया था। वरना वह नहीं जाती। उस समय भी माँ और लड़की के प्रतिज्ञा-पालन का उद्यम समाप्त नहीं हुआ था। हो सकता था कुछ ही दिन के बाद समाप्त हो जाता। आदमी चोरी करता है—अभाव में और स्वभाव से भी। उन लोगों के मामले में अभाव और स्वभाव दोनों मिल कर इस स्थिति में जोड़े घोड़े की तरह सरपट ले भागते हैं। हो सकता है कि कुछ ही दिनों के बाद उसकी माँ प्रतिज्ञा को तिलांजलि दे देती। कहती, 'वह सब भूल जा मंजरी। हम लोगों के साथ ऐसा नहीं हो सकता है। रुपया जो लिया है वह तेरा कोई गुनाह नहीं है। मैं मुकद्दमा दायर करती तो यह रुपया तुम्हारे निर्वाह-भत्ता के तौर पर मिल जाता। शायद वह भी मान लेता।' उसके पहले ही यह बुलावा आया।

बड़े चौधरी यानी उसके पिता की मृत्यु के बाद छोटे बाबू का बोलबाला बढ़ गया है। मिनर्वा थियेटर को गिरती हुई हालत में पैसा देकर वे इसके साझीदार बने हैं और नाटक चालू करेंगे। वह उन्हीं का नाटक है। उन्होंने खुद ही उसे हजरत बेगम के पार्ट के लिए पसन्द किया है। यहाँ के लोगों ने उसके राजलक्ष्मी पार्ट के सन्दर्भ में बताया है। कहा था, 'पार्ट उसने अच्छा किया था। हजरत बेगम का पार्ट भी बहुत कुछ वैसा ही है। चपल नहीं, धीर, लेकिन करुण और उदास। दो गीत भी जोड़ दिये गये हैं।

शाम को छोटे चौधरी माँ के पास आये थे। माँ ने कहा था, 'मैं उसके लिए पात्र की तलाश कर रही हूँ, छोटे बाबू। जवान जो दिया था वह मुझे भूला नहीं है। थियेटर तक में भर्ती नहीं कराया है। आपकी चिट्ठी न मिली होती तो नहीं देती।'

'हाँ, मैं इसीलिए खुद आया हूँ। जब तक शादी नहीं हो जाती है तब तक पार्ट करे। मैं यहाँ हूँ, निगरानी रखूँगा। इसके अलावा इसमें आपकी इच्छा के विरुद्ध कुछ नहीं होगा। यह बात मैं आपसे कहे देता हूँ। पार्ट करे। इस बीच मैं भी अच्छे लड़के की तलाश करूँगा। मतलब यह कि ऐक्टरों में से दो-चार व्यक्ति अब खासे प्रगतिशील हो गये हैं।' उन्होंने दो-चार व्यक्तियों का नाम बताया था।

माँ ने कहा था, 'आप कह रहे हैं तो वैसा ही किया जायेगा। आप तो उसके चाचा हैं। लेकिन आपने यह क्या किया? थियेटर का बोझा कन्धे पर ले लिया? गिरती हालत वाले थियेटर का?'

'गिरती हालत को मैं ऊपर उठाऊँगा, आप देख लीजिएगा। घर पर बहुत झगड़ा हुआ। मैंने मन ही मन हिसाब किया है। भतीजी अलग हो गयी।'

'अलग हो गयी?'

'हाँ। पहले अड़ कर खड़ी हो गयी। कभी नहीं होने दूँगी। वह सब मैं जानती हूँ। व्यवसाय तो करते नहीं, शराब पीकर बेहयाई करते हैं। सिर्फ रुपये की ही हानि नहीं होती, दुनिया के पुण्य का भी विनाश होता है। मैं यह नहीं होने दूँगी।' मुझे गुस्सा आ गया था मगर मैंने गुस्से को दबा कर कहा, 'कमला तू गलती कर रही है। यह कारोबार एक मात्र मेरा ही है।'उस पर बोली, यह तो रुपये की बात है, पुण्य की नहीं। पाप दुनिया का स्पर्श करने लगेगा।' मैंने कहा, 'नहीं, स्पर्श नहीं करेगा। भगवान पाप-पुण्य के मालिक हैं, वे सब कुछ जानते हैं।' वह कितनी बदमिजाज है सो तो आप देख ही चुकी है। मेरी एक बड़ी दीदी थी—बाल विधवा, उसे यह सब व्याधि थी। बड़ी ही दुर्मुख थी, उसी के द्वारा पाली-पोसी गयी है, इसलिए उसी के जैसा स्वभाव है। भैया का जिस दिन पैर टूटा था, उस दिन उसने लोढ़े से अपना सिर फोड़ लिया था। ठीक-ठीक कहा जाये तो भैया स्वयं घर में नहीं घुसे थे बल्कि घुसने के लिए उसने बाध्य किया था। इस लड़की को उसी का स्वभाव मिला है। मुझसे कह बैठी, 'फिर एक काम कीजिये, अब एक साथ रहना नहीं है, अलग होकर जो करना हो कीजिये।' कागज-कलम से हम लोग बहुत दिनों से अलग-अलग हैं। भैया बड़े ही दुनियादार आदमी थे। उन्होंने कागज-कलम से सब कुछ अलग कर दिया था। खाना और रहना साथ होता था। मैं अलग हो गया।'

माँ ने पूछा, 'दामाद? वह क्या कर रहा है छोटे बाबू? वह कैसा है?'

यह बात सुनते ही मंजरी के कलेजे में एक चोट लगी थी। दिल पछाड़ खाने लगा था। उसे इस बात की याद तभी आयी थी जब छोटे चाचा ने घर में प्रवेश किया था। लेकिन वह पूछ नहीं सकी थी कि वे कैसे हैं। तब मंजरी ने उसे प्यार भी नहीं किया था। उससे मुलाकात न हुई होती तो मंजरी जिन्दगी भर उदास ही रहती या उसे सब कुछ में व्यर्थता का अहसास होता, ऐसी बात नहीं। तब हाँ, कभी-कदा उसकी याद आती। थियेटर में प्रेमी-प्रेमिका का अच्छा अभिनय देखती तो जरूर ही याद आती।

उसकी माँ के सवाल पर छोटे बाबू ने एक लम्बी साँस ली थी। बोले थे, 'गोरा के लिए मुझे तकलीफ होती है। बहुत ही अच्छा आदमी है। गुणी आदमी। पढ़ता तो बी० ए०, एम० ए० पास कर गया होता। थियेटर में कैसा अभिनय करता है, यह तो देख ही चुकी हैं। कमला से शादी कर बेचारे की जिन्दगी जहर से भर गयी है। मुझसे मिलने-जुलने को मना कर दिया है। देस पर ही रहता है, वहाँ की जायदाद की देख-रेख करता है। यही उसके लिए सबसे बड़ी यातना है। बाहर से तो सब कुछ का मालिक है लेकिन हर रोज रात के वक्त घर आने पर पत्नी को हिसाब-किताब समझाते हुए नकद पैसा देना पड़ता है। कमला खुद सदूक खोल कर उसमें रुपया-पैसा बन्द कर देती है। हालांकि हर रोज सवेरे उठ कर गोरा को एक कटोरे पानी में अपने पैर के अगूठे को डुबोकर पादोदक अपने सिरहाने रखना पड़ता है। कमला उसे पीने के बाद ही चाय पीती है। गोरा को मैनेजर की हैसियत से महीने में पचास रुपया मिलता है। वह रकम लाकर कमला के हाथ में देना पड़ता है। एक रुपये की भी जरूरत पड़ती है तो खर्च का ब्योरा बताना पड़ता है। इस रुपये से उसके पान-जर्दा का खर्च चल जायेगा। कहती है, शादी की है तो पान-जर्दे का इन्तजाम कौन करेगा? बाबूजी की सम्पत्ति उनके नाती को मिलेगी। हम लोग चूंकि सम्पत्ति की देख-रेख करते हैं इसलिए खाना और कपड़ा-लत्ता मिलता है। उसमें से मुझे पान-जर्दा और तुम्हें सिगरेट नहीं मिल सकती है।'

जरा चुप रहने के बाद बोले थे, 'उसका लड़का सम्पत्ति का मालिक है। नाबालिग लड़के का गार्जियन स्वयं बनी है, गोरा को नहीं बनने दिया है। कहती है, कलकत्ते का अपना हिस्सा बेच देगी। खरीदना हमें ही होगा—यानी मुझे और मँझले भैया के लड़के को। इतना जरूर है कि वह मेरा आज्ञाकारी है। खैर चलता हूँ। अब तो मुलाकात होगी ही। मंजरी के साथ आप भी रिहर्सल में आइएगा। हाँ, यही अच्छा रहेगा।'

लगभग छः महीने बाद मिनर्वा थियेटर में गोरा बाबू से मुलाकात हुई। अधमैला कपड़ा था, अधमैली कमीज, चेहरे पर दुःख-कष्ट की छाप। सोने जैसा रंग भी फीका पड़ गया था। गोरा बाबू सामने की सीट पर बैठ कर थियेटर देख रहा था। वह चौंक पड़ी थी। सीन खत्म कर ग्रीनरूम में अपनी जगह पर अभिभूत जैसी बैठी थी। छाती अधीरता से धड़क रही थी। वह सुन्दर परिवेश, परिच्छन्न लावण्य —कुछ भी नहीं था। वही गोरा बाबू ऐसे हो गये हैं! क्यों? क्या हुआ? ... भी प्रकार वह अपने आपको संयत नहीं रख सकी थी। डायरेक्टर के बैठने गयी थी। छोटे चौधरी कुछ और लोगों के साथ बैठे थे। उस पर बोल उठे थे, 'कहो, क्या खबर है बाबा?'

छोटे चौधरी कुछ महीने के दरमियान पक्के थियेटरवाले हो गये थे। उसे भी 'बाबा' कहना शुरू कर दिया था। शुरू में अपने गाँव पर 'लड़की' कह कर सम्बोधित किया था। उसके बाद अपने घर पर 'बेटी' कह कर सम्बोधित करना शुरू किया था। अब थियेटर के मालिक होकर कह रहे हैं—बाबा। यहाँ लड़कियाँ भी श्रद्धा के पात्र को बाबा कहती हैं। वे भी लड़कियों को स्नेह से बाबा कहते हैं। छोटे चौधरी भी अभी मंजरी को बाबा ही कह रहे हैं। उसने कहा था, 'कुछ बातें करनी हैं बाबा।'

छोटे चाचा उठकर आये थे। एक छोटी सी गली में खड़े होकर पूछा था, 'क्या मंजरी ?'

'वे यानी जमाई बाबू आये हैं चाचा जी ? ऐसा चेहरा ? क्या हुआ है ? बीमार है ?'

छोटे चाचा ने जरा चुप रहने के बाद कहा था, 'वह लम्बी दास्तान है बेटी। गोरा उस घर से चला आया है।'

'चले आये है ?'

'आज तीन महीने से ज्यादा अरसा हो चुका है।'

क्या पूछे, मंजरी की समझ में नहीं आया था। चुपचाप खड़ी थी। चाचा ने ही कहा था, 'अपने घर चला गया था। वहाँ माँ-बाप तो हैं नहीं, दो भाई हैं, आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है। वहाँ बेशरम होकर कैसे रहेगा ? शायद उन लोगों ने भी कुछ कहा था। सहसा श्री गोपाल भण्डारी शाश्रादल की नौकरी स्वीकार कर कलकत्ता चला आया है। मैं बहुत कह-सुन कर थियेटर देखने को निमन्त्रित करके ले आया हूँ। यह नाटक उसके बड़े ही शौक का है न। थोड़ा-बहुत उसने भी लिखा है। हुसन-लुत्फा वाली बात उसी की कल्पना है। डायलॉग भी उसी का है। देखूँ, अगर लौटा कर ले जा सकूँ तो अच्छा रहे।'

वह लौट आयी थी। अपने छोटे चाचा—छोटे चौधरी के कमरे से। उनके समाचार से उसे बड़ा ही गहरा धक्का लगा था। उसको इच्छा हुई थी कि वह कहे, उन्हें थियेटर में रख लीजिये। लेकिन कह नहीं सकी थी। मन ही मन समझ गयी थी कि ऐसा नहीं हो सकता है। घरेलू झगड़े की शुरुआत हो जायेगी। दूसरी बात है, छोटे चौधरी के पास गोरा बाबू काम भी नहीं करेगा। बाद वाले जिस सीन में मंजरी का पार्ट था, उस सीन में जाने पर मंजरी ने गोरा बाबू की ओर देखा था। आँखों से आँखें मिली थीं। गोरा बाबू जरा मुसकरा दिया था। सीन से बाहर निकलने के बाद वह अपने आप को रोक नहीं सकी थी। स्टेज के एक आदमी को बुलाकर उसके हाथों में एक स्लिप भेजा था। लिखा था : एक बार अन्दर आइएगा। गोरा बाबू अन्दर आया था। प्रणाम कर वह सामने खड़ी हो गयी थी और असंकोच भाव से उसके चेहरे की ओर देखा था—एक गहरी ममता के आवेग में लज्जा-संकोच

आदि को परे ठेल दिया था। कोई बात नही कर सकी। बात गोरा बाबू ने ही की थी। हँसते हुए पूछा था, 'अच्छी हैं न ?'

अब की उसने किसी तरह कहा था, 'आप ऐसे हो गये ?'

गोरा बाबू ने हँसते हुए ही कहा था, 'भाग्य चक्र विचित्र होता है। यात्रादल मे नौकरी कर रहा हूँ।'

उसने जल्दी से उस बात को समाप्त कर दिया था, क्योंकि स्टेज के आदमी वहाँ थे। बोली थी, 'एक बार हम लोगों के घर पर आइएगा ? कल ?'

उसके बाद ही वह चली गयी थी, 'मेरा पार्ट आ गया है, चलती हूँ।'

दूसरे दिन गोरा बाबू आया था। सबेरे से ही उसके अधैर्य की कोई सीमा न थी। थियेटर से लौटने के बाद रात में वह सोयी नही थी। माँ से सब कुछ बताने के बाद कहा था, 'माँ, तुम उन्हें यहाँ रहने कहोगी ? वे बड़ी तकलीफ मे हैं। लगता है, खाना भी अच्छा नही मिल रहा है।'

माँ ने उसके चेहरे की ओर ताकते हुए कहा था, 'यह क्या अच्छा होगा मंजरी ? कमला चाहे जैसी हो,है तो तेरी दीदी ही। वह तुम्हारे बाप के दामाद हैं।'

वह बोली थी, 'मैंने इस रूप मे नहीं कहा था माँ।'

'फिर तो और भी हानि होगी। वह जैसी लडकी है···हम लोगों के घर पर ठहरने से—'

'तो फिर छोड़ दो माँ।'

वह सब संकल्प वह कर चला गया। गोरा बाबू दोपहर में आया और शाम को चलने के लिए खड़ा हुआ। बोला, 'रिहर्सल होगा, चल रहा हूँ।'

तब तक बहुत बातें हो चुकी थी। तब हाँ, गोरा बाबू ने यह नही बताया कि कमला से उसका क्या हुआ है। इतना ही कहा था, 'जो कुछ हुआ है, सुन कर क्या होगा ? तब हाँ, अब मैं वहाँ लौट कर नही जाऊँगा। वहाँ की हवा, अन्न, पानी, मनुष्य— कुछ भी मुझसे बरदाश्त नहीं होगा।'

यात्रादल मे एक सौ रुपया वेतन मिल रहा है। दल से वह परिचित था। परिचय चौधरी भवन में ही हुआ था। वे लोग यात्रा करने गये थे। कई बार जा चुके थे। वे लोग वहाँ के थियेटर में गोरा बाबू का पार्ट भी देख चुके थे। अब की वे लोग अभिनय करने वर्धमान गये थे। गोरा बाबू ने वर्धमान जाकर उन लोगो से मुलाकात की थी और कहा था, 'मुझे दल में रखिएगा ? मैं नौकरी करूँगा। एग्रीमेंट कर दूँगा कि जब तक सीजन चलेगा तब तक नही छोड़ूँगा।'

उन लोगों ने रख लिया है—खुशी से ही उसे रख लिया है।

वह थियेटर में ही शामिल होता। लेकिन शामिल होने की बो थी, क्योंकि छोटे चाचा बाधा डालते। या फिर चाचा को ही भतीजो दोषी बनना पड़ता। कल रात इस सन्दर्भ मे छोटे चाचा से बहुत बातें

छोटे चाचा ने लम्बी साँस ले कर कहा था, 'ख़ैर, रहने दो। तुमने ही ठीक कहा है। तब हाँ, अभाव हो तो मुझसे कहना।' बात समाप्त कर लम्बी साँस ले गोरा बाबू ने कहा था, 'मुझे अन्न-वस्त्र का कोई अभाव नहीं है। मैं मर्द हूँ, जवान हूँ। मेहनत कर मैं उन चीजों का इन्तजाम कर लूँगा। अभाव यदि कुछ मेरे जीवन में है तो वह शान्ति का अभाव है, सुख का अभाव है। उसे कौन मिटा सकेगा? कैसे मिटेगा?'

मंजरी के हृदय में एक बात बाहर निकलने को छटपटा रही थी, लेकिन मुँह से बाहर नहीं निकल सकी। वह बात जबान पर आयी भी तो विदा के क्षण में। वह बोला, 'फिर चलता हूँ।'

वह कुछ बोल नहीं सकी। हृदय में तब हलचल मची हुई थी। उसकी ओर अपलक ताकती हुई चुपचाप खड़ी रही। गोरा बाबू उत्तर दिये बग़ैर 'अच्छा' कहकर पीछे की ओर मुड़ा। पीछे की ओर मुड़ने ने ही मंजरी को जैसे सचेतन बना दिया—नहीं; वह गोरा बाबू को पीछे की तरफ मुड़ने नहीं देगी। उसकी कमीज पकड़, खींचते हुए उसने कहा, 'नहीं, जाओ नहीं।'

गोरा बाबू भी चुपचाप खड़ा रहा। मंजरी पुनः अपनी शक्ति खो बैठी थी। फिर भी किसी तरह कहा था, 'यहीं रह जाओ।'

'आज या हमेशा के लिए?'

'हमेशा के लिए। हाँ, हमेशा के लिए।'

'रहूँगा मंजरी। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। पहले दिन से ही। तुमने मुझे शान्ति दी।'

क्षण-भर में ही कुण्ठाहीन संकोचहीन होकर उल्लास से उसकी छाती से लिपट गयी थी। उसकी तमाम बातें समाप्त हो चुकी थीं।

गोरा बाबू ने कहा था, 'इस तरह नहीं मंजरी। दोनों एक-दूसरे को बाँधे रहेंगे जिससे कि कोई हमें खींच कर न ले जा सके।'

उसका उपाय गोरा बाबू ने ही खोज निकाला था। रजिस्ट्री कर शादी करने का उपाय न था। कमला से हिन्दू मत के अनुसार शादी हो चुकी थी। हिन्दू मत से यह विवाह नहीं हो सकता है। मंजरी अपने माँ-बाप के वैध विवाह की सन्तान नहीं है। वैष्णव मत से शादी होना तय हुआ। नवद्वीप जाकर वैष्णव शास्त्र के मतानुसार वैष्णव बन कर माला-चन्दन से उन्होंने एक-दूसरे का वरण किया था। जात, वंश और समाज को विसर्जित करने के बाद गोरा बाबू उदास नहीं हुआ था। बल्कि आनन्दित ही हुआ था। मंजरी को प्यार करते हुए कहा था, 'तुम्हारी माला मेरी मुक्ति की माला है। तिलक का चन्दन मेरा शान्ति का प्रलेप है।'

दो वर्ष के बाद उन्होंने एक-दूसरे से सलाह-मशविराकर मंजरी ऑपेरा की स्थापना की थी। शादी के बाद ही उसने थियेटर छोड़ दिया था। गोरा बाबू ने

कहा था, 'तुम चौधरियों को नहीं पहचानती। छोटे चाचा मुझे बहुत प्यार करते हैं। लेकिन वे यह बरदाश्त कर पायेंगे या नहीं, कह नहीं सकता। हो सकता है कि उन्हें खुद भी मालूम न हो। उन्होंने उस दिन मुझसे कहा था, तुम नयी शादी कर घर-गृहस्थी करो, नौकरी करो, व्यवसाय करो—मगर यात्रादल के साथ चक्कर काटते रहोगे, यह कौन-सी बात है। लेकिन तुमसे शादी करना उनसे बरदाश्त न होगा। तुम थियेटर छोड़ दो।'

उसे दुविधा नहीं हुई थी। छोड़ दिया था। छोटे चौधरी खुद आये थे, लेकिन मुलाकात नहीं हुई थी। वे लोग नवद्वीप चले गये थे। माँ ने हालांकि घोर विरोध किया था, मगर वह कुछ कर नहीं सकी। मंजरी ने उसकी बात नहीं मानी थी, माननी भी नहीं चाही थी। तब वह गोरा बाबू के लिए मृत्यु का वरण करने को भी प्रस्तुत थी। माँ ने छोटे चौधरी को इस बात की सूचना देनी चाही थी—मंजरी ने सुन कर कहा था, 'फिर मैं या तो जहर खा लूंगी या गले में फन्दा डाल लूंगी।' अन्ततः एक दिन झगड़ कर गङ्गाघाट चली गयी थी। माँ पीछे-पीछे गयी थी, लौटा कर ले आयी थी और कहा था, 'तुझे जो मर्जी हो कर, अब मैं कुछ भी नहीं कहूंगी।' इसके बाद ही सलाह-मशविरा कर, घर में ताला लगाकर नवद्वीप चली गयी थी। छोटे बाबू को चिट्ठी लिख गयी थी, 'दल लेकर मैं नवद्वीप जा रही हूँ। मंजरी को भी लिये जा रही हूँ। अब वह कीर्तन गायेगी। थियेटर में भाग नहीं ले सकेगी। ईश्वर का यही आदेश है। कृपया क्षमा करें।'

छोटे बाबू घर पर आये थे। मगर उन लोगों का घर बन्द देखकर चले गये थे। वैसे कोई खास जरूरत भी नहीं थी। उनका नाटक पहले ही मार खा चुका था। उस समय वह सोच रहे थे कि नये नाटक की शुरुआत करके देखेंगे। नहीं-नहीं, शौक पूरा हो चुका है, अब छोड़-छाड़ कर अपने काम में मन लगायेंगे।

एकाध महीने बाद वे लोग लौट कर आये तो छोटे बाबू थियेटर का काम छोड़-छोड़ कर अपने काम पर वापस जा चुके थे। अखबार देख कर गोरा बाबू ने इस खबर का अन्दाज लगा लिया था। लगातार दो सप्ताह तक अखबार में थियेटर का विज्ञापन न देखकर बताया था, थियेटर बन्द हो चुका है क्योंकि विज्ञापन नहीं है।

कलकत्ता लौट कर वह यात्रादल में चला गया था। मंजरी ने कीर्तन दल को नये सिरे से स्थापित करने की चेष्टा की थी। दूसरे थियेटर से उसके पास आदमी आया था परन्तु वह गयी नहीं थी। गोरा बाबू ने कहा था, 'तुम उसमें मत जाना मंजु, वरना मेरी शान्ति चौपट हो जायेगी। मैं बरदाश्त नहीं कर पाऊँगा। इसके अलावा छोटे चौधरी से मैं डरता हूँ। थियेटर जगत के वे जाने-पहचाने व्यक्ति हैं। सम्मानित व्यक्ति हैं। कहाँ क्या कर बैठेंगे, कोई नहीं कह सकता। कीर्तन का दल लेकर ही रहो। कलकत्ते के बाहर मत जाना। वरना बाहर जाने पर मुझमें उत्कंठा

बनी रहेगी। छोटे चौधरी ने चिट्ठी के साथ आदमी भेजा था, यह बात तुम्हें नहीं बतायी थी।'

वह चौंक पड़ी थी, 'चिट्ठी कहाँ है ?'

गोरा बाबू ने कहा था, 'धमकी की चिट्ठी थी। वह क्या मेरे हाथ में दी थी ? पढ़ कर सुना दिया था और चला गया था।'

'चिट्ठी में क्या लिखा था ?'

'और क्या लिखेंगे ? मैं तुम्हें प्यार करता था। खुद ही शादी करने को कहा था। लेकिन वह क्या वेश्या की लड़की से ? जात-धर्म विसर्जित कर ? छिः छिः। कमला ने तुमसे बुरा बर्ताव किया है। उसकी मैंने निन्दा की है। यहाँ तक कि तुमसे कहा था कि तुम नयी शादी कर लो। तुमने यह खुदकुशी की है। मेरे लिए तुम मर चुके हो। मृत आदमी को कटु बातें कहने से लाभ ही क्या है ? यह समाचार सुन कमला ने तुम्हारा कुश का पुतला जला कर विधवा सजने की बात ठानी थी। बहुत कष्ट से उसे रोका है। विधवा की साज-पोशाक उसने नहीं पहनी है, तब हाँ गेरुआ पहन सन्यासिनी का वेश धारण कर लिया है। तुम्हें एक बात कह दूँ। कभी हम लोगों के इलाके में, कम से कम बर्धमान के उस अंचल में, यात्रा करने नहीं आना। और, मंजरी या उसकी माँ भी कीर्तन गाने न आये। प्रेत-हत्या या प्रेतिनी-हत्या से कोई पाप नहीं होता। हम लोगों का हाथ नरक तक पहुँचने लायक लम्बा है।'

मंजरी ने आतंकित दृष्टि से उसके चेहरे की ओर देखते हुए कहा था, 'तुम ?'

'मैं छोटे चाचा की बात मानूँगा। बर्धमान के कटोया सबडिवीजन नहीं जाऊँगा। न तो दु:ख देने जाऊँगा और न दु:ख पाने ही जाऊँगा।'

अबकी उसका व्यतिक्रम कर झूलन में बयाना लिया था। रथ के दिन बयाना मिला। दल के लोग आग्रहशील थे, सच्चाई को जाहिर करना न हो सका। पाचुन्दी में –

एकाएक मंजरी को लगा, शायद उस अली चौधरी को रखकर मजलिस अशुभ करने का नतीजा भी इन सबों के साथ जुड़ा हुआ है। तभी से मुसीबत, कम से कम कुछ अशुभ, गहरा होता जा रहा है। गोरा बाबू के दादा की मृत्यु इसी आघात से हुई।

दूसरा वर्ष भी इसी तरह व्यतीत हुआ था। उन लोगों का कीर्तन-दल नामी रहने के बावजूद अच्छी तरह चल नहीं सका था, मगर यात्रादल में गोरा बाबू का सम्मान बढ़ गया था, नाम फैल गया था। दो साल बाद माँ तुलसी का देहान्त हो गया। अचानक एक दिन गोरा बाबू ने कहा, 'अब तो मेरी चिन्ता बढ़ गयी मंजु। मैं बाहर का चक्कर काटूँगा। कहा जा सकता है कि आसिन से वैशाख तक तुम्हें अकेले रहना पड़ेगा।'

उसने हँस कर कहा था, 'मुझ पर विश्वास नहीं होता है ?'

'तुम पर विश्वास है, लेकिन आदमी पर नहीं। इसके अलावा रोग-बुखार की बात है। अब तक माँ थी, मुझे किसी बात की चिन्ता न थी।'

उसने कहा था, 'तो फिर कुछ दूसरा काम करो। दुकान वगैरह। पाँच हजार रुपया तो है ही।'

गोरा बाबू ने कहा था, 'उहूँ। वह काम मेरे द्वारा नहीं होगा। घाटा उठाना पड़ेगा।'

कई दिन बाद बोला था, 'मंजु, हम लोग यात्रादल की स्थापना करेंगे। तुम और मैं मिल कर।'

'तुम और मैं मिल कर यात्रा का दल? क्या कह रहे हो तुम?'

'हाँ, महिला यात्रादल का नाम तुमने नहीं सुना है? त्रैलोक-तारिणी का दल था, राधा विनोदिनी का दल था। मालिक थी औरतें। औरतों का पार्ट औरतें ही करती थी। चलेगा अच्छा। औरतें औरतों का पार्ट करेंगी तो जरूर ही अच्छा चलेगा।'

'जरूर चलेगा।'

'यह बात मुझे गोपाल घोष ने बतायी। उसे तुम जानती हो— मामा कहती हो। उसने त्रैलोक्य तारिणी दल में अक्षरारम्भ किया था। बहुत सारे दलों में मैनेजरी कर चुका। मजा हुआ आदमी है। आज मुझसे कहा, गोरा बाबू आपको इतनी सुविधा है। आप लोग पति-पत्नी दोनों जने पार्ट कीजिएगा। अपना यात्रादल बना डालिये न। जरूरत तो बस चार-पाँच जोड़े की ही है। इसका इन्तजाम मैं कर दूँगा। बहुत सारे लोगों के बारे में मुझे पूरी जानकारी है। जबानी ही बता रहा हूँ। उदाहरण के लिए डांसिंग मास्टर की बात लीजिये। आपके साथ भंडारी दल का नातू उस्ताद का छात्र बंसी था। वह नाट्य जगत के सखी वैच की आशा के साथ एक तरह से घर-गृहस्थी चला रहा है। पेट के कारण वह यात्रादल के साथ चक्कर लगाता रहता है। आशा को थियेटर में कितना पैसा मिलता ही है? किसी तरह काम चलाती है। यात्रा का सीजन जब खत्म हो जाता है तो उसी के यहाँ पड़ा रहता है। दोनों को नौकरी मिल जाये तो अभी तुरन्त चले आयेंगे। आशा भी नाचती-गाती है। मसलन डुएट आदि का काम उन दोनों से अच्छी तरह चल जायेगा। बाकी सखी वैच का काम लड़कों से चल जायेगा। उसके बाद बूढ़ा हीरो चाहिए। सो रीतू बाबू है। वह अच्छा ऐक्टर है। वह भी एक औरत के साथ गृहस्थी बसाये है जो बढ़िया नाचती है, बढ़िया गाती है। यात्रादल में रीतू बाबू की बदनामी है। बीच-बीच में अवसर मिलते ही कलकत्ता भाग आता है। भाग कर आता है उसी औरत की वजह से। उसकी औरत का नाम है पटली। छरहरे बदन की है, उम्र कुछ ज्यादा हो चुकी है। लेकिन पेन्ट करने से समझ में नहीं आता है। अब भी खेमटा नाच नाचती है। बयाना मिलता है। उससे कुमारी हीरोइन का काम मजे से चल जायेगा। और मोहन ऑपेरा के 'रक्तगद का हरिवासर' में जो व्यक्ति 'हरिनाम के परिणाम में पाओगे

कितना मजा, भव के पार चले जाओगे फहराते हुए ध्वजा' कहता हुआ भक्त का पार्ट करता था, वह बूढ़ा आदमी है—उसकी लड़की उम्रदार हो चुकी है, तब हाँ बहुत ज्यादा नहीं। वह भी थियेटर में पार्ट करता था। वे लोग तुरन्त मिल जायेंगे। कल मेरे पास आकर बूढ़ा बड़ा ही दुःख प्रकट कर रहा था : सुशीला बेकार पड़ी है, कोई काम-धन्धा नहीं है। इसके अलावा और दो जोड़े कल आपको मिल जायेंगे। बाकी की कोई चिन्ता नहीं। देखिये, कर सकिये तो कीजिये।'

मंजरी को यह प्रस्ताव बुरा नहीं लगा था। आहिस्ता-आहिस्ता शाम तक अच्छा ही लगा था। मन ही मन उसने खासा अच्छा एक सपने का राज्य गढ़ लिया था। देश-देशान्तर ट्रेन, बस, बैलगाड़ी में घूमना! उसके बाद डेरा। उसके बाद मजलिस। दर्शकों की करतल ध्वनि। ये दोनों एक ही कमरे में रहेंगे। एक साथ रहेंगे। सब के लिए वह प्रोप्राइट्रेस होगी। उसे अपनी माँ के कीर्तन-दल की मूल गायिका के सम्मान की बात याद है। मँजा हुआ झकमकाता पनबट्टा लेकर शिवनन्दन साथ में जाता था। उस पर एक सुन्दर तौलिया रखा रहता था। उसी तरह उसका भी पनबट्टा जायेगा। थियेटर में वह छोटा पार्ट करती थी। यहाँ वह हीरोइन बनेगी, गोरा बाबू हीरो रहेगा। उस पर नशा चढ़ गया था। बोली थी, 'वही करो। पैसा है ही। नाम क्या रखा जायेगा?'

गोरा बाबू ने कहा था, 'मंजरी ऑपेरा। प्रोप्राइट्रेस : मंजरी देवी। मैनेजर विजय (दास) मजुमदार।'

पहला नाटक था वही प्रवीर-पतन। गोरा बाबू ने ही गिरीश चन्द्र के जना नाटक से प्रवीर पतन तैयार किया था। जना : मंजरी दासी, प्रवीर : गोरा मजुमदार, शिखिध्वज : रीतू घोष। विदूषक : हरिनाम का रसिक नाडू देव उर्फ गोविन्द देव। मोहिनीमाया : पटली चारु, गंगा : शोभा रानी, मदनमंजरी : गोपालीबाला, अर्जुन : नाडू बाबू (नरेन मित्तिर), डुएट नृत्य-गीत : बंसी मास्टर और आशा।

१९४० ई० में दल को पहला बयाना कलकत्ते की विश्वकर्मा पूजा में माणिकतल्ला के नहर के किनारे के कारखाने का मिला था। बंसी, आशा, नाडू बाबू, शोभा, रीतू घोष, पटली चारु, नाडू बाबू, गोपालीबाला, ननीबाला, हारु घोषाल और उन दोनों पतित दम्पति के अतिरिक्त और पैंतालीस व्यक्तियों को लेकर मंजरी ऑपेरा की शुरुआत हुई थी। उनमें से पटली चारु की मृत्यु हो गयी है। ननीबाला चली गयी है। हारु भी चला गया है। ननी को हटा दिया गया है। उसके बाद हारु ज्यादा तनख्वाह के लोभ में दूसरे दल में चला गया है। ननी का सपना टूट गया है। वह कलकत्ता वापस आ गयी है—जिस्म के कारोबार में उसे उम्मीद ज्यादा है। अभी उसकी उम्र है, उसमें खूबसूरती भी है। वह हारु के नशे में आयी थी। यात्रादल की तकलीफ भी बरदाश्त की थी। तकलीफ काफी कुछ होती है। नशा दूर हो गया है, अतः अब वह तकलीफ क्यों बरदाश्त करे? नाडू देव मर

चुका है। शोभा है। उन्ही लोगों के स्थान पर अबकी वाबुल बोस —कॉमिक ऐक्टर और अलका चौधरी आये हैं। एमेच्योर से आये हैं। भले घर की लडकी है अलका। वाबुल बोस उसे ले आया है। तब हां, उन दोनो के दरमियान कोई रिश्ता नही है। मुसीबत उसी के चलते आयी है। अलका बेलगाम घोडा है। इसके अलावा भले घर की शिक्षित लड़की है। वडी ही गर्वीली। सब को अपने से छोटा समझती है। तब हाँ, उस लडकी मे सामर्थ्य है। मगर सामर्थ्य रहे तो किसी की उपेक्षा करे ? दल को चोट पहुँचाने से काम नही चलेगा। उसे एक और भी शंका हो रही है—

एकाएक टॉर्च की तेज रोशनी पडने से मजरी चौक पड़ी। 'आह' कहकर आँखों को ढंक लिया और खडी हो गयी।

गोपाल घोष ने अपने टॉर्च की रोशनी फेंक कर पूछा, 'कौन ? कौन इस तरह टार्च जला रहा है ?'

सात

१९४४ ई० में वे लोग काली पूजा के अवसर पर अंग्रेज कंपनी की कोलियारी में गाना गाने आये हैं। यात्रादल अभिनय करने के बाद बाहर नही निकला है—आज आखिरी रात है, गाना था। 'प्रवीर पतन' नाटक समाप्त हुआ। आज रात बयाना करने वाले यात्रा दल के नायक पक्ष ने पूरे दल को निमन्त्रित किया है। दूसरी ओर रात की खुराकी के लिए दल के लोगो ने सलाह-मशविरा कर अलका चौधरी के माध्यम से शराब के नशे में दिलदरिया गोरा बाबू को पकड़ा है। बाबुल बोस ने गोपाल घोष को अपमानित किया है। लेकिन उससे भी बड़ी बात उसके लिए अली चौधरी का मोहिनीमाया की भूमिका का वह नाच है। वह आकर डेरे पर लेटी हुई थी। लेकिन लेटे रहने से उसका काम नही चलेगा। उठ कर चलना पड़ रहा है। जाकर खड़ा होना होगा, वरना काम नहीं चलेगा। मगर रास्ते मे इस तरह चेहरे पर किसने टॉर्च की रोशनी फेंकी है ?

गोपाल घोष ने अपने टॉर्च की रोशनी फेक कर कहा, 'कौन ? कौन इस तरह टॉर्च की रोशनी फेंक रहा है ?'

'तुम लोग कौन हो ? इस तरफ साथ मे औरत लिए क्यो आ रहे हो ?'

'हम लोग यात्रादल के हैं।'

'यात्रा दल के ? लगता है, मोहिनीमाया है। प्रवीर को भुला कर मसान ले जा रहे हो ?'

'ऐ ऐ—जो सो क्या बक रहा है ?' जिन लोगों ने टॉर्च की रोशनी फेंकी थी, उनमें से एक व्यक्ति ने कहा।

'कौन-सी गैरवाजिब बात कही है साले ? वे लोग इधर कहाँ जायेंगे ? वहाँ तो मसान है। बिलकुल ठीक, वही है, वही। धत्त, टहोका क्या लगा रहा है ? दुत्।'

एक आदमी उठ कर आगे बढ़ आया। टॉर्च जलाता हुआ ही आया। मंजरी को देख कर उसने हैरानी के साथ कहा, 'आप ! आप तो जना सजी थीं। आप ही तो प्रोप्राइटेस हैं। इस ओर कहाँ जाइएगा ? थोड़ी दूर बाद ही नदी और मसान है।'

गोपाल घोष बोला, 'वही तो रोशनी झलमला रही है। हम लोग पंडाल यानी मजलिस के वेश-मन्दिर जायेंगे।'

'नदी के किनारे की कोलियारी से कोयला निकाला जा रहा है, यह उसी की रोशनी है। रात-दिन काम चल रहा है, युद्ध का ऑर्डर है न ! आप लोग रास्ता भूलकर चले आये हैं। रास्ता बायें मुड़ गया है, लेकिन वहाँ मुड़ने के बजाय आप लोग दाहिने चले आये हैं। चलिये, मैं रास्ता पकड़वा देता हूँ।'

मंजरी के कानों के इर्द-गिर्द सन्नाटे का स्वर गूँज रहा था। महिला यात्रादल है। इस दुनिया में व्यभिचार-लोलुप पुरुषों की कोई कमी नहीं। बहुत-कुछ सुन कर बरदाश्त करना पड़ता है। लेकिन मन की इस स्थिति में आज की बातों ने सब कुछ को जहर से भर दिया।

'ओह, आप जना हैं ! उफ् अपराध हो गया। उफ्, आपका पार्ट देख-सुन कर रो पड़ा था। मगर मोहिनीमाया ने नशा जगा दिया है। अन्यथा न लें।'

शराब पीकर यह आदमी लड़खड़ा रहा है। फिर भी वह उठकर आया है। मंजरी बोली, 'नहीं। कुछ अन्यथा नहीं लिया है। आप जाइये।'

'माँ काली की कसम। आपकी बात याद नहीं आयी थी—उसी की याद आ गयी।'

'तू जा। ऐ बिशे, चला जा। आप लोग चलिये।'

उसने वेश-मन्दिर तक आकर पहुँचा दिया। दूर से ही दीख रहा था कि कुछ लोग कुरसी पर भीड़ लगाये बैठे हैं। गोरा बाबू, रीतू बाबू, बाबुल घोस, अर्जुन का पार्ट करने वाला नया ऐक्टर रमणी नाग और एक आदमी। अचानक मंजरी के मस्तिष्क में आग भभक उठी। उठी। उसे चिल्लाने की इच्छा हुई।

'कहाँ, कहाँ हैं डायरेक्टर मैनेजर ? आइये-आइये, आपको मोहिनीमाया की बाबत लोग क्या कह रहे हैं, सुन आइये। कितनी उद्‌गार पूर्ण प्रशंसा की जा रही है ! वह मेडल की अपेक्षा बहुत ज्यादा है। छिः छिः छिः। उसे और यह भी कहने की इच्छा हुई, 'दल का विघटन मैं यही कर रही हूँ। अब नहीं चलाना है। मर्जी हो

तो आप लोग चला सकते हैं। लेकिन मैं नहीं चलाऊँगी। रात दो बजे के बाद खुराकी के दावे की मीटिंग में मैं कैफियत नही दे सकूंगी। फैसला नहीं कर पाऊँगी। कहने के लिए मन को दृढ बनाकर वह वहाँ खड़ी हुई। लेकिन बोल नही सकी। उजली रोशनी में उसे सब लोगों ने देख लिया था, सबकी दृष्टि उसी पर टिकी थी। सबके चेहरे पर हँसी है। सबकी दृष्टि में आग्रह है। सभी खुश हो उठे हैं। ठीक उसी समय गोरा बाबू ने अभिभाषण की मुद्रा में अपना लम्बा हाथ बढ़ा कर कहा,'लीजिये, वे आ गयी हैं। वही !'

गोरा बाबू के चेहरे पर चमक आ गयी है।

गोरा बाबू इतना ही कह कर चुप नही हुआ, दो कदम आगे बढ़ कर बोला, 'नायक पक्ष के अधिकारी वर्ग आये हैं, तुमसे मिलना चाहते हैं। तुम्हारा आज का पार्ट देख कर बोले, बहुत ही सुन्दर। ऐसा उन लोगों ने कभी नही देखा था। तुम डेरे पर चली गयी हो, यह सुन कर डेरे पर जाना चाहा था। बोले, वे नहीं खायेंगी, यह कहीं हो सकता है। वे लोग अलग से पूरी तैयार करा देंगे। सब्जी तैयार करा देंगे। नेपा को तुम्हारे पास भेजा था, वह कहां है ?'

मंजरी अपनी बात नही कह सकी। सामने कोलियारी पूजा कमिटी के बाबू लोग खड़े हैं। तीन व्यक्तियों को वह पहचानती है। आज कई बरसों से वह लगातार आ रही है। कोलियारी के बड़े बाबू—सुरेन बाबू - पूजा कमिटी के मालिक हैं। बूढा आदमी, साठ से अधिक उम्र के, पके सफेद बाल, वैसी ही मूंछें। वे सफेद मजबूत कफ वाली कमीज पहने खड़े है। उनके पीछे हैं शिवेन बाबू, कमिटी के सेक्रेटरी, उनके पीछे स्टाफ क्लब थियेटर के नामी ऐक्टर श्रीश बाबू। सुरेन बाबू ने हँस कर कहा, 'आइये। मतलब है कि मै आशीर्वाद देने के लिए खड़ा हूँ। आज, मतलब है कि मैनेजर और साहब—सूबा ने मेडल दिये हैं। मतलब है कि वह अच्छा रहा। हुनर की खातिर होती है। मगर, मतलब है कि आज आँखों के आँसू से आपने हृदय आर्द्र कर दिया है, कि, मतलब है कि, इसलिए ब्राह्मण की सन्तान होने के कारण आशीर्वाद दिये बगैर मन को सन्तोष नहीं हो रहा है।'

सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते इन बातों को सुन मंजरी का समस्त क्षोभ और ग्लानि की उमस जैसे एक बारिश से स्निग्ध ठंडी हवा के बीच पड़ कर समाप्त हो गयी। सलज्ज प्रसन्न हँसी से उसका मुखड़ा भी कोमल हो गया और उस पर एक चमक आ गयी। बरामदे पर जाते ही उसने झुक कर पाँवों का स्पर्श करते हुए प्रणाम किया।

'मैं यही बात गोरा बाबू, रीतू बाबू से कह रहा था। इन्हें—क्या तो नाम है—पोस्टर मे है, तीन दिन सुन चुका हूं—मतलब यह कि, आइ० एम० सॉरी—'

'मेरा नाम बाबुल बोस है सर। छोटा नाम है न, आलपिन, बटन वगैरह की तरह खो जाता है। इसमे आपका दोष नही है।'

सुरेन बाबू 'हा-हा' कर हँस पड़े। बोले, 'वण्डरफुल ! ये बहुत नामी कॉमिक ऐक्टर होंगे। मतलब है कि देख लीजिएगा। आप लोग जब पहली बार आये थे, उस बार भी जना का ही मंचन किया था। मतलब है, आप ही जना थीं। अच्छा हुआ था। उस बार भी रोया था। लेकिन अब की, मतलब है कि बहुत ही सुन्दर—मतलब है कि, दुनिया उदास हो गयी। मतलब है, उसका कारण क्या है ? तब आपकी उम्र कम थी। अब बढ़ गयी है—मतलब है, यू आर ग्रोन। गोरा बाबू, गोरा बाबू के साथ भी यही बात है। मतलब है, हि हैज ग्रोन। आपका तमाम दल अबकी 'ग्रो' कर चुका है, मतलब है कि बहुत अच्छा 'ऐडिशन' हुआ है। हम लोगों के—मतलब है ये—आलपिन जैसा क्या तो नाम है, मतलब है—आलपिन बोस ही कह रहा हूँ, बहुत अच्छा—'

चरण स्पर्श कर बाबुल बोस बोला, 'मेरा हो आलपिन आपने मुझे चुभो दिया सर। आप मजेदार आदमी हैं।'

उसकी पीठ पर हाथ रख सुरेन बाबू बोले, 'विदूषक का पार्ट आपने अच्छा किया है। बहुत ही सुन्दर।'

यहाँ के थियेटर के ऐक्टर धीश बाबू ने कहा, 'मोडर्न ऐक्टिंग है, सुन्दर हुआ है। मोहिनीमाया का नाच भी बिलकुल मोडर्न है। कॉन्सेप्शन बहुत ही अच्छा है।'

'जरा गड़बड़ी हो गयी धीश। अल्ट्रा मोडर्न है। क्या कहते हैं बहुत ही अच्छा 'टैलेन्ट' है, यह कहता हूँ। तब मतलब है कि भैया, कुछ ज्यादती हो गयी है, मानी मतलब है कि—'ओवर डुइंग' हो गया है।'

'आप यह क्यों कह रहे हैं बड़े बाबू ?'

बाबुल बोस बोल पड़ा, 'क्यों कह रहे हैं सर ? उसके बाल, मूँछ पक कर सफेद हो गये हैं—ऑल ह्वाइट—और आपके ऑल ब्लेक।'

'गुड गुड ! आप ने मार्के की बात कही है आलपिन भैया। तब एक बात है आलपिन भैया, कि अगर यह मंजरी बिटिया उस 'नेकेड डान्स' के बाद छाती पीट-पीट कर रो नहीं पाती, अगर, मतलब है, आग की लपट की तरह जल नहीं पाती, तो मतलब है कि मोहिनीमाया की तसवीर ही तितली की तरह पंख फैला कर उड़ती फिरती। प्रवीर मरता तो लोग कहते, घर में जाकर मरो। मोहिनीमाया को बुला दो, एक बार और आकर नाच जाये।'

'आप यह क्या कह रहे हैं सर ?'

'जरूर। तब, मतलब है कि मैं राइट हूँ। ऐसा न होता तो दोनों साहब जना के पार्ट में ताली बजाते ! मतलब है कि जना की ऐक्टिंग देख कर दंग रह गये। कहा, लड़के के शोक में टर्न्ड मैड। ओ गॉड ! पट्ठे थोड़ा-बहुत फुँफकार भी रहे थे।'

'बड़े बाबू।' बनियान पर अंगोछा बाँधे एक आदमी आकर खड़ा हुआ, 'खाना ठण्डा हो रहा है।'

'ओ ! तो फिर सब कोई चलिये । आप का खाना अलग तैयार करा दूंगा । आप नही खायेगी, यह कही हो सकता है ?'

मंजरी ने मीठे स्वर में कहा, 'चलिये । हम लोग दो मिनट बाद चल रहे हैं ।'

'ठीक है, ठीक है । चलो जी ।'

वे लोग चले गये । गोपाल घोष आगे बढ आया, 'रहने दे । अभी बात रहने दें । खा-पीकर डेरे पर कहिएगा ।'

'नही । अभी कह देना अच्छा रहेगा ।'

गोरा बाबू आगे बढ आया, 'कौन-सी बात ? खुराकी की ? गोपाल बाबू ने जाकर तुमसे कही है ?'

'हाँ । इतना जरूर है कि खुद नही बोले थे । वे हम लोगो के कमरे में कैश रख रहे थे । मैंने कहा : इतनी रात में कैश ? आज तो सबको खाने का निमन्त्रण मिला है । उन्होने बताया कि तुमने देने कहा है ।'

'कहा है । यह उन लोगो का प्राप्य है । हाँ, मिलना चाहिए ।'

'कितने अचरज की बात है ! मैं क्या कह रही हूँ, इसे पहले सुन लो ।'

गोरा बाबू फिर भी चुप नही हुआ । बोला, 'तुम प्रोप्राइट्रेस हो, मेन ऐक्ट्रेस, आज दो-दो मेडल पाकर गरीबों की मामूली बात पर तुम्हारा मूड बिगड़ गया है । सोचती हो, तुम्ही लोगो की कीमत है, और किसी की नही ।'

एक ही क्षण मे गोरा बाबू दूसरी ही तरह का गोरा बाबू हो गया । मजरी ने उसका यह रूप कभी नही देखा था । वह स्तब्ध हो गयी ।

प्रसन्न मन पुनः कड़ुआ होता जा रहा है । फिर भी अपने स्वर मे यथा साध्य मिठास घोल कर बोली, 'तुम्हारे चलते कितनी बड़ी मुसीबत है ! मैं अकेले ही मालिक हूँ ? तुम क्या कोई नही हो ? वह बात किसने कही है ? इसके अलावा मुझे दो मेडल मिले हैं, तुम्हे एक मेडल मिला है और असी को दो । लोगों की कीमत नही है, यह भी मैंने नही कहा है ।'

'तब क्या बोली हो ?'

'कहा है, खुराकी मिलनी चाहिए । यह कह कर तुमने ठीक ही किया है । लेकिन इतनी रात मे लिये बगैर काम नही चलता क्या ? उन लोगों को क्या नही मिलती ? कल सबेरे ले लेते ।'

मजरी अब खड़ी नही रही । बातें कर वह महिला-वेश मन्दिर को ओर चली गयी । उन्हे बुलाकर लाना है ।

बाबुल बोस अपने तौर-तरीके के साथ बोल पड़ा, 'लांग लिव मंजरी देवी । ऑल राइट । कल सबेरे ही सब लोग लेंगे । अब आप लोग सभी गरमा-गरम पूरी खाने चलें । डालडा की गन्ध आ रही है । 'वेली' मे फायर । मेक हेस्ट । ...ल बाबू, आह, आपके फादर-मदर सर्वज्ञ थे जनाब । उन्हें मालूम था कि यात्रादल

दौरान मजे का कुछ पाकर इस तरह हँस पड़ा।

अपने लिए शराब ढालते हुए बाबुल ने कहा, 'वह क्या है ? हँसी ?'

'हाँ।'

'उस तरह की हँसी कैसे हँसी जाती है, बताइये तो।'

'गहराई से सोचने से।'

'माई गॉड ! फिर तो मेरा हुआ नहीं।'

'और एक काम कर सकते हो। शकुनि की हँसी हँस सकते हो ?'

'शकुनि की हँसी ? माई अल्ला। शरत बाबू की किताब में शकुनि की हलाई के बारे में पढ़ा है। हँसी—'

'विश कर्णार्जुन मे नरेश बाबू की शकुनि-हँसी नही देखी है ?'

'सुनी नही है ?'

'बट, वह तो और ही तरह की है बिग ब्रदर।'

'मेरी इसी तरह की है। मतलब यह कि शकुनि जैसी जिसकी तीक्ष्ण दृष्टि होती है, वह बहुत ऊपर से सब कुछ देखकर इसी तरह हँसता है। नरेश बाबू जिस तरह हँसते हैं उस तरह भी हँस सकता है। मैं जिस तरह हँसा, वैसी भी हँसी होती है।'

'हेड मे नही समाया !'

'जरूरत नही है। उठो।'

'उठूँ ?'

'उठो-उठो। बोतल रख दो। झुण्ड के झुण्ड लोग बाहर निकल रहे हैं।' दल के लोग सचमुच ही बाहर निकल रहे हैं। बाबुल बोला, 'येस-येस, लेडीज भी निकल चुकी हैं।'

'अली ? तुम्हारी फ्रेंड अलका चौधरी ?'

'वही तो है।'

'तो फिर आँधी नही चली। मैंने सोचा था—'

बाबुल बोस ने हँसते हुए कहा, 'इतना मत सोचें सर, मत सोचें।'

रीतू बाबू बोला, 'तुम नही जानते। गौर नहीं किया है।'

'जानता हूँ। गौर किया है। सब-सब। बट—आर अलका को नहीं जानते। वह खाने के समय गुस्से में नही आती है। पैसा देने में 'ना' नहीं करती है। एण्ड लिपिस्टिक लगाना नही भूलती है। चलिये, मुझे सब मालूम है।'

गोपाल घोष की आवाज सुनायी पड़ी। वह पुकार रहा है, 'नीतू ! ऐ रे अरे ! ऐ नीतू !'

रीतू बाबू बोला, 'अहा हा। गोपाल [illegible] है। [illegible] तो फिर वह उठेगा नहीं। काटने से भी नहीं। मगर [illegible]

बाबुल बोस ने 'हैक' जैसी आवाज करते हुए थोड़ी-सी थूक फेंकी। बोला, 'नीच कहीं का !'

रीतू बाबू होले से हँस दिया।

इसी क्षण मंजरी और गोरा बाबू औरतों को अपने साथ ले सीढ़ी पर आकर खड़े हो गये।

'आइये रीतू बाबू।'

मंजरी बीच में है, उसकी एक ओर अलका और दूसरी ओर गोरा बाबू। पीछे दूसरी-दूसरी औरतें हैं। रीतू बाबू ने मन ही मन कहा, गुड।

खा-पीकर सब लोग डेरे पर आकर लेट गये। आज कोई खास शोरगुल नहीं हुआ। आज भोजन कुछ ज्यादा हो गया है। सबकी आँखें नींद से झपक रही थी। और-और दिन दो-चार झड़पें भी हो जाती थीं और वह सोने की जगह के लिए। आज वह भी नहीं हुआ। सिर्फ बीड़ी-सिगरेट के सन्दर्भ में चर्चा चली थी। दल की ओर से हर व्यक्ति के लिए बीड़ी-सिगरेट निर्धारित है। वह सबके बीच बाँट दी गयी है। खाने के बाद नायक पक्ष ने पान-बीड़ी-सिगरेट ट्रे में लाकर रख दिये थे। ट्रे को लपककर गोपाल ने ले लिया था और हर किसी को बाँट दिया था। सिगरेट पाने वाले को सिगरेट और बीड़ी के आसामी को बीड़ी। एक पैकेट अपने हाथ से उठाकर गोरा बाबू को दिया था। बाबुल बोस ने हाथ मोड़कर लगभग एक पैकेट छीन लिया है। गोपाल कुछ बोले कि इसके पहले ही कहा था, 'जबान बन्द ! खामोश ! गो।'

रीतू बाबू से गोपाल ने खुद ही कहा था, 'आप इन सबों को रख लीजिये।'

'नहीं। एक ही दो।'

गोपाल ने कुछ लोगों को ज्यादा बीड़ियाँ दी हैं। देने के बाद भी सिगरेट दो-तीन पैकेट बच गयी थी। बीड़ी भी थी। पान-जर्दा के मामले में भी यही किया था। जो कुछ बच गया था, गोपाल घोष ने अपने पास रख लिया है। गोपेन साँई तुनक मिजाज है। वही बुड़बुड़ा रहा था, 'नायक पक्ष की ओर से दी हुई चीजों को लेकर मैनेजर अपना घर क्यों भरेगा ? अरे, कोई कुछ क्यों नहीं कह रहा है। हम लोगों के बीच बाँट दे।'

अफीम खोर भूदेव ने कहा था, 'सो भैया, सो रहो। कान के पास बुड़-बुड़ मत करो।'

'यही कहो।'

'सो रहो भैया, सो रहो। कुल मिलाकर नींद आयी है। व्यर्थ ही चिल्ला रहे हो, जमेगा नहीं। दूत का पार्ट करते हो। मिलती है तो बीड़ी हो। सो लेना, कल सवेरे लेना। कल सवेरे फिर बोरिया-बस्ता सँभालने का झमेला है।'

गोपेन साँई बुड़बुड़ाते-बुड़बुड़ाते ही सो गया है। सोने के बाद उसकी नाक बजने लगी है।

गोपाल घोष की भी जगह उसी कमरे में है। उसकी बगल में ही नीतू है। उसकी बगल मे विपिन यानी विपिन धर। वह दल का मुनीम है साथ ही मजलिस का नौकर भी। गोपाल के साथ बहुत दिनो से है, उसके साथ ही बहुत सारे दलो मे चक्कर लगा चुका है। मजलिस के काम के लिए उसके जैसा विशेषज्ञ सहज ही नही मिलता। कौन-से सीन में किस चीज की जरूरत पड़ेगी, किसके हाथ मे क्या देना पड़ेगा यह सब उसे जवानी याद है। भीम दुःशासन का रक्तपान कर मजलिस मे घुसनेवाला है तो ऐसी स्थिति में लाल रंग का बर्तन हाथ में थामे वेश-मन्दिर और मजलिस के रास्ते पर खड़ा रहता है। किस पार्ट मे कौन औरत खड्ग धारण करेगी, यह वह जानता है और खड्ग उसे थमा देता है। माला, फूल जिसको जब जरूरत पड़ती है, दे जाता है। उसके बाद सब कुछ लेकर सहेजकर रख देता है। गोपाल की तरह उसके भी कोई सगा नही है, जीवन का आकर्षण गाँजा और बाबा तारकेश्वर हैं। मौका मिलते ही वही चला जाता है। पैसा खत्म होते ही गोपाल के पास आकर हाजिर होता है।

पूरे कमरे मे तब सन्नाटा रेंग रहा था। दो-चार व्यक्तियों की नाक भी बजने लगी थी। सब कुछ देखने-सुनने के बाद गोपाल कमरे के अन्दर आया। वेश-मन्दिर मे विन्यासकारियो को, उस ओर बरामदे पर रसोई के आदमियो को, महिला के कमरे मे महिलाओं को, मालिक-मालकिन के कमरे में उन लोगों को, देख आया है। विपिन तब जगा हुआ था। अंधेरे मे बैठकर ही गाँजा पी रहा है। हाथ के टॉर्च की रोशनी एक कोने से दूसरे कोने तक दौड़ाने के बाद गोपाल बिस्तर पर बैठ गया। कुछ सेकण्डों तक चुपचाप बैठा रहा, उसके बाद बोला, 'सभी तुम्हारी ही इच्छा है, इच्छामयी तारा' और अपने आपको बिस्तर पर निढाल छोड़ दिया। उसके बाद कई सेकण्डों के बाद बोला, 'हुआ! हो गया! समझे विपिन!'

'क्या ?'

'बारह बजने-बजने को है। देर नही है।'

'शराब ढाल चुके हो क्या ?'

'धत्त। बहुत दिन पहले छोड़ चुका हूं। तुम्हें मालूम नही है ?'

'फिर ? बारह बहुत पहले बज चुके हैं।'

'तुम और ज्यादा गाँजा पिया करो।'

'तुम बल्कि पिया करो। तभी तुम्हारा मति-भ्रम दूर होगा। आँख से साफ-साफ देखोगे कि दो बज रहे हैं। कहते क्या हो कि बारह बज रहे हैं।'

'घड़ी नही गधा, घड़ी नही, दल के बारह बज चुके हैं।'

विपिन चौक पड़ा, 'क्यो ?'

'नम्बर एक, कोई जगा तो नहीं है ? अगर है तो रहे, सुनता है, तो सुने।'

'हाँ, बताओ।'

'नहीं, चलो बाहर चलें।'

बाहर आ बेरेक की सीढ़ी पर बैठकर बोला, 'नम्बर एक, खुराकी के सिलसिले में जो मिसाल पेश की गयी उससे लाभ कुछ भी नहीं हुआ। नम्बर दो, वह नयी लड़की अलका। तीन नम्बर भी कह सकते हो—या नम्बर दो झगड़ा टन्टा भी कह सकते हो। वह है—मालिक-मालकिन के कमरे में खामोशी है। न तो हँस रहे हैं, न ही फुंफकार रहे हैं—यानी रो भी नहीं रहे हैं। सन्नाटे का आलम है। आँधी आने के पूर्व का लक्षण।'

'फिर ?'

'फिर क्या ? हम लोगों की जिन्दगी तो बिना बसेरे के पक्षी जैसी है—पेड़ की साख पर रात गुजारते हैं। एक पेड़ आँधी की चपेट में आ जाता है तो दूसरे पर जा कर बैठते हैं। तब हाँ, अब मैं नौकरी नहीं करूँगा। बस, चक्कर काटता रहूँगा।'

विपिन बोल उठा, 'हरि बोलो, मन बम विश्वनाथ। मुझे अपने साथ ले लेना।'

थोड़ी देर चुप रहने के बाद गोपाल बोला, 'बहुत पहले ही चला गया होता जी। लेकिन इस नीलू की वजह से—'

'चुप रहो, चुप रहो। तुम्हें शरम-हया कुछ भी नहीं है। इस उम्र में छिः छिः ! लोग-बाग छिः छिः करते हैं। मैं भी करता हूँ।'

'तुम भी करते हो ?'

'करता नहीं हूँ ? जरूर करता हूँ। पता नहीं पिछले साल कहाँ से उसे लाकर अपने कन्धे पर सवार करा लिया।'

गोपाल ने हँसकर कहा, 'देखो, और कोई चाहे छिः छिः करें, मगर तुम मत करो। तुम्हें बताता हूँ। यात्रादल है, बच्चों को लेकर निन्दाजनक घटना होती है। यात्रादल में यह चीज पेट की मैल की तरह है। तब हाँ, कम होती जा रही है। बहुत पहले का जमाना तुमने नहीं देखा है। लोग मुझसे कहते हैं, मैं बरदाश्त कर लेता हूँ। कहने का उपाय नहीं है। तुमसे भी नहीं कहा है। बुढ़ापे में मेरी शादी करने की बात तुम्हें याद है ? पन्द्रह साल पहले ? तब गणेश आपेरा में रहता था।'

'लो। बालों में तुमने खिजाब लगाया था, मूँछें बनवा ली थीं। कपड़े-लत्ते के शौकीन हो गये थे। और कहते हो कि मुझे याद नहीं है। गणेश आपेरा का हीरो तुम्हें परेशान करता था। अहीरी टोले में तुमने किराये का मकान लिया था। तब तुमसे घनिष्ठता नहीं थी, फिर भी दो-चार दिन वहाँ गया था। तुम पत्नी की पहरेदारी करते रहते थे। उसकी तलहथी और तलवे के अलावा मैंने कुछ नहीं देखा था, मुँह भी नहीं।'

'हाँ। देश जाने पर वह अचानक हैजे से मर गयी।'

'हाँ, उसके बाद ही तुम इस तरह के आदमी हो गये। शराब छोड़ दी। शौक-शान से मुँह मोड़ लिया।'

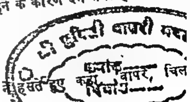
'वह मरी नहीं थी, समझे? गाँव पर ससुराल मे रख आया। वहाँ से उसे गाँव का एक नौजवान लेकर भाग गया। मेरा चेहरा तो अच्छा था, बाबू साहब था मैं, रोजगार भी कोई बुरा न था। उस समय मेरे बाल पक चुके थे मगर उम्र कोई खास ज्यादा न थी। अभी साठ है, पन्द्रह साल पहले पैंतालीस थी। उसे प्यार भी बेशुमार करता था। फिर भी भाग गयी। शरम के मारे किसी को बता नहीं सका। बहुत ही शरम का अहसास हो रहा था। जानते हो, पहले मैं त्रैलोक्य तारिणी के दल मे दाखिल हुआ था। उस समय मैं कितना खूबसूरत था! चेहरा कैसा था! दल में छोकरा गायक था तानी मित्तिर। बहुत अच्छी तान छेड़ता था—इसीलिए उसका नाम तानी पड़ गया था। कलकत्ते का ही लड़का था। तानी डालिम को प्यार करता था। वह मुझे देखकर पागल हो गयी। मेरा भी झुकाव हो गया था। तानी से झगड़ा हुआ। तानी ने मुझ पर चाकू से वार किया। हाथ मे चोट लगी थी, तब हाँ, बहुत ही कम। उसमे मेरी जीत हुई। जब मैंने शादी की तो डालिम बहुत रोयी थी। खैर, यह बात रहे। तीनेक वर्ष पहले वर्धमान मे उसी पत्नी से अचानक मुलाकात हो गयी। दाई का काम कर पेट चलाती थी। मुझे पहचान लिया। दल के डेरे के पास आ एक आदमी को पकड़ा और मुझसे मुलाकात की। पैर पकड़कर बहुत रोयी-धोयी। दुःख-दुर्दशा का कोई अन्त न था। वह बहुत पहले ही भाग चुकी थी। उसे दमा हो गया है। उसी का यह लड़का है। क्या करूँ? उसे मैं रुपया-पैसा नहीं दे सका। समझते हो, इज्जत पर चोट पहुँचती है।। लड़का सुन्दर है। कहा था, तुम्हारा ही लड़का है। उम्र का हिसाब करके देख लो। जानता हूँ, बात झूठी है। फिर भी ममता हुई। उसे लाकर मालिक-मालकिन से कहा, 'इसे रख लीजिये। चेहरा-मोहरा ठीक है, तालीम मैं दे दूँगा।' उसके प्रति ममता है। लोग-बाग कुछ और ही सोचते हैं। सोचने दो। पूरे शरीर मे तो कलंक की कालिमा लगी है, उस पर एक तरह और। रहे, कुछ हर्ज नहीं।'

डिंग-डाग, डिंग-डांग, डिंग-डाग—तीन बार घण्टा बजा। कोलियारी के दफ्तर मे हर घण्टे घड़ी आवाज करती है। तीन बज चुके हैं। गोपाल ने घबराकर कहा, 'लो, उठो-उठो। तीन बज गये। कल साढ़े सात बजे रवाना होना है। पलासबाड़ी की लॉरी आठ बजे आयेगी।'

'तीली जला दो। तुम्हारी बात सुनते रहने के कारण दम लेना ही भूल गया था।'

गोपाल ने तीली जलायी।

विपिन ने जोर से दम लिया।



एक ही क्षण में सारा दुःख भूल गोपाल ने हँसते हुए कहा, 'बापरे, चिल भक् से जल उठी!'

आठ

कोलियारी के घड़ियाल मे छः की घंटी बज उठी। कार्तिक का महीना, दिन छोटे हो गये हैं। सूर्य नहीं उगा है, उस पर चारों तरफ पहले धुएँ की एक तह फैली है। कोयले की धूल और धुआँ। मजदूरों के मकानों के सामने बड़े-बड़े कच्चे कोयले का ढेर जलता रहता है। बाबू लोगों के डेरे और मेस मे इसी कोयले से चूल्हा जलाया जाता है। बॉयलर के चोंगे के मुँह से धुआँ निकल रहा है। कच्चे कोयले से अधिक धुआँ होता है। सर्दियों की सुबह ओस के भार से धुआँ आसमान की ओर उठकर नहीं जा पाता है। जमीन के इर्द-गिर्द फैला रहता है। नदी के दूसरे किनारे बादलों की तरह धुएँ का पुंज बीच-बीच में ऊपर की ओर उठ रहा है। मंजरी को लोगों से पता चला है कि नदी के उस किनारे के घटिया स्तर के कोयले से जलावन का कोयला तैयार होता है।

अपने कमरे के दरवाजे को खोल मंजरी खड़ी थी और बाहर की ओर ताक रही थी। कल रात उसे नींद नहीं आयी है। खाना खाकर लौटने के बाद गोरा बाबू बिस्तर पर निढाल पड़कर आँख बन्द करते-करते बोला था, 'बापरे! रोशनी बुझा दो। धरती हिलडुल रही है।'

उसे सोने को भी नहीं कहा था।

रोशनी बुझाकर मंजरी बोली थी, 'इतनी शराब क्यों पी ली।'

जवाब दिया था, 'इस बात का उत्तर नहीं है। उत्तर होता भी नहीं।'

'सिर धोओगे?'

'नहीं।'

'आराम मिलेगा।'

'आह! नहीं।'

गोरा बाबू को विरक्ति का अहसास हुआ था। शायद अब उससे बरदाश्त नहीं हो रहा था। या फिर उसके साथ कुछ और बातें थी जो खुराकी-प्रकरण के सिलसिले में जाहिर हो चुकी थी, जिसे यथासाध्य विनम्रतापूर्वक गोरा बाबू को मालिक स्वीकार करते हुए मंजरी ने धो-पोछ देने की चेष्टा की थी। गोरा बाबू की बात को ही उसने बरकरार रहने दिया था। इसके साथ मोहिनीमाया का कुछ मोह जुड़ा हुआ है क्या? जुड़ा रहना कोई आश्चर्यजनक नहीं है। मर्द! मर्दों का स्वभाव ही ऐसा होता है। राम और युधिष्ठिर रामायण-महाभारत मे हैं। उससे नाटक लिखकर वे लोग अभिनय करते हैं, यह सही है। लेकिन वे दुनिया में नहीं है। उस पर है उन लोगों की दुनिया—यात्रादल का वेश-मन्दिर और ग्रीनरूम। वहाँ मर्दों और औरतों के द्वारा अलग-अलग सजने-सँवरने के बावजूद शर्म करने से काम नहीं चलता—शायद वह शर्म की जगह भी नहीं है। छाती पर चोली पहन, हो सकता है कि पीछे की ओर मुड़कर मर्द से कहना पड़े, कस दो तो। छाती का आधा हिस्सा खुला रहता है, अचानक मर्द

आकर पुकारता है, सामने आकर खड़ा हो जाता है। ऐसी स्थिति में किसी तरह कपड़े की ओट से बातचीत करनी पड़ती है। साड़ी पहनने के पहले ही साया-ब्लाउज पहने बाहर निकलना पड़ता है। यहाँ कटाक्ष मे दोष नही है, रंग-रस मे शील का कोई बन्धन नही है—यहाँ नाचने-बजाने वालों की अतृप्त वासनाएँ प्रेत बनकर मनुष्य के हृदय में नाचती रहती है।

वह गोरा चक्रवर्ती को दोषी करार नही कर सकती। उसके जीवन से अपना जीवन बाँधकर उसने छल-कपट नही किया है—प्रताड़ना के पथ पर अग्रसर नही हुआ है। लेकिन आज यदि—। प्रवीर भी तो मदन मंजरी के प्रेम में डूब गया था। जना जैसी माँ का वह पुत्र था, उसके सिर पर जीवन-मरण का प्रश्न झूल रहा था—उसने अर्जुन से युद्ध किया है। युद्ध क्षेत्र से वह माँ के पास लौट जायेगा। जब तक युद्ध का अन्त नही हो जाता है तब तक उसे ब्रह्मचर्य पालन करना पडेगा। दूसरे दिन अन्तिम युद्ध होना है। ब्रह्मचर्य पालन करते हुए दूसरे दिन स्नान कर वह माँ से आशीर्वाद लेगा और उसे देवी जाह्नवी से महास्त्र प्राप्त होगा। उससे अर्जुन जरूर ही मारा जायेगा। सम्पूर्ण भारत में उसके नाम की घोषणा होगी—कुरुक्षेत्र-सिंह, पाशुपत बाण का अधिकारी, अर्जुन विजयी विश्व विजयी प्रवीर कुमार। मोहिनीमाया के इन्द्रजाल से वह सब कुछ भूल गया। नारी मायाविनी होती है। उसके कटाक्ष से शिव विचलित हो जाते हैं। कन्या को देखकर ब्रह्मा में मोह जगता है। नारी के रूप में इन्द्रजाल है। उसी रूप के आवरण का उन्मोचन कर जब वह पुरुष के सामने खड़ी होती है और चितवन चलाकर उसका आह्वान करती है—तो किसमे ऐसी सामर्थ्य कि स्वयं को संयत रख सके? नाटक करते-करते उसे जिस प्रकार पुराणों की जानकारी प्राप्त हो चुकी है, उसी प्रकार यात्रा के वेश-मन्दिर मे बैठकर उसने पुरुषों की दृष्टि पहचान ली है। यहाँ नारियों की दृष्टि का चपल-कटाक्ष अहरह उनके लिबास के नकली मोतियों के हार की तरह टूटकर लुढकता रहता है—लेकिन उसी के बीच जब कान के टॉप या नाक की कील का असली मोती प्रकाश की छटा से झलमलाने लगता है तो जिसकी आँखों मे उसकी छटा लगती है, उसका अहसास सिर्फ वही नही करता बल्कि सब लोगो की समक्ष मे यह बात आ जाती है। अलका की काली आँखों मे उसने कल दो आश्चर्यजनक काले मोती या झिलमिलाते दो नीलम की छटा देखी थी। गोरा बाबू की आँखो के मोह को भी उसने देखा है। गोरा बाबू इतना मँजा हुआ ऐक्टर है, मगर वह कुछ क्षणों के लिए पार्ट भूल बैठा। उसके बाद इतनी खुशियाँ! इतनी शराब पी। अली की बात पर दल के मान-अपमान का खयाल न कर उसके हाँ में हाँ मिलाया? इतनी देर के बाद कहता है, तुम प्रोप्राइट्रेस हो, तुम दल की हीरोइन हो, तुम्हे दो मेडल मिले हैं—इसीलिए यह सोचती हो कि तुम्हारी ही कीमत है और इन गरीबों की नही है? हाय-हाय-हाय! कैसे तुमने यह कहा? जब से दल का गठन हुआ है, दल किसकी बात पर चल रहा है? मंजरी या विजय चक्रवर्ती की बात पर? कल रात खाने के समय मंजरी ने क्या तुम्हारी बात पर हामी नही भरी थी?

नहीं था कि—दल मेरा है या तुम्हारा ? वेश मन्दिर में औरतों के निकट जाने के बाव-जूद उसने अलका से कुछ नहीं कहा था। जो कुछ भी कहा था, खेल के दौरान ही कहा था। खाना खाने के पहले मंजरी ने उसे सिर्फ समझाया था। तुम वह सब सुनने आये थे। मैनेजर-ऑथर-डायरेक्टर की हैसियत से आये थे—लेकिन दरअसल तुम्हारे अन्दर का असली आदमी आया था। लेकिन

खिड़की के पास खड़ी हो मंजरी कल रात की बातों के बारे में सोच रही थी। उसका सब कुछ देख-सुनकर और उससे भी अधिक और किसी चीज की गन्ध पाकर, असहनीय दृश्य और असहनीय कुछ के तीखेपन से उसकी चेतना लुप्त होती जा रही थी। अभिनय के समय बहुत मुश्किल से उसने आत्म-संयम रखा था। आत्म-संयम का एक सहारा भी उसे मिल गया था; सम्भवतः विधाता ने उसके लिए इन्तजाम कर दिया था। उसने अपने पार्ट के माध्यम से अपना समस्त क्षोभ और जलन जाहिर कर दी थी। सिर्फ लोग-बाग ही दंग नहीं रह गये थे—वह स्वयं भी कल के अभिनय की बात सोचकर अचम्भे में आ रही है। उससे भी उसका क्षोभ समाप्त नहीं हुआ है। उसने जो काम कभी नहीं किया है, वही कर बैठी थी – गोरा बाबू को छोड़कर ही चली आयी थी। रास नायक पक्ष कम्पनी की ओर से सबको खाने का निमन्त्रण दिया गया था, वह बात भी भूल चुकी थी। गोपाल मामा ने खुराकी की माँग की बात छेड़कर उस बुझती हुई आग को कुरेद दिया था। वहाँ भी गोरा बाबू ने अलका का समर्थन किया है। तुम इतने दिनों से किये जाने वाले उसके आन्तरिक आत्मदान को भूल गये मंजरी के विरुद्ध तुमने अलका का समर्थन किया ! फिर भी मंजरी ने आत्मसंयम रखकर तुम्हारी ही राय को महत्त्व दिया, तुम्हें ही मालिक कहा। इस पर भी तुम मंजरी के पक्षधर नहीं बने। उससे बड़ी हो गयी अलका ! मंजरी औरतों के वेश-मन्दिर में गयी थी। सबकी मुग्ध प्रशंसा और अलका के नाच के सन्दर्भ में उसकी राय से कम्पनी के बड़े बाबू की राय मिल जाने से उसका मन खुश हो गया था। धधकती हुई आग भी बुझ गयी थी। औरतों के वेश-मन्दिर में प्रवेश कर उसने अलका से मीठी बातें ही कही थीं।

बात को तूल न देकर मंजरी ने कहा था, 'पौराणिक नाटक है न ! इसमें धर्म भाव को बड़ा बनाना पड़ता है। उस तरह के आधुनिक फैशन के तौर-तरीके से व्याघात पहुँचता है। है न ?'

उत्तर में अलका हँस पड़ी थी। बोली थी, 'क्या कहूँ ? आपका दल है, आप कहती हैं तो होता होगा। तब हाँ, बहस करने को कहें तो कहूँगी—वह भी तो देव-ताओं के द्वारा भेजी गयी मोहिनीमाया थी, वह रूप के छल से प्रवीर जैसे पत्नी परायण और मातृ भक्त वीर को लुभाने आयी है। प्रवीर क्या सहज ही लुब्ध हो जायेगा ? वहाँ माया एक बारगी, कहने का मकसद यह है कि—नग्न रूप में खड़ी हो जाती है।'

मंजरी ने मन ही मन तारीफ की थी—शिक्षित लड़की है न। बहुत ही अच्छा कहा है। इसके अलावा कितने अच्छे शब्द का प्रयोग किया—नग्न ! वाह !

ठीक उसी समय मालिक ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया था, 'सुनती हो जी, तुम लोगों की इच्छा क्या है ? खाना ठण्डा हो रहा है।

कमरे के अन्दर आकर कहा था, 'इतनी बातचीत क्यों हो रही है ? कोई रंज हो गया है क्या ? या फिर तुम किसी पर रंज हो ? प्रोप्राइट्रेस ठहरी, इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं।'

मंजरी ने व्यग्य के साथ ही कहा था, 'नहीं। प्रोप्राइट्रेस तारीफ कर रही है।'

'किसकी ?'

'सबकी। यहाँ तक कि तुम्हारी भी। आज सबका पार्ट अच्छा हुआ है। गोपाली ने मदन मंजरी का पार्ट बहुत अच्छा किया है। शोभादी का भी गंगा का पार्ट खासा अच्छा हुआ है। तब हाँ, अलका ने बाजी मार ली है। मोहिनीमाया का ऐसा खेल दिखाया कि क्या कहा जाये !'

गोरा बाबू ने कहा था, 'हाँ ! जरूर ही एक खेल था। कहो अलका, मैंने तुमसे नहीं कहा था ? मैंने मजलिस से बाहर निकलने के समय कहा, 'बहुत अच्छा।' इस पर उसने कहा, मंजरी दी कहे तब तो। मैंने कहा, जरूर कहेगी।'

'हाँ। तब हाँ, जो बुरा लगा था, उसके बारे में कह चुकी हूँ—वही नग्न होकर खड़ी होने का भाव। वह बड़ा ही भद्दा हो गया। मैंने जब मजलिस में प्रवेश किया तो दो-चार आवारे भद्दी आवाजें कसने लगे। उस समय मुझे गुस्सा आ गया था। वही तो, बड़े बाबू ने भी इसी तरह की बातें कहीं। कल यह सब बात होगी। चलो, अब खाना खाने चलो।'

अलका का हाथ पकड़ उसे अपनी बगल में ही रखा था। दूसरी ओर गोरा बाबू था।

खाने की मजलिस में सब कुछ और अधिक सहज-स्वाभाविक हो उठा था।

'फिर ?'

कमरे में आते ही गोरा बाबू में बदलाव आ गया ? क्यों ? आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ था कि उसे प्यार किये बगैर गोरा बाबू सोये। सिर पर हाथ रख या ठोडी पर हाथ रख या फिर हाथ पकड़ कर उसकी तारीफ करते थे। वह हँस कर कहती, 'उस्ताद तो तुम्ही हो।' किसी-किसी दिन वह पहले से ही प्रशंसा करने लगती 'ठहरिये उस्ताद जी, प्रणाम कर लूँ। बड़ा ही अच्छा पार्ट किया है।'

यह सब उनके जीवन में यात्रा की मजलिस टूटने के बाद कमरे की मजलिस के बँधे-बँधाये कनसर्ट या डुएट नाच जैसी बात थी। इस दौर को खत्म किये बगैर वे

कभी सोते नहीं थे। शराब पीकर गोरा बाबू बहुत बार आज की तरह काबू के बाहर और असहाय हो चुका है। कमरे में आकर कहा है, 'सिर धो दो।' वह सिर धो देती। कितनी ही बार उलटी कर चुका है। उसने स्वयं धोकर पोंछ दिया है। आज भी लौटने के रास्ते मे उस लाड़-प्यार मे एक नया अध्याय जोड़ने के लिए वह मन ही मन प्रस्तुत होकर आयी थी। उसने निश्चय किया था, कमरे में आने पर उससे हँसकर कहेगी—बल्कि आज उस्ताद जी के बदले यात्रा की भाषा में कहेगी—हाथ जोड़ कर ही कहेगी, 'प्रभो स्वामी—अधर्मी अपराधिनी। क्षमा करो तुम मुझको।'

वह भी आँखों को झपकाते शरारत भरी हँसी हँसते हुए बात को समझने की कोशिश करेगा।

'क्षमा नहीं करोगे ?'

वह घुटनों के बल बैठ जायेगी।

इसके बाद वह कहेगा, 'नहीं क्षमा नहीं करूँगा। सजा दूँगा मैं तुम्हें कठोर बाहु के बंधन में बना कर बन्दिनी।' कह कर हो सकता है···लेकिन डेरा लौटने के समय कैसा-कैसा तो बदलाव आ गया। डेरे पर आ दरवाजा बन्द होने के पहले ही लेट गया। पाँव लड़खड़ा रहे हैं, शरीर सीधा नहीं रह पा रहा है, इसलिए लेट गया। उसने शिकायत भरे लहजे में कहा, 'इतनी शराब क्यों पी ?' जवाब मिला, 'इस बात का कोई उत्तर नहीं है।' उसने पूछा, सिर 'धोओगे ?' उत्तर दिया, 'नहीं।' उस शब्द के माध्यम से रूखापन अचानक आकर छिटककर लगने वाली चिनगारी की तरह शरीर को दाग गया।

मन में आग जल रही है—उसी का एक टुकड़ा 'नहीं' शब्द के साथ छिटक-कर चला आया है।

उसने ठीक सचेतन भाव से स्विच बन्द नहीं किया था बल्कि उस शब्द के साथ ही वह चौंक पड़ी थी और हाथ का धक्का लगने के कारण स्विच अपने आप बन्द हो गया था। और कुछ मिनटों तक दुःख और अभिमान से स्तंभित की तरह खड़ी रहने के बाद वह अपने बिस्तर पर आकर लेट गयी थी।—यह क्या है ? क्यों ? क्या हुआ ?

मेडल ! अजीब दुनिया है यात्रा का दल। एक व्यक्ति को यदि तालियाँ मिलती हैं और दूसरे को नहीं मिलती हैं तो वह दुखित ही नहीं होता बल्कि उसे गुस्सा आता है, मन मे आक्रोश पैदा होता है। मेडल मिलने से वह दुख, वह आक्रोश बैशाख की प्रबल आँधी के बादलों की तरह मन में बिजली की कौंध जगाता है। गोरा बाबू के द्वारा ही उसे यात्रा की ऐक्टिंग की तालीम मिली थी। शुरू मे सिर्फ गोरा बाबू को ही मेडल मिलता था, उसे नहीं मिलता था। वह भी उदास हो जाती थी। जैसे बेवजह एकाएक उदास हो गयी हो। बेवजह लम्बी साँस चलने लगती थी, लगता अब उससे बरदाश्त नहीं हो पा रहा है। लगता, धत यह भी कोई जिन्दगी है ! डेरे पर आने के बाद गोरा बाबू उससे हँस कर कहता, 'मेडल वास्तव में मुझे

नहीं, तुम्हे मिलना चाहिए था, बशर्ते वे समझते कि पार्ट तुमने कितने संयम से किया है। मैंने तो चिल्लाकर बाजी मार ली। बच्चों को बहलाने वाला जैसा काण्ड रहा।'

आज भी क्या वही बात है? मगर उसे भी तो मिला है। दो और एक। वैसे अलका को भी दो मिले हैं।

अलका! अली चौधरी के लिए उसमें बड़ी ममता है।

सोचते-सोचते कल रात मंजरी उठकर बिस्तर पर बैठ गयी थी। लेटकर सोचने में भी जैसे उसे अस्वस्ति हो रही थी। बैठने पर भी अच्छा नहीं लगा। उठ कर खिड़की के पास खड़ी हो गयी थी। जरा-सा खोल भी दिया था। बाहर पप की आवाज हो रही थी। बीच-बीच में डिंग-डांग घण्टे की आवाज। घण्टा पिट हेड में बजता है, यहाँ बहुत बार आने की वजह से यह सब बात मालूम हो गयी है। उसके साथ ही दो-चार ऐ, हो, हाँ-हो जैसी आवाजें आ रही हैं। अँधेरे में, शून्य में बिजली की बत्तियाँ तैर जैसी रही है। इनमें से किसी वस्तु ने उसे आकर्षित नहीं किया। थका, पीड़ा से भरा मन लिए वह फिर बिस्तर पर आकर बैठ गयी थी। बगल के तख्ते पर वह सोया है और उसकी नाक बज रही है। कुछ देर बाद फिर लेट गयी थी, सोने की कोशिश की थी। लेकिन नींद नहीं आयी।

क्यों? क्या किया है उसने? क्या हुआ है?

कोलियारी के दफ्तर का घड़ियाल चार बजा चुका है। उसके बाद न मालूम कब आँखें बन्द हो गयी थी। नींद में उसने बहुत सारे असंलग्न सपने देखे थे। एकाएक नींद टूट गयी। घड़ियाल का घण्टा डिंग-डांग बज उठा। वह उठ कर बैठ गयी। खिड़की की दरार से सबेरे की रोशनी आ रही है। आह, रोशनी भी कैसी चीज है। मन के उद्वेग, क्लान्ति, छाती में जमी बेचैनी के अँधेरे को पोंछने की तरह ही पोंछ देती है। व्यस्त होने का, दूसरी ओर मन लगाने का सुयोग मिलता है। दुनिया के काम की शुरुआत होती है, अँधेरे की चिन्ता से दिशाहारा मनुष्य भी सबेरे की रोशनी में चारो दिशाओं की ओर ताक कर आश्वस्त होता है; दिगन्त में खोता नहीं, उसका काम उसे बुलाता है। गृहस्थ घर का काम धीरे-धीरे चलता है, बँधा हुआ काम बंधे हुए नियम से चलता है। मगर यात्रादल के मनुष्य गृहस्थ होने के बावजूद गृहस्थ नहीं हैं—खानाबदोश की तरह घुमक्कड़ हैं, बंधन कटी पतंग की तरह जहाँ गिर पड़ते हैं, पड़े ही रहते हैं, पेड़ में धागा लटक कर झूलता रहता है। या तो हवा का धक्का देना पड़ता है या फिर टूटे हुए धागे को खींचना पड़ता है।

कितना काम है! आज यहाँ से डेरा उठ जायेगा। साढ़े आठ बजे लॉरी आयेगी। कच्छी कोलियारी के नायक-पक्ष ने हिदायत दी है कि लॉरी को अटका कर न रखा जाये। एक ही लॉरी दो तीन खेप आयेगी-जायेगी। लॉरी के साथ दलाल विधु आयेगा। बीस मील का रास्ता है। साढ़े नौ बजे तक रवाना होना होगा। साठ आदमियों के शौचादि से निवृत्त होने, चाय पीने, बिस्तर बांधने का काम चलेगा। कितना काम है! लेकिन गोपाल मामा की कोई आवाज क्यों नहीं सुनाई पड़ रही

मुंह-हाथ में अच्छी तरह तेल रगड़कर साबुन से रंग उठाना पांच मिनट के दरमियान नहीं होता। वह स्नान कर चुकी होगी कि तभी गोपाली अन्दर आयी। उस पर नजर पड़ते ही हँसकर बोली, 'तुम बहुत ही सवेरे जाग गयी हो दीदी।'

'हां, सब लोग उठ गये ?'

'उठ गये हैं। कल रात अलो क्या कह रही थी, जानती हो ?'

'यही न कि यहां क्यों आयी ? उसने मुझसे कहा है।'

'नहीं-नहीं। वह तो छोटी-सी बात है। बोली, बाबुलदा ने मुझे इस पचड़े में डाल दिया। मैं सिनेमा के लिए कोशिश कर रही थी। हो सकता है, शुरू में रुपया-पैसा नहीं मिलता। मगर यह तो घटिया काम है।'

मंजरी के होंठ व्यंग्यपूर्ण हँसी से बिदक गये। बोली, 'ऐसी बात ? सो अलका सुन्दरी जा सकती है। मैं शर्तनामे को फाड़ उसे जाने देने को राजी हूं। सिनेमा ! सिनेमा थियेटर वगैरह का वह चक्कर लगा चुकी है। बाबुल बोस सब कुछ बता चुका है। मुझे इच्छा नहीं थी कि उसे रखूं, सिर्फ गोपाल—'

गोपाली बोली, 'चुप रहो, कोई आ रही है। सम्भवतः मलके आलम ही पधार रही हैं।'

सचमुच अलका ही अन्दर घुसी। मंजरी नहा चुकी है। वह बाहर निकल कमरे की ओर चली गयी।

डेरे के बरामदे पर अब दल के लोग कुल मिलाकर सोकर उठ चुके हैं। दो-चार आदमी बीड़ी का कश ले रहे हैं। कुछ लोग दल बनाकर नदी की तरफ मुंह-हाथ धोने जा रहे हैं। बरामदे पर रखे तेल के कटे बड़े-बड़े पीपे के ड्राम से पानी लेकर मुंह धो रहे हैं। इतने सारे लोगों की तरह-तरह की बातों ने आपस में मिलकर शोर-गुल का रूप ले लिया है। सिर्फ एक ही शब्द समझ में आ रहा है—चाय ! चाय ! चाय !

कमरे के अन्दर कोई गीत गा रहा है। एक किनारे दो बच्चे आपस मे मार-पीट कर रहे हैं। कोलियारी के बाबुओं के घर के कुछ लड़के आकर चहल कदमी कर रहे हैं। वे इन लोगों को देखने आये हैं। रात के परिचय से पहचानने आये हैं, 'यह देखो, वो जना है।'

'धत्त, उसका रंग कितना साफ था।'

'उसने रंग लगाया था। वो रही जना। मंजरी देवी। उन्हीं का यात्रा दल है।'

कुछ नौजवान भी मँडरा रहे हैं। अपने कमरे के अन्दर कदम रखते-रखते वह रुक गयी। आशा दोनों ओर की कनपटियो को पकड़े अवसन्न जैसी बैठी है। सिर मे दर्द हो रहा है।

उसे सर-दर्द की बीमारी है। बंसी डॉसिंग मास्टर उसका प्रेमी है। शराब के

है ? कमरे का दरवाजा खोल वह बरामदे पर आकर खड़ी हुई । चारों तरफ सन्नाटा है । लम्बे बरामदे की दूसरी ओर कुछ लोग सोये हैं । वे लोग रसोइया नौकर हैं । यहीं तो, थोड़ी ही दूर शिवनन्दन सोया हुआ है । मुँह भी ढँक लिया है ! वह कौन है ? सीढ़ी पर सोया हुआ ? सोया हुआ या पड़ा हुआ ? कौन है ? कार्तिक की ओस में सीमेण्ट के नंगे फर्श पर सोया हुआ ? कौन है ? सिर्फ पीठ ही दिखायी पड़ रही है ।

'शिवनन्दन ! अरे शिवनन्दन !'

'ओ ।'

'उठो-उठो, वेला हो चुकी है । उठो । गोपाल मामा को पुकारो । सुन रहे हो ? साढ़े नौ बजे रवाना होना है ।'

'गोपाल मामा सोकर नहीं उठे हैं ।'

वह उठकर बैठ गया । बोला, 'सब आदमी जग पड़े । क्या नाम है ? दिल्लगी समझ रहे हो ?'

'जाओ, बुला लाओ । और देखो तो सीढ़ी पर कौन पड़ा हुआ है ?'

'कोई पियक्कड़ होगा ।'

'पियक्कड़ भी हो सकता है, इसके अलावा बीमार पड़ कर भी कोई पड़ा रह सकता है । देखो, उठो ।'

औरतों के कमरे में आकर उसने दरवाजे पर धक्का देते हुए पुकारा, 'गोपाली, शोभा दी, आशा, सुन रही हो ?'

दरवाजा खोल कर अलका सामने आकर खड़ी हुई । बोली, 'वे लोग सो रही हैं ।'

मन कैसा-कैसा तो हो गया । सुबह-सुबह अलका का मुँह देखना पड़ा । शकुन-अपशकुन की बात नहीं है, मन कड़ुआ हो गया । बोली, 'उन लोगों को पुकारो । मुँह-हाथ धो लें । नहाना है तो नहा लें । तुम कब सो कर उठी ?'

'बहुत पहले । कल मुझे नींद नहीं आयी थी ।'

'तबीयत ठीक है न ?'

'ठीक है । अच्छा नहीं लग रहा है । सिर्फ यही सोच रही हूँ कि क्यों आयी ।'

'वह बाद में सोचना । अभी उन लोगों को पुकार कर जगा दो । खुद मुँह-हाथ धो लो । साढ़े नौ बजे रवाना होना है ।'

यह कह कर वह रुकी नहीं । अपने कमरे में जाकर अँगोछा, कपड़ा, तेल, साबुन वगैरह लिया और औरतों के लिए घेरे हुए 'स्नान घर' की ओर चली गयी । मेस के ही लम्बे स्नान घर, और शौचादि के स्थान को घेर कर इन लोगों ने थोड़ा-सा हिस्सा अलग कर दिया है । कोलियारी में पानी का इन्तजाम बहुत अच्छा है । पम्प से खींचा गया पानी पाइप से बहकर नल के मुँह से कलकत्ते की तरह ही गिरता है ।

मुँह-हाथ में अच्छी तरह तेल रगड़कर सावुन से रंग उठाना पाँच मिनट के दरमियान नहीं होता। वह स्नान कर चुकी होगी कि तभी गोपाली अन्दर आयी। उस पर नजर पड़ते ही हँसकर बोली, 'तुम बहुत ही सवेरे जाग गयी हो दीदी।'

'हाँ, सब लोग उठ गये ?'

'उठ गये हैं। कल रात अली क्या कह रही थी, जानती हो ?'

'यही न कि यहाँ क्यों आयी ? उसने मुझसे कहा है।'

'नहीं-नहीं। वह तो छोटी-सी बात है। बोली, बाबुलदा ने मुझे इस पचड़े में डाल दिया। मैं सिनेमा के लिए कोशिश कर रही थी। हो सकता है, शुरू में रुपया-पैसा नहीं मिलता। मगर यह तो घटिया काम है।'

मंजरी के होंठ व्यंग्यपूर्ण हँसी से बिदक गये। बोली, 'ऐसी बात ? तो अलका सुन्दरी जा सकती है। मैं शर्तनामे को फाड़ उसे जाने देने को राजी हूँ। सिनेमा ! सिनेमा थियेटर वगैरह का वह चक्कर लगा चुकी है। बाबुल बोस सब कुछ बता चुका है। मुझे इच्छा नहीं थी कि उसे रखूँ, सिर्फ गोपाल—'

गोपाली बोली, 'चुप रहो, कोई आ रही है। सम्भवतः मलके आलम ही पधार रही हैं।'

सचमुच अलका ही अन्दर घुसी। मंजरी नहा चुकी है। वह बाहर निकल कमरे की ओर चली गयी।

डेरे के बरामदे पर अब दल के लोग कुल मिलाकर सोकर उठ चुके हैं। दो-चार आदमी बीडी का कश ले रहे हैं। कुछ लोग दल बनाकर नदी की तरफ मुँह-हाथ धोने जा रहे हैं। बरामदे पर रखे तेल के कटे बड़े-बड़े पीपे के ड्राम से पानी लेकर मुँह धो रहे हैं। इतने सारे लोगों की तरह-तरह की बातों ने आपस में मिलकर शोर-गुल का रूप ले लिया है। सिर्फ एक ही शब्द समझ में आ रहा है—चाय ! चाय ! चाय !

कमरे के अन्दर कोई गीत गा रहा है। एक किनारे दो बच्चे आपस में मार-पीट कर रहे हैं। कोलियारी के बाबुओं के घर के कुछ लड़के आकर चहल कदमी कर रहे हैं। वे इन लोगों को देखने आये हैं। रात के परिचय से पहचानने आये हैं, 'यह देखो, वो जना है।'

'धत्त, उसका रंग कितना साफ था।'

'उसने रंग लगाया था। वो रही जना। मंजरी देवी। उन्हीं का यात्रा दल है।'

कुछ नौजवान भी मँडरा रहे हैं। अपने कमरे के अन्दर कदम रखते-रखते वह रुक गयी। आशा दोनों ओर की कनपटियों को पकड़े अवसन्न जैसी बैठी है। सिर में दर्द हो रहा है।

उसे सर-दर्द की बीमारी है। बंसी डाँसिंग मास्टर उसका प्रेमी है। शराब के

प्रति उसमें घोर आसक्ति है, गुण इतना ही है कि नशे में बहकता नहीं, काम ठीक से कर जाता है। आशा को उसने पीने की संगिनी बना लिया है। उन लोगों की जात की ज्यादातर औरतें शराब पीती हैं, मगर शराब की प्यास सब को नहीं है। आशा में बंसी ने वह प्यास पैदा कर दी है। बंसी प्ले के वक्त पीता है, आशा नहीं पीती है। डर गयी है। बीच में प्ले के दौरान छिपकर पीती थी—लेकिन एक बार शराब पीकर नाचने के लिए जाने पर सिर चकरा गया और वह मजलिस से निकल वेशमन्दिर की ओर जैसे ही जाने लगी कि उलटी हो गयी। उसी से उसको सबक मिल गया है। प्ले के दौरान नहीं पीती है, मगर प्ले के बाद पीना जरूरी है। बंसी मौका मिलते ही उसे बुलाकर ले जाता है और पिला देता है। ज्यादा पी लेने से ही सिर में दर्द हो जाता है। उन दोनों का सिर्फ शराब का ही दौर नहीं चलता, हर रोज जब सभी सो जाते हैं तो उन लोगों का अभिसार संपन्न होता है। सब लोग इत्मीनान से सो रहे हैं, नाक बज रही है। बंसी की भी नाक बज रही है। अचानक नाक बजना बन्द हो जाता है, झट से नींद टूट जाती है। बंसी उठकर बैठ जाता है। ठीक उसी वक्त आशा भी बगल वाले कमरे में जग जाती है। दोनों बाहर निकल आते हैं और चुपचाप एकान्त में जाकर बैठ जाते हैं। शराब पीते हैं। हँसते हैं। बात-चीत करते हैं।

सिर्फ वे दोनों ही नहीं, और भी बहुत सारे लोगों की यह आदत है। यह घृणित कार्य है, कलंक है। मगर यहाँ घृणित कुछ भी नहीं है, कलंक किसी चीज में नहीं है। यात्रा दल की आखिरी रात जितनी थकावट की होती है उतनी ही नशे की भी। चाहे ऐसा क्यों न हो, मगर इस तरह कोई नशे का सेवन करता है। छि. ! छिः ! छिः ! दूसरे ही क्षण मंजरी हँस पड़ी। नहीं, यहाँ छिः नामक कुछ भी नहीं है। अभिनय की मजलिस में वे स्वर्ग जाते हैं। वहाँ जाकर पुण्य का अभिनय करते हैं। उसके बाद स्वर्ग से गिर पड़ते है। मजलिस बर्खास्त होती है, वे लोग गहरे अँधेरे के बीच आकाश से गिरे एक झुण्ड तारे की तरह गहरे से गहरे अँधेरे में समा जाते हैं। रोशनी से अँधेरा ही अच्छा है। रोशनी से झलमलाती मजलिस में जी जान से मेहनत करते हैं—यात्रा खत्म होने के बाद थकान हरने वाले अँधेरे में स्वयं को खो देते हैं। वहाँ बड़ा ही आनन्द है।

फिर भी आज आशा की हालत देख उसकी पेशानी पर सलवटें पड़ गयीं। उसके बाद सीढ़ी पर पड़े हुए आदमी की ओर देखा ! हाँ, वह बंसी ही है। उसके मुँह से अपने आप निकल पड़ा, 'मरते भी नहीं ये लोग ! इस तरह होश-हवास खोकर शराब पीते हैं।'

एक खंभे की ओट से कोई आदमी मोटी आवाज में बोला। गले की आवाज सुनकर ही मंजरी ने पहचान लिया कि वह योगा मास्टर है। योगा मास्टर पर उसकी नजर नहीं पड़ी थी। योगा मास्टर ने कहा, 'होश-हवास ? होश-हवास तो दूर की बात, वह पीपे का पीपा पी जाता है। ऐसा है वह।'

मंजरी हँस पड़ी। योगा मास्टर चूँकि खंभे की ओट में बैठकर बोल रहा है इसलिए उसके हाथ में जरूर ही गाँजे की चिलम है। बुड्ढा गाँजा पीने बैठा है। योगा बातें करना शुरू करता है तो थमने का नाम नहीं लेता। कहना जारी रखा, 'कण्ठ जी कहते थे, शराब पीते हैं देवता, शराब पीते हैं असुर और दैत्य। आदमी के लिए शराब नहीं है।'

मंजरी ने योगा बाबू की बात का उत्तर नहीं दिया। देने मे मुसीबत है। उसका कथन रुकने का नाम नहीं लेगा। चली आयगी तो सुनाते हुए पीछे-पीछे आने लगेगा। उसने आशा से कहा, 'जाकर नहा-धो लो। सिर पकड़ कर बैठी रहोगी तो सिर का दर्द नहीं जायेगा।'

आशा ने लज्जित होकर कहा, 'एसपिरिन खाऊँगी, थोड़ी-सी चाय के लिए बैठी हूँ।'

मंजरी अपने कमरे के अन्दर चली गयी। योगा बाबू ने चुप होने का नाम नहीं लिया। वह कह रहा था, 'समझ रही हैं माता जी, कण्ठ जी स्वयं शाक्त थे। माँ काली बुढ़िया का रूप धारण कर आयी थी और जङ्गल मे उनका गीत सुन गयी थी। मगर कण्ठजी कृष्ण-प्रेम मे विभोर रहते थे। कभी यह सब द्रव्य नहीं छूते थे।'

योगा की बात सुनते हुए मंजरी ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया।

अब गोरा बाबू सो कर उठ गया है और होमियोपैथी का बक्सा लेकर बैठा है। सामने विपिन है। कोने मे गोपाल घोष बैठा है और ट्रंक से सिगरेट, बीड़ी और रेजगारी बाहर निकाल रहा है। सिगरेट-बीड़ी बाँट दी जायेगी। जिसको जितनी मिलती है, दी जायेगी—किसी को दो पैकेट, किसी को एक, किसी को आधा पैकेट और बीड़ी एक बण्डल। एक-एक बण्डल बीड़ी सबको मिलेगी—नौकर, रसोइया, विन्यासकारी से लेकर बड़े-छोटे आसामी और बच्चों तक को। रात की खुराकी का भी अभी ही बँटवारा होगा। देने का मतलब ही निश्चिन्तता है। लेकिन दवा का बक्सा?

मंजरी ने गोरा बाबू के चेहरे पर आँख टिकाकर कहा, 'दवा का बक्सा! किसे क्या हुआ है?'

गोरा बाबू ने हँसकर कहा, 'चार बच्चे—नेपा, टोना, गोपेश्वर और देबू का पेट बिगड़ा हुआ है। बाबुल को खट्टी डकार आ रही है। बंसी—'

गोरा बाबू हँस पड़े।

मंजरी स्वयं को संयत नहीं रख सकी। बोली, 'तुम अच्छे हो न?'

गोरा बाबू अब दूसरे ही किस्म का आदमी है। हँसते हुए बोला, 'हम लोगों की तबीयत जनाब? सब कुछ वीर की तरह हम लोगों का शरीर बरदाश्त कर लेता है।'

'हूँ।'

'एक छोटा-सा 'हूँ' और कुछ भी नहीं?'

'नहीं।'

भी जायेंगे। मुसीबत है तो बड़ों के कारण ही। वे लोग सभी लॉरी के सामने की ओर ड्राइवर की बगल में बैठना चाहेंगे। उन लोगों का बिस्तर बँधवा देना पड़ेगा। बाप रे! कितनी चीजों पर निगरानी रखेगा गोपाल! शशि अधिकारी की कहानी याद आ रही है। इतने बड़े बेहलावादक, हुनरमन्द आदमी, यात्रादल के प्रोप्राइटर। उनके जमाने में उनका बिस्तर टाट में बँधा रहता था। होल्डऑल नहीं था। ज्यादा से ज्यादा बिछावन था एक मोटा-सा कम्बल, टाट जैसी चादर और कड़ा तकिया। वर्धमान राजा की हवेली गये हुये थे। डेरा दिया है बहुत बड़े पक्के मकान के दलान में। खूबसूरत गलीचा बिछा है, उस पर तकिया सजा हुआ है। यात्रादल के लोगों ने बिस्तर नहीं खोला। अधिकारी ने भी नहीं खोला। जरूरत ही क्या है! इतना मुलायम तकिया है, इतना साफ-सुथरा गलीचा। लेकिन उस पर उन्हें नींद नहीं आयी। आधी रात में अपना बिस्तर खोला। एक ऊँचे दर्जे का रंगकर्मी जगा हुआ था। अधिकारी को अपना बिस्तर खोलते देखकर उसने कहा था, 'बाबू, आप अपना बिस्तर खोल रहे हैं?' शशि अधिकारी ने कहा था, 'टाट और कड़े तकिये के बगैर नींद नहीं आ रही है।'

इसी समय झन से आवाज हुई।

क्या हुआ? कहाँ क्या हुआ? ओह, मालिक के कमरे में!

'क्या हुआ शिवनन्दन? क्या हुआ?'

तत्क्षण मंजरी की आवाज सुनायी पड़ी, 'मुझ पर बिगड़कर तुमने चाय की प्याली फेंक दी!'

'अरे, गोपाल बाबू तो यहीं हैं!'

'कोलियारी के बड़े बाबू—बूढ़े सुरेन बाबू अपनी कमिटी के लोगों के साथ आये हैं।

'आइये सर, आइए।'

गोपाल बाबू व्यस्त हो उठे, 'सबेरे ही—यानी—'

'यानी और क्या? आप लोगों की विदाई और क्या! हम लोग व्यस्त रहेंगे; क्योंकि आज हम लोगों का थियेटर है। विदाई का काम खत्म कर लूं। आप लोगों की प्रोप्राइट्रेस कहाँ हैं? चलिए।'

गोपाल के पहले ही शिवनन्दन सूचना देने कमरे के अन्दर चला गया था। तत्क्षण गोरा बाबू बाहर निकल आया, 'आइये, आइये! वे इसी कमरे में हैं। शायद तबीयत ठीक नहीं है। चलिए, उस कमरे में ही चलिए।'

वे उस कमरे की ओर मुड़ें कि इसके पहले ही मंजरी दरवाजे के सामने आकर खड़ी हो गयी। बोली, 'नहीं-नहीं, इसी कमरे में चले आइये। मुझे वैसा कुछ नहीं हुआ है।'

पहली लॉरी जा चुकी है। बर्तन, ड्रेस की पेटी, रसोइया, नौकर-चाकर और विन्यासकारी चले गये हैं। दूसरी लॉरी में बाकी छोटे-मोटे रङ्गकर्मी जायेंगे।

एक और बस आयी है। उसमें महिलाएँ और बड़े ऐक्टर, उस्ताद लोगों का दल जायेगा।

गोपाल लॉरी में ही जायेगा। सबके साथ पीछे की ओर बैठेगा। सामने ड्राइवर की बगल में नीतू को नहीं जाने देगा। उससे तो लॉरी के खटाले के बीच ही अच्छा रहेगा। योगा बाबू अब लॉरी में ही मजलिस जमाकर कण्ठजी के तिरोधान का वर्णन कर रहा है, 'अरे बाबा, वे महात्मा थे, महात्मा। अपनी मृत्यु के छः महीने पहले ही मृत्युकाल में गाने के लिए गीत तैयार करके रखा था—'लिख देना हरि का नाम अंग में।' उत्पला सेन ने उस गीत का रेकार्ड तैयार किया है। हुँ-हुँ। अपना स्वर है उसका। उत्पला सेन बढ़िया गाती है। सो इतना सा—यही जरा-सा इधर-उधर कर दिया है। समझ रहे हो न ?'

तमाम लोगों की आँखें झपक रही हैं। लेकिन उससे योगा मास्टर का कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है ?

'समझ रहे हो न, त्रिवेणी के घाट में पानी के अन्दर समाकर अपने लड़के कमल से कहा, 'बेटा, लिख देना हरि का नाम अंग में।' बस, देखते-देखते सदा-सर्वदा के लिए मौन हो गये।'

हाथ जोड़कर उसने कण्ठजी को प्रमाण किया।

नौ

साहब कंपनी की कोलियारी से कच्छियों की कोलियारी तकरीबन बीस मील दूर है। लॉरी-बस से सब लोगों को आने में साढ़े नौ बज गये। लॉरी से पहली खेप में साधारण आसामियों यानी ऐक्टरों के साथ आने पर गोपाल को डेरे के इन्तजाम में थोड़ी-बहुत असुविधा का सामना करना पड़ा। कुल मिलाकर तीन ही कमरे दिये हैं। एक महिलाओं के लिए, दूसरा बड़े ऐक्टरों के लिए और तीसरा लंबा कमरा बाकी लोगों के लिए। मालिक-मालकिन यानी गोरा बाबू और मंजरी के लिए अलहदा कमरा नहीं है। महिलाओं के नहाने और शौचादि के लिए अलग से घिरा हुआ स्थान नहीं है। दूसरी ओर वह मंजरी और गोरा बाबू का रंग-ढंग जैसा देख आया है उसके कारण उन लोगों के लिए अलग से कोई इन्तजाम नहीं किया जायेगा तो मुलह या समझौता होने के बदले झगड़ा बढ़ जायेगा—हो सकता है कि किसी भी समय बम-विस्फोट हो जाये। बयालीस ईस्वी के दिसंबर महीने में ग्रे-स्ट्रीट में एक जापानी बम गिरा था। वह फटा नहीं था। लोगों ने बताया था कि टाइम-बम है,

कब फटेगा इसका कोई ठीक नहीं। लोग बाग निकट नहीं गये थे। मिलेटरी ने आकर उसे रस्सी के बाड़े में घेर दिया था। आसपास के मकानों से लोगों को हटा दिया था। यह मामला भी उसी तरह का है। अभी उन लोगों को एक ही कमरे के घेरे मे रखना होगा। कोलियारी का जो बाबू उन लोगों का स्वागत-सत्कार कर रहा था, उससे कहा, 'सर, हमे तो भारी असुविधा का सामना करना पड़ेगा। महिलाओं के नहाने के लिए घिरा हुआ स्थान नहीं है। सात-आठ महिलाएँ हैं। उसके बाद हम लोगों की प्रोप्राइट्रेस हैं। उनके लिए कमरा नही है।'

बाबू ने कहा, 'बात तो सही है। स्नान की जगह घेर दो।'

वह कुछ देर तक पेशानी पर बल लिए खड़ा रहा। गोपाल ने उसके मन का अन्दाज लगाया। वह मन ही मन सोच रहा है—भैया, यात्रादल की ऐक्ट्रेस है। सब तो पवित्र स्थान से आयी हैं। वहीं तो—यहाँ आकर अलग से नहाने की जगह चाहिए!

गोपाल ने कहा, 'चाहे जो हो, हैं तो आखिर महिलाएँ ही। तब हाँ, हम लोगों की प्रोप्राइट्रेस उस श्रेणी की नहीं हैं। अलका चौधरी तो मैट्रिक पास है। उसके पिता गवर्नमेन्ट सर्वेन्ट हैं।'

बाबू ने घबरा कर कहा, 'नही-नही। यह बात कौन कह रहा है।'

'मतलब है, बहुतों के बारे में चर्चा छिड़ सकती है।'

'एक टाट से ही आधा-आधा बाँट देता हूँ।'

'औरतों के हिस्से को घेर देना पड़ेगा।'

'वह भी कर दूँगा। मगर आप अलग से कमरे की माँग कर रहे हैं, यही मुश्किल है। उन्हें औरतो के साथ एक ही कमरे मे रहने दीजिये। इसमे उनके लिए आपत्ति की कौन-सी बात है?'

'आपत्ति नही है। आपत्ति करेंगी ही क्यों? तब हाँ, असुविधा होती है। मसलन, कैश रहता है। और-और औरतों को हँसने-बोलने मे कठिनाई होती है। फिर भी रह सकती हैं। लेकिन अबकी उनकी तबीयत एकाएक खराब हो गयी है। उन्होंने बताया है, आराम की जरूरत है। वरना प्ले में उतर नही सकेंगी।'

'झमेला खड़ा कर दिया जनाब। कमरे की ही कठिनाई है। देखता हूँ—यानी मेरे हाथ मे कुछ नहीं है। कमिटी के सेक्रेटरी-प्रेसिडेण्ट के पास जाना होगा।'

गोपाल ने मन ही मन कहा, पण्डित आदमी मालूम पड़ता है। दिग्गज हो कहना चाहिए। जबान से 'र' नही निकलता है।' हँसी रोककर वह बोला, 'तो फिर जाकर कह आइये। समझे! बयाने के वक्त यह सब कह दिया गया है।'

उस आदमी ने कहा, 'कहा हुआ रहता तो ऐसा क्यो होता? आपके दलाल विधु बाबू ने सब कुछ देखने-सुनने के बाद कहा, ठीक है, सर, ठीक है। यात्रा का दल है, कितनी ही जगह मवेशियों के खटाल मे सोना पड़ता है। यह ठीक है।'

गोपाल का दिमाग गरम हो गया। तो फिर यह हरामजादे विधु का काम है ! इसीलिए वह लॉरी से वहाँ जाकर वापस नहीं आया। अब शायद वहीं से दूसरे जगह के बयाने के लिए निकल पड़ेगा। फिर भी उसने हार नहीं मानी। बोला, 'आप जाकर कह आइये। ऐसी हालत में बड़े-बड़े ऐक्टर-ऐक्ट्रेस नहीं आयेंगे। हम डुप्लिकेट से काम चला लेंगे।'

बात समाप्त होने के पहले ही डेरे के लंबे हॉल जैसे कमरे में शोरगुल मच गया। योगा बाबू जोरों से चिल्ला उठा - सो भी हिन्दी में, 'कभी नहीं। कभी नहीं छोड़ूंगा।'

क्या हुआ ? जो कुछ हुआ है उसका अन्दाज लगाकर गोपाल दौड़ा-दौड़ा गया। योगा मास्टर ने दीवार के किनारे बिस्तर बिछाया है। उस बिस्तर को तबला-वादक हरिपद गुंई खींच रहा है। योगा बाबू भीषण क्रोध में आकर चिल्ला रहा है, 'कभी नहीं। कभी नहीं छोड़ूंगा।'

हरिपद कह रहा है, 'जरूर छोड़ना होगा। चालाकी कर रहे हो ? तुम्हारा बिस्तर खींचकर फेंक दूंगा।'

हरिपद जवान है। उसकी आवाज में क्रोध के साथ कौतुक की अवज्ञा है। गोपाल घोष नजदीक आकर खड़ा हो गया, 'क्या है ? क्या ? चुप रहो हरिपद।'

हरिपद ने बिस्तर खींचकर बाँध लिया मगर छोड़ा नहीं। बोला, 'क्यों चुप रहूँ सा'ब। लॉरी से उतरने के समय मेरे हाथ के पास बिस्तर नहीं था। गद्दे के नीचे पड़ा था। मैं सबसे पहले कमरे के अन्दर आया और इस जगह पर पाँव रखकर कह दिया कि यही जगह मेरी रही। उसके बाद बिस्तर लाने गया। आने पर देखा, योगा मास्टर बिस्तर बिछाकर बैठा है। मैं जगह नहीं छोड़ूंगा। 'कभी नहीं' कह कर चिल्लाने से मैं डरने वाला नहीं हूँ।'

योगा बाबू चिल्लाकर बोल उठा, 'यह तुम्हारी जगह है, यह बात मैं क्यों मानूं ?'

'पाँव रखकर चिल्लाकर कह दिया था, उसके बाद मैं यहाँ से गया था।'

'मैं क्यों मानूं ? निशानी कहाँ है ?'

'खड़िया नहीं है कि निशान बना दूँ। बाँस नहीं है कि गाड़ जाऊँ। निशानी मिलेगी कहाँ ?'

'तुम थूक फेंककर क्यों नहीं चले गये ? या फिर ईंट का टुकड़ा क्यों नहीं रख गये ? ये तो मैनेजर हैं। वही बतायें। बताओ न जी मैनेजर, बेवकूफ की तरह खड़े क्यों हो ?'

'ठीक है, गोपाल बाबू ही कहें ? क्या सा'ब ?'

गुंई ने चेहरे की ओर देखा। भारी मुसीबत है। गोपाल क्या कहे ! जो नियम है उसके अनुसार हरिपद भी सही है और योगा बाबू भी सही है। यात्रा पार्टी का नियम है, कमरे में घुस पाँव रखने के बाद मुझसे कह जाना चाहिए। योगा बाबू ने

ठीक ही कहा है—थूक फेंक कर भी हरिपद निशानी रख जा सकता था। वह सबसे पहले घर के अन्दर घुसा है। किस जगह पाँव रख गया है, किसी ने नहीं देखा है। उस दृष्टि से जिस जगह के बारे में कहेगा, वह उसकी ही हो जायेगी।

'कहिये सा'ब।'

'बोलो मैनेजर।'

गोपाल ने हाथ जोड़कर कहा, 'हरिपद, मैं तुम्हारे सामने हाथ जोड़ रहा हूँ। वे बूढ़े हैं!'

योगा मास्टर चिल्ला उठा, 'बूढ़ा कौन-सी बात हुई। बूढ़ा! बूढ़ा दीखे तभी कोई बूढ़ा होता है। बाल पकने, दाँत टूटने का समय होता है। मेरी तरह तान कौन छेड़ सकता है, किसमे इतना दम है? जब गाँव के रास्ते पर पैदल चलना पड़ता है, कितने ऐसे लोग हैं जो मेरे साथ पैदल चल सकें? बूढ़ा! मैं बूढ़ा हूँ और वे छोकरे हैं!'

बोलते-बोलते योगा मास्टर एकाएक क्रोध से मतवाला हो गया। झटपट खड़ा होकर बिस्तर खींचने लगा और बोला, 'जाओ, जगह नहीं माँग रहा हूँ। बरामदे में अगर जगह नहीं मिली तो पेड़ के नीचे—'

'मास्टर साहब! योगादा! हाथ जोड़ रहा हूँ। पाँव पकड़ रहा हूँ, चुप रहिये। हरिपद भाई, मैं तुम्हें अच्छी जगह देता हूँ। वे पूजा करेंगे।'

'चलिए, फिर चलिये। आप कह रहे हैं। बताइए, कहाँ जाऊँ?'

'मेरे पास चलो। उस तरफ की दीवार के किनारे। चलो। दीवार के किनारे ही तुम्हें जगह दूँगा।'

विपिन नौकर सब काम में आगे रहता है। वह हर जगह सबसे पहले ही दीवार के पास एक जगह दखल कर लेता है। अगल-बगल में दो व्यक्ति रहते हैं—नीतू और गोपाल। वह खुद या तो दरवाजे के पास या फिर पाँवों के नीचे के हिस्से में पड़ा रहता है। हरिपद बिस्तर बिछा चुका था। तभी रसोइया कुड़ा मणि ने पुकारा 'मैनेजर बाबू! मैनेजर बाबू!'

'क्या है? तुम्हे क्या हुआ?'

'क्या-क्या खाना पकाऊँ, बताइये। उस समय सब लोग चिल्लायेंगे। विपिन कुछ भी नहीं ले आया है। आलू तो बीज जैसे छोटे-छोटे हैं, उसी तरह मूली उँगली जैसी पतली। ढेर सारी अरबी ले आया है। बाबुल बाबू उठाकर फेंक देगा। कहेगा, अरबी खाना ही है तो आग में पकाया हुआ खाऊँगा। मछली ले आया है तो छोटी-छोटी झिंगा मछली। कहता है कि बाजार में मछली ही नहीं है। हिलसा मछली भी है लेकिन कीमत आसमान छू रही है। मुझसे नहीं हो सकेगा। आप ही संभालिए।'

गोपाल का क्लान्ति-बोध सम्भवतः सहते-सहते और खटते-खटते दूर हो गया है। बैल के घट्टे पड़े कंधे की तरह तमाम देह-मन में घट्टा पड़ गया है। उसने कहा, 'चलो, देखता हूँ।'

रसोइया ने ठीक ही कहा है। विपिन का कहना भी सच है। बाजार में कुछ भी नहीं है। कम से कम उन लोगों के पैसे से खरीदी जा सके वैसी मछली और सब्जी नहीं है। बाजार में हिलसा मछली है लेकिन बेहद महँगी—दो रुपया सेर। फूल गोभी है—एक मुट्ठी से ज्यादा नहीं। एक की कीमत तीन आना (१८४४ ई०)। सो वह न तो खरीद सका और न ही उतना पैसा था। नया आलू भी आ गया है, मगर आठ आना सेर।

गोपाल चिन्ता में पड़ गया। सचमुच ही चिन्ता की बात है। सोचने-विचारने के बाद एक और नोट हाथ में थमाते हुए बोला, 'जाओ भैया, कम से कम मछली तो ले आओ। बाबुओं को दोष ही क्यों दिया जाये ? एक ही वक्त खाना खाना है। रात में जिसको जो खाना है, अपने आप कर लेगा। वह खुराकी में शामिल है। भर पेट खाने से शरीर को बरदाश्त नहीं होता है। कल रात निमन्त्रण था। खाकर आठ दस आदमी पड़े हुए हैं। खट्टी डकार तो लगभग सभी को आ रही है।'

विपिन बोला, 'क्यों न इस वक्त आधा उपवास किया जाये !'

'नहीं-नहीं ! तू जा।'

विपिन को भेजकर वह बाहर आया और खोये हुए सूत्र की खोज में निकल पड़ा—महिलाओं के नहाने की जगह और प्रोप्राइट्रेस के कमरे के बारे में पता लगाने। नहाने का कमरा बन रहा है। हाँ, इसी से काम चल जायेगा। बाँस गाड़ कर टाट से घेरा जा रहा है। वही बाबू खड़ा है। उसने कहा, 'इससे काम चल जायेगा न ? देखिये।'

गोपाल ने हँसकर कहा, 'काम चला लेना पड़ेगा। किया ही क्या जा सकता है ? लेकिन कमरा ? प्रोप्राइट्रेस के लिए मैंने कमरे के बारे में कहा था।'

'कमरा मिल जायेगा। तब हाँ, थोड़ी दूर। बैरक से लगा हुआ कमरा नहीं मिल सकेगा। वह देखिये, उस कमरे को खाली कर दिया जा रहा है।'

कमरा नजदीक ही है, बैरक से अलग। तब हाँ, कमरा तसवीरनुमा है। गोपाल बोला, 'वाह, बहुत अच्छा रहेगा। खासा अच्छा कमरा है। आप लोग कह रहे थे कि कमरा नहीं है। आप लोगों का विशाल कारोबार है—आप लोगों को कहीं कमरे का अभाव हो सकता है !'

'अरे साहब, वह हम लोगों के बाबुओं का है, यानी कर्मचारियों का गेस्ट हाउस है। हम लोगों के भी तो गेस्ट होते हैं। उसे हम लोगों ने मेस के पास बनवा लिया है। गेस्ट वहीं रहता है। मेस के तमाम कमरे भरे हुए हैं। घर में जगह देने से असुविधा का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा हम लोग वहीं अड्डेबाजी भी करते हैं। सहेज-सँवार कर रखना पड़ता है। सो उसी को दे रहा हूँ।'

कमरे के बरामदे पर जाकर गोपाल ने चारों तरफ निगाह दौड़ायी। खूबसूरत कमरा है। चार अदद तख्ते हैं। चार मेज। कमरे के चारों तरफ बरामदा—

उनके चारों तरफ बगीचे की क्यारियाँ। लेकिन पेड़-पौधे नहीं हैं। बाथरूम भी है। बहुत ही अच्छा रहेगा। यहाँ एकान्त में, हो सकता है कि उनमें सुलह हो जाये। वाह !

बस आकर खड़ी हुई। सब लोग आ गये हैं। लेकिन मालिक-मालकिन की गाड़ी कहाँ है ? उन लोगों के लिए गोपाल चतुराई से एक टैक्सी किराये पर ठीक कर आया है। रीतू बाबू से भी कह दिया था, 'मास्टर साहब, मैं बताकर जा रहा हूँ। बराकर से टैक्सी आयेगी, बड़े बाबू फोन कर देंगे। अच्छा रहेगा कि वे लोग टैक्सी से आयें। झंझट-झमेला खत्म हो जाये तो ठीक है।'

रीतू बाबू ने कहा, 'मैंने अन्दाज लगा लिया था। ठीक है, मैं इन्तजाम कर लूँगा।'

लेकिन टैक्सी कहाँ है ? बात थी कि टैक्सी पहले ही चली आयेगी। बस चली गयी, टैक्सी कहाँ है ? ड्राइवर की बगल से रीतू बाबू, नाटू बाबू और मणि उतर रहे हैं। सेकण्ड क्लास से महिलाएँ उतर रही हैं। यह क्या ! सबसे पहले प्रोप्राइट्रेस ही उतरी। मंजरी नीचे उतरी। यह क्या ! टैक्सी क्या नहीं मिली ! आशा, गोपाली, शोभा और अली चौधरी कहाँ हैं ? गोपाल की आँखें चौंधिया गयीं। छाती एक बार जोरों से धड़क उठी। अरे, गोरा बाबू कहाँ हैं ! रीतू बाबू के साथ ही उन्हें उतरना चाहिए था। बाबुल बोस ? वह कहाँ है ?

गोपाल तेज कदमों से आगे बढ़ा। मंजरी ने उसकी ओर आँख टिकाते हुए कहा, 'असका वहाँ अचानक बेहोश हो गयी है।'

'बेहोश !'

'हाँ।' रीतू बाबू ने बताया, 'बेहोश हो गयी है। एकाएक गिर पड़ी—कर्तित कदली वृक्ष के समान।'

'एकाएक ?'

'हाँ। एकाएक, अकस्मात। विदाउट एनी नोटिस। ऑल ऑफ ए सडेन।'

अल्पभाषी नाटु बाबू बोला, 'गुस्से से। गुस्से से। मालिक-मालकिन के लिए टैक्सी आ रही है, सुन कर गुस्सा आ गया। सब कुछ गोपाली से सुनने को मिला।'

रीतू बाबू बोला, 'नहीं ब्रदर। यह हिस्टिरिया नहीं है। इस लड़की का नर्व कमजोर है। उस पर कल रात-भर सोयी नहीं है।'

चाहिए। अभाव था, पर सिनेमा मे लिया नहीं, थियेटर को नौकरी में पचास-साठ से ज्यादा नही मिला। मैं, भैया, मुहब्बत में नही रहता, मोह-माया भी नहीं है मुझमें। सिर्फ दयावश यहाँ भर्ती करा दिया। अब कहती है कि इसके लिए जिम्मेदार मैं हूँ। भागो। राम कहो भैया। देखो तो झमेला। आखिरी रात में रोकर रिवर गॅंजेज बहा दिया। मैं खामोश ही रहा। उसके बाद सवेरे स्नान कर आने के वक्त एकाएक एकबारगी धड़ाम से गिर पड़ी। डॉक्टर आया। डॉक्टर ने बताया, हिस्टिरिया नही है। एक तो बेहद परिश्रम उस पर नरिशमेंट का अभाव। रात भर सोयी नहीं है। नाड़ी भी खूब कमजोर चल रही है।'

बस ने हॉर्न बजाया। सरोसामान उतर गया है। लोग-बाग भी उतर चुके हैं। बंसी मास्टर और आशा बैरेक की तरफ बढ़ गये हैं। गोपाली ने कहा, 'हम लोगों का मुसाफिरखाना कौन-सा है गोपाल मामा ?

'वही, सीमा के पच्छिम तरफ।'

'अरे! यह पच्छिम है ? उत्तर नही ?'

रीतू बाबू बोला, 'नाटू, गोपाली दिग्भ्रमित हो गयी है। होशियार।'

शोभा बोली, 'ओ मैनेजर, तुम्हारी मंजरी माता का कौन-सा कमरा है ?'

'उनका इस तरफ है—वही एकल कमरा। आप लोगों का पूरब तरफ का है मास्टर साहब! खासा बड़ा कमरा है। माता जी, आप इधर आइये। शिवनन्दन सरोसामान लेकर उस कमरे में चलो।'

मंजरी चुपचाप रास्ता तय कर रही थी, गोपाल को भी सवाल करने का साहस नही हुआ। अचानक मंजरी ने ही कहा, 'यहाँ कोई गड़बड़ी तो नही हुई थी न ?'

'थोड़ी-सी। योगा मास्टर और वादक हरि में जगह के चलते झगड़ा हुआ था। अलबत्ता मैं आ चुका था। वरना मार-पीट हो जाती।'

'हुई तो नही ?

'नहीं।'

'फिर तो भाग्य की बात है। जब दल का गठन किया था, उस समय एक दिन राधा विनोदिनी के पास गया था। बताया कि दल गठित करने का इरादा है। आप बहुत दिनों तक चला चुकी हैं, इसलिए जानकारी प्राप्त करने आयी हूँ। विनोदिनी मौसी ने कहा था, दल! रामायण पढ़ चुकी हो ? मैंने कहा था, पढ़ी है। उन्होंने कहा था, महिला यात्रा दल और अरण्यकाण्ड एक ही है बेटी। महिला यात्रा दल मे महिलाओं के घर के चारों ओर सीमा-रेखा खींच देने से भी बचाव नही होता है। रावणों का झुण्ड सोने के हिरण को छोड़ सीता-हरण का नाटक करने लगते हैं। उसके बाद बन्दर उछल-कूद मचाते हैं। मधुवन मे मधु पीने के लिए जाने पर वन को तोड़-फोड़ कर उजाड़ देंगे। सेतुबंध मे ऊदबिलाव मारेंगे। इसके अलावा बड़े रंगकर्मी हनुमान की तरह पहाड़ लाकर नल-नील को उसके नीचे दबाना चाहेंगे। अपराध

क्या ? तो यह कि नल-नील बायें हाथ से पकड़ते हैं। रामचन्द्र न रहे तो इसे संभाला नहीं जा सकता है बेटी ! लेकिन क़िस्मत ऐसी कि रामचन्द्र इस वन में कदम भी नहीं रखता।'

मंजरी चुप हो गयी। गोपाल के मन मे मंजरी की आखिरी बात चक्कर काट रही थी—रामचन्द्र इस पाप के अरण्य मे कदम नहीं रखता है। मंजरी को वह स्नेह की दृष्टि से देखता है। गुण के कारण श्रद्धा भी करता है। बहुत ही अच्छा पार्ट करती है मजरी।

'वाह, यह तो बहुत खूबसूरत जगह है गोपाल मामा।'

'हाँ। उन लोगों ने तुम्हे महिलाओं के कमरे में स्थान दिया था। मालिक को रीतू बाबू के साथ। मैंने कहा, यह नहीं होगा। उन्हे छोड़कर क्यों चली आयी ? यानी गोरा बाबू को ?'

'लचार होकर रहना पड़ा। क्या किया जाये।'

'तुम भी रह सकती थीं। इससे झंझट बढ़ेगी बेटी।'

मंजरी का चेहरा ईषत् लाल हो गया। लेकिन वह कुलवधू नहीं है कि लाज से सिकुड़-सिमट जाये। वन की अरण्य-लता की तरह वह मजबूत है। लाज को दर किनार कर उसने कहा, 'वह सब सुलझ गया है। आप चिन्ता नहीं करें। उन्होंने मुझसे कहा था, तुम भी बल्कि ठहर जाओ। उन लोगों को छोड़कर आया नहीं जा सकता था। अच्छा मालूम होता भी नहीं। और अगर वे लोग वहां से कलकत्ता चले जाते हैं तो यहाँ मुसीबत खड़ी हो जायेगी। दल यहाँ आ रहा है। यहाँ यदि अरण्य काण्ड पार कर लंका काण्ड होने लगे तो वैसी हालत में क्या करूँगी ? उनको रखकर मैं चली आयी। वे लोग टैक्सी से आयेंगे। अलका को होश आ गया है। कोलियारी का भी डॉक्टर आया था। कहा है, अलका आज अभिनय करने नहीं उतरे।'

शिवनन्दन सरो-सामान सहेजने के बाद आकर खड़ा हुआ। बोला, 'फिर भी तुम समझौता कर लो। आजकल दारू बहुत पीने लगे हैं।'

मजरी ने रूढ़ स्वर मे कहा, 'आजकल तू बड़ा ही दलाली कर रहा है शिव-नन्दन। मत किया कर। अच्छा नहीं होगा।'

'सो तुम मुझे चाहे जो कहो। मैं कहूँगा ही।'

बाहर मोटर का हॉर्न बज उठा। गोपाल ने झांक कर कहा, 'टैक्सी आ गयी।'

मंजरी भी निकल कर बाहर आयी। हाँ वे लोग आ गये हैं। बाबुल बोस नीचे उतर अपने पाजामा-कुरते की धूल झाड़ रहा है। वह सामने की सीट से उतरा। पीछे का दरवाजा खोलकर गोरा बाबू उतरा। उसने हाथ बढ़ाया। उसका हाथ पकड़कर अलका उतरी। अलका थकी-सी दीख रही है।

'गोपाल बाबू, डेरा कहाँ है ?'

गोपाल भागा-भागा आया, 'आपका वहाँ है और महिलाओं का डेरा इस कमरे मे।'

बाबुल बोस दनदनाता हुआ वैरेक की ओर बढ़ गया, 'कहाँ हैं ? रीतू बाबू मास्टर साहब कहाँ है ?'

अचानक ठिठककर बोला, 'वह छोटा-सा कॉटेज तो खासा खूबसूरत है। वहाँ—। ठीक है। प्रोप्राइट्रेस—गुड। मेरा बिस्तर किसी के द्वारा भेज दीजिये।'

गोरा बाबू ने परेशानी के साथ कहा, 'अलका को रेस्ट की जरूरत है। उस कमरे में—। मंजरी !'

मंजरी आगे बढ़ आयी। अलका को देखकर बोली, 'वाह, काफी अच्छी दीख रही है।'

'उसे जरा आराम की जरूरत है। उस कमरे के सभी लोगों से कहना होगा। समझ रही हो न ? यह बात तुम कहोगी तो अच्छा रहेगा। अच्छी दीख रही है—डॉक्टर ने उसे स्टिमुलेन्ट दिया है। बताया न्युट्रिशन का अभाव है। उस पर मानसिक उत्तेजना। एक वक्त ठीक से सो लेगी तो सब ठीक हो जायेगा।'

'आओ, मेरे साथ आओ। अभी मेरे कमरे में ही चलकर सो रहो। वहाँ हल्ला-गुल्ला होगा। तुम रीतू बाबू के कमरे में चले जाओ। मगर दुहाई है—'

'नही-नही। नही पियूगा। शिवनन्दन की मारफत मेरा बिस्तर भेज दो। या फिर मुझे इसी बरामदे पर रहने दो। काम चल जायेगा।'

अलका चुपचाप खड़ी थी बहुत कुछ अपराधिनी जैसी। वह बोली, 'मुझे वहीं रहने दे। मैं उनके बीच ही सो रहूँगी।'

'नही। आओ। बात माननी चाहिए।'

कमरे के अन्दर जाकर अलका एक तख्ते पर बैठ गयी। 'आह' कहकर आराम की तृप्ति जाहिर की और बोली, 'हम बडे ही गरीब हैं मंजरी दी'। जानती हैं, बाबूजी को अपनी नौकरी के साथ-साथ अपनी श्रेणी से भी संबंध तोड़ना पड़ा, मगर फिर भी उनके खर्चे में कोई कमी नही आयी। आखिर तक बाबूजी पहले जैसा ही स्टेण्डर्ड से रहते रहे।' वह जरा मुसकरा दी, 'हालाँकि आमदनी का कोई जरिया न था। मेरे इस रोजगार से क्या हो सकता है ! डॉक्टर ने बताया, न्युट्रिशन का अभाव है। आखिर मिले तो कहाँ से ! इस नौकरी से मेरा कितना उपकार हुआ है, क्या कहूँ !'

आदमी का मन आश्चर्यजनक होता है। मंजरी द्रवित हो गयी। बोली, 'रहने दो, बाद में सुनूँगी। तुम लेट जाओ। जल्दी करो शिवनन्दन। उसके लिए सोना जरूरी है। और बरामदे पर एक तख्ता लाकर बाबू के लिए बिस्तर बिछा दो। बिस्तर की दो चादरों को परदे की तरह लटका दो।'

अलका बोली, 'उस वेला मैं चली जाऊँगी।'

'मंजरी !'

गोरा बाबू ने पुकारा।

'कुछ कहना है ? अन्दर चले आओ।'

'नहीं, तुम्हीं बाहर आओ।'

'क्या ?'

मंजरी बाहर आयी और सिर का घूंघट नीचे खींच लिया। कोलियारी के कुछ लोग आये हैं।

गोरा बाबू ने कहा, 'नायक-पक्ष नाटक के संबंध में बात-चीत करने आया है।'

'हम लोगों ने बयाने के समय नाटक का नाम बताया था। सती तुलसी, गंधर्व कन्या, अष्ट वज्र। यह तो उन्हीं लोगों की फरमाइश है।'

'हाँ। कुछ फेर बदल नहीं करना चाहते हैं। किसी एक के बदले प्रवीर-पतन चाहते हैं। या सती तुलसी के अलावा बाकी दो में से किसी एक के बदले ऐसा चाहते हैं और आज ही चाहते हैं। लेकिन कैसे हो सकता है ? ज्यादा झुकाव—'

गोरा बाबू चुप हो गया। नायक पक्ष ने कहा, 'आप जना रहें, अली चौधरी मोहनी माया—हम यही चाहते हैं। यह नाटक कल लायकडीह में बड़ा ही अच्छा रहा। हम उसी को चाहते हैं।'

'प्रवीर-पतन !' उसके चेहरे पर कठोरता तिर आयी।

'जी हाँ। और आज पहले दिन ही हम उसे चाहते हैं। यानी हम लोगों के मालिक यहाँ हैं, वे लोग देखेंगे।'

गोरा बाबू ने कहा, 'यह मुमकिन नहीं है। वह हो नहीं सकता है। मतलब है कि आर्टिस्ट बीमार है। डॉक्टर ने कहा है—'

उनमें से एक बाबू ने कहा, 'किसी तरह करना ही होगा। मालिक लोग चले जायेंगे। बीमार हैं तो ब्राण्डी वगैरह पिलाकर करें। और रुपया कुछ ज्यादा—'

मंजरी ने बाधा देकर कहा, होगा—वही होगा। रुपया अधिक क्यों लगेगा ! होगा।'

'तुम क्या कह रही हो !'

'मैं कह रही हूँ कि होगा। आप लोग जाइये।'

मंजरी अन्दर चली गयी। असका तब कमरे के अन्दर बिस्तर पर उठकर बैठ गयी थी। उसकी आँखों में अब चमक आ गयी है। वह बोली, 'मैं कर लूंगी।'

'नहीं। इस हालत में मैं तुम्हें उतरने नहीं दे सकती हूँ।'

गोरा बाबू ने कमरे के अन्दर आकर कहा, 'किससे कराओगी ? गोपाली या आशा से ? लोग टिटकारी मारेंगे।'

'मैं करूँगी।'

'तुम !'

गोरा बाबू अचंभे में आ गया, अलका अवाक् होकर देखने लगी।

'जना का पार्ट कौन करेगा ?'

'मैं दोनों ही करूँगी।'

'तुम पागल हो गयी हो ! बाद वाले सीन में ही जना-मदन मंजरी है।'

'हाँ। बीच में योगा बाबू का गाना दे दिया जायेगा। पोताल में, वही—

कौन तुम आलोक काले के उसपार

अँधेरे में बैठी अपलक—

उसके बाद मदन मंजरी प्रवेश करेगी, उसके बाद जना। उसी बीच में लिबास बदल लूँगी। लेकिन खबरदार, दो-चार व्यक्तियों के अलावा यह बात किसी को मालूम नहीं होनी चाहिए। वरना वे शोरगुल मचाना शुरू कर देंगे।'

गोरा बाबू बोला, 'क्या कह रही हो ! अगर उस समय करना शुरू करें तो फिर ?'

'नहीं करेंगे।'

मंजरी ने दृढ़ स्वर में कहा, 'तो फिर मैं यात्रा कभी नहीं करूँगी।'

उसका चेहरा देखकर गोरा बाबू अवाक् हो गया। चेहरे-मोहरे का ऐसा भाव है कि गोरा बाबू को आज पहले-पहल इस बात का अहसास हुआ कि मंजरी यात्रादल की प्रोप्राइट्रेस है और वह वेतन भोगी रंगकर्मी है।

कुछ ही क्षणों के दरमियान मंजरी की बात से लोगों में चंचलता फैल गयी। वे अवाक् हो गये। यह कैसा काण्ड है ! प्रोप्राइट्रेस करेगी।

बाबुल बोस हड़बड़ाकर उठ बैठा, 'ह्वाट ? माई ईश्वर ! घु-दा तल्ला। औरतें सब कुछ कर सकती हैं। खून कर सकती हैं।'

रीतू बाबू उठकर बैठ गया था। वह कुछ नहीं बोला। सिर्फ सिगरेट का कश लेता रहा। एकाएक सिगरेट को नीचे फेंक दिया और कैंविस का बैग खोलकर बोतल निकाली। थोड़ी-सी पीने के बाद बोला, 'देखो बाबुल मास्टर—'

'येस सर।'

'गोरा बाबू से जाकर कहो, वह मेरे लिए एक दिन की खातिर प्रवीर की भूमिका में उतरना छोड़ दे।'

'फिर तो पिट जायेंगे।'

बगैर कुछ बोले रीतू बाबू सिगरेट का गुब्बारा बाहर निकालने लगा।

'तुम प्रवीर की भूमिका में उतरोगे ?'

बरामदे से जाते-जाते शोभा ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया। बोली, 'बलैया लेने का मन करता है। ऐसी हालत में मैं मोहिनीमाया का पार्ट करूँगी।'

रीतू बाबू ने उसकी ओर इतनी गुस्सा भरी निगाह से देखा कि शोभा भयभीत हो गयी। वह 'बलैया लूँ' कहकर जिस तरह कमरे के अन्दर आयी थी, उसी तरह

वहाँ से बाहर चली गयी। बाबुल बोस की बात को बुड़बुड़ाती हुई चली गयी, 'हम लोग खून कर सकती हैं। और तुम लोग? तुम मर्द लोग? झाड़ू लगाऊँगी, झाड़ू।'

बाबुल खिलखिलाकर हँस पड़ा। रीतू बाबू पूर्ववत् सिगरेट के गुबारे छोड़ रहा था। बाबुल उठकर शोभा को देखने बरामदे तक गया। उसके बाद वापस चला आया और बोला, 'बिग ब्रदर—'

'क्या?'

'योगादा की करामात देखिये।'

'क्या? गीत गुनगुना रहा है?'

'माई ईश्वर! आप क्या गणना भी जानते हैं दादा?'

'नहीं। आज तुम्हें देखने को मिलेगा कि हर आदमी गुस्से में है।'

'मतलब?'

'आज जिद का कम्पीटिशन चल रहा है। बहेतू रसगोपाल के दल में जो मास्टर आये हैं, तुम उन्हे नही पहचानते। इन लोगों को है ही क्या। सिर्फ नाम के लिए हैं। कभी-कभी उनमे इसी तरह नाम के लिए रस्साकशी चलने लगती है। उस दिन ये लोग पागल हो जाते हैं। उनके साथ कुछ और भी हैं।'

'क्या?'

'सॉल्ट। नमक। पटलीबारु मर गयी, वही यह बात कहा करती थी। नमक न हो तो चावल क्या और प्रेम न हो तो जीवन क्या! अतिरिक्त नमक सामने रहेगा तो आदमी चखेगा ही। वह बेधड़क यह बात कहती थी। नमक रोगी और योगी के लिए वर्जित है। फल-मूल ही उन लोगो के लिए श्रेष्ठ होता है। उफ्, वह औरत निखालिस यानी इसी किस्म की थी, मगर प्यार करती थी। उसी ने मुझे समझाया था कि सच कहना ही चाहिए। किसी-किसी दिन रात मे बुलाकर ले आती थी, जिस तरह कि कल रात उसका तुम्हें बुलाकर ले गयी थी।'

'दुहाई रीतू बाबू बि-लि-व मी—'

'बिलीव करता हूँ बाबुल ब्रदर। कल मुँह बन्दकर अँधेरे में पड़ा-पड़ा सब सुनता रहा। मैं तुम्हें बिलिव करता हूँ। अब सुनो जो कह रहा हूँ। पटलीबारु की बात बता रहा हूँ। पुकारकर ले जाती और रोती थी। 'रोती क्यो हो?' पूछने पर कहती, अन्याय किया है। अचानक न मालूम क्या हुआ कि वह मुझे अच्छी लगने लगी। मन में साध भी बहुत दिनो से थी। यहाँ मन और यश—यश और मन—ही सब कुछ है। यह उसका मन पाना चाहता है, वह उसका मन पाना चाहता है। और यश! वेतन से पेट नही भरता—तालियों की गड़गड़ाहट से ही बड़े आदमी हो जाते हैं, सोने का पदा मिल जाता है। इसके अलावा न स्वर्ग चाहिए और न नरक। एक डोस पियोगे? नही, मत पीना। आखिर में सामंजस्य नही रख पाओगे। मेरी बात दूसरी ही है। जितनी पियूँगा, पार्ट उतना ही अच्छा होगा।'

योगा बाबू गीत गुनगुनाते हुए ही रीतू बाबू के सामने आकर खड़ा हुआ। बोला, 'रीतू बाबू—'

'मास्टर—'

'अगर 'कौन तुम आलोक' के बदले 'यह माया प्रपंच माया' गीत गाऊँ तो अच्छा न रहे ?

यह माया प्रपंच माया यहाँ विश्व के रंगमंच पर
लीलामय नटवर हरि जिसे सजाते जैसा वह वैसा ही सजता।'

रीतू बाबू बोला, 'ऐसा होता है। मगर इसे मत गाना। गोरा बाबू बिगड़ जायेंगे। नौकरी भी चली जायेगी।'

'तो फिर 'कौन तुम आलोक काले के उस पार' ही अच्छा रहेगा।'

'हाँ।'

दस

[illegible]विनी नारी !
कुछ भी नही असम्भव तेरे हित
पर चिन्तामणि तुम अति सुन्दर, तुम अति सुन्दर !

यात्रा समाप्त होने के बाद रीतू बाबू डेरे पर अपने बिस्तर पर बैठ शराब का गिलास हाथ में थामे कविता-पाठ कर रहा था। बाबुल ने शराब का गिलास खाली कर सीट के किनारे खिड़की पर रख दिया। बोला, 'आज आपको नशा आ गया है मास्टर साहब।'

'नशा ! कहाँ ब्रदर, महसूस कहाँ कर रहा हूँ। तुम्हे तो उसी बाबुल बोस के रूप में देख रहा हूँ। बावली के रूप मे भ्रम नही हो रहा है।'

'अब तक आप क्या बोल गये ? पहली पंक्ति कहाँ की है, मालूम नही। बिल्व मंगल की नही है। लेकिन आखिरी पक्ति बिल्व मंगल की है। चिन्तामणि तुम अति सुन्दर। दुर-दुर, मुझसे सीरियस ऐक्टिंग होती ही नहीं। हर तरह का कॉमिक कर लेता हूँ।'

शराब के गिलास से छोटा-सा घूंट लेकर रीतू बाबू ने उत्तर दिया, 'ओ। ऐ।'

'यह ऐ हुआ सर ?'

'इसके अलावा क्या है ? मैं कोटेशन का इम्तिहान नहीं दे रहा हूँ भाई। मैं अपने मन की बात कह रहा हूँ। यात्रा का मंचन हुआ। बताओ तुम्हारा मन क्या कह रहा है ?'

'मेरा ?'

'हाँ, ठीक-ठीक बताना।'

'जरूर कहूँगा। मेरा मन कह रहा है— सलाम। सलाम। सलाम।'

'यानी हजारों सलाम। और वह उस मायाविनी को।'

'येस।'

'और वह अति सुन्दर है।'

रीतू बाबू एकाएक सीधा होकर बैठ गया और अत्यन्त सहज बात करने की भंगिमा में बोल उठा, 'देखो, वह इतनी मोहिनी दीख सकती है, मेरे मन में ऐसी धारणा नहीं थी। नाटू, तुम तो भैया, शुरू से ही थे। तुम्हीं बताओ। जब दल का गठन हुआ था, उस समय वह बाईस-तेईस की थी। कभी ऐसी देखा था ?'

नाटू गोपाली का प्रिय पात्र है। आज उसने अर्जुन का पार्ट किया है और अच्छा ही किया है। अल्पभाषी आदमी है वह। बिस्तर पर बैठकर सूटकेस खोले था और अपनी आदत के अनुसार सिगरेट के डिब्बों को गिनकर सहेज रहा था। रीतू बाबू ने कहा, 'मुझे चार पैकेट दो नाटू।'

नाटू ने उसे चार पैकेट सिगरेट देते हुए कहा, 'कुल मिलाकर दस पैकेट हुए मास्टर साहब।'

'ठीक है।'

नाटू का आज भी सिगरेट का एक डिब्बा कम हो रहा है। तीन बार लगातार गिनने के बाद हिसाब कर रहा है कि यह उसकी गलती है या बात सच है।

रीतू बाबू ने कहा, 'नाटू, तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया।'

पुनः एक बार गिनते-गिनते नाटू ने गरदन हिलाकर कहा, 'नहीं मास्टर साहब, मैंने ऐसा नहीं देखा था। वह ऐसी दीख सकती है, ऐसा सपने में भी मन में खयाल नहीं आया था। मेकअप आश्चर्यजनक किया था। सिर के बालों को जूड़े जैसा बाँध, दोनों कानों की बगल में दो लट बाल लटकाये, ललाट पर कुमकुम लगाये, गाल पर तिल बनाकर और नीली चादर से स्वयं को ढँककर जब निकली तो मैं पहचान ही नहीं सका। मैं श्रोताओं के बीच खड़ा था, मेरी बगल में था विपिन। लम्बी है न। जूड़ा बाँधने से और भी अधिक लम्बी लग रही थी। मेरी छाती धक् से कर उठी। विपिन को टहोका लगाकर फुसफुसाते हुए पूछा, 'कौन है ? प्रोप्राइट्रेस ?' विपिन ने कहा, हाँ। बाप रे, गयी और प्रवीर के रास्ते को छेंककर, तिरछी हो गाल पर हाथ रखे खड़ी हो गयी। आँखें नाचने लगीं। अलका जैसी ही भंगिमा थी। लेकिन अलका नाटी है, वैसा फिगर कहाँ से लायेगी ? उसके बाद विस्मय का दौर चलने लगा। गले का स्वर भी अलका से अच्छा था। अलका ने जो-जो किया था, वही सब किया।

सिर्फ़ छाती पर बँधे कपड़े को नहीं खोला। खैर, वह तो अच्छा ही किया। सब लोग सरूर में आ गये। जानते हैं, आज मैं तीन डोस अधिक गटक गया हूँ।'

नाटू चुप हो गया। उसका मन फिर सिगरेट के पैकेट के हिसाब की तरफ चला गया है। नाटू मक्खीचूस है, निहायत्त दुनियादार है, गोपाली से भी पैसा ऐंठकर अपने घर की संपत्ति बढ़ाता है। घर जाकर खत भेजता है—कुछ रुपये भेज दो। गोपाली ऐसी मुग्धा है कि रुपया भेज देती है। नाटू शराब पीता है, लेकिन सिगरेट नहीं। तब हाँ, वह किसी दूसरी औरत की तरफ नजर उठाकर नहीं देखता। गोपाली में वह ऐब है। नाटू को वह छोड़ नहीं पाती है मगर छिपे तौर पर एक-दो दिन के लिए, दो-चार घड़ियों के लिए दूसरों के साथ इश्क-मुहब्बत कर लेती है और उसमें उसे आनन्द मिलता है। नाटू इसका विरोध नहीं करता मगर उसकी सिगरेट चुराकर दूसरे का मनोरंजन करने से आपत्ति करता है।

रीतू बाबू बोला, 'राइट। इसीलिए मुँह से अपने आप निकल पड़ा—ओ मायाविनी नारी, कुछ भी नहीं असंभव तेरे हित। ब्लैंक वर्स कहते-कहते ऐसा हो गया है बाबुल बाबू, कि भाव जरा सघन होते ही अपने आप निकल आता है।'

मणि घोष आज श्रीकृष्ण था। वह बोला, 'लेकिन मास्टर साहब, आज जना और प्रवीर दोनों कल की तरह नहीं थे। कल का वह प्रवीर तथा 'प्रवीर रे' पुकार सीने को जैसे चाक कर बाहर निकली थी। प्रवीर तो बिलकुल 'डल' जैसा हो गया।'

'उस मोहिनी माया के सीन में।' बाबुल चट से उठकर बैठ गया। बोला, 'गौरा बाबू का चेहरा बिलकुल सफेद हो गया। माई खुदा, ऐसा लगा जैसे कोई कीड़ा तिलचिट्टा को पकड़ कर ले गया। तब हाँ, एफेक्ट अच्छा रहा। लोगों ने सिसकारी नहीं दी। अन्दाज लगाने की कोशिश की कि यह कौन है जो प्रवीर को ले जा रही है। इसके बाद क्या होगा? तब हाँ, जना का पार्ट आज बेशक कल की तरह नहीं था। काफी अन्तर हो गया है। कहिये सर, आपकी क्या राय है?'

'तुमने ठीक ही कहा है। कल की तरह नहीं रहा। कल जना के पार्ट में क्षोभ था, क्रोध था और था प्रतिहिंसा का भाव। आज बिलकुल करुण रस था। तुम लोग जरा अन्याय कर रहे हो। लोग क्या यों ही इतना रो पड़े? तब हाँ, कल की तरह नहीं। वैसा होना भी नहीं था। कहने का मतलब है कि यह ध्यान की बात है। पार्ट करने के लिए उतरने पर ध्यान आता है। लेकिन ध्यान का भी तो प्रकार होता है। मान लो, तुम पत्नी के खत के इन्तजार में हो। प्यून आता है लेकिन पत्नी के खत के बजाय एक मनिआर्डर देता है। रुपया पाकर तुम पत्नी को भूल जाते हो। सोचते हो, चलूँ, सिनेमा का टिकट कटा लाऊँ। फिर मान लो, तुम घर गये हो। सोमवार की सुबह तुम्हें लौटना है। रुपया-पैसा मिलने की बात है और उसी की चिन्ता में हो। तभी भोर के वक्त पत्नी आग्रह करती है—आज रुक जाओ। कल जाना। बस, तुम भूल जाते हो। काम नहीं हो पाता है। और अगर चले जाते हो

'इसके अलावा क्या है ? मैं कोटेशन का इम्तिहान नहीं दे रहा हूँ भाई। मैं अपने मन की बात कह रहा हूँ। यात्रा का मंचन हुआ। बताओ तुम्हारा मन क्या कह रहा है ?'

'मेरा ?'

'हाँ, ठीक-ठीक बताना।'

'जरूर कहूँगा। मेरा मन कह रहा है—सलाम। सलाम। सलाम।'

'यानी हजारों सलाम। और वह उस मायाविनी को।'

'येस।'

'और वह अति सुन्दर है।'

रीतू बाबू एकाएक सीधा होकर बैठ गया और अत्यन्त सहज बात करने की भंगिमा में बोल उठा, 'देखो, वह इतनी मोहिनी दीख सकती है, मेरे मन में ऐसी धारणा नहीं थी। नाटू, तुम तो भैया, शुरू से ही थे। तुम्हीं बताओ। जब दल का गठन हुआ था, उस समय वह बाईस-तेईस की थी। कभी ऐसी देखा था ?'

नाटू गोपाली का प्रिय पात्र है। आज उसने अर्जुन का पार्ट किया है और अच्छा ही किया है। अल्पभाषी आदमी है वह। बिस्तर पर बैठकर सूटकेस खोले था और अपनी आदत के अनुसार सिगरेट के डिब्बों को गिनकर सहेज रहा था। रीतू बाबू ने कहा, 'मुझे चार पैकेट दो नाटू।'

नाटू ने उसे चार पैकेट सिगरेट देते हुए कहा, 'कुल मिलाकर दस पैकेट हुए मास्टर साहब।'

'ठीक है।'

नाटू का आज भी सिगरेट का एक डिब्बा कम हो रहा है। तीन बार लगातार गिनने के बाद हिसाब कर रहा है कि यह उसकी गलती है या बात सच है।

रीतू बाबू ने कहा, 'नाटू, तुमने मेरी बात का उत्तर नहीं दिया।'

पुनः एक बार गिनते-गिनते नाटू ने गरदन हिलाकर कहा, 'नहीं मास्टर साहब, मैंने ऐसा नहीं देखा था। वह ऐसी दीख सकती हैं, ऐसा सपने में भी मन में ख्याल नहीं आया था। मेकअप आश्चर्यजनक किया था। सिर के बालों को जूड़े जैसा बाँध, दोनों कानों की बगल में दो लट बाल लटकाये, ललाट पर कुमकुम लगाये, गाल पर तिल बनाकर और नीली चादर से स्वयं को ढँककर जब निकली तो मैं पहचान ही नहीं सका। मैं श्रोताओं के बीच खड़ा था, मेरी बगल में था विपिन। लम्बी हैं न। जूड़ा बाँधने से और भी अधिक लम्बी लग रही थी। मेरी छाती धक् से कर उठी। विपिन को टहोका लगाकर फुसफुसाते हुए पूछा, 'कौन है ? प्रोप्राइट्रेस ? विपिन ने कहा, हाँ। बाप रे, गयी और प्रवीर के रास्ते को छेंककर, तिरछी हो गाल पर हाथ रख खड़ी हो गयी। आँखें नाचने लगीं। अलका जैसी ही भगिमा थी। लेकिन अलका नाटी है, वैसा फिगर कहाँ से लायेगी ? उसके बाद विस्मय का दौर चलने लगा। गले का स्वर भी अलका से अच्छा था। अलका ने जो-जो किया था, वही सब किया।

सिर्फ़ छाती पर बँधे कपड़े को नही खोला। खैर, वह तो अच्छा ही किया। सब लोग सरूर में आ गये। जानते हैं, आज मैं तीन डोस अधिक गटक गया हूँ।'

नाट्टू चुप हो गया। उसका मन फिर सिगरेट के पैकेट के हिसाब की तरफ चला गया है। नाट्टू मक्खीचूस है, निहायत दुनियादार है, गोपाली से भी पैसा ऐंठकर अपने घर की संपत्ति बढ़ाता है। घर जाकर खत भेजता है—कुछ रुपये भेज दो। गोपाली ऐसी मुग्धा है कि रुपया भेज देती है। नाट्टू शराब पीता है, लेकिन सिगरेट नही। तब हाँ, वह किसी दूसरी औरत की तरफ नजर उठाकर नहीं देखता। गोपाली में वह ऐब है। नाट्टू को वह छोड़ नही पाती है मगर छिपे तौर पर एक-दो दिन के लिए, दो-चार घड़ियों के लिए दूसरों के साथ इश्क़-मुहब्बत कर लेती है और उसमें उसे आनन्द मिलता है। नाट्टू इसका विरोध नही करता मगर उसकी सिगरेट चुराकर दूसरे का मनोरंजन करने से आपत्ति करता है।

रीटू बाबू बोला, 'राइट। इसीलिए मुँह से अपने आप निकल पड़ा—ओ मायाविनी नारी, कुछ भी नही असमव तेरे हित। ब्लैक वर्स कहते-कहते ऐसा हो गया है बाबुल बाबू, कि भाव जरा सघन होते ही अपने आप निकल आता है।'

मणि घोष आज श्रीकृष्ण था। वह बोला, 'लेकिन मास्टर साहब, आज जना और प्रवीर दोनों कल की तरह नही थे। कल का वह प्रवीर तथा 'प्रवीर रे' पुकार सीने को जैसे चाक कर बाहर निकली थी। प्रवीर तो बिलकुल 'डल' जैसा हो गया।'

'उस मोहिनी माया के सीन में।' बाबुल चट से उठकर बैठ गया। बोला, 'गोरा बाबू का चेहरा बिलकुल सफेद हो गया। माई खुदा, ऐसा लगा जैसे कोई कीड़ा तिलचिट्टा को पकड़ कर ले गया। तब हाँ, एफेक्ट अच्छा रहा। लोगों ने सिसकारी नही दी। अन्दाज लगाने की कोशिश की कि यह कौन है जो प्रवीर को ले जा रही है। इसके बाद क्या होगा? तब हाँ, जना का पार्ट आज बेशक कल की तरह नही था। काफी अन्तर हो गया है। कहिये सर, आपकी क्या राय है?'

'तुमने ठीक ही कहा है। कल की तरह नही रहा। कल जना के पार्ट में क्षोभ था, क्रोध था और था प्रतिहिंसा का भाव। आज बिलकुल करुण रस था। तुम लोग जरा अन्याय कर रहे हो। लोग क्या यों ही इतना रो पड़े? तब हाँ, कल की तरह नही। वैसा होना भी नही था। कहने का मतलब है कि यह ध्यान की बात है। पार्ट करने के लिए उतरने पर ध्यान आता है। लेकिन ध्यान का भी तो प्रकार होता है। मान लो, तुम पत्नी के खत के इन्तजार में हो। प्यून आता है लेकिन पत्नी के खत के बजाय एक मनिआर्डर देता है। रुपया पाकर तुम पत्नी को भूल जाते हो। सोचते हो, चलूँ, सिनेमा का टिकट कटा लाऊँ। फिर मान लो, तुम घर गये हो। सोमवार की सुबह तुम्हें लौटना है। रुपया-पैसा मिलने की बात है और उसी की चिन्ता में हो। तभी भोर के वक्त पत्नी आग्रह करती है—आज रुक जाओ। कल जाना। बस, तुम भूल जाते हो। काम नही हो पाता है। और अगर चले आते हो

तो आँखों में आँसू देखकर आते हो। मूड बिगड़ जाता है और काम-धाम नहीं हो पाता है। यह भी वैसी ही बात है। वह सब कुछ कर सकती है। आजकल ऐसी ऐक्ट्रेस दीख नहीं पड़ती है। ऐसा कर सकती थी तो तारा सुन्दरी ही। ऐक्टर दानी बाबू को देख चुका हूँ। शिशिर बाबू का नाम लिया जा सकता है। तीन अलग-अलग किस्म के पार्ट एक जैसा कर जाते थे। वे लोग ध्यान सिद्ध थे। लेकिन इसने भी जो कुछ किया है, वह अद्भुत है। मोहिनी माया के अभिनय में दक्षता का परिचय देते हुए जना के शोक की मनःस्थिति में जाना ऐसी-वैसी बात नहीं है।'

'विगग्रदर आपको भी सलाम करता हूँ। शपथ खाकर कहता हूँ कि आपने वण्डरफुल कहा है। पत्नी की आँखों में आँसू देखकर काम-धाम मृत्तिकास्यात्। वही क्यों, कीचड़स्यात् ? तो इसलिए कि पत्नी की आँखों में माटी-कीचड़ है।'

'तुमने अच्छी बात कही है। लो एक डोस पियो।'

'आपको आज से विगग्रदर कहूँगा दादा। मास्टर साहब, सर, यह सब मुझे बुरा लगता है। मतलब है कि मास्टर साहब को स्कूल में हमेशा आँख की ओट में गाली-गलौज करता था।'

नाटू बाबू एकाएक उठकर खड़ा हो गया। बोला, 'एक बज गया। ये लोग क्या कर रहे हैं ?'

'ए-क ! तो फिर जरूर ही देर हो चुकी है। देखो-देखो भाई, इस मामले में तुम व्यवहार कुशल हो। औरतें सब की सब सो गयी क्या ? अरे, किसी को बुलाया नहीं जा रहा है। किसी की रसोई नहीं पकी है क्या ? जरा शोभा से जाकर कहो भाई। भरसक वह गुस्से में है।'

नाटू बाबू कमरे से बाहर निकला। तब पूरे बरामदे में आठ-दस दल बैठ चुके थे। स्टोव जल रहा है। अलग-अलग दल—यात्रादल में जिनका नाम पिलट है—रात की रसोई पका रहे हैं। दो दल खाना खाने बैठ चुके हैं। अफीमखोर भूदेव बेहला बजाता है। वह सीढ़ी के एक किनारे बैठकर जलेबी खा रहा है। रात में वह मिठाई खाता है। योगा मास्टर का भी खाना हो चुका है। वह भी रात में मिठाई खाता है। अभी वह बैठ कर गाँजा तैयार कर रहा है। इसी का दम लगा कर वह सोयेगा। अब भी वह स्वर टेर रहा है—आज के गीत का स्वर चौताल में—

कौन तुम आलोक काल के उस पार
खेल रहे कालिमा-प्रकाश में खेला।
दिवस पोंछ ले आते निशि-कालिमा सघन तुम
हा-हा-हा-हा—कालिमा पोंछ लाते प्रकाश का मेला !

आज योगा मास्टर ने बहुत ही बेहतरीन गाया है। गीत सचमुच ही बहुत जमा था और मजलिस में एक अवश्यंभावी मृत्यु के परिणाम का माहौल तैयार कर गया था। उसका गला अच्छा है और वह बड़े ताल का मँजा हुआ गायक भी

है। तब हाँ फिलहाल उसका रियाज कम हो गया है और उसे कोई अच्छा मौका नही दिया जाता है। नाट्ट बोला, 'क्या बात है, अब भी आप स्वर टेर रहे हैं ?'

योगा बाबू ने गरदन उचका कर नाट्ट को देखा और हँसते हुए कहा, 'कहिये कैसा रहा ? आप लोगों का देवू ऐसा गा सकता था ?'

'नही। आपकी तरह नही गा सकता था। किसी भी तरह नही।'

योगा बाबू ने तीन उँगलियाँ उठायी और कुछ देर तक स्तब्ध जैसा चेहरे की ओर देखता रहा। उसके बाद बोला, 'तीन जन्म—समझ रहे हैं न ? उसे तीन बार जन्म लेना होगा।'

नाट्ट उठकर जा रहा था। योगा बाबू ने पुकारा, 'सुनिये। यह एक तमाशा हुआ है—आप इसे समझ सके ? नहीं समझ सके ये। आप क्या समझिएगा, कोई नही समझ सका था। दो व्यक्ति समझ सके हैं—जिसने पीटा है और जो पिटा है। मैं और गुँई—आप लोगों के वादक हरिपद गुँई। उसका अनुयोग तो बस इतना सा है न, शुरू मे ही तिहाई पर चला आया। मैं भौहें नचाकर तिहाई पर चला आया और चुटकी बजाते हुए बाहर निकल आया।'

नाट्ट बाबू ने जाने के लिए पाँव बढाया, योगा बाबू ने एकाएक कहा, 'आज सब अजीब-अजीब काण्ड ही रहा।'

'हाँ।' यह कहकर नाट्ट आगे बढा, 'अजीब ही रहा।'

योगा बाबू ने कहा, 'खाना खाने जा रहे हैं ? गोपाली इस बीच अपना काम निबटा चुकी है। बहादुर औरत है। एक बात सुनते जाइये साहब ! आज प्रोप्राइट्रेस ने ऐसा खेल दिखाया कि मैंने कभी नही देखा था। तब हाँ, मुझे अच्छा नही लगा। मतलब कि यह काम उन्हें शोभा नही देता। वे यह पार्ट क्यों करेंगी ? गोपाली ऐसा नाचती—'

'मतलब ?'

'मतलब यह कि उनका स्वभाव तो वैसा नही है। जिन लोगों का ऐसा स्वभाव होता है—'

'गोपाली का ऐसा स्वभाव है—इसका आप सबूत पेश कर सकते हैं ?'

'अरे आप गुस्से में क्यों आ रहे हैं ? गोपाली कैसी है, यह बात सबको मालूम है। वह तो आपकी सात फेरेवाली पत्नी नही है।'

'योगा बाबू।'

नाट्ट भड़क उठा।

योगा बाबू उसी की तरह जोर से चिल्ला उठा, 'क्या ?'

'शट अप।'

नाट्ट बाबू की वह चिल्लाहट अस्वाभाविक जैसी थी। अकस्मात् वह सारा तारतम्य खो बैठा।

उस चिल्लाहट से पूरा दल चौंक उठा। जो आदमी जिस काम में लगा था। उसे छोड़कर स्तब्ध हो गया। सबसे पहले गोपाली निकलकर आयी। बरामदे पर खड़ी होकर वह भी चिल्ला उठी, 'क्या हुआ ?'

गवैया दिवाकर ने कहा, 'योगा बाबू से—'

योगा बाबू से ही झंझट होती है। योगा बाबू से झगड़ा ! उसके बाद ही गोपाली ने हँसना शुरू कर दिया, झगड़ा करने के लिए और कोई आदमी नहीं मिला ? योगा बाबू से ही ? वह खिलखिला कर हँसने लगी।'

'नाटू ?'

घबराकर रीतू बाबू तक बाहर निकल आया। नाटू चिल्ला रहा है। इस तरह चिल्ला रहा है जिस तरह कि चिल्लाहट छह साल के दौरान कभी नहीं सुनी है—सिवाय यात्रा की मजलिस की ऐक्टिंग मे।

उस चिल्लाहट से योगा बाबू भी हतप्रभ हो गया है। इस बात पर नाटू बाबू क्रोध मे आ जायेगा, यह उसकी समझ मे नही आया था। नाटू बाबू का चेहरा देखकर वह न केवल हतप्रभ हो गया था, बल्कि डर भी गया था। उसने कहा, 'मैंने अगर कुछ गैरवाजिब कहा हो तो मुझे क्षमा करें साहब।'

नाटू बिना कुछ बोले लंबे डग भरता हुआ गोपाली की ओर चल गया।

'गोपाल बाबू ! क्या हुआ ? गोपाल बाबू।'

बैरक के सामने की खाली जगह की दूसरी ओर के उस छोटे घर के बरामदे पर खड़ा होकर गोरा बाबू पुकारने लगा।

नाटू के चीत्कार से गोरा बाबू भी चौंक पड़ा था। वह घर के बरामदे पर ही लेटा था। घर के अन्दर मंजरी स्टोव पर सब्जी बना रही थी। अलका पेट के बल चुपचाप लेटी थी। गोरा बाबू के तख्ते के पासवाली मेज पर प्लेट मे अण्डा था, गिलास मे शराब। गोरा बाबू ने आज ज्यादा शराब नहीं पी है। वह ऊपर की ओर आँख टिकाये था और सिगरेट का कश ले रहा था। कैसे, किस तरह क्या हुआ, यह उसकी समझ में नही आया है। सिर्फ इतना ही महसूस कर रहा है कि एक आघात ने उसके शरीर के हर अंग को झकझोर दिया है और सब कुछ गड्‌मड् कर दिया है। मंजरी का कोई दोष उसे ढूँढ़े भी नहीं मिल रहा है—कोई सबूत नहीं है—फिर भी मंजरी ही इसका कारण है। आज मंजरी का मोहिनी माया का अभिनय देखकर वह अचंभे मे आ गया है। मंजरी इस भूमिका मे इतना अच्छा अभिनय कर सकती है, इसकी उसने कभी कल्पना नहीं की थी। अभिनय वह समझती है, जानती है। कर सकती है। मंजरी का वह चपल रूप, वह चंचल कटाक्ष, वह मदिर देह की भंगिमा देख वह न केवल मजलिस मे स्तंभित हुआ था बल्कि

समझ नहीं सका था कि हर अभिनय में उसे कहाँ क्या करना है, क्या करेगी। साथ ही एक प्रबल असन्तोष ने भी उसे दबोच लिया था। अभिनय के दौरान कई बार शराब पीकर उसने स्वयं को उत्तप्त करने की कोशिश की थी, लेकिन कर नहीं सका था। उसके बाद फिर उसने शराब नहीं पी थी।

मंजरी और उसका वेश-मन्दिर बदस्तूर एक ही कमरे के अन्दर था। कोलियारी की तरफ से मेज-कुरसी मिली थी। मजलिस में उसने अलका की तरह ही प्रवीर की चादर खींच अपनी देह में लपेट ली थी और दोनों एक ही साथ लिपटे हुए बाहर निकले थे। माया प्रवीर को आत्मसात् कर ले गयी, भाव यही था। रास्ते में दोनों एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोले थे। वेश-मन्दिर में आने के बाद दोनों को मेक-अप बदलना था। मंजरी को ज्यादा बदलना था, गोरा बाबू को कम। मंजरी को मोहिनीमाया की रूप-सज्जा बदलकर पुन. जना का वेश धारण करना था। बालों को खोल उन्हें पीठ पर फैलाना था। उनमें झुप्पा लगाना था। मंजरी के बाल हैं, कम नहीं है, परन्तु घुंघराले होने के कारण छोटे-छोटे हैं, उनमें झुप्पा लगाकर पीठ को भर लेना था। कटे हुए बालों की लम्बी लटें, क्लिप से अटकी रहती हैं और पीठ पर झुप्पा लोटता रहता है। पता नहीं चल सकता है कि इन बालों को अलग से लगाया गया है। मंजरी के पास अलग से अपना झुप्पा है। वह सब लगाना था। मोहिनीमाया के पार्ट में कपाल में कुमकुम लगाना पड़ा था, गाल पर तिल बनाना पड़ा था, वह सब पोंछकर पेन्ट की तूलिका चलाकर आँख, भौंह और होंठ ठीक कर लेना पड़ा था। लिबास बदलना पड़ा था। अलका की तरह ही टखने के ऊपर साड़ी पहनी थी। अलका के लिबास को ही उपयोग में लाया था। अलका का सिर जरा छोटा है, वह लम्बा लिबास उसे तनिक छोटा ही हुआ था। लेकिन उससे वह अधिक आकर्षक हो उठी थी।

कालिदास को उसने पढ़ा नहीं है। लेकिन 'चिर कुमार सभा' का अभिनय थियेटर में देखा है। उसके बाद किताब भी पढ़ी है। चिरकुमार सभा के रसिक दादा की एक उक्ति उसे मंजरी को कम पनहे की चुस्त साड़ी में देखकर याद आ गयी थी। शकुन्तला से राजा दुष्यन्त के प्रथम साक्षात्कार के समय शकुन्तला का पहनावा मात्र एक छोटे पनहे का वल्कल था और वह कुछ तंग भी था। उसी के कारण वह अत्यन्त मनमोहक हो उठी थी। अन्तर इतना ही है कि शकुन्तला संकुचिता और लज्जिता थी और मंजरी उसका यौवन और रूप लिए अतुलनीय स्वच्छन्दता के साथ असंकुचिता जैसी उसके सामने खड़ी हुई थी। मंजरी ऐसा कैसे कर सकी।

वेश-मन्दिर में आते ही मंजरी ने पूछा था, 'बताओ तो कैसा रहा?' मगर उत्तर की उसने प्रतीक्षा नहीं की। शोभा को बुलाया था, 'शोभादी! ओ '

शोभा के आते ही कहा था, 'बालों को फैलाकर झुप्पों को जरा बाहर चले जाओ न जी। लिबास बदलना है।'

गोरा बाबू बाहर चला गया था। कुछ ही मिनटों के दरमियान

लाल बनारसी साड़ी, उसी के टुकड़े का लाल बॉडिस, मस्तक पर मुकुट, गले में मोती के हार की कई लड़ियाँ, बाहुबन्ध में मणिबन्ध मुक्ता का अलंकार पहन, पीठ पर झुप्पों को सघन केश राशि फैलाये मथर डग भरती हुई बाहर वेश-मन्दिर के बरामदे पर आकर उसके सामने खड़ी हो गयी थी। गोरा बाबू सिगरेट का कश ले रहा था। उसके चेहरे से तब भी विस्मय का भाव दूर नहीं हुआ था। मंजरी ने उसके चरणों को छूकर प्रणाम किया था। गोरा बाबू चौंक पड़ा था, 'कौन?'

'मैं।' मृदु धीर स्वर में मंजरी ने उत्तर दिया था।

'ओह! फिर प्रणाम क्यों कर रही हो?'

'किया।' मंजरी हँस पड़ी। 'सोच रही हूँ, जना में इसके बाद सफल हो पाऊँगी या नहीं।'

'हूँ'।

'चलूँ। योगा बाबू की गीत समाप्त हो गया।'

गोरा बाबू कुछ नहीं बोला। वह सिर्फ सोच रहा था। एक गहरी चिन्ताकुल निराशा ने उसे दबोच लिया है। उस निराशा की आच्छन्नता से वह स्वयं को किसी भी तरह दूर नहीं कर पा रहा है। उसके बाद दो-चार बातों का ही आदान-प्रदान हुआ था। एक बार अकस्मात् जैसे उस पीड़ादायक मौन को भंग करने के लिए ही मंजरी ने पूछा था, 'तुम्हें क्या हुआ है?'

अबकी भी गोरा बाबू चौंक पड़ा था। लेकिन चौंकने के भाव को सँभालकर कहा था, 'होगा क्या?'

'आज इतना कम खाना क्यों खाया? तबीयत—'

'नहीं, वैसी कोई बात नहीं है। खाने का मन नहीं हो रहा है। शायद कल ज्यादा खा लेने से ही ऐसा हुआ है। अभी प्ले कामयाब हो जाये, बस यही इच्छा है। तुमने ऐसा किया कि—'

'क्या किया? ओह, मोहिनीमाया। वैसा न करती तो उपाय ही क्या था? अलका को उस हालत में उतारने से मुसीबत का सामना करना पड़ता।'

'इसे आखिरी दिन भी तो कर सकती थी।'

'वे नहीं माने, जिद करने लगे। इस पर मुझे गुस्सा आ गया।'

'हूँ। लेकिन इतना-कुछ तुमने कब सोच लिया?'

'दोपहर भर में। बगल में ही एक चोर कोठरी है। वहाँ आईना ले बाल बाँधकर मेकअप ठीक किया। उसके बाद सोचा।'

'हाँ, बहुत ही आश्चर्यजनक किया तुमने। बिना देखे किसी को यकीन नहीं हो सकता है।'

उसके बाद वह अचानक उठकर चला गया था। उसकी बातचीत जैसे गुम हो गयी हो। मंजरी का अपराध नहीं है। फिर भी—फिर भी उसे अच्छा नहीं लग रहा है। एक प्रकार का क्रोध हो रहा है। प्ले के अन्त तक दोनों का वक्त इसी तरह

गुजरा है। मंजरी भी इसके बाद गुमसुम जैसी हो गयी थी। उसकी आँखों में एक उद्धत दृष्टि उभर आयी थी।

प्ले के अन्त में मंजरी अपने डेरे पर आकर कमरे के अन्दर चली गयी थी। वह बाहर लेट गया था। उसके कानों में कमरे से शब्दों के कुछ टुकड़े आये थे। अलका से मंजरी की बातें हो रही थी। अलका जगी हुई थी। एकाएक मंजरी ने कहा था, 'शिवनन्दन ने बताया कि तुम रो रही थी।'

'हाँ। दिल कैसा-कैसा तो कर रहा था। साथ ही अपनी किस्मत के बारे में सोच रही थी। जहाँ कोई कूल-किनारा नहीं हो, वहाँ सम्भवतः रुलाई अपने आप चली आती है।'

'बाहर क्यों गयी थी ? कहाँ गयी थी ?'

'आपका सीन देखने।'

'ओ।'

'अच्छा लगा !'

'तबीयत ठीक हो जाये तो फिर दूसरी जगह तुम करना।'

'नहीं। उसे आप ही कीजिएगा। मैं उसे नहीं करूँगी।'

मंजरी ने बातें नहीं की। इसके बाद स्टोव की आवाज होने लगी थी। रसोई पकने का काम शुरू हो गया था। शिवनन्दन उबला हुआ अण्डा और शराब की बोतल रख गया था। मंजरी नहीं आयी थी। उसने भी नहीं पुकारा था। शराब एक बार पीने के बाद दुबारा नहीं पी थी। लेटकर सोच रहा था। एक प्रकार की चिन्ताकुल आच्छन्नता ने जकड़ लिया था। एकाएक नाटू का अजीब तरह का चीत्कार 'शट अप' सुनकर चकित हो गया था और उठकर खड़ा हो गया था। मंजरी भी बाहर आयी थी। उसने चिल्लाकर गोपाल बाबू को पुकारा था।

'गोपाल बाबू ! क्या हुआ ?'

गोपाल बाबू का उत्तर नहीं मिला था। उत्तर दिया था खुद नाटू बाबू ने। 'कुछ नहीं सर, आप सोइये।'

'नाटू बाबू ?'

'हाँ। वह कुछ नहीं, जरा रहस्य की बात है।'

'क्या कह रहे हैं आप !'

'जी हाँ। योगा मास्टर साहब को जरा गले का जोर दिखाया है। वह कोई खास बात नहीं है।'

'खैर। मैं तो नर्वस हो गया था।'

नाटू चुपचाप कमरे के अन्दर चला गया। गोपाली ने जरूर ही किसी को सिगरेट दी है। सो दे। उसकी कीमत वह अवश्य ही वसूल कर लेगा। लेन-देन के हिसाब के परे भी वह गोपाली को प्यार करता है, यह बात वह गोपाली के सामने खड़ा होकर समझ गया है।

अब रीतू बाबू की आवाज सुनायी पड़ी। बोला, 'आप नर्वस होइएगा तो काम चलने वाला है ? आज आप एक बार भी इधर नहीं आये। बात क्या है ?'

'तबीयत ठीक नहीं है।'

'इस पर भी कार्तिक महीने के आखिरी दिनों में आप बाहर लेटे हुए हैं।'

उस बात का जवाब दिये बगैर गोरा बाबू बोला, 'गोपाल बाबू कहाँ हैं ? आवाज दी मगर उत्तर नहीं मिला।'

'मालूम नहीं। उन पर नजर नहीं पड़ी है। गोपाल बाबू ! गोपाल बाबू ! ओ गोपाल बाबू ! विपिन !'

अँधेरे में थोड़ी दूर से ही गोपाल बाबू ने उत्तर दिया, 'कौन ? मास्टर साहब ? मुझे पुकार रहे हैं ?'

'आप कहाँ गये थे साहब ? खुद मैनेजर आपको पुकार रहे हैं।'

'आता हूँ। वेश-मन्दिर में था।'

'वेश-मन्दिर में ? क्यों ? इस वक्त वेश-मन्दिर में ?'

'बातें बहुत हैं। वेश-मन्दिर में तीन-चार छोकरे घुस आये थे। वे लोग मोहिनीमाया और जना के पार्ट के लिए मंजरी देवी से मिलकर उनका अभिनन्दन करना चाहते थे। इसके अलावा एक व्यक्ति मदन मंजरी को देखना चाहता था और दूसरा डुएट नाच की नर्तकी को। यही बात थी। किसी भी हालत में जाने को राजी नहीं हो रहे थे। मुझे खबर भेजी थी। मैं जाकर समझा रहा था। तभी एक काण्ड हो गया। कल के यहाँ के कुछ कोलियारी के लोग ट्रक से यात्रा देखने आये थे। जब वे लौट रहे थे तो रास्ते में एक आदमी ने उनसे ट्रक में बिठा लेने का आग्रह किया। उसे बराकर स्टेशन जाकर गाड़ी पकड़नी थी। बताया, वह यात्रादल का आदमी है, कलकत्ता जायेगा। उन लोगों ने बिठा लिया था।'

'कौन था ?'

'बता रहा हूँ, सुनिये। उसके बाद बातचीत के दौरान उन्हें सन्देह हुआ कि यह आदमी भागकर जा रहा है। ट्रक से वापस आकर वे वेश-मन्दिर में आ धमके। कहा, देखिये, आपका आदमी है ? हमें लगा कि भाग रहा है, इसीलिए वापस ले आये हैं। अगर भागकर नहीं जा रहा है तब वे इसे वेणक अपने साथ ले जायेंगे और स्टेशन पहुँचा देंगे। देखा, हम लोगों के वेश-मन्दिर का नया नौकर था। विपिन भी ऐसा है कि बिना जाने-पहचाने उसे ले आया। विपिन के गुस्से का क्या कहना—दनादन पीठ पर मुक्का बरसाने लगा। इस पर पट्ठे ने कहा, मत मारो भाई। यह लो। इतना कहकर बाहर निकालकर दिया। यह लीजिये। विन्यासकारियों ने बताया, आपका है। आपने रखने को दिया था, उन लोगों ने आपको वापस कर दिया था। आप छोड़कर चले आये।'

एक नोट केस उसने बाहर निकालकर रखा, 'देख लीजिए, सब ठीक है न !'

रीतू बाबू घबरा गया। व्यग्रता के साथ हाथ बढ़ाकर बैग ले लिया और उसे खोलते हुए बोला, 'इस तरह का मतिभ्रम जहाँ-तहाँ होना ठीक नहीं। अब मैं ज्यादा दिन इस दुनिया में नहीं रहूँगा। बीस साल की उम्र से शराब पी रहा हूँ, लेकिन ऐसा भ्रम नहीं हुआ था। इसमें मेरा—'

कहते-कहते उसने एक गुच्छा विवर्ण बाल निकाला। सिर उठाकर हँसते हुए बोला, 'मेरी पत्नी के बाल हैं। उसकी मृत्यु के बाद मैं यात्रादल में शामिल हो गया। वरना मैं एक अच्छा आदमी था। म्युनिसिपैलिटी में ओवरसियर था। उसके बाल बहुत ही खूबसूरत थे। और यह पत्नी की अँगूठी है। और ये दोनों चाँदी के ग्रह के ताबीज हैं। खैर, भाग्य की बात है कि पट्टे ने फेंका नहीं। ज्यादा पिटाई तो नहीं की?'

गोपाल ने हँसकर कहा, 'कितना रुपया-पैसा था। देख लीजिये।'

'अरे मैं इसमें रुपया-पैसा नहीं रखता हूँ। वह सब मेरे बेल्ट की जेब में रहता है। कल जेब फट गयी। रुपये का बैग अलग है। जेब में जो बैग रहता है वह कब चुरा लिया जाता है या जेब कतरा ले जाता है, कौन जाने। यह चला जाये तो मैं मर जाऊँगा। ठहरिये। पट्टे को दो रुपया दे रहा हूँ। दे दीजिएगा।'

'आप ही दे दीजिएगा। मैं दूँगा तो एक बुरी मिसाल होगी।'

'भगा दीजिएगा क्या?'

'बाद में। रास के बाद कलकत्ता लौटेंगे तब। अभी विदेश में कहाँ से आदमी मिलेगा?'

'ठीक है। अभी जाकर मालिक-मालकिन से मिल आइये। आपको बुला रहे थे। मालिक की तबीयत ठीक नहीं है।'

'वे छोकरे चले गये? अभिनन्दन करने वालों का दल? वे क्यों नहीं आये? बाबुल प्रदर को ललकार देता। वह उन लोगों का अभिनन्दन कर देता। उसकी जीभ उस्तरा है न?'

'क्या मास्टर साहब, गोपाल बाबू से बातें हुईं?'

'हुआ सर। वे जा रहे हैं।'

'मैं सब कुछ सुन चुका हूँ।'

'आपने अच्छा नहीं किया सर! आदमी की प्राइवेट बात! चुपके-चुपके कहा, 'फिर भी आपने सुन लिया? छिः छिः छिः।'

'चलूँ। एक डोस गटक लूँ, वरना शर्म दूर नहीं होगी।'

जाते-जाते एकाएक फिर खड़ा हो गया और बोला, 'हाँ एक बात! कल-परसों कौन-कौन सा कर रहे हैं? किसे छोड़ रहे हैं?'

'आप लोग ही बताइये। जो कुछ करने को होगा, कल सलाह-मशविरा करके किया जायेगा।'

अब रीतू बाबू की आवाज सुनायी पड़ी। बोला, 'आप नर्वस होइएगा तो काम चलने वाला है? आज आप एक बार भी इधर नहीं आये। बात क्या है?'

'तबीयत ठीक नहीं है।'

'इस पर भी कार्तिक महीने के आखिरी दिनों में आप बाहर लेटे हुए हैं।'

उस बात का जवाब दिये बगैर गोरा बाबू बोला, 'गोपाल बाबू कहाँ हैं? आवाज दी मगर उत्तर नहीं मिला।'

'मालूम नहीं। उन पर नजर नहीं पड़ी है। गोपाल बाबू! गोपाल बाबू! ओ गोपाल बाबू! विपिन!'

अँधेरे में थोड़ी दूर से ही गोपाल बाबू ने उत्तर दिया, 'कौन? मास्टर साहब? मुझे पुकार रहे हैं?'

'आप कहाँ गये थे साहब? खुद मैनेजर आपको पुकार रहे हैं।'

'जाता हूँ। वेश-मन्दिर में था।'

'वेश-मन्दिर में? क्यों? इस वक्त वेश-मन्दिर में?'

'बातें बहुत हैं। वेश-मन्दिर में तीन-चार छोकरे घुस आये थे। वे लोग मोहिनीमाया और जना के पार्ट के लिए मंजरी देवी से मिलकर उनका अभिनन्दन करना चाहते थे। इसके अलावा एक व्यक्ति मदन मंजरी को देखना चाहता था और दूसरा डुएट नाच की नर्तकी को। यही बात थी। किसी भी हालत में जाने को राजी नहीं हो रहे थे। मुझे खबर भेजी थी। मैं जाकर समझा रहा था। तभी एक काण्ड हो गया। कल के वहाँ के कुछ कोलिमारी के लोग ट्रक से यात्रा देखने आये थे। जब वे लौट रहे थे तो रास्ते में एक आदमी ने उनसे ट्रक में बिठा लेने का आग्रह किया। उसे बराकर स्टेशन जाकर गाड़ी पकड़नी थी। बताया, वह यात्रादल का आदमी है, कलकत्ता जायेगा। उन लोगों ने बिठा लिया था।'

'कौन था?'

'बता रहा हूँ, सुनिये। उसके बाद बातचीत के दौरान उन्हें सन्देह हुआ कि यह आदमी भागकर जा रहा है। ट्रक से वापस आकर वे वेश-मन्दिर में आ धमके। कहा, देखिये, आपका आदमी है? हमें लगा कि भाग रहा है, इसीलिए वापस ले आये हैं। अगर भागकर नहीं जा रहा है तब वे इसे बेशक अपने साथ ले जायेंगे और स्टेशन पहुँचा देंगे। देखा, हम लोगों के वेश-मन्दिर का नया नौकर था। विपिन भी ऐसा है कि बिना जाने-पहचाने उसे ले आया। विपिन के गुस्से का क्या कहना—दनादन पीठ पर मुक्का बरसाने लगा। इस पर पट्ठे ने कहा, मत मारो भाई। यह लो। इतना कहकर बाहर निकालकर दिया। यह लीजिये। विन्यासकारियों ने बताया, आपका है। आपने रखने को दिया था, उन लोगों ने आपको वापस कर दिया था। आप छोड़कर चले आये।'

एक नोट केस उसने बाहर निकालकर रखा, 'देख लीजिए, सब ठीक है न!'

रीतू बाबू घबरा गया। व्यग्रता के साथ हाथ बढ़ाकर बैग ले लिया और उसे खोलते हुए बोला, 'इस तरह का मतिभ्रम जहाँ-तहाँ होना ठीक नहीं। अब मैं ज्यादा दिन इस दुनिया में नहीं रहूँगा। बीस साल की उम्र से शराब पी रहा हूँ, लेकिन ऐसा भ्रम नहीं हुआ था। इसमें मेरा—'

कहते-कहते उसने एक गुच्छा विवर्ण बाल निकाला। सिर उठाकर हँसते हुए बोला, 'मेरी पत्नी के बाल हैं। उसकी मृत्यु के बाद मैं यात्रादल में शामिल हो गया। वरना मैं एक अच्छा आदमी था। म्युनिसिपैलिटी में ओवरसियर था। उसके बाल बहुत ही खूबसूरत थे। और यह पत्नी की अँगूठी है। और ये दोनों चाँदी के ग्रह के ताबीज हैं। खैर, भाग्य की बात है कि पट्ठे ने फेंका नहीं। ज्यादा पिटाई तो नहीं की?'

गोपाल ने हँसकर कहा, 'कितना रुपया-पैसा था। देख लीजिये।'

'अरे मैं इसमें रुपया-पैसा नहीं रखता हूँ। वह सब मेरे बेल्ट की जेब में रहता है। कल जेब फट गयी। रुपये का बैग अलग है। जेब में जो बैग रहता है वह कब चुरा लिया जाता है या जेब कतरा ले जाता है, कौन जाने। यह चला जाये तो मैं मर जाऊँगा। ठहरिये। पट्ठे को दो रुपया दे रहा हूँ। दे दीजिएगा।'

'आप ही दे दीजिएगा। मैं दूँगा तो एक बुरी मिसाल होगी।'

'भगा दीजिएगा क्या?'

'बाद में। रास के बाद कलकत्ता लौटेंगे तब। अभी विदेश में कहाँ से आदमी मिलेगा?'

'ठीक है। अभी जाकर मालिक-मालकिन से मिल आइये। आपको बुला रहे थे। मालिक की तबीयत ठीक नहीं है।'

'वे छोकरे चले गये? अभिनन्दन करने वालों का दल? वे क्यों नहीं आये? बाबुल प्रदर को ललकार देता। वह उन लोगों का अभिनन्दन कर देता। उसकी जीभ उस्तरा है न?'

'क्या मास्टर साहब, गोपाल बाबू से बातें हुईं?'

'हुआ सर। वे जा रहे हैं।'

'मैं सब कुछ सुन चुका हूँ।'

'आपने अच्छा नहीं किया सर! आदमी की प्राइवेट बात! चुपके-चुपके कहा, 'फिर भी आपने सुन लिया? छिः छिः छिः।'

'चलूँ। एक डोस गटक लूँ, वरना शर्म दूर नहीं होगी।'

जाते-जाते एकाएक फिर खड़ा हो गया और बोला, 'हाँ एक बात! कल-परसों कौन-कौन सा कर रहे हैं? किसे छोड़ रहे हैं?'

'आप लोग ही बताइये। जो कुछ करने को होगा, कल सलाह-मशविरा करके किया जायेगा।'

कोलियारी की घड़ी ने एक बजाया। बरामदा और कमरे में तब सन्नाटा रेंग रहा था।

'मास्टर साहब !'

सबसे ज्यादा उम्रदार औरत शोभा रीतू बाबू के पीछे आकर खड़ी हो गयी।

'शोभा दी !'

'दीदी क्यों ? ठहरो, प्रणाम कर लूं। इसमें कोई अपराध की बात नहीं है। तुम्हारी उम्र कितनी अधिक है, बताओ तो।'

'अरे, अरे, यह कैसा काण्ड कर रही हो ?'

'काण्ड किस बात का ? चलो, चलकर खाना खाओगे। ठण्डा हो गया है।'

'मैं खा लूंगा। तुम चली जाओ।'

'नहीं। दो कौर खाकर छोड़ जाओगे, यह नहीं हो सकता। मुझे मालूम है।'

'चलो।'

रीतू बाबू ने शोभा के साथ रात का भोजन किया। रीतू बाबू, बाबुल और शोभा का एक 'फ्लिट' है। शोभा रसोई पकाती है। इन्तजाम वगैरह करने को एक लड़का रख लिया है। एक और आदमी है—दूत-प्रहरी का पार्ट करने वाला आदमी —जो रीतू बाबू का बदन दाब देता है।

शोभा रीतू बाबू को बहुत श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखती है। यही नहीं, भक्ति भी करती है। साथ-साथ झगड़ा भी करती है। जोजा कहता है। औरतें मुंह घुमा कर हँसती हैं। मर्द भी हँसते हैं, मजाक भी करते हैं। रीतू बाबू भी हँसते हैं। अलका चुपके-चुपके शोभा से पूछती है, 'दीदी कहने से तुम गुस्साती क्यों हो ? उसी से तो सबको मालूम हो गया। बात छिपी और दबी रहती तो, हो सकता है, अब तक मन में प्रेम भाव जग जाता। खुद ही दीदी कहना बन्द कर देते और कहते—शोभे शोभे !'

शोभा मुंह घुमा कर कहती है, 'धुत्त।'

'नहीं-नहीं। मुझे शर्म लगती है। जानती हो ?'

अचानक शोभा ने ठहरी हुई दृष्टि से रीतू बाबू की ओर देखा। रीतू बाबू ने भौंहे सिकोड़ कर पूछा, 'क्या हुआ ?'

शोभा बोली, 'देखो रीतू, मैं वेश्या हूँ। तुम लोग उससे भी हीन हो। खाना खा रहे हो, खाओ। रंग-रस के अलावा जिन्दगी में कुछ नहीं है। रंग-रस में डूबी भी रहती हूँ। तुम्हारे प्रति मुझमें लोभ भी था। तुम्हारी पत्नी जीवित होती तो मुझसे उम्र में कम से कम दस वर्ष की बड़ी होती। तुम बूढ़े होने चले ! मगर तुम लोग दुष्ट हो। उधर देखते हो, इधर भी देखते हो। लो, खाना खा रहे हो, खाओ। खा लो। मुझे शर्म-हया नहीं है। तुम्हारे प्रति फिर भी मुझमें लोभ है।'

यह कह कर वह उठ कर चली गयी।
रीतू बाबू चुपचाप खाना खाने लगा।

कोलियारी के घड़ियाल में दो बजे। गोपाल मैनेजर उठकर बाहर आया। हर रोज वह उठ जाता है। यह उसके स्वभाव में शुमार हो गया है। शुरू से ही। जब त्रैलोक्य तारिणी दल में था उसी समय से। चेहरा-मोहरा उसका अच्छा है। उसकी भी प्रेमिका थी। प्रेमिका को छोड़ कर उसने शादी की थी। वही पत्नी जब कुछ दिन बाद मायके से लापता हो गयी तभी से उसमें यह आदत पैदा हो गयी है। गहरी रात में दल के ज्यादातर लोग सोये रहते हैं, लेकिन कुछेक अशान्त-चित्त अतृप्त व्यक्ति सावधानी से उठ कर बाहर आते हैं। प्रेत के द्वारा पुकारे गये आदमी की तरह। कितने ही दौर समाप्त हो जाते हैं। मान-अभिमान, गोपनीय मिलन का दौर। रात के अँधेरे के मनुष्यों का दल मनुष्य की दुनिया का एक परदा जैसे हटा देता है। एक आश्चर्यजनक निष्ठुर सत्य बाहर निकल कर आता है। लगता है तमाम दिन की कुलवधू का संसार ही रात में व्यभिचारिणी की तरह सिर पर मिट्टी की आग भरी खपड़ी ले, उसमें धूप छिड़क कर अपदेवता का खेल खेलने मसान में उतर आया है। तब हाँ, देखते-देखते उसे यह सब बरदाश्त हो गया है। उसे न तो अब हँसी आती है और न ही नफरत होती है। गन्दगी और घृणित स्थिति में भी विचित्र खोज से रुलाई आने लगती है। गोपाल घोष को अपनी पहली खोज की याद आती है। उस समय वह जवान था। इस गन्दगी में बैठ कर वह अपनी पत्नी के प्रति उपजी घृणा को जाग्रत रखता है—उसके अपने घाव की टीस में थोड़ी कमी आती है और उसे सांत्वना मिलती है। सब कुछ यही है, यही। अन्तर्मन हँस पड़ता है—हा-हो-हो हो—वह एक असहिष्णु हँसी है। लगातार उसने कई दिनों तक दल के छोटे वादक को बैठे हुए देखा था। वह रात-भर जग कर चुपचाप बैठा रहता था। आसपास जो कुछ घटित होता था, किसी की ओर नहीं ताकता था। एक दिन वह रो रहा था। उसने आकर पूछा था, 'क्यों जी त्रिभुवन, क्या बात है?'

'जी बाबू—'

'हर रोज देखता हूँ कि तुम आकर बैठ जाते हो। आज रो रहे हो। बात क्या है?'

सोचा था, कोई कुत्सित कारण होगा। दुनिया की गन्दगी न मालूम किसके अभिशाप से और किस वजह से इस तरह के कुछ स्थानों में आकर इकट्ठी हो जाती है।

त्रिभुवन ने कहा था, 'बाबू इस बार दल के साथ बाहर निकलने के पहले—।' उसके बाद वह बिलख-बिलख कर रो पड़ा था, 'मेरे एक ही लड़का था बाबू, पाँचेक साल का। वह पानी में डूब कर मर गया। क्या करूँ? उपाय ही क्या है! रात में

भादों महीने की गरमी में मैं घर में सो नहीं सकता था। बाहर ओसारे पर सोया था। लड़का मेरी बगल में सोया था। कब मच्छरदानी हटा कर उठ गया, पता नहीं चला। चाँदनी रात थी। उठकर आँगन में चला आया। आँगन के किनारे एक गड्ढा है—एक छोटा-सा डबरा। वहाँ बर्तन वगैरह मँजा जाता है। वहीं जाकर गिर पड़ा। घुटने भर पानी है—उसी में। सो रात में सोता हूँ तो सब कुछ मुझे याद आ जाता है। किसी भी हालत में सो नहीं पाता हूँ। दिन के वक्त ठीक रहता हूँ, दस आदमी के बीच मशगूल रहता हूँ। रात में उठ कर आता हूँ और उसके बारे में सोचता हूँ। रोता हूँ।'

इस तरह उसने कितने ही लोगों को देखा है। वह ऐसे लोगों को ठीक-ठीक पहचान लेता है। बेहद गन्दे लोगों को भी देखा है। कोई-कोई बिना इधर-उधर दृष्टि डाले चहल-कदमी करता है। उसके पास पैसा नहीं है। घर से ख़त आया है—खाने को अनाज नहीं है। अपनी तनख्वाह खर्च कर चुका है, पेशगी ले चुका है। क्या करे ? मुँह खोल कर माँग नहीं पाता है।

किसी को खाँसी के साथ ख़ून गिरता है। कहने का उपाय नहीं है। रात में उठकर एकान्त में बैठ कर खाँसता है, थूक फेंक कर दियासलाई की तीली जलाता है और देखता है कि ख़ून कहाँ है।

वैसा आदमी उसके पैरों को पकड़ कर रो चुका है, 'दुहाई है आपकी, नौकरी चली जायेगी तो मर जाऊँगा।'

ये लोग अजीब आदमी हैं। इन लोगों से कोई दूसरा काम नहीं हो पाता। गा सकते हैं, नाच सकते हैं, बजा सकते हैं, संलाप बोल सकते हैं—इनके अलावा कोई दूसरा काम नहीं कर सकते। जमीन रहने पर भी खेती-बारी नहीं कर सकते हैं। मन ही नहीं लगता है। लिखे-पढ़े आदमी भी लिखने पढ़ने के काम में अपने को नहीं लगा पाते हैं। रोतू बाबू नौकरी करता था। मणि घोष पाठशाला का गुरु जी था। हरिपद गुई के पास खासी अच्छी जमीन थी—अब भी है। बँटाई पर लगाकर यात्रा-दल में चला आया है।

मणि घोष को एक बार इसी तरह प्रेतात्मा के प्रकोप से पीड़ित आदमी की तरह चहल-कदमी करते देख चुका है। पूछने पर मणि घोष ने उसका हाथ पकड़कर कहा था, 'कई दिनों से बुरे-बुरे सपने देख रहा हूँ गोपाल। घर के लिए मन छटपटा रहा है। लेकिन छुट्टी माँगना अन्याय होगा। सामने ही बयाना है, सो भी असम तक का।'

उसने उसे छुट्टी दिला दी थी।

कार्तिक महीने में दल मुफस्सिल का चक्कर काटता है। कितनी ही बार कार्तिक महीने में आँधी-पानी-तूफान आया है। गाँव के आसामी रात में दल बाँधकर सिर पर हाथ रखे बैठे रहे हैं, हाय-हाय करते रहे हैं।

वह कौन है ? कौन है ?

आज भी यहाँ वहाँ दो व्यक्तियों को देख चुका है। आशा और वंसी रोज के भ्रमणकारी हैं। आज भी कुछ मिनटों के लिए निकले थे। और-और दिन सामने बैठकर ही शराब पीते हैं, सिगरेट पीते हैं, हँसते हैं, बातचीत करते हैं और चले जाते हैं। आज थोड़ी दूर जाकर छिपकर बैठे थे। मालिक गोरा बाबू आज बाहर लेटे हैं। उसके बाद—

गोपाल घोष की मन की चिन्ता दूर हो गयी। सामने की तसवीर ओट बन कर खड़ी हो गयी। प्रोप्राइट्रेस ! सामने की उस तसवीर जैसी कोठरी का दरवाजा शायद खुला ही है। बरामदे पर गोरा बाबू सोया हुआ है। कमरे में अलका है, प्रोप्राइट्रेस हैं। प्रोप्राइट्रेस आकर दरवाजे पर खड़ी है। गोपाल घोष के होठों पर हल्की मुसकराहट उभर आयी। लेकिन तत्क्षण विलीन हो गयी।

नहीं, वह सिर प्रोप्राइट्रेस की तुलना में छोटा है। अलका है। अलो चौधरी। अस्वस्थ शरीर ले बाहर निकली है। हाँ, वही है। आकर वह बरामदे की लोहे की एक खूंटी पकड़कर खड़ी हुई। अंधेरी रात है। सफेद कपड़े में धुंधली धुंधली जैसी दीख रही है। पहेली की तरह। यात्रादल के सलाप में यही कहा जाता है। लेकिन—

गहरी रात की चुप्पी में कमरे के फर्श पर एक छोटा-सा पत्थर गिरने से जैसे एक आवाज होती है, उसी तरह की आवाज आयी, 'कौन ?'

अलका ने मीठे स्वर में कहा, 'मैं हूँ।'

'अलका ?'

'हाँ।'

'बाहर ? इतनी रात में ?'

अलका ने उत्तर नहीं दिया। गोरा बाबू की आवाज सुनायी पड़ी, 'तबियत खराब नहीं हुई थी न ?'

पुनः निस्तब्धता तिर आती है। कुछेक शब्दों का एक ढेला फिर गिरता है। गोरा बाबू ने कहा, 'रो रही हो ?'

अलका अन्दर चली गयी। कुछ क्षणों के बाद गोरा बाबू ने पुनः पुकारा, 'अलका ?'

अलका अन्दर है। गोरा बाबू चुप हो गया। गोपाल जैसे स्पन्दनहीन हो गया है। वह बहुत देर तक मोह-मुग्ध की तरह वहाँ बैठा रहा। उसकी दृष्टि उसी ओर स्थिर है, हटा नहीं पा रहा है। कब तक उस स्थिति में रहा, कैसे बताये ? कौन इसका हिसाब रखता है ? लेकिन वह किसी भी हालत में अपनी आँखें हटा नहीं पा रहा है।

घड़ियाल की आवाज हुई—डिंग-डांग-डिंग-डांग। बजने दो।

वह कौन है ? गोरा बाबू ! बिस्तर छोड़कर सिगरेट सुलगा रहे हैं ? टहल-

कदमी कर रहे हैं। दुबारा सिगरेट सुलगायी। प्रोप्राइट्रेस ? सो रही हैं ? गोरा बाबू कमरे के अन्दर गये। बाहर निकल आये। शराब की बोतल खोली। पी रहे हैं। गोपाल घोष चिहुंक उठा। दीर्घांगी प्रोप्राइट्रेस को पहचानने में वह गलती नहीं कर सकता है। उनके कदम रखने का तौर-तरीका और ही तरह का है। आकर सामने खड़ी हुई। गोरा बाबू चिहुंक उठे।

'दो। अब तुम पी नहीं सकते।'

गोरा बाबू ने पीना बन्द कर दिया। प्रोप्राइट्रेस ने हाथ पकड़कर खींचते हुए कहा, 'चलो, सो रहना।'

'नींद नहीं आ रही है।'

'सिर सहला दूंगी, चलो।'

गोरा बाबू बिना प्रतिवाद किये जाकर लेट गया। मंजरी सिरहाने बैठ गयी। हाथ से सहला रही है। गोपाल घोष और कुछ देर तक बैरेक के बरामदे से सटकर बैठा रहा। लेकिन अब निस्तब्ध रात के वक्षस्थल पर शब्द का एक भी ढेला नहीं गिरा। प्रोप्राइट्रेस उठकर खड़ी हुई, थोड़ी देर तक खड़ी ही रही। उसके बाद अन्दर चली गयी।

गोपाल घोष भी उठकर सोने चला गया। नीतू के बदन का कपड़ा उघड़ गया है। आखिरी कार्तिक के महीने की ठण्ड गिर रही है, नीतू सिकुड़ कर सोया है। चादर से उसका बदन ढंककर वह लेट गया। सबेरे जगना है। ढेर सारा काम है। बाजार-हाट, कल की यात्रा की तैयारी। आज प्रोप्राइट्रेस गोरा बाबू दोनों ने कार्तिक महीने का वेतन दे देने को कहा है। कोलियारी का पैसा जमा है। कच्चा पैसा है। दे देना ही अच्छा रहेगा। बहुत सारा काम है।

ग्यारह

काम भी ढेर सारा है। लेकिन बाद में चलकर सारा काम अपने-आप सही रास्ते पर चला आता है। दुनियाँ का धर्म यही है। सूर्य उगने या उगने के पहले आकाश साफ होने लगता है, परिन्दे चहकने लगते हैं। नींद टूट जाती है। गोपाल घोष की भी यही स्थिति है। सोने में चाहे जितनी रात हो, मगर नींद सबेरे ही टूट जाती है। नीतू उसकी नींद तोड़ देता है। बगल में सोता है। सबेरे नींद से जागकर बाहर जाता है। छोटे आसामी यानी छोटे-ऐक्टर सबेरे उठकर बाहर चले जाते हैं और

हाथ-मुँह धोकर चले आते हैं। उन लोगों के लिए मुँह-हाथ धोना और शौचादि-कर्म करना एक जटिल समस्या है। बड़े रङ्गकर्मी जग जाते हैं तो वे नल आदि की आवश्यकता की सुविधा प्राप्त नहीं कर पाते हैं। यही वजह है कि लड़के पहले ही जग जाते हैं। नीतू से कहा हुआ है कि वह पुकार कर आये। और-और लोगों की तरह नीतू भी उसे बाबू ही कहता है। वह पुकारता है, 'बाबू, बाबू, सुबह हो गयी है।'

वह चला जाता है। गोपाल इसके बाद जम्हाई लेकर उठ जाता है, मुँह-हाथ धोने के पहले ही रसोइये के पास से एक बार हो आता है। वे अगर सोकर नहीं उठते हैं तो उन्हें पुकारकर निश्चिन्त हो जाता है। उसके बाद विपिन को पुकारता है। बस, इतना होने से ही उसका काम चल जाता है। घड़ी में चाबी पड़ जाती है। चाबी पड़ गयी तो घड़ी ठीक से चलेगी। दल भी चलता है।

विपिन बाजार-हाट की ओर भागा-भागा जाता है, चाहे जहाँ जैसा भी बाजार या हाट रहे। इतना जरूर है कि गाँव रहने पर बाजार-हाट का काम नायक पक्ष कर देता है। रसोइये चाय का दौर खत्म करते हैं। उसके बाद रसोई का काम करने लगते हैं। दूसरी ओर जो यात्रा होगी उसका इन्तजाम होता है। नया नाटक होता है तो दो-चार व्यक्तियों से पार्ट कहलाया जाता है। या एक कमरे में बैठकर सब लोग दुहरा लेते हैं। पुराना नाटक हो और उसमें नये आदमी हों तो उनसे पार्ट कहलाया जाता है, उन्हें एक्शन समझाया जाता है। और-और लोग एक दफा और सो लेते हैं। दो-चार व्यक्ति पुराने ताश की गड्डी लेकर बैठ जाते हैं। रीतू बाबू दो-तीन बार खाना खाता है, मुँह के बल पड़े रहता है। उनका बदन गोलक दास दाब देता है। इसके लिए रीतू बाबू उसे रात का खाना देता है। नाटू बाबू बहुत देर तक दातून से दाँत माँजता है। उसके बाद गोपाली को बुलाकर एकान्त में जाकर बैठता है। बाबुल बोस अभी नया है अतः गोपाल आज तक उसकी आदत को समझ नहीं सका है। किसी दिन घूम-घूमकर दलाली करता रहता है। किसी दिन किताब लेकर बैठ जाता है। उसके पास कुछ पुस्तकें हैं। शोभा पाँव फैलाकर बैठ जाती है, आशा बाल सँभालती है। बंसी मास्टर दिन के वक्त आशा को अपने पास नहीं बुलाता है। वह अपने सामने आईना रखकर बालों में कंघी करता है। योगा बाबू जप इत्यादि करता है। अफीमखोर भूदेव बेहला की पेटिका और छड़ में रोजिन लगाता है, उसके साथ क्षीरोद भी बैठता है। चाबी दबाकर स्वर बाँधता है। फ्लुटवाला नागेन फ्लुट लेकर पों-पों करता है।

मालिक-मालकिन अपने कमरे में बातचीत, सलाह-परामर्श करते हैं। गोपाल की बुलाहट होती है। दल के बारे में बातचीत चलती है।

'अमुक को कह दीजियेगा कि उसका पार्ट अच्छा नहीं होता है। ध्यान नहीं देता है।'

'कल की कुछ रिपोर्ट मिली ? लोगों का कहना क्या है ?'

'इसको तो बुखार है। यह पार्ट किसको दीजिएगा? रीतू बाबू से एकबार पूछ लें।'

'यहाँ से परसों रवाना होना है। बीच में तीन दिन कोई प्रोग्राम नहीं है। उसके बाद जगद्धात्री पूजा में बाँकुड़ा जाना है। बंसी को एक बार रानीगंज भेजिये। वहाँ से होकर बाँकुड़ा जाना है। दो दिन का बयाना मिल जाये तो अच्छा रहे।'

बंसी मास्टर बयाने का इन्तजाम करने में सिद्धहस्त है। वह इन्तजाम कर ही लेता है। लेकिन उसके हठ को बरदाश्त करना ही पड़ता है। बंसी मास्टर आशा के बंधन से बँधा हुआ है वरना वह फ़कीर है। फ़कीर चाहे न हो, परन्तु बहेतू जरूर है। उसके पास असबाब के तौर पर एक सूटकेस, एक कुरता, एक बनियान, एक लुंगी और एक सूती चादर है। बाकी सारा कुछ आज आता है और कल या परसों या पाँच दिन बाद चला जाता है। शराब के पैसे के लिए बेच देता है। बयाने के लिए जाने पर उसे कुरता, धोती, चादर—यहाँ तक कि छड़ी भी देनी पड़ती है। बयाने करके लौटता है मगर लिबास उसका वही हमेशा के जैसा रहता है—मैले बनियान के ऊपर पुराना कुरता और लुंगी। और एक चीज है जिसे वह भूलता नहीं, वह है सेल्युलाइड फ्रेम का मेढ़क की आँखों जैसा चश्मा। बंसी मास्टर को परसों रानीगंज भेजना है। वरना दल को दो दिन बेकार बैठे रहना होगा।

गोपाल घोष आज सवेरे से वेतन के हिसाब के सन्दर्भ में व्यस्त था। वह बैठकर देख रहा था कि किसने कितना रुपया पेशगी के तौर पर लिया है और कितना उसका बकाया निकलता है। उसी के अनुरूप वह प्राप्य राशि का लेखा-जोखा एक कागज पर उतार रहा था। चश्मा ढीला हो गया है—नाक से नीचे की ओर फिसल-फिसल जाता है। बायें हाथ से ठेल रहा था। बीच-बीच में छोटा नोट-बुक खोल रहा था—उस दिन मणि घोष ने संभवतः स्टेशन पर दो रुपया लिया था।

रीतू बाबू आकर खड़ा हुआ, 'क्या बात है? आज आपको क्या हुआ है गोपाल बाबू? आज यात्रा—? यह सब आप क्या कर रहे हैं? ओह! हिसाब? अभी तो महीना खत्म नहीं हुआ है।'

'कल रात मुझसे कहा गया है कि सायकडीह के रुपये से वेतन चुकता कर दें।'

'ठीक है। मैं तो पूरी रकम ले चुका हूँ। पेशगी दीजिएगा। बैग खाली है।

नाटू से उधार ले चुका हूँ। तनख्वाह मिलते ही वह रुपया घर भेजेगा और पैसे की माँग करेगा। पचास रुपया दीजिएगा ?'

'ले लीजिएगा।'

'नहीं, उस संबंध में कोई शिकायत नहीं है। लेकिन नाटक कौन-सा होगा ?'

'मालिक उठकर बैठ गये हैं। प्रोप्राइट्रेस का भी संभवतः स्नान वगैरह हो चुका है। अब मालूम होगा। कल रात बोले थे कि रीतू बाबू से पूछ लीजिएगा।'

'सवेरे आप नहीं गये थे ?'

'नहीं। हिसाब करके ले जाऊँगा। दूसरी बात है कि सवेरे बिना बुलाये नहीं जाता हूँ। इस बात की सीख मुझे शशी अधिकारी ने दी थी। कहा था, गोपाल कभी सबेरे के वक्त काम-धंधे का हिसाब या यह चाहिए, वह चाहिए—इसकी फेहरिस्त लेकर मत आया करो। जानते हो, अपने मन की बात बता रहा हूँ। एक रात का जागरण रहता है, कपड़े-लत्ते अस्त-व्यस्त हो सकते हैं, उस पर सवेरे जगते ही रात के प्ले के संबंध में तरह-तरह की बातें मन में मँडराती रहती हैं। प्ले अच्छा होता है तो भी मन ऐसा होता है कि जितना भी दोष है उसी की याद आती है। चमड़े का मुँह, कब मुँह से क्या निकल जाये, कौन जाने! सुबह आकर वह सब क्यों सुनोगे ? बुलाने पर आओ। उस समय बताया जायेगा कि क्या करना है। न तो भला कहूँगा, न बुरा। चुपचाप आकर खड़ा हो जाना। इसीलिए मैं गया नहीं हूँ। अभी तक बुलाया नहीं है। शायद—'

'क्या ? मालिक की तबीयत ठीक नहीं है ?'

'दोनों की।'

'बात क्या है ? विरह ?'

'हो सकता है।'

'अली को आज कमरे से हटा दें। उन लोगों को कपोत-कपोती की तरह रहने दें। मूड खराब होना स्वाभाविक है।'

'दूँगा। कहने की जरूरत नहीं है। शिवनन्दन आ रहा है। उसे बुलाया गया था।'

रीतू बाबू ने मुड़कर देखा। शिवनन्दन सचमुच ही उस ओर से इधर ही आ रहा है। गोरा बाबू चुपचाप बैठा है और सिगरेट का कश ले रहा है।

शिवनन्दन ने आकर रीतू बाबू से कहा, 'परनाम बाबू।'

रीतू बाबू ने हाथ उठाकर कहा, 'जीते रहो भैया। तुम्हारा तौर-तरीका बहुत अच्छा है। क्या खबर है ? गोपाल बाबू को बुलाहट है ?'

'आपको भी सलाम कहा है।'

'आइये गोपाल बाबू।'

'आप आगे बढ़िये मास्टर साहब। मैं कागज-पत्तर उठाकर रख लूं।

शिवनन्दन, पकड़ो तो भैया। यह सब गुदरा कागज ले लो। ठहरो। बक्से से एक और खाता लेकर आता हूँ।'

रीतू बाबू आगे बढ़ गया। गोपाल घोष ने कमरे से निकल सीढ़ी पर कदम रखते हुए शिवनन्दन से धीमी आवाज में पूछा, 'कल तुम कहाँ सोये थे? रात के बारे में तुम्हें कुछ मालूम है?'

'मालूम नहीं। तब हाँ, कुछ हुआ है। मैं उधर के बरामदे पर सोया था। इधर सोया तो मालिक ने कहा, तुम उधर जाकर सोओ। तुम्हारी नाक बहुत बजती है। अच्छा हुआ, मेरी भी नींद टूट जाती। गहरी नींद में सोया। पूरब का बरामदा ठण्डा था, हवा चल रही थी।'

'हूँ। चलो।'

शिवनन्दन ने पूछा, 'कुछ हुआ है क्या? यहाँ की मजलिस से गड़बड़ी चल रही है। बाप रे बाप, मंजरी के पार्ट से अचरज में पड़ गया। नाच भी सीख चुकी है—बढ़िया नाचा। लेकिन वह कितने दिन पहले की बात है? दस बरस। शादी हुए दस साल हो गये। उसके पहले की बात है। उसके बाद घुंघरू छुआ तक नहीं था। लेकिन कल—अरे बाप!'

'चुप रहो, वह सब बात रहने दो।'

'उस छोकरी को घोष बाबू—'

'दूँगा। आज ही उस कमरे से हटा दूँगा।'

'नहीं भैया, दल से हटा दो।'

'साल-भर का कॉन्ट्रैक्ट है। चुप रहो।'

वे लोग जैसे ही बरामदे पर आये, रीतू बाबू ने कहा, 'गोपाल बाबू, मालिक ने बताया कि तबीयत ठीक नहीं है। कह रहे हैं कि आराम मिले तो अच्छा रहे। मगर उन्हें छोड़कर कहीं प्ले हो सकता है? नायक पक्ष मार-पीट करने पर उतारू हो जायेगा।'

गोरा बाबू ने हाथ का सिगरेट फेंककर कहा, 'चाय बनाकर ले आओ शिवनन्दन। मास्टर साहब को चाय पिलाओ और अपनी मुन्नी को पुकारो। देखो, प्रणाम वगैरह हो चुका है या नहीं।'

गोपाल ने मीठे स्वर में कहा, 'बुखार वगैरह तो नहीं आया है न? कोलियारी के डॉक्टर को बुला लाऊँ?'

'नहीं, बुखार नहीं है। डाक्टर भी नहीं बुलाना है। बदन में एक तरह का दर्द है। ताकत नहीं मिल रही है।'

रीतू बाबू ने कहा, 'इसका कारण है। कल डोस आपने एक बारगी कम कर दिया था। ज्यादा परिश्रम करना पड़ा है। कल प्ले के आखिर में आप पर ज्यादा स्ट्रेन पड़ रहा था। अलबत्ता हम लोग हँस-बोल रहे थे कि आप मोहिनी माया के मोह से आच्छन्न हो गये हैं। लेकिन तनाव की बात थी ही।'

गोरा बाबू हल्की हँसी हँस दिया। लेकिन थकान की हँसी। शिवनन्दन चाय लेकर बाहर आया। उसके पीछे मंजरी है। वह स्नान कर चुकी है, पूजा-पाठ भी कर चुकी है। लाल कोर की गरद की साड़ी पहने है, घुंघराले छोटे-छोटे बाल कान की बगल से होकर सामने की ओर झूल रहे हैं। माथे पर आधा घूंघट है, गले पर आंचल फैला है। चाबी के भार से गला घिरा हुआ है। शिवनन्दन ने चाय की प्याली उठाकर हर व्यक्ति के हाथ में दी। उसके हटते ही मंजरी आगे बढ़ आयी। बोली, 'डाक्टर को बुला लाइये गोपाल मामा।'

'नहीं-नहीं। डॉक्टर की जरूरत नहीं है।'

'है।'

'भारी मुसीबत है।'

'मुसीबत नहीं। डॉक्टर को तो बुलाना ही है। अलका की एक बार जाँच करानी है। हर रोज उसका पार्ट तो मेरे द्वारा नहीं हो सकेगा। कल सोयी नहीं है। प्ले देखने गयी थी। मेरे मोहनी माया के अभिनय के वक्त। लौटकर आयी तो जगी हुई थी। उसके बाद वह उठकर बैठी और लेट गयी। एक या दो बार बाहर निकली थी। रोयी थी। मैंने यह नहीं पूछा कि रात में उसे कौन-सी तकलीफ थी। डॉक्टर को एक बार बुलाना ही है। जब आना ही है तो उन्हें भी एक बार देख लें।'

अलका कमरे से बाहर आयी। वह भी स्नान कर चुकी है। सफेद जमीन की एक महीन किनारी की करघे की साड़ी आधुनिक ढंग से घुमाकर पहने है। बदन पर सफेद ब्लाउज चेहरे पर हल्के पाउडर का लेप है। बालों को दो हिस्से में बाँट कर, दो गिरहों से बांधकर, सामने की ओर लटका लिया है। ललाट पर कुमकुम का टीका है। रंग उसका सांवला है। मुंह और नाक पर, ठीक भौंहों के नीचे एक गड्ढा है, उसी से उसके आकर्षण में जैसे वृद्धि आ गयी है। साबुन और तेल की हल्की-हल्की गंध आ रही है। सवेरे का बरामदा जैसे प्रफुल्लित हो उठा। बोली, 'मैं अच्छी हूँ। नहाने से तबीयत हल्की हो गयी। स्वयं को खासा-अच्छा स्वस्थ महसूस कर रही हूँ। डॉक्टर बुलाने की जरूरत नहीं। पार्ट भी कर सकूंगी।'

मंजरी बोली, 'बगैर डॉक्टर से दिखाये पार्ट करने के लिए तुम्हें उतार नहीं सकती।'

'नहीं। अपने स्वास्थ्य को मैं समझ रही हूँ।'

'शिवनन्दन, तू एक बार बाबुल मास्टर को बुला ला। वही अलका को ले आये हैं। उनका क्या कहना है, सुन लूं।'

'बुलाना है तो बुलाइये। वे मेरे गार्जन नहीं हैं। कोई रिश्ता भी नहीं है। हम एक साथ एमेच्योर में पार्ट करते थे। गृहस्थी में अभाव था। सिनेमा-थियेटर में कोशिश की पर कामयाबी हासिल नहीं हुई। सिनेमा वाले को फोटो फेस पसन्द नहीं आया, उस पर मेरा सिर छोटा है। थियेटर में सखीदल में लेना चाहा, लेकिन

तनख्वाह बहुत कम देना चाहता था। उसी समय बाबुल दा ने एक दिन कहा, यात्रा में भर्ती होओगी? मैं भर्ती हो गयी। दल में और भी महिलाएं हैं। महिला प्रोप्राइटर है। वेतन भी लगभग सौ रुपया मिलेगा। रात की खुराकी भी मिलेगी।' यह कहकर वह थोड़ी देर के लिए चुप होकर मुस्तायी, उसके बाद बोली, 'बहुत उम्मीद लेकर आयी हूं।'

उसके बोलने के स्वर से सभी उदास हो गये।

रीतू बाबू बोला, 'तुम्हारा प्रॉस्पेक्ट है। उस दिन तुम अच्छा नाची थीं।'

'कल उन्होंने मुझसे काफी अच्छा किया है।'

'वैसा उनके संयम के कारण हुआ है। धीरे-धीरे सब समझ जाओगी।'

अब गोरा बाबू ने कहा, 'धीरे-धीरे जानकारी होगी। तब इन सब पार्टों में तुम्हारे सामने कोई खड़ा नहीं हो सकेगा, जिस तरह कि वे जना और सती तुलसी का पार्ट करती हैं। सती तुलसी का पार्ट देखना। सो आज सती तुलसी ही क्यों न मंचित किया जाये? उसमें अलका श्रीकृष्ण है। नाच नहीं है। मेहनत कम है, रिस्क भी कम है। कहिये रीतू बाबू?

'होने दीजिये।'

'तुम्हारा क्या कहना है। मालकिन?'

'वही हो। मंजरी ने एकान्त निस्पृह भाव से कहा। उसके बाद बोली, 'लेकिन तुम कह रहे हो कि तुम्हारी तबियत ठीक नहीं है। सती तुलसी में तुम्हें अधिक मेहनत करनी पड़ेगी। शंखचूड़, छद्मवेशी शंखचूड़ का तुम्हारा पार्ट है। तुम बरदाश्त कर सकोगे?'

'शिवनन्दन, दो तो भैया मिल्क ऑफ मैगनेसिया। गैस खत्म होते ही ठीक हो जायेगा। उसके बाद यात्रा की मजलिस में ढोल बजते ही लड़ाई के घोड़े की तरह तेज हो जाऊँगा। उसके साथ डोस रहेगा। इसके साथ ऐसी बात नहीं है। कल बल्कि मेरा रेस्ट है—अष्टवज्र या कर्ण होगा। मेरा छोटा-सा पार्ट है। इसमें भी अर्जुन का उसमें भी अर्जुन का पार्ट। मास्टर साहब और तुम चला लेना। भीम सुभद्रा या कर्ण वध। अलका को बाद में मेहनत करनी पड़ेगी। उसके इल्म का भी पता चल जायेगा। उर्वशी या ब्रह्मशाप! कहो, क्या किया जाये?'

'ठीक है। सब लोग जो कहेंगे, वही होगा।' यह कहकर मंजरी अन्दर चली गयी।

गोपाल बोला, 'जरा रुक जाओ बेटी। बाबुल बाबू आ गये हैं। उन्हें तुमने बुला भेजा था।'

'उन्हें चाय पिलाइये। अब उनसे कुछ पूछना नहीं है।'

बाबुल अपनी स्वाभाविक भंगिमा में बोल उठा, 'खुदावल्ला हे! हे भगवान! मैं आया और पूछने का अन्त हो गया!'

सब लोग हँस पड़े। मंजरी भी हँस दी और मुड़कर खड़ी हो गयी। बोली,

'आपको व्यर्थ ही कष्ट दिया। अलका के बारे में एक बात पूछनी थी। अलका ने कहा, उसकी जरूरत नहीं है। अलका ने बताया कि वह स्वयं अपने आपकी मालकिन है।'

'राइट, राइट राइट ! अलका का पार्जिंग है—सिंगल पर्सन, सिंगुलर नंबर, ऑलवेज मालकिन—यानी नॉमिनेटिव केस टु ऑल वर्क्स यानी इन ऑल हर क्रियाज एण्ड कर्म्स ऑफ हर लाइफ। मगर सिर्फ चाय नहीं चाहिए मैडम। कल आपने ऐसा पार्ट किया है कि आपका प्राप्य है अनेकानेक अभिनन्दन और उसके बदले हमारा प्राप्य है कुछ सॉल्टी चीज। जिससे कि हम चिर दिन आपका गुणगान कर सकें। उफ्, दो प्रतिमुख घोड़ो को आपने एक जैसी गति से दौड़ा दिया।'

मंजरी हँसकर बोली, 'आपको अच्छा लगा ? अरे शिवनन्दन, मास्टर साहब वगैरह के लिए अच्छी तरह से समोसे तल दो।'

मिल्क ऑफ मैगनेसिया पीते-पीते गोरा बाबू ने गिलास नीचे रखकर कहा, 'आज फिर सती तुलसी में इनका पार्ट देखिएगा।'

मंजरी ने हँसकर कहा, 'अपने बारे मे नहीं बता रहे हो। आज इनका डबल रोल है। देखिएगा। असली शंखचूड़ और छपवेशी शंखचूड़।'

रीतू बाबू बोला, 'दोनों में कैसी लड़ाई होती है ! उफ् मैं तो अवाक् होकर उस सीन को देखता हूँ। जितनी बार प्ले हुआ है, मैंने देखा है। कौन जीतता है, कौन हारता है ! कौन हारता है, कौन जीतता है।'

मंजरी खड़ी ही थी, वह इस तरह की बातचीत छोड़कर जा नहीं सकी थी। उसने हल्की हँसी हँसकर कहा, 'हारती मैं हूँ।'

रीतू बाबू ने कहा, 'नहीं-नहीं।'

गोरा बाबू ने कहा, 'विनम्रता का प्रदर्शन हो रहा है, समझ रहे हैं न मास्टर साहब।'

'ऐसा क्यों कह रहे हो ?' मंजरी अजीब तरह की हँसी हँस पड़ी, 'तुलसी को जिन्दगी का सब कुछ खोना पड़ा, सब कुछ उसका लुट गया। वह क्या उसकी जीत है !'

'वह पुस्तक का आख्यान है। इसके अलावा तुम तुलसी नहीं हो।'

लेकिन मुझे उस समय यह बात याद नहीं रहती।'

यह कहते-कहते वह मुड़कर अचानक कमरे के अन्दर चली गयी। हल्के हास-परिहास एवं आनन्द पूर्ण वार्तालाप की वह मजलिस मलिन और उदास जैसी हो गयी।

तुलसी राधा की सखी है। गोप कन्या राधा की नहीं, चिरन्तन गोलोक विहारिणी राधा की। प्रणयलीला के लिए तब उनका मर्त्यलोक में आविर्भाव नहीं हुआ था। सुन्दरी तुलसी के साथ श्रीकृष्ण हास-परिहास कर रहे थे, तुलसी भी अनुराग-भरी दृष्टि से उसकी ओर ताक रही थी। राधा ने उसे अभिशाप दिया—'मर्त्य लोक मे जाकर तुम मानवी बनोगी और तुम्हें जन्म-मृत्यु का दुःख भोगना पड़ेगा।'

श्रीकृष्ण बोले, 'जाओ सखी, वहाँ जाकर तुम मेरे अंश से जन्म लोगी और मेरे ही सखा सुदामा के स्त्री-रूप में मुझे प्राप्त करोगी।' उनके अंश से सुदाम का आविर्भाव हुआ। उसने प्रवेश किया।

तुलसी बोली, 'अंश को पाकर मुझे तृप्ति नहीं होगी प्रभु। मैं तुम्हें संपूर्ण रूप मे प्राप्त करना चाहती हूँ।'

'वही होगा सखि।'

नाटक की प्रस्तावना यही है।

नाटक का प्रारम्भ हुआ। राजा धर्मध्वज की कन्या पितृगृह में तपस्विनी की तरह जीवन-यापन कर रही थी—वृन्दावन में कृष्ण-सखा कृष्ण के अंश से संभूत सुदामा के साथ। सुदाम भी व्रजविलासिनी राधा के द्वारा अभिशप्त था। तुलसी के प्रति देववाणी हुई—सुदाम दैत्य रूप में शंखचूड़ नाम से जन्म लेगा। वह आकर तुम्हें वरण करेगा। काल तुम्हारे अंग का स्पर्श नहीं कर सकेगा। तुम चिर तरुणी रहोगी। तुम उसकी पत्नी बनकर जीवन-साम से शाप से मुक्त हो जाओगी। तुम्हारी समस्त इच्छाओं की पूर्ति होगी।

तुलसी मंजरी है, श्री कृष्ण असका, राधा गोपाली, सुदाम और शंखचूड़ गोरा बाबू।

प्रस्तावना मे श्री कृष्ण तुलसी का अनुसरण करते हुए प्रवेश करते हैं—जैसे उनका आँचल पकड़ने की चेष्टा कर रहे हैं। तुलसी भागना चाहती है। पीछे की ओर देख कर कहती है—

नहीं-नहीं सखा नहीं। छोड़ो-छोड़ो—
हालांकि वह अनुराग भरी दृष्टि से ताक रही है।
क्या करते हो सुन्दर श्याम चपल चंचल
किशोरी के प्राणबन्धु—हे चिर किशोर—
मेरे प्रति अनुराग—छिः छिः छिः,
हे मुरली वादक, यह कैसा आचरण तुम्हारा !
मैं दासी श्रीमती की दासी सखि;—
मेरे प्रति अनुराग तुम्हारा नहीं शोभनीय
साधारण; नितान्त साधारण नारी-दासी।

श्री कृष्ण ने कहा—

तुम असाधारण, तुम अपरूपा

राधा और तुम कभी नही हो भिन्न सखि !
राधा है शतदल—तुम उसकी मधु गंध
राधा अमृत-दीप और तुम उसका आलोक
लो अब पकड़ लिया तुमको मैंने ।

तुलसी उस स्पर्श से अवसन्न हो गयी । हँस कर कृष्ण ने कहा—

यह क्या सखि, स्पर्श मात्र से
तुम हो गयी अवसन्न—इतना प्रेम !

अब तुलसी ने स्वीकार किया—

हाँ ! इतना है प्रेम ! यह स्पर्श
कामना एक मात्र मेरे जीवन की ।
मुझे लगा लो वक्षस्थल से
ओ मेरे प्रिय !

अलका कृष्ण के रूप मे बेहद फब रही है । पार्ट भी उसने बहुत अच्छा किया । गोपाली आयी, उसने अभिशाप दिया ।

श्री कृष्ण ने कहा—

जन्मान्तर में होगी पूरी साध तुम्हारी । जाओ, जाकर
लो जन्म धर्मध्वज राज-निकेतन में कन्या बन
मेरा सखा सुदाम—अंश से मेरे उसका
होगा उद्‌भव । पत्नी रूप में तुम
प्रारम्भ करो अपने जीवन का ।

सुदामा के रूप मे गोरा बाबू ने प्रवेश किया । उसने हाथ फैलाकर कहा—

पकड़ो मेरा हाथ सखि ।

तुलसी ने कहा—

अंश खण्ड से तृप्ति न होगी मुझे ।
पूर्ण रूप में तुम्हें प्राप्त करने की अभिलाषा मुझमें !

कृष्ण ने कहा—

वही होगा, वही ।

तुलसी रोने लगी ।

कृष्ण ने उसका चिबुक पकड़ कर गीत गाया—

रो-ओ, रो-ओ सखि तुम रोओ
आँसू के मोती से मणि हार गूँथ कर पीड़ा का
पहना दो मुझे—बाँधो हर फेरे में
सप्तपदी के । रो-ओ—ओ !
सृष्टि सरोवर मे तुम्हारे लोचन का जल
लीला का वन पद्म खिलेगा टलमल

सौरभ आवेदन से वर्नू भृङ्ग, करो साधना ऐसी तुम
रो ओ—ओ—ओ !

तुलसी कृष्ण के मुखड़े की ओर देख कर पीछे हटती हुई मजलिस के बाहर चली आयी। उसकी पीठ की ओर मुदाम था। कृष्ण उसका हाथ थामकर चलते हुए सामने की ओर आये, जैसे तुलसी को स्वर्ग धाम से मर्त्य लोक में विदा करने के लिए वैकुण्ठ की सीमा तक आये हों। गीत का अन्त मजलिस के अन्त के साथ ही हुआ।

क्षण-भर में शान्त-मजलिस करतल ध्वनि से मुखरित हो उठी। गोरा बाबू ने कहा, 'बहुत अच्छा ! अलका का गीत जम गया। शाबाश !'

तुलसी के चेहरे पर भी चमक खेल गयी। बोली, 'बहुत अच्छा गाया है, बहुत ही अच्छा।'

उसने आँखें पोंछ लीं। आँखों में सचमुच ही आँसू आ गये थे।

मजलिस की करतल-ध्वनि वेश-मन्दिर के सभी रंगकर्मियों के मन में उमंग जगा जाती है। उत्साह से वेश-मन्दिर चंचल हो उठा। बाबुल बोस ने मेज पर एक मुक्का मारा और बोला, 'गॉड इज गुड एण्ड काइन्ड टु मी—मेरा चन्द्र बदन 'सेव्ड'। मजलिस फायर। लाइये, एक सिगरेट दीजिये, सुलगा लूँ। माई बाक्स खाली। बिग ब्रदर, आप दीजिये।'

रीतू बाबू शराब ढाल रहा था। गिलास हाथ में थमाते हुए बायें हाथ से सिगरेट-दियासलाई बढ़ा दी और कहा, 'लो। हॉर्स हिर दोनों। ठहरो, मैं अपने लिए ढाल लूँ। अलका का सक्सेस पियूँगा। उस लड़की में टैलेन्ट है।'

नाटू बाबू इन्द्र की भूमिका में उतरेगा। विन्यासकारी उसके ललाट पर देव तिलक लगा रहा था। विन्यासकारी के हाथ को हटा कर उसने कहा, 'हर व्यक्ति ने अच्छा किया है सर, वरना—'

मेज पर दुबारा मुक्का मारते हुए बाबुल बोला, 'सर्टेनली, हण्ड्रेड टाइम्स सर्टेनली। एवरी बॉडी—बिगनिंग फ्राम राधा—'

भोगा बाबू का आज पार्ट नहीं है। वह दूसरी तरफ बैठा था। बैठे-बैठे देख रहा था। वह बोला, 'गोपालीवाला, गोपालीवाला राधा थी। राधा ॥ हो तो कृष्ण ऐसा गीत गा सकता है। सब कुछ राधा के कारण। हुँ-हुँ बाबा !'

नाटू बाबू एक जलती दृष्टि उछाल कर शान्त हो गया। कुछ बोल नहीं सका। विन्यासकारियों ने भी कहा, 'तिलक का काम समाप्त कर लूँ बाबू। आपके पार्ट में देर नहीं है। वह सब अभी रहने दें।'

नाटू बाबू ने विन्यासकारी से कहा, 'गाँजा पीने से आदमी ऐसा हो जाता है ? या जो—'

इसके बाद उसे शब्द नहीं मिले। बात बदल कर कहा, 'लो जल्दी करो।' उसके बाद कहा, 'ठहरो।' उसके बाद कहा, 'तुलसी की आँखों के आँसू किसी ने देखे हैं ? आँसू ? केवल तालियों की गड़गड़ाहट होती है। लो खत्म करो।'

बाहर वेश-मन्दिर के बरामदे पर रुनझुन घुंघरू-बँधे पाँवों को कोई नचा रहा है। सखीदल का लड़का है।

बाबुल बोला, 'कौन है रे ? अँधेरे में खेमटा किसने शुरू कर दिया ?'

'माटी मे मिला दिया। गरमायी मजलिस पर पानी डाल दिया।' बंसी मास्टर ने कमरे के अन्दर प्रवेश किया।

'क्या हुआ ?'

'और क्या होगा ? हमेशा से जो कुछ इस नाटक में होता आया है—इस सीन के बाद—धर्मध्वज और नारद हैं।'

रीतू बाबू बोला, 'वह गति मे धीमापन ला ही देता है। हमेशा से देखता आ रहा हूँ। उसका कोई उपाय नही है।'

तत्क्षण सिगरेट को चाय के सकोरे के अन्दर फेंककर वह उठ कर खड़ा हो गया, 'कहाँ हो जी, जरा वेसलिन चेहरे पर लगा दो। और सफेद पेन्ट लगा दो। उफ् शिव का वेश धारण करने का यही एक पनिशमेन्ट है।'

बाबुल चंचल हो उठा। बोला, 'प्ले को लटका दिया ?'

'बिलकुल। इसे लटकना नही, जमीन पर धड़ाम से गिरना ही कहा जायेगा। कोई आदमी चिल्ला उठा, जाओ जी, भात खा कर देह में ताकत पैदा कर के आओ। मास्टर साहब ने जो कुछ कहा उसमे सच्चाई है। लेकिन फर्स्ट सीन इस तरह कभी नही जमा था। आज जमा तो ऑडियेन्स झूमने लगे।'

'इसमे क्या रखा ही है। प्रस्तावना के बाद घटना बतला देता है। नारद राजा धर्मध्वज के पास आये। कहा, महाराज तुम्हारी अतुलनीय कन्या के बारे में सुन कर उसे देखने आया हूँ। सुना है, उसके पति स्वर्गवासी हो गये हैं। वह बहुत दिनों से इसलिए तपस्या कर रही है कि उसका पति नये जन्म मे पहले का रूप और आकार धारण कर आवे। इधर इतना लम्बा समय बीत जाने पर भी तुम्हारी पुत्री की वय मे कोई वृद्धि नही हुई है। वह षोडशी ही है। स्वर्ग लोक के देवतागण उसके सम्बन्ध मे बातें करते है। देवलोक मे विस्मय छा गया है। मैं उसे देखने आया हूँ। जानने के लिए आया हूँ कि इस बात मे सच्चाई है या यह लोकोक्ति है। धर्मध्वज कहेगा, बात सही है देवर्षि। मेरी कन्या का नाम तुलसी है। कुँवारी अवस्था में उसने नारायण को पति रूप में पाने की तपस्या की थी। ब्रह्मा ने कहा, कृष्ण के अंश से सुदाम का जन्म हुआ है। तुम उसके गले मे वरण माला डाल दो। मैंने सुदाम से उसका विवाह कर दिया। श्रीमती राधा के शाप से सुदाम का देहान्त हो गया। उसे दैत्य के रूप में जन्म लेना है। तुलसी चिता में जलने गयी। आकाशवाणी हुई—तुलसी तुम सहमृता मत होओ। तपस्या करो। सुदाम यद्यपि दैत्य कुल में जन्म लेगा, परन्तु उसका आकार, अवयव, रूप सब कुछ उसी सुदामा की तरह होगा। तुम उसे देखते ही पहचान लोगी। तुम्हारी भी वयःसंधि नहीं होगी। वह आयेगा तो वह भी तुम्हें पहचान लेगा। उसके गले में वरमाला डाल देना। उसके बाद तुम्हारी जन्म-

जन्मान्तर की नारायण-प्राप्ति की कामना पूर्ण हो जायेगी। उसी अवधि से वह तपस्या कर रही है।' विवरण बस इतना ही है। वे लोग करें हो क्या? तलवार चलायेंगे या उछल-कूद मचायेंगे? या डुएट गीत गायेंगे? उस पर दोनों नाम से बूढ़े हैं। देखो, अब देखो। अबकी तुलसी से शंखचूड़ का साक्षात्कार होगा, वरमाला पहनायी जायेगी। प्रोप्राइट्रेस और मालिक हैं। वही, वही तो प्रोप्राइट्रेस प्रवेश कर रही हैं। विपिन हाथ में माला थमा रहा है। तुलसी ने गेरुआ वस्त्र धारण किया है। देखना, कितना रोमान्टिक होता है। लेकिन तुम सजना-संवरना खत्म कर डालो बाबुल मास्टर। इस सीन के बाद ही तुम्हारी बारी है।'

बाबुल बोला, 'मैं उसमें अनुस्वार का प्रयोग करूंगा मास्टर साहब। सोच रखा है।'

'अनुस्वार?'

'हाँ, कहने का मतलब है संस्कृत। हुआ हुआं—भों-भों देवराज हुआं। देवराज कहेगा, क्या हुआ? मैं कहूँगा, शंखचूड़ं भूमिफोड़ं दैत्य ववरं फुफकारं हिस-हिसं शब्दं करत्वा फण उठा रहे हैं। तुलसी से मिलनं समाप्तं। हम लोगों के दयालु पितामह ब्रह्मा ने वर भी दिया है, तुम्हारी पत्नी का सतीत्व जब तक अटूट रहेगा तब तक ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, महाशक्ति—इनमें से किसी की शक्ति से तुम्हारी मृत्यु नहीं होगी। हुआं अब मेरा हुआ। अब शनि का रफा-दफा हो गया। उफ्, तुम्हारे परामर्श पर मैं उसकी तपस्या के साथ दृष्टि डालने गया था। हाय-हाय। कैसे करूंगा?'

'गुड। मास्टर, तुम्हारा ब्रेन बड़ा ही साफ है। हाँ, सजना-संवरना खत्म करो। बाल और मूंछ पहन लो। चोटीदार बाल है। इसके अलावा नीला चश्मा लगा लो। इतना कर लोगे तो शनि हो जाओगे। ऐ-ऐ, तुम लोग सभी चुप हो जाओ। यह योगा मास्टर के गले की आवाज है—। स्वर बड़ा ही अच्छा है। सुनो, कैसा बोल रहा है। वाह-वाह-वाह! लो, फिर जम गया।'

मजलिस से गोरा बाबू का स्वर तिर कर आ रहा है, गम्भीर मीठा स्वर। आवेग से जरा थरथरा रहा है। उच्चारण स्पष्ट है। शंखचूड़ तपस्विनी तुलसी को देखकर विस्मय से अभिभूत हो गया है। लग रहा है, यह तपस्विनी बिलकुल जानी-पहचानी जैसी है।—'कौन तुम हो, यह बात मुझे मालूम नहीं है देवी। अपरूपा तपस्विनी नयन मे अमृत-दृष्टि। रूप में तुम्हारे ज्योत्सना-माधुरी। अङ्ग से निकल रही है दिव्य गंध। मेरी निश्वास-वायु को अपूर्व सम्मोहन से—। सब कुछ जैसे लुप्त होने लगा है—वर्तमान, स्थान, काल। केवल एक सूक्ष्म यवनिका हिल-डुल रही है नयनों के सम्मुख, उसके दूसरे छोर पर हो तुम! जन्म-जन्मान्तर पार करके आ रही हो जैसे तुम। कितनी लगती हो जानी-पहचानी, तुम लगती हो कितनी अपनी—'

मेज पर फिर मुक्का मार कर बाबुल कहता है, 'फिर जम गया। दो भैया विन्यासकारी, एक मस्सा बना कर नाक पर चिपका दो।'

नाटू बाबू बोला, 'ठहरिये जनाब, मेरा मोती माला बाँधने का काम खत्म कर लेने दीजिये। वन बाई वन।'

विपिन भागा-भागा आया, 'मास्टर साहब जो-सो काण्ड हो गया। क्या किया जाये, गोपाल बाबू ने आपसे पूछने कहा।'

'अरे, हुआ आखिर क्या ?' रीतू बाबू बेचैन हो उठा।

'प्रोप्राइट्रेस ने माला तोड़ कर फेंक दी। बैठकर तपस्या कर रही थी। उठकर खड़ी होने लगी तो माला टूट गयी।'

'टूट गयी ! प्रोप्राइट्रेस मैनेज कर लेगी। गले की मोती की माला—मोती की माला नहीं है। वह तपस्या कर रही है।'

बाबुल बोस बोला, 'माला नही ही पहनाये तो हर्ज क्या है ? उसने वरण किया है। एक-दूसरे का हाथ पकड़ कर चले आयेंगे।'

'उहुँ-उहुँ। माला के बिना काम नही चलेगा। वही माला तोड़ कर शंखचूड़ की मृत्यु के दिन पहनना है। तुलसी का सतीत्व भंग होते ही तोड़ डालेगी। शंखचूड़ चिहुँक उठेगा। माला ही देनी है। ऐ जल्दी, मुझे एक वनमाला दे जा। इसके अलावा एक चादर। शिव का वाघंबर और कंबल। जल्दी करो।'

रीतू बाबू ने वाघंबर से सिर से पैर तक का हिस्सा ढँक लिया और हाथ में माला ले बाहर निकल आया। बाबुल खिड़की पर खड़ा हो गया। रीतू बाबू क्या करेगा ? चालान कर देगा ?

मंजरी पार्ट कर रही है और सामने की ओर देख रही है। वह जानती है कि माला कोई ले आयेगा, मगर देगा कैसे ? यहाँ मजलिस में काफी जगह है। दल के वादकों के पास सट कर खड़े हुए बगैर दे नही सकेगा। लेने के लिए जाने पर बुरा लगेगा। अभिनय-अभिनय हो जायेगा। मजलिस के लोगो का नशा दूर हो जायेगा। लेकिन फिर भी लेना ही है।

वह कह रही थी, 'ओ मेरे प्रियतम, तुम सृष्टि के प्रथम लग्न से मेरे प्रियतम हो। यह कठोर तपस्या तुम्हारे ही लिए कर रही थी, प्रियतम।'

'मेरे लिए ? अविश्वास नही करता तुम्हें—फिर भी, फिर भी जैसे—। यह कैसी सूक्ष्म यवनिका मानस-नयन से हटती जा रही है– हाँ-हाँ हो आया स्मरण। बैकुण्ठ वस्तो। राधा ने तुम्हे अभिशाप दिया –'

'जन्म लिया मैंने तुलसी नाम से धर्मध्वज गृह में कन्या हो।'

'मैं जन्मा वृन्दावन में कृष्ण अंश से सुदामा मेरा नाम। तुमसे बाँधा जीवन अपना। राधा रानी ने दिया अभिशाप मुझे, मुग्ध नयनों से देखा था मैंने। शाप दिया अभी होगा तुम्हारा देहान्त। चित्त की विकृति के कारण तुम्हारा दैत्य का है आचार। दैत्यवंश में जन्म लेने पर होगा इस पाप का प्रायश्चित। तुम्हारी तपस्या के फल-स्वरूप जन्म लिया है मैंने, पूर्व रूप और अवयव में—तपस्विनी तुम्हारी तपस्या के

फल से। तपस्या के फलस्वरूप समय का प्रभाव जीत कर आज भी तुम हो षोड़शी—'

'तुम्हारे ही लिए प्रिय—तुम्हारे ही लिए।'

'आओ प्रिया—बाहुपाश में आओ—'

'इसके पहले—'

मंजरी ने चारों तरफ देखा—कहाँ किसके पास माला है। लेकिन किसी के पास दिखायी नहीं पड़ रही है। किसी की आँखों में कोई संकेत नहीं है। फिर—? यह कौन है? मजलिस के ठीक प्रवेश-द्वार पर बाघंबर से अपने शरीर का सिर से पैर तक का हिस्सा ढंके, वनमाला हाथ में लिये कौन है! रीतू बाबू! हाँ! रीतू बाबू ने कहा, 'मर्त्य में गूँथी माला से नहीं सती, स्वर्ग के अम्लान कुसुमों से गूँथी हुई यह लो वैजयन्ती माला। इस माला से प्रियतम का करो वरण। परितुष्ट देवताओं ने भेजा है इसे।'

हाथ में माला थमाकर रीतू बाबू चला गया। जरा भी अस्वाभाविक जैसा नहीं लगा। यही नहीं, इस तरह के एक नाटकीय क्षण का आविर्भाव हुआ कि दर्शक वृन्द ताली बजाने लगे। रीतू बाबू आकर जैसे ही कमरे में बैठा कि बाबुल ने कहा, 'लीजिये' और झट से बैठ कर उसके चरणों का स्पर्श किया। बाबुल ही नहीं, पूरा दल इस प्रकार आनन्दित-उल्लसित हो उठा जैसे किसी जादूगर ने अपना कोई सार्थक जादू का कमाल दिखाया हो। बाहर योगा बाबू बोल रहा है, 'हैं-हैं, यह है रीतू बाबू का कमाल! बलिहारी है।'

कई लड़के तालियाँ बजा रहे हैं। रीतू बाबू बोला, 'फिर एक-एक डोस ले लिया जाये। बाबुल, नाटू, कहो, क्या कहते हो? वह कौन है?'

एक महिला ने अन्दर आकर झुक कर प्रणाम किया। नजर पड़ते ही रीतू बाबू उठ कर खड़ा हो गया, 'आप! स्वयं प्रोप्राइट्रेस। तुलसी!'

गोरा बाबू पीछे-पीछे आया, 'आज मेरा भी प्रणाम स्वीकार कीजिये।'

'अरे बाप रे! यह बात नहीं करनी चाहिए सर। आप—'

'नहीं जनाब, अब मैं ब्राह्मण नहीं हूँ। जानते ही हैं कि मैं वैरागी बन गया हूँ। अपनी जात छोड़ दी है।'

रीतू बाबू बोला, 'छोड़ दी है तो स्वीकार क्या किया? आपकी जात नहीं गई है सर। आप अक्षत ब्राह्मण हैं। नहीं-नहीं। हम लोग पुराने जमाने के आदमी हैं। नहीं-नहीं।'

'तो फिर कृतज्ञता—धन्यवाद कैसे ज्ञापित करूँ?'

'गिलास से गिलास टकराते हुए एक डोस लेकर।'

विपिन कमरे के अन्दर आया, 'नाटू मास्टर साहब, बोस मास्टर बाबू, आप लोगों का पार्ट है।'

नाटू बाबू कनसर्ट के ताल पर पाँव थिरकाते हुए कमरे के एक कोने में चहल-

कदमी कर रहा था। दोनों हाथों को मस्तक तक ले जाकर उसने देवता के प्रति प्रणाम निवेदित किया और बाहर निकल आया।

बाबुल भी उठा, 'जय भगवान, जय बाबा!'

और वह बाहर निकल गया।

नाटू बाबू इन्द्र है, बाबुल बोस शनि।

मंजरी बोली, 'मुझे लिबास बदलना है। चलती हूँ।'

रीतू बाबू बोला, 'खूब जम गया है। फर्स्ट सीन से ही। उस लड़की ने खासा अच्छा गाया है। उसके बाद आप दोनों –'

मंजरी बोली, 'आपने उस पर मैजिक का कमाल दिखाया।' वह हँसती हुई चली गयी। जाते-जाते कह गयी, 'तुम भी ज्यादा देर मत करो। तुम्हें टेल पहनना है, मुकुट धारण करना है।'

'तुरन्त चलता हूँ।'

रीतू बाबू ने गिलास हाथ में थमाते हुए कहा, 'लीजिये।'

गिलास लेकर गोरा बाबू बोला, 'एक और मैजिक करना चाहिए।'

'क्या?'

'हम लोगों के सीन में पुरनारियाँ मंगल घट लेकर आयेंगी। गीत गायेंगी। उसी में।'

अपना मुँह नजदीक लाकर आहिस्ता-आहिस्ता कहा, 'उस लड़की, मानी अलका को उतार दिया जाये तो कैसा रहे? सिर्फ माला लिए एक नृत्य कर जायेगी। फायर। होगा नहीं?'

'अच्छा आइडिया है। हाँ, अच्छा रहेगा।'

'आप जरा कहिये।'

'मैं?'

'हाँ। मैं कहूँगा तो—दे आर ऑलवेज जेलस। आप कहिये।'

'वह क्या अच्छा रहेगा? मैं—'

'तो फिर आपका नाम लेकर कहता हूँ।'

'कहिये।' रीतू बाबू हँसने लगा।

'आइये।' गिलास से गिलास टकराते हुए बोला, 'आज की असाधारण सफलता की कामना करते हुए।'

'जयकाली'

'देखिएगा, अलका पूरी मजलिस के दिमाग को चकरा देगी। चौकस लड़की है।' गोरा बाबू एकाएक चुप हो गया। उसके बाद बोला, 'और एक काम करने से सवाल पैदा ही नहीं होगा। आशा को भी उसके साथ कर देता हूँ। दो होने से— लेकिन उहुँ, ऐसा नहीं हो सकेगा। आशा रिहर्सल के बगैर मोर्डन डांस नहीं कर

२३

सकती है। इससे तो बेहतर यही है कि अली अकेली ही रहे। हाँ, फिर आपका नाम लेकर कहने जा रहा हूँ।'

गोरा बाबू चला गया।

रीतू बाबू एक सिगरेट जला कर खिड़की पर खड़ा हो गया। लोग-बाग हँस रहे हैं। बाबुल उन्हें बेहद हँसा रहा है। इस बार का नया रिक्रूट अच्छा है। बाबुल बोस—अलका चौधरी।

अलका चौधरी—अली चौधरी। नाम अच्छा है। पोस्टर का नाम ही आदमी को खींचता है। चूंकि फोटो फेस अच्छा नहीं है इसलिए फिल्म में उसे नहीं लिया। लेकिन वैसे उसमें चार्म है। अपनी खूबसूरती उभारना जानती है। लोगों को नचा सकती है। चार्म सम्भवतः हर किसी में है। मंजरी के नये चार्म से वह अवाक् हो गया है। मगर वह उस चार्म को ढँक कर रखती है, यह उससे भी बड़ा चार्म है! उफ् सीधी बात है!

सजना-सँवरना खत्म हो चुका है। बाबुल पार्ट खत्म कर लौट आया और बोला, 'रख आया हूँ सर। प्ले धागे मे नहीं झूल रहा है, उसे लोहे की सांकल से बांध आया हूँ। अनुस्वार से लोग-बाग खूब हँसे हैं।'

'गुड। बैठे-बैठे मैंने हँसी सुनी है। वह चीज तुम्हारे अन्दर से नेचुरल रूप में निकलती है।'

'इसके लिए सारा क्रेडिट माई लॉर्ड को है। गन्धर्व कन्या में उन्होंने जो धागा पकड़वा दिया है वह मेरे जीवन का समुद्र पार करने का रस्सा बन गया है।'

'लेकिन तुम्हारे चेहरे पर यह विरक्ति का भाव क्यों है?'

'मूँछो की वजह से। रबिश! क्यों भैया, स्वर्ग में क्या उस्तरा नहीं था? नहीं था तो दाढ़ी किससे बनाते थे?'

'था, मगर इसका रिवाज नहीं था मास्टर।'

'रिवाज? दुर-दुर! रिवाज चालू करने से ही हो सकता है।' यह कहकर मूँछों को खोल दिया।

'खोल दिया?'

'फिर लगा लूंगा।'

'डिसगस्टेड हो गया हूँ। धीरे-धीरे मुँह में बाल घुस रहे हैं।'

'कितनी तकलीफ है!' एक सिगरेट सुलगा कर बाबुल बोस इत्मीनान से कश लेने लगा।

गोपाल घोष अन्दर आया, 'मालिक कह गये हैं कि आप इस सीन को देख लें मास्टर साहब!'

'अलका चौधरी नाच रही है ?'

'हाँ। मेकअप बड़ा ही बेहतरीन किया है।'

बाबुल चिहुँक उठा, 'अलका नाचेगी ! वह तो कृष्ण है !'

'नहीं। इस सीन में नर्तकी बन कर उतरी है।'

गोपाल बोला, 'यह मास्टर साहब का सजेशन है।'

रीतू बाबू अजीब तरह की हँसी हँसते हुए बोला, 'हाँ, मालिक से सलाह-मशविरा करने के बाद ही किया गया है।'

'लीजिये शुरू हो गया। चलिये।'

'आओ ब्रदर।'

'नहीं। आप लोग जाइये।'

बाबुल उदासी ओढ़े बैठा ही रहा। अलका का नाच—बाबुल बोस का कॉमिक। उसने एक लंबी साँस ली। इसके बाद एक और लंबी साँस—आँखों के आँसू का संसार आज उसके अन्दर प्रवेश कर गया है! बाहर अलका के पाँवों के घुंघरू बज रहे हैं तो बजने दो, उन्हें झलमलाने दो। वह नहीं जायेगा। आधी रोशनी और आधे अँधेरे का यह एक एकान्त शान्त जीवन का मोड़ है—यहाँ बैठकर उसे अच्छा लग रहा है।

रीतू बाबू आकर खड़ा हुआ। अलका बहुत अच्छा नाच रही है। उसने साज-सिंगार बहुत अच्छा किया है। वाह-वाह-वाह! तमाम दर्शकों की दृष्टि एकाग्र और विस्फारित है। चुंबक जिस तरह मिट्टी में गड़े हुए लोहे को खींचता है, अलका उसी तरह अपने नृत्य के ताल-लाल से आकर्षित कर रही है, खींच रही है। वाह! कनसर्ट के लोग भी बहुत अच्छी तरह ताल से ताल मिला रहे हैं।

यह सोम का आघात नहीं है। सोम के साथ ही झनाक् सी आवाज हुई, जैसे कुछ टूट कर गिर पड़ा हो। गोरा बाबू चौंककर गरदन सीधी करते हुए क्रुद्ध दृष्टि से चारों तरफ देखता है। इसमें छिपा हुआ प्रश्न है—क्या हुआ ? किस चीज की आवाज है ?

भग्नदूत हाँफता हुआ आया।

'दैत्यराज ! प्रभु !'

'कहो क्या समाचार है ? यह किस चीज की आवाज है ? किस मूढ़ ने ऐसे शब्द से मेरे आनन्द लग्न मे, पत्नीसह सिंहासन-अभिषेक क्षण में, बाधा डाली ? कौन है ? कौन ?'

'वज्राघात हुआ प्रभु !'

'वज्राघात ?'

'हाँ महाराज, दैत्यकुल केतन दण्ड पर अकस्मात् महाशब्द के साथ हुआ वज्राघात। ध्वजदण्ड गिर पड़ा टूट कर।'

'अकस्मात् नहीं। यह नहीं है प्रकृति-लीला। नहीं है यह अदृष्ट का संकेत।

क्रूरमति असहिष्णु देवता का है यह काम। इन्द्र—इन्द्र के आदेश पर हुआ दैत्यकुल केतन दण्ड पर, ठीक मेरे अभिषेक के क्षण में वज्रपात ! धूल में चाहता है मिलाना। सुनो मेरा आदेश। उस भग्न दण्ड को पकड़ो उठाकर। फहरा दो उसी लांछित पताका को। सुनो-सुनो, त्रिभुवन, मेरी प्रतिज्ञा सुनो। इस पताका को फहराऊंगा इन्द्र के प्रासाद के शिखर पर। सती तुलसी की—महाराज्ञी तुलसी की दासी होगी बन्दिनी इन्द्राणी।'

रणवाद्य बज उठा। शंखचूड़ ने तलवार निकाली। तुलसी ने पुकारा, 'प्रियतम ! ओ मेरे प्रियतम !'

शंखचूड़ ने उसकी ओर देखकर चेहरे पर हँसी लिये कहा, 'भय ! अरी ओ भीरु कपोती मेरी ! तुम्हारे सतीत्व का पुण्य है अक्षय कवच मेरा। फिर भी भय ! पकड़ो तलवार, भय पर करो विजय प्राप्त।'

तुलसी ने हाथ में तलवार ली। रणवाद्य पुनः बज उठा। दोनों बाहर निकल आये। प्रथम अंक समाप्त हुआ। प्रोप्राइटेस जो सो कर बैठी। निश्चित समय से दो-चार सकेण्ड की देर हो गयी। स्वर में जैसे ठण्डापन तिर आया। फिर भी तालियाँ बजी। उस दृष्टि से सब ठीक है। उनकी दृष्टि रीतु बाबू की नहीं है कि खामी का पता लगा ले।

क्या हुआ ? यह क्या है ? कनसर्ट धीमा क्यों हो गया ? नायक पक्ष का एक व्यक्ति उठकर खड़ा हो गया। कुछ कह रहा है। ओह मेडल ! चाँदी की पत्तर गोलाकार काट कर मेडल !

'कल मंजरी देवी ने जना और मोहिनी माया के जिन प्रतिमुख भावों के पार्ट में इतना आश्चर्यजनक अभिनय किया है उसके लिए हमारे अधिकारी उन्हें सोने का एक मेडल देंगे।

गुड-गुड-गुड। वेरी गुड।

'और इस दृश्य के विशेष नृत्य के लिए हम अलका चौधरी को चाँदी का एक मेडल देंगे।'

गुड। बहुत अच्छा नृत्य किया है इस लड़की ने। गोरा बाबू का सजेशन अच्छा रहा।

'कन्ग्रेच्यूलेशन मैडम। वी आर ऑल ग्लैड।'

बाबुल बोस मंजरी के वेश-मन्दिर को मेज के सामने आकर खड़ा हुआ।

'सिर्फ ग्लैड ही नहीं, वेरी ग्लैड। वेरी-वेरी ग्लैड। हम बेहद खुश हैं। सोने का मेडल मिलने के कारण ज्यादा खुशी हुई है।'

रीतू बाबू बाबुल के बाद आया।

मंजरी चेहरे पर हँसी ले आगे बढ़ आयी और झुककर रीतू बाबू को प्रणाम किया। रीतू बाबू लज्जित होकर बोला, 'यह क्या ? नही, नही। दोनों हाथों को जोड़ मस्तक तक ले जाते हुए कहा, 'प्रणाम स्वीकार करना सहज बात नही है। आपने मुझे गुनाहगार बना दिया।'

गोरा बाबू ने हँसकर कहा, 'मंजरी ने इस मामले में कोई गलती नही की है मास्टर साहब। देखिये न, मुझे प्रणाम नही किया है लेकिन आपको किया है।'

मंजरी ने सिर्फ अपना घूंघट जरा नीचे खिसका लिया। उत्तर नही दिया।

बाबुल बोला, 'मुझे खिलाना पड़ेगा। एक नही बल्कि दो गोल्ड मेडल मिले हैं।'

हँसकर मंजरी ने कहा, 'ठीक है। आप लोग क्या खाइएगा, बताइये।'

बाबुल बोला, 'प्लेन एण्ड सिम्पल—पूरी और मांस। एवं शुभस्य शीघ्रम्। कल की नाइट यहाँ की आखिरी नाइट है। यहाँ का नायक पक्ष निमंत्रित नही करेगा, इसका पता मैं लगा चुका हूँ।'

'ऐसा ही किया जायेगा।'

गोरा बाबू हँसकर बोला, 'मुझे एक बात कहनी है।'

'क्या ?'

'साथ-साथ मिठाई भी।'

'तुम दो।'

'मैं क्यों दूँ ? आदमी यहाँ है। तीन-तीन मेडलों की होल्डर। श्रीमती अलका। कहो, क्या कहना है ?'

पुलकित होकर अलका ने कहा, 'जरूर दूँगी।'

'नही।' मंजरी ने कहा, 'नही, यह अन्याय होगा।'

'नही-नही। मुझे बेहद खुशी होगी। इसे मैं अपना सौभाग्य समझूँगी।'

'तुम करोगी। मगर मैं ऐसा करने नहीं दूँगी। तुम्हारे बारे में मुझे मालूम है। तब हाँ, मिठाई भी रहेगी, तुम्हारा देना भी हो जायेगा लेकिन कोई दूसरा ही देगा। वे देंगे।'

'मैं तुम्हारा दूँगा, तुम अलका का देना।'

'नही। अपना मैं खुद दूँगी। यह भी तुम्हारा ही देना रहेगा। मैं अलका का दूँगी तो दान का नाम हो जायेगा। इससे बेहतर यही है कि तुम्ही दो। मास्टर साहब, आपका क्या कहना है ? आज अलका को मेडल एक तरह से तुम्ही ने दिला दिया है। तुमने नृत्य का सजेशन दिया था। अतः—'

'सजेशन उनका है, मेरा नही। पूछ लो।'

'तुम कह रहे हो, यही काफी है।'

गोपाल घोष भीड़ ठेलकर अन्दर आया, 'उधर कनसर्ट खत्म होने को है। एक बार और चालू करने कहूँ ?'

रीतू बाबू हे-हे कर उठा, 'नहीं-नहीं। ऐसा काम भी नहीं करना। माहौल ठण्डा हो जायेगा। बाबुल तुम्हारा – तुम्हारा पार्ट है। काली चादर—'

दृश्य है : शनि देत्य के डर से काली चादर ओढ़े एक झाड़ी के बीच बैठा है। मच्छर काट रहे हैं। कीड़े काट रहे हैं। कोई कीड़ा देह पर चढ़ गया है और उसे गुदगुदी महसूस हो रही है।

कुछ ही मिनटों के दरमियान वेश-मन्दिर के माहौल में बदलाव आ गया। रंगकर्मी अपने-अपने पार्ट में मशगूल हो गये। कोई लिबास बदल रहा है, कोई अपने चेहरे का रंग ठीक कर रहा है, कोई सज-सँवर रहा है।

गोपाली आयी, 'रंग-ढंग देख लो। और गहना क्या दिया है, यह भी देख लो। इन्द्राणी को बस एक-दो लड़ी का ही हार ?'

'क्या करूँ ? ग्रसका के लिए जरूरत पड़ गयी।'

'अब तो वह नर्तकी नहीं है। उतार कर दे देने कहो।'

'कृष्ण की वेश भूषा धारण कर रही है।'

विन्यासकारी ने कहा, 'मैं महिलाओं के कमरे में कैसे जाऊँ ?'

'परदे के इस पार से माँग लो।'

'बेहतर यही होगा कि आप ही माँग लें।'

'मैं क्यों माँगने जाऊँ ? मैं कहने क्यों जाऊँ ? नहीं मिलेगा तो ऐसे ही उतर जाऊँगी। यहाँ अब टिकना मुश्किल है, इसका अहसास होने लगा है। सब के सब पागल हैं।'

रीतू बाबू खिड़की के किनारे से मुड़कर इस ओर मुखातिब हुआ। बोला, 'क्या हुआ गोपाली ? सब पागल हो गये ?'

'नहीं हुए हैं ? हमें आँख नहीं है ? देख नहीं रही हूँ ?'

'नाटू ? वह भी हो गया है ?'

'सब लोग मास्टर साहब, सब लोग। चार व्यक्तियों को छोड़कर। आप गोपाल बाबू—नहीं रहे। कौन झंझट में फँसे ! मजलिस के लोग तक पागल हो गये हैं। टेढ़ा मुँह देखकर। उतरते ही मेडल दिया जाता है।'

'तुम आज का पार्ट अच्छा करो, फिर तुम्हें जरूर ही मेडल मिलेगा। पहले-पहल पटली चारु ने किया था। उसे मेडल मिला था। सिर्फ बढ़िया मेकअप होना चाहिए। खासे अच्छे ढंग से घुसने, बाहर निकलने और खड़े होने की डिगनिटी होनी चाहिए। खड़े होने और राजरानी की तरह बोलने की। बस। पार्ट बहुत ही अच्छा है। दैत्यगण शची को बन्दिनी बनाने आये। वह बाहर निकल गरदन तिरछी कर खड़ी हो गयी। स्वर में मयूरी की शोभा और सिंहिनी की माया है। बोली—

रीतू बाबू गोपाली के पास आकर खड़ा हुआ। समझाने की मुद्रा में कहा,

'तुम कहोगी—कौन मुझे बन्दिनी बनायेगा ? बन्दिनी ? लो बन्दिनी बनाओ। लोहे की कड़ी से बांधना चाहोगे, कड़ी टूट जायेगी। तुम हंसने लगोगी। कहोगी—रे मूढ़, मुझे बन्दिनी नहीं बनाया जा सकता है। उस शृंखला को अब तक बनाया नहीं गया है। ठीक है, चलो अपने प्रभु के निकट। चलो, देखूंगी कि वह कौन है। तुम गौरव के साथ बाहर चली आओगी। उसके बाद स्वर्ग में सिंहासन पर शंखचूड़ बैठा है। आकर तुम खड़ी होओगी। तुम मुग्ध हो चुकी हो। जरा आवेग के साथ कहोगी—वाह-वाह, तुम कौन हो, हे वीर्यवान पुरुष ? सिंह के समान क्षीण कटि, वक्ष-पट प्रशस्त उदार—नीलकान्त मणि के समान देह-वर्णच्छटा। चक्षु तुम्हारा वह्निदीप्त, प्रशस्त ललाट। वाह-वाह ! तुम कौन हो हे नवीन इन्द्र ? वाह वाह ! शंखचूड़ कहेगा मैं हूं शंखचूड़। तत्क्षण तुम उसके शब्द को छीनते हुए कहोगी—तुम- तुम हो शंखचूड़ ? दैत्य अधिपति ? स्वर बदल लेना, जैसे अपने आपसे कह रही हो—देवता लोगों ने बताया था, शंखचूड़ सांप के समान क्रूर है, भयंकर आकृति है उसकी, चेहरे से बर्बरता टपकती है, अत्यन्त हीन-चरित्र है उसका। नहीं-नहीं, यह तो वैसा नहीं है। शंखचूड़ कहेगा, आज मैंने बाहुबल से स्वर्ग पर अपना आधिपत्य स्थापित किया है। इन्द्र पराजित हो चुका है। वह भीरु देवता है। प्राणों के भय से पर्वत की किसी कन्दरा में भाग गया है। फिर भी निस्तार नहीं पा सकेगा। स्वर्ग-मर्त्य-रसातल पर आज मेरा अखण्ड अधिकार है। परन्तु तुम शची हो ! इन्द्र की महिषी ! आज तुम मेरी बन्दिनी हो। तुम हंस पड़ोगी—बन्दिनी ? शंखचूड़, मैं कभी बन्दिनी नहीं हुई हूं। उसके बाद अपना एक पैर हल्के से पटककर सिर उठाकर कहोगी एक एक शब्द को रुक-रुक कर कहना—मैं महेन्द्राणी हूं ! अनन्त यौवना। मैं चिरन्तनी हूं। शंखचूड़, प्रत्येक काल और कल्प में इन्द्र का पतन होता है। एक इन्द्र जाता है, दूसरा नवीन इन्द्र सिंहासन पर विराजमान होता है। वामपार्श्व में मैं चिरकाल—ल रहती हूं। मेरी प्रभा से इन्द्र को इन्द्र की महिमा प्राप्त होगी।

'तुलसी प्रवेश करेगी और कहेगी—प्रत्येक काल और प्रत्येक कल्प में इन्द्र का पतन होता है। नया इन्द्र आता है, सिंहासन पर बैठता है। तुम चिरन्तनी हो। बैठती आ रही हो सबके वामपार्श्व में। तुम अनन्त यौवना हो। वाह-वाह-वाह !

'तुम हंसकर कहोगी—मेरी बात बड़ी ही दुर्बोध जैसी लग रही है। है न ? लगता है, तुम दैत्यकुल-नारी हो।'

'मानव कुल-कन्या धर्मध्वज सुता।'

'सुनो ओ मानवी ! मैं महेन्द्राणी हूं, यह तत्त्व तुम्हारी समझ में नहीं आयेगा। तुम शब्दों को धागे जोर से मरोड़ती हुई कहोगी। तुलसी अत्यन्त कटुता के साथ कहेगी—मर्त्यलोक में भी यह तत्त्व है देवी। हम उसे वारांगना तत्त्व कहते हैं। तुम वारांगना हो।'

'तुम गरदन उठाकर कहोगी—चिल्लाना नहीं – खबरदार ! कहोगी—

राजश्री—इन्द्र की महिमा हूँ मैं। नहीं हूँ वारांगना। दैत्यकुल रानी, शंखचूड़ यदि बैठता है उस सिंहासन पर और तुम वामपार्श्व में बैठना चाहो तो नहीं बैठ पाओगी। महेन्द्राणी चिरन्तनी है, महेन्द्राणी अनन्त यौवना है, महेन्द्राणी चिरश्रद्धा है, महेन्द्राणी महिमा की देवी है। मैं भोग्या नहीं हूँ। मैं न तो सती हूँ और न असती। मैं उससे भी ऊपर हूँ। समझ रही हो? अच्छी तरह बोलना। देखना मेडल मिलता है या नहीं। उसके बाद वे दोनों तुम्हारा वरण करेंगे। लो, पार्ट आ गया। मैं चलता हूँ। दो जी, मेरा डमरू-त्रिशूल दो। दो। हाँ, एक बात। गोपाली के चेहरे पर एक बार और पफ फेर दो। सुन्दर बना दो।'

गोपाली अभिभूत जैसी खड़ी रही। उसके कानों में गूँज रहा है मैं महेन्द्राणी हूँ, मैं चिरन्तनी हूँ, मैं अनन्त यौवना हूँ।

'आइये, पफ लगाकर ठीक कर दूँ। देख लीजिये कि मस्तक पर कौन-सा मुकुट पहनिएगा।'

'जो सबसे अच्छा मुकुट है, वही दो। तुलसी के मुकुट से अच्छा मुकुट होना चाहिए।'

आईने मे स्वयं को देखकर वह अपने यानी महिलाओं के वेश-मन्दिर में चली आयी।

'शोभादी, देखो तो!'

'अच्छा हुआ है।'

वह मंजरी के कमरे में गयी। मंजरी को प्रणाम किया, 'देखिये, ठीक हुआ है?'

मंजरी सोच रही थी। उसने सिर उठाकर कहा, 'ठीक है।'

गोपाली कुछ देर तक खड़ी रही। मन कैसा-कैसा तो हो गया। दीदी भी अलका की वजह से उसको भूल गयी! भूलो मत दीदी, भूलो नहीं। छली जाओगी। एक सूक्ष्म तिरछी हँसी उसके होठों पर टँग गयी। मंजरी बोली, 'कुछ और कहना है?'

वह बोली, 'वे कहाँ गये? प्रणाम करूँगी।'

'मालूम नहीं। शायद प्ले देख रहे हैं।'

गोपाली बाहर निकल आयी। वह भी जाकर एक छोर पर खड़ी हो गयी—आदमी की छाया के आवरण में। रीतू बाबू पार्ट कर रहा है, महादेव की भूमिका में उतरा है। नाटू बाबू इन्द्र है। अलका श्रीकृष्ण।

यही तो गोरा बाबू है। सिर पर चादर है। फिर भी पहचान में आ जाता है। लंबा आदमी है न। एकाग्रचित्त से देख रहा है। लगभग सभी लोग देख रहे हैं। वे रहे मणिघोष, बाबुल बोस। वह है गोपाल मैनेजर। वह बच्चों का एक दल है। और वह है योगा बाबू। उसके निकट ही वंशी मास्टर और आशा हैं। उसकी

आँखें मजलिस की ओर भी गयी—महादेव वेशधारी रीतू बाबू 'हा-हा' कर हँस रहा है।

कृष्ण कह रहे है—मैं शंखचूड़ से युद्ध नही कर सकूँगा देवराज। शंखचूड़ पूर्वजन्म में सुदाम था। तुलसी मेरी सखी थी। मैं तब चक्र छोड़कर वंशी धारण कर लूँ तो क्या होगा?

उत्तर में शिव अट्टहास करते हुए कहते हैं—हा-हा-हा-हा, हाय कृष्ण, मिटी नही प्रेम की पिपासा! सुनो हे किशोर प्रेमिक! वृन्दावन में राधा के साथ थी सोलह सौ गोपियाँ। रास लीला, दोल लीला और हिन्डोले पर झूलना रहता था लगा। अन्तहीन थी प्रेम-लीला। द्वारका में थी सहस्र महिषी। ब्रह्मा है साक्षी, अपनी आँखों से देखा है सहस्र महिषी के साथ सहस्र आकार धारण कर कक्ष में तुम करते थे प्रेम-लीला। अब भी साध बाकी है—हा-हा-हा-हा!

श्री कृष्ण ने कहा—और भी साध है महेश्वर। तब हाँ व्रज लीला की अब तृष्णा नही है। अपनी साध के बारे में बताऊँ महेश्वर? साध है मेरी—एक बार समुद्र के बालू-तट पर मोहिनी होने का। मोहिनी होकर मैं त्रिभुवन में विचरण करूँ। पीछे-पीछे मेरे रूप पर मुग्ध हो प्रभु महेश्वर दोनों बाहुओं को फैलाये प्रिया-प्रिया कहते हुए चले। वाघाम्बर खिसक कर दिगंबर भोला—। लज्जा-क्षोभ से महामाया आरक्त-वदना—

रीतू बाबू हँस पड़ा—हा-हा-हा-हा-हा!

श्री कृष्ण दौड़ता हुआ बाहर चला गया। मजलिस तालियों की गड़गड़ाहट से गूँजने लगी है। अभिनय सचमुच ही अच्छा हो रहा है। बहुत ही अच्छा। मजलिस के अन्त में रीतू बाबू ने आकर कहा, 'आतिशबाजी का माहौल तैयार हो गया है सर। आखिर में लाल-नीली, हरी फुलझड़ियाँ पैदा करना आप दोनों का काम है।'

गोरा बाबू अलका की तारीफ कर रहा है, 'वाह-वाह!'

गोरा बाबू ने आज भरपूर पी है। आखिर तक—

गोरा बाबू आखिर तक एक जैसा अभिनय कर गया। रीतू बाबू ने जो कुछ कहा था वही किया। अभिनय के पटाखे को उठाकर उसे नीचे पटक दिया और तरह-तरह के रंगों की फुलझड़ियों से आकाश में आलोक-माला जगा दी। तब हाँ, प्रोप्राइट्रेस का अभिनय काबिले दाद रहा। एक बारगी नया खेल दिखा दिया। रीतू बाबू तक ने कहा, 'अरे बाप! क्या किया, क्या कर रही है! एकबारगी नया!'

बात सही है। मंजरी आपेरा शुरू में दो नाटकों को लेकर उतरा था—प्रवीर पतन और सती तुलसी। गोपाली तकरीबन दो बरसों से दल में है। पहले वह सिर्फ

राधा का अभिनय करती थी। उसके बाद तकरीबन दो साल तक महेन्द्राणी का भी पार्ट किया है। उसने बहुत बार देखा है—अभिनय के अन्तिम दो दृश्य बहुत ही जमते हैं। लेकिन मंजरी ने इस तरीके से कभी अभिनय नहीं किया था।

तुलसी का सतीत्व अक्षुण्ण रहे तो शंखचूड़ का विनाश नहीं हो सकता। स्वयं महादेव युद्ध कर कुछ नहीं बिगाड़ पा रहे हैं। कृष्ण बोले—आप शंखचूड़ को युद्ध में फँसाये रहिये। मैं जा रहा हूँ। शंखचूड़ के छद्म वेश में सती तुलसी को पूर्णत्मेण प्राप्त करने का समय पूरा हो गया है। उससे वार्त्तालाप करने जा रहा हूँ। मानव के न्याय के अनुसार बस इतने से ही उसका सतीत्व नष्ट हो जायेगा। शंखचूड़ का विनाश होगा। शंखचूड़ के वेश में श्रीकृष्ण ने आकर कहा—विजय प्राप्त करके लौटा हूँ। महादेव पराजित हो गया है। देवी, उसका पुरस्कार चाहिए। तुम्हारे साथ अपार आनन्द का उपभोग करूँगा।

हाथ पकड़कर चले गये। इसके बाद ही एक गीत है। आज उस गीत को नवीन गायक देवू ने गाया है और अच्छा गाया है। उसके बाद ही शंखचूड़ वेशधारी नारायण निकल कर चले जाते हैं। पीछे से तुलसी आती है। उसके बाल बिखरे हुए हैं, आँखों की दृष्टि में विभ्रान्ति। यह कहते-कहते प्रवेश करती है—तुम कौन हो? कौन हो तुम? एक क्षण के लिए खड़े रहो।

शंखचूड़ वेशधारी श्रीकृष्ण ने कहा—यह क्या तुलसी—तुम यह क्या बोल रही हो? मैं शंखचूड़ हूँ, तुम्हारा पति।

तुलसी कहती है—नहीं-नहीं। मेरा प्रत्येक रोम कह रहा है, नहीं-नहीं। देखो मेरे मुखड़े की ओर। क्यों झुक गयी तुम्हारी आँखें? क्यों, क्यों मेरा सर्वाङ्ग जल रहा है गरल की ज्वाला से! बताओ, बताओ, कौन हो तुम? कौन तुम हो मायावी? कौन हो प्रतारक? कौन हो शठ? कौन तुम हो लंपट? निष्ठुर, कुटिल! मेरे पति के वेश मे मेरा सर्वनाश किया? मैंने कौन सा अपराध किया था? बताओ, बताओ!

पहले वह शंखचूड़ का हाथ पकड़ कर आर्त्तनाद करती थी जैसे कोई करुण विलाप हो। कहती थी—समझ गयी, तुम साधारण मानव नहीं हो। इसीलिए पूछती हूँ, क्यों-क्यों?

परन्तु आज उसने जलती अग्नि शिखा की तरह प्रवेश किया। रीतू बाबू का कहना है, एकदम से आग बन लपटों के साथ प्रवेश किया। बाप रे! मंजरी का कण्ठस्वर बरछे की नोक की तरह तेज हो उठा था। चेहरे पर कितना क्रोध था! बाप रे! जैसे जना का कुछ अंश आ गया। लेकिन उसका परिणाम आश्चर्यजनक हुआ। मजलिस के दर्शकों के रोंगटे खड़े हो गये। मजलिस के दर्शकों की बात तो दूर की, गोपाली के भी रोंगटे खड़े हो गये थे। इसकी वजह से गोरा बाबू को असुविधा का सामना करना पड़ा था। इतना मंजा हुआ ऐक्टर—सिद्धहस्त ऐक्टर, दो-चार क्षणों के लिए ठिठक कर खड़ा हो गया। उसके बाद बोला। पहले वह भी मीठी हँसी हँस कर कहता था—सुन्दरी तुलसी, कितने दिन पहले तुमने मुझे पुकारा था, मेरी

चाहना की थी। अब समय आया है। इसीलिए आया हूँ—लेकिन उनके स्वर में विपरीत अभियोग आ गया।

'असत्य है, असत्य। तुम मिथ्यावादी हो। मैंने नहीं पुकारा था, नहीं पुकारा था मैंने। पुकार नहीं सकती थी। तुम प्रवंचक, मिथ्यावादी हो।'

'पूर्व जन्म की बातों का स्मरण करो।'

'पूर्वजन्म की बात? नहीं-नहीं।'

'नयन बन्द कर क्षण भर के लिए स्मरण करो देवी। वैकुण्ठ अमृतलोक। राधाकुंज में राधा की तुम थी सहचरी, अपरूपा सुन्दरी तुलसी। और मैं कृष्ण—राधा प्रियतम—'

तुलसी ने कहा, 'इसीलिए तुमने इतने समय के बाद जन्मान्तर में इस तरह कलंकित कर, सर्वस्व लूट कर दण्ड दिया और मेरे प्रार्थना की पूर्ति की?'

हाय-हाय कर वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

पहले अभियान मिश्रित अभियोग हुआ करता था। मर्मवेधी दुःख रहता था। आज उसमें केवल क्रोध ही था। शुरू में ही क्रोध के स्वर से जो आरम्भ किया तो फिर दूसरी स्थिति में नहीं आ सकी।

नाटू भी रीतू बाबू, बाबुल मास्टर के पास खड़ा होकर देख रहा था। उसने धीमे स्वर में कहा, 'आज रुलाई प्रकट नहीं हुई।' रीतू बाबू ने धीमे स्वर में ही कहा, 'प्रकट नहीं हुई? रुलाई आयी ही नहीं। प्रारम्भ से स्वर और ही तरह का रहा।'

'चुप रहिये जनाब। कान के पास बुड़-बुड़ नहीं कीजिये। सुनने दीजिये।'

रीतू बाबू धीमे स्वर में बोलता है तो भी उसकी आवाज तेज हो जाती है। नाटू ने उसका हाथ दबा दिया। चुप रहने को कहा।

इसके बाद ही गीत है। दिवाकर गीत गा रहा है—

तेरी ही लीला से शतदल खिलता, शतदल झरता
तेरी ही लीला से······
जपमाला धारण करती बीज उसी के बीच—ऐ-ऐ-ऐ
तेरी ही लीला से—।

ताल-लय के बीच ही वे लोग निकल आये। उन लोगों के बीच से होते हुए उसने गीत गाते हुए प्रवेश किया। मजलिस का एक भी क्षण रीता नहीं रहा। पखावज गंभीर ध्वनि में बज उठा।

रीतू बाबू ने कहा, 'वाह!'

उनके बीच से गोरा बाबू छद्मवेशी शंखचूड़ का पार्ट समाप्त पर सबसे पहले बाहर निकल आया। तत्क्षण तुलसी की बेहोशी दूर हो गयी और वह चिल्ला उठी—कहाँ जाओगे भीरु पलायनवादी कपटी देवता। मैं त्रिभुवन में खोज-खोजकर तुम्हें निकालूंगी। अभिशाप दूंगी—अभिशाप! यह कहते-कहते वह उन्मादिनी की तरह बाहर निकल आयी। कोई कुछ बोल नहीं सका। बोलने का समय नहीं था।

ऐक्टर ध्यान में मग्न हैं। मजलिस में निस्तब्धता छायी है। यात्रा दल के रंगकर्मियों का अन्तर्मन बाजे के साथ नाच रहा है, अभिनय देखने के साथ ही उनकी सफलता का आनन्द फूल के साथ फल की तरह मुखर हो उठा है। साधारण ऐक्टर की इस सफलता से, हो सकता था, बहुतों के मन में ईर्ष्या जगती लेकिन प्रोप्राइटर और मालिक के रहने से वैसा न होता है, न होना चाहिए। टूटी माला—तुलसी की उस माला को, जो तुलसी के सतीत्वहरण के साथ ही टूट गयी थी, हाथ में लिये शिव के त्रिशूल से आहत शंखचूड़ कराहते हुए प्रवेश करता है 'हाय तुलसी, हाय विनाशिनी, यह तूने क्या किया ? क्या कह रही है तू ? किसके-किसके मोह में भूलकर तूने—'

वह मजलिस में बैठ गया। पीछे से कृष्ण ने प्रवेश किया। कहा – 'मेरे मोह में सखा।'

'तुम ?'

'हाँ, मैं ही तो 'तुम' हूँ। तुम खण्ड हो, मैं पूर्ण हूँ। खण्ड आज पूर्ण में विलीन हो जायेगा। इसीलिए तुलसी को आज पूर्ण का आस्वाद प्राप्त करना पड़ा।'

शंखचूड़ आनन्द से प्रफुल्लित हो उठा और हाथ जोड़कर स्तुति करने लगा—गीता के श्लोक में—'त्वमादिदेवः पुरुषः पुराणस्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।' गोरा बाबू की आवृत्ति करने की शैली अद्भुत है। रीतू बाबू बोला, 'अहा, 'अहा, सब लोग आवृत्ति कर रहे हैं। एक तो गीता का श्लोक, उस पर नाटकीय क्षण में इस तरह की आवृत्ति। इसके पहले पूरा नाटक होचुका है। लोग अभिभूत हो गये हैं। अहा ! तुलसी वेशधारी मंजरी मूल मजलिस के बीच में कृष्ण के पीछे खड़ी हो गयी है। कृष्ण शंखचूड़ के सामने है। एक दूसरे को देख नहीं पा रहे हैं। बिलकुल मूर्ति की तरह स्थिर खड़े हैं। श्लोक-पाठ की समाप्ति होते ही वह उदास स्वर में बोल उठी, 'मैं तुम्हारी स्तुति नहीं करूँगी। मैं तुम्हें अभिशाप दूँगी।'

कृष्ण मुड़कर खड़े हो गये। शंखचूड़ की उस पर नजर पड़ी। बोला, 'तुलसी, नहीं-नहीं।'

कृष्ण ने हँसकर कहा, 'देवी, मुझे क्षमा नहीं करोगी ? तुम्हें बैकुण्ठ लौटाकर ले जाने को इतना-इतना आयोजन किया गया है।'

तुलसी ने उदास स्वर में गरदन हिलाते हुए कहा, 'नहीं। गौरव खोकर, सम्पूर्णत. रिक्त होकर तुलसी तुम्हारे बैकुण्ठ में नहीं जायेगी। मैं मर्त्यलोक में रहूँगी। मेरी अशान्त प्रेतात्मा यहीं विचरण करेगी। तुम रहोगे—तुम्हें रहना होगा। मेरा अभिशाप है—'

क्रोध से तुलसी का स्वर कठोर हो गया, 'तुमने निष्ठुर पाषाण जैसा आचरण किया है। मेरा अभिशाप है– हस्तपद हीन अवयवहीन हृदयवर्जित शिलाखंड होकर रहोगे तुम धरती पर। पत्थर बनोगे, पत्थर होकर रहोगे।'

कृष्ण ने हँसकर कहा, 'वैसा ही होगा देवी। मैं रहूँगा तुम्हारे साथ इस धरती पर शिलाखंड के रूप में। तुम चाहती हो रहना इस धरती पर— तुम रहोगी यहाँ

शुचि गंधमयी वृक्ष के रूप में। तुम्हारे नाम पर ही रखा जायेगा उसका नाम; तुलसी, तुलसीवृक्ष। शिलारूपी रहूँगा मैं, मिलेगी एकमात्र तृप्ति मुझे तुम्हें अपने मस्तक पर धारण कर। अपने शिलारूप वक्ष और मस्तक पर मैं तुम्हें करूँगा धारण।'

तुलसी शंखचूड़ के पास आयी—'बोलो प्रभु, बोलो, कि नहीं है यह अपराध मेरा। मैं नहीं हूँ कुलटा, असती।'

शंखचूड़ ने कहा—तुम सती हो, सती। सती-कुलशिरोमणि हो तुम। नारायण-प्रियतमा—'

'नहीं-नहीं। शंखचूड़-प्रियतमा हूँ मैं। इस देह में है विष की ज्वाला, जलेगी चिन्ता तब होगी शान्त ज्वाला। जलाओ—जलाओ चिता। सहमृता हूँगी मैं।'

तुलसी बाहर निकल आयी। ग्रैण्ड सक्सेस! ग्रैण्ड। चलो। सब लोग भागे-भागे वेश-मन्दिर में आये। गोपाली, रीतू बाबू और बाबुल सबसे पहले तेज कदमों से मंजरी के वेश-मन्दिर में आये।

यह क्या! कमरे के अन्दर गोरा बाबू रूखे स्वर में कह रहा है, 'इसका अर्थ मुझे समझा सकती हो? इस तरह अकस्मात् पार्ट के ढर्रे को बदल कर—'

'नहीं।' मंजरी ने उसी प्रकार रुखाई के साथ उत्तर दिया।

'नहीं?'

'शिवनन्दन, रोशनी ले आ। मैं डेरे पर चलूँगी। मेरी तबीयत बहुत खराब है। शिवनन्दन—'

गोरा बाबू गुमसुम खड़ा रहा। मंजरी बाहर निकल आयी। रीतू बाबू बोला, 'क्या हुआ है? सिर में दर्द?'

'नहीं। शिवनन्दन —'

'मैं यहीं तो खड़ा हूँ'

'चल।'

'सरो सामान?'

'रहने दे। गोपाल बाबू से कह दे। ले जायेंगे। चल।'

मंजरी चली गयी। दल की इतनी बड़ी सफलता को क्षण-भर काठ मार गया। रीतू बाबू लौटकर पुरुषों के वेष-मन्दिर में चला आया और वहाँ बैठकर अपने गिलास को भरते हुए बोला, 'अ-जो-व होती है यह नर-लीला। सृष्टि के सरोवर का सुरभित शतदल यह लीला-कमल! अशेष-मधु! अनन्त सौरभ! स्रष्टा स्वयं लुब्ध होकर उसका मधुपान करने भृङ्ग बनकर आता है। जीवन जीवन में, हृदय-हृदय में, जितनी प्राप्त करने की कामना होती है, उतना ही उसमें विद्वेष रहता है। जितना रोदन उतना ही हास।

बाबुल उत्तेजना के साथ प्रवेश करता है, 'सर!'

भौंह उठाकर इशारे से पूछा, 'क्या?' प्रश्न करने के बावजूद रीतू बाबू बोलता रहा, 'फिर भी यहाँ आनन्द है। हँसी में जितना आनन्द है, अश्रुजल में ही आनन्द है।'

'क्या बोल रहे हैं ?'

'तुम्हें क्या कहना है ?';

गोरा बाबू पोषाक उतार रहे थे—माला, कुरता, चादर, बाल खोलकर बगैर कपड़ा उतारे टार्च लिए दनदनाते हुए बाहर चले गये। पूछा, 'कहाँ जा रहे हैं ?' उत्तर दिया, 'डेरे पर। मेरा कपड़ा विन्यासकारी के हाथ भेज दीजिएगा गोपाल बाबू। लगा, दोनों—'

'हूँ, इसीलिए—'

'क्या ?'

'अभिनय की आड़ में अभिनय हो गया। सती तुलसी रोयी नहीं। सिर्फ लहकती रही।'

'येस। कारण ? सर—'

'शराब पियो।

'अलका !'

'चुप रहो।'

'रीतू बाबू मास्टर साहब !' गोपाल घोष अन्दर आया। उसके स्वर मे शंका और उत्कण्ठा का भाव है।

'क्या गोपाल बाबू ?'

'मालिक डेरे पर चिल्ला रहे हैं।'

'चिल्ला रहे हैं ?' रीतू बाबू शराब का गिलास हाथ में लिये ही बाहर आया। हाँ, आवाज सुनायी पड़ रही है। रीतू बाबू बोला, 'चलो, डेरे पर चलो।'

यहाँ डेरा नजदीक ही है। डेरे पर आकर रीतू बाबू ठिठककर खड़ा हो गया। डेरे पर हर फ्लिट मे रसोई पक रही थी। सब लोग काम छोड़कर. खड़े हो गये हैं। सुन रहे हैं।

गोरा बाबू तेज आवाज में कह रहा है—बरामदे पर खड़ा होकर ही कह रहा है, 'हाँ-हाँ-हाँ। पार्ट की बाते तुलसी ने शंखचूड़ वेशधारी कृष्ण से नहीं कही हैं।'

उसी तेजी से कमरे से आवाज आयी, 'हाँ-हाँ-हाँ। मैंने तुमसे कही है। जरूर कही है। स्वीकार करती हूँ।'

'क्यों ? क्यो कहोगी ?'

'इसमे सच्चाई है, इसीलिए कही है।'

'सच्चाई ?'

'हाँ सच्चाई। वह बात चिल्लाकर नही कहूँगी। रात मे कहूँगी। शिवनन्दन, अलका का बिस्तर महिलाओं के कमरे मे रख आ।'

'नहीं।' गोरा बाबू ने दृढ़ता के साथ कहा, 'जिस प्रकार है उसी प्रकार रहेगा।'

'फिर बताती हूँ। आज प्ले के समय वेश-मन्दिर के पीछे तुम्हें अलका के साथ हँसते-बोलते देखा था। वह बात मेरे कानों में पहुँच चुकी है।'

'मंजरी !'

'इसका प्रतिवाद कर सकते हो ?'

'कर सकता हूँ, मगर करूँगा नहीं।' एक मिनट तक सोचा, उसके बाद फिर बोला, 'कल प्ले है। कल नहीं, परसों सवेरे इसके प्रतिवाद में जो कहने का है, कहूँगा।'

उसके बाद चुप्पी छा गयी। रीतू बाबू ने खड़े-खड़े शराब का गिलास खाली कर दिया और डेरे के बरामदे पर कदम रखते हुए कहा, 'जाओ। तुम लोग रसोई के काम में जाकर लग जाओ। काफी रात हो चुकी है। कल यात्रा है।'

अपने कमरे में आकर रीतू बाबू चुपचाप बैठ गया। बगल में बाबुल, नाटू और मणि हैं। वे लोग भी गुमसुम बैठे है। एकाएक रीतू बाबू ने कहा, 'एक बार वहाँ जाऊँ ?'

'जाइये।'

एक लम्बी साँस लेकर रीतू बाबू बोला, 'नः।'

'क्यों ?'

'देखो, यात्रा दल में रहता हूँ। इसी में जिन्दगी बीत गयी। लाज-शरम नहीं है। तब हाँ, लगता है, अपराध होगा।'

'क्यों ?'

'तुम बेवकूफ हो बाबुल मास्टर।'

'गिल्टी माइन्ड।'

'उफ् !'

बारह

दूसरा दिन मनहूस जैसा दिन रहा। जैसे उदास वर्षा का मेघिल दिन हो। काम सब कुछ चला—लेकिन मनुष्य और जीवन का जो उल्लसित प्रकाश कर्म-जगत को प्रगल्भ और मुखर करता है उसी का अभाव रहा। मेघिल दिन में बाजार-हाट भी होता है, रसोई भी पकती है, आदमी खाता है, काम करता है लेकिन भीड़ नहीं होती है। रास्ता निर्जन जैसा रहता है; बाजार की दुकानों में दुकानदार बैठकर झपकियाँ लेते हैं, उबासी लेते हैं, चुटकी बजाते हैं। चाय की दुकान में बहस नहीं

चलती। चाय की प्याली सामने रख ग्राहक अलस दृष्टि से बाहर की ओर ताकते रहते हैं, हाथ की उँगलियों की फाँक में सिगरेट जलती रहती है। कौआ तक पेड़ पर बैठकर बीच-बीच में अपना शरीर झाड़ता है। कबूतर खंभे के ऊपर बदन फुलाकर गुटर-गूँ करता रहता है—कहीं किसी ओर ताकता नही। यात्रादल का समय उसी तरह कटा। कर्ण का अभिनय भी हो गया। लेकिन वहाँ भी वही हालत रही। अभिनय कोई खास नही जमा। तब हाँ, बुरा भी नही कहा जा सकता है। लेकिन प्राणहीन रहा। इसे उन लोगों ने भी महसूस किया। दर्शकों ने भी महसूस किया। कहा भी, आज अभिनय कोई खास अच्छा नही रहा।

एक मात्र रीतू बाबू कर्ण के अभिनय मे सफल रहा—जैसे किसी दुर्धर्ष नाविक ने डगमगाती नाव को किनारे लगा दिया हो। जैसा कण्ठ स्वर था, वैसा ही पार्ट, और प्राणवन्त आवेग। पद्मावती का अभिनय करने वाली मंजरी जैसी ऐक्ट्रेस आज उसके सामने निस्तेज क्लान्त लता जैसी म्लान लग रही थी। न तो प्रेम के सीन मे और न ही करुण सीन मे वह कल-परसों-तरसों जैसी मंजरी लगी। उसकी तुलना मे गोरा बाबू ने अर्जुन का पार्ट कही अच्छा किया। द्रौपदी का पार्ट गोपालीवाला ने वैसा ही किया जैसा कि वह किया करती है। शकुनि के पार्ट मे बाबुल ने रंग-रस पैदा किया लेकिन प्रतिहिंसा की निष्ठुरता उभार नही सका। सबसे खराब पार्ट अलका का हुआ। ब्रह्म अभिशाप पार्ट कर्णार्जुन की नियति की छाया है। उस पार्ट में वह जैसे खडी ही नही हो सकी। वेश-मन्दिर मे एक कोने मे अकेली बैठी रही। दिन भर उसने बातचीत नही की है, वेश मन्दिर मे भी चुपचाप बैठी रही।

पूरे प्ले के दरमियान वेश-मन्दिर मे एक ठण्डापन रेंगता रहा। सवेरे से रात के अभिनय की समाप्ति तक यही हालत रही। सवेरे लड़कों ने वातावरण को सहज बनाने की कोशिश की थी। लेकिन गोपाल घोष ने झुंझलाकर उन्हें शान्त कर दिया था।

गोपाल घोष अलस्सुबह से इस इन्तजार मे बैठा रहा कि शिवनन्दन उसे कब बुलाने आता है। कम से कम खबर की जानकारी होगी। लेकिन शिवनन्दन नही आया। गोपाल देख रहा है कि गोरा बाबू तख्ते पर बैठ कर सिगरेट पर सिगरेट पिये जा रहा है। मंजरी कमरे के अन्दर है, एक बार भी उसकी साड़ी का छोर दरवाजे की देहरी पर हिला-डुला नही। बरामदे के सामने अलका जरा ओट मे बिस्तर की एक रंगीन चादर बिछाकर बैठी है। गोपाल के मन मे उसके प्रति घोर आक्रोश भरा हुआ है।

शिवनन्दन ने एक बार विन्यासकारियों को पुकारा था, 'रबीन बाबू, ऐ रबीन बाबू, मद्र सब लिबास ले आओ।'

कल रात मंजरी लिबास बिना उतारे ही डेरे पर चली गयी थी। गोरा बाबू ने कुरता, चादर, बाल उतार दिये थे मगर कपड़ा, हाथ की माला और कमर

की माला उतारे बगैर चला आया था। रवीन वह सब ले आया। उसे गोपाल ने कहा था, 'सुनो रवीन।'

'क्या ?'

भौंह नचा कर संक्षेप में पूछा था, 'रंग-ढंग कैसा मालूम हुआ ?'

रवीन ने मुंह बिदका कर गरदन हिलाते हुए कहा था, 'समझ में नहीं आया।'

'चेहरा ?'

'उससे भी ठीक से अनुमान नहीं लगा सका।'

'ठंडा ! फिर—'

'मालूम नहीं।'

गोपाल रीतू बाबू के पास आया, 'मास्टर साहब, यह तो बताइये कि क्या करूँ ?'

रीतू बाबू पेट के बल लेटा था और पीठ दबवा रहा था। लेटे-लेटे ही बोला, 'किस चीज के बारे में गोपाल बाबू ?'

'और किस चीज के बारे में ? अब तक बुलाहट नहीं आयी।'

'बिना बुलाये जाइएगा नहीं।'

'नहीं जाऊँ ?'

'इतने दिनों से आप महिला यात्रादल में हैं। इन सबों के बीच कहीं जाना चाहिए ? आप ही बताइये।'

'कुछ न कुछ कीजिये। वरना दल टूट जायेगा। इतने-इतने आदमी—'

'अरे साहब, सबके सब बेघर-बार हैं। एक टूटेगा तो दसियों दल में भर्ती हो जायेंगे। आप इतना सोचते क्यों हैं ? इस तरह का मामला आप से या मुझसे सुलझ सकता है ? तब हाँ, इन दोनों को मैं उस निगाह से नहीं देखता था। अच्छे लगते थे। लगता था, यात्रा के दल में—एक नयी तरह का—'

'तौर-तरीका। तौर-तरीका भर, तौर-तरीका !'

'हाँ, यह मॉडर्न युवक है। ठीक कहा है। तौर-तरीका आया है। इन लोगों की वजह से दल छोड़कर बहुत ही कम लोग बाहर गये हैं या बाहर से दल में आये हैं। उदाहरण के लिए गोपाली, नाटू, बंसो, आशा को देख लीजिये। अशान्ति न होती हो, ऐसी बात नहीं। मुझे पटलो चारु के बारे में मालूम है। इन लोगों के बारे में भी दो-चार बातें —'

'मास्टर साहब, नाम गिनाने से फायदा ही क्या है ! अशान्ति क्यों बढ़ाने जाइएगा।' नाटू सोया था, वह उठ कर बैठ गया।

'फिर रहे।' रीतू बाबू ने तकिये में अच्छी तरह मुंह घुमेड़ कर कहा, 'फिर

रहने दीजिये गोपाल बाबू। बात सही है। नाटू ठीक ही कह रहा है। जो होने का है, होगा। देखिये क्या होता है।'

'अलका! दैट गर्ल से कहिये कि वह चली आये। समझ रहे हैं सर?' बाबुल ने उत्तेजित होकर कहा।

हँस कर रीतू बाबू बोला, 'चोट खाकर साँप बाहर निकल आया है। मैंने अनुमान लगाया था।'

'क्या?' बाबुल ने गम्भीर होकर सवाल किया, 'क्या अनुमान लगाया था?'

'जो सच है, उसी का। उसका प्रमाण जेलेसी है।'

'अरबी की अंग्रेजी क्या है सर?'

'मालूम नहीं। सम्भवतः अरबी ही।'

'फिर आपको यही मालूम हुआ है—दैट अरबी। बाबुल बोस और ही तरह का आदमी है। यह नहीं कहता कि मैं सेन्ट हूँ। तब हाँ, जानते हैं, मेरे बारे में आपने नहीं कहा? सब आम आम ही होते हैं मगर मुझे मालदह के अलावा दूसरा आम पचता ही नहीं है। बिलिव मी, मैं नहीं खाता।'

'इस दल में मालदह आम है?'

'है। बट-शी इज नॉट अलका। वह किस दर्जे की है, मुझे मालूम नहीं।'

'अरे, तुम्हीं तो ले आये थे।'

'नकार कौन रहा है? मैंने तो कहा था—सब कुछ साफ-साफ बतला दिया था। तब इतना कुछ समझ नहीं सका था। नो मोर। मेरी ओर ताकेगी नहीं। बस। आते ही वह नैवेद्य की मिठाई में च्यूँटे की तरह लग जायेगी, यह बात क्या मुझे मालूम थी? डेंजरस औरत है। मालकिन ने ठीक ही देखा है। मैंने भी सर, उन दोनों को वंश-मन्दिर के पीछे देखा है।'

'तुम पीछे-पीछे गये थे?'

'उन लोगों के नहीं, मालकिन के पीछे-पीछे गया था।'

'मालकिन के?'

'हाँ। छाया-मूर्ति की तरह चट से बाहर निकल कर चली गयी। मैं चौंक पड़ा। माई खुदा, माजरा क्या है? वे रहस्यमयी की तरह किसकी खोज में जा रही हैं? क्षमा कीजिएगा, मैंने सोचा था, सम्भवतः सर—'

रीतू बाबू हँसने लगा। बोला, 'जगत सिंह का पार्ट अब मिलने वाला नहीं है भाई। उसमान के पार्ट से ही इस बार का प्ले समाप्त हो गया।'

'घबरा क्यों रहे हैं मास्टर साहब? 'लक' खुल भी तो सकती है।' नाटू के दाँतों की पंक्तियाँ अजीब ही तरह की हँसी से बाहर निकल आयी, 'कहावत है—पुरुष का भाग्य और स्त्री का चरित्र—'

रीतू बाबू ने सीधे होकर और गरदन उठा कर उसकी ओर देखा। बड़ी-बड़ी आँखों में आग लहक उठी। नाटू ने भयभीत होकर कुछ कहना चाहा। रीतू बाबू ने

पंजे जैसे अपने हाथ को बढ़ा कर कुछ सोचा और फिर हाथ ढीला पड़ गया। नफरत के साथ कहा, 'मजाक करना नहीं जानते हो तो मजाक मत किया करो।'

'उसके बाद मुड़ कर बोला, 'यह सब बात रहे। आप खुद ही जाइये और जाकर देख आइये। यह तो पूछ ही सकते हैं कि आज कौन-सा प्ले होगा।'

'यह कल बता दिया है—रीतू बाबू मास्टर साहब जो तय करेंगे, वही होगा। आज आपका मेन रोल है।'

'दूसरी बात भी है। सबेरे ही त्रिभुवन ने—जो मेरा बदन दाबता है और तुम लोगो का दूत है—कहा था, कल रात उसका भाई यहाँ आया है। घर में झमेला चल रहा है। उसकी पत्नी मायके चली गयी है। साथ में कुछ सामान लेकर चलती बनी है। कह रहा है, अब लौटकर नही आयेगी। उसे रुपया चाहिए। पेशगी ले चुका है। दुबारा माँग रहा है, साथ ही साथ छुट्टी भी। एक बात यह है। दूसरी बात है, कल सवेरे यहाँ से विदा होने की। बीच मे तीन दिन खाली है। बसी को आज पार्ट करने के लिए रखने के बजाय रानीगंज भेजा जायेगा कि नहीं, यह पूछना है। रात मे खाना खिलाने वाली बात की चर्चा कीजिएगा। उन लोगों ने कहा था। जैसी हालत है, बड़े ऐक्टर कुछ बोलेंगे नही। लेकिन छोटे ऐक्टर तो अनबूझ होते हैं। जाइये।'

गोपाल को तमाम प्रश्नों का उत्तर अत्यन्त सहज और स्वच्छन्द भाव से मिल गया। गोरा बाबू शान्त भाव से बैठा हुआ है। प्रोप्राइट्रेस कमरे में है। अलका भी कमरे मे है। धूप उग आयी है, फैल गयी है, बाहर से आकर वह बिस्तर पर लेट गयी है। मंजरी बैठकर 'कर्ण' नाटक पढ रही है। शिवनन्दन स्नान घर मे कपड़ा फीच रहा है। आवाज हो रही है। नल से पानी गिर रहा है।

गोपाल के बैठते ही गोरा बाबू ने कहा, 'कल रात शराब का दौर जरा ज्यादा चल गया।'

गोपाल खामोश रहा। गोरा बाबू बोला, 'जरा शान्ति के साथ होता तो अच्छा रहता। मगर—।' एक लम्बी साँस लेकर बोला, 'नियति को मैं पहचानता हूँ। जो होने को है उसे रोका नही जा सकता। खैर! कहिये, आप क्या कहना चाहते हैं? प्ले कर्ण होगा। उनकी यही इच्छा है। और अप्टग्रज में दण्डी मैं, अलका उर्वशी। अलका यह कर नही पायेगी। मैं—यानी मुझे भी अच्छा नही लग रहा है।'

इसके बाद गोपाल को जैसे कहने को शब्द ही नही मिले। बोला, 'उर्वशी का पार्ट गोपाली कर सकती है।'

'नही।'

'तो फिर कर्ण ही होगा। क्यों जी ?'

अन्दर से मंजरी ने उत्तर दिया, 'हाँ।' यह कहकर वह किताब हाथ में थामे ही बाहर निकल आयी। बोली, 'मास्टर साहब से कह दीजिएगा। और रात में मांस और पूरी बनेगी। नायक पक्ष से कहिये कि कीमत लेकर वे लोग बकरा कटवा दें। पूरी के लिए डालडा और थोड़ा आलू बाजार से मँगवा लीजिये।'

गोपाल खुश हुआ, और चकित भी—कि स्थिति सहज होने का सुयोग कब आया। अलका अब भी कमरे में सो रही है। कल रात भी वह खम्भे से टिककर बहुत देर तक जगी हुई थी। दूसरी रात गोपाल के मन में किसी प्रकार का कुतूहल नहीं था। यात्रादल में जो कुछ घटित होता है वह उसकी दृष्टि में स्वाभाविक है—बिलकुल आश्चर्यहीन। रात की पृथ्वी को देखकर जिस प्रकार विधाता के मन में कोई कुतूहल और विस्मय नहीं जगता—मात्र वह उसे देखते रहता है, उसी प्रकार वह भी देखता रहता है। लेकिन कल उसमें कुतूहल था, उद्विग्नता थी। इसी मामले में विधाता विधाता है और वह है गोपाल घोष। बिहार के भूकम्प के दिन उन लोगों का दल पूर्णिया गया हुआ था। वह दल मंजरी ऑपेरा नहीं था, भुवन बाबू का भुवन मोहन ऑपेरा था। दूसरी रात भी उसी आतंक के बीच सब लोग बैठे हुए थे। एकाएक गांजाखोर गायक योगा बाबू बोल पड़ा था, 'बा-प रे !' सब लोग चौंक पड़े थे। गोपाल ने ही उत्कण्ठा के साथ पूछा था, 'क्या हुआ योगा बाबू ?'

योगा बाबू ने कहा था, 'भगवान के बारे में कह रहा था।'

'भगवान के बारे में ?'

'हाँ। भगवान के।'

कई लोग एक साथ बोल उठे थे, 'गांजाखोर कहीं का !'

'बात सही है। गांजा मैं पीता हूँ। लेकिन तुम लोगों में से किसी ने सोचकर देखा है ?'

अब स्वयं भुवन बाबू ने कहा था, 'क्या, बताइये तो ब्राह्मण देवता ?'

'देखिये बाबू, इतना बड़ा भूकम्प हो गया—एकबारगी धरती फट गयी, घर-द्वार गिर पड़े। जिन्हें मरना था उनकी मौत हुई। हम लोगों में से जो लोग जिन्दा हैं उनकी छाती धड़क रही है। हम रो रहे हैं, चिल्ला रहे हैं। और भगवान को देखिये—फटी-फटी आँखों से सब कुछ देख रहे हैं, देख रहे हैं। न तो हँसते हैं और न ही आँखों में आँसू है। न तो आनन्द है और न ही दुःख। क्यों ? अरे, यह तो होना ही है। हुआ भी है। हम लोगों का एक घर गिर पड़ता है तो हम लोग कितनी हाय-हाय करते हैं। क्यों गिर पड़ा ? गिर पड़ा तो बनायेगा कौन ? कितना अफसोस

करते हैं ! अरे भैया, यह गिरना ही बनना है । इसमें 'बाप रे' बात नहीं आती है ?'

बीच-बीच में रात में जगकर बैठे रहने पर उसे योगा बाबू की उस बात की याद हो आती है । भावतः वह ऐसा ही हो गया है । लेकिन कल उसे अहसास हुआ है कि बात ऐसी नहीं है । वह मंजरी ऑपेरा के लिए चिन्तित था । आँखों की दृष्टि में ऐसी व्यग्रता जग पड़ी थी कि आँखें जल रही थीं । लेकिन रात में उसने किसी को उठते नहीं देखा था । अतः स्थिति कब सहजता की ओर मुड़ी ?

गोपाल यह पूछने गया कि मिठाई का इन्तजाम होगा या नहीं । बात को दबाकर बोली, 'होगा ।'

'एक बात और कहनी है । त्रिभुवन का कहना है, उसके घर पर मुसीबत आ गयी है । उसे छुट्टी और रुपया दोनों चाहिए । यानी पेशगी के बाहर चाहिए ।'

'कितना रुपया ?'

'जितना दीजिएगा । देने से अगले साल तक वसूल होगा । रीतू बाबू का पैर दाबता है, उनकी बात पर दो सौ रुपया बतौर पेशगी दिया जा चुका है । एक सौ और देने से तीन सौ हो जायेगा । महीने में दस पन्द्रह की दर से लेगा ही ।'

गोरा बाबू बोला, 'मैंने देने नहीं कहा था । अगले साल वसूल होगा । आज की स्थिति में दिया नहीं जा सकता है । मतलब यह कि अभी बागबाजी का शोरगुल है । क्या होगा, कुछ ठीक नहीं ।'

'रीतू बाबू कह रहे थे, गरीब आदमी है, घर पर मुसीबत का दौर चल रहा है ।'

'पचास रुपया दे दीजिएगा ।' मंजरी बोली, 'पचास रुपया देने से शायद डूबेगा नहीं ।'

'खैर ।' गोरा बाबू हँस पड़ा ।

'और एक बात । कल से तीन दिन बाद बाँकुड़ा का बयाना है । इसलिए बयाने के लिए वंशी को आसनसोल, रानीगंज भेजूँ या नहीं ? जाने को होगा तो दोपहर में ही जाना होगा ।'

मजरी ने गोरा बाबू के चेहरे की ओर देखकर कहा, 'क्यों जी, जायेगा ?'

गोरा बाबू ने कहा, 'ऊँ ।'

'फिर क्यों जाये ?'

थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद गोरा बाबू बोला, 'मेरा कहना आसनसोल में उतरकर ही दल को बी० एन० आर० से बाँकुड़ा जाना उतरकर देखा जायेगा । वहाँ से रानीगंज नजदीक ही है । क्या सब के विश्राम की भी तो जरूरत है । मुझे तो जरूरत है ही ।'

मंजरी ने उठते हुए कहा, 'यही होगा। दल यहाँ से खाना खाने के बाद रवाना होगा।'

गोपाल उठकर खड़ा हुआ, 'दुर्गा-दुर्गा !'

'मैनेजर बाबू।'

'अयँ !' गोपाल ने आश्चर्य के साथ देखा। दल की कोई औरत उसे मैनेजर बाबू कहकर संबोधित नहीं करती। मंजरी मामा कहती है। शोभा उसे भैया कहती है। गोपाली बाबा कहती है। गोपाल बाबा ही कहता है। यह अलका पुकार रही है। ललाट पर सलवटें पड़ गयीं। वह मुड़ कर खड़ा हो गया, कुछ बोला नहीं। 'आप' कहे या नहीं, समझ में नहीं आया। अलका बोली, 'मिठाई की कितनी कीमत लगेगी ? मिठाई मँगा दीजिएगा।'

गोरा बाबू ने कहा, 'मिठाई की कीमत मैं दूँगा। मिठाई मँगा दीजिएगा।'

अलका बोली, 'नहीं। मिठाई मैं अपनी ओर से देना चाहती हूँ। इसमें मुझे खुशी होगी।'

'नहीं। वे देंगे। बात हो चुकी है। इस संबंध में 'ना' मत बोलो। बोलना उचित नहीं है।' मंजरी ने कहा।

अलका बिना प्रतिवाद किये कमरे के भीतर चली गयी। मंजरी बोली, 'एक बात और कहनी है। आप दोनों व्यक्ति मौजूद हैं। अलका ने मुझे कल रात कहा है, फिर आज सवेरे भी। वह जाना चाहती है। यानी हमेशा के लिए जाना चाहती है। कल ही। चार सौ रुपया एडवांस ले चुकी है। घर में अभाव भी है। उसका कहना है कि रुपया वह अभी दे नहीं सकेगी। बाद में वसूल हो जायेगा। आप लोगों का क्या कहना है ? मैंने कहा है, यह कैसे हो सकता है ?'

तत्क्षण गोरा बाबू ने कहा, 'मेरी राय है कि उसे जाने दिया जाये। आज ही उसे छोड़ देना उचित है और उसे भी चाहिए कि चली जाये। लेकिन वह बात रहे। आज जायेगी तो बुरा होगा। यहाँ के लोग तरह-तरह की बातें करने लगेंगे।'

मंजरी बोली, 'मैं उसे जाने नहीं कह रही हूँ।'

'कौन कह रहा है और कौन नहीं कह रहा है, मेरा यह कहना नहीं है। मैं वह कह रहा हूँ जो उचित है। पैसे का सवाल उठता ही नहीं है। उसका भी सीजन जा रहा है।'

'महिला यात्रादल एक ही है। सीजन का सवाल कहाँ पैदा होता है ? और रुपये की बात ही अहमियत नहीं रखती। उसका पार्ट करने के लिए हमें अभी आदमी कहाँ मिलेगा ?'

'शेफाली को मँगा लो। आदमी भेजने से वह जरूर चली आयेगी। तनख्वाह अलबत्ता ज्यादा लेगी। थियेटर से हटकर वह छः महीने से बैठी हुई है।'

'ठीक है, वह जायेगी। गोपाल मामा, कल आप कलकत्ता आदमी भेजिये या खुद ही चले जाइये।'

यह कहकर मंजरी कमरे के अन्दर चली गयी। गोरा बाबू ने सिगरेट सुलगायी। उसके बाद पुकारा, 'शिवनन्दन, बोतल दे जा।'

गोपाल खुश हो वहाँ से चल दिया। खैर! मंजरी ऑपेरा का ग्रह टल गया।

पीछे से गोरा बाबू ने पुकारा, 'सुनिये—'

गोपाल घोष पीछे की ओर मुड़ा। गोरा बाबू ने कहा, 'आपको आना नहीं है। नायक पक्ष से कह दीजिये कि कल सवेरे ही वे लोग बराकर से एक टैक्सी मँगवा दें। सवेरे ही जाना सुविधाजनक रहेगा। शाम होने के पहले ही पहुँचा जा सकता है। वे लोग टेलीफोन से कह देंगे तो काम हो जायेगा।'

खबर फैलने में देर नहीं लगी। गोपाल घोष सबसे पहले रीतू बाबू को सूचना पहुँचाने गया। रीतू बाबू अपनी मोटी आवाज में गीत गा रहा था और चुटकी से ताल दे रहा था। बाबुल को सुना रहा था—'गूँथ कमल का हार न पहनो, न पहनो बाला। शत-शत कण्टक हैं मृणाल मे, सहनी होगी ज्वाला—। यह ताल है, यह विराम। यह देखो। इसके बाद शुरू करो—गूँथ कमल का हार—।' चुप हो गया। बोला, 'गोपाल'बाबू आ गये। अब बन्द करता हूँ। गीत और गाना दोनों जानता हूँ जी। तब हाँ, आज का गीत गाने से रुचता नहीं। उसमें प्राण या रस नहीं मिलता है। कहिये गोपाल बाबू, क्या समाचार है?'

'सुसमाचार है।'

'रात प्रभात मे बदली है और सूर्योदय हुआ है?'

'अँधेरा कट गया है। यह नहीं कहूँगा कि धूप उगी है। तब हाँ, उगेगी। राहु ग्रास से मुक्ति का समय निकट आ गया है।'

बाबुल बोल पड़ा, 'कीप पहेली, प्लीज सीधी बात में बताइये सर। मेरा मूड बिगड़ा हुआ है।'

गोपाल हँसकर कहता है, 'राहु हट गया है—इसका मतलब यह कि अलका जा रही है।'

'अलका जा रही है। यानी खसखस कर दिया? डिसमिस!'

'नहीं सर। उसने स्वयं कहा है कि वह जा रही है—छोड़ दिया जाये तो वह चली जायेगी। पेशगी ले चुकी है!'

'उसे छोड़ दे रहे हैं! गुड।'

बाबुल बोस उठकर खड़ा हो गया, 'मैं जरा चलता हूँ मास्टर साहब।'

'क्या? तुम भी चले जाओगे? लो बँटाधार हुआ।' रीतू बाबू ने हँसकर कहा।

'उहूँ। सुमति के लिए उसे कन्ग्रेच्यूलेट कर आऊँ।'

रीतू बाबू बोला, 'ब्राह्मण की लड़की है, आशीर्वाद नहीं करूँगा। कहना, मैं उसका मर्यादा-बोध देखकर बहुत ही खुश हूँ।'

'कहूँगा।' बाबुल चला गया।

रीतू बाबू बोला, 'यह लड़की नाचती बहुत अच्छा थी। पार्ट—पार्ट भी अच्छा करती थी। कल श्री कृष्ण का अच्छा पार्ट किया है। बहुत ही अच्छा। कल मेरे साथ पार्ट किया। जानते हो, मैं एक ट्रिक का इस्तेमाल करता हूँ। आर्टिस्ट टेस्ट करने के बहाने मैं अक्सर साँड़ की तरह चिल्ला उठता हूँ। रिहर्सल में नहीं, यों ही अपनी इस आवाज में नहीं। शब्द को मैं चिल्ला कर बोल उठता हूँ—न—ही—। हँसी की बात होती है तो इस तरह ठहाका लगाता हूँ कि साधारण आर्टिस्ट हो तो बिदुक उठता है। हतप्रभ हो जाता है। कल वैसा ही ठहाका लगाया था। देखा, वह लड़की ठीक तौर से बोले जा रही है। फर्राटे से बोली रही है। तुलसी मेरी सखी है, शंखचूड़ व्रज का सुदाम है। मेरे ही अंश से उसका उद्भव हुआ है। देवराज, मेरा भय है—मैं चक्र छोड़ कर बाँसुरी की खोज करूँगा। विराम मिलते ही मैंने एक ठहाका लगाया। नाटू और बाबुल भी जरा चौंक उठे। अचानक ठहाका लगाया था न! वह लड़की भी चौंक पड़ी, मगर उन लोगों से ज्यादा नहीं। उसके बाद सोलह सौ गोपिका और द्वारका की सहस्र नारियों के सम्बन्ध में मजाक करते हुए लम्बा ठहाका लगाया। शिव का पार्ट, पागल का पार्ट है। उसमें विस्मित होकर नाचना भी शोभा देता है। समझ रहे हो, वह ठुमक-ठुमक कर नाचने लगी। तमाम दर्शक भी हँसने लगे। मैंने सोचा, देखा जाये वह क्या करती है। इसके बाद शान्त स्वर में वह वातावरण को कैसे आन्दोलित करती है। देखा, जो करना चाहिए, वह करती गयी। तिरछी निगाहों से मेरी ओर ताकती हुई, जरा-सा मुड़ कर खड़ी रही। मेरी आवाज का अवशेष समाप्त हुआ, लोगों की हँसी थम गयी। लोग तब उसका कटाक्ष देख कर रस से सराबोर हो चुके थे—सोच रहे थे कि अब क्या करेगी। उस समय उसने शुरू किया—हाय भोले नाथ, प्रेम की पिपासा मेरी व्याधि है। केवल व्रज के प्रेम को ही पिपासा है मुझमें? उससे भी बड़ी मन की कामना है कि पुनः मोहिनी बन जाऊँ। मोहिनी बन कर त्रिभुवन में विचरण करूँ। और तुम दोनों बाहुओं को फैला कर—। मैंने कहा—बाप रे। लोग खिलखिला कर हँसने लगे। जानते हो, वह लड़का होती तो वेश-मन्दिर में लौट कर मैं उसे अपनी बाहुओं में भर लेता। वह अगर मालिक-मालकिन के बीच नहीं कूदती तो मैं उसका पक्ष लेता। कहता—जो जीते, प्रेम के युद्ध में जयमाला उसे ही मिलेगी। कहने को है ही क्या! यहाँ शिकायत क्यों? दल की हानि होगी।'

'कल मैं कलकत्ता जा रहा हूं और वहां से थियेटर की शेफाली को लेता आऊंगा। जो भी लेगी, दिया जायेगा।'

'शेफाली! वह तो काफी रकम लेती है।'

'सो ले। हुक्म हो गया है।'

नाटू मितभाषी है, लेकिन विद्रोही। उसने कहा, 'मर्द भले ही कुछ न बोलें, लेकिन औरतें बोलेंगी ही।'

'उन लोगों से सीजन का कॉन्ट्रैक्ट हो गया है जनाब। कहने से होगा भी क्या?' रीतू बाबू ने कहा, 'नहीं-नहीं। कोई कुछ नहीं बोलेगा। सब की भलाई सब लोग चाहते हैं। ऐसा बढ़िया क्षेत्र है यह। कोई नहीं बोलेगा।'

है, रोता है या कहता है, देख लूँगा। बिनोदिनी दल में मारपीट के दस-बीस मामले देख चुका हूँ। इस दल में इन लोगों के बीच छोड़ने-छाड़ने का सवाल ही नहीं है, इसलिए और-और लोग सँभल कर चलते हैं। इसलिए मेरा कहना है कि क्षमा कर देने से काम बन जाता। गृहस्थ घर की लड़की है, हुनर है। वही—वही आ रही है।'

बाबुल मास्टर और अलका सचमुच ही इस डेरे के बैरक में आये। आकर रीतू बाबू के कमरे में गये। तत्क्षण दूसरे कमरे से बहुत सारे लोग बाहर निकल आये, बहुत सारे लोग आकर दरवाजे पर खड़े हो गये। सब के मन में एक ही बात मँडरा रही है—चली जा रही है। अच्छी थी। औरतों के कमरे से औरतें भी बाहर निकल आयी थीं। एक मात्र शोभा रीतू बाबू के कमरे तक चली आयी। वह कमरे के अन्दर जा ही रही थी कि अलका बाहर निकल आयी। सिर्फ एक ही बात कह कर चली आयी, जैसे उसे और कुछ कहना नहीं है, बातें समाप्त हो चुकी हैं। कह आयी, 'मास्टर साहब, मैं चल रही हूँ।'

'जा रही हो?' बस, रीतू बाबू को जैसे और कोई शब्द नहीं मिला।

बाबुल चुपचाप था। वह पहले ही बातें कर चुका है। उसने भी ज्यादा बातें नहीं की थीं। कहा था, 'सुना तुम—'

'हाँ, जा रही हूँ।'

बाबुल ने कहा था, 'ठीक कर रही हो। कन्ग्रेच्यूलेशन।'

अलका जरा हँस दी थी।

बाबुल ने कहा था, 'हम एक साथ आये थे।'

'एक साथ आने से एक ही साथ जाना नहीं हो पाता है।'

'ठीक। वन्डरफुल कहा है।'

अलका हँसती हुई चुप हो गयी थी और उसकी ओर देखा था।

बाबुल ने कहा था, 'चलो, वहाँ जाकर कह आओगी।'

'कल जाने के समय कहूँगी।'

'नहीं। अभी चलो। तुमसे एक बात भी कहनी है। रास्ते में ही कहूँगा।'

'चलिये—चलो।'

कमरे में मंजरी चुपचाप लेटी थी। लेटी थी या जगी थी, निश्चय के साथ नहीं कहा जा सकता है। अलका उठ कर उसके साथ आयी थी। कुछ दूर जाने के बाद बाबुल ने कहा था, 'मत जाओ। रह जाओ।'

'रह जाऊँ? इसके बाद भी?'

'सब कुछ बदल जायेगा।'

'ऐसा कहीं होता है?'

'होता है। अगर मैं तुमसे शादी कर लूँ, बदस्तूर रजिस्ट्री से तो फिर सब बदल जायेगा।'

उसके चेहरे की ओर देख कर अलका ने हँसते हुए गरदन हिलायी थी, 'नही।'

बाबुल ने आदतन तत्काल कहा था, 'गुड। चलो, मिलने-जुलने का काम निबटा लो। बाहर निकल चुकी हो, लौटना ठीक नही रहेगा। सब लोग सोचेंगे, मैंने तुम्हें कुछ परामर्श दिया है।'

चलते-चलते अलका ने एकाएक कहा था, 'आपने देर कर दी। अब नहीं हो सकती है।'

प्रगल्भ बाबुल बोस तब से गुमसुम है। डेरे के कमरे मे आकर वह एक शब्द भी बोल नही सका। वह सोच रहा था, कितनी अजीब लड़की है! अलका ने ही रीतू बाबू से बात की। रीतू बाबू प्रश्न सूचक 'जा रही हो' कह कर ही चुप हो गया। अलका नमस्कार कर बाहर चली आयी। शोभा कमरे मे जाते-जाते ठिठक कर खड़ी हो गयी। वही बोली, 'तुम जा रही हो बहन?'

'हाँ शोभादी। कल सवेरे ही चली जाऊँगी।'

'क्या कहूँ बहन? कहने को कुछ नहीं है। लेकिन—। दुःख हो रहा है बहन।'

'आपको प्रणाम करूँ?'

'नही-नही।' शोभा भय से पीछे हट गयी, 'नही, प्रणाम नही करना चाहिए। बाप रे!'

'फिर चलती हूँ। गोपाली दी, आशा से नमस्कार कह दीजिएगा।'

हँसते हुए उसने बात समाप्त की और चली गयी।

सब लोग चुपचाप खड़े रहे। एक उदासी ने जैसे सबको दबोच लिया। विपन्न स्तब्धता कल रात से ही छायी हुई है। लेकिन उसके प्रकार और रूप में जैसे एक बदलाव आ गया है। अस्वस्तिकर उमस जैसे दूर हो गयी हो और रिमझिम बरसात से उदासी सजल हो गयी हो। मंजरी ऑपेरा के मालिक-मालकिन के बीच का विरोध समाप्त हो गया है, उमस छँट गयी है। वहाँ अलका ही कांटा थी। लेकिन अलका जा रही है, इससे भी मन उदास हो गया है।

महिला यात्रादल मे इस तरह का वाकया होता है। योगा बाबू की बात में अतिरंजना नही है, वह यथार्थ और सम्पूर्ण सत्य है। दो पुरुष और एक महिला के कारण यात्रादल का जीवन जटिल बन जाता है। झगड़ा-टंटा होता है, मर्द-मर्द के बीच हाथापाई होती है, मारपीट होती है, पुरुष महिला पर भी प्रहार करता है। गहरी शान्त रात एकाएक तेज क्रुद्ध स्वर मे एक-दूसरे पर आक्षेप की झड़ी लगाने से अचकचा उठती है। या फिर शायद यह होता है कि नारी-कण्ठ का तीक्ष्ण चीत्कार रात मे सोये दल के लोगों की सुप्त चेतना को कुरेद कर जगा देता है। ऐसे मामले में एक पुरुष को वहाँ से विदा होना पड़ता है। तब हाँ, अकेला पड़ जाने वाले पुरुष की कीमत अगर अधिक हो और औरत उसे किसी भी हालत मे पसन्द न करती हो

तो उन दोनों को ही विदा हो जाना पड़ता है। और अगर एक पुरुष को लेकर यदि दो के बीच झगड़ा छिड़ता है तो वह झगड़ा औरत-औरत में होता है। नारी-कण्ठ का चीत्कार और अभिशाप की भीषणता निष्ठुर तौर पर असहनीय जैसी हो जाती है। वहाँ भी हाथापाई होती है, तब हाँ, कम। होने से झोंटा-झोंटी होकर उसकी समाप्ति हो जाती है। उस मामले में भी एक मर्द और एक औरत रह जाते हैं—एक औरत को विदा होना पड़ता है। लेकिन वहाँ अगर उसकी कीमत अधिक हो तो उन दोनों को ही जाना पड़ता है।

इस दल में भी इस तरह की वारदात हुई है। तब हाँ, प्रकार में थोड़ी बहुत भिन्नता थी। सुशीला थी और उसका प्रेमी रूपेन चक्रवर्ती था। दोनों अच्छे ऐक्ट्रेस-ऐक्टर थे। रूपेन एक दूसरी औरत पर मुग्ध हो गया। वह बाहर की औरत थी। दल में आने को वह तैयार नहीं थी। उसका इस ओर रुझान नहीं था। रूपेन ने दल छोड़ दिया। सुशीला ने भी छोड़ दिया। उसका दल में आने का एकमात्र उद्देश्य था, रूपेन को पाना। जब वह हाथ से निकल गया तो दल का मोह दूर हो गया। दल के बहुत से लोगों ने सुशीला के हृदय में स्थान पाना चाहा था, लेकिन उसने किसी की ओर आँख उठा कर देखा भी नहीं था। सुशीला के जाने के दिन भी ऐसा ही हुआ था। —'आह चली गयी! बहुत अच्छी थी। दोनों बहुत अच्छे थे।'

नाडूदेव और शोभा विनोदिनी दल में रह चुके हैं। विनोदिनी के दल के विघटन के बाद बैठे हुए थे। उसके बाद यहाँ आये। वहाँ भँगी कालीदासी बहुत ही अच्छी गायिका थी। उसका प्रेमी था गायक शील। काली अचानक नये ऐक्टर सुरो बाबू को प्यार करने लगी। शील चला गया। जाने के समय कहा था, 'चल रहा हूँ शोभा। चल रहा हूँ नाडूदा।' उन लोगों ने कहा था, 'रह जाओ न भाई शील मास्टर।' शील ने कहा था, 'दुत, अब कहीं रहा जा सकता है।'

'क्यों?'

'भगवान करे, तुम लोगों मे ऐसा न हो। तब हाँ, बिना हुए समझाया भी नहीं जा सकता है। यह सिर्फ मन की बात नहीं है शोभा, मान की बात भी है।'

विनोदिनी के दल में भी उस दिन इसी तरह की उदासी का माहौल छा गया था।

रीतू बाबू सूटकेस से अपना शतरंज निकाल कर बैठा था। उसके पास एक सेट शतरंज है। जब कभी उसके मन की हालत अजीब तरह की हो जाती है तो वह शतरंज निकाल कर बैठता है। अकेले ही खेलता रहता है। पूछने पर कहता है, 'मारपीट हो जायेगी। अकेले ही खेलना अच्छा रहता है।' शराब पीना कम हो गया है। बाबुल अपना ताश निकाल कर पेर्सेंस खेलने बैठा था। मणि घोष आईना देखकर अपने पके बाल निकाल रहा है। नाटू गोपाली के फटे ब्लाउजों को सी रहा है। हिसाबी आदमी है, घरेलू कामों को बड़े सलीके से करता है। बाबुल ने एकाएक ताश की गड्डी उठा कर फेंक दी और बोला, 'न्यूसेंस खेल है।'

किसी ने कोई उत्तर नहीं दिया। अचानक बाबुल ने अपनी बोतल निकाल कर कहा, 'खुल जा सिमसिम ! खाली ! माई खुदा।'

रीतू बाबू ने चुपचाप अपनी बोतल बायें हाथ से आगे बढ़ा दी और अपने शतरंज का घोड़ा हटा कर पुकारा, 'बंसी ! बंसी मास्टर !'

बंसी दूसरे कमरे से आकर खड़ा हुआ, 'मास्टर साहब—'

'पियोगे ?'

बंसी ने शरमाते हुए कहा, 'अभी तुरन्त पी है सर। आपके सामने—नहीं कहिये।'

'ठीक है। एक गीत सुनाओ। नाच का गीत नहीं होना चाहिए।'

'तब ?'

'दिवोदास नाटक का गीत। तुम्हारे पार्ट की शुरुआत—दिवोदास के छोटे पुत्र की मुझे याद है।'

'हाँ मास्टर साहब। तब मेरी उम्र बारह-तेरह साल थी।'

'मैंने सुना है। तब ऐक्टर नहीं था। एमेच्योर में पार्ट करता था, तुम्हारा वह गीत आज भी बीच-बीच में याद आता है। छोटे राजपुत्र की मृत्यु हो चुकी है, बड़ा राजपुत्र रो रहा है—रोओ नहीं मेरे लिए—यही गाना।'

छोटे राजपुत्र ने मरने के समय गाया—'आँसू अब न बहाओ, नहीं बहाओ, नहीं पुकारो ऐसे बेधक स्वर में—ऐ-ऐ। समय-स्रोत में बह कर हम दोनों भाई मिले हैं आकर, पुनः बह कर चल रहा किस देश को, मिलेगा कौन किनारा, पुनः होऊँगा किसका भाई, नहीं जानता, नहीं जानता, कौन खींच है रहा पकड़ जीवन का धागा—ऐ-ऐ।'

बंसी बोला, 'मास्टर साहब, वह गीत अब आता नहीं है। टुन-टुन प्याला बजाने और एक-दो-तीन गिनने की वजह से वह अब हो नहीं पाता है।'

'तो फिर मैं गाता हूँ।' रीतू मास्टर मीठे स्वर में गाने लगा।

'गीत अच्छा था सर ! अब बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे भी लग रहा है। अलका और मैं एक साथ भर्ती हुए थे। वह जा रही है।'

'जिस दिन कोई दल से चला जाता है, उस दिन मैं यह गीत गाता हूँ। समझ रहे हो ? काल स्रोत में बह-बह कर, तुम हम यहाँ आये हैं मिलकर—पुनः बह कर चल रहा किस देश को, नहीं जानता, नहीं जानता, कौन खींच है रहा पकड़ जीवन का धागा। रोओ मत इस तरह मेरे लिए।'

'वण्डरफुल ! नाटू बाबू भी गीत गुनगुना रहा है।'

नाटू हँस दिया। बोला, 'हाँ गा रहा हूँ। जीवन के प्रारम्भिक काल में यह गीत मुझे भी अच्छा लगा था।'

'यात्रादल में प्रेम के चक्कर में फँस चुका हूँ मास्टर साहब। यहाँ हर तरह का आश्चर्य है।'

'हाँ ब्रदर, जितनी रोशनी है उतना ही अँधेरा। गीत में भी और आदमी में भी। घनघोर देहात या शहर में पियक्कड़ों का झुण्ड चिल्लाता है तो वहाँ बंसी को पुकारा जाता है। बंसी आशा को लेकर उतर जाता है—महुआ-महुआरिन की भूमिका में। 'महुआरिन तेरी नाव बह कर चली जा रही है। मुझे पतवार थामने दो। इसके अलावा काल-स्रोत में बहना भी है। मेरे जैसा भी रीतू है। बंसी चूँकि गुस्से में नहीं आयेगा, इसलिए उसी का नाम लेकर कह रहा हूँ। बंसी है इसके अलावा फणि बाबू जैसे प्रणम्य व्यक्ति भी हैं। कण्ठ जी जैसे साधक भी हैं। जानते हो, कण्ठ जी स्वयं सारा इन्तजाम कर त्रिवेणी में देह-त्याग करने आये थे। गीत लिख कर उसे स्वर में बाँध कर तालीम दी और मृत्यु के दिन बोले, 'अब मुझे जल-समाधि लगाने दो। मेरा समय आ गया है। माला दो और उसी गीत को गाओ। कण्ठ जी के गीत से पूरा बङ्गाल पागल हो गया था। मजलिस में खड़े हो गीत तैयार करते थे, उसे स्वर में बाँधते और गाते जाते थे।'

जुड़े हुए हाथों को मस्तक तक लेकर रीतू बाबू ने प्रणाम किया। बंसी, नाडू, फणि वगैरह कमरे के तमाम लोगों ने प्रणाम किया। बाबुल ने भी प्रणाम किया।

गोपाल घोष लौट कर आया, 'देखिये समस्या।'

'क्या हुआ ?'

नायक पक्ष का कहना है कि आज कोई अच्छा-सा कॉमेडी करें। मालिक-मालकिन ने कहा, 'रीतू बाबू से पूछिये—और-और लोगों से भी पूछ कर देख लीजिए। अबकी कोई कॉमेडी तैयार नहीं की गयी है। वही पुराना—भद्रा और सुभद्राहरण है। उसके बहुत सारे पार्ट के लिए आदमी नहीं हैं। अष्टवज्र मोटे तौर पर सुखान्त है। वह हो सकता है। इन दोनों में आपका मन रोल है।'

रीतू बाबू एकाएक गुस्से में आ गया। उठकर बैठ गया, 'नहीं होगा। आज ट्रेजडी के बिना काम नहीं चलेगा। जमेगा नहीं।'

'उन लोगों का कहना है—'

'नहीं नहीं। कर्ण होगा। जाकर कह दीजिये। और सुनिये, खाने का जो इन्तजाम हुआ था, उसे जाकर बन्द कर दें। जानते हैं, क्या महसूस हो रहा है—उस लड़की को भगाकर हम लोग खुशी में मिठाई खाने जा रहे हैं।'

खाने का आयोजन रोक दिया गया। किसी ने विशेष आपत्ति नहीं की। इच्छा रहने पर भी जाहिर नहीं कर सके। गोपाल घोष ने खुराकी देने के वक्त कह दिया, 'अपने-अपने पिलट का इन्तजाम करो। यह बाद में होगा।'

औरतें बेहद खुशी हुई। हाँ, यह बहुत ही अच्छा हुआ।

शोभा ने आकर रीतू बाबू से कहा, 'प्रणाम तो आप स्वीकार नहीं कीजियेगा। नमस्कार कर रही हूँ।'

'सो करो। मगर प्रणाम-नमस्कार क्यों ? बात क्या है ? यानी किसी नये के साथ रिश्ता जोड़ना है क्या ?'

'हाय-हाय ! पटली मेरी बहन थी, उसके नाते अगर बँधना होता तो तुम्हारे साथ ही बँधती। लेकिन मेरी तकदीर और तुम्हारा रिश्ता ! यह कोई मजाक नहीं है। तुम ने यह जो काम किया बहुत ही अच्छा किया। हम औरतों को जान में जान आयी। अलका मासूम लड़की है। बेचारी कल चली जायेगी और आज हम लोग मिठाई खायेंगे —यह कैसा-कैसा तो लग रहा था। बड़ा ही खराब लग रहा था।'

रीतू बाबू बोला, 'मुझे डर लग रहा था कि औरतें झुंझला उठेंगी।' 'औरतें इतने छोटे विचार की नहीं हैं। आप लोग मर्द हैं। नाम होता है हम लोगों का। समझे ?'

जरा चुप रहने के बाद शोभा फिर बोली, 'इस तरह बाहर चक्कर लगाते समय कोई विदा नहीं हुआ था। याद नहीं आ रहा। बीमार पड़ने से जाता है। लेकिन इस तरह नहीं जाता है। कलकत्ते में रह जाती तो इतना महसूस नहीं होता। यह एक तरह से भगा देना ही हुआ, वरना कोई बहू-बेटी क्या गुस्से में चली जाती है ?

तेरह

सवेरे ही सब लोग जग गये थे। टैक्सी हॉर्न बजाती हुई आयी। हॉर्न सुन कर शोभा ने पुकारा, 'गोपाली, आशा, अलका जा रही है। उठो।'

गोपाली उठकर बैठ गयी। आशा बोली, 'मैं उठ नहीं पा रही हूँ दीदी। सिर में दर्द है।'

गोपाल घोष जगा हुआ ही था, वह विपिन को बुलाकर अलका का सरो-सामान उठवाने ले गया। रीतू बाबू नहीं उठा था। बाबुल उठा था। देह पर चादर रख उसे फिर नीचे रख दिया, उसके बाद कुरता पहन चादर को कंधे पर रख लिया। वह स्टेशन तक जायेगा। लौटने के समय जो करने को होगा, करेगा। बराकर से अकसर ट्रक आती-जाती रहती है। किसी पर बैठ जायेगा। यहाँ यात्रा दल के लोगों का सम्मान किया जाता है। वह भी आकर खड़ा हुआ। मंजरी उठ कर बरामदे पर आयी थी और खड़ी थी। उसने गोपाल को पुकारा, 'सुनिये।'

गोपाल आया, निःशब्द खड़ा रहा। मंजरी बोली, 'उसने तनख्वाह में से पचास रुपया लिया है न ? बात थी, पचास नकद लेगी और पचास पेशगी में से काट लिया जायेगा।'

'हाँ।'

'उसे और पचास रुपया दे दीजिये।'

गोपाल रुपया निकालने मंजरी के कमरे में गया। गोरा बाबू बाथरूम से बाहर आया। गोपाल को जरा अचरज लगा। कपड़ा-लत्ता बदले हुए हैं। बात क्या है ?

विस्मय पर विस्मय का दौर चलने लगा। गोरा बाबू अपना सूटकेस ले बाहर निकल आया। गोपाल खड़ा हो गया। केश खुला ही छोड़कर दौड़ा-दौड़ा बाहर आया। वह समझ गया है।

मंजरी के पास आ गोरा बाबू मुड़कर बोला, मैं भी चल रहा हूँ मंजरी।'

मंजरी प्रस्तर जैसी जड़ हो गयी।

गोरा बाबू बोला, 'तुमने ठीक ही देखा था। अलका को मैं प्यार करता हूँ। उसे छोड़कर मैं रह नहीं पाऊँगा। उससे पूछा था। उसने बताया कि यह उसके लिए सौभाग्य की बात होगी। मैं उसके साथ जा रहा हूँ। लो, यह चेक लो। तुम अपना सारा सामान रख लो। मेरे पास कुछ नहीं है। दल का रुपया बैंक में रहता है। मेरे नाम से। पाँच हजार रुपया है। तीन हजार रुपये का चेक दे रहा हूँ, निकाल लेना। दो हजार मेरे पास रहा। दल में काम करके कभी मैंने वेतन नहीं लिया था। उस रकम को ले रहा हूँ। यह क्या, तुम चली क्यों जा रही हो मंजरी ?'

मंजरी निःशब्द कमरे के अन्दर चली गयी।

'गोपाल बाबू, इसे रख लीजिये।'

गोपाल भौचक हो गया है। गोरा बाबू ने उसके हाथ मे चेक थमा दिया। अलका गाड़ी पर बैठ चुकी है।

बाबुल बोस सीढ़ियाँ उतर स्वंभित की तरह खड़ा था। एकाएक वह चिल्ला उठा, 'रीतू बाबू, गोरा बाबू चले जा रहे हैं।' उसके बाद अपने आप बुदबुदाने लगा, 'अलका के साथ।'

अलका ठहरी दृष्टि से सामने की ओर देख रही है। रीतू बाबू किसी तरह कपड़ा लपेट तेज कदमों से बाहर आया। अभी-अभी नींद खुली है। उसकी बड़ी-बड़ी आँखें लाल हैं, आँखों में विह्वलता तैर रही है। उसने चिल्लाकर पुकारा, 'गोरा बाबू !' उतने मे ही, इतने छोटे से शब्द में ही बहुतेरे प्रश्न जुड़े हुए थे।

गोरा बाबू बोला, 'चलता हूँ रीतू बाबू।' उसके चेहरे पर एक विचित्र हल्की-सी मुसकराहट टँगी है। रीतू बाबू को विस्मय नहीं हुआ। इस हँसी को वह पहचानता है। देखा है। उन्मत्त या मृत्यु मुखी मनुष्य की इस हँसी को वह पहचानता है। फिर भी विस्मय की बात है। विस्मय से भरा हुआ है मंजरी का प्रेम !

विह्वल की तरह ही रीतू बाबू बोला, 'चल दिये ? आँखों से देखने के बावजूद यकीन नहीं हो रहा है।'

'हाँ। अलका के साथ।'

'गोरा बाबू !' रीतू बाबू की यह पुकार चीख जैसी सुनायी पड़ी।

गोरा बाबू ने एक क्षण के लिए सिर झुका लिया। दूसरे ही क्षण ऊपर उठाया और कहा, 'मुझे कुछ कहना नहीं है रीतू बाबू। मैं उन्मत्त हूँ, उन्मत्त। किसी दिन घर-पत्नी और उसकी अपार संपत्ति छोड़कर चला आया था। उसका कारण था। वहाँ बड़ा ही अपमान होता था, बरदाश्त नहीं हुआ। यात्रादल में भर्ती हुआ था। उसके बाद मंजरी से मुलाकात हुई। वह अच्छी लगी, उसे प्यार करने लगा। उसे चिरदिन प्यार करूँगा, यह सोचकर अपनी जात खो दी और बोस्टम बनकर उससे शादी कर ली। इतने दिनों तक सोचता आ रहा था कि उसे प्यार करता हूँ। आज कह रहा हूँ—नहीं। शायद प्रेम रहा ही नहीं। आज लगता है, अलका ही सब कुछ है। अलका को ही प्यार करता हूँ। बिना देखे भी उसे ही इतने दिनों से प्यार करता आ रहा हूँ। मंजरी को अलका ही समझकर गलती से प्यार करता आया हूँ। बहरहाल बात बढ़ाने से कोई फायदा नहीं। मैं चल रहा हूँ।'

वह गाड़ी में बैठ गया। बोला, 'चलो।'

बाबुल दनदनाता हुआ गाड़ी के नजदीक चला गया और तीखे स्वर में बोला, 'अलका !'

अलका उसके गले की आवाज के तीखेपन से अचकचा उठी और विरक्ति के साथ उसकी ओर देखा, बोली नहीं। बाबुल बोस बोला, 'उतर आओ !'

उसने कहा, 'नहीं।'

सेल्फ स्टार्टर सबेरे के वक्त कों-कों कर रहा है। कों-कों कर रहा है परन्तु गरज नहीं रहा है। रीतू बाबू को कहने को शब्द मिल गये।

'मंजरी ऑपेरा का क्या होगा कहते जाइये।'

गोरा बाबू बोला, 'मालकिन हैं ही मास्टर साहब। वही बतायेंगी। मंजरी यानी प्रोप्राइट्रेस से पूछ लीजिये।'

'सामने ही बाँकुड़ा का बयाना है, रास में कान्दी की राजहवेली में, कुछ ही दिनों के दरमियान—कम से कम यह सब पार तो करते जाइये।'

उस छोटे से कमरे से तीखे गले का एक शब्द तैरता हुआ आया, 'नहीं।'

गोरा बाबू ने ड्राइवर से कहा, 'चलो। स्टार्ट नहीं हो रही है ?'

स्टार्ट हो गयी। स्टार्ट होते ही गाड़ी चीख उठी। बरामदे और मैदान में दल के लगभग सभी लोग आकर जमा हो गये हैं। वे गुमसुम खड़े रहे। गाड़ी चली गयी।

अकस्मात् आँधी आये और मकान की छत या छप्पर उड़कर चली जाये तो

आदमी जिस तरह निर्वाक आकाश की ओर निहारता रह जाता है, दल के तमाम लोगों की भी ठीक वैसी ही स्थिति हो गयी। कुछ मिनटों तक सब लोग गुमसुम खड़े रहे, उसके बाद उसी चुप्पी के साथ वे डेरे के कमरे में लौटकर अपने-अपने बिस्तर पर बैठ गये। चुपचाप ! चुपचाप और मौन। सबके मन मे एक वेधक दर्द है, उस दर्द की एक बात सबके अन्तर मे वर्षाहीन बादलों के छल्ले की तरह मँडरा रही है। उफ्, छिः छिः छिः। उफ्, सम्भवतः मंजरी के प्रति है और छिः छिः छिः गोरा बाबू के प्रति। हो सकता है कि अलका के प्रति भी हो। औरतों के कमरे मे गोपाली रो रही है। आशा लेटी हुई है और उसकी निगाह मुर्दे की तरह ऊपर टँगी है, हिलने डुलने की शक्ति मानो समाप्त हो गयी हो। शोभा दीवार से टिककर निढाल पड़ी है। मैनेजर गोपाल घोष उस खम्भे से सटकर बैठा है, जिससे सट कर बैठे हुए उसने कई रातें गुजारी है। उसकी ठुड्डी बीच-बीच मे काँप रही है। कुछ लड़के दीवार से पीठ टिकाकर खड़े हैं, तनकर जैसे सीधे खड़े नही हो पा रहे हैं। बड़े कमरे में योगा बाबू झुककर बैठा है। सामने आईना-कंघी पड़े हुए हैं—सवेरे कंघी किये गये बालों को मुट्ठी में थामे बंसी बैठा हुआ है। युवक गायक दिवाकर पूजा के आसन पर पीढ़े जैसा निश्चल होकर गोद में हाथ पर हाथ रखे बैठा है—सिर से गरदन तक का हिस्सा झुका हुआ है। बेहला-वादक अफीमखोर भूदेव अफीम का डिब्बा पकडे हुए है, जैसे खा नही पा रहा हो। तबला-ढोल-वादक गुंई के हाथ मे ढोल के कपड़े के खोल की गिरह है; खोलना चाह रहा है परन्तु हाथ काम नही कर रहा है। फ्लुट वादक नगेन दाँत मे तिनका लगाये है लेकिन दाँत खोदने का काम नही हो रहा है। रीतू बाबू अपने कमरे मे शराब का गिलास मेज पर रखे बैठा है, लेकिन पी नही पा रहा है। बाबुल बोस हाथ की तलहथियो मे माथा रखे लेटा हुआ है, उसकी निगाह ठहरी हुई है। मणि घोष कान मे रेशेदार वस्तु डालकर, चुपचाप बैठा है। हिसाबी नाटू अपने सूटकेस पर—जिसमे वह सिगरेट रखता है—कुहनी टिकाये, दोनों हाथो की दो नसो को दबाये बैठा है।

बीच मे बड़े कमरे मे पहले-पहल चुप्पी टूटी। योगा बाबू एक तरह से कराह उठा - विरक्ति और यन्त्रणा से धीमे स्वर मे बोल उठा, 'उफ् ! उफ् !'

योगा बाबू गाँजा पीता है। चूंकि दूध नही मिलता है इसलिए मिठाई खाता है। उस मीठे की गंध से कई च्यूंटे चक्कर काट रहे थे, उन्ही मे से एक ने उसके पैर की उंगली में काट लिया। च्यूंटे के सिर को पकड़ कर उसने हटाया और कहा, 'च्यूंटा है। खून निकाल दिया।' गुंई कुछ नही बोला, दूसरे-दूसरे लोग भी नही बोले। गुंई ने सिर्फ कई बार ऊपर की ओर देखा। कोई चीज कुछ देर से भुरभुरा कर गिर रही थी लेकिन उस ओर अब तक किसी का ध्यान नही था। योगा बाबू की बात पर उस ओर ध्यान खिंच गया। इस ओर से फ्लुट वादक चरणदास बोला, 'घुन है। चावल से घुन गिर रहा है। बालों पर ढेर सारा गिर पड़ा है। झाड़ लो।'

गुंई ने हाथ से सिर झाड़कर कहा, 'बड़ी ही बुरी बात है।'

बंसी ने अचानक सिर के बालों पर से मुट्ठी हटा ली और उसांस लेते हुए कहा, 'हे गोविन्द !'

अफीमखोर भूदेव अपने अफीम के डिब्बे को फर्श पर पटकते हुए आक्रोश भरे स्वर में बोला, 'अपने गोविन्द को रखो। गोविन्द या खाक ! गोविन्द रहे तो ऐसा कहीं होता है ?'

किसी ने प्रतिवाद नहीं किया। भूदेव कहने लगा, 'उसकी माँ तुलसी के कीर्तन दल में बेहला बजा चुका हूँ। तभी से मैं देखता आ रहा हूँ। गोविन्द का नाम अनेकों ने लिया था। उसका फल यही है। गोविन्द !'

इस पर भी कोई कुछ नहीं बोला। आध मिनट के दरमियान दुबारा वही सन्नाटा रेंगने लगा। आध मिनट के बाद योगा बाबू चिल्ला उठा, 'च-ण्डा-ल ! च-ण्डा-ल !'

उस चिल्लाहट से पूरा डेरा चकित हो उठा।

बगल के कमरे में बाबुल उठकर बैठ गया। वह जैसे उस बात की प्रतिध्वनि को पकड़ते हुए बोला, 'ऐ ब्रूट, ऐ क्रिमिनल ! कुछ सेकण्डों तक चुप रहा, उसके बाद बोला, 'पत्थर है, पत्थर ! बर्बर ! पिशाच है पिशाच !'

रीतू बाबू के होठों का दाहिना हिस्सा एक क्षीण परन्तु विचित्र हँसी से जरा तिरछा हो गया। हाथ बढ़ाकर उसने गिलास थाम लिया। उसके बाद बोला, 'हाय रे जीवन ! सब कुछ झूठा सपना है ? कुछ भी सत्य नहीं ?'

नाडू बोला, 'चाय-वाय नहीं चलेगी ? आज चाय नहीं मिलेगी ?'

रीतू बाबू ने उत्तर दिया, 'हाँ। बात तो सही है। चाय तो नहीं मिली है। नाडू आकर देखो भाई। देखो। मजाक नहीं कर रहा हूँ। चाय और अन्न मिथ्या हो जाये तो काम नहीं चलेगा। देखो, गोपाल कहाँ है। लगता है वह भला आदमी टूट गया है।'

'यात्रा दल के मैनेजर गोपाल घोष ने नाटकीय मुद्रा में ही एक क्षण के अन्दर प्रवेश किया। बोला, 'जी नहीं। उठकर खड़ा हो गया हूँ। उठना पड़ा है। आपके पास पैदल ही आ रहा हूँ। विदाई के मामले में नायक पक्ष गड़बड़ कर रहा है।'

'गड़बड़ ? किस चीज की गड़बड़ ? बयाना किया है, बयाने के अनुसार रुपया देंगे। गड़बड़ की बात कहाँ पैदा होती है ?'

'कह रहे हैं—वहीं तो बाहर खड़े हैं। पुकारूँ ?'

'ठहरिये। बिल्कुल बुझ-सा गया हूँ।' गिलास उठाकर हलक के नीचे उतारा और सिगरेट सुलगा कर रीतू बाबू बोला, 'पुकारने का काम ही क्या है ? मन मुँझलाया हुआ है। क्या से क्या कह बैठूँगा। बताइये, कि क्या कहना चाहते हैं ?'

'कह रहे हैं कल का प्ले खराब हुआ है। नम्बर दो, उन लोगों ने सुखान्त नाटक की माँग की थी, वह नहीं हुआ। यही सब फालतू बातें, और क्या ?'

'हूँ, बयाने में लिखा हुआ है कि एक दिन सुखान्त करना होगा ?'

'नहीं। तब हाँ, जबानी कहा था। एक दिन सुपान्त हो तो अच्छा रहे। मैंने कहा —आप लोगों ने ही दबाव डालकर पहले दिन प्रवीर-पतन कराया। उसी से हम लोगों का सब कुछ अपसेट हो गया।'

'हाँ, प्रवीर-पतन हुआ जरूर। उस कोलियारी मे अगर मोहिनी माया यात्रा न हुई होती तो—'

बाबुल बोल उठा, 'आपने ठीक कहा। नागिनी को सुयोग मिल गया। नागिन के मुँह मे जहर रहता है, मगर डँसने का सुयोग नही मिलता है तो कुछ नही कर पाती है। असली चीज यही है।'

'हाँ'

पुनः पूरे कमरे मे सन्नाटा फैल गया। लेकिन गोपाल चुप्पी साधे रहे तो कैसे काम चल सकता है। वह बोला, 'फिर क्या कहूँ ?'

'क्या कहोगे ? जाकर ले लो। कितना कम देना चाहता है ?'

'आखिरी दिन का पचास रुपया काट लेना चाहता है।'

'लें। लेने दो।'

'और कह रहा है कि उस बेला के तीन बज तक बैरेक खाली हो जाना चाहिए।'

'आह !' यह शब्द जैसे अपने आप रीतू बाबू के मुँह से निकल पड़ा। एक निर्मम यथार्थ जो ढँका हुआ था—जो याद नही था, वही अनावृत होकर प्रत्यक्ष-रूप मे आँखों के सामने जैसे खड़ा हो गया।

बाबुल गुस्से भरे स्वर मे बोला, 'चले जायेंगे साहब ! कह दीजिये। उसके लिये नोटिस क्यों ? यही नही, हम लोग इसी बेला चल चलें। मैं सबसे कह रहा हूँ—'

'ठहरो।'

'क्यों ?'

'प्रोप्राइट्रेस के बारे में सोचकर देख लो।'

'येस।'

'चलो, बाहर चलें।'

बाहर तब बरामदे और कमरो मे कोलाहल छा गया था। चुप्पी का जैसे दूसरा पहलू सामने आ गया है। भद्दी गाली-गलौज से हर जबान धारदार हो गयी है।

कुछ छोटे लड़को की बाते कानों मे आयी। वे अलका और गोरा बाबू के सम्बन्ध मे अश्लील बाते कर रहे हैं। बाबुल बोला, 'सीताराम !' उसके बाद झुंझलाकर कहा, 'ऐ।'

रीतू बाबू ने उसका हाथ दबाकर इशारा करते हुए कहा, 'जाने दो भाई। बरदाश्त नही हो रहा है तो कान मे रुई ठूँस लो। वे पतित हैं। यात्रा दल मे आज

भी सभ्यता और शालीनता नहीं आयी है। कण्ठजी जैसे साधक व्यक्ति के दल में भी नहीं आयी थी। और कह ही चुका हूँ कि यह एक छोटी दुनिया का संस्करण है। जितना प्रकाश है उतना ही अँधेरा।'

'झूठी बात है। प्रकाश कहाँ है ? मंजरी ऑपेरा में ?'

'अगर कहूँ स्वयं मंजरी है तो ?'

बाबुल चेहरे की ओर ताकता रहा। न तो प्रतिवाद किया और न ही हामी भरी। इतना ही कहा, 'मगर जाइएगा कहाँ ?'

'शोभा को अपने साथ लेकर प्रोप्राइट्रेस के पास जाऊँगा।'

'क्यों ? उन्हें अभी तंग क्यों कीजिएगा ?'

'मंजरी ऑपेरा के लिए। सामने बयाना है। लेकिन मंजरी ऑपेरा रहेगा या नहीं, यह कौन बतायेगा ?'

'हाँ, बात ऐसी है कि मेरा आश्रय खो रहा है। मैंने लोगों को हँसाया है, अब लोग मुझे देखकर हँसेंगे। बेवकूफ बन गया हूँ।'

रीतू बाबू बोला, 'इतने-इतने लोग हैं भाई। यात्रादल का पूरा सीजन सामने है। मौसम की यही तो शुरुआत है। यहीं से दल उठकर घर जायेगा तो क्या करेगा ? दूसरी बात है, दल का विघटन हो जायेगा, यह बात कलेजे को छील जाती है। सीजन के अन्त में विघटन हो जाये तो दूसरी बात है। बाहर निकल कर रास्ते के बीच एकाध महीने में टूट जाये तो कैसा खराब लगता है! शोभा—'

वे लोग महिलाओं के कमरे के सामने पहुँच चुके थे। रीतू बाबू ने दरवाजे पर से पुकारा, 'शोभा—'

'अयँ।'

'बाहर आओ।'

'शोभा बाहर आयी, 'क्या ?'

'एक बार वहाँ उनके पास चलो। प्रोप्राइट्रेस के पास।'

'इस समय! न जाना ही अच्छा रहेगा।'

'यात्रादल के भले बुरे की बात है। तुम्हारी देह में दर्द हो रहा है, पार्ट करने के लिए उतरने पर ही-ही कर हँसाना पड़ता है। यात्रादल का क्या होगा, यह बात आज ही उनसे पूछनी है। सामने बयाना है।'

शोभा ने लम्बी साँस लेकर कहा, 'हाँ। यह बात याद नहीं थी।' रास्ते में चलते-चलते बोली, 'सम्भवतः दल को नहीं रखेंगी। रखने का कारण नहीं है। रीतू बाबू के लिए ही दल था।'

'चलो, देखें क्या कहती हैं।'

—शिवनन्दन बाहर चुपचाप बैठा था। चुप्पी की छूत उसे भी लग गयी है।

शोभा ने उससे धीमे से पूछा, 'मंजरी क्या रो रही है ?'

शिवनन्दन ने सीधी बात कही, 'जाइए अन्दर जाकर देख आइये।'

'चाय पी है ?'

'हाँ, मैंने बना दी थी। सामने रख दी।'

यानी सामने रख दी है, मगर पी है या नहीं, उसे मालूम नहीं। वह बाहर बैठा-बैठा सोच रहा है कि वह कलकत्ता जाकर गोरा बाबू को देख लेगा। शिवनन्दन बचपन में गुण्डा था। पितृमातृहीन शिवनन्दन छूरा खाकर राधारानी कीर्तन वाली के घर में घुस गया था। राधारानी ने उसे बचाया था, इलाज कराया था, अपने हाथों से सेवा की थी। उसके बाद वह उसी के पास रह गया था। पहले नौकर की हैसियत से, उसके बाद माँ-बेटे की हैसियत से। राधारानी ने रुपया देकर देस में उसका घर बनवा दिया था, शादी करा दी थी। राधारानी के बाद शिवनन्दन तुलसी के पास था। आज भी वह मंजरी को छोड़कर नहीं गया है। साल के आखिर में एक बार देस जाता है। कहकर जाता है कि दो महीने के लिए जा रहा है लेकिन डेढ़ महीना बीतते न बीतते लौटकर चला आता है। वह गोरा बाबू को भी बड़े स्नेह की दृष्टि से देखता था। एक जिद्दी-हठी लड़के के रूप में देखता था। उसके लिए मंजरी को दोषी ठहराता था। वह इतना प्रश्रय क्यों देती है ? आज वह गुस्से से पागल हो गया है। बचपन की गुण्डागर्दी का ज्वालामुखी आज जैसे धुआँ रहा है।

दरवाजे के पास खँखार कर शोभा ने गला साफ किया उसके बाद बोली,—मंजरी को पुकारा नहीं, बोली, 'मैं शोभा हूँ।'

'आओ।' शब्द को इस प्रकार खींचा जैसे स्वागत के बदले सुस्वागत किया हो।

'आयी।' शोभा अन्दर जाकर सामने खड़ी हो गयी।

'बैठो।' मंजरी ने सिर उठाकर उदास हँसी हँसते हुए बैठने को कहा।

दाहिने हाथ में थमी ठुड्डी को शोभा ने अपने हाथ मे थाम लिया— वह मंजरी का चेहरा देख रही है। मंजरी कितना रो चुकी है। मंजरी की आँख और मुँह लाल है, आँखो के नीचे का हिस्सा थोड़ा सूज गया है। मंजरी ने हँसकर कहा, 'बैठो-बैठो। यह दौर बहुत देर तक चलता रहा है। उसके बाद पोछ भी लिए है। हम लोगो की किस्मत मे यही है।'

शोभा बोली, 'छोकरी के भाग्य मे बहुत दुःख है।'

मंजरी ने बाधा देते हुए कहा, 'वह बात रहने दो। जिसका जो होना है, हो। तमाल के नीचे धूल मे बिछावन बिछाने का समय नहीं है। शाप का भी कोई अन्त नहीं होता। मेरे सिर पर आसमान टूटकर गिर पड़ा है। बाँकुड़ा का चार दिनो का बयाना है। उसके बाद रास में कान्दी का। क्या करूँ, बताओ तो। गोपाल मामा,

रीतू मास्टर साहब वगैरह को बुलाने का साहस नही हो रहा है। इतनी शर्म महसूस हो रही है शोभा दी।'

'इसमें शर्म की कोई बात नही है मंजरी। अपनी ओर से तुमने वही किया है जो एक गृहस्थ घर की पुण्यवान सती स्त्री करती है। महिला यात्रादल में चक्कर काटते-काटते जिन्दगी बीतने को है बहन, मैंने देखा है कि महिला-यात्रादल की जो मालकिन होती है वही एक मर्द को भगाकर दूसरे मर्द को ले आती है और उसे मालिक बनाती है। वैसी औरतों को इस तरह मर्दों का लात-जूता सहना नही पड़ता है। तुमने मुँह बन्द करके बरदाश्त कर लिया। हम लोग इसके गवाह हैं। भगवान के खाते मे लिख गया होगा।'

'अब लिख जाने से!' आँसू की दो बड़ी-बड़ी बूँदे अचानक बाहर निकल आयी। जरा चुप रह कर आँचल से आँसू पोंछती हुई मंजरी बोली, 'बैठो, तुम अब भी खड़ी हो। एक बार उन लोगों को यानी मास्टर साहब, बाबुल बाबू और गोपाल मामा को बुलाना होगा। तुम बैठो। शिवनन्दन से कहती हूँ कि उन लोगों को—'

'वे लोग आकर बाहर खड़े हैं। मै दूत के रूप में अन्दर आयी हूँ।'

'छि:-छि: शोभादी, यह बात पहले बतानी चाहिये थी।' इसके बाद अपने स्वर को धीमा बनाकर बोली, 'कैसी हो तुम? उन लोगों के कानो में यह सब बात गयी। छि: छि: छि:!'

उसकी भौहें सिकुड़ गयी। एक लम्बी साँस ले, सिर का घूँघट खीच उसने सहज स्वर मे पुकारा, 'आइये गोपाल मामा, अन्दर चले आइये। मास्टर साहब, बाबुल बाबू, आइये। शोभादी ऐसी है कि कहना ही भूल गयी।'

अन्दर आकर गोपाल मामा बोला, 'स्वयं ही आवाज देकर घुस जाता था। आज दरवाजा खुला था फिर भी अन्दर आने का साहस नही हो रहा था।'

बाबुल बोस बोला, 'अपराध मेरा है। मुझमें शर्म नही थी। लेकिन आज शर्म से मरा जा रहा हूँ। मैं माफी माँगने आया हूँ।'

'नही-नही। यह सब कहकर मेरा अपराध क्यों बढ़ा रहे हैं। आप तो दल की भलाई के लिए उसे ले आये थे!'

'नही दीदी—आज से आपको दीदी कहा करूँगा, बिगड़िएगा तो नही?'

'देखिये भाई साहब, यह मेरे लिए परम सौभाग्य की बात होगी। बिगड़ूँगी क्यों?'

'बस-बस। भाई कहकर सम्बोधित किया है, अपना सौभाग्य माना है। लाइये, अपने चरणों की धूल दीजिये।'

'नहीं। यह बात मत कहिये।'

'मैं ब्राह्मण नही, कायस्थ हूँ दीदी। नही, मैं वह भी नही हूँ। मैं आर्टिस्ट हूँ। आप भी आर्टिस्ट हैं—ऊँचे दर्जे की आर्टिस्ट दीदी।'

तनिक झिझककर कर और भयार्त की तरह जरा सरककर मंजरी बोली, 'नही। बाबुल बाबू—भाई—नही।'

रीतू बाबू ने बाबुल का हाथ पकड़कर खींच लिया। खींचने में ताकत के बजाय इशारे की प्रधानता थी। बाबुल ने उसकी ओर जैसे ही मुँह घुमाया, रीतू बाबू बोला, 'उनकी बात सुनो। इसमें जोर-जबर्दस्ती नही करनी चाहिये।'

उनकी आवाज, उनकी दृष्टि और भंगिमा में ऐसा कुछ था कि बाबुल ने हथियार डाल दिया। बोला, 'फिर रहने दें। लेकिन मन ही मन प्रणाम कर रहा हूँ। इसके पहले आज सबेरे ही बार-बार कर चुका हूँ। दुबारा करूँगा।'

'वह प्रणाम उन्हें बहुतों का प्राप्त हो चुका है, सब का मिल चुका है।'

'यह सब आप क्यों कह रहे हैं मास्टर साहब। क्यों मेरे भविष्य का दुःख बढ़ा रहे हैं। छिः, मैं मामूली औरत हूँ, पतित के घर मे मेरा जन्म हुआ है--'

'मगर आप पतित नहीं हैं।'

'पतित न होती तो ऐसा होता मास्टर साहब ?'

रीतू बाबू बोला, 'नहीं। आप चूँकि पतित नहीं हैं, इसीलिए आपको दुःख मिला। पतित होती तो दुःख उसे मिलता।'

अब आँखो के आँसुओं ने रुकने का नाम नही लिया। आँखो से बाहर निकल आये। नीरव कुण्ठाहीन मंजरी खड़ी रही, छिपाने की उसने कोशिश नहीं की।

सब लोग खामोश रहे। बातें नही कर सके। लगभग दो मिनट बाद मंजरी ने स्वय को संयत किया, आँखो के आँसू पोंछ लिए और आगे बढ़कर रीतू बाबू के चरणों को छूकर प्रणाम किया। रीतू बाबू ने कहा, 'मंगल हो। और होगा। आप मे बहुत गुण हैं।'

मजरी ने उठकर माथे के घूँघट को संभवतः अभ्यासवश ही नीचे खींच लिया और मुसकरा कर बोली, 'बैठिये। खड़े रहने से काम नही चलेगा। बहुत बातें करनी हैं। शिवनन्दन, चाय तैयार करो भैया।'

'रहने दीजिये। चाय क्यों ?'

बाबुल बोला, 'नही। चाय बनेगी। सब लोग जरा सहज हो लें। सबेरे से गला सूखकर मरुभूमि हो गया है, जैसे किसी ने दबोच लिया हो। चाय पीकर चोक्ड पाइप क्लियर होने दीजिये। चाय बनाओ शिवनन्दन। दीदी, आप अपनी बात बताइये। उसके बाद हम लोग कहेंगे।'

मजरी रुक-रुक कर कहने लगी। शायद स्वयं को सँभालकर कहने लगी, 'दल की बात है। मतलब है कि जो वारदात हो चुकी वह तो देख ही चुके। सामने बयाना है। बाँकुड़ा और कान्दी का। इस दल को लेकर क्या—? पुरानी जगह है, वहाँ उनका नाम है। वहाँ कौन क्या कहेगा ? इस समय बयाने का उत्तर ही कैसे दिया जाये ?'

गोपाल बोला, 'सो कहा जा सकता है कि अचानक बीमार पड़ जाने से कलकत्ता चले गये हैं।'

रीतू बाबू बोला, 'ठहरिये गोपाल बाबू। इसके पहले यह तय कीजिये कि दल रखिएगा या नहीं। मंजरी ऑपेरा को रखिएगा या तोड़ दीजिएगा?'

मंजरी कुछ देर तक मौन रही। उसके बाद बोली—जैसे सवाल किया हो, 'दल तोड़ देने से मैं क्या करूँगी? क्या लेकर रहूँगी? मेरी जिन्दगी किस चीज को लेकर बीतेगी?'

शिवनन्दन चाय ले आया। चाय की प्याली रीतू बाबू के हाथ में थमाकर बोला, 'अपना मकान है, किराया मिल रहा है, फिर कैसे गुजारा करने का सवाल कहाँ पैदा होता है? यह झमेला—'

उसकी बात को गौण बनाते हुए मंजरी बोली, 'दल मैं रखूँगी मास्टर साहब! दल रखना चाहती हूँ। तब हाँ, अगर आप लोगों का सहारा मिले तभी ऐसा हो सकता है।'

बाबुल बोला, 'मैंने दीदी कहा है। आपने भाई कहा है। मेरा कान्ट्रैक्ट परमेनेन्ट रहा। मास्टर साहब, आप कहिये।'

रीतू बाबू बोला, 'ठीक है। मुझे नये सिरे से कुछ कहना नहीं है। मैं रहूँगा। मुझे हटाया नहीं जायेगा तो मंजरी ऑपेरा जितने दिनों तक रहेगा तब तक मैं रहूँगा।'

अब मंजरी बोली, 'आदमी तो लाना होगा। इससे काम नहीं चलेगा।'

'हाँ, हो जायेगा। न लाने से नायक पक्ष झमेला खड़ा करेगा।'

'तो फिर गोपाल मामा आप कलकत्ता चले जाइये। किसे लाइयेगा, बताइये।'

रीतू बाबू बोला, 'नहीं। मैं जाऊँगा। हीरो और कुमारी हीरोइन लाना है।'

'एक और अच्छी ऐक्ट्रेस मिल जाये तो लेते आइये। मुझे जरा—'

'छुट्टी?'

'हाँ।'

'नहीं। तो फिर दल भंग कर दीजिये।' रीतू बाबू जरा रुककर फिर बोला, 'भंग नहीं करना पड़ेगा। अपने आप भङ्ग हो जायेगा। तो फिर मैं नहीं रहूँगा।'

'ठीक है।' मंजरी ने लंबी साँस लेकर कहा, मैं रहूँगी। छुट्टी नहीं लूँगी। मंजरी ऑपेरा टूट जायेगा तो मुझसे बरदाश्त नहीं होगा।'

उसके चेहरे पर दीप्ति उभर आयी।

रीतू बाबू तीसरे दिन वापस आया। दल आसनसोल में बैठा हुआ था। रीतू बाबू के साथ शेफाली आयी है। वह थियेटर की नर्तकी-गायिका है, पार्ट करने में भी कुशल है और जो ऐक्टर आया है, वह है थियेटर का ही ऐक्टर रणेन लाहिड़ी। पोस्टर में नाम रहता है राणा लाहिड़ी। वे पोस्टर छपवाकर ले आये हैं—

मंजरी ऑपेरा मंजरी ऑपेरा
मणि-कांचन संयोग
नयी दीप्ति !
रंगमंच की नवीन नायिका सुन्दरी शेफाली।
तरुण नायक विख्यात अभिनेता राणा लाहिड़ी
उनके साथ
यात्रा-जगत की तारिका सुन्दरी मंजरी देवी
रीतू बाबू, बाबुन बोस, नाटू बाबू,
गोपाली बाला, आशा और बंसी मास्टर।

गोपाल घोष की मैनेजरी बुद्धि की कोई तुलना नहीं हो सकती। दो अप और दो डाउन ट्रेनों में पोस्टर चिपकाने का उसने इन्तजाम कर लिया। पोस्टर की बात आसनसोल से कलकत्ता पहुँच गयी। दूसरी ओर आसनसोल से मुगलसराय तक। मंजरी ऑपेरा के मणि-कांचन के संयोग की दीप्ति।

चौदह

समय-स्रोत में बह कर हम दोनों भाई मिले हैं आकर
पुनः बह चल रहा किस देश को, पुनः होऊँगा किसका भाई—

योगा बाबू में उतनी ताकत नहीं है। गुनगुनाता है या फिर मैदान में जाकर गाता है।

आसनसोल में मंजरी ऑपेरा के डेरे के बरामदे पर लगभग आधी रात में योगाबाबू गीत गा रहा था। बगल में नया ऐक्टर राणा लाहिड़ी बैठा हुआ था। योगा बाबू को यह युवक अच्छा लगा है। आश्चर्यजनक लड़का है। हाँ, लड़का ही कहा जायेगा। उम्र है ही कितनी ? लगभग बत्तीस साल। खासा अच्छा सबल स्वस्थ जवान है, रोज सवेरे जगकर व्यायाम करता है। देखने में सुन्दर है। गोरा बाबू की तरह नहीं—गोरा बाबू गोरा बाबू ही था। चेहरे से गोराय, मिजाज से गोरा पल्टन। कितने लंबे थे ! यह युवक लंबाई में चारेक इंच छोटा होगा। शराब नहीं

पीता है। पीना तो दूर की बात, छूता तक नहीं। सिगरेट नही पीता है। लिखना-पढ़ना भी जानता है, बी० ए० तक पढ़ा है। नौकरी-चाकरी न मिलने के कारण बाबुल की तरह एमेच्योर में पार्ट करता था। उसके बाद कुछ दिनों तक बगैर वेतन के थियेटर में काम करता रहा। दो-तीन पार्ट में नाम कमाने के कारण चालीस रुपया वेतन भी मिलने लगा था। कुछ महीने पहले उसे एक नये नाटक में हीरो के मित्र का पार्ट दिया गया था। रिहर्सल में भी भाग ले रहा था और सब लोग अच्छा कहकर तारीफ कर रहे थे। लेकिन अचानक एक अर्द्धतरुण, अपेक्षाकृत नामी ऐक्टर थियेटर मे आ गया। अधिकारी पक्ष से उसकी जान-पहचान थी, थोड़ी-बहुत घनिष्ठता भी। इसलिए राणा लाहिड़ी से पार्ट लेकर उस व्यक्ति को दे दिया गया। बदले मे राणा को एक छोटा-सा पार्ट दिया गया। राणा ने तत्क्षण कहा, 'मैं चल रहा हूँ' और वह चला आया। न तो कॉन्ट्रैक्ट था और न ही अधिकारी पक्ष जरूरत-मन्द था, इसलिए कोई झंझट झमेला नही हुआ। बीच-बीच में टूरिस्ट थियेटर दल बाहर निकलता था। कुछेक बेकार पुराने जमाने के ऐक्टर-ऐक्ट्रेसों ने मिलकर एक दल कायम किया था और वे चक्कर काटा करते थे। उसी के साथ वह चक्कर काट रहा था। बाबुल से जान-पहचान थी। बाबुल ने ही रीतू बाबू को राणा के बारे मे बताया था। रीतू बाबू ने उसे ज्यों ही पकड़ा वह राजी हो गया। शर्त यही है कि गोरा बाबू का पार्ट उसे दिया जायेगा और तनख्वाह रहेगी एक सौ पचहत्तर रुपये।

राणा जरा गंभीर आदमी है। साथ में कुछ कापी-किताब ले आया है। रीतू बाबू, बाबुल, मणि, नाटू वगैरह शराब पीते हैं और वह बैठा रहता है। हँसता है, गपशप करता है मगर शराब नही पीता है। उसका प्राप्य दो पैकेट सिगरेट है, लेकिन वह एक पैकेट लेता है और दूसरा पैकेट नही लेता है। जिस पैकेट को लेता है उसकी दसों सिगरेटों को वह रीतू बाबू, बाबुल—और बीच-बीच में वंशी को—दे देता है। नाटू को इससे विरक्ति का अहसास हुआ है। कम से कम रोज उसकी एक पैकेट सिगरेट की बिक्री कम हो गयी है।

और आयी है शेफाली। अलका के स्थान पर कुमारी हीरोइन। वह नर्तकी-गायिका है। आकार लंबा, सुन्दरता भी है उसमें। तब हाँ, अलका के मुँह और नाक मे गड्ढा था और नाक कुछ छोटी होने के कारण उसमें जो एक चटुल चटक थी—वह इसमे नहीं है। पार्ट वह अच्छा करती है। उम्र कुछ ज्यादा है। मंजरी की उम्र तीस-बत्तीस है, वह उससे भी ज्यादा उम्र की है। बचपन से ही थियेटर में थी। अभी बेकार है। अचानक थियेटर में भले आदमी की लड़कियों के द्वारा पार्ट करने का रिवाज चालू हो जाने से उन लोगों की कद्र कम हो गयी है। पोस्टर-विज्ञापन में नाम के साथ उपाधि रहती है—मित्र-घोष-पाल, चटर्जी-मुखर्जी। एक मात्र तारा थियेटर में इन्द्रसेन नामक ऐतिहासिक नाटक किया गया था और वह इन भले घर की लड़कियों की अपेक्षा उन लोगों के समाज की लड़कियों को अधिक पसन्द करता

था। वही उसने कुछ मास पूर्व तक काम किया था। लेकिन नुकसान उठाने के कारण तारा थियेटर के मालिक ने सब कुछ में आमूल परिवर्तन लाकर आधुनिक युग का थियेटर चालू कर दिया। शेफाली कुछ चपला और तरला है। लोग आँखो की ओट मे उसे मुन्नी कहते हैं। रीतू बाबू उसे ले आया है। थियेटर दल से हटायी गयी और दो लड़कियाँ आयी हैं। वे सखी के दल में नाचेंगी। रीतू बाबू ने हिसाब लगाकर देख लिया है। दोनों लड़कियाँ दुबली-पतली हैं। सजाने-सँवारने से कमसिन के तौर पर उनका इस्तेमाल किया जा सकता है।

शेफाली स्वभाव की अच्छी है। तब हाँ, रुचि-अरुचि की दृष्टि से उसका चाल-चलन जरा ऊँचे दर्जे का है और उस मामले में उसकी जीभ बड़ी हल्की और धारदार है। अभिनेत्री की दृष्टि से वह गुणवती है। सबसे बड़ा गुण यही है कि उसे जिस चीज का तालीम दी जाती है, उससे बाहर न जाकर वह ठीक वैसा ही करती है। तब हाँ, उसे आजादी दी जाये तो वह अपने ढर्रे से भी एक नयापन ला सकती है। दोष मे दोष यही है कि वह मर्दों की आखेटक है। उस आखेट से वह दो दिन खिलवाड़ करती है। तीसरे दिन निस्पृह हो जाती है। रीतू बाबू यात्रादल का मँजा हुआ दक्ष व्यक्ति है। कहा जा सकता है कि वह निरासक्त है और इस ओर उसके हृदय मे मोह नही है और न ही उससे अलग-थलग भी है—शिकार खेलने का उसमे नशा भी है। इस मामले मे डर है तो नाटू और बंसी से। मणि से भी। नाटू या बंसी सिद्ध पुरुष है। ज्यादा भय की बात नहीं है। भय है तो मणि के कारण। बुँची उससे जुड़ने-जुड़ने पर है। अलगाव होने को होगा तो वही होगा।

शोभा ने कहा था, 'तुम बँधने जा रही हो क्या ?'

रीतू ने कहा था, 'बँधना क्या सहज बात है शोभा दी ? मेरे भाग्य में अलगाव ही बदा है। इतने दिनों तक देख चुकी हो।'

'हाँ, तुम एक जानवर ही हो। लेकिन आशा, शेफाली, बुँची इनमें से किसी को बिना हटाये काम नही चल रहा है ?'

'डरो मत। नाटू और बंसी इस मामले मे कठिन जीव हैं। बुँची को जहाँ तक जानता हूँ, मणि से अगर बँधेगी भी तो दो दिन मे बन्धन तोड़ देगी।'

'हूँ। तुम्हारी जानकारी खासी अच्छी है। तुम्हारे द्वारा कुछ दिनों तक उस घर मे अभिसार मनाने की बात मुझे मालूम है।'

'सुनाम-दुर्नाम, स्तुति-निन्दा मेरे लिये एक जैसी चीज है देवी।'

'हाँ, तुम महादेव हो।'

'जरूर। जरूरत पड़ने पर मदन को भस्मीभूत कर देता हूँ। दूसरी ओर नारद को गिरिराज के घर उमा के लिए भेजता हूँ। फिर मोहिनी के रूप पर मुग्ध होकर उसके पीछे-पीछे त्रिभुवन की परिक्रमा करता हूँ।'

'वही देखने दोनो आँखें फैलाये ताक रही हूँ।'

'रहो।'

शोभा को जिस बात का सन्देह या भय था वह नहीं हुआ। सत्य दूसरी ओर ही कदम बढ़ा रहा है। शेफाली की नजर राणा लाहिड़ी पर गड़ी है—लोगों का यही अनुमान है। किसी-किसी का कहना है, बाबुल इतने दिनों तक शेफाली को देखते-देखते उस पर मुग्ध हो गया है। रीतू बाबू कुछ नहीं बोलता है। वह दर्शक है, देखता जाता है।

बहरहाल मंजरी ऑपेरा ठीक ही चल रहा है। गोरा और अलका के चले जाने से थोड़ी-बहुत क्षति हुई थी। काली पूजा के बाद जगद्धात्री पूजा में बाँकुड़ा जिले के भारा गाँव का बयाना था। वह बड़े-बड़े लोगों का गाँव है। वहाँ कोलियारी का बहुत बड़ा प्रोप्राइटर रहता है। इस घटना के बाद वहाँ पहले-पहल अभिनय होने जा रहा है। बयाना पहले ही हो चुका है। उस घटना के घटित होने के बाद बात फैलने में देर नहीं लगी। रानीगंज पार करने के बाद दामोदर नदी पार करना पड़ता है, उसके कई मील बाद ही भारा गाँव है। रानीगज यहाँ से तीस मील है। उन लोगों का आदमी भी आया था। मजरी ने स्वयं उस आदमी से मुलाकात की थी और कहा था, 'बढ़िया अभिनय न होगा तो हम एक भी पैसा न लेंगे। अच्छा लगे तो दे दीजिएगा। सिर्फ अभिनय करने दीजिये।' अपने हाथ से मालिक के पास चिट्ठी लिखकर भेजी थी। कोई खास असुविधा नहीं हुई थी। प्रवीर-पतन का ही मंचन किया गया था। प्रवीर का पार्ट राणा लाहिड़ी ने किया था। सती तुलसी में शखचूड़ का पार्ट रीतू बाबू ने किया था। मोहिनी माया और जना का पार्ट मंजरी ने किया था। गन्धर्व कन्या को छोड़ दिया गया था। अभिनय अच्छा ही हुआ था। तब हाँ, राणा लाहिड़ी मंजरी के सामने मलिन जैसा हो गया था। शंखचूड़ में रीतू बाबू ठीक तौर से फब नहीं रहा था।

उन दोनों पार्टों को एक साथ करते देखकर राणा लाहिड़ी एक तरह से विह्वल हो गया था। अभिनय के दौरान ही रीतू बाबू ने कहा था, 'जरा नर्वस हो रहे हो ब्रदर ?'

'जरा-जरा। यानी—'

'यानी इस तरह की कल्पना नहीं की थी।'

'जी हाँ। यह एक असाधारण ऐक्ट्रेस है। यह स्टेज पर क्यों नहीं उतरती है ?'

'गोरा बाबू की वजह से नहीं उतरी थी। और—'

नीरव राणा लाहिड़ी 'और क्या' सुनने के लिए रीतू बाबू के चेहरे की ओर देखता हुआ खड़ा था। रीतू बाबू ने कहा था, 'देखो, प्रोप्राइट्रेस, दोनों में एक साथ मेन ऐक्ट्रेस हैं। तुम लोगों के समय के भाष्य के अनुसार इसे साम्राज्यवाद और सामन्तवाद एक साथ कहा जायेगा। एक ही साथ सम्राज्ञी एवं प्रधान सेनापति या पत्नी या थियेटर-ऐक्ट्रेस यूनियन की प्रेसिडण्ट। इनमें से चाहे जो कह लो। नौकरों की ओर ध्यान नहीं है।'

'सो आपने ठीक कहा है ।'

'जरा नर्व को मजबूत बनाओ। मोहिनी माया देखकर भड़क मत जाना। अबकी जना में वह ज्वालामुखी हो जायेगी। ज्वालामुखी के वक्ष में गोरा बाबू शूल चुभा गया है। आज सावधान रहना।'

'देखूं।'

'एक बात कहूं ?'

'कहिये।'

'जरा स्टिमुलेन्ट कर ला।'

'नही।'

'क्यो ?'

'वह चीज नही पियूंगा। प्रतिज्ञा करके इस राज्य में प्रवेश किया है।'

'क्या कह रहे हो ? किसके सामने प्रतिज्ञा की है। शादी—'

'नही, नही की है।'

'फिर ? मां के सामने ?'

'उहुं, स्वय के सामने ?'

'शाबाश ! और कोई प्रतिज्ञा है ? यानी प्रेम ?'

'वह भी है।'

'अच्छी बात है। तुम उनके सामने खड़े हो जाओगे। जाओ, मजलिस मे प्रवेश करने का समय हो चुका है।'

राणा लाहिड़ी इसके पहले प्रवीर का पार्ट कर चुका है। यह नाटक भी गिरीश चन्द्र के जना के अनुकरण पर लिखा गया था। भाषा में थोड़ा-बहुत हेर-फेर किया गया था। उसमे असुविधा थी, फिर भी वह कामयाब रहा था।

रास मे कान्दी के राजा की हवेली का बयाना था। वहां राणा लाहिड़ी ने कुछ और तरक्की की है। रीतू बाबू, बाबुल, गोपाल वगैरह ने मोहिनी माया का पार्ट शेफाली को देने कहा था। लेकिन मंजरी राजी नही हुई थी। कहा था, 'अब इसे मैं ही किया करूंगी।'

शेफाली ने जरा रुष्ट होकर कहा था, 'तो फिर मुझे मंगाने की जरूरत ही क्या थी बहन ?'

'क्यो, तुम तो तुलसी मे कृष्ण का पार्ट करती हो। अलका बीच मे जो नाच नाचती थी, वह नाचती हो। उसके बाद दत्त की दो महीने की एक तरह से छुट्टी

होने जा रही है—इस बीच नये नाटक की शुरुआत करनी होगी। गंधर्व कन्या को हटा दिया गया था। उसमें तुम्हारा पार्ट रहेगा।'

दल में एक फुसफुसाहट छा गयी।

बाबुल ने रीतू बाबू से कहा, 'हर्ड' विप्रब्रदर ? गॉसिप ? अफवाहं घोरं सर्व लोकस्य फिसिंग-फिसिंग।'

रीतू बाबू ने हँसकर कहा, 'गंधर्व कन्या में पार्ट करके तुम तो संस्कृत में घोर पंडितं हो गयं।'

'पार्ट बड़ा ही अच्छा था भाई साहब।'

एकाएक एक लंबी साँस लेकर बोला, 'मेरे लॉर्ड ने यह क्या किया! एण्ड दैट अली!'

'उफ्, अद्‌भुत लड़की थी वह। हम लोगों के जैसे बॉल को ड्रिबलिंग कर गोल के अन्दर घुस गयी। मंजरी जैसी गोलकीपर हार गयी।'

बाबुल फुसफुसा कर बोला, 'यही तो अफवाह है। प्रोप्राइट्रेस अब की गोल कीपिंग छोड़कर सेन्टर फॉरवर्ड पोजिशन में चली आयी हैं। गोल के अन्दर बॉल घुसने-घुसने को है।'

रीतू बाबू ने हँस कर कहा, 'अबकी गोलकीपर राणा लाहिड़ी है।'

'ये—स। यही अफवाह है।'

'फिर तुम्हारी लाइन क्लियर है।'

'मानी ?'

'शेफाली—'

'ध-त्त। क्या तो आप बोल रहे हैं! दुर-दुर! जा—'

रीतू बाबू ने ठहाका लगाया। उसके बाद बोला, 'देखो दिलदार—नहीं-नहीं लिट्ल ब्रदर। दिलदार कह कर तुम्हें गोरा बाबू पुकारते थे, उन्हें शोभा देता था। मेरे लिए तुम लिट्ल ब्रदर ही ठीक हो।'

'ओ के वेरी-वेरी गुड। 'नाउ' बोलिये।'

'हम लोगों की यह जो प्रपंच माया से पूर्ण रंगभूमि है, इसका कांड तो देख ही रहे हो। अब ऐसी एक प्रोप्राइट्रेस का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ—श्रवण करो। तब हम लोगों की नयी जवानी थी। कॉलेज में पढ़ता था। समझ रहे हो। दोस्त के साथ उसके देश गया हुआ था। रास का उत्सव था। रास में महिला यात्रादल आने वाला था। राधा रानी ऑपेरा। प्रोप्राइट्रेस थी उसकी श्रीमती राधा। धनी माँ की लड़की थी। बड़े आदमियों का शोषण करने के सम्बन्ध में उसकी ख्याति फैली हुई थी। पहला स्वाद उसे एक धनी कपड़े के व्यवसायी के पुत्र का पन्द्रह हजार रुपया गायब करने पर प्राप्त हुआ था। वह युवक उसके पास आता-जाता था। एक दिन गद्दी से निकल कलकत्ते के अलग-अलग दुकानदारों के बकाया वसूल कर, पन्द्रह हजार रुपया कमर में बांध कर उसके घर पर गया। रात में बेहद शराब पी और मौज मनाया।

उसके बाद एक तरह से बेहोश जैसा हो गया। किसी तरह गाड़ी पर बैठ कर घर लौटा। सबेरे, सो भी दस बजे होश आया तो देखा, पन्द्रह हजार रुपया गायब हैं। पुलिस को खबर भेजी गयी। मगर नतीजा कुछ नहीं निकला। प्रमाणित ही नहीं हुआ कि उसके पास पन्द्रह हजार रुपया था। बहरहाल इस तरह के उपाय से भले ही उसके बाद कमाई का सिलसिला नहीं चल सका फिर भी दूसरे-दूसरे उपायों से, कई बड़े लोगों को घायल कर बेहद रुपया-पैसा, गहना और घर रख कर इस दुनिया से विदा हुई। बच गयी एकमात्र कन्या श्रीमती राधा। खूबसूरत थी। उसमें प्रेम की पिपासा जगी। जगाया भी तो यात्रादल के एक ऐक्टर ने। उन्हें हीरो बनाया, स्वयं हीरोइन बनी और राधा सखी ऑपेरा की बुनियाद डाली। अच्छा दल था। अभिनय देख कर मुग्ध हो गया था। मैं राधा की मुहब्बत में पड़ गया ब्रदर। महिषासुर नाटक था। महिषासुर का पार्ट यतीन पाँजा कर रहे थे। आज भी याद है, महिषासुर नंगी तलवार लिये देवताओं की सभा में प्रवेश करता है और कहता है—'महिषासुर को राज्य स्थापित करने में बाधा कौन दे रहा है रे?' उफ्, वह कैसा थ्रिल था!

'और श्रीमती राधा दुर्गा का पार्ट कर रही थी। राधा गीत गाती थी। प्रत्येक पंक्ति के अन्त में एक प्रकार का स्वर-कंपन पैदा करती थी। और आँखें मूँद लेती थी। याद है, महिषासुर का उद्भव शिव के अंश से हुआ था। महिषासुर की दृष्टि दुर्गा पर पड़ी तो उसके प्रति प्रेम उमड़ आया और उसने प्रेम-निवेदन किया। अपनी छाती का चमड़ा चीर कर दिखाया कि वहाँ दुर्गा की मूर्त्ति है। दुर्गा ने क्रोध में आकर उसका प्रस्ताव ठुकरा देना चाहा। परन्तु उसे क्रोध नहीं आया। महिषासुर ने उसके बालों को मुट्ठी में भर लिया। उन दिनों ब्रदर झुप्पी का रिवाज नहीं था। लेकिन राधा के बाल कितने बड़े-बड़े और घने थे! वह बाल!'

'रुकांगद का हरिवासर' नाटक में पाँजा रुकांगद का अभिनय करता था। श्रीमती राधा उसकी रानी का। मतलब यह कि वे कपोत-कपोती जैसे रहते थे।

'कुछ बरसों के बाद—तब मैं ठीक-ठीक यात्रा में भर्ती नहीं हुआ था—तब हाँ, पार्ट करता था—एक जगह श्रीमती राधा के दल पर निगाह पड़ी। तब यतीन पाँजा आउट हो चुका था। पाँजा से रिश्ता टूट चुका था। पाँजा भाग गया था। उसकी जगह पर घोष नामक एक तरुण नायक मैनेजर था। उसके बाद कई साल गुजरने पर यही घोष हम लोगों के दल में आया। पूछा, बात क्या है? बताया कि राधा ने उसकी अपेक्षा तरुण एक व्यक्ति को मैनेजर और ऐक्टर हीरो बहाल कर लिया है। तब राधा की माँग के आस-पास कुछ बाल पक चुके थे और माँग चौड़ी हो गयी थी। अन्त में उसे बड़ी ही करुण स्थिति में देखा। तब मैं 'वीणापाणि' में एक तरह से सर्वेसर्वा था। इतना जरूर था कि सबसे ऊपर विद्या विनोद थे। हम कतरासगढ़ प्ले करने गये हुए थे। एक व्यक्ति आया। उसने बताया कि उसे श्रीमती राधा ने भेजा है और एक बार आने का अनुरोध किया है। उन लोगों की उसी शाम मजलिस जमने वाली थी। हम लोगों की मजलिस दूसरे दिन जमने वाली थी। इसके

एक दिन पहले श्रीमती का दल अभिनय कर चुका था। लेकिन संतोषजनक नहीं हुआ था। बहुत ही टिटकारी बरदाश्त करनी पड़ी थी। विद्याविनोद और मैं गया। तब राधा की उम्र पचास से अधिक हो चुकी थी। बालों में खिजाब लगाये थी, चेहरे पर पाउडर। विद्याविनोद के सामने हाथ जोड़ कर बोली, 'अपमान से मेरी रक्षा कीजिये। दल के लोग भाग गये हैं। ऐक्टर चले गये हैं, वादक चले गये हैं—चार-पाँच व्यक्ति बिना कहे भाग गये हैं। लिबास का एक बक्सा लेकर भाग गये हैं। आज शाम अभिनय है।' विद्या विनोद महान व्यक्ति थे। उन्होंने सब कुछ दिया। लिबास, वादक और ऐक्टरों के साथ-साथ मुझे भी। तय हुआ कि एक जाना-पहचाना नाटक, जिसे दोनों दल कर चुके हैं, वही किया जायेगा। हुआ भी वही। उर्वशी-उद्धार। मैं दण्डी बना और वह पचास साल की बुढ़िया उर्वशी। *श्रीमती राधा अच्छा अभिनय नहीं* कर सकी, मगर साज-सिंगार बहुत अच्छा किया था। टोपी खोल कर सलाम करने लायक। और उसका कटाक्ष कितना वेधक था! प्ले खत्म होने-होने पर था। उस समय मुझसे कहा, 'मेरे दल में चले आइये। मैं पुनः गठित करूँगी।' कहना न होगा, मैं गया नहीं और राधा सखीदल का वही आखिरी अभिनय रहा।

'सो ब्रदर, इस रंगभूमि में हरि जिसको जैसा सजाते हैं, उसे वैसा ही सजना-सँवरना पड़ता है, यह सही है, मगर तपस्या का कोई अन्त नहीं है—और वह तपस्या पुरुष प्रकृति के लिए करता है, प्रकृति पुरुष के लिए करती है। यहाँ हेय भाव—कह सकते हो कि—यहाँ वन्य वर्बर-काल विराजमान है। सब लोग जानवर हैं, जानवर। दूसरी ओर एक-दो सौ वर्ष पहले की बात भी सोच सकते हो—जब तमाम नारियाँ न तो माता थीं, न कन्या, न वधू और न भगनी—नारी केवल सुन्दरी रूपसी उर्वशी थी और पुरुष मात्र पुरुरवा! यानी जो होगा, वही यहाँ वर्तमान है। तुम शेफाली की चाहना करते हो, इसमें दोष ही क्या है? अगर कोई राणा लाहिड़ी के लिए मोहिनी माया का वेश धारण करती है तो दोष कहाँ है? यहाँ तक कि मैं अगर शोभा की चाहना करूँ तो उसमें भी विस्मय या हँसी की कोई बात नहीं है।'

बाबुल ने झट से रीतू बाबू के चरणों का स्पर्श किया था। रीतू बाबू ने उसे जोर से पकड़ कर उसका गाल चूम लिया था। और कहा था, 'छोटे भाई मेरे! यहाँ सब कुछ करो। हँसो-रोओ, गुस्साओ—मगर कभी विस्मय जाहिर मत करो। लीला-*मय प्रभु जिसको जैसा सजाते हैं, उसे वैसा ही सजना-सँवरना पड़ता है।*'

कहा जा सकता है कि दल के पुराने रंगकर्मी, जो बहुत दिनों से हैं, वे चाप हैं। वे चुपचाप आँख फैलाये, सिर्फ यही देख रहे हैं कि नटवर किसे किस रूप में सजाते हैं। शिखा मछलियों जैसे छोटे रंगकर्मी फुसफुसा रहे हैं। उनमें से किसी को नये साज-सिंगार में सजने की प्रत्याशा नहीं है, सिर्फ कुतूहल ही है। जो लोग बाहर से चुपचाप हैं वे अन्दर-अन्दर चंचल हैं। मन की गहराई में यह चंचलता दबी हुई है।

नाटू इसलिए संत्रस्त है कि गोपाली की दृष्टि राणा पर पड़ी है या नहीं।

मणि और बाबुल शेफाली की वजह से चंचल हैं और शेफाली राणा के लिए चंचल है। बुंचो की भी यही हालत है।

दूसरी ओर सखीदल के लिए थियेटर के द्वारा परित्यक्त जिन दो औरतों को लाया गया है उनमें से एक का नाम मीना और दूसरी का अंगूर है। दुबला-पतला शरीर है, उम्र पैंतालीस से अधिक ही। चेहरे पर झुर्रियाँ भी उभर आयी हैं। लेकिन जब अच्छी तरह पेन्ट करके मजलिस में उतरती हैं तो वे बीस-बाईस वर्ष की युवती जैसी लगती हैं। साधारण समय में भी वे सस्ते किस्म की स्नो लगाती हैं। उनके सिर पर कम बाल हैं लेकिन वे साधारण समय में भी अपने द्वारा खरीदे गये झुप्पे को बिलप से खोस कर मोटा जूड़ा बांधती हैं। एक मात्र स्नान के बाद उन लोगों का वास्तविक जीर्ण स्वरूप बाहर निकल आता है।

लाने के वक्त रीतू बाबू ने उन लोगों से कह दिया था, 'सुनो, कुछ बातें पहले ही बता देता हूँ। मजलिस में उतरने के समय अच्छी तरह पेन्टिंग करना। थियेटर में जितनी चौड़ी पेन्टिंग करती हो उससे ज्यादा चौड़ी। और बालों का झुप्पा ठीक से लगाना। झुप्पा खरीद लो। अपना झुप्पा रखना ठीक होता है। हम लोगों की पोशाक नयी है। एक बात और। दल के साथ जब तक घूमोगी तब तक उस रूप से काम नहीं चलेगा जिस रूप में अभी हो। कपड़ा-लत्ता साफ-सुथरा होना चाहिये, जरा चटकदार होना चाहिए। किसी भी वजह से मैला साड़ी-ब्लाउज पहनने से काम नहीं चलेगा। क्यों समझी न ?'

उनमें से अंगूर ने दयनीय हँसी हँस कर कहा था, 'समझ गयीं बाबा। इमली से बगैर साफ किये दिन के वक्त गिलट का गहना बाहर निकाला नहीं जा सकता है।'

'हाँ बाबा। संन्यासियों की जटा लम्बी होती है। बरगद के गोंद से उखाड़े बालों को सन से बनाना पड़ता है, पैदा नहीं होते हैं। उन्हें भी साज-सिंगार करना पड़ता है। चूंकि भीख की बात है इसलिए उसी के अनुरूप भेष धारण करना पड़ता है। समझ रही हो न ?'

दूसरी है मीना। उसने कहा था, 'लेकिन तनख्वाह से हम लोगों का खर्च पूरा होना चाहिए बाबा।'

'जरूर। इस पर मैंने सोचा है। जितनी तनख्वाह तय की गयी है उससे दो रुपया अधिक हर महीने मिलेगा। उसका भुगतान तनख्वाह के साथ कर देने को गोपाल से कह दिया है। वरना और-और लोग झंझट पैदा करेंगे।'

इन लोगों ने सखियों से दल को सचमुच ही आकर्षक बना दिया है। वे छोटे-छोटे लड़कों के सामने रहती हैं। लम्बे अरसे के अपने अनुभवों के कारण वे कला-कौशल दिखाने और चितवन चलाने में लड़कों से अधिक पटु हैं। दल के लोगों में उनके प्रति कोई खास आकर्षण नहीं है, परन्तु दर्शकों में है। उनके आये मात्र पन्द्रह दिन हुए हैं। आते ही वे अपनी उम्र भूल बैठी हैं, जीर्णता भूल बैठी है—और दल

बीच भी वे इस खेल में मशगूल रहने लगी हैं। मीना जरा संकोची और संयत है। मगर अंगूर वैसी नहीं है। दल के निचले तबके के लोगों से हँसी-मजाक, रंग-रस की फुलझड़ी छोड़ने और उन पर बाँकी चितवन से चोट करने में उन्हें शर्म महसूस नहीं होती है। तब हाँ, उनकी निगाह वयस्क लोगों पर ही अधिक टिकी रहती है।

योगा बाबू गीत गा रहा था, राणा लाहिड़ी सुन रहा था। बहुत पहले का गीत। राज-पाट गँवाये हुए एक राजा के दो लड़के थे। उनमें से एक वीर था और पिता के राज्य का उद्धार करने को कृत संकल्प था। दूसरा, जो छोटा था, बचपन से ही वैरागी था। वही छोटा भाई शत्रुओं के गुप्त बाण से मारा गया है, बड़ा भाई रो रहा है। गीत के भाव या भाषा के प्रति राणा लाहिड़ी को कोई मोह नहीं है, योगा बाबू का कण्ठ-स्वर और गायकी उसे अच्छी लगती है। इसके अतिरिक्त इससे वह पुरानी यात्रा के तौर-तरीके को समझने की चेष्टा भी करता है।

गोपाल घोष ने आकर अड़चन डाला, 'मास्टर, इतने जोर से नहीं। धीरे-धीरे गाओ।'

'धीरे-धीरे ?' योगा मास्टर ने उसके चेहरे की ओर देखा।

'हाँ। मतलब है जरा धीरे से।'

'धीरे-धीरे कहीं गाना होता है ? मैं क्या माइक का गवैया हूँ ? गले में जोर न हो तो गीत ? गीत गायेगा और आवाज उस गाँव तक पहुँच जायेगी। मैं किस चीज को लेकर गाऊँ ? कण्ठ जी के दल में रह कर गीत गा चुका हूँ—'

राणा लाहिड़ी ने टोका, 'ठीक तो है, जरा आहिस्ता से ही गाइये।'

'मैं जनाब, नहीं गाऊँगा।' योगा मास्टर एक क्षण में उठ कर खड़ा हो गया।

'भारी मुसीबत है ! मास्टर गुस्सा क्यों रहे हो ?'

'गुस्सा क्यों कर रहा हूँ ? मूर्ख कहीं के !'

अचानक उसका क्रोध चरम सीमा तक पहुँच गया, 'तूने ब्रह्म हत्या की है। गीत में अड़चन डाला, ताल भंग किया— मुझे ब्रह्म हत्या का पाप हुआ। मुँह- औरतें खिलखिला कर हँस रही हैं, बड़े ऐक्टर लोग मजाक उड़ा रहे हैं। शराब पीते हैं, इसमें दोष नहीं। दोष है तो गीत में—'

'अरे सुनो, सुनो।'

रीतू बाबू बाहर निकल कर आया और खँखारा, 'क्या हुआ ? मास्टर को क्या हुआ ?'

योगा बाबू ने आगे बढ़ कर कहा, 'देखिये साहब, इस हाफ मैनेजर की

सुनते जाइये। कहता है—धीरे-धीरे गीत गाओ। गाना कहीं धीरे-धीरे होता है, आप ही बताइये।'

रीतू बाबू बोला, 'परन्तु दूत अवध्य है। श्री गोपाल चन्द्र मात्र दूत हैं। सुनो महाभाग, मैंने ही उसे भेजा था।'

क्षण भर में योगानन्द और ही तरह का आदमी हो गया। खुल कर हंसते हुए बोला, 'अरे लो। यही कहना चाहिए था। आपका नाम बताना चाहिए था। लेकिन आपको क्या गीत अच्छा नहीं लगा? आप एक खानदानी, समझदार, अमीर आदमी हैं।'

'उहुँ, रिहर्सल होने जा रहा है। होने जा रहा है क्या, हो रहा है। शेफाली से मणि कहला रहा है। तुम्हारा गीत मन को खींच ले तो उस मन को वापस कैसे लाया जाये?'

'ठीक है। फिर धीरे-धीरे ही गाऊँगा। या फिर यहाँ से जरा हट जाता हूँ। उसे यह बता देना चाहिए था। सो नहीं, एक बारगी गँवार की तरह मैनेजरी रोब-दाब के साथ—। हुँ! चलिये लाहिड़ी बाबू—'

रीतू बाबू बोला, 'ऐसा होने पर भी माफ करना चाहिए था महर्षि। रिहर्सल में उनको भी जरूरत है। पार्ट दुहरा लीजिये। सीधा पार्ट नहीं है। एक तो प्रवीर, उस पर चंद्रचूड़ के रूप में मैं फबता नहीं हूँ। उधर शिव के पार्ट में कमी पड़ रही है। शखचूड़ का पार्ट भी उन्हें करना होगा। प्रोप्राइटेस की आन्तरिक इच्छा यही है। नये नाटक की शुरुआत करनी है। आओ भद्र लाहिड़ी भैया। बड़ा ही हैवी टास्क है।'

'गीत के तौर पर ध्रुपदांग गीत ही रहना चाहिए, समझ रहे हैं न बाबू!'

योगानन्द ने रीतू बाबू से कहा। उसे सन्तुष्ट करने के लिए बाबू कहकर संबोधित किया। यह शब्द यात्रादल में एकमात्र मालिक के लिए ही कहा जाता है। वरना मास्टर साहब ही कहा जाता है।'

रीतू बाबू राणा लाहिड़ी को लेकर चला गया।

योगानन्द को क्रोध सुलभ उत्तर न मिला तो उसे गुस्सा आ गया। वह रीतू बाबू के चलने के तौर-तरीके की नकल कर चलते हुए बोला, 'सीना तानकर मदमस्त हाथी की तरह चलता है। उफ्!'

यह कहकर वह कृष्ण यात्रा के संलाप की भंगिमा में भाषण करते हुए बोला उठा, 'म-द-म-त्त मतंग को अब कदलीवन द-लन के लिए उत्तेजित नहीं करना पड़ेगा। आह, उत्तेजित तो है ही।'

उसके बाद उसने गौर किया कि वहाँ कौन-कौन है।

छोटा घर। आसनसोल का डेरा। अबकी कोलियारी अंचल का ही अधिक

मंजरी ऑपेरा ने आसनसोल में एक मकान किराये पर लिया है।
बयाना था। इसलिए मंजरी ऑपेरा ने आसनसोल में एक मकान किराये पर लिया है। अभिनय करने के बाद
काली पूजा के बाद भारा गाँव मे जगद्धात्री पूजा के अवसर पर अभिनय करने के बाद
रास में कान्दी का बयाना है। तय किया गया था कि जगद्धात्री पूजा के बाद इस
मकान को छोड़कर वे लोग कांदी की ओर चले जायेंगे। रास्ते मे मुर्शिदाबाद, बहरम
पुर विधु दलाल को बयाने के इन्तजाम के लिए भेजकर दो रात अभिनय करेंगे और
कान्दी चले जायेंगे। वहाँ से कलकत्ता लौट जायेंगे। उसके बाद बड़े दिन तक छुट्टी
रहेगी। बड़े दिन मे बहुत-सी जगहो मे मानो बहुत बहुत सारे गाँवों मे कालीपूजा होती
है, नौकरी करने वाले बाबू लोग झुण्ड बनाकर इस समय लौटते हैं। यह सब गाँव
अधिकांशत. चौबीस परगना, हावड़ा और हुगली जिले में हैं। हुगली जिले के बाकु-
लिया गाँव में अभिनय की एक बहुत बड़ी मजलिस होती है। उस बयाने पर मंजरी
ऑपेरा की दृष्टि थी। सभी बड़े-बड़े बाबू हैं। सब लोग कलकत्ते के बाशिन्दे, व्यव-
सायी और नौकरी जीवी हैं। कालीपूजा मनायी जाती है, यात्रा होती है, इसके अलावा
उन लोगों का अपना एमेच्योर थियेटर होता है। खाने-पीने का समारोह सात दिनों तक
चलता है। मजलिस मे कलकत्ते के सर्वश्रेष्ठ दल के अलावा कोई दूसरा दल नही उत-
रता है। गणेश ऑपेरा, मथुरसा ऑपेरा, सत्येश्वर ऑपेरा, रॉयल वीणा पाणि, श्री चरण
भण्डारी ऑपेरा वगैरह अभिनय कर आये हैं। अबकी मंजरी ऑपेरा ने जिस प्रकार के
दल का गठन किया है उससे उन लोगो को बयाना मिलने की बात है। अगर न मिले
तो दूसरा गाँव है। विधु जरूर ही बयाना ले आयेगा। इस घटना के बाद सारा
उत्साह ठण्डा पड़ गया है। दल के सब लोग मुरदे जैसे हो गये हैं। लेकिन दल को पुनः
आगे बढ़ाने के लिए रीतू बाबू उत्साह के साथ जुट गया है। मंजरी नीरव है। कुछ
बोलती नही है, लेकिन उसकी इस नीरवता में एक प्रकार की जिद है, यह बात समझ
मे नही आती है। वह कहती है, 'जो कहिएगा, मैं वही करूंगी। आप लोग सिर्फ
कहिये, करिये—मैं सबको मानकर चलूंगी। सिर्फ दल को जिन्दा रखिये।'

अभी समस्याओं का यद्यपि समाधान हो गया है लेकिन खामियाँ बहुत सी
हैं और रहेंगी भी। गोरा बाबू के अभाव की राणा लाहिड़ी पूरे तौर पर पूर्ति नही
कर पायेगा। अली जैसा नाची है, वैसा उसने पार्ट किया है उससे शेफाली अच्छा नृत्य
करेगी, पार्ट भी करेगी परन्तु अली के साथ भले घर की लिखी-पढ़ी सिनेमा स्टार होने
की छाप का जो मोह था, शेफाली उसकी पूर्ति नही कर पायेगी। एक और समस्या है
और वह यह कि सभी नाटक पुराने हो चुके हैं। नये नाटक गंधर्व कन्या को परित्यक्त
कर दिया गया है। एक यही चीज है जिसके बारे में मंजरी कहती है— नही। वह
नही होगा, अर्थात् यह नाटक नहीं किया जायेगा। इस बात मे उसने कोई फेर-बदलाव
नही आने दिया है।

सिर्फ रीतू बाबू से ही दो-चार बातें हुई हैं। रीतू बाबू ने कहा था, 'यह एक
तैयार किया हुआ नाटक है। मार खाते-खाते सफल हो गया। नाम पैना। इसके
अलावा इसमें एक ही पार्ट है—गोरा बाबू का पार्ट हो जाने तो कोई प्रशंसा

नहीं रहे। इस नाटक की वजह से अली का कोई खास नाम नही हुआ था। राणा लाहिड़ी इसमें फबेगा भी अच्छा। गोरा बाबू जरा भारी पड़ते थे। अभी अभिनय का मौसम है—नये नाटक के बिना काम नही चल सकता मेरा कहना है—'

'नही। यह नाटक अपशकुन का सूचक है। इसके अलावा—'

जरा रुककर मंजरी बोली थी, 'यही नाटक सभी अनर्थों की जड़ है। आप आज तक महसूस नही कर सके मास्टर साहब ?'

आँखें एक बारगी जलने जलने पर हो गयी, परन्तु दूसरे ही क्षण वह मलिन हँसी से उदास हो गयी। बोली, 'अपनी बात लिखी है। गंधर्व कन्या यद्यपि मैं हूँ परन्तु जिस दिन मे अलका आयी उस दिन से अलका ही हो गयी। मुझे राजकन्या का पार्ट दिया। वे लोग इतना बड़ा नाटक जो कर गये – उसका प्रथम अंक तो वही है। उस नाटक को छोड़ दें।'

'फिर ? नया नाटक तो चाहिये ही।'

'नया नाटक !'

'नहीं चाहिए ? शुरू मे ही सब लोग कहेंगे—नया नाटक कीजिये। फिर क्या कीजियेगा ?'

बात बिलकुल सच है। यात्रादल का बयाना करने के समय लोग दो बातों पर विचार करते हैं। ऐक्टर-ऐक्ट्रेस और नया नाटक। दो नये नाटक हों तो अच्छा रहे। कम से कम एक नाटक और ऐक्टर-ऐक्ट्रेस अच्छे हों तो काम चल सकता है। तब हाँ, ऐक्टर-ऐक्ट्रेस बेहतरीन होने चाहिए। आम तौर से बयाना दो या तीन रात के लिए होता है। दल एक रात का बयाना नही लेना चाहता है। ले भी तो डेढ़ गुणा दक्षिणा के बगैर उसका खर्च पूरा नही होता है। तीन रात के बाद चौथी रात के लिए तभी बयाना किया जाता है जब पहले के अभिनय बहुत अच्छे हुए हों और नायक पक्ष एक रात और करने का आग्रह करे। उसमें भी सौ मे से नब्बे प्रतिशत जगहों मे कहा जाता है कि नये नाटक को एक बार फिर मंचित किया जाये। मंजरी ऑपेरा के नाटकों में से 'जना' की तरह किसी को प्रसिद्धि प्राप्त नही हुई है। गोरा बाबू का प्रवीर और मंजरी का 'जना' पार्ट बहुत ही विख्यात हुआ है। उस पर अबकी अली चौधरी ने आकर उस तरह का नृत्य कर इस नाटक के नाम को और अधिक उजागर कर दिया है। उसके बाद मंजरी ने अली के उस नृत्य को नाच कर एक और आश्चर्य का सचार किया है। गोरा बाबू चला गया, राणा लाहिड़ी कोई बुरा अभिनय नही करता है—फिर भी वह गोरा बाबू की तरह कर नही सका। अब लोगो में अकेली मजरी के द्वारा किये जाने वाले दो पार्टों के लिए कशिश है। एक ही साथ जना और मोहिनी माया। अभी नाटक के नाम पर गधर्व कन्या को छोड़ देने से जना और तुलसी दो ही रह गये हैं। नया नाटक न होगा तो सचमुच ही काम नही चलेगा। पिछली बार नाटक था कर्णवध। लेकिन थियेटर मे कर्णार्जुन का इतना नाम है कि कर्ण कोई सुनना ही नही चाहता।

मंजरी बोली, 'फिर गंधर्व कन्या ही कीजिये। मैं नही उतरूँगी।'

रीतू बाबू ने गरदन हिलाकर कहा, 'लोग नही सुनेंगे। मारने आयेंगे।'

'फिर !'

जरा सोचने के बाद मंजरी बोली, 'फिर रास का बयाना खत्मकर जिसका जो पावना है चुका कर कलकत्ता लौट चलें—'

'दल का विघटन कर दीजियेगा ?'

मंजरी चुप रही।

'इतने सारे लोग खायेंगे क्या ? मर नही जायेंगे ? हम लोग कहाँ जायेंगे ?'

अब मंजरी ने कहा, 'मुझे जरा सोचने दीजिये।'

'सोचिये। लेकिन याद रखें, बिलकुल कोरा नया नाटक—। पाँच-सात दिन में तैयार नही हो पायेगा। इसके अलावा अभी नाटक ही कहाँ मिलेगा ?'

मंजरी ने अपने लिए एक छोटा-सा कमरा ले रखा था। गोरा बाबू के चले जाने के बाद उसने अकेले ही रहना चाहा है और रही भी है। मंजरी ऑपेरा की जो हानि होने को थी, हुई है, लेकिन उसकी जो हुई है वह उसकी एकान्त निजी हानि है। यह बात छिपी हुई नही, जाहिर है। उसके हृदय की पीड़ा आज सबके सामने लज्जा की बात होकर खड़ी हो गयी है। किसी नारी के प्रेमी को जब कोई दूसरी नारी छिपे तौर पर प्यार कर छीनकर ले जाती है तो उस पुरुष का चेहरा देखने का कोई उपाय नही रह जाता है। पुरुष की इतनी बड़ी हार नही होती। धन चला जाये, संपदा चली जाये, सब कुछ चला जाये और मर्द को दर-दर भटकना पड़े तो भी उस वक्त उसके प्यार का धन नारी यदि उसके पास रहे तो उसका सब कुछ जाने के बावजूद सब कुछ रह जाता है। लेकिन धन-संपदा रहने के बावजूद उसकी नारी अगर दूसरे के प्रेम और पौरुष पर मुग्ध होकर उसके साथ चली जाये तो वह मुँह दिखाने लायक नही रह जाता है। दूसरे से दूरी बनाये रहता है, आईने में अपने प्रतिबिंब से आँख नहीं मिला पाता है। औरतों की भी यही हालत होती है। भले घर की औरतें धर्म, आचार और कठोर साधना से अपनी लज्जा ढँके रहती हैं। लेकिन उन लोगों के समाज के लिए यह बहुत बड़ी लज्जा की बात है। नारीत्व के लिए चरम लज्जा की बात है। तब हाँ, एक रास्ता जरूर है। तत्क्षण एक व्यक्ति को प्रेम पात्र के तौर पर आकर्षित कर अन्ततः लोक-प्रदर्शन के रूप में जीवन नये सिरे से शुरू कर देना। नहीं तो पूरे तौर पर देह के व्यवसाय में तल्लीन हो जाना पड़ता है। यह साबित करना पड़ता है कि उस पुरुष के लिए उसकी नजर में कोई कीमत न थी। इस तरह का खेल उसके दल में बहुत हो चुका है। लेकिन उसकी बात ही अलग है। वे लोग

तीन पुरखों से यानी तीनों औरतें—दादी, माँ और स्वयं वह—इस नाम से पुकारी जाने के बावजूद ठीक-ठीक देह-व्यवसायिनी नहीं रही हैं। दादी और माँ ने हालांकि बाध्य होकर कुछ दिनों तक यह व्यवसाय किया था, मगर उसने नहीं किया है। उसके भाग्य को लोग ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हैं। जीवन में संकल्प लेकर उसने शादी की थी; जन्म उसका चाहे जिस कुल में हुआ हो, कर्म से वह अपने समाज में याद करने लायक बनी रहेगी। वह जानती है कि उन लोगों के समाज में सौ में से नब्बे के हृदय में घर गृहस्थी की आकांक्षा रहती है। जो लोग इस कुल में जन्म लेती हैं वे भी इस तरह घर-गृहस्थी बसाने की चेष्टा करती हैं। वह गृहस्थी बार-बार टूटती है। जिन लोगों का इस कुल में जन्म नहीं होता है, जो समाज के संसार में जन्म लेती है और भाग्य-दोष और अपने कर्मफल-दोष से उसकी दादी की तरह यहाँ आ जाती हैं, इस समाज में आ जाती हैं, वे छोड़कर आये अपने कुल और संसार को भूल नहीं पाती है।

सुशीला मौसी की बात उसे याद आ गयी। सुशीला दासी बेजोड़ खूबसूरत थी। पति पर क्रोधित होकर चली आयी थी। नृत्य-गीत सीख कर थियेटर में भर्ती हुई थी। उसकी खूबसूरती की आग में ढेर सारे पतंग जल कर खाक हो गये थे। सुशीला मौसी सिर्फ खूबसूरत ही नहीं थी, उस कुल को छोड़ कर भले ही अन्य कुल या अकुल में आयी थी, लेकिन इस कुल में आकर लास्य-हास्य की ऐसी आग बन गयी थी जिस आग से घर जल जाता है, सब कुछ जलकर खाक हो जाता है। थियेटर में पहले सखी थी। उसके बाद ऐक्ट्रेस। उसके बाद शिशिर भादुड़ी का जमाना आया। उनके थियेटर में काम करते-करते उसकी प्रतिभा चमक उठी। उम्र तब तकरीबन चालीस साल थी, यौवन और रूप के भाटे का दौर चल रहा था। अचानक सुशीला मौसी की हत्या हो गयी। छुरे की चोट से भी नहीं मरी—जब पुलिस आयी थी उस समय भी जिन्दा थी, होश में थी। पुलिस ने बार-बार पूछा था, 'बताओ तुम्हें किसने छुरा मारा है।' लेकिन सुशीला मौसी ने नहीं बताया था। कहा था, 'नहीं पहचानती हूँ।' सुशीला मौसी की मौत अस्पताल में हुई। पुलिस को हत्यारे का सुराग नहीं मिला। सुराग मिला भी होगा तो सबूत नहीं मिला। सब कुछ दबा ही रह गया। लेकिन किसने हत्या की है, यह बात लोगों के लिए खास तौर से उन लोगों के समाज के लिए अनजानी नहीं रही। आखिरी दौर में जब सुशीला मौसी का नाम और ख्याति अपने शिखर पर थी, उस समय उसका पति उसके पास आया था। किसी का कहना है कि पैसे के लिए आया था और किसी का कहना है कि थियेटर में उसका पार्ट देख कर मुग्ध हो गया था और उसके पास आया था। सुशीला मौसी ने स्वयं को धन्य माना था। सोचा था, उसकी तपस्या में चाहे कितना ही पाप क्यों न हुआ हो लेकिन उसे वह प्राप्त हो गया है जिसकी उसने चाह की थी। सेवा और आत्मदान से स्वयं को निःस्व बना देने को तत्पर हो गयी थी। उसी पति ने उसकी हत्या की थी। सुशीला मौसी को वह सुख की मृत्यु महसूस हुई थी। किसी भी हालत में पति का नाम नहीं बताया था।

तुपा दीदी भी थियेटर जगत में विख्यात थी। जब वह सखा-दल में नाचती तो उसकी हँसी और कटाक्ष से दर्शक बाण-विद्ध हो जाते थे। तुपा दीदी के घर पर बड़े-बड़े नौकरीजीवी और बैंक के मालिक अड्डा जमाये रहते थे। अन्ततः तुपा दीदी एक सरकारी मुलाजिम के प्रेम की गिरफ्त में फँस गयी। उस प्रेम के कारण वह बाबू अपनी बड़ी नौकरी छोड़कर थियेटर चालू करने को तैयार हो गये। उस थियेटर की मालकिन एक तरह से तुपा दीदी ही थी। अपना रुपया-पैसा, गहना-जेवर सब कुछ देकर उसने अपने प्रेमी की गृहस्थी का खर्च चलाया था। उसके लड़के को बिलायत भेजा था। उसके बाद उलट-फेर का दौर चला, थियेटर उठ गया। तुपा दीदी के प्रेमी को बाध्य होकर अपनी घर-गृहस्थी की ओर लौटना पड़ा। तुपा दीदी को टी० बी० जैसी बीमारी ने धर दबाया। तब तुपा दीदी निःस्व हो चुकी थी, उसका प्रेमी भी उसके पास नहीं था। उसके बाद लड़कों ने उसकी ओर ध्यान नहीं देने दिया। तुपा दीदी को बाल बच्चे नहीं थे, मगर भाइयों की गृहस्थी का पोषण वही करती थी। तुपा दीदी का भाग्य फिर भी अच्छा था, थियेटर की एक ऐक्ट्रेस विख्यात कीर्तन-गायिका श्रीमती ने उसका इलाज कराया था। तुपा दीदी ने निर्णय लिया था कि वह स्वस्थ होकर फिर थियेटर में भर्ती हो जायेगी, मगर उसी वक्त हाथीबगान में बम गिरा। तुपा दीदी अपने भाई के परिवार के सदस्यों को लेकर नवद्वीप भाग गयी। उसके बाद नवद्वीप से पांडिचेरी चली गयी। वहाँ तुपा दीदी ने आश्रम के जूठे बर्तनों को माँजने का काम स्वीकार किया था। बहुत से लोगों की जूठन साफ करने का काम। शायद सोच-विचार कर ही यह काम स्वीकार किया था।

मंजरी ने कहा था, 'क्यों ?'

'क्यों ?' गोरा बाबू ने हँसकर कहा था, 'जीवन का जो देह-पात्र बहुत सारे लोगों के भोग-भोजन से जूठा होकर जहरीला बन गया है, वह भी उन बर्तनों के साथ *मँज-घिसकर परिष्कार-पवित्र हो जायेगा।'*

अब यह बात मंजरी की समझ में आयी है। उसे भी यह बात बहुत अच्छी लगी थी।

गोरा बाबू तुपा दीदी के प्रेमी को गाली-गलौज करता था। मगर उस बात की याद उसे अच्छी नहीं लगी। मन में सवाल पैदा हुआ, तुपा दीदी के अन्तर्मन में क्या कोई कामना नहीं थी ? सब हीन की तरह ? उसने क्या कामना नहीं की थी कि अगले जन्म में अच्छे कुल में जन्म लेकर वह उस प्रतारक प्रेमी को पा सके ?

उसके साथ यह क्या हुआ ? इसकी उन्होंने कभी कल्पना नहीं की थी। एकाएक उसे लगा, संभवतः यह उसके कर्म का फल है। उसने कमला से गोरा बाबू को छीन लिया था। यह उसी का फल है। दूसरे ही क्षण उसने इसका प्रतिवाद किया। नहीं-नहीं। उसने छीना नहीं था। गोरा बाबू को देख कर मन ने उसको पाने की इच्छा की थी। इससे ज्यादा उसने कुछ भी नहीं किया था। जब तक कमला

ने उसे भगा नहीं दिया, जब तक गोरा बाबू घर-द्वार, कमला और लड़के को छोड़ कर यात्रादल से नहीं जुड़ा, जब तक वह दुःख की चरम सीमा तक नहीं पहुँचा, तब तक उसकी ओर हाथ बढाना तो दूर की बात, आँखों को दृष्टि या इशारे से भी मंजरी ने उसका आह्वान नही किया था। निमंत्रित नहीं किया था।

'मंजरी !'

'शोभादी ! आओ।'

सिर्फ शोभा ही नहीं, बुंची भी उसके साथ आयी थी। शोभा ने बैठते ही कहा, 'अरे भैया शिवना, पान दे जाओ न ! पान का अकाल है। मेरा पान खत्म हो गया है। दो भैया।'

शिवनन्दन बाहर लेटा हुआ था। जाड़े के हल्के स्पर्श के कारण एक चादर से सिर से पैर तक के हिस्से को ढँक कर बरामदे पर हल्की धूप में आराम कर रहा था। लेटे-लेटे ही बोला, 'पान मेरे पास भी कम ही है। पान नहीं मिल रहा है। पनबट्टे में है, बना लो।'

'तू उठ न।' मंजरी बोली।

वह जानती है कि शिवनन्दन चूंकि उसका नौकर है, इसलिए दल के लोगों पर थोड़ा बहुत रोब गाँठता है। कम से कम उन लोगों की बात पर वह काम करने को यथासाध्य तैयार नहीं होता है।

शिवनन्दन बोला, 'बहुत ही आराम महसूस हो रहा है। बदन दुख रहा है, धूप में आराम मालूम हो रहा है। मैं आध घण्टे बाद उठूंगा।'

'कितना बजा ? चार बज रहे हैं। उठो, चाय बनाओ। उठो, उठो।'

शोभा बोली, 'जरा लेटे रहने दो। बुंची तुम्ही पनबट्टा लेती आओ। पान बना लो बहन।'

'अरे वह तो तुम्हारे हाथ के पास ही है, हाथ बढ़ाकर ले लो। न होगा तो मैं ही बना दूंगी।'

'अरे बहन, देह हिलाने में ऐसा लगता है जैसे गिर पड़ूंगी।'

उसके बाद गहरे आक्षेप के साथ 'बाप रे' कहकर लाचारी में पनबट्टा खींच कर बुंची को दे दिया। बोली, 'भगवान न करे कि कोई मोटा-सोटा हो।'

बुंची हंस दी। शोभा बोली, 'तू अब खिल्ली मत उड़ा। किसी की जान जा रही है और किसी को मजा आ रहा है। तू ऐसी हो गयी है कि क्या कहूँ। देख लेना। मेरी उम्र की होते-न होते ढोल के बदले ढाक हो जायेगी।'

'सचमुच बहन, बहुत ही मोटी होती जा रही हूँ।'

'होगी नहीं। इतना बीयर पीना शुरू कर दिया था।'

'धत्त ! झूठी बात है।'

'झूठी बात है ? मुझे सब मालूम है। खुद सुरो मौसी ने बताया है। कहा था, आजकल दिन-दो पहर-रात में—' .

'क्या कहा है ? दिन-दोपहर-रात में उससे बीयर मँगाती हूँ। बुढ़िया बड़ी ही झूठी है। एक दिन। रोतू बाबू जिस दिन गये थे, उसी दिन। किसी भी हालत में नहीं छोड़ा। पीना ही होगा। तब बैठ गयी। कहा, वह सब कड़ा जहर नहीं पिऊँगी, बीयर मँगवाओ। उसी दिन पिया था।'

मंजरी को अच्छा नहीं लग रहा था। वह खामोश बैठी थी। मन में चिन्ता घुमड़ रही थी। उन लोगों की ओर देखती हुई सोच रही थी कि ये लोग मजे में हैं। जिन्दगी के दुःख को उठाकर फेंक दिया है और मजे में हँस-बोल खा-पीकर दिन गुजार रही हैं। जिस समाज में उन लोगों का जन्म हुआ है, उसका तरीका भी यही है। इसके अलावा दूसरा रास्ता भी नहीं है। शोभादी ने अपने प्रेमी के मरने के बाद ढेर सारी शराब पीकर कहा था, 'हम लोगों के लिए क्या शोक में बदन निढाल छोड़ कर पेट के बल लेटे रहने का उपाय है ? गृहस्थ घर में पति मरता है तो ननद या भाभी या लड़की या बहू खाना तैयार कर उठाती है और खिलाती है। कच्ची उम्र की होती है तो जेठ खाना परोस देता है, बाप-भाई परोस कर देता है। ज्यादा उम्र की होती है तो लड़का परोस कर देता है, लड़की-दामाद देते हैं। कोई नहीं रहता है तो स्वयं चावल पका कर खाती है। और हम लोगों के न बाप हैं, न माँ, न भाभी और न लड़का। नो माता, नो पिता। चावल पकाने के लिए भी कोई तैयार नहीं होगा। नौकरानी का काम करने हम जायेंगी तो गृहिणी पहचान लेगी और कहेगी नहीं। भीख भी कोई नहीं देगा। फिर ? पेट कैसे भरा जाये ? और शोक या दुःख ही किस बात का ? वह सब एक बोतल शराब में ही बह जाता है। शराब पीकर फफक-फफक कर रोती हूँ, आँसू की धारा बहती है और उसी से शोक-दुःख साफ हो जाता है।'

यह कह कर नशे में चूर हो कर 'ही-ही' कर हँस पड़ी थी।

शोभादी ने झूठी बात नहीं कही थी। जन्म-दोष से उनका भाग्य ऐसा होता है कि एक ही आदमी को याद रखते हुए दुःख-कष्ट ढोकर जिन्दा रहने का उनके लिए उपाय नहीं है। विधाता ने उन लोगों को यह अधिकार नहीं दिया है। वे लोग अन्न नहीं हैं, अन्न को सड़ा कर शराब तैयार करने की तरह विधाता ने उन्हें शराब बना कर ही इस दुनिया में भेजा है। यह बात उसकी दादी राधारानी ने उसकी माँ से कही थी। जब उसकी माँ से उस के पिता का विच्छेद हो गया था, उस समय जो नया मारवाड़ी बाबू आया था, उसी वक्त माँ ने खेद के साथ कहा था। वे लोग शराब हैं, अन्न नहीं। अदृष्ट, धन्य हो तुम ! पेट के लिए, हो सकता है कि उसे अभी बिकना पड़े। या नहीं भी सकती है। उसके पास मकान है। निचले तल्ले में किरायेदार हैं। तीन कमरों का किराया पचहत्तर रुपया मिलता है। अब ऊपरी तल्ले के तीन कमरों में से दो को अगर किराये पर लगा दिया जाये तो और एक सौ रुपया किराया

मिलेगा। कलकत्ते में अब किराया बढ़ता जा रहा है। निचले तल्ले का किराया भी बढ़ाया जाये तो बढ़ जायेगा। इसके अलावा यात्रादल का सरो-सामान और लिबास बेच देने से भी कुछेक हजार रुपये आयेंगे। बैङ्क में भी रुपया है। गहना है। उन्हें बेच कर रहने-खाने का खर्च चल जायेगा। मगर यही सब कुछ नहीं है। क्या लेकर रहेगी वह ? किसे लेकर रहेगी ? मंजरी शून्य दृष्टि से छत के एक कोने की ओर निहार रही थी। शोभा और बुंची बातें करते-करते कब चुप होकर मंजरी की ओर देखने लगीं, पता नहीं। वे लोग सिर्फ पान ही नहीं खाने आयी हैं, कुछ कहने भी आयी हैं। वह बात धड़ल्ले से नहीं कह पा रही थीं, इसलिए हंसी-मजाक और बातें कर उसके लिए भूमिका तैयार कर रही थीं। हो सकता था कि असली बात पर चली आतीं। लेकिन मंजरी का चेहरा और आँखों की दृष्टि देखकर चुप हो गयी हैं।

शोभा मंजरी के घर पर किरायेदार की हैसियत से रह रही है। जब से मंजरी अपेरा का गठन हुआ है तब से ही है। वह बुंची से अधिक साहसी है। वह पान की सीठी अन्दर चले जाने के बहाने खाँसने लगी और कहा, 'बाप रे !'

मंजरी ने मुड़ कर उसकी ओर देखा।

अब बुंची ने कहा, 'तुम्हारा सारा काम ही अजीब है शोभादी। खें-खें कर जर्दा के साथ रस निगल गयी। खाँसी नहीं आयेगी !'

शोभा उठ कर बाहर गयी और पान की पीक फेंक कर चली आयी। आने पर सीधे कहा, 'एक बात कहने आयी थी, बहन मंजरी।'

मंजरी ने शांत स्वर में कहा, 'कहो।'

अब बुंची ने कहा, 'बाहर दल के बीच इस बात को लेकर कानाफूसी चल रही है। कहता है—'

बुंची चुप हो गयी। उसके बाद इस प्रकार बोली जैसे अचानक कहा हो, 'तुम्हीं बताओ न शोभादी।'

शोभा बोली, 'कह रहा है कि तुम दल का विघटन कर दोगी।'

'विघटन कर दूँगी ? नहीं-नहीं। दल का विघटन मैं नहीं करूँगी। नहीं-नहीं।'

'लो सुनो। हुआ न। मैं जानती हूँ। दल विघटित कर देगी ? क्यों ? राजा मरने से राज-पाट नहीं चलता है ? हुं।'

बुंची ने हँस कर कहा, 'इतने दिनों तक नाटक कर चुकी हो, फिर भी तुमने ऐसी बात कही ?'

'क्यों ?'

राजा के मर जाने पर कितने ही राज्यों पर विदेशी अपना अधिकार जमा लेते हैं। रानी भिखारिणी हो जाती हैं। मन्त्री और सेनापति विश्वासघात करते हैं। ऐसा क्या नहीं होता ? देवला देवी से क्या हुआ ? ऐतिहासिक नाटकों में ऐसी अनेक घटनाओं का उल्लेख है। और रानियाँ, हो सकता है, वीरता दिखा कर मरें। राज्य जाना क्या आसान है ?'

'सो तो सही है।' शोभा हँस दी, 'कहा जाता है, औरतें अबला होती हैं। मंजरी ऑपेरा राज्य नहीं, दल है। और मंजरी गोरा बाबू की अपेक्षा दल को कोई बुरी तरह नहीं चला रही है।'

मंजरी के मन में एकाएक एक बात बिजली की तरह कौंध उठी और उसने थोड़ी-सी रोशनी की झलक फेंक कर गहरे अँधेरे में उसे एक आश्रय और अवलम्ब का पता बता दिया।

उसे रजिया नाटक की याद हो आयी। बुँची की उस बात ने ही रजिया की याद दिला दी। आजकल यात्रा में ऐतिहासिक नाटक खेला जाता है। मंजरी ऑपेरा ने ऐतिहासिक नाटक का मंचन नहीं किया है। गोरा बाबू ने ही करने नहीं दिया था। कहता था, 'देश तो पुराण वगैरह को मटियामेट कर चुका है। कोई आदमी रामायण-महाभारत नहीं पढ़ता। थियेटर से ऐतिहासिक नाटक भी विदा लेने को है। मैंने यात्रादल का गठन किया है। शराब पीता हूँ और जोरों से ठहाका लगाता हूँ। रात दिन हो गयी है और दिन को मैंने रात बना दिया है। कम से कम एक पुण्य का काम तो कर जाऊँ। पौराणिक नाटक कर पुराण की बातों का प्रचार तो कर जाऊँ।'

मंजरी ने मुड़ कर शोभा की ओर देखा। अब तक वह शून्य दृष्टि से ताकती हुई सोच रही थी। सजग होकर शोभा से बोली, 'चिन्ता मत करो शोभा दी। चाहे इसे तुम राज्य कहो या दल — मैं ही चलाऊँगी।'

कहते-कहते उसके चेहरे पर एक कड़वी हँसी तिर आयी। बोली, 'जिसे तुम राजा कह रही हो, उसमें शायद क्षमता है, मगर उसकी किस्मत औरतों की किस्मत है। गरीब के लड़के ने बड़े आदमी की लड़की से शादी की थी। उसे छोड़ कर चला आया था—उससे बड़े आदमी की लड़की का राज्य, जमींदारी और व्यवसाय ठप्प नहीं पड़ गया। वह औरत सब कुछ अच्छी तरह चला रही है।' उसके बाद मेरे पास आकर यात्रादल का गठन किया था। अब अली चौधरी का हाथ थाम कर फिल्म-थियेटर में भर्ती हुआ है। उसकी उन्नति हो। मेरा दल भी ठप्प नहीं पड़ेगा। मैं चलाऊँगी। कमला दीदी की तरह ही चलाऊँगी। जानती हो, उसकी पहली पत्नी कमला दीदी और मैं एक ही बाप की लड़कियाँ हैं। बाबूजी ने ही मुझे पाँच हजार रुपया दिया था और दल का गठन उन्हीं रुपयों से हुआ है।'

वह बात करते-करते उठ कर खड़ी हो गयी। उसके साथ शोभा और बुँची को भी उठना पड़ा। शोभा ने पूछा, 'कहाँ जा रही हो ?'

'गोपाल मामा की जरूरत है। अरे शिवनन्दन, अब गोह की तरह पड़े मत रहो। उठ। चाय बना। एक बार गोपाल मामा से जाकर कह आ कि मास्टर को लेकर यहाँ चले आयें। जरूरी काम है। बहुत ही जरूरी।'

बुँची बोली, 'एक बात और कहनी है बहन।'

'क्या ?'

'एक बार बराकर की कल्याणेश्वरी माता के यहाँ सब को जाने की इच्छा है। हम लोग बेशक अपने-अपने खर्च से जायेंगे। तुम एक बार गोपाल बाबू से कह दो।'

'जाना है तो आज ही चली जाओ या फिर कल। हम लोग रास का अभिनय खत्म करने के बाद ही कलकत्ता लौटेंगे।'

'कलकत्ता लौटोगी! यहाँ घर किराये पर लेने से—'

मंजरी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'नया नाटक सेट करके एक महीने के बाद दल लेकर बाहर निकलूंगी। नया नाटक न होगा तो नुकसान उठाना पड़ेगा। शिवनन्दन, बुला के ले आया? उठ रहा है?'

'हाँ, उठ गया है। चाय का पानी चूल्हे पर रख दिया है। अब बुला लाता हूँ।'

पन्द्रह

बड़े दिन के पहले मंजरी ऑपेरा का नया विज्ञापन छपवाकर बँटवा दिया गया। गोरा बाबू अपने नये फ्लैट में बैठ कर चाय पी रहा था। अली चौधरी एक नया अखबार लिये कमरे के अन्दर आयी। तिरछी हँसी हँस मुँह बिदका कर बोली, 'देखो।'

तीसरा पहर। गोरा बाबू अभी-अभी सोकर उठा है। आँख और मन में नींद का खुमार है। उसी खुमार के दरमियान बोला, 'क्या?'

'मंजरी ऑपेरा का पैम्फलेट। विराट् आयोजन। नाटक सम्राज्ञी मंजरी देवी अबकी रजिया की भूमिका में उतर रही है। मंजरी ऑपेरा का प्रथम ऐतिहासिक नाटक।'

गोरा बाबू की आँखें फैल गयीं। अली चौधरी ने पैम्फलेट उसकी गोद में फेंक दिया।

अली बोली, 'सिर्फ रजिया ही नहीं, उसके साथ सती-सावित्री-। चिल्लायेगी और सिसक-सिसक कर रोयेगी।'

गोरा बाबू पैम्फलेट को आँखों के सामने फैलाये अपलक उसकी ओर ताकता रहा। अली दूसरे कमरे में चली गयी। कहती गयी, 'अच्छी तरह देख लो। मैं बाहर निकलने वाली हूँ। केक-पेस्ट्री खरीद कर ले आती हूँ। शाम को बम्बई का प्रोड्यूसर आने वाला है।'

गोरा बाबू बोला, 'बोतल कहाँ रख दी है? देती जाओ।'

'पहले चाय पी लो।'

'ठण्डी हो गयी है।'

'फिर से बनाने कह देती हूँ। अभी से शुरू करोगे और शाम तक नशे में चूर हो जाओगे।'

'यह बात कहना गोरा बाबू को अपमानित करना है। दो।'

अली ने बोतल को हटा कर रख दिया था। उसने ला कर रख दिया, 'लो।'

गोरा बाबू तब भी पैम्फलेट की ओर ताक रहा था। अली बोली, 'अफसोस हो रहा है? इसलिए कि रजिया के प्रेमी की भूमिका में दूसरा आदमी उतरेगा?'

वह हौले से मुस्करा दी।

'अफसोस करना विजय चक्रवर्ती का स्वभाव नहीं है। जब तक जवानी है तब तक वह सिंह है। किसमें ऐसी शक्ति है कि उसका रास्ता रोक ले?'

गोरा बाबू हल्की हँसी हँस दिया, 'ससुराल में इतनी सम्पत्ति थी कि उसे एक राज्य ही कहा जायेगा। वहाँ रहता तो कम से कम राय बहादुर का खिताब निस्सन्देह मिल जाता। और जिस इल्म से साहब-सूबा को प्रसन्न किया जाता है, वह इल्म उसमें था। मगर वह देह का कपड़ा लिये ही बाहर निकल गया था। उसके बाद मंजरी अपेरा के भाग्य का निर्माण किया था। वहाँ रहता तो वह सबसे अच्छा दल तैयार कर लेता, इसमें सन्देह नहीं। मगर—'

गोरा बाबू चुप हो गया। अली बोली, 'क्या?'

गोरा बाबू ने हँस कर कहा, 'और क्या? वही हुआ जिसे तुम चिरन्तन खेल या लीला कह सकती हो। मेरी किस्मत नारी के हाथ की कठपुतली है। सिंहों के साथ ऐसी ही बात होती है। कम से कम पुरुष-सिंह के साथ। नयी सिंहनी आकर लीलामयी भंगिमा में खड़ी होती है—टेढ़ी चितवन से देखती है और दूसरे जंगल की ओर चली जाती है। सिंह उसके पीछे-पीछे दौड़ता है। पीछे छूट जाता है उसका जीता हुआ वन—उसकी इतने दिनों की संगिनी। इस ओर वह आँख उठा कर भी नहीं देखता है।'

अली बोली, 'फिर तो मुझे भी छोड़ कर भाग जाओगे?'

गोरा बाबू ने हँस कर कहा, 'असम्भव नहीं है। तब हाँ, सिंह की भी जवानी बीत जाती है, जरा उस पर आक्रमण करती है। हो सकता है कि अबकी नयी सिंहनी ही विगत यौवन सिंह को छोड़ कर भाग जाये पहले का ठीक उल्टा हो जाये।'

अब अली उसकी बगल में बैठ गयी। बोली, 'बात बनाना तो खूब जानते हो। एक तो लेखक, उस पर ऐक्टर। औरतें इतनी नमक हराम नहीं होती हैं?'

'दुनिया में कोई नमक हराम नहीं होता, नवीना प्रेयसी! लेकिन जिन्दगी मानने को तैयार नहीं होती। मनुष्य के द्वारा बनाये गये नियमों से मनुष्य चलना चाहता है मगर जिन्दगी जिन्दगी के नियम से ही चलती है। एक साथ पर-... बसाने से थोड़ी-बहुत माया जरूर हो जाती है—लेकिन नये की चाह जब प्र...

जाती है तो महसूस होता है कि उसके बिना सब कुछ मिथ्या है। तब 'वह पुराने को छोड़ कर नये की ओर भागता है। क्या करे! नये को पाकर भी सुख नहीं मिलता। अनवरत यही सोचता रहता है कि पुराने को अगर कोई नया मिल गया होगा तो क्या होगा! मन में रश्क पैदा होता है। मन में होता है कि हत्या कर आये। देखो न, इस अखबार की ओर ताक रहा हूँ और मन में जलन हो रही है।'

'हूँ। फिर यह क्यों कहा कि गोरा चक्रवर्ती अफसोस नहीं करता?'

'नहीं, अफसोस नहीं होता है। क्योंकि उससे बड़ा अफसोस तब होता जब तुम्हारे साथ नहीं आ पाता।'

'लेकिन मन में जलन क्यों हो रही है?'

'देखा नहीं—रजिया; यात्रादल की नाट्य-साम्राज्ञी मंजरी देवी। बख्तियार; नट वीरेन्द्र रीतू बाबू। विजय सिंह; राणा चौधरी।'

'उससे क्या हुआ?'

'तब तो कहना ही चाहिए। उस पुस्तक को मैंने ही लिखा था। पहले-पहल जब दल की शुरुआत की थी तो जना और रजिया पुस्तकें लिखी थीं। यानी थियेटर के नाटक को सामने रख फेर-बदल कर यात्रा दल के उपयुक्त बनाया था। लेकिन आखिर में रजिया न तो मुझे अच्छा लगा और न उसे ही। उसका कारण मालूम है? पार्ट न तो उसे पसन्द आया और न ही मुझे। रजिया विजय सिंह से मुहब्बत करती है। बख्तियार दुर्धर्ष सेनापति—मुसलमान तातार—रजिया को प्यार करता है। वह इल्तुतमिश का गुलाम था। वह अपनी ताकत से सेनापति हुआ था। विजय सिंह रजिया को प्यार नहीं करता है। वह राजपूत राजकुमारी को प्यार करता है। पार्ट की दृष्टि से बख्तियार का पार्ट बड़ा ही कठिन है। विजय सिंह का पार्ट अच्छा है और वह रोमान्टिक नायक है। उम्र और चेहरे की दृष्टि से वह पार्ट मुझे ही लेना पड़ता। बख्तियार का पार्ट रीतू बाबू को देना पड़ता। यह मुझे पसन्द नहीं आया। इसके अलावा, बाद में सोचकर देखा है—और भी कारण थे। तब हम लोगों का एकाध साल का प्रेम-मिलन था—मंजरी के साथ रीतू बाबू 'लव-सीन' करेगा, यह भी पसन्द नहीं आया था। मोटे तौर पर तय हुआ था कि यह नाटक होगा। रीतू बाबू बेहद खुश हुए। सोचा, बढ़िया पार्ट मिला है। एक दिन रात में हम लोग अगल-बगल लेटे थे, मंजरी ने एकाएक कहा, 'सुनो।' मैंने कहा, 'क्या?' उसने कहा 'मुझे रजिया नाटक अच्छा नहीं लग रहा है। उसे बन्द कर दूसरा करो।' पूछा, 'क्यों?' बोली, 'अजीब-अजीब काण्ड है! बहुत ही भद्दा। खून-खराबा, मुसलमानी ऐतिहासिक काण्ड लोग समझ नहीं पायेंगे। इसके अलावा रीतू बाबू का पार्ट बड़ा है। नहीं-नहीं। सबसे बुरा क्या लगता है, जानते हो? रजिय विजय सिंह को—यानी मैं तुम्हें प्यार करती हूँ और विजय सिंह रजिया को प्यार नहीं करता, उससे घृणा करता है। मुझे बड़ा ही बुरा लग रहा है। तुम्हें नहीं लग रहा?' मैंने कहा, 'लग रहा है। इसके अलावा रीतू बाबू बख्तियार की भूमिका में उतर कर तुम से

प्रेम-निवेदन करेगा। कहेगा—'मैं हूँ तुम्हारा क्रीतदास अर्थ-मूल्य से नहीं, तुम्हें प्यार कर बेच दिया है अपने को, तुम्हारे चरण-प्रान्त में। तुम्हारा पिता देखकर शौर्य-वीर्य मेरा कर गया स्वतंत्र मुझे, राज्य-खण्ड, रूपसी राजकुमारी को देना चाहा था पुरस्कार। मैंने लिया नहीं। जानती हो, क्यों? इसका कारण तुम थी, सुलतान-नन्दिनी—सुलताना रजिया—इसका कारण थी तुम। बहिश्त की हूर परी किसी के प्रलोभन से तुमसे नहीं चाहता मन जाना दूर। देवी, तुम बैठी रहो दिल्ली मसनद पर, मैं निहारता रहूँ तुम्हारे मुख को बैठे-बैठे दूर चन्द्र का रूप चकोर की नाईं।' यह मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। मंजरी हँस दी थी। साथ-साथ मैं भी।'

अलका हँस पड़ी—अन्तर से ठेलकर बाहर निकाली हँसी जैसी वह हँसी थी। गोरा बाबू ने भौंह सिकोड़कर उसकी ओर देखा और कहा, 'हँस क्यों पड़ी?'

अलका बोली, 'बड़ी मजेदार बात है।'

गोरा बाबू बोला, 'यह मजा समझना मुश्किल है सखी। वरना हँसती नहीं।'

'समझ नहीं रही हूँ?' यह सवाल कर अलका ने ठहरी हुई निगाह से उसके चेहरे की ओर देखा।

'समझती हो?' गोरा बाबू हँस पड़ा।

'न समझती तो दल छोड़ भाग कर आती ही क्यों? जब छोड़ा उस समय तुमने यह नहीं कहा था कि तुम भी चले आओगे। हालांकि नौकरी छोड़ना उस समय मेरे लिए मँझधार में भटकना ही था। छोड़ा इसलिए कि मेरा मोहिनीमाया का पार्ट छीन लिया गया था। वह पार्ट मुझे बहुत अच्छा लगा था। अगर कोई दूसरा प्रवीर की भूमिका में उतरता तो मैं उस प्रकार मोहिनीमाया का पार्ट करती, या कर सकती थी?'

गोरा बाबू खिलखिला कर हँस पड़ा और अलका को बाँहों में भर प्यार करते हुए कहा, 'शैतान कहीं की!'

'और तुम? बाप रे, कैसी थी वह प्रवीर की आँखों की दृष्टि! लेकिन मंजरी ने पकड़ लिया था।'

एकाएक गंभीर होकर गोरा बाबू ने कहा, 'मंजरी अगर इतनी ईर्ष्या जाहिर नहीं करती तो हो सकता था—'

जरा सोचने के बाद बोला, 'तो मैं भी एक ही बात में छोड़कर नहीं आ पाता। तुम पहले दिन से ही मुझे अच्छी लगी थी।'

अलका ने हँसकर कहा, 'बहाना खोज रहे थे?'

'ऐसा कह सकती हो। तब हाँ, आकर्षण तुम्हारी ओर से भी था और यह तुम अस्वीकार नहीं कर सकती।'

अचानक बाहर से आगन्तुक का आभास पाकर दोनों चकित हो उठे। फ्लैट का कालिंग बेल बज उठा। अलका उठकर खड़ी हो गयी और बोली, 'बाप रे,

सज्जन इसी बीच आ गये।' कलाई की घड़ी देखकर बोली, 'अभी साढ़े पाँच बज रहे हैं। साढ़े छह बजे आने की बात है।' उसने गोरा बाबू के चेहरे की ओर देखा।

गोरा बाबू उठकर खड़ा हो गया और बोला, 'आओ घर में जो कुछ है उसी से स्वागत-सत्कार किया जायेगा। नौकर से कहो कि अच्छा राजभोग ले आये। भले ही केक-पेस्ट्री न हो, मगर बङ्गाल का रसगुल्ला, राजभोग और अलका चौधरी बम्बई के आदमी के लिए कम लोभनीय नहीं होंगे।'

अलका को शर्म लगी, साथ ही साथ वह पुलकित भी हुई। किशोरी की तरह बोल उठी, 'अहा-हा!' यह कहकर झटके से मुड़ गयी और तेज कदमों से उस कमरे में चली गयी। गोरा बाबू बाहर का दरवाजा खोलने के लिए आगे बढ़ा। बाहर के कमरे में ढेर सारी चीजें बिखरी हुई हैं। किसी चीज का आयोजन हो रहा है, यह देखते ही समझ में आ जाता है। गोरा बाबू सरोसामान की ओर देखकर मुसकरा दिया। बम्बई जाने की तैयारियाँ चल रही हैं। प्रोड्यूसर से शर्तनामे पर हस्ताक्षर हो गया है। नारी की वजह से उसका भाग्य बनता-बिगड़ता है, यह उसकी असत्य खोज नहीं है। नयी नारी जीवन में आने से नये भाग्य का आगमन होता है। मंजरी को छोड़ अलका के प्रति उन्मत्त मोह से जिस दिन कोलियारी के यात्रादल के डेरे से चला आया था, उस दिन भी वह विह्वल था। लेकिन कलकत्ता आते ही मून थियेटर में उसे नौकरी मिल गयी। उसे अकेले ही नहीं, अलका को भी नौकरी मिल गयी है। बड़े दिन की मजलिस में मून थियेटर का नया नाटक होने वाला है—ऐतिहासिक नाटक शकारि विक्रमादित्य। उस नाटक में गौरवर्ण दीर्घाकृति गोरा बाबू हूण दलपति है। प्रचण्ड बर्बर! उछल-कूद अट्टहास और निष्ठुर चीत्कार का पार्ट है।

विक्रमादित्य हालांकि नायक है, मगर शक दलपति हुविस्क ही का पार्ट मूल पार्ट है। और एक है कालकाचार्य। दोनों पार्टों में से एक शिशिर कुमार के दिग्विजयी नाटक नादिरशाह के अनुकरण पर है और कालकाचार्य उसी आधार पर चाणक्य और शकुनि का अनुकरण है। कहानी-अच्छी है। विक्रमादित्य का पिता मालव का अधिपति है। बुढ़ापे में कालकाचार्य की तरुणी बहन श्रावस्ती के रूप पर मुग्ध होकर उस पर अत्याचार करता है। प्रतिशोध की भावना ले कालकाचार्य मालवा छोड़कर अपनी बहन के साथ गुजरात की ओर चला जाता है। वहाँ हुविस्क का शरणापन्न होता है। कालकाचार्य विख्यात ज्योतिषी है। इसी गुण के कारण वह हुविस्क का परम विश्वास-पात्र हो जाता है। और गणना करने पर उसे समझ में आता है कि मालव के अधिपति का विनाश होगा। हुविस्क सिर्फ कालकाचार्य की गणना पर ही मुग्ध नहीं हुआ था, श्रावस्ती के सौन्दर्य पर भी मुग्ध था। लेकिन कालकाचार्य ने मना किया था। क्योंकि उसने गणना करके यह बता दिया था कि यह मिलन होने से दोनों का विनाश हो जायेगा। लेकिन हुविस्क दुर्दमनीय व्यक्ति था, वह किसी से भी नहीं डरता था। वह जो चाहता था वह होना ही चाहिये। इसके चलते चाहे जो हो। कालकाचार्य से उसने कहा था, 'मृत्यु? मृत्यु से कौन डरता है? मृत्यु-भय से अमृत-मदिरा का जो नहीं

करता पान मृत्यु क्या देती है उसे निष्कृति ?' वह अट्टहास कर उठा था। कालकाचार्य श्रावस्ती को सुदूर वन मे अपने शिष्य अरण्य-अधिवासी शबर राजा के पास रख आया था और कहा था, 'इसका तुम अपनी लड़की की तरह पालन करो। तुम्हारा कल्याण होगा।' वहाँ उसके देवता की पुजारिनी बना कर चला आया था। वह देवता के सामने देवदासी की तरह अपने नृत्य-गीत से उसकी पूजा करती थी। लेकिन भाग्य-चक्र विचित्र होता है। मालव को जीत कर मालवाधिपति की हत्या कर दी और उसके बाद वन मे शिकार करने के लिए जाने पर श्रावस्ती पर पुनः उसकी नजर पड़ी। बातचीत के दौरान दोनों ने कहा, 'मृत्यु की अपेक्षा प्रेम महान है। राज्य से प्रेम बड़ा होता है।' श्रावस्ती ने कहा, 'प्रेम देवता से भी बड़ा होता है।' उसके बाद हुविस्क श्रावस्ती को उज्जयिनी ले आया। श्रावस्ती को पाकर वहाँ वह प्रमत्त हो गया। नृत्य, गीत, देह विलास में डूब गया। उदाहरण देखकर शक लोग भी अनुशासनहीन और व्यभिचारी हो गये। इसी बीच युवक विक्रमादित्य ने उज्जयिनी के अत्याचार-पीड़ित प्रजा जनों को संगठित-एकत्रित कर विद्रोह कर दिया। शक लोग पराजित हुए। राज प्रासाद के प्रवेश-द्वार पर विक्रमादित्य नग्न कृपाण लेकर खड़ा हुआ। उस समय भी हुविस्क श्रावस्ती को बाहुओं में भर कर मधुपान कर रहा था और सुख का सपना देख रहा था। शोरगुल से जब उसे चेतना आयी तब विद्रोही नगर में प्रवेश कर चुके थे। हुविस्क और श्रावस्ती दोनों ने उठ कर अस्त्र धारण किया। अचानक श्रावस्ती ने कहा, 'नही।'

'नही क्या ?'

'युद्ध नही।'

'फिर ?'

'मृत्यु।'

'हाँ मृत्यु। अपने कृपाण से दो तुम मेरा वक्ष भेद कर। मेरे कृपाण से हो जाये तुम्हारा वक्ष विदीर्ण। आओ, आज हम इस परम लग्न मे करें अग्नि-नृत्य।'

अलका ने श्रावस्ती का पार्ट किया था।

तीन दृश्यों का पार्ट था। एक दृश्य में विरक्त श्रावस्ती। दूसरे दृश्य में वन में देवताओं के सामने नृत्य और हुविस्क से साक्षात्कार। अन्तिम दृश्य में मृत्यु। लेकिन उसी में अलका ने काफी नाम कमा लिया था। खासतौर से लास्य नृत्य में।

बंबई का एक फिल्म-प्रोड्यूसर अभिनय देखने आया था। गोरा बाबू के अभिनय पर मुग्ध होकर उसे बंबई ले जाना चाहा था। उस पुस्तक का कापी राइट भी उसने खरीद लिया है, हिन्दी में फिल्म बनायेगा। गोरा बाबू ने कहा था, 'मैं जा सकता हूँ, मगर श्रावस्ती के पार्ट के लिए अलका को भी लेना होगा।' हँसकर कहा था, 'शी इज माई स्विटी। उसे छोड़कर मैं जा नही सकता।'

प्रोड्यूसर ने हँसकर कहा था, 'ठीक है। ओके। लेकिन श्रावस्ती के रोल

लिए नहीं । वह पार्ट बंबई की ब्यूटी को देना पड़ेगा । उनके लिए एक छोटा-सा नाच-गाने का पार्ट बनाया जायेगा ।'

अनुबंध पर हस्ताक्षर हो चुका है—दो वर्षों का अनुबंध है । कंपनी का दो वर्षों के लिए स्थायी आर्टिस्ट होकर रहना पडेगा । वेतन बहुत अधिक है । गोरा बाबू को पहले साल आठ सौ रुपया महावार मिलेगा । दूसरे वर्ष एक हजार । अलका को पहले वर्ष चार सौ और दूसरे वर्ष पांच सौ । इसी बीच नयी नारी उसके लिए नया भाग्य लेकर आयेगी—यह सत्य जैसे अचानक उसके सामने प्रकट हो गया । आँखों के सामने रात-दिन पड़ा हुआ एक शीशे जैसा पत्थर अकस्मात् एक नये आलोक के संपात से झलमला उठा और पता चला कि यह शीशा नहीं, हीरा है । घर के अन्दर बिखरी हुई चीजें बंबई जाने की तैयारियाँ हैं । कल शाम से लेकर आज एक बजे तक सरो-सामान की खरीदगी हुई है । अब सब संवारने और बाँधने का काम नहीं हुआ है । नये सूटकेस से शुरू कर ढेर-सारा सामान खरीदा गया है । बम्बई और कलकत्ते के समाज में बहुत अन्तर है । पुरानी चीजें खराब न होने पर भी सिनेमा-स्टार के उपयुक्त नहीं हैं । इसके अलावा, उत्साह की कोई सीमा नहीं है । भाग्य का दरवाजा दरवाजा क्यों, सिंह द्वार —जब खुल गया है तो प्रवेश करने के समय दीन-हीन व्यक्ति की तरह प्रवेश क्यों करेगा ? कलकत्ते को भारत के शिल्प-साहित्य और अभिनय का सांस्कृतिक तीर्थ स्थल कहा जा सकता है । बम्बई में दिखावा है, बेशुमार पैसा है --कहा जा सकता है कि गिलट का कारोबार है, उसकी जगमगाहट सोने से कहीं अधिक है । लेकिन सोने को जब गिलट के बाजार में जाकर अपने सही मूल्य में प्रतिष्ठित होना है तो कम से कम साबुन के पानी से धो-पोंछकर उस पर नया पालिश करा लेना होगा । इन चीजों की खरीदगी के लिए प्रोड्यूसर ने पैसा भी बतौर पेशगी दिया है । सारा सामान अलका को साथ लेकर उससे पसन्द करा कर खरीदा है । अलका की रुचि और पसन्द सचमुच ही परिमार्जित है । गोरा बाबू से भी अधिक परिमार्जित । उन चीजों को देखकर उसके चेहरे पर तृप्ति की एक मुसकराहट खेल गयी । सबसे अच्छे दोनों फ्लास्क हैं । दोनों फ्लास्कों को एक मेज पर रख दिया है । उनमें से एक को उसने हाथ में उठा कर देखा । प्रोड्यूसर के कंधे पर एक फ्लास्क था । वह बहुत बढ़िया था । उससे भी यह अच्छा है ।

घण्टी पुनः बज उठी । फ्लास्क को जतन के साथ रख कर गोरा बाबू आगे बढ़ा और दरवाजा खोलते-खोलते बोला, 'गुड आफ्टर नून । आइये—'

बात अधूरी ही रह गयी । दरवाजे की दूसरी ओर बम्बई का प्रोड्यूसर नहीं है, रीतू बाबू है और उसके साथ योगा मास्टर ।

गोरा बाबू आश्चर्य चकित हो गया । लेकिन वह एक ही क्षण के लिए । दूसरे ही क्षण अपने को सँभालकर बोला, 'अरे आप ! आइये-आइये । मेरे लिए कितने सौभाग्य की बात है ।'

रीतू बाबू हँस पड़ा, 'ऐसा कहीं होता है सर ! आप जहाँपनाह हैं — दीन जन आया है राजेन्द्र के सम्मुख। सौभाग्य की बात मेरे लिए है। मुलाकात होगी, ऐसा सोचा नहीं था।'

योगा मास्टर बोला, 'नमस्कार सर।'

'नमस्कार। आओ-आओ। क्या हाल-चाल है तुम्हारा ?'

'मैं सर, निमन्त्रण का भोज खाने आया हूँ। सोने में सुगन्ध इसी को कहा जाता है।' यह कहते-कहते हाथ जोड़कर बोला, 'मैं सर गया-गुजरा ब्राह्मण हूँ। शादी का भोज नहीं मिलेगा सर ?'

रीतू बाबू ने डाँटा, 'ऐ योगा मास्टर ! क्या बोल रहे हो ? इसीलिए भले आदमी की तरह मेरे साथ हो लिए थे ?'

गोरा बाबू 'हा-हा' कर हँसने लगा। बोला, 'जाने दीजिये। योगा को मैं पहचानता हूँ। क्या खाओगे, बताओ ? मुरगे की टाँग का कटलेट पर मैं है। खाओगे ?'

'मुरगे की टाँग ! राधा माधव—'

'तो फिर दक्षिणा लेते जाओ—चार आना भोजन-दक्षिणा। दो चिलम गाँजा हो जायेगा। कहो, ठीक कह रहा हूँ न ? या फिर अपने नौकर को बुलाऊँ और गरदन पर हाथ रखवा कर बाहर निकाल दूँ ?'

उसके बाद एकाएक अत्यन्त कठोर स्वर में गोरा बाबू ने कहा, 'गेट आउट, गेट आउट, गेट आउट—आई से। निकल जाओ—'

रीतू बाबू बोला, 'यकीन कीजिये, वह इस मतलब से—'

गोरा बाबू ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'आप न होते तो शायद मैं इस पर यकीन कर लेता। लेकिन आप—। आपको मैं पहचानता हूँ मास्टर साहब।'

'प्रोप्राइट्रेस को इसके बारे में जरा भी पता नहीं है। ईश्वर की कसम !'

'कसम खाने की जरूरत नहीं है। मंजरी पर उतना विश्वास मुझे है। वह बात जाने दीजिये। यह बताइए कि दल कैसा है, दल कैसे चल रहा है ?'

'दल ! आप हो नहीं हैं—'

'इससे क्या ! एक राजा जाता है तो दूसरा राजा चला आता है। राणा लाहिड़ी कैसा आदमी है ? नाम सुन चुका हूँ। मबीर का पार्ट कैसा किया है ?'

'किया है। तब हाँ, न्यू स्कूल का है न। असुविधा हो रही है। जिद्दी है। अपना तौर-तरीका नहीं छोड़ेगा। तब बड़ा ही नियम का पाबन्द। शराब नहीं पीता है, सिगरेट नहीं पीता है।'

'अच्छी बात है। सुना है, देखने में भी अच्छा है।'

'सो है। खासा अच्छा खूबसूरत। अगर टिक जाये तो—'

'टिका लीजिये। महिला-यात्रा दल है—किसी के साथ बाँध दें।'

रीतू बाबू ने चेहरे की ओर देखा। ठीक इसी क्षण अलका आकर खड़ी हो गयी।

लिए नहीं। वह पार्ट बंबई की ब्यूटी को देना पड़ेगा। उनके लिए एक छोटा-सा नाच-गाने का पार्ट बनाया जायेगा।'

अनुबंध पर हस्ताक्षर हो चुका है—दो वर्षों का अनुबंध है। कंपनी का दो वर्षों के लिए स्थायी आर्टिस्ट होकर रहना पड़ेगा। वेतन बहुत अधिक है। गोरा बाबू को पहले साल आठ सौ रुपया महावार मिलेगा। दूसरे वर्ष एक हजार। अलका को पहले वर्ष चार सौ और दूसरे वर्ष पांच सौ। इसी बीच नयी नारी उसके लिए नया भाग्य लेकर आयेगी—यह सत्य जैसे अचानक उसके सामने प्रकट हो गया। आँखों के सामने रात-दिन पड़ा हुआ एक शीशे जैसा पत्थर अकस्मात् एक नये आलोक के संपात से झलमला उठा और पता चला कि यह शीशा नहीं, हीरा है। घर के अन्दर बिखरी हुई चीजें बंबई जाने की तैयारियाँ हैं। कल शाम से लेकर आज एक बजे तक सरो-सामान की खरीदगी हुई है। अब तब संवारने और बांधने का काम नहीं हुआ है। नये सूटकेस से शुरू कर ढेर-सारा सामान खरीदा गया है। बम्बई और कलकत्ते के समाज में बहुत अन्तर है। पुरानी चीजें खराब न होने पर भी सिनेमा-स्टार के उपयुक्त नहीं हैं। इसके अलावा, उत्साह की कोई सीमा नहीं है। भाग्य का दरवाजा दरवाजा क्यों, सिंह द्वार—जब खुल गया है तो प्रवेश करने के समय दीन-हीन व्यक्ति की तरह प्रवेश क्यों करेगा? कलकत्ते को भारत के शिल्प-साहित्य और अभिनय का सांस्कृतिक तीर्थ स्थल कहा जा सकता है। बम्बई में दिखावा है, बेशुमार पैसा है—कहा जा सकता है कि गिलट का कारोबार है, उसकी जगमगाहट सोने से कहीं अधिक है। लेकिन सोने को जब गिलट के बाजार में जाकर अपने सही मूल्य में प्रतिष्ठित होना है तो कम से कम साबुन के पानी से धो-पोंछकर उस पर नया पालिश करा लेना होगा। इन चीजों की खरीदगी के लिए प्रोड्यूसर ने पैसा भी बतौर पेशगी दिया है। सारा सामान अलका को साथ लेकर उससे पसन्द करा कर खरीदा है। अलका की रुचि और पसन्द सचमुच ही परिमार्जित है। गोरा बाबू से भी अधिक परिमार्जित। उन चीजों को देखकर उसके चेहरे पर तृप्ति की एक मुसकराहट खेल गयी। सबसे अच्छे दोनों फ्लास्क हैं। दोनों फ्लास्कों को एक मेज पर रख दिया है। उनमें से एक को उसने हाथ में उठा कर देखा। प्रोड्यूसर के कंधे पर एक फ्लास्क था। वह बहुत बढ़िया था। उससे भी यह अच्छा है।

घण्टी पुनः बज उठी। फ्लास्क को जतन के साथ रख कर गोरा बाबू आगे बढ़ा और दरवाजा खोलते-खोलते बोला, 'गुड आफ्टर नून। आइये—'

बात अधूरी ही रह गयी। दरवाजे की दूसरी ओर बम्बई का प्रोड्यूसर नहीं है, रीतू बाबू है और उसके साथ योगा मास्टर।

गोरा बाबू आश्चर्य चकित हो गया। लेकिन वह एक ही क्षण के लिए। दूसरे ही क्षण अपने को संभालकर बोला, 'अरे आप! आइये-आइये। मेरे लिए कितने सौभाग्य की बात है।'

रीतू बाबू हँस पड़ा, 'ऐसा कहीं होता है सर ! आप जहाँपनाह हैं – दीन जन आया है राजेन्द्र के सम्मुख। सौभाग्य की बात मेरे लिए है। मुलाकात होगी, ऐसा सोचा नहीं था।'

योगा मास्टर बोला, 'नमस्कार सर।'

'नमस्कार। आओ-आओ। क्या हाल-चाल है तुम्हारा ?'

'मैं सर, निमन्त्रण का भोज खाने आया हूँ। सोने में सुगन्ध इसी को कहा जाता है।' यह कहते-कहते हाथ जोड़कर बोला, 'मैं सर गया-गुजरा ब्राह्मण हूँ। शादी का भोज नहीं मिलेगा सर ?'

रीतू बाबू ने डाँटा, 'ऐ योगा मास्टर ! क्या बोल रहे हो ? इसीलिए भले आदमी की तरह मेरे साथ हो लिए थे ?'

गोरा बाबू 'हा-हा' कर हँसने लगा। बोला, 'जाने दीजिये। योगा को मैं पहचानता हूँ। क्या खाओगे, बताओ ? मुरगे की टाँग का कटलेट घर में है। खाओगे ?'

'मुरगे की टाँग ! राधा माधव—'

'तो फिर दक्षिणा लेते जाओ—चार आना भोजन-दक्षिणा। दो चिलम गाँजा हो जायेगा। कहो, ठीक कह रहा हूँ न ? या फिर अपने नौकर को बुलाऊँ और गरदन पर हाथ रखवा कर बाहर निकाल दूँ ?'

उसके बाद एकाएक अत्यन्त कठोर स्वर में गोरा बाबू ने कहा, 'गेट आउट, गेट आउट, गेट आउट—आई से। निकल जाओ—'

रीतू बाबू बोला, 'यकीन कीजिये, वह इस मतलब से—'

गोरा बाबू ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'आप न होते तो शायद मैं इस पर यकीन कर लेता। लेकिन आप—। आपको मैं पहचानता हूँ मास्टर साहब।'

'प्रोप्राइट्रेस को इसके बारे में जरा भी पता नहीं है। ईश्वर की कसम !'

'कसम खाने की जरूरत नहीं है। मंजरी पर उतना विश्वास मुझे है। वह बात जाने दीजिये। यह बताइए कि दल कैसा है, दल कैसे चल रहा है ?'

'दल ! आप ही नहीं हैं—'

'इससे क्या ! एक राजा जाता है तो दूसरा राजा चला आता है। राणा लाहिड़ी कैसा आदमी है ? नाम सुन चुका हूँ। प्रवीर का पार्ट कैसा किया है ?'

'किया है। तब हाँ, न्यू स्कूल का है न। असुविधा हो रही है। जिद्दी है। अपना तौर-तरीका नहीं छोड़ेगा। तब बड़ा ही नियम का पाबन्द। शराब नहीं पीता है, सिगरेट नहीं पीता है।'

'अच्छी बात है। सुना है, देखने में भी अच्छा है।'

'सो है। खासा अच्छा खूबसूरत। अगर टिक जाये तो—'

'टिका लीजिये। महिला-यात्रा दल है—किसी के साथ बाँध दें।'

रीतू बाबू ने चेहरे की ओर देखा। ठीक इसी क्षण अलका आकर खड़ी हो गयी।

'आप !'

'हाँ, मैं। अच्छी हैं न ?'

'हाँ, अच्छी हूँ। बहुत ही अच्छी। बाबुलदा कैसा है ?'

'अच्छी तरह है।'

'मेरा नाम नहीं लेता है ? गाली-गलौज नहीं करता है ?'

रीतू बाबू हँस दिया। बोला, 'नहीं।'

'बैठिये, कटलेट है, ले आती हूँ।'

अलका चली गयी।

'फिर—।'

गिलास हाथ में थामे गोरा बाबू गया और एक गिलास लाकर उसमें शराब डालकर आगे बढ़ाया, 'लीजिये, पीजिये। मंजरी ऑपेरा के 'रजिया' और सत्यवान की जय-जयकार हो। आइए।'

गिलास हाथ में ले गोरा बाबू के गिलास से टकराते हुए रीतू बाबू बोला, 'आगामी शुक्रवार को रजिया की ओपनिङ्ग है। पाइकपाड़ा की राज हवेली में ही। आपको आना होगा। मैं निमन्त्रित करने आया हूँ।'

'जरा ज्यादती-जैसी बात हो जायेगी मास्टर साहब।'

'नहीं, जरा भी नहीं।'

'मंजरी ने भेजा है ? सच-सच बताइएगा ?'

रीतू बाबू ने हँसकर कहा, 'उन्हें इच्छा थी। मगर इस बात की उन्होंने चर्चा नहीं की थी। चर्चा की थी मैंने। उन्होंने कहा है—हाँ।'

जरा खामोश रहने के बाद गोरा बाबू बोला, 'मेरा जाना नहीं हो सकेगा। इसे आउट ऑफ कोश्चन कह सकते हैं।'

'क्यों ? दोनों पुस्तकें तो आपकी ही हैं।'

'मैं बम्बई जा रहा हूँ मास्टर साहब।'

'बम्बई !'

सामने कटलेट का प्लेट रखकर अलका बोली, 'फिल्म का कॉन्ट्रैक्ट हो चुका है। उनका और मेरा दोनों का।'

'अच्छा !'

'देखा नहीं कि सामने के कमरे में सरो-सामान है।'

कंग्रैचुलेशन। बहुत ही अच्छी बात है ! आप लोगों की उन्नति हो।'

गोरा बाबू हँसकर बोला, 'आपके लिए वहाँ कोशिश करूँ ? चलिएगा ?'

'कोई बुरा नहीं होगा। लेकिन—'

'क्या ? 'लेकिन' क्यों ?'

'जानते हैं, इसे छोड़ने से सुख नहीं मिलेगा। साठ वर्ष गुजरने-गुजरने पर है। बत्तीस बरसों से यात्रादल के साथ चक्कर लगा रहा हूँ। भोग की उम्र नहीं है। पर

में यानी अपने डेरे पर नींद नहीं आती है। मजलिस और यात्रा के बगैर ऐसा लगता है जैसे पानी की मछली होकर सूखी जमीन पर चला आया हूँ। अब नयी जिन्दगी से ताल-मेल नहीं बिठा पाऊँगा।'

रीतू बाबू हँसने लगा।

'मैं सर, आतिशबाजी हूँ। खड़ा हो गया हूँ तो थमने का उपाय नहीं है। और नयी नारी मेरे जीवन की नयी बारूद है। समझ रहे हैं ?'

गोरा बाबू हँसने लगा। रीतू बाबू जरा चुप रहने के बाद बोला, 'तो फिर उपाय नहीं है। जाकर प्रोप्राइट्रेस से यही कह दूँगा।'

अलका बोली, 'उनसे एक बात और कह दीजिएगा—'

'उफ् अलका !'

'क्यों नहीं कहूँगी। कहिएगा, मून थियेटर में मैं श्रावस्ती के पार्ट में नाची हूँ। अखबारों में काफी प्रशंसा निकल चुकी है। पढ़ने कहिएगा। फिल्म में भी वही नाच नाचूँगी।'

रीतू बाबू हँस कर बोला, 'वह नाच तो वे भी नाच चुकी है—जना की मोहिनी माया की भूमिका में नाच चुकी हैं। जरा-सा अन्तर था। श्रावस्ती के पार्ट में तुमने उसी की नकल की है। मैं तुम लोगों का विक्रमादित्य देख चुका हूँ।'

'वह सब बात रहने दें मास्टर साहब। जो बीत गयी सो बीत गयी।'

'हाँ, यही अच्छा है। जो जा चुका है उसे जाने दो और जो आया है उसे आने दो। अफसोस मत करना। अच्छा, मैं चलता हूँ। आशीर्वाद दे रहे हैं न ? नाटक आपका है, दल का गठन भी शुरू में आपने ही किया था।'

'मैं बहुत-बहुत आशीर्वाद दे रहा हूँ। भय की कोई बात नहीं है। मंजरी रजिया और आप बख्तियार रहिएगा—बस, यही दो पार्ट खींचकर सफलता की ओर ले जायेगा। इसके अलावा स्टाफ अच्छा है। शेफाली को लाकर अच्छा किया है।'

रीतू बाबू उठ कर खड़ा हो चुका था। उसे विदा करने के लिए दरवाजे तक आकर गोरा बाबू बोला, 'मास्टर साहब—'

'कुछ कह रहे हैं ?'

'हाँ, चलिये नीचे तक चलता हूँ।'

'नहीं-नहीं। कष्ट क्यों कीजिएगा ?'

'इसमें कष्ट की कौन-सी बात है। चलिये बातें करते-करते ही चलता हूँ।'

कई सीढ़ियाँ उतर कर गोरा बाबू एकाएक खड़ा हो गया और बोला, 'मंजरी से कहिएगा—'

रीतू बाबू उसके चेहरे की ओर देखने लगा। गोरा बाबू बोला, 'स्वयं को—कहने का मतलब है कि स्वयं को संयत नहीं रख सका।'

गोरा बाबू हँसने लगा।

'यह क्या कहने लायक बात है जहाँपनाह ?'

'तो फिर यह कहिएगा कि मैंने उसे आजाद कर दिया है। वह—'

'इस बात को गरदन पर लाद कर कोई उल्लू या शैतान ही ले जा सकता है। आप खत डाल दीजिएगा।'

'ठीक है, वही करूँगा। मैं वापस आ रहा हूँ। विश यू सक्सेस। तब हाँ, आपसे एक बात कह जाता हूँ। वह गीत याद कर मुझे दोष वगैरह जो देने को होगा, दीजिएगा। वही गीत—काल स्रोत में बह-बह कर भैया—तुम हम यहाँ आये हैं मिलकर—'

रीतू बाबू बोला, 'मेरे पास हँस लो दो दिन। किताब नहीं है—गीत और भी अधिक अच्छा है। जो खुशी हो वही करना जहाँपनाह, अफसोस नहीं करो जहाँपनाह। 'पाप-पुण्य है अर्थहीन वाक्य-विन्यास, जहाँ जैसा होता है वहाँ प्रतिध्वनि वैसी ही जगती है।' सारा कुछ असत्य है। बिलकुल झूठ।'

हँस कर गोरा बाबू ने कहा, 'अमृत का दिवा-स्वप्न रात की गहरी निद्रा-मृत्यु आकर पोंछ-पाछ कर ले जाती है।'

रीतू बाबू ने कहा, 'नमस्कार।'

सोलह

मंजरी ऑपेरा का रजिया आशा के अनुकूल जमा नहीं। तब हाँ, सावित्री-सत्यवान को आशातीत सफलता मिली। सावित्री-सत्यवान जिस तरह जमा वैसा जमने वाला नाटक जना के अतिरिक्त कोई दूसरा नहीं है। हालाँकि उस नाटक पर किसी को भरोसा नहीं था। रजिया को सफल बनाने की कोशिश की कोई इन्तहा नहीं थी। मंजरी ऑपेरा ने खर्च वगैरह भी किया था। पोशाक वगैरह जो था वह सब पौराणिक नाटक का था। ऐतिहासिक नाटक की पोशाक नहीं थी। काफी-कुछ खर्च कर उन लिबासों को तैयार कराया गया था। दल के फण्ड के रुपये से काम नहीं चला था—मंजरी ने अपना पैसा लगाया था। करीब-करीब छह-सात सौ रुपया। तमाम नयी पोशाक बनवायी गयी। दल को कलकत्ता लौटा कर पूरे एक महीने तक रिहर्सल कराया गया। मोटी बात यह कि किसी भी कोशिश को बाकी नहीं रखा गया। सबको लग रहा था कि रिहर्सल जम रहा है। रीतू बाबू ने कहा था, 'यह मार नहीं खा सकता है प्रोप्राइट्रेस। यह आपका सबसे श्रेष्ठ नाटक होगा, देख लीजिएगा।'

मंजरी ने हँस कर कहा था, 'ऐसा नहीं होगा तो दल नहीं चलेगा मास्टर साहब। भरोसा आप पर है। मुझे बीच-बीच में भय लगता है।'

'भय की कोई बात नहीं है। आप देख लीजिएगा। फर्स्ट सीन से ही नाटक बुलन्दी पर रहेगा। गोरा बाबू सचमुच ही श्रेण्य नाटककार थे। नाटक की भाषा कितनी अच्छी है! थियेटर के नाटक से बहुत अधिक जमने वाला है। नेपथ्य में चीत्कार होता है, बाघ-बाघ-बाघ! इसी से मजलिस में चुप्पी छा जायेगी। उसके बाद मेरा कण्ठ स्वर है। मैं अपनी आवाज आसमान तक पहुँचा दूँगा—होशियार! उसके बाद आपकी खिलखिलाहट भरी हँसी है। राणा—विजय सिंह आकर तब मजलिस में प्रवेश कर रहा है।—'यह क्या, यह क्या, साक्षात् यम के जैसा भीषण शार्दूल वृक्ष की ओट से छलाँग लगाने को उद्यत है। अरे-अरे कुटिल-चरित्र पशु, पीछे से आक्रमण कर रहे हो? जानते नहीं तुम क्षत्रिय वीर विजय सिंह को? आओ पशु, आओ। यह क्या! किसने कहाँ किया बरछे से आघात! एक किशोर बालक कौतुक के साथ सिंह पर आघात कर उसके सामने खड़ा है। नहीं है भय उसे आहत शार्दूल का। आहत शार्दूल है साक्षात् यम का दूत। परन्तु करूँ क्या! अस्त्र छोड़ने का नहीं है उपाय।—अरे-अरे ओ बालक–सावधान! यह क्या! अब हिंस्र पशु छलाँग लगायेगा। क्या करूँ? नहीं है समय। जो होने को है होगा। मैं करता हूँ शरक्षेप। आह् जय एकलिंग। जय अस्त्र गुरु! नरघाती शार्दूल का वक्ष भेद दिया है आमूल। बालक ने भी किया है उस पर असि का आघात।'

मंजरी ने कहा था—'यहाँ रजिया गुस्से में प्रवेश करेगी। लेकिन मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। कृतज्ञता होनी चाहिए। गुस्से में आकर कहेगी—कौन हो तुम उद्धत काफिर नौजवान। मेरे शिकार पर चलाया है बाण! अक्षम्य है तुम्हारा औद्धत्य! लेकिन—

'वहाँ जरा रुक कर, बल्कि दो पग आगे बढ़ कर कहिएगा—जरा हँस कर कहना ही अच्छा रहेगा—लेकिन तुम हो बेजोड़ सुन्दर। बहिश्त की पौरुष सुषमा, एक ही साथ इतना रूप, इतना शौर्य, इतना वीर्य तुमने कहाँ से प्राप्त किया! कितना अमोघ है लक्ष्य भेद! कितना सबल, कितना प्रबल है शराघात! मेरे वक्ष पर शर की गति—वायु ने तरंग-स्पर्श कर बाघ के पंजर को कर दिया विद्ध।

'समझ रही है, इसी में जम जायेगा।'

'उसके बाद ही आप प्रवेश कीजिएगा। हाँ, तब कोई चिन्ता नहीं रहेगी।'

'चिन्ता की बात शुरू से ही नहीं है। राणा अच्छा बोलता है। विजय सिंह का पार्ट खासा अच्छा हो रहा है।'

मंजरी बोली, 'आपके सामने जरा सकपका जाता है। आप जब बख्तियार होकर 'चुप रहो बदतमीज' कहते हुए प्रवेश करते हैं—वह धमकाना बहुत जोर का होता है। रिहर्सल में अभ्यस्त रहने के बावजूद चौंक उठता है। सिर्फ वही नहीं, मैं भी चौंक उठती हूँ। बाप रे, कैसी डाँट-फटकार है!'

वह हँस पड़ी।

रीतू बाबू ने हँस कर कहा, 'उसके पीछे एक छोटी-सी कहानी है। एक बार ट्राम से जा रहा था। मैं जिस सीट पर बैठा था उसके सामने ही एक नामी आदमी बैठे हुए थे। पण्डित और समझदार व्यक्ति। कमल सोम। नाम सुना है न? वे एक मासिक पत्रिका की एक तसवीर देख रहे थे। बड़े ही ध्यान से। तसवीर रजिया की थी। रजिया मसनद पर बैठी है, उसके पैरों के नीचे एक काला बाघ है। देखते-देखते तारीफ करने लगे और पीछे की सीट पर बैठे अपने एक मित्र से बोले, 'इस तसवीर को देखो। बहुत ही अच्छा बनाया है। समझ रहे हो? काला बाघ वह हब्शी है जो रजिया को प्यार करता था। पैरों के नीचे पड़ा हुआ है, और रजिया के एक इशारे पर किसी भी व्यक्ति की गरदन पर छलांग लगाने को तैयार है। या कोई निकट आयेगा तो गरजने लगेगा। समझ रहे हो!' उसी दिन सोचा था, अगर किसी दिन रजिया नाटक का मचन हो और मैं बख्तियार का पार्ट करूँ तो ठीक शेर की तरह ही करूँगा।'

रीतू बाबू हँसने लगा।

'हाँ, हब्शी क्रीतदास, बहुत बड़ा वीर, रजिया पर प्रेम-मुग्ध। लेकिन—'

'लेकिन क्या?'

'सच कहूँ मास्टर साहब, मैं लाहिड़ी से भी ज्यादा नर्वस हो जाती हूँ। कैसा-कैसा—'

मंजरी चुप हो गयी। सम्भवतः मन के भावों को प्रकट करने की उसे भाषा नहीं मिली।

'तो फिर तौर-तरीके में बदलाव ला दूँ? जरा ठण्डा बना दूँ?'

'आज रिहर्सल करके देखिये न!'

उस दिन रिहर्सल नहीं जमा। सबने कहा, 'मास्टर साहब, आज आप दूसरी तरह का क्यों कर रहे हैं?'

मंजरी ने भी कहा, 'नहीं मास्टर साहब, जैसा कर रहे थे वैसा ही कीजिये। यह जँच नहीं रहा है।'

अभिनय की रात मंजरी रजिया की भूमिका में प्रथम दृश्य में ही मर्दाने वेश धारण कर अपनी सेना ले दिल्ली की ओर प्रस्थान कर रही है। वहाँ वह भाई और सौतेली माँ को गिरफ्तार कर मसनद पर बैठेगी। उसका सबसे बड़ा बल है, उसका दुर्दमनीय साहस। नारी होकर भी उसमें पुरुष जैसा विक्रम है और उसके साथ है वह हब्शी मनसबदार। उसे सम्राट इल्तुतमिश के अनुग्रह के कारण गुलामी से मुक्ति मिल गयी है, लेकिन वह रजिया के लोभ के कारण खरीदे हुए गुलाम जैसा ही रह रहा

है। जागीर मिलने पर भी उसने इसलिए नहीं स्वीकार की कि उसे रजिया से दूर रहना पड़ेगा। हब्शी बख्तियार, दुर्दमनीय, दुःसाहसी और प्रचण्ड शक्तिशाली है। दिल्ली के सभी अमीर-उमरावों ने रजिया को बुलावा भेजा है। रजिया मन में उल्लास लिए चली जा रही है। जंगल के रास्ते में एकाएक एक बाघ सामने आ गया। वह बाघ आगे बढ़ते हुए विजय सिंह पर पीछे से छलांग लगाने को तैयार है। रजिया दुःसाहसी थी, खिलखिला कर हँस पड़ी और बाघ पर आक्रमण किया। मजलिस में राजपूत कुमार विजय सिंह ने देखा, एक किशोर बालक उस बाघ से युद्ध कर रहा है जो विजय सिंह पर ही आक्रमण करने को तैयार था। उसने तीर चला कर बाघ का सीना छलनी कर दिया। बालक वेशधारी रजिया ने आकर कहा, 'तुम कौन हो उद्दंत काफिर युवक, मेरे शिकार पर किया है शराघात! परन्तु तुम हो अपूर्व सुन्दर।'

मंजरी मजलिस में प्रवेश करेगी। उसके पहले उसने हाथ जोड़ कर देवता और श्री रामकृष्ण परमहंस देव को प्रणाम करने के बाद रीतू बाबू को प्रणाम किया। अचानक उसके कानों में शब्दों के टुकड़े आये। शोभा शेफाली से कह रही है, 'काले बाघ की निगाह की ओर देखो। ऐसा लगता है जैसे निगल जायेगा।' यह कह कर वह हँस दी।

मंजरी तब प्रणाम करने के बाद उठ कर खड़ी हो चुकी थी। उस बात से सभी औरतें हँस रही थीं। शोभा रीतू बाबू से हमेशा रंग-रस की बातें करती है, हँसी-मजाक करती है—सब ने सोचा था कि रीतू बाबू कोई उत्तर देगा। रीतू बाबू कठिन और निर्मम दृष्टि से शोभा की ओर देख रहा है। वह एक ही शब्द बोला और वह भी निष्ठुर स्वर में, 'शोभा।' सब लोग चौंक पड़े। यह बात इतनी अस्वाभाविक थी, साथ ही रीतू बाबू की दृष्टि और स्वर से इतनी कठोरता उमड़ रही थी कि पूरा वेश-मन्दिर अकस्मात् दो-चार सेकण्डों के लिए आश्चर्य चकित हो गया—एक चुप्पी-सी दौड़ गयी। मंजरी के भी आश्चर्य की कोई सीमा न थी। रीतू बाबू की आँखों से क्रोध और अवज्ञा छलक रही थी। शोभा का चेहरा मलिन और पीला पड़ गया। मंजरी भी कैसी-कैसी हो गयी। आश्चर्य के नशे ने जैसे उसे अभिभूत कर लिया हो।—यह क्या! मास्टर साहब इतने क्रोध में आ गये। बात क्या है!

गोपाल तेज कदमों से वेश-मन्दिर के अन्दर आया और चिल्ला उठा, 'बाघ-बाघ-बाघ—'

नेपथ्य के सलाप को जैसे उसी ने शुरू कर दिया—तत्क्षण स्विच दबाकर मशीन चालू करने की तरह यात्रा दल का यंत्र मुखर उठा। कई व्यक्ति चिल्ला उठे, 'बाघ-बाघ-बाघ।' उसी वक्त रीतू बाबू को नेपथ्य से आवाज आयी —'होशियार!' लेकिन अब भी रीतू बाबू स्वयं को जैसे संयत नहीं कर सका है। उसे चिल्लाने में देर हो गयी। मंजरी की खिलखिलाहट भी बेजान जैसी थी। मजलिस में प्रवेश करते ही अड़चन का सामना करना पड़ा। दरी में पैर अटक गया। गिर-जाती, मगर राणा

लाहिड़ी मजलिस में था। विजय सिंह के वेश में वह बाण चला कर शेर को घायल करने के अभिनय के दौरान सामने की ओर झुककर कई पग आगे बढ़ आया था। उसने मंजरी की बाँह थाम ली। इस दुर्घटना के कारण मंजरी केवल कुछ क्षणों के लिए अभिभूत जैसी नहीं हुई बल्कि संपूर्ण दृश्य में स्वयं को प्रतिष्ठित नहीं कर सकी। वह दर्शकों की ओर देख नहीं पा रही है। लगा, वे जैसे हँस रहे हैं। विजय सिंह वेशधारी राणा लाहिड़ी की आँखों से आँखें नहीं मिला पा रही है। हालांकि पूरे दृश्य में रजिया उद्धत चंचल बालक की तरह विजय सिंह के साथ कौतुक कर रही है। बीच-बीच मे खिलखिलाकर हँसती है, बीच-बीच मे उद्धत होकर बनावटी क्रोध से उसे डाँटती-फटकारती है। इन दो स्थितियों के बीच वह सही मानी में स्वच्छन्द होकर जान नहीं ला सकी। उसके बाद बख्तियार वेशधारी रीतू बाबू आया। रीतू बाबू का ताल भंग हो चुका है। अपने मन का क्रोध वह तब भी सँभाल नहीं सका था। पार्ट के दर्मियान उसका क्रोध छलक रहा था। रजिया विजय सिंह से कह रही है—'लेकिन तुम अपूर्व सुन्दर हो। बहिश्त की पौरुष-सुषमा, एक ही साथ इतना रूप, इतना शौर्य, इतना वीर्य तुमने कहाँ से प्राप्त किया?'

यह बात सुनकर बख्तियार क्रोधित हो गया है, क्योंकि मन ही मन वह रजिया के प्रेम का आकांक्षी है। लेकिन फिर भी उसका क्रोध मात्रा से अधिक हो गया। बिल्लाहट की मात्रा अधिक हो गयी। एक मात्र राणा लाहिड़ी ने अच्छा पार्ट किया है। उससे दृश्य जितना जमना चाहिए था, उतना जमा नहीं।

दृश्य समाप्त कर वेश-मन्दिर में आते ही मंजरी ने कहा, 'छिः छिः छिः! पैर इस तरह अटक गया!'

रीतू बाबू तब भी गम्भीर था। चेहरे पर गम्भीरता लिये ही वह वेश-मन्दिर में आया था। मंजरी के साथ ही वह मजलिस से बाहर आया है। पीछे से मंजरी की बात सुन कर उसने कहा, 'सब बंटाधार कर दिया इस शोभा ने। खैर, कुछ नहीं हुआ है, घबराइएगा नहीं। प्ले नेक्स्ट सीन में ही जम जायेगा। यह नाटक बिना जमे रह नहीं सकता। मगर—'

रीतू बाबू चुप हो गया। उसकी आवाज में भारीपन उतर आया है। मंजरी ने उसके चेहरे की ओर देखा। रीतू बाबू का चेहरा तमतमाया हुआ है। अब राणा लाहिड़ी मजलिस से लौटकर आया। द्वितीय दृश्य के ऐक्टर वेश-मन्दिर से निकल चुके हैं। वहाँ आते ही रीतू बाबू और मंजरी को आमने-सामने खड़े होकर बातचीत करते देख राणा लाहिड़ी ठिठककर खड़ा हो गया। रीतू बाबू ने कहा, 'खैर, तुमने इज्जत बचा ली।'

राणा बोला, 'हाँ, जरा गड़बड़ी हो गयी। उफ् वे ऐसा गिर पड़ती कि—'

मंजरी ने एक बार उसके चेहरे की ओर देखा और उसके बाद शर्म से सिर झुका लिया। मजलिस का उसका वह संकोच अब भी दूर नहीं हुआ है। राणा बोला, 'आपको चोट तो नहीं लगी ?'

मंजरी ने शर्म के साथ सिर झुकाते हुए कहा, 'नहीं।'

'दरी उस तरह कैसे मुड़ गयी ? यह सब किसी को देखना चाहिए था।'

मंजरी बोली, 'दरी ठीक-ठीक मुड़ी नहीं थी। मैं अनमनी थी, और जल्द-बाजी में भी थी। पैर कैसे अन्दर चला गया, समझ नहीं सकी।

'मुँह के बल गिर जाती। बिना उस तरह पकड़े मेरे लिए कोई उपाय नहीं था।'

रीतू बाबू अनमना जैसा ही खड़ा था। यह बात कान में जाते ही उन लोगों की ओर मुड़कर बोला, 'जरा आंकवर्ड हो गया। उससे भी कुछ नहीं होता अगर स्थिति को सँभाल लेते।'

राणा लाहिड़ी की भौंहों पर बल पड़ गये। बोला, 'स्थिति को कैसे सँभाल लेता ?'

रीतू बाबू बोला, 'तुम कह सकते थे कि बालक तुम पागल हो। फिर भी पागल की तरह दौड़ रहे हो ?'

'उसके बाद ? वे ?'

'वे ठीक-ठीक इसका उत्तर गढ़ लेतीं।'

मंजरी ने कहा, 'हो सकता था, गढ़ लेती। कहती—'मामूली चोट है। लेकिन कौन हो तुम उद्धत काफिर नौजवान ? मेरे शिकार पर किया है शराघात ?' यह कोई बुरा नहीं होता। लोग न तो हँसते और न ही सिसकारी देते। यह लेकिन बड़ा—'

'आलं सर्व सब माटी,' यह कहते हुए बाबुल वेश-मन्दिर में आया। वह शुरू से ही अब तक बाहर मजलिस के किनारे भीड़ में खड़ा था।

'क्या हुआ ? माटी के मानी ?'

बाबुल लिबास के एक बक्से पर बैठकर बोला, 'फर्स्ट सीन में गड़बड़ी—एक्सिडेन्ट ! आपने बिग थ्रस्ट, लाउड-लाउडर-लाउडेस्ट कर कंक्रीट देने के फेर में ज्यादा सीमेंट दे दिया। अब उस क्रेक से वाटर लिकिंग। पानी टपक रहा है। ऑल नर्वस। गला डैम्प हो गया है। वाटर बन कर लिकिंग आउट।'

रीतू बाबू बोला, 'ठीक है। दूसरे सीन में शेफाली और राणा अंदर हैं। लव-सीन है। गीत है। उसके बाद ही रजिया के द्वारा मसनद पर अधिकार जमाना। विजय सिंह बाधा देने आ रहा है। आकर आश्चर्य में पड़ जाता है। उस जंगल में देखा हुआ बालक बालक नहीं, खुद रजिया भी। बाधा देने के लिए आने पर उसके दल में मिल जाता है। अच्छा सिच्यूएशन है। वहीं से जोर पकड़ने लगेगा। तुम मेकअप कर लो। तुम्हारा भी पार्ट है।'

'मुझे तो फकीरी अल्खाल्लुक पहनना है और बाल-दाढ़ी लगाना है। वन टु थ्री —थ्री मिनट्स—यानी थ्री इनटु थ्री – नौ बार चुटकी बजा कर काम खत्म कर लूँगा। रंग रोगन मैं लगाऊँगा नहीं। आँखों के नीचे काजल की सेड एक तह लगाऊँगा, बस।'

'बस नहीं, उठो।'

'आल राइट। स्टैण्ड अप हो गया। दो भैया दो—दाढ़ी और बाल दो। कहाँ हो—'

रीतू बाबू अपने बक्से पर जा कर बैठ गया। राणा भी चला गया। औरतों के लिए आड़ बनाये गयी जगह में मंजरी भी चली गयी।

प्ले पाइकपाड़ा की राजहवेली में हो रहा था। यहाँ एक विशाल कमरे में वेश-मन्दिर है। दो-चार कुरसियाँ और मेज हैं, मगर मेज पर रंग नहीं रखा जाता है। दाग पड़ जायेगा। इसलिए लिबास के बक्से के एक छोर पर बैठ कर और दूसरे छोर पर मेक-अप का सूटकेस खोलकर रंग लगाने की व्यवस्था की गयी है। शराब पीने की मनाही है। बाहर जाकर छत के किसी अँधेरे कोने में खाना खाना पड़ता है। औरतों के सजने-सवरने की जगह में मंजरी के लिए अलग से कोई खास इन्तजाम नहीं किया गया है। हमेशा से यही नियम चला आ रहा है। वहाँ घुसते ही मंजरी को एक प्रकार के संकोच ने घर दबाया। कभी वह इस तरह की दुर्घटना घटित कर, पार्ट खराब कर वेश-मन्दिर में नहीं घुसी थी। आज पहला मौका है। अपनी जगह पर वह मुरझायी-सी बैठी रही। किसी की ओर उसने नहीं ताका। मगर कुछ लमहों के दरमियान ही उसे अहसास हुआ कि वेश-मन्दिर में अस्वाभाविक चुप्पी घेर रही है।

उसकी लाज की मात्रा जैसे बढ़ गयी। एक बार उसने तिरछी निगाह से देखा। देखकर उसे आश्चर्य हुआ। सबसे पहले उसकी दृष्टि शोभा की तरफ ही गयी। शोभा बैठी है और गुस्से से उबल रही है। उसके चेहरे पर क्रोध का लक्षण स्पष्ट है। बाकी सब लोग खामोश हैं। बुँची सिर झुकाये बैठी है। शेफाली छत की ओर ताक रही है। आशा सामने की ओर ताक रही है। एकमात्र गोपाली के चेहरे पर मुसकराहट है। यह अस्वाभाविक है। गोपाली मुसकराती नहीं है। वह खिल-खिलाकर हँसती है। अब उसने आश्चर्य में आकर सिर उठा कर देखा। उसके बाद पूछा, 'क्या हुआ है?'

किसी ने जवाब नहीं दिया। बाहर से गोपाल ने पुकारा, 'शेफाली, आशा—'

तृतीय दृश्य में उन लोगों का पार्ट है। आशा सखी दल का नेतृत्व करेगी। विजय सिंह की प्रेमिका क्षत्रिय राजकुमारी अरुंधती का उद्यान। वहाँ विजय सिंह विदा लेने आया है। वह दिल्ली जा रहा है। वहाँ इल्तुतमिश का पुत्र, निठल्ला सुलतान मुसीबतों से घिरा हुआ है। इल्तुतमिश की पुत्री रजिया उसे सिंहासनच्युत करने आ

रही है। वह खुद मसनद पर बैठेगी। रजिया के साथ दुर्धय सैनिक हैं। उस पर अमीर-उमराव विरोधी हो गये हैं। उसका कारण सिर्फ सुलतान की अयोग्यता ही नहीं, सुलतान की माँ इल्तुतमिश की एक बाँदी पत्नी की धृष्टता भी है। दृश्य के प्रारम्भ में ही सखियाँ नृत्य-गीत से विजय सिंह का स्वागत कर रही हैं।

गोपाली और आशा उठकर खड़ी हो गयी। जल्दी-जल्दी बाहर चली गयीं।

मंजरी ने पूछा, 'क्या हुआ है गोपाली ?'

गोपाली ने कहा, 'शोभादी—'

यह कहकर वह आत्म-संयम नहीं रख सकी। हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयी। शोभा बोल पड़ी, 'उल्लू, पियक्कड़—और यह कसबी —ये लोग इसी तरह हँसते हैं। तू कसबी है, कसबी। मैं तेरी हर कीर्ति से परिचित हूँ।'

कसबी के विशेषण के तौर पर उसने एक बहुत ही गन्दे शब्द का उच्चारण किया। क्षण-भर में गोपाली की हँसी थम गयी। उसका चेहरा भयकर हो गया। वह बोल पड़ी, 'और तू। तू रोनू बाबू के लिए······। कैसा दिया है ? आज कैसा हुआ है ?'

'और तुझे ? तुझे राणा लाहिड़ी ? देखा है तेरी तरफ ?'

मंजरी में दल की मालकिन होने का भाव जग पड़ा। उसने कहा, 'शोभादी, यह पाकपाड़ा का राजमहल है। यह हम लोगों के मुहल्ले का घर नहीं है और न ही खिलपुर का ऑफिस। चुप रहो।'

'अब मैं तुम्हारे दल में नौकरी नहीं करूँगी।'

गोपाली ने धीमे स्वर में कहा, 'भादुड़ी जी बुला रहे हैं। वहाँ चलोगी ?'

'भीख माँगकर खाऊँगी।'

'गोपाली, शोभा !'

सब लोग चुप हो गये। मंजरी को बेचैनी का अहसास हुआ। लेकिन मालिक का भाव आ जाने से दुर्बलता भी थोड़ी-बहुत दूर हो गयी। शिवनन्दन ने परदे की दूसरी ओर से कहा, 'विन्यासकारी लिबास ले आया है।' ओह ! उसे लिबास बदलना है। अबकी नारी का वेश धारण करना पड़ेगा सुलताना रजिया बालक का वेश त्याग-कर साज-सज्जा करेगी।

'ले आओ।'

मखमल का पेशवाज, बॉडिस और दुपट्टा ! सिर पर ताज। मोती की माला। छाती पर बाँधने के लिए बम्बई का हुक दिया हुआ मखमल का एक टुकड़ा। तिरछी तलवार। सब कुछ नया है। विन्यासकारी सब कुछ सहेज कर दे गया। सजना-सँवरना खुद ही है। बाल खुले रहेंगे। रहेंगे। अब तक उसके बाल अफगानी पगड़ी और तुर्की टोपी के नीचे बँधे थे। टोपी और पगड़ी खोलकर उसने बूँची को पुकारा, 'बूँचीदी, जरा मदद कर दो बहन।'

विन्यासकारी मर्द है। उन लोगों के लिए औरतों को सजाना बहुत ही असुविधा की बात है। अधिकांश तौर पर औरतें ही एक-दूसरी की सहायता करती हैं। खास जरूरत होने पर सजना-सँवरना होने के बाद अगर कोई त्रुटि रह जाती है तो विन्यासकारी को बुलाया जाता है।

बुंची झट से उठकर चली आयी। लिबास की ओर सरसरी निगाह से देखकर बोली, 'पोशाक बहन, बहुत ही अच्छी बनी है। थियेटर से अच्छी।'

मंजरी बोली, 'इस नाटक पर बहुत उम्मीद टिकी है बहन। लेकिन ऐसा अड़चन आ गया कि—'

'वह सब कुछ नहीं है। ठीक हो जायेगा। बाल बिखरे रहेंगे?'

'हाँ। तसवीर में ऐसा ही है।'

'झुप्पा लगाओगी क्या?'

'माथे पर ताज रहेगा। झुप्पा क्या अच्छा लगेगा?'

बुंची ने जरा सोचकर कहा, 'नहीं। तुम्हारे बाल घुँघराले हैं। ताज के चारों तरफ फूल बिखरे रहेंगे। अच्छा लगेगा।'

शोभा उस छोर से बोल पड़ी, 'मुझे तुम हटा ही दोगी?'

'इसके मानी? मैंने यह कब कहा?'

'मुँह से चाहे न कहा हो, इशारे से कहा है। इतने दिनों तक सजने सँवरने के वक्त शोभा के अलावा किसी को नहीं बुलाया था। आज तुमने बुंची को बुलाया।'

गोपाली बोल पड़ी, 'तुमने तो खुद कहा था कि नहीं रहोगी, हट जाओगी।'

'वह इसलिए कि रीतू बाबू ने मुझे सबके सामने इस तरह डाँटा-फटकारा, उस तरह आँख गुरेरकर देखा। मैंने कौन-सा दोष किया था? कैसी दृष्टि थी उसकी! कैसी डाँट-फटकार! जैसे मैं दासी-बाँदी की पार्ट करने वाली तीस-चालीस रुपये की रंगकर्मी होऊँ।'

मंजरी बोली, 'यह सब बात अभी रहने दो। इसके अलावा—'

बीच में ही टोकते हुए शोभा ने कहा, 'इसका इन्साफ होना चाहिए—'

गोपाली बात के बीच में ही बोल पड़ी, 'इन्साफ एकतरफा नहीं होता है। अपना दोष बताना पड़ता है।'

'मेरा क्या दोष है, सुनूँ तो।'

शोभा नरम हो गयी है। इस प्रौढ़ावस्था में उसकी यह नौकरी चली जायेगी तो सचमुच ही उसे भीख माँगकर खाना पड़ेगा या फिर दाई का काम करना पड़ेगा। या फिर उसका जो पेशा है उसकी वजह से पंक-कुण्ड की गहराई में कीड़े-मकोड़े की तरह डुबकी लगानी होगी। इसके अलावा वह मंजरी के घर में किरायेदार है। गोपाली का क्रोध अब भी उसके हृदय में चक्कर काट रहा है। शोभा ने उसे इतनी अश्लील गालियाँ दी हैं कि यह स्थान अगर देव-मन्दिर न होता तो कुत्सित कलह

तमाम गन्दगियां से मुखर हो उठता । उसने कहा, 'कहा नही था तुमने ? काला घ ? कहा नही था कि गोरा वाघ, धारीदार वाघ जंगल में भाग गया, अब हम गों को प्रोप्राइट्रेस के पैरो के नीचे काला वाघ दुम हिला रहा है । मैनेजर हुआ है रद, अब उसकी नजर मालकिन की ओर है । कहा नही था ? बुंचीदी ही बताये के यह बात रीतू वाबू के कान में गयी थी या नही ?'

शोभा की हालत बन्द कमरे में पड़ी बिल्ली जैसी है, वह नाखून और दाँत बाहर निकाले, रोएँ खड़े बिल्ली की तरह मरने-मारने पर उतारू हो गयी । दोनों हाथ उठाकर धृष्टतापूर्ण स्वर में बोल उठी, 'सुना है तो सुनने दो, परवाह नही । ज्यादा से ज्यादा मुझे भगा दिया जायेगा । जो कुछ कहा है, अपनी आँखों से देखा है, महसूस किया है और इसीलिए कहा है । मैं बूढ़ी होने-होने पर हूँ मेरी आँखों को धोखा नही दिया जा सकता । कहा है और फिर कहूँगी । मंजरी ने जब प्रणाम किया था तो वह किस दृष्टि से देख रहा था ? दोनों वक्त मंजरी के घर जाकर कितना सलाह-मशविरा करता था ! मैं क्या समझती नही !'

मंजरी भौंचक-सी सुन रही थी । यह दल की प्रोप्राइट्रेस है, मजलिस में अभिनय चल रहा है । इस समय अगर कोई हंगामा होता है तो वह बड़ी ही गन्दी बात होगी । उनके बीच चलने वाला झगड़ा जब चरम सीमा में पहुँच जाता है तो वह कितना बीभत्स और घिनौना रूप ले लेता है, यह बात उसे मालूम है । धीरज रखने के अलावा दूसरा कोई उपाय नही है । इसके अतिरिक्त उसके मन में एक प्रकार के संदेह की चिनगारी इतने दिनों से धुआँ रही थी । उसे शोभा ने आज निर्लज्ज चीत्कार की फूंक से लहका दिया है । उस लहक से रीतू वावू की भाव-भंगिमाएँ नया रूप ले रही हैं, उसे ऐसा लगा । छाती का अन्दरूनी हिस्सा धड़क उठा । एक प्रकार की चिन्ता तेजी से धड़क कर उसे व्याकुल कर गयी । लेकिन उसने स्वयं ऐसा सोचा नही था । यह ऐसा नही कर पायेगी । नही नही, नही कर पायेगी ।

बुंची आँखें बन्द कर उसे लिबास पहना रही थी । उसने धीमी आवाज में कहा, 'लगता है पागल हो गयी है । तिल को ताड़ बना दिया है । बिलकुल मर्दों जैसा स्वभाव है और क्या !'

मंजरी ने स्वयं को खींचते हुए कहा, 'छोड़ो तो बुंचीदी ।'

'नही, तुम उन लोगों की ओर मत जाना । याद रखो, प्ले चल रहा है ।'

मगर मंजरी उद्विग्नता से अधीर हो उठी थी । वह स्वयं को संयत नही रख सकी । एकाएक हाथ जोड़कर बोली, 'हाथ जोड़ रही हूँ शोभादी, दुहाई है तुम्हारी । चुप हो जाओ । आज के लिए, सिर्फ आज के लिए ।'

उसके बाद उसने बुंची से कहा, 'छोड़ो बुंचीदी । मैं ड्रेसर से ठीक करा लूंगी ।' यह कहकर वह बाहर चली गयी ।

बुंची बोली, 'तुमने यह क्या किया शोभादी ? यह सब बात

'उसकी चर्चा मैंने की है या गोपाली ने ?'

'करूँगी नहीं चर्चा ?' गोपाली फूँफकार उठी, 'तुमने मुझे कितनी बड़ी बात कही ?'

बूंची बोली, 'छिः छिः। गोरा बाबू को गये एक ही महीना हुआ है। उसके मन में हरा जख्म—'

'हरा जख्म! बलैया लूं ? मगर को पुत्रशोक!'

'रहने दो शोभा दी। रहने दो।'

बाहर रीतू बाबू का गम्भीर स्वर गूंज उठा, 'पार्ट आ गया। शोभा!'

शोभा चिहुँक उठी। सिर्फ चिहुँक ही नहीं उठी, डर भी गयी। वह सज-सँवर कर बैठी थी। उसने इल्तुतमिश की विधवा पत्नी—वर्तमान सुल्तान की माँ का वेश धारण किया है। दर असल वह बाँदी थी। चरित्र की दृष्टि से नीच और उच्छृंखल। इस दृश्य में रजिया सेना के साथ दरबार में प्रवेश करेगी और सौतेले भाई और सौतेली माँ को बन्दी बनाने का आदेश देगी। बन्दी बनायेगा बख्तियार। बन्दी बनाकर उनकी आँखें फोड़ देगा। शोभा मन ही मन हादसे से काँप उठी। रीतू बाबू को वह जानती है। ऐसा कोई काम नहीं है जो वह कर नहीं सकता। कितनी ही बार मजलिस में उसका हाथ पकड़ कर चिकोटी काट ली है, गुदगुदी लगा दी है। कितने ही व्यक्तियों को वह अभिनय के बहाने मुक्का मार चुका है, गरदन दबा दी है। वेश-मन्दिर में आकर कहा है, क्या करूँ! इमोशन की वजह से हो गया। बड़े ऐक्टर का सात खून माफ है। आज अगर—

'शोभा! देर हो जायेगी।'

शोभा डोरी में बँधे जानवर की तरह खिंचकर बाहर निकल आयी। मजलिश! मजलिस में पार्ट! बुखार की हालत में उतरना पड़ता है। मुंह का कौर फेंक कर भागना पड़ता है। शायद सामने आकर मौत भी खड़ी हो जाये तो कहना पड़ता है—ठहरो, पार्ट खत्म कर आऊँ। वह बाहर निकल आयी। रीतू बाबू सामने ही खड़ा था। उसके पीछे बाबुल बोस पागल फकीर का वेश धारण कर सिगरेट पी रहा है। शोभा अचानक एक काण्ड कर बैठी। उसने झुक कर रीतू बाबू के पैरों को पकड़ लिया और कहा, 'मैंने गलती की है। मैंने—।' वह रोने लगी।

रीतू बाबू चौंक उठा। लेकिन वह चौंकना क्षण-भर के लिए था। एक ही क्षण में उसने हँसकर उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, 'उठो-उठो। पागल हो तुम। जाओ। पार्ट आ गया है। अरे, यह क्या! आँसू से तो काजल धुल गया। ऐ-ऐ, एक अँगोछा या तौलिया—'

विपिन नौकर दौड़ कर पेन्ट पोंछने वाला एक डस्टर ले आया। रीतू बाबू ने शोभा के आँसू पोंछते हुए कहा, 'जाओ, जाओ।'

शोभा चली गयी। बाबुल अपना पार्ट पढ़ने लगा। वह पागल फकीर है। रास्ते-रास्ते में घूमता है और कहता है, बोस मुलतान का, मुलतान दिल्ली का, भालू

कन्दर का, बेगम अन्दर की—अमीर-उमराव, तमाम बड़े-बड़े लोग, उल्लू और बन्दर—चूहे और छछुन्दर। नसीब हिन्दुस्तान का।

इस पार्ट के सम्बन्ध में बाबुल वैसा उत्साही नहीं था जैसा कि गंधर्वकन्या के विदूषक के सम्बन्ध में था। उस पर प्ले की जो हालत हुई है, उससे उसका उत्साह जरा ढीला पड़ गया है। इसी दृश्य में उसे प्रवेश करना है। सुलतान के दरबार में वह यही कहते-कहते प्रवेश करेगा। सुलतान को बेहद रंजिश होगी। सुलतान की माँ उसे दरबार से बाहर निकालने कहेगी। फकीर पागल की तरह ही कहेगा—'बगदाद मदीना मक्का—खुदा घुमा दे, सल्तनत हो जाये फक्का—'

इसी बीच रजिया प्रवेश करेगी। अकेली ही। उसके बाद बख्तियार प्रवेश करेगा।

अब बाबुल बोस का पार्ट आ गया। सुलतान की माँ—इल्तुतमिश की नीच जात की बेगम-शोभा अमीर से झगड़ रही है। संलाप: मैं नीच जात की हूँ, मैं हीन हूँ, मेरा लड़का मूर्ख और निठल्ला है। और वह रजिया, जो मर्द की तरह घूमती रहती है, जिसका प्रिय पात्र है वह काला हब्शी—वही इस सिंहासन के योग्य है?

बाबुल बोस झटपट वेश-मन्दिर से निकल मजलिस के प्रवेश द्वार पर आकर खड़ा हुआ। मजलिस उसी क्षण तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठी।

शोभा की ऐक्टिंग पर तालियाँ बजी हैं। बगल में गोपाल घोष खड़ा था। गोपाल ने उसके चेहरे की ओर देखकर कहा, 'शोभा बहुत अच्छी बोली है। जोरदार ऐक्टिंग की है। जाइये, अन्दर चले जाइये।'

शोभा की ऐक्टिंग पर सचमुच ही तालियाँ बजी हैं। अब तक मानो सब लोग ऊँघने लगे थे। प्रथम दृश्य दुर्घटना के कारण जम नहीं सका। दूसरे दृश्य ने नाच-गीत, राणा लाहिड़ी और शेफाली के लव सीन से जरा जोर पकड़ा था। लेकिन इस सीन में वजीर मणि और कुछ उमरावों के मुख से प्रवेश करने से वातावरण में ठण्डापन आ गया था। उन्होंने नीच जाति की सुलतान की माँ और उसके गर्भ से उत्पन्न मूर्ख निठल्ले सुलतान के हाथ से छुटकारा पाने की साजिश की थी। चाहे रजिया औरत ही क्यों न हो, मगर सुलतान की पहली बेगम उच्च जाति की कन्या थी। बचपन से ही सुलतान इल्तुतमिश के साथ रहने के कारण वह मर्दों की अपेक्षा अधिक कर्मठ और दूरदर्शी है। उसे ही सिंहासन पर बैठाया जाये। तभी सुलतान की माँ पुत्र के साथ दरबार में प्रवेश करके कहती है—

अच्छी बात है, वजीर महान महाज्ञानी तुम
खाँटी मुसलमान। कहा है ठीक ही। मैं हूँ नीच,
नीच वंश में हुआ है जन्म मेरा—अत्यन्त हीन चरित्र मेरा
देह की शिरा-शिरा में बहता है हीन रक्त।
वाह-वाह! बहुत ही अच्छा। विगत यौवना हूँ
मैं—कटाक्ष से मेरे नहीं छूटता है पंचबाण।

धिक्-धिक् । और रजिया—वह है सुलतान की पुत्री
सुन्दरी युवती । गुलाब खिलता है मस्तक पर उसके ।
सुरमा से सुसज्जित हैं उसके नयन—पंचवाण नही
छूटते हैं शत-शत वाण । वाह्-वाह् ! मैं ही हूँ भ्रष्टा नारी ।
और सुलतान-पुत्री सुन्दरी रजिया सती-साध्वी !
काले उस क्रीतदास हब्शी की नही आती है याद ?
हा-हा-हा-हा—।

शोभा संलाप सचमुच ही बहुत अच्छा बोल गयी है । बेहद फिलिंग के साथ । उससे झपकी लेती मजलिस मे थोड़ी गरमी आ गयी थी, तब हाँ, तालियाँ स्वतः स्फूर्त नही थी । प्ले जमाने के लिए राजकुमारों ने जान-सुन कर बजायी हैं । बड़े राजकुमार रसिक और गुणग्राही हैं । उन्होने कहा था, 'तालियाँ बजाओ । बहुत ही अच्छा बोल गयी । प्ले को जमा दो ।' यह कह कर स्वयं ताली बजाना शुरू कर दिया था । उनके साथ ही विशिष्ट अतिथियो ने तालियाँ बजायी और फिर पूरी मजलिस बजाने लग गयी थी ।

बाबुल ने जरा उत्साह के साथ ही मजलिस के प्रवेश-द्वार पर खड़ा होकर शुरू किया—दोनो हाथ फैला कर कहना शुरू किया—'बोल सुलतान का—'

लेकिन उसी क्षण मजलिस मे से कोई अरसिक श्रोता बोल उठा, 'अच्छा-अच्छा, बहुत अच्छा—श्रीमती झझ्झर— !'

झझ्झर का मानो माटी का झझ्झर । उसने शोभा को लक्ष्य बना कर कहा । शोभा मोटी है । एक ही क्षण में शोभा के चेहरे का रग उड़ गया । मजलिस मे ठहाके का शोर गूँजने लगा ।

बरामदे की विशिष्ट मजलिस से छोटे कुमार ने उठ कर जोर से कहा, 'चुप रहो, साइलेन्स ।' इस बात का असर हुआ । छोटे कुमार बोले, 'यह कितने असौजन्य की बात है ! छिः !'

बाबुल ने दुबारा शुरू किया, 'बोल सुलतान का, सुलतान दिल्ली का, भालू कन्दर का—बेगम अन्दर की । ला इलाही अल्ला, हजरते रसुल्ला ।'

वजीर ने क्रुद्ध होकर कहा, 'ए पागल, यह दरबार है ।'

बाबुल बोला, 'वजीर अमीर उमराव, बड़े-बड़े लोग उल्लू और बन्दर, चूहा और छछुन्दर—नसीब हिन्दुस्तान का !'

सुलतान की माँ—शोभा—जोर से बोली, 'बन्दी बना लो उदण्ड फकीर को ।'

वजीर ने पुकारा, 'प्रहरी !'

बाबुल हा-हा कर हँस उठा । बोला, 'ले ले गरदना, पेट मे नहीं दाना—। तब सुन लो भालू सुलताना—तुम हो जाओगी कानी । और तुम बोल सुलतान, तुम्हारी जायेगी जान ।' वह फिर हँसने लगा । लेकिन श्रोता खुल कर नही हँस रहे

हैं। इसका कारण हिन्दी में बोली गयी बातें हैं। बाबुल का भी उत्साह ठण्डा पड़ गया। ठीक उसी क्षण नाटक ने जोर पकड़ा। वजीर ने आकर उसके बाल मुट्ठी मे कस कर पकड़ते हुए कहा, 'शैतान, तू कौन है?'

बाबुल ने कहा, 'अहा हा हा, जान गयी रे बप्पा, मर गया रे। छोड़ो-छोड़ो—'

वजीर ने पूछा, 'तू रजिया का गुप्तचर है?'

'गुप्तचर नही भैया, थप्पड़ कह सकते हो। मैं भैया चटगाँव का मुसलमान हूँ। बख्तियार खिलजी यहाँ ले आया है। यहाँ छोड़ दिया, जाकर चारा खाओ। क्या करूँ! भेष के बिना भीख नही मिलती। फकीर बन गया। लोगो को डराने से ज्यादा भीख मिलती है। इसीलिए कह रहा हूँ भैया— मुट्ठी मे पकड़े बालों को छोड़ दो।'

अबकी सारी मजलिस हँसी से लोट-पोट हो गयी।

वजीर ने उसके बालो को छोड़ दिया। बाबुल बोला, 'तब हाँ, मैं हाथ देखना जानता हूँ। चेहरा देख कर बता सकता हूँ कि नसीब मे क्या है। जो मैं कहूँगा वह जरूर फलीभूत होगा। सुलतान और सुलतान की माँ को सावधान रहना होगा। तुम्हारा और अमीर उमराव का पौ बारह है, पूरी के बाद ताड़ का खाड़ा खाने को मिलेगा। तुम लोग रजिया को रोक नही सकोगे। उसके एकादश मे बृहस्पति है। मंगल तुंगी है, राज्य पाने से उसे कौन रोक सकता है? अमीर-उमराव को बख्शीश मिलेगा। खिलायत मिलेगी। बहुत, बहुत ज्यादा!'

सुलतान की माँ— शोभा बोली, 'तुम गँवार हो, गँवार। भाग्य-विद्या झूठी बात है। रजिया का पक्ष लेकर चालाक लोग यह सब भविष्य वाणी प्रचार कर रहे हैं।'

बाबुल बोला, 'नही। मैं गँवार नही हूँ। अलीफ-बे-पे-ते जानता हूँ।... अ-आ-इ-ई—बासी भात पोई साग की तरकारी।

'हा-हा-हा-हा दे दे भैया यह बादशाहत—'

अब सुलतान ने माँ के पास आकर कहा, 'माँ, भाग चलो। फकीर ठीक कह रहा है। माँ, मुझे डर लग रहा है। मैं सल्तनत नही चाहता। माँ—'

शोभा बोली, 'मूर्ख, चुप रहो। धीरज धरो। किसके डर से भागोगे? जाओ, तुम सिंहासन पर जाकर बैठो।'

अब रजिया ने प्रवेश किया—बोलते-बोलते ही प्रवेश किया, 'चुप रहो मूर्ख! मेरा यही हुक्म है।'

रजिया के हाथ मे नंगा कृपाण है।

तालियाँ बजने लगी। किसी ने कहा, 'बहुत अच्छा।'

रजिया बोली, 'उस मसनद पर तुम्हारा अधिकार नही है। कुतुबुद्दीन शाही मसनद को अपवित्र मत करो। तुम खरीदी हुई दासी के बेटे हो। निठ

और गया गुजरा। शराब और औरत में हमेशा डूबे रहते हो। तुमसे इल्तुतमिश के नाम का गौरव कलंकित हुआ है। उसके लिए जिम्मेदार है यह खरीदी हुई लौडी।'

शोभा का पार्ट था। बोली, 'मैं खरीदी हुई लौडी हूँ और तुम ?'

'सुलतान की पुत्री मैं—शाहजादी रजिया।'

'शाहजादी! सुलतान जादी! ऊँचे विचार की, पवित्र गंगाजल! इल्तुतमिश था क्रीतदास। नहीं था ?'

'तेरी जीभ काट लूँगी।'

'उसके पहले उच्च स्वर में कह कर जाऊँगी—तुममें और मुझमें क्या है भेद। इल्तुतमिश तेरा पिता था क्रीतदास, माँ तेरी कुतुबुद्दीन-सुता। वह भी था क्रीतदास। तब कौन-सा है प्रभेद ? पवित्र गंगा का जल! नारी होकर करती है तू पुरुष भेष में विचरण, लोलुप पुरुषों के बीच। कृष्ण वर्ण, देखने में भयंकर भैंसे जैसे हब्शी की लालसा में तुम्हें मिलता है अपार आनन्द! प्रभेद है मुझमें और तुममें ? कौन-सा प्रभेद ? हा-हा-हा-हा। वजीर उमरावगण, अब भी तुम लोग खड़े हो पुतले की तरह ? बन्दी बना लो इसे, आदेश है मेरा। जागीर दूँगी उपहार स्वरूप।'

सचमुच ही शोभा बहुत ही अच्छा बोली। जैसे प्राणों के लहकते आवेग और क्षोभ को ढाल कर विषाक्त स्वर में बोल गयी। उसके सलाप से रजिया वेशधारी मंजरी भी आश्चर्यचकित हो गयी। उत्तर में वह 'हा-हा' कह हँस रही थी। उसके बाद बाँसुरी बजेगी और तत्क्षण बख्तियार प्रवेश करेगा। उसके हाथ में बरछा है और उसके पीछे चार-पाँच सैनिक। लेकिन वह हँसा नहीं, सिर्फ बाँसुरी ही बजायी। बख्तियार ने एक तरह से छलांग लगाते हुए प्रवेश किया। बोला, 'तमाम शहर दिल्ली सुलताना रजिया का करता है जय-जयकार। उल्लसित हैं वे मुलतानी बोल जैसे सुलतान के राज्य से छुटकारा पाकर।'

रजिया बोली, 'बन्दी बना लो उस नीच नारी और साँड़ जैसे उस दासी-पुत्र को। और वजीर प्रधान! और उमरावगण, क्या प्रत्याशा करते हो तुम लोग मुझसे ?'

वजीर वेशधारी मणि ने कहा, 'कौन-सी प्रत्याशा ? भाग्यचक्र से हार मान ली है। सुलतान पुत्र समझकर गलती से इस अक्षम और निरक्षर को सिंहासन पर बिठाया है। धर्म और राजनीति विधान के नियम से वह है नारी, उसे स्वीकार करने के लिए नहीं हूँ तैयार। मैंने नहीं की है गलती। यह जीवन है जुए का खेल। हार चुका हूँ— महसूल होगा चुकाना। उसके लिए नहीं है कोई शिकायत। लो, बना लो बन्दी।'

'हाँ। बन्दी ही बनाया जायेगा। बख्तियार कहाँ है हथकड़ी ? अपने हाथ से बनाऊँगी मैं बन्दी वजीर और उमरावगण को।'

एक प्रहरी थाली में मोती की माला लिये आकर खड़ा हुआ। उसी माला को वजीर के हाथ में लपेट कर रजिया बोली, 'सम्मानित अमीर-उमरावगण, पितृ

तुल्य हो तुम लोग सब। महामान्य वजीर को जो दिया गया है दण्ड, वही दण्ड दिया जाता है तुम सब लोगों को।'

वजीर बोल उठा, 'जय सुलताना रजिया, हिन्दुस्तान अधीश्वरी दिल्ली की सुलताना!'

तत्क्षण सब लोग जय ध्वनि करने लगे। रजिया मजलिस में रखे सिंहासन पर बैठ कर बोली, 'बख्तियार, दोनों बन्दियों को ले जाओ। अपने कर्तव्य का करो पालन। सजा है दोनों की प्राणदण्ड—और—'

शोभा की ओर देखकर बोली, 'इसे बना दो अंधी। जिन आँखों से देखती है नारी मेरा कलंक, उन आँखों की बुझा दो ज्योति तप्त शलाका से।'

शोभा चिल्ला उठी। बख्तियार रीतू बाबू तब उसके पास जाकर खड़ा हो चुका था। शोभा का चिल्लाना बड़ा ही अच्छा रहा। वह भय से सचमुच ही थर-थरा रही थी।

अभिनय तब सचमुच ही जम गया था। शोभा का हाथ पकड़कर उसे खींचते हुए रीतू बाबू अट्टहास कर उठा। जैसे सचमुच ही खींच कर ले गया।

सुलताना ने पुकारा, 'सिद्ध फकीर!'

बाबुल बोस आगे बढ़ आया। हँसते हुए बोला, 'सिद्ध फकीर? सुलताना, बंगाल में असली अरबी होती है तो सीझ जाती है। जो अधसीझी रह जाती है वह जंगली अरबी है। फकीर पूरे तौर पर सिद्ध होने से ही फकीर होता है। अर्ध सिद्ध रहता है तो फिक्र हो जाता है। मैं सिद्ध फकीर नहीं हूँ। अर्द्ध सिद्ध होने के नाते मैं फिक्र हूँ। अल्ला से कहता हूँ—अलीफ-बे-पे-ते—अल्ला खाना खिला दो मुझे। उस मोती की माला को लेकर क्या करूँगा? पेट में दाना दो। खाना दो। वह तुम्हारा पोलाव और कलिया नहीं चाहिए। देश छोड़ कर आने के बाद बासी भात, पोई साग की तरकारी नहीं खायी है। खिला सकती हो?'

नेपथ्य में शोरगुल हुआ—हर-हर महादेव!

रजिया चौंक उठी, 'क्या हुआ?'

फकीर बोला, 'नसीब सुलतान का और बदकिस्मती फकीर की। सुलतान के नसीब की वजह से वे जग गये हैं। और अर्द्ध सिद्ध फकीर का बासी भात और पोई साग बर्बाद हो गया।'

तत्क्षण दूत दौड़ता हुआ आया और बोला, 'राजपूत राजा विजय सिंह ने सेना के साथ किले के द्वार पर आक्रमण किया है। उसका कहना है कि वह रजिया को सुलताना मानने को तैयार नहीं है, वह सुलतान को ही मान्यता देगा।'

वजीर बोला, 'होशियार! प्रवेश मत करने देना। वह दुश्मन है।'

रजिया बोली, 'नहीं, उसे प्रवेश करने दो। सेना के साथ नहीं। राजपूत वीर को यदि साहस है तो वह अपने देह-रक्षक के साथ प्रवेश करे। कहो, युद्ध का नहीं है प्रयोजन। सुलताना रजिया कर रही है द्वन्द्व-युद्ध के लिए उसका आह्वान।

पराजित होने पर सुलताना रजिया मान कर उसका आदेश, सिंहासन करके त्याग चली जायेगी *अरण्य-कन्दर* में। जाओ।'

दूत चला गया।

फकीर उसके पीछे-पीछे हो लिया, 'बगदाद, मदीना, मक्का, फकीर के नसीब में फक्का। दे अल्ला वासी भात।'

वजीर ने पुकारा, 'फकीर—'

सुलताना बोली, 'जाने दो पागल फकीर को।'

दूसरी ओर से विजय सिंह ने हाथ में नंगी तलवार लिये प्रवेश किया, 'उद्दण्ड नारी'—बात उसके मुँह में ही रह गयी। विस्मय से अभिभूत हो कर प्रवेश-पथ पर खड़ा हो गया।

रजिया खिलखिला कर हँस दी।

'यह क्या, वही विचित्र बालक है यहाँ, सुलताना रजिया!'

'हाँ, मैं वही विचित्र बालक हूँ। व्याघ्र से करती हूँ युद्ध। आज दरबार के युद्ध क्षेत्र में हूँ खडी तलवार लिये हाथ में, प्रतीक्षा कर रही हूँ राजपूत सिंह-शूर विजय सिंह की।'

सुलताना रजिया होले-होले मुसकरा रही थी।

अब मंजरी सहज और स्वाभाविक हो उठी है। इसके पहले तक उसने अभिनय किया है और कहा जा सकता है कि अच्छा ही किया है। लेकिन वह मंजरी के लिए स्वाभाविक जैसा नहीं था। वह जैसे उदासी से घिर गयी थी। वह उदासी अब दूर हुई।

विजय सिंह—राणा लाहिड़ी—बोला, 'सुलताना रजिया, तुम हो विचित्र रूपिणी। असंकोच इसे करता हूँ स्वीकार। योग्य हो तुम दिल्ली की सुलतान भी ही मसनद पर बैठने को। किन्तु फिर भी हो तुम नारी—तुम्हारे साथ द्वन्द्व युद्ध नहीं है क्षत्रिय का धर्म। और तुमने प्राणों की रक्षा की है मेरी।'

रजिया ने हँस कर कहा, 'फिर तुमने स्वीकार की है पराजय?'

'पराजय? नहीं। कृतज्ञता करूँगा स्वीकार, नहीं पराजय।
सुनो सुलताना। भ्राता तुम्हारा बन्दी मेरा दूध भाई।
माता उसकी क्रीतदासी थी मेरे पिता की। वह करती थी
परिचर्या मेरी। तुम्हारे पिता वीर श्रेष्ठ सुलतान प्रवर
इल्तुतमिश मित्र थे मेरे पिता के। हमारे राज्य में
आकर अतिथि हो, मुग्ध हो गये थे इस दासी पर।
पिता ने मेरे बहुत सारे उपहारों के साथ दासी को भी दिया था
उपहार-स्वरूप सुलतान को। उसे छोड़ कर तुम्हारे प्रति
नहीं हो सकूँगा कभी विनम्र; धर्म होगा बाधक। अलविदा सुलताना,
लौट जाऊँगा अपने राज्य में मैं।'

रजिया बोली, 'नहीं-नहीं, जाने नहीं दूंगी। कौन है, रोक लो इसे।'

'कौन रोकेगा मुझे।'

'होशियार।'

प्रवेश-पथ पर बख्तियार वेशधारी रोतू बाबू बल्लम उठा कर खड़ा हो गया। उसकी हुंकार बाघ की गर्जन जैसी है।

विजय सिंह ने ढाल सामने रख कर तलवार निकाली। रजिया दौड़ कर आयी और उन दोनों के अस्त्रों के सामने आकर खड़ी हो गयी। बख्तियार को अपने पीछे रख कर खड़ी हुई। बोली—'शान्त हो जाओ।' उसके बाद बोली, 'जाना है तो या तो मेरे साथ द्वन्द्व युद्ध कर मुझे पराजित कर दो, या फिर मेरी हत्या करके ही तुम जा सकते हो। सुलतान रजिया हाथ में तलवार थामे मसनद पर बैठी है। वह विरोधी को क्षमा नहीं करेगी। आओ—'

उसने तलवार निकाली।

विजय सिंह एक क्षण के लिए मौन रहा, उसके बाद घुटनों के बल बैठ कर अपनी तलवार रख दी। रजिया ने अपने गले से मोती का हार निकाल कर उसे पहना दिया। और तत्क्षण बोली, 'आज का दरबार समाप्त होता है यहीं। वजीर प्रधान, सिंहासन पर आरोहण करने के उपलक्ष्य में कोषागार करो मुक्त। दरिद्र को करो अर्थदान। प्रत्येक सैनिक को दो स्वर्ण-मुद्रा। वह फकीर कहाँ है? वह विचित्र फकीर?'

उसने चेहरा घुमाया। बख्तियार की आँखें जल रही हैं। उसने कहा, 'वह चला गया। सुलताना जब इसी काफिर की राह की ओर एकाग्र दृष्टि से देख रही थी, उसी समय सुलताना की आँखों के सामने से होता हुआ चला गया।'

'चला गया? लगा, वह कुछ बोलता हुआ चला गया। मगर—। यह क्या, बख्तियार, तुम्हारी आँखों की कैसी है यह दृष्टि? रोष से क्यों छलक आयी हैं? बख्तियार!'

बख्तियार ने घुटने टेक कर कहा, 'सुलतान की माता की आँखों की ज्योति अपने हाथ से बुझा दी है, लगता है, उसी का रक्त आँखों में लग गया है। लेकिन सुलताना, मेरा इनाम?'

रजिया ने हंस कर कहा, 'यह लो—हीरे से जड़े हुए इन दो मेरे बहुमूल्य कंगनों को!'

रजिया चली गयी। बख्तियार दोनों कंगनों को हाथ में लिये खड़ा रहा। उसके बाद बर्बर की तरह चिल्ला कर दोनों को दाँतों से चबा डाला।

बरामदे से कुमारों ने साथ-साथ दर्शकों ने भी देर तक तालियाँ बजायीं। अभिनय सचमुच ही जम गया है।

उस समय जो अभिनय ने ज़ोर पकड़ा तो फिर उसमें शिथिलता नहीं आयी।

पराजित होने पर सुलताना रजिया मान कर उसका आदेश, सिंहासन करके त्याग चली जायेगी अरण्य-कन्दर मे। जाओ।'

दूत चला गया।

फकीर उसके पीछे-पीछे हो लिया, 'बगदाद, मदीना, मक्का, फ़कीर के नसीब में फक्का। दे अल्ला बासी भात।'

वजीर ने पुकारा, 'फ़कीर—'

सुलताना बोली, 'जाने दो पागल फ़कीर को।'

दूसरी ओर से विजय सिंह ने हाथ में नगी तलवार लिये प्रवेश किया, 'उदण्ड नारी'—बात उसके मुँह में ही रह गयी। विस्मय से अभिभूत हो कर प्रवेश-पथ पर खड़ा हो गया।

रजिया खिलखिला कर हँस दी।

'यह क्या, वही विचित्र बालक है यहाँ, सुलताना रजिया!'

'हाँ, मैं वही विचित्र बालक हूँ। व्याघ्र से करती हूँ युद्ध। आज दरबार के युद्ध क्षेत्र में हूँ खड़ी तलवार लिये हाथ मे, प्रतीक्षा कर रही हूँ राजपूत सिंह-शूर विजय सिंह की।'

सुलताना रजिया होले-होले मुसकरा रही थी।

अब मंजरी सहज और स्वाभाविक हो उठी है। इसके पहले तक उसने अभिनय किया है और कहा जा सकता है कि अच्छा ही किया है। लेकिन वह मंजरी के लिए स्वाभाविक जैसा नहीं था। वह जैसे उदासी से घिर गयी थी। वह उदासी अब दूर हुई।

विजय सिंह—राणा लाहिड़ी—बोला, 'सुलताना रजिया, तुम हो विचित्र रूपिणी। असकोच इसे करता हूँ स्वीकार। योग्य हो तुम दिल्ली की सुलतान शाही मसनद पर बैठने को। किन्तु फिर भी हो तुम नारी—तुम्हारे साथ द्वन्द्व युद्ध नहीं है क्षत्रिय का धर्म। और तुमने प्राणों की रक्षा की है मेरी।'

रजिया ने हँस कर कहा, 'फिर तुमने स्वीकार की है पराजय?'

'पराजय? नहीं। कृतज्ञता करूँगा स्वीकार, नहीं पराजय।
सुनो सुलताना। आवा तुम्हारा बन्दी मेरा दूध भाई।
माता उसकी क्रीतदासी थी मेरे पिता की! वह करती थी
परिचर्या मेरी। तुम्हारे पिता वीर श्रेष्ठ सुलतान प्रवर
इल्तुतमिश मित्र थे मेरे पिता के। हमारे राज्य मे
आकर अतिथि हो, मुग्ध हो गये थे इस दासी पर।
पिता ने मेरे बहुत सारे उपहारों के साथ दासी को भी दिया था
उपहार-स्वरूप सुलतान को। उसे छोड़ कर तुम्हारे प्रति
नहीं हो सकूँगा कभी विनम्र; धर्म होगा बाधक। अलविदा सुलताना,
लौट जाऊँगा अपने राज्य में मैं।'

रजिया बोली, 'नहीं-नहीं, जाने नहीं दूंगी। कौन है, रोक लो इसे।'

'कौन रोकेगा मुझे।'

'होशियार।'

प्रवेश-पथ पर बख्तियार वेशधारी रीतू बाबू वल्लम उठा कर खड़ा हो गया। उसकी हुंकार बाघ की गर्जन जैसी है।

विजय सिंह ने ढाल सामने रख कर तलवार निकाली। रजिया दौड़ कर आयी और उन दोनों के अस्त्रों के सामने आकर खड़ी हो गयी। बख्तियार को अपने पीछे रख कर खड़ी हुई। बोली—'शान्त हो जाओ।' उसके बाद बोली, 'जाना है तो या तो मेरे साथ द्वन्द्व युद्ध कर मुझे पराजित कर दो, या फिर मेरी हत्या करके ही तुम जा सकते हो। सुलतान रजिया हाथ में तलवार थामे मसनद पर बैठी है। वह विरोधी को क्षमा नहीं करेगी। आओ—'

उसने तलवार निकाली।

विजय सिंह एक क्षण के लिए मौन रहा, उसके बाद घुटनों के बल बैठ कर अपनी तलवार रख दी। रजिया ने अपने गले से मोती का हार निकाल कर उसे पहना दिया। और तत्क्षण बोली, 'आज का दरबार समाप्त होता है यहीं। वजीर प्रधान, सिंहासन पर आरोहण करने के उपलक्ष्य में कोषागार करो मुक्त। दरिद्र को करो अर्थदान। प्रत्येक सैनिक को दो स्वर्ण-मुद्रा। वह फकीर कहाँ है? वह विचित्र फकीर?'

उसने चेहरा घुमाया। बख्तियार की आँखें जल रही हैं। उसने कहा, 'वह चला गया। सुलताना जब इसी काफिर की राह की ओर एकाग्र दृष्टि से देख रही थी, उसी समय सुलताना की आँखों के सामने से होता हुआ चला गया।'

'चला गया? लगा, वह कुछ बोलता हुआ चला गया। मगर—। यह क्या, बख्तियार, तुम्हारी आँखों की कैसी है यह दृष्टि? रोष से क्यों छलक आयी है? बख्तियार!'

बख्तियार ने घुटने टेक कर कहा, 'सुलतान की माता की आँखों की ज्योति अपने हाथ से बुझा दी है, लगता है, उसी का रक्त आँखों में लग गया है। लेकिन सुलताना, मेरा इनाम?'

रजिया ने हँस कर कहा, 'यह लो—हीरे से जड़े हुए इन दो मेरे बहुमूल्य कंगनों को!'

रजिया चली गयी। बख्तियार दोनों कंगनों को हाथ में लिये खड़ा रहा। उसके बाद बर्बर की तरह चिल्ला कर दोनों को दाँतों से चबा डाला।

बरामदे से कुमारों ने साथ-साथ दर्शकों ने भी देर तक तालियाँ बजायी। अभिनय सचमुच ही जम गया है।

उस समय जो अभिनय ने जोर पकड़ा तो फिर उसमें शिथिलता नहीं आयी।

उसका अन्त भी हुआ तालियों की गड़गड़ाहट और साधुवाद के साथ, परन्तु कहीं न कहीं कुछ खामी रह गयी। इसका अहसास दल के लोगों को भी हुआ।

अभिनय समाप्त होने पर बड़े कुमार ने कहा, 'फर्स्ट नाइट की दृष्टि से अच्छा उतरा है। जानते हैं, बात क्या हुई? नदी की चाल की तरह एक ही गति से आगे नहीं बढ़ा, पहाड़ी चाल की तरह चला—यानी कहीं ऊपर की ओर उठा और कहीं नीचे उतर गया, बीच-बीच में बड़े गड्ढों ने आकर जोड़ने वाले सूत्र को काट दिया! तब हाँ, सुलतान की माँ शोभा ने अच्छा पार्ट किया है। एक दृश्य में बहुत ही अच्छा कर गयी। आपका और रजिया का पार्ट बीच-बीच में जमा, कभी-कभी कुछ दूसरी ही तरह का हो गया। अन्यथा नहीं लीजिएगा न?'

रीतू बाबू ने कहा, 'नहीं-नहीं। आपके जैसे आदमी के ऑपिनियन के लिए ही मैंने आपके घर—'

'मंजरी देवी?'

सल्लज विनम्रता के साथ मंजरी ने हाथ जोड़ते हुए मीठे स्वर में कहा, 'अगर मैं ऐसा कहूँ तो अपराध होगा। आप लोग गुण-दोष नहीं दिखा दीजिएगा तो समझ में कैसे आयेगा? मैं मामूली औरत हूँ, मामूली शिक्षा-दीक्षा हुई है—'

'नहीं-नहीं। कम-से-कम अभिनय के मामले मे आप बेजोड़ हैं। आपका सती तुलसी और जना मे जो पार्ट देखा है वह अद्भुत है।'

मंजरी सिर झुका कर बैठी रही। बड़े कुमार ने कहा, 'ऐसा लगा जैसे बख्तियार ने ओवर ड्रइंग किया हो। चिल्लाना कुछ ज्यादा हो गया। फिर भी एक दो जगहों मे सुपर ऐक्सेलेन्ट हुआ है। और आपका हुआ ठीक इसके विपरीत। बिलकुल ठण्डा जैसा हो गया—जितना जोरदार होना चाहिए, उतना जोरदार नहीं हुआ। उनके ओवर ड्रइंग की वजह से आप ठण्डी पड़ गयीं। या आपके ठण्डा होने से उन्होंने ओवर ड्रइंग किया—यह कहना मुश्किल है। तब हाँ, वैसा हो गया है।'

'लेकिन मुझे बहुत अच्छा लगा है सर।' एक आदमी ने कहा।

कुमार बोले, 'आप हैं मिस्टर मुखर्जी—देवेन्द्र मुखर्जी। खिदिरपुर के बहुत बड़े व्यवसायी। यात्रा के बड़े शौकीन हैं।'

देवेन्द्र बाबू बोले, 'हम लोगों का मकान बाकुलिया में है। हुगली जिला—'

रीतू बाबू ने तत्क्षण झुककर प्रणाम करते हुए कहा, 'अरे बाप रे! बड़े दिन की बाकुलिया की यात्रा की मजलिस बड़ी ही विख्यात हुआ करती है। अच्छी तरह जानता हूँ। बहुत दिन पहले मथुरशा के दल की ओर से मैं वहाँ अभिनय कर आया हूँ।'

देवेन्द्र बाबू बोले, 'हम लोगों ने इस बार मंजरी ऑपेरा को बुलाने को सोचा था, मगर गोरा बाबू को छोड़ कर जाने की बात सुन कर बहुतेरे लोग आनाकानी करने लगे। यही वजह है कि आज मैं जान-सुन कर सुनने आया था। कुमार साहब

ने जो कुछ कहा वह ठीक नहीं है, यह मैं नहीं कहता, लेकिन फर्स्ट नाइट में ऐसा होता है। सेकण्ड या थर्ड नाइट में वह सब ठीक हो जायेगा। मेरी राय यही है।'

'हाँ, इससे मैं भी सहमत हूँ।'

'कल एक और नये नाटक की शुरुआत कर रहे हैं—'

'जी हाँ। सावित्री-सत्यवान।,

'सावित्री-सत्यवान? बहुत जाना-पहचाना और पुराना जैसा नहीं लगता है?'

'क्या करें? जल्दीबाजी की वजह से करना पड़ा। कहने का मतलब है कि गोरा बाबू ने जिन नाटकों में पार्ट किया है, उन नाटकों के उनके द्वारा किये गये पार्टों को दूसरे अभिनेता अच्छा भी करेंगे तो लोगों को नहीं भायेगा। इसीलिए—'

'वे चले क्यों गये?'

'वे—।' रीतू बाबू कुछ देर तक चुप होकर सोचता रहा, उसके बाद बोला, 'शुरू में उन्हें मून-थियेटर ने बुलावा भेजा। उसके बाद बम्बई से फिल्म वालों ने आकर ऑफर दिया।'

मंजरी ने उठ कर चुपचाप नमस्कार किया और कमरे के बाहर चली गयी। उसके अन्दर से रुलाई फूट रही है, साथ ही मस्तिष्क में आग की लपट जैसा कुछ लहक रहा है। मंजरी के जाते ही बड़े कुमार साहब ने कहा, 'देवेन बाबू, आपको मालूम नहीं है? गोरा बाबू—'

'जानता हूँ। वे तो मंजरी के घर में ही रहते थे—'

'ओ साहब, हम लोगों के देस मुर्शिदाबाद के रहने वाले हैं। उसी अंचल में शादी हुई थी—मुझे उनके बारे में पूरी तरह जानकारी है। घर से चले आये थे और मंजरी से वैष्णव मत के अनुसार शादी की थी। सो सब बहुत बड़ी दास्तान है। पैसे वाले ससुर की एक मात्र लड़की से शादी की थी। इतना जरूर है कि पत्नी बहुत, मतलब है कि—।' उसके बाद हँस कर बोले, 'हैवी वेरी.हैवी वाइफ थी। समझ रहे हैं न, उसे अहंकार होना स्वाभाविक है। छोड़ कर चले आये। एक स्कैण्डल—।' यह कह कर चुप हो गये। बोले, 'रीतू बाबू बुरा नहीं मानिएगा।'

रीतू बाबू ने कहा, 'नहीं-नहीं।' बुरा क्यों मानूँगा?'

'आप लोगों के दल की स्ट्रेन्थ बहुत कम हो गयी है—कम नहीं हो गयी है? लाहिड़ी अच्छा युवक है। शुरू में उसमें थोड़ी बहुत त्रुटि रह सकती है, मगर ठीक हो जायेगी। प्रोप्राइट्रेस ठीक रहेगी तो दल चल जायेगा। कल जरा जल्दी ही शुरू कर दीजिएगा।'

रीतू बाबू बोला, 'करूँगा। प्ले भी रजिया से छोटा है।'

उसके बाद बाकुलिया के मुखर्जी बाबू को हाथ जोड़ कर बोला, 'आप भी आइएगा सर। आप से जान-पहचान होना हमारे लिए सौभाग्य की बात है।'

मुखर्जी ने कहा, 'आऊँगा। आप लोगों का दल खासा अच्छा है। बहुत ही अच्छा। और कुछ लोगों को साथ लेता आऊँगा। आज ही से आता तो अच्छा रहता। कल का नाटक तो पौराणिक है। और ये लोग सभी यंग मैन हैं—। इन लोगों को पुराना नाटक अच्छा नहीं लगता है। अगली बार सोशल नाटक कीजिये। खूब चलेगा।'

आश्चर्य की बात है। सावित्री पौराणिक नाटक है—पुराना नाटक है। क्षीरोद प्रसाद के 'सावित्री' से चाहे पन्द्रह आना उड़ाई हुई सामग्री हो, चाहे उसके अनुकरण पर लिखा गया नाटक ही क्यों न हो—लेकिन इसे रीतू बाबू ने तैयार किया है। गोरा बाबू ने इसकी एक रूपरेखा तैयार की थी, परन्तु रीतू बाबू ने उसे लिया नहीं। तब हाँ, नाटककार की हैसियत से गोरा बाबू का ही नाम दिया गया है। यह नाटक बेहद जमा।

हालांकि किसी को भी इस नाटक पर भरोसा नहीं था। सिर्फ रीतू बाबू की जिद के कारण ही मंचित किया गया है। उसकी जिद का कारण है कि चाहे शहर के लोगों को अच्छा न लगे, परन्तु गांव के लोगों को, कसबे के लोगों को—जहाँ के लोग अब भी हिन्दू हैं—अच्छा लगेगा। औरत-मर्द सभी खुश होंगे। मंजरी की भी कोई खास इच्छा नहीं थी। किसी जमाने में सावित्री का पार्ट करने की इच्छा थी। यह उस समय की बात है जब दल का पहले-पहल गठन हुआ था। असली इच्छा थी सावित्री व्रत करने की। गोरा बाबू ने उस बार सावित्री व्रत के दिन शराब पीते हुए कहा था, 'कमला ने आज सावित्री-व्रत किया है। मैं एक 'फार्स' लिखूंगा। इसी को कहते हैं गाय मार कर जूता दान करना।'

मंजरी उस दिन रात गहरा जाने के बावजूद सोयी नहीं थी। गहरी रात में गोरा बाबू को जगा कर कहा था, 'अच्छा, मैं अगर सावित्री व्रत करूँ!'

गोरा बाबू ने कहा था, 'इस वर्ष का त्योहार तो खत्म हो चुका। अगले साल देखा जायेगा। अभी सो रहो।'

मंजरी ने दूसरे दिन सुबह भी इस बात की चर्चा छेड़ी थी। गोरा बाबू ने कहा था, 'कर क्यों नहीं सकती? तब हाँ, पांच आदमी पांच तरह की बात करेंगे। इससे अच्छा है कि सावित्री नाटक करूँगा। तुम सावित्री का पार्ट करना। मैं सत्यवान का करूँगा। फल उसी में मिल जायेगा।'

गोरा बाबू ने नाटक लिखना भी शुरू कर दिया था, लेकिन उसे अच्छा नहीं लगा था। मंजरी की स्मृति से यह बात उतर गयी थी। इतने दिनों के बाद रीतू बाबू ने सावित्री नाटक की चर्चा छेड़ी तो उसकी भौहों पर बल पड़ गये थे, 'सावित्री! नहीं। वह—'

रीतू बाबू ने कहा था, 'मेरी बात सुनिये । इस नाटक को देखकर लोग रो देंगे । यम को हराकर मृत पति को बचाने की घटना इस सूखे, रोग और अकाल के युग में लोगों को बहुत अच्छी लगेगी ।'

अन्ततः मंजरी राजी हो गयी थी ।

सावित्री का पार्ट मंजरी कर रही थी, नाटू को महर्षि माण्डव का पार्ट दिया गया था । बाबुल को माण्डव के शिष्य औदरिक का । रात-दिन वह क्रोध का भान करते हुए चक्कर काट रहा है । सब कुछ भस्म कर देगा । एक नया पार्ट तैयार किया गया था—मृत्यु मरण का पार्ट । सत्यवान के अकाल देहान्त पर मृत्यु रो रही है । यहाँ यम और मृत्यु अलग-अलग हैं । उदासिनी व्यथा से आतुर मृत्यु का गीत का पार्ट है । वह शेफाली को दिया गया था । गोपाली सावित्री की सखी थी । यम की भूमिका दो दृश्यों की है । उस पार्ट को स्वयं रीतू बाबू ने लिया था । बहुत ही अच्छा पार्ट है—कम से कम उसे ऐसा ही लगा था । सत्यवान का पार्ट राणा लाहिड़ी को देने के बावजूद उसका मन उधेड़-बुन में था । लगा था, वह हल्का दीख रहा है । बिलकुल युवक जैसा दीख रहा है । मंजरी ने कहा था, 'नहीं रहने दीजिये मास्टर साहब, राणा बाबू ही से काम चल जायेगा । वह युवक जैसे दीख रहे हैं तो मेक अप करके मैं ठीक कर लूँगी । या फिर शेफाली को सावित्री का पार्ट दे दीजिये । मैं मृत्यु का पार्ट करूँगी ।'

'नहीं । सावित्री का आपके बिना नहीं हो सकता है ।'

'ठीक है । एक दिन सज-सँवर कर देख लेती हूँ । सरस्वती पूजा में बाहर निकलने के पहले कलकत्ते में दो बयाने लेकर दो दिन अभिनय किया जाये । एक दिन मैं सावित्री रहूँगी और शेफाली मृत्यु और दूसरे दिन मैं मृत्यु का पार्ट करूँगी ।'

'नहीं ।' रीतू बाबू ने दृढ़ स्वर में कहा, 'यह नहीं हो सकता है ।'

आखिरकार वही हुआ था । मृत्यु का उसने अच्छा ही रिहर्सल किया । कर्णार्जुन में नियति का पार्ट वह एमेच्योर में किराये की आर्टिस्ट की हैसियत से कर चुकी है । उसी तरह का उसने तौर-तरीका अपनाया । मंजरी ने रिहर्सल किया था लेकिन वह रिहर्सल बड़ा ही बेजान जैसा हो रहा था । उसकी समस्या यह थी कि सावित्री का वह कैसा साज-सिंगार करे कि राणा लाहिड़ी के साथ खपकर तरुणी दिखाई दे । सोचने-विचारने के बाद उसने बी० दास के मेकअप मैन को बुलाकर उससे पहली रात में मेकअप कराया और मेकअप करने की कला सीख ली थी । वह आदमी हांग मार्केट जाकर मेकअप की कीमती चीजें खरीदकर ले आया है । सजना-सँवरना खत्म होने के बाद जब वह आइने के सामने खड़ी हुई तो उसे प्रसन्नता हुई । नहीं, राणा लाहिड़ी से उम्र में वह बड़ी नहीं दीख रही है, बेमेल जैसी नहीं लग रही है ।

उस दिन मजलिस में पहली रात की तुलना में कम आदमी थे। ऐसा सावित्री नाटक होने की वजह से था। पुरानी पुस्तक है—जानी-पहचानी कहानी है। तब हाँ, मजलिस में गहमागहमी थी। राजमहल के आँगन के पश्चिम तरफ वाले बरामदे पर विशिष्ट व्यक्तियों की अधिक भीड़ है। देवेन्द्र मुखर्जी अपने कई साथियों के साथ आये हैं—घर की औरतें भी खासकर कन्या, स्थानीय महिलाएँ भी आयी हैं। तब हाँ, महिलाओं की मजलिस में अधिक भीड़ है।

मंजरी ने वेश-मन्दिर में आईने में अपने को देख लिया, उसके बाद बाहर आ मर्दों के वेश-मन्दिर में खड़ी हुई, 'मास्टर साहब।'

रीतू बाबू की उस पर आँखें गयी और वह अवाक् होकर उसकी ओर ताकने लगा। सिर्फ रीतू बाबू ही नहीं, बाबुल, राणा लाहिड़ी वगैरह। सचमुच ही वह षोड़शी जैसी दीख रही है।

राणा ही सबसे पहले बोला, 'आप बेजोड़ दीख रही हैं। हाँ, बेजोड़।'

बाबुल बोला, 'लॉर्ड्स आर ऑलवेज इडियट, समझ रहे हैं बिग ब्रदर। थ्रोज अवे गोल्ड, पिक्स अप गिलट।'

रीतू बाबू अपलक ताक रहा था। अब वह बोला, 'बहुत ही अच्छा हुआ है। राणा से बहुत ही कम उम्र की दीख रही है। अब मन में जोर लाइये। आप मजलिस में जैसे ही उतरिएगा, लोग मुग्ध हो जायेंगे।'

मंजरी हल्की हँसी हँस कर महिला-वेश मन्दिर में चली गयी।

गोपाल आकर देख-सुन गया कि सब का मेकअप हो चुका है या नहीं। रीतू बाबू का मेकअप नहीं हुआ है। उसका पार्ट तीसरे अंक में है। तब हाँ, वह भी लिबास वगैरह पहने बैठा है। पेन्ट के साथ हरा रंग मिला रहा है। धर्मराज यम श्यामवर्ण का है। उसी रंग को लगायेगा। गोपाल गला खँखार कर महिला के वेश-मन्दिर के सामने खड़ा हुआ, 'तुम लोगों का हो चुका? शेफाली?'

शेफाली मृत्यु का पार्ट करने जा रही है। उसने गेरुआ कपड़ा पहना है, रुद्राक्ष की माला पहनी है। शेफाली के बाल लम्बे और घने हैं। उस पर झुप्पा लगा कर और भी घना बना लिया है। रूखे बाल हैं। दिन के वक्त उसने बालों में साबुन लगाया है।

शेफाली ने और-और लोगों की ओर ताका। पूछा, 'सब का हो चुका? मुंचोदी? शोभा दी?'

शोभा एक कोने में बैठी हुई है। सज-सँवर कर चुपचाप बैठी है। कल रात से वह बेहद चिन्तित और उत्कंठित है। वह इतनी बड़ी बात हो जायेगी, ऐसा उसने सोचा नहीं था। क्या से क्या हो गया! उफ्, वह जैसे पागल हो गयी है। वह किसी का भी दोषी करार नहीं कर सकती। मंजरी को तो किसी भी हालत में नहीं। नहीं नहीं, कल मंजरी एक भी शब्द नहीं बोली थी। शोभा ने ही उसे बुरी बातें कही हैं। वेश-मन्दिर में उसने सबके सामने जो कहा है उससे भी अधिक कड़वी और गन्दी

बातें उसने रजिया को मन के क्षोभ के माध्यम से कही हैं। शोभा जानती है, यह सत्य भले ही मजलिस के लोगों की समझ में नहीं आया हो पर मंजरी समझ गयी है। दल की महिलाएँ समझ गयी हैं। रीतू बाबू उसका हाथ पकड़ने के समय ही सच्चाई को समझ गया था। उफ्, कितना कस कर पकड़ा था, कितने झटके के साथ उसे खींच लिया था। उसके भय के चीत्कार में अभिनय से अधिक सच्चाई का अंश था।

उसके बाद वेश-मन्दिर में वापस आने के बाद उसने बहुत कल्पनाएँ की हैं। मजलिस में उसे तालियाँ मिली हैं-- उसी से उसे जोर मिला है। उसने बहुत तरह से सोच कर देखा था। सोचा था, कल ही वह थियेटर जायेगी और थियेटर के मालिक का हाथ-पैर पकड़ कर प्रार्थना करेगी। वेतन चाहे जितना हो कम मिले, मगर उसे नौकरी का इन्तजाम कर ही लेना है। वह मंजरी का घर छोड़ कर चली जायेगी। बस्ती में जा कर झुग्गी में रहेगी। उन लोगों की जिन्दगी का यही आखिरी फलाफल है। कितनी ही रूपसी उर्वशियों ने अपने यौवन-काल में दो-मंजिले, तीन मंजिले मकान के अन्दर पलंग पर पाँव लटका कर, हीरे-जवाहरात से सज-सँवर कर, शराब के नशे में गर्क होकर सपने में दिन बिताये हैं, उसके बाद प्रौढ़ावस्था आने पर सब खोकर उन्हें बस्ती में वास करना पड़ा है। कितनी ही औरतों को बाल कटा कर दर-दर भीख माँगनी पड़ी है। उसकी किस्मत में अगर यही है तो वह यही करेगी। कल गोपाली से झगड़ा हुआ था। उस वक्त वे एक-दूसरी पर ताना मारती रही हैं। चूंकि राजा की हवेली थी इसलिए खुल कर न झगड़ सकी और न झोंटा-झोंटी की नौबत आयी। रात घर लौट कर कमरे में छिपा कर रखी हुई शराब ढेर सारी पी गयी थी। कमरे का दरवाजा बन्द कर वह मन ही मन फुंफकारती रही थी। ऊपर के कमरे में मंजरी थी, उसी को लक्ष्य बना कर बोलती रही थी। पहले सावधान किया है, छत की ओर सिर उठा कर कहा है, 'समझोगी, आज भले ही न समझो, मगर दस दिन बाद बात समझ में आयेगी। समझोगी कि भूत-प्रेत क्या चीज है। अजगर है अजगर! अजगर अपने शिकार को पकड़ कर धीरे-धीरे निगलता है। वह उसी तरह तुम्हें निगल रहा है। पेट के अन्दर डाल लेगा। तुम्हारा हो भजन करता तो मानती कि कोई बात है। लेकिन ठहरेगा नहीं। वह ठहर कर रहने वाला आदमी भी नहीं है। उसकी निगाह तुम्हारी उम्र की ओर है।'

इसी तरह को बहुत सारी बातें बुदबुदाती रही। उसके बाद एकाएक सारा क्रोध मंजरी पर ही केन्द्रित हो गया था, 'तुम? और तुम? बुंधोदी, सेफ्टीपीन लगा दो न बहन। क्यों? शोभा की बात ने अंतड़ी में लात मारी है इसीलिए। सती साध्वी कन्या! मेरी सती साध्वी कन्या! तुम्हारा मन मैं समझती नहीं? राम भजूं या श्याम भजूं? रीतू को मर्द के तौर अपनाऊँ या राणा लाहिड़ी को! उफ्, बलैया लेने का मन करता है। चाहो तो दोनों का भजन-कीर्तन कर सकती हो। इतनी शर्म क्यों? सती बनने चली है, सती!'

बुदबुदाते-बुदबुदाते हुए उसके कानों में एकाएक बगल के महिला कमरे की घड़ी से तीन बजने की आवाज आयी। उसके बाद न जाने कब वह नींद में खो गयी। नौ बजे सोकर उठी थी। जगने पर सिर दर्द से टीस रहा था। यों उसके कमरे में एसपिरिन रहता है पर था नहीं। ठेके की दाई दुकान से सरो-सामान ला देती है। उससे एसपिरिन मँगाकर खाया था और मुँह लटकाये बैठी थी।

इस कमरे से मंजरी यदि हटा देती है तो वह कहाँ जायेगी?

कल जिद में आकर सोचा था, बस्ती में जाकर रहेगी। मन ही मन अपने दल की उन विगत यौवनाओं का स्मरण किया था, जो बस्ती में जाकर रही थीं, और भोजन के अभाव में मौत के मुँह में समा गयी थीं। हिन्दू सत्कार समिति की गाड़ी आकर उन्हें श्मशान ले गयी थी। या फिर कारपोरेशन के आदमी ने आकर दाह-संस्कार का इन्तजाम किया था। मगर कल की जिद आज उसमें नहीं है। कहा जा सकता है कि बहुत दिन पहले ही उसे बस्ती में चला जाना पड़ता। उसका प्रेमी यात्रादल का नामी गवैया था। वह अपनी पूरी कमाई उसके हाथ में सौंप देता था। उसी की वजह से उसने कम वेतन पाने के बावजूद मंजरी ऑपेरा की नौकरी स्वीकार की थी। वह स्वयं मंजरी का मन बहलाव करती रहती थी। गोरा बाबू ने खुश होकर कहा था, 'तुम लोग नीचे के कमरे में रहो।' मन ही मन, बल्कि हृदय से वह मंजरी को प्यार करती है। मंजरी भी नमकहराम नहीं है। गायक गोपाल की मृत्यु के बाद शोभा को दल या घर से भगाने की बात जबान पर भी नहीं लायी थी। मगर कल उसने यह क्या किया! छिः छिः छिः! अपने बरामदे पर खड़ी हो कर उसने आकाश की ओर निहारा। उसे ऐसा अहसास हुआ जैसे पूरी धरती पर सन्नाटा रेंग रहा है।

शिवनन्दन हाट-बाजार करने गया, जाकर लौट आया। उस पर आँख जाते ही बोला, 'कल रात क्या हुआ था शोभादी? कंधे पर भूत सवार हो गया था?'

उसने उत्तर नहीं दिया था, कमरे के अन्दर चली गयी थी।

कुछ देर बाद रीतू बाबू और गोपाल मंजरी के पास आये थे। थोड़ी देर बाद गोपाल ने आकर पुकारा था, 'शोभा!'

शोभा की छाती धड़क उठी थी। सोचा था, नोटिस आ गया'। उसने इतना ही कहा था, 'अयँ?'

गोपाल ने कमरे के दरवाजे पर खड़े होकर कहा था, 'एक बात पूछने आया हूँ।'

'क्या?'

'आज पार्ट करना है या—'

शोभा बीच में ही बोल पड़ी थी, 'क्यों नहीं करूँगी?'

'मास्टर साहब ने यही पूछने कहा है। यानी रीतू बाबू ने।'

शोभा के गले में कोई चीज पैबन्द लगे कपड़े की तरह अटक गयी है। बगैर

चिल्ला कर रोये वह बाहर नहीं निकलेगी। फिर भी उसने किसी तरह कहा, 'कल तो उनका पैर सबके सामने पकड़ चुकी हूँ।'

'अच्छा। तो फिर यही जाकर कह आता हूँ।'

'उसने क्या मुझे बुलाया है?'

'मैं जाकर पूछ आता हूँ। अगर कहेंगे तो पुकार लूंगा।'

गोपाल चला गया। उसके बाद वह दिन-भर इस बात की कोशिश करती रही कि ऊपर मंजरी के पास जाये, उसका हाथ पकड़ कर कहे, 'मुझे क्षमा कर दो बहन।' लेकिन वह वैसा कर नहीं सकी थी।

इस बीच रीतू बाबू चला गया था। मंजरी ऊपर अकेली ही थी। फिर भी वह ऐसा नहीं कर सकी। ग्यारह बजे बुँचो आयी थी, उसने सीढ़ी पर से पूछा था, 'शोभादी, क्या कर रही हो?'

इच्छा रहने के बावजूद शोभा उसके साथ ऊपर नहीं जा सकी थी। शुष्क स्वर में बोली थी, 'क्या करूँगी बहन! बैठे-बैठे अदृश्य के बारे में सोच रही हूँ।'

मंजरी ने भी उसे बुलावा नहीं भेजा था। सोचते-सोचते उसे एक दिशा मिल गयी है। इससे वह सिहर उठी। उसने सोचा है, आज की मजलिस में उससे पार्ट करा कर कल उससे कहा जायेगा, अब तुमसे काम नहीं चलेगा।

उसके बाद या तो शिवनन्दन या गोपाल आकर कहेगा, 'शोभा, अगले महीने से यह कमरा छोड़ देना पड़ेगा।' वह भयभीत हो उठी थी। एक बार सोचा था, शराब मँगा कर पी ले। शराब पीने से साहस का अनुभव होगा। ढेर सारी शराब पीने से आज भी वह उसी तरह की उन्मत्त देह-व्यवसायिनी हो जाती है, जिसे किसी चीज का कोई भय नहीं रहता, किसी चीज का कोई संकोच नहीं रह जाता। लेकिन उसका भी साहस नहीं हुआ था।

उसकी सुबुद्धि कह रही है, अब अपना सर्वनाश मत कर। एक ऐसा वक्त आया था कि उसमें कौतुक जग पड़ा था। तब चार बज रहे थे। रीतू बाबू दुबारा लौटकर आया था, उसके साथ बाबुल बोस और राणा थे। वे लोग तैयार होकर आये हैं, यहीं से मजलिस की ओर जायेंगे।

तख्ते पर एक तिपाई रख और उस पर खड़ी होकर उसने उन लोगों की बात-चीत सुनने की कोशिश की थी। हास-परिहास की बातचीत के माध्यम से असली बात बालू के नीचे के पानी की तरह चलती है। शोभा बालू खोदकर उसका पता लगाना जानती है। बोतल और गिलास की टन-टन आवाज की वह उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही थी। मंजरी के कमरे में बैठकर रीतू बाबू जिस दिन शराब पियेगा, उसी दिन वे एकाकार हो जायेंगे, इकाई हो जायेंगे। तब दो नहीं रह जायेंगे। वह जाहिल उसी मौके की तलाश में है, शोभा यह जानती है। मंजरी भी जानती है। मंजरी एक दिन किसी आदमी को अपना लेगी, उसे गोरा बाबू के स्थान पर बिठायेगी,

इसमें सन्देह नही। लेकिन बोतल-गिलास की आवाज उसे सुनायी पड़ी। वह महसूस कर रही है कि मंजरी मन ही मन राणा लाहिड़ी को खींच रही है। राणा शराब नही पीता है, सिगरेट नही पीता है—इसलिए क्या वह यह सब करने नही दे रहा है। कुछ देर तक तिपाई पर खड़ी रहने के बावजूद जब उसे उत्साह जनक कोई बात सुनायी नही पड़ी तो नीचे उतर गयी थी। भाग्य अच्छा था कि नीचे नही गिरी वरना मुँह के बल गिर पड़ती। क्योंकि नीचे उतरते ही रीतू बाबू ने पुकारा था, 'शोभा! तैयार हो जाओ। निकलने का वक्त हो गया है।'

शोभा की छाती धड़क उठी थी। वह हांफती हुई बाहर आयी थी और कहा था, 'मैं बिलकुल तैयार हूँ।'

'हाँ, गोपाल गाड़ी लेकर आ रहा है, तुम उसके साथ चली जाओ।'

'हुँ' शोभा के मुँह से 'हुँ' अपने आप निकल गया। अब तक वह बड़े ऐक्टर-ऐक्ट्रेस के साथ जाती थी। गोरा बाबू के चले जाने के बाद से मंजरी के साथ वह, बुँची, शेफाली और गोपाली जाती थी। उन लोगों के साथ शिवनन्दन रहता था। अब से उसे सब के साथ जाना है।

वह उसी तरह आयी है। आपत्ति नही की थी। आने के बाद वह सबसे पहले मेकअप कर एक किनारे खामोश बैठी हुई है।

शेफाली ने पूछा, 'सब का हो गया—बुँचीदी, शोभादी ?'

शोभा ने सिर उठाया और अत्यन्त विनम्रता के साथ कहा, 'आँख के सामने ही सज-सँवर कर बैठी हूँ बहन।'

शेफाली महिलाओं के वेश-मन्दिर से निकल कर बाहर चली गयी।

घण्टा बज उठा। कनसर्ट बज रहा है।

शुरू में ही शेफाली का गीत है। मृत्यु करुण स्वर में गीत गा रही है। वह एक काले कपड़े से ढँकी हुई है।—

'मेरी पीड़ा समझ न पाये कोई, मैं हूँ चिर अपराधिनी।
विधाता ने मेरी सृष्टि पराये के वक्षस्थल की निधि का अपहरण करने के लिए किया है, इसीलिए मुझे ऐसा करना पड़ता है। मैं रोती हूँ, परन्तु उस रुलाई से मेरी आँखों से आँसू नही गिरते, कण्ठ से स्वर

नहीं निकलता—केवल मेरा हृदय टुकड़ा-टुकडा हो जाता है। मनुष्य मुझे अभिशाप देता है। मैं चिर एकाकिनी हूँ, चिर विषादिनी। हाय, कोई ऐसा नहीं है जो मुझे पराजित कर मेरे हाथ से अपने प्रियतम को छुड़ाकर ले जाये।'

नारी कण्ठ में देव वाणी हुई—'तुम्हारी इस वेदना और दुःख का मैं विनाश करूँगी।'

'कौन हो तुम ?'

'मैं सती हूँ—सृष्टि की आद्या, मैं महिमा हूँ।'

मृत्यु ने प्रणाम करते हुए कहा, 'मैं तुम्हारी प्रतीक्षा करती रहूँगी बिटिया। कितने दिनों तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ?'

'आज से सत्रह वर्ष तक। आज मैं सावित्री के रूप में पृथ्वी में जन्म ले रही हूँ।'

नेपथ्य मे वेश-मन्दिर से शंख ध्वनि की आवाज आकर तैरने लगी। उसके बाद ही नाटक शुरू हो गया। शुरुआत के पहले की इस प्रस्तावना से दर्शक वृन्द अभिभूत हो गये।

उसके बाद ही प्रथम दृश्य में षोड़शी ने अपने पिता अश्वपति की राजसभा में विनम्र पदक्षेप के साथ प्रवेश किया। वह बेजोड़ सुन्दरी दीख रही थी। सचमुच ही वह षोड़शी जैसी दीख रही थी। आसमानी रग की बिना कोर की साड़ी, गाढ़े हरे रग के ब्लाउज और खुले केश में वह एक पवित्र मनोरम मूर्त्ति जैसी लग रही थी।

नाटक के आरंभ में तत्त्व की बातें है। सावित्री एक सप्ताह के दरमियान सोलह साल अतिक्रम कर लेगी और करेगी तो शास्त्र के अनुसार पितरो को नरक में वास करना होगा। इसी की चर्चा है। नाटक मे इस तरह की काफी चर्चाएँ हैं। यम और सावित्री का वार्त्तालाप तो दर्शन की ही बात है। सबों को आशका थी, एक मात्र रीतू बाबू को छोड़कर। साठ वर्ष उम्र हो चुकी है, पैंतीस वर्ष से अधिक अरसे से यात्रा मे अभिनय करता आ रहा है। वह इस देश के श्रोताओं से परिचित है। जब नाटक पढ़ा जा रहा था, उस समय बाबुल ने पूछा था, 'वेरी-वेरी हार्ड नहीं हो गया है बिग ब्रदर ?'

रीतू बाबू ने कहा था, 'होने दो जी।'

बाबुल ने कहा था, 'आपका एक नया 'नेमकरण' करूँगा।'

'क्या ?'

'डेन्टिस्ट ड्रामाटिस्ट।'

'इसके मानी ?'

'पार्ट करते-करते कच्चा दाँत हिलने लगेगा, हिलता हुआ दाँत 'ब्रेक' कर जायेगा। योगा बाबू को भाण्डव का पार्ट दे दें। उस बूढ़े के दाँत गिर जायेंगे तो वह जिन्दा रहेगा।'

योगा ने कहा था, 'आप अच्छा कह रहे हैं जनाब, उसके बाद मैं फ-फ करता रहूँ और मेरी नौकरी चली जाये ?'

शोभा से तब हँसी-मसखरी चलती थी। शोभा ने कहा था, 'उसे तुम लो मकुना हाथी। दाँत टूट जायेंगे तो नये दाँत बनवाकर नवयुवक हो जाओगे।'

मंजरी ने कहा था, 'और कुछ सरल नहीं बनाया जा सकता है मास्टर साहब ?'

रीतू बाबू का उत्साह अब थोड़ा-बहुत ढीला पड़ गया था, 'सरल ? सरल बना देने से इसका गाम्भीर्य समाप्त हो जायेगा। फिर इन तात्विक बातों को छोड़ देना पड़ेगा।'

एकाएक बाबुल ही बोल उठा था, 'रहने दें बिगब्रदर। वीज आर नॉट कोयलाज कि पत्थर को तोड़-तोड़कर चूल्हा सुलगाया जाये। हीरा हाई ही होता है। फिर भी नो बॉडी थ्रोज इट अवे। जो नहीं पहचानता है वह भी उसकी जगमगाहट देखता है—देवता समझकर उसकी पूजा करता है। रहने दें।'

राणा लाहिड़ी ने भी कहा था, 'रहने दे। बाद में हटा दिया जायेगा।'

बाबुल ने कहा था, 'न होगा तो आँधी की तरह बोल जाऊँगा। आँधी की तरह। लोग अवाक् होकर देखते रह जायेंगे। कानों से जो कुछ सुनेंगे, आँधी का फुत्कार सुनेंगे—जिसका कोई अर्थ न है और न होता है। मीनिंग लेस। सुन कर बस इतना ही कहेंगे, वाह-वाह। सोचेंगे, बात क्या है ? यानी समथिंग वेरी गम्भीर। जमेगा ही। बिग ब्रदर, बोलिये न वही जो उस दिन बोल रहे थे।'

रीतू बाबू ने हँस कर कहा था, 'बात यह है कि एक बार मुफस्सिल में लगातार प्ले चल रहा था। यह बहुत दिन पहले की बात है। उन दिनों लोग सोशल प्ले पसन्द नहीं करते थे। मैं और रमेश बाबू किराये पर गये थे। प्ले झूल रहा है, किसी भी तरह जमने का नाम नहीं ले रहा है। अचानक रमेश बाबू बोले, ठहरो। वेश्या घर में बैटल आफ एजिन कोर्ट के वर्ष के बारे में झगड़ा चल रहा था। उन्होंने बीच में उठ कर दो झगड़ते व्यक्तियों को डाँट कर चुप करा दिया और रघुवीर का सलाप शुरू कर दिया—'उत्ताल तरंगमयी फेनिल नर्मदा—फेनिल राक्षस जैसा मुख उठा कर हुंकार करती हुई किसकी ओर भागी जा रही है यह उन्मादिनी ?' इसका वण्डरफुल एफेक्ट हुआ। जो झपकी ले रहा था, वह सीधा होकर बैठ गया, जो सो रहा था उसे टहोके लगा कर बगल वाले ने जगा दिया और कहा, 'सुनो सुनो सुनो।' वे लोग हड़बड़ा कर उठ बैठे।

सब लोग हँसने लगे। रीतू बाबू ने कहा, 'बाबुल ब्रदर ठीक ही कह रहा है। माण्डव नाहू बाबू है और सत्यवान राणा बाबू। जरा फीलिंग के साथ पार्ट बोलेंगे तो जम जायेगा।'

आज अभिनय की मजलिस में देखने को मिला कि उस बात में सच्चाई है। बल्कि फीलिंग कम होने से और अधिक जमा। लोग अर्थ समझना चाहते हैं, साथ ही

साथ तत्त्व की बातों को नापसन्द भी नही कर रहे हैं। उस प्रस्तावना के दृश्य, शेफाली के गीत और देववाणी से नाटक जो जमा तो फिर उखड़ने का नाम ही नही लिया। मृत्यु रो रही है और वह मनुष्य से पराजित होना चाहती है—इसी से लोग ध्यानमग्न हो गये। उसके बाद षोड़शी सावित्री की धीर और मीठी बातों तथा शांत, दृढ़ पदक्षेप ने लोगों को शान्त परन्तु एक संभ्रमपूर्ण मोह से आविष्ट कर लिया। उसने शान्त स्वर में कहा, 'पिता, आपके चरणों का स्पर्श कर इसी क्षण मैं रवाना हो रही हूँ। विधाता द्वारा निर्धारित मेरे पति के दर्शन यदि इस सप्ताह में होते है तो मैं घर लौट आऊँगी, नही तो यह अन्तिम भेंट है पिता जी—। मैं पुनः लौटूंगी नही, जलती हुई चिता में प्राण न्योछावर कर दूँगी।'

प्रथम दृश्य मे ही लोगों की आँखों मे आँसू भर आये। तालियाँ नही बजी परन्तु बरामदे के विशिष्ट लोगों ने साधुवाद जनाया। युद्ध की उत्तेजना नही है, शोर-गुल नही है—एक शान्त उदास परिणाम की ओर नाटक अग्रसर हो रहा है। एक प्रसन्न पवित्र धारा की तरह। लोगों को बहुत अच्छा लगा।

चौथे दृश्य के बीच में आकर नाटक आश्चर्य जनक रूप में जम गया। विषय-वस्तु जैसे एक महिमा क संचार कर गयी।

यह वह दृश्य है जिसमें सत्यवान अपनी मृत्यु-तिथि पर रात के वक्त घर में यज्ञ की लकड़ी न देख कर उसी समय कुठार लेकर यज्ञ की लकड़ी लाने जाता है। सावित्री अवैधव्य व्रत कर तीन रात तक निराहार रह कर, जैसे त्रिनेत्र पसारे उसी भयंकर क्षण की बाट जोह रही है। उसने अपने गले में वस्त्र लपेट कर अपने अन्धे ससुर से रात के उसी समय पति की अनुगामिनी होने की आज्ञा मांगी। बोली, 'आज की रात मेरी व्रत-समाप्ति की रात है। इस रात मुझे पति के साथ रहना ही होगा। नियम यही है।'

ससुर को बाध्य होकर अनुमति देनी पड़ी। सावित्री-सत्यवान ने जंगल के रास्ते में प्रवेश किया। सावित्री की अपलक दृष्टि सत्यवान पर टिकी हुई है। उसके सुन्दर मुखड़े पर क्या कोई छाया पड़ी है। पाँव का काँटा चुभ रहा है परन्तु इसकी परवाह नहीं। अचानक सत्यवान के ध्यान में बात आती है और वह पूछता है, 'मेरे चेहरे की ओर अपलक ताक कर तुम क्या देख रही हो सावित्री ?'

सावित्री ने थकान भरी उदास हँसी हँस कर कहा, 'आपको ही प्रभु।'

सत्यवान ने हँस कर कहा, 'मेरे इस मुखड़े की ओर तुम्हारी दृष्टि रात-दिन टिकी रहती है। गहरी रात में जगने पर देखता हूँ, तुम एकटक मेरे मुखड़े की ओर ताक रही हो। दिन के समय मैं काम करता हूँ और तुम्हे अपलक अपने मुखड़े की ओर ताकते हुए पाता हूँ। वन में फल इकट्ठा करने जाता हूँ, वन के प्रवेश-पथ पर खड़े होकर पीछे की ओर मुड़ कर देखता हूँ और पाता हूँ कि मैं जिस ओर जा रहा हूँ तुम उस ओर ताक रही हो। वन से जब तीसरे पहर लौटता हूँ तो आश्रम के प्रवेश-पथ पर देखता हूँ कि तुम खड़ी हो और रास्ते की ओर निहार रही हो। पथ

के मोड़ पर मुड़ते ही तुम्हारी दृष्टि मेरी दृष्टि से मिल कर प्रदीप की तरह जल उठती है। आज इस कृष्ण चतुर्दशी के अँधेरे में भी तुम्हारी दृष्टि मेरे मुखड़े पर टिकी हुई है। पथ के काँटों को तुम अनायास ही रौंदती चली जा रही हो। तुम्हें क्या थकावट का अनुभव नहीं होता ?'

सावित्री ने स्वगत-भाषण किया, 'मैं क्या देखती हूँ, काश यह बात तुम जान पाते प्रियतम !'

'सावित्री ?'

अब की सिर का घूँघट जरा सरका कर मंजरी ने लज्जा के साथ कहा था, 'प्रभो, काव्य-शास्त्र में पढ़ा है, चन्द्रमा ने एक बार चकोरी से ठीक यही प्रश्न किया था। प्रिया चकोरी, तुम्हें मैं सृष्टि के आदि काल से देख रहा हूँ, रात में तुम निद्राहीन होकर ऊपर की ओर मुखड़ा उठाये मेरी ओर निहारती रहती हो, आकाश की ओर पंख फैला कर तैरती रहती हो। तुम्हें क्या नींद नहीं आती ? थकावट का अनुभव नहीं होता ? चकोरी ने कहा था, ओ प्रिय, जिस दिन तुम्हारे उस मुखड़े पर आँखें गयीं, उसी दिन तुम्हारे रूप की आग में मेरी आँखों की नींद जल कर राख हो गयी। और थकावट ? तुम्हारे मुखड़े की हँसी से जो अमृत टपकता है उस अमृत को अहरह पान करती हूँ—थकावट फिर कैसे आयेगी ?'

आश्चर्य की बात है ! दर्शक वृन्द वाह-वाह कर विभोर हो गये थे।

उसके बाद यम के साथ सावित्री का दृश्य। यम आकर खड़ा हुआ। सावित्री ने प्रणाम करके कहा, 'आप कौन हैं प्रभु, अपरूप भीम कान्ति। सर्वाङ्ग से अमृत धारा टपक रही है। आप दुर्निरीक्ष्य कृष्ण वर्ण हैं परन्तु उज्ज्वल ज्योतिर्मय। प्रसन्न, गम्भीर - धीर—। आप कौन हैं प्रभु ?'

यम बोला, 'सावित्री, मैं मृत्यु-अधिपति यम हूँ। मैं क्योंकि मृत्यु का अधिपति हूँ इसलिए मेरी भीम कान्ति है। मैं अमृत का भण्डारी हूँ, इसीलिए मेरे अंगों में अमृत की धारा है। मैं समस्त धर्म, समस्त नियमों के केन्द्र में दण्ड के रूप में वास करता हूँ—इसीलिए मैं धीर-गम्भीर हूँ। नियम और मैं अभिन्न हूँ और इसीलिए मैं यम हूँ। सावित्री, तुम पुण्यवती हो, तपस्विनी हो। तुम्हारे पुण्य की कोई सीमा नहीं। यही कारण है कि तुम मुझे देख रही हो। अन्यथा जीव-जगत की दृष्टि में मैं केवल सघन अन्धकार हूँ, दुर्भेद तमसा। महा भयकर। सत्यवान सत्य के पालन में दृढ़ था, वह भी पुण्यवान है। परन्तु धनी-निर्धन, गुणी-अवगुणी, पंडित-मूर्ख—समस्त मानव जगत के अमोघ नियम के अनुसार जन्म मृत्यु के अधीन है। उसी अमोघ नियम के अनुसार सत्यवान आज मृत्यु के अधीन होने जा रहा है। मैं उसके प्राण-पुष्प का हरण करने आया हूँ। भद्रे, तुम शोक से आतुर मत होना। उसकी देह छोड़ दो, मैं सत्यवान के प्राण-पुष्प को ग्रहण करूँगा।'

सावित्री धीरे से हटकर खड़ी हो गयी। यम सत्यवान के प्राण-पुरुष को लेकर चलने लगा। सावित्री उसका अनुसरण करने लगी। अचानक यम ने मुड़कर देखा और चौंकते हुए कहा, 'यह क्या सावित्री! तुम मेरा अनुसरण करती हुई कहाँ जा रही हो? मैं निर्भेद अँधेरे के बीच गमन करता हूँ। किसी जीव की आँख उस अँधेरे को भेद नहीं सकती। मैं तुम्हें स्नेह की दृष्टि से देखता हूँ और चूंकि मेरे साथ आ रही हो, इसीलिए तुम इतनी दूर तक आ सकी हो। लौट जाओ बिटिया, लौटकर चली जाओ। अबूझ मत बनो।'

सावित्री बोली, 'प्रभु, शास्त्र में है कि तीन पग एक साथ विचरण करने से मैत्री होती है। आप के साथ तीन पग से अधिक चलने के कारण आप की मैत्री प्राप्त हो चुकी है और मैं स्वयं को धन्य समझ रही हूँ। इसी कारणवश आप मुझ से स्नेह कर रहे हैं। केवल मैत्री के कारण ही नहीं, मेरे पुण्यबल के कारण भी आप मुझे स्नेह की दृष्टि से देख रहे हैं। है न यह बात धर्मराज?'

'हाँ बेटी, हाँ। तुम साकार पुण्य और विद्या हो। मैं तुम से सन्तुष्ट हूँ। तुम्हें वरदान देना चाहता हूँ। बताओ बेटी, क्या वरदान लोगी? सत्यवान के प्राणों के अतिरिक्त तुम जो भी वरदान माँगोगी, दिया जायेगा।'

वाक् युद्ध चलता है। शास्त्र की बातों की चर्चा। यम रीतू बाबू है, सावित्री मंजरी। दोनों के वाक् युद्ध को श्रोताओं ने ध्यान से सुना। ऐसी चुप्पी छायी थी कि एक सूई भी गिर पड़े तो आवाज सुनायी पड़ जाये। उसी चुप्पी में श्रोताओं ने सुना। एकाध बार कोई बच्चा रो उठा तो उसकी माँ उसके मुँह पर हाथ रखकर बाहर चली गयी।

अन्त में यम मृत्यु पुरी के द्वार पर आकर खड़ा हुआ। सावित्री ने पीछे से पुकारा, 'धर्मराज!'

यम उसे सत्यवान के औरस से सौ पुत्रों की जननी होने का वरदान देकर आया है। सोचा है, छुटकारा मिल गया। लेकिन बुलाहट सुन कर यम चौंक पड़ा, 'यह क्या सावित्री, तुम मुझे छोड़ नहीं रही हो?'

'मैंने आपको छुटकारा दे दिया है पर आप कहाँ ले रहे हैं।'

'लौट जाओ बेटी, अभी मैं नगर में प्रवेश करूँगा और तुम महा अंधकार में खो जाओगी।'

'आप नगर में प्रवेश नहीं कर सकिएगा धर्मराज!'

'क्या कह रही हो? मैं नगर में प्रवेश नहीं कर पाऊँगा?'

'नहीं। सोच कर देखिये, आप धर्म के द्वारा प्रतिष्ठित हैं—नियमों के द्वारा नियंत्रित हैं। आपके द्वारा त्रिभुवन नियंत्रित है। आपने मुझे वर दिया है—सत्यवान के औरस से मैं सौ पुत्रों की जननी बनूँगी। परन्तु आप उस प्राण-पुरुष का हरण कर रहे हैं। इससे आपके शब्द निष्फल हो जायेंगे। आप असत्यवादी होकर धर्मच्युत होने जा रहे है। धर्मराज, वह धर्मपुरी है और धर्मपुरी धर्महीन नहीं होगी। आपके

सामने का सिंह द्वार अब नहीं खुलेगा। अब आपको वहाँ का प्रवेशाधिकार नहीं है।'

यम थर-थर काँपने लगा। घुटने के बल बैठ कर बोला, 'बेटी, बेटी तुम कौन हो?'

सावित्री बोली, 'मैं सत्यवान की प्रियतमा हूँ, शास्त्र में मेरा नाम सावित्री है। धर्मराज, मैं वही चिरन्तन सती हूँ। मेरे अस्तित्व से ही तुम्हारा अस्तित्व है। तुम धर्मराज, धर्महीन होने चले थे—उस नगरी के प्रवेशाधिकार से वंचित होने जा रहे थे। तुम्हें पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए मैं इतनी दूर आयी हूँ। सत्यवान का प्राण-पुरुष मेरे हाथों में सौंप कर तुम पुनः प्रतिष्ठित होओ।'

धर्मराज ने प्राण-पुरुष उसके हाथों में सौंप दिया। एक रूमाल में बँधी हुई वह कोई कठिन वस्तु है।

सावित्री बोली, 'लो अब तुम्हारी नगरी का सिंह द्वार खुल गया। मैं आनन्द के साथ कह रही हूँ कि तुम अपने अधिकार को प्राप्त कर लोगे। नगरी में प्रवेश करो।'

धर्मराज ने कहा, 'जय सती, जय सती, जय सती।'

ठीक इसी क्षण मृत्यु-रूप-धारिणी शेफाली ने हाथ जोड़कर घुटने के बल बैठते हुए कहा, 'आज मैं धन्य हूँ। मैं मृत्यु हूँ, मैं अमृत में परिणत हो गयी। हे महादेवी, तुम मेरा प्रणाम स्वीकार करो।'

सावित्री बोली, 'आज तुम्हारा कृष्णावरण खुल जाये—। अमृत रूपिणी, अप-रूपा मृत्यु, तुम आनन्दमय रूप में प्रकाशित होओ।'

शेफाली ने काला वस्त्र उतार दिया।

तपस्विनी कुमारी वेशधारिणी शेफाली बहुत ही फब रही थी। चारों ओर से साधुवाद की ध्वनि गुंजित होने लगी। सबकी आँखों में आँसू थे।

मंजरी, रीतू बाबू और शेफाली वेश-मन्दिर में लौटने के बाद देखा, बाकुलिया के देवेन्द्र बाबू दरवाजे की देहरी पर खड़े हैं। बोले, 'बहुत ही अच्छा अभिनय हुआ है। अपार आनन्द मिला।'

लेकिन मंजरी खड़ी नहीं रही। उसने आकर मेकअप टेबुल पर सिर टिका दिया। जैसे वह टूट गयी हो। एक आवेग उसके वक्ष से जबरन बाहर निकलना चाहता है। एक दबा हुआ क्षोभ या अभिमान या कि ऐसा ही कुछ आज की इस बेजोड़ सफलता पर छिटककर फैल गया है और उसने उसकी सारी शक्ति को निचोड़ लिया है। उस पर, आज दिन-भर उसने मुँह में एक भी दाना नहीं डाला है। चूंकि सावित्री का पार्ट करना था इसलिए कुछ भी नहीं खाया था। कई बड़ी गायिकाओं की इस तरह निराहार रहने की बात वह सुन चुकी है। उसकी दादी भी कीर्तन के दिन तब तक मुँह में एक भी दाना नहीं डालती थी जब तक कि मजलिस चलती रहती थी। इसके अलावा एक गोपनीय बात है, जिसकी जानकारी एकमात्र शिवनन्दन के अतिरिक्त किसी को नहीं है। कल वह रजिया का पार्ट करने के बाद घर लौटकर

दोनों हाथों से सिर थामे बैठी थी। सोयी नहीं थी। सिर्फ यही सोचती रही थी कि क्यों आज उसका पार्ट ऐसा हुआ? रिहर्सल नहीं हुआ था। आज मजलिस में—? शोभा का कारनामा उसे बार-बार याद आया था। कितना गन्दा मन है! कितनी घिनौनी दृष्टि! पूरे दल के सामने ऐसी हरकत की कि क्या कहा जाये! एक बार अपने आप पर क्रोध आया था। क्यों वह इस तरह उत्साहहीन हो गयी? शर्म लगी? किस बात की शर्म? इसमें उसके लिए लज्जा का कौन-सा कारण है? वह कुल-कामिनी नहीं है। वह भी कीर्तन वाली राधारानी की पोती है, तुलसी की लड़की। उसकी माँ या दादी जो कुछ कर गयी हैं, वह सब करने में उसके लिए शर्म की कौन-सी बात है?

उसने गोरा बाबू को नहीं छोड़ा है। गोरा बाबू ने ही उसे छोड़ दिया है। अली की वजह से उसे छोड़ दिया है। वह किसी और को लेकर जीवन की शुरुआत क्यों न करे? एक और आदमी के साथ वह फिर नये सिरे से जीवन की शुरुआत करेगी। मंजरी ऑपेरा को चालू रखेगी। चलायेगी भी तो पहले से बहुत अधिक ढंग से। मंजरी यात्रादल की नाट्य सम्राज्ञी बनेगी, जिस तरह कि तारा सुन्दरी थियेटर की नाट्य सम्राज्ञी बनी थी। मन ने प्रसन्न होना चाहा था, मगर सफल नहीं हो सका था। अचानक एक बार उत्तेजनावश उठकर गयी थी और बक्से से ढूंढ़कर विलायती शराब निकालकर ले आयी थी। गोरा बाबू खरीदकर कुछ विलायती शराब घर में रखा करता था। कभी कभी बड़े ठाठ से चुस्कियाँ लेता था। इस शराब का मंजरी ने भी दवा के रूप में बीच-बीच में सेवन किया है। कभी-कभार गोरा बाबू की कसम के दबाव पर विलासिता के रूप में सेवन किया है। एक बोतल में लगभग चौथाई शराब थी। इसके अलावा एक भरी हुई बोतल भी थी। चौथाई बोतल को निकाल उसने सावधानी से गिलास में शराब ढाली थी और पानी मिलाकर पी गयी थी। कुछ ही क्षणों के दौरान सिर चकराने लगा था। दोनों कान गरम हो गये थे। साँस की भी यही हालत थी। नीचे शोभा बुड़बुड़ा रही है, गन्दी बातें बक रही थी। यह सब भी उसके कानों में आया था। चिल्लाकर उसने शोभा की बातों का उत्तर नहीं दिया था। लेकिन बिस्तर पर लेटकर हँसते हुए धीमे स्वर में उसकी बात का उत्तर दे रही थी और स्वयं ही उसे सुन रही थी।

'हाँ-हाँ, करूँगी, जरूर करूँगी। रीतू बाबू को ही सबसे बड़ा मालिक बना दूँगी। तुम्हारे लोभ की मुझे जानकारी है। तुम्हें नहीं प्राप्त होगा, दुलारी। नहीं होगा।'

अचानक खामोश होकर सोचने लगी थी, रीतू बाबू या राणा लाहिड़ी!

'राणा—'

'नहीं, राणा भाग जायेगा—गोरा बाबू की तरह ही भाग जायेगा।'

'नहीं। राणा जितने दिनों तक रहना चाहे रहे। जितने दिनों तक उसे पा सकूँगी, रखूँगी। छोड़कर जाने नहीं दूँगी।' उठकर थोड़ी-सी शराब पी ली थी।

प्रगाढ़ नशे मे उसके अन्दर आदिम बहुवल्लभा जग पड़ी थी। दोनों—दोनों को लेकर वह खेलेगी। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी थी। हँस रही थी कि किसी की आवाज सुनकर चिहुँक उठी थी।

'कौन ?'

'मैं—शिवनन्दन। तुम्हें क्या हुआ है ? अयँ ?'

'कुछ भी नही। तू चला जा।'

छाती धक-धक कर रही थी। उसके बाद न जाने कब नींद में खो गयी थी। लेकिन सवेरे जगने पर उसकी मानसिक ग्लानि की कोई सीमा न थी। स्वयं को दुतकार कर संयत किया था। आईने के सामने खड़े रहने मे भी शर्म का अहसास हो रहा था।

शिवनन्दन ने आकर कहा था, 'रात में यह तुमने क्या किया था ? अयँ ? बचपन से तुम्हे पाला-पोसा है, तुम्हारे प्रति मुझमें अपार माया-ममता है। इसीलिए मुझे दुःख होता है। नही, ऐसा मत किया करो। मत पिया करो। ऐसा करोगी तो मैं चला जाऊँगा।'

थकान और शर्म से टूटकर उसने कहा था, 'नही, अब कभी नही पियूँगी शिवना। कभी नही। देख लेना—'

'नहा लो, अच्छी तरह नहा लो।'

'तू एक रिक्शा ले आ, गङ्गा-स्नान कर आऊँगी।'

गंगा-स्नान करने के बाद वह फूल खरीदकर लौटी थी और बहुत देर तक पूजा करती रही थी। पूजा के आसन पर बैठकर तय किया था कि अब वह इस तरह की किसी वस्तु का सेवन नही करेगी।

शिवनन्दन ने उसे पूरे तौर पर निराहार नही रहने दिया था, लेकिन जो कुछ खिला सका था वह बिलकुल मामूली-सा था। कुछ मिठाई, फल और थोड़ा-सा दूध। इसके अलावा कई प्याली चाय। पिछली रात के अनुताप के साथ-साथ उसमें ध्यान का भी एक भाव आ गया था।

पूरे अभिनय की मजलिस में उसके ध्यान का वह भाव जाग्रत था। अभिनय के अन्त में सफलता के चरम उल्लास के दौरान कही से आकर एक हाहाकार ने उसे जकड़ लिया। इसकी वजह से उसे रोने का मन कर रहा था।

सिर झुकाकर उसने मेकअप के टेबुल पर रख दिया और आँखें बन्द कर लीं। आँसू की कई बूंदें ढुलक पड़ी और उसके साथ लम्बी साँसें चलने लगी।

मुँदी आँखों के अन्दर जो कल्पना की दृष्टि रहती है, उस दृष्टि के सामने तसवीर तिर आयी। राणा लाहिड़ी ! गोरा बाबू ! रीतू मास्टर ! यम वेशधारी रीतू मास्टर जैसे बख्तियार होता जा रहा है। उसके बाद अँधेरा तिर आया। उसके बीच प्रकाश के कुछ बिन्दु दौड़ते हुए नज़र आये। उसके बाद फिर अँधेरा। चुप्पी। सब कुछ गहरी नीरवता में डूब गया।

उसकी उस हालत की खोज की बुंची ने। यह क्या, मंजरी की कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ रही है! वह मर्दों के कमरे में दौड़ी-दौड़ी आयी।

तब बाबुल बाहर अपनी बोतल खत्म कर वेश-मन्दिर में कदम रखते हुए कह रहा था, 'मंजरी ऑपेरा हैज वन दि मैच। लाग लिव मंजरी ऑपेरा। चैलेंज टु गोराली एण्ड कम्पनी—'

अर्थात् गोरा और अली।

बुंची बोली, 'रीतू बाबू, गोपाल मामा, मंजरी बेहोश हो गयी है।'

शिवनन्दन मंजरी के लिए ही चाय ला रहा था। वह बोल उठा, 'यह देखो, दिन-भर निराहार रही, कुछ भी नहीं खाया। मैंने मना किया था। पानी-पानी-पानी-पानी चाहिये।'

चाय की प्याली रख वह दौड़ा-दौड़ा पानी लाने चला गया।

सब लोग आश्चर्य चकित हो गये —दिन-भर निराहार रही है!

सत्रह

मंजरी को होश में आने में ज्यादा देर नहीं लगी। आँख-मुँह में पानी छिड़कते ही वह होश में आ गयी थी। उसे बेहद शर्म महसूस हुई थी। बार-बार बोली थी, 'नहीं-नहीं, कोई बात नहीं है। सिर चकराने लगा था। अब मैं ठीक हूँ।'

रीतू बाबू ने नाड़ी देखकर कहा था, 'पल्स ठीक है। यह कैसा काण्ड है! दिन-भर आपने कुछ नहीं खाया। एक बात मानिये।'

'कहिये।'

'एकाध औंस ब्राण्डी—'

'नहीं-नहीं।' मंजरी सिहरकर चौंक उठी थी।

बाबुल ने आकर अकस्मात् झुककर उसे प्रणाम किया था और कहा था, 'आज से आप मेरी 'ओन' दीदी हैं।'

बाहर से आकर योगानन्द ने कहा, 'मुखर्जी साहब अभी तक खड़े हैं।'

योगा बाबू के चेहरे पर भरपूर मुसकराहट है। बाकुलिया का बयाना मिलने वाला है।

रीतू बाबू बाहर गया और मुखर्जी बाबू के साथ वापस आया। उन्होंने मंजरी से

कहा, 'आपने उपवास करके पार्ट किया है, इसीलिए इतना पवित्र और सुन्दर हुआ है। आशीर्वाद दे रहा हूँ और बाकुलिया का बयाना देकर जा रहा हूँ आना होगा।'

मंजरी ने उठकर उन्हें प्रणाम किया।

बाकुलिया। बाकुलिया से लौटकर दल ने पुनः आसनसोल में डेरा डाला। रीतू बाबू ने साहब कोलियारी के बड़े बाबू के पास और बराकर बाजार आदमी भेजा। नया मंजरी ऑपेरा पहले की अपेक्षा बढ़िया अभिनय करता है। एक रात अभिनय करके दिखाना चाहता है।

देवेन्द्र बाबू की बात ही सच साबित हुई। राजा की हवेली में रजिया के प्रथम अभिनय में जो त्रुटियाँ रह गयी थीं, बाकुलिया में उनका सुधार हो गया है। रजिया में रीतू बाबू का अभिनय सबसे अच्छा रहा। राणा लाहिड़ी, जो नये स्कूल का है, लिखा-पढ़ा हुआ और जरा अहंकारी भी है, उसने भी कहा था, 'आपने बहुत सुन्दर किया है। बहुत ही सुन्दर!'

शोभा अब भी दल में है। शोभा को हटाया नहीं गया है, मंजरी ने हटाने नहीं दिया था। शोभा का अभिनय यद्यपि पहली रात में अच्छा हुआ था लेकिन वहाँ वैसा नहीं हुआ।

मंजरी ने बहुत अच्छे ढंग से शुरुआत की थी। कहा जा सकता है कि किशोर वेशधारी रजिया में जो कौतुक परायणता है, विजय सिंह के साथ जो चुहलबाजी है—इस तरह का पार्ट उसके लिए नया था। फिर भी पहले दृश्य में उसने बहुत अच्छा किया था। यौवन की चपलता और जीवन के स्वप्न से वह जैसे हवा मे तैर रही थी। द्वितीय दृश्य मे विजय सिंह पर विजय प्राप्त कर वह सचमुच ही सम्राज्ञी की तरह निकल गयी। हर पग पर उसका अभिनय जीवन्त हो उठा। विजय सिंह के प्रणय-स्वप्न के संदर्भ में उसका एक स्वगत भाषण था। उसका उसने इस प्रकार के आवेग के साथ सुरीले ढंग से पाठ किया कि मजलिस में 'वाह्-वाह्' ध्वनि गूँजने लगी। इसके बाद ही एक तीव्र और वेधक चीत्कार गूँज उठा और उसी के साथ बख्तियार का हिंस्र गर्जन। रजिया चिहुँक उठी। बख्तियार को पुकारा। खून से लथपथ छुरा हाथ में लिये बख्तियार ने प्रवेश किया। उन बातों को सुनकर उसने ईर्ष्या से जुनून में आकर एक खोजा को छुरे से मार दिया है। यहीं से रजिया का बख्तियार से विरोध शुरू हुआ। यहीं से रीतू बाबू जिस ऊँचाई पर पहुँच गया, मंजरी उस ऊँचाई पर नहीं पहुँच सकी। बल्कि वह कमजोर ही होती गयी। उसके बाद रजिया की हत्या करने के बाद बख्तियार के उस विलाप और छाती पीट-पीट कर तड़पने के अभिनय ने दर्शकों के मन को जितना विचलित किया उतने ही वे विस्मय से अभिभूत हो गये। यह एक आश्चर्यजनक शोक था—जितना करुण, उतना ही बर्बर।

बहुतों ने कहा, 'ऐसा शिशिर बाबू और अहीन बाबू के अतिरिक्त और कोई

नहीं कर सकता। दोष में दोष यही है कि बहुत ही जोर-जोर से बोला गया है। जरा क्रूड हो गया।'

मजलिस से वेश-मन्दिर में आकर रीतू बाबू बहुत देर तक हांफता रहा था। बड़े दिन का समय था, जोरों से ठण्ड पड़ रही थी, फिर भी पसीना चलने लगा था। बाबुल पंखा झलने लगा था। उसके बाद एक बड़ा-सा गिलास सामने रख कर बोला था, 'पीजिये। वण्डर फुल! अत्यन्त ही आश्चर्यजनक! माई लॉर्ड ऐसा नहीं कर सकते थे। एगेन चैलेंजिंग गोराल्ले एण्ड कम्पनी।'

यात्रादल के बालकों का झुण्ड भी विस्मय पूर्ण दृष्टि से रीतू बाबू की ओर देखने लगा था। नायक पक्ष की ओर से दो-चार व्यक्तियों ने आकर बधाई दी थी।

देवेन्द्र बाबू ने कहा था, 'कल पुनः सावित्री देखूंगा। वह एक अलग ही वस्तु है और उसका स्वाद भी अलग है। अहाहा!'

उनकी बात असत्य साबित नहीं हुई थी। 'सावित्री' उस दिन और भी अच्छा हुआ था। मंजरी ने किसी की बात नहीं मानी थी—अभिनय के लिए उपवास किये हुई थी। इतना जरूर है कि उस दिन उसे फल और दूध का सेवन यथेष्ट मात्रा में करना पड़ा था। बाबुल और रीतू बाबू ने खड़े होकर खिलाया था।

सम्पूर्ण अभिनय जैसे एक अत्यन्त मनोहर स्वप्नमय काव्य-कथा थी। मृत्यु मनुष्य की मृत्यु के कारण रोती है। प्रिया के निकट से प्रिय को छीनने पर रोती है, माँ की गोद से पुत्र को छीनने पर रोती है। उसे प्रत्येक तृण-कण की मृत्यु पर पीड़ा होती है। वह प्रार्थना करती है, किसी मनुष्य की तपस्या के फलस्वरूप उस मनुष्य से उसे हार स्वीकार करनी पड़े। उसके लिए वह अधीरता से प्रतीक्षा कर रही है, उसके आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे हैं। लेकिन वह मनुष्य कब आयेगा?

एक अपरूप रूपसी आयी।

विश्व की आद्याशक्ति। वह सावित्री है—सत्यवान की प्रियतमा। इस असत्य के संसार में, असत्य के पाप और षड्यन्त्र से सत्यवान की अकाल मृत्यु होती है। सावित्री की तपस्या से मृत्यु को हार माननी पड़ती है, सत्यवान जीवित हो जाता है। यह एक आश्चर्यजनक सपने की कल्पना है। और यह कल्पना बेजोड़ मर्मवेधी अभिनय से जीवन्त हो उठी। अन्न एक ऐसी वस्तु है जिसे न खाया जाये, कुछ दूसरी ही चीज खा ली जाये, तो वह चीज अन्न के रस का सचार नहीं कर सकती। साथ ही उपवास भी किया है—यह चेतना एक प्रतिक्रिया जगाती है। उसी के परिणामस्वरूप मंजरी के अभिनय में एक पवित्र महिमा उभर आयी थी। दर्शकों ने भी आपस में फुसफुसा कर बातें की थीं—उपवास करके अभिनय कर रही है। सह अभिनेता और दर्शकों के मन में भी इसकी एक प्रतिक्रिया थी, जिसने एक प्रकार का संभ्रम और अनुकूल मनोभाव पैदा कर दिया था। कुल मिला कर 'सावित्री' का अभिनय आश्चर्यजनक सफल हो उठा। दर्शक रो पड़े। मंजरी की आंखों से भी आंसू झरने लगे—उस

समय जब उसे अपने हाथ में यम का दिया हुआ रूमाल, सत्यवान के प्राण-पुरुष का प्रतीक मिला।

अभिनय के अन्त में इस बार भी मेज पर सिर टिका कर वह कुछ देर तक खामोश बैठी रही। उस अवधि के दौरान बुँची, शोभा, शेफाली और गोपाली उत्कण्ठा के साथ उसके निकट खड़ी रही। अचानक थोड़ी देर बाद शोभा ने आकर उसकी पीठ पर फैले बालों पर हाथ रख कर पुकारा, 'मंजरी !'

मंजरी ने उत्तर दिया, 'ऊँ।'

'तुम्हारी तबीयत खराब है क्या ?'

'नहीं। मैं ठीक हूँ शोभादी।'

उसके बाद सिर उठा कर उदास हँसी हँसती हुई बोली, 'जरा पानी पियूँगी।' उसके बाद बोली, 'इस पार्ट मे नशे जैसा कुछ लगने लगता है।'

बाहर मर्दों के वेश-मन्दिर में भी सब लोग उत्कण्ठित थे। गोपाल औरतों के वेश-मन्दिर के दरवाजे पर खड़ा था। रीतू बाबू और बाबुल गिलास में शराब ढाल कर, हाथ मे लिये बैठे थे। गोपाल की ओर ताक रहे थे।

शिवनन्दन दूध गरम कर रहा था। मंजरी को पिलाना है। गोपाल बोला, 'बिलकुल अच्छी हैं। जरा, मतलब है कि, नशा जैसा आ गया था। सिर उठा चुकी है। बातचीत कर रही हैं।'

बाबुल बोला, 'जय काली कलकत्तेवाली। बस आइये। बिग ब्रदर !'

रीतू बाबू ने पीकर गिलास बिलकुल खाली कर दिया और सिगरेट सुलगा कर बोला, 'देख लेना लिट्ल ब्रदर, इस प्ले को देख कर लोगों को कहना होगा, राजा चला जाता है, राज्य रह जाता है। राज्य ही राजा को तैयार कर लेता है।'

बाबुल ने सिगरेट सुलगा कर कहा, 'नो डोंट टाक एबाउट इट।'

रीतू बाबू ने कहा, लेकिन हीरो कहाँ है ? राणा ?'

योगा बोला, 'बाहर मैदान मे खड़ा है सर। आसमान की ओर ताक रहा है। समझे न, यह भावुक आदमी का भाव है।'

राणा सचमुच ही मैदान में खड़ा था। सरदियों की रात, आकाश में पूनम का चाँद। उसी ओर चुपचाप निहार रहा था।

रीतू बाबू बगल में आकर खड़ा हुआ। राणा लाहिड़ी ने पग-आहट सुनने के बावजूद मुड़ कर नहीं देखा। वह तारों से भरे आसमान की ओर ताकता ही रहा।

रीतू बाबू ने पुकारा, 'राणा बाबू !'

'अयँ ! आप हैं !'

'हाँ, मैं हूँ। यहाँ इस तरह खड़े क्यों हो भाई ?'

राना ने होले से मुसकरा कर कहा, 'यों ही। सरदियों की रात में आकाश से एक उल्का टूट कर गिर पड़ा। आसमान हरा हो गया। अगर फिर गिर पड़े तो ! इसके अलावा पार्ट करने के बाद सिर बहुत भारी हो गया है।'

'पार्ट करके अच्छा लगा है ?'

'बहुत ही अच्छा लगा है रीतू बाबू। सोचा था, आप से कहूँगा।'

'तुमने पार्ट बहुत ही अच्छा किया है। अरे, तुम कह कर सम्बोधित कर दिया ! अन्यथा तो नहीं लिया ? उम्रदार हो चुका हूँ। इस दल में शुरू से ही हूँ। सबको तुम कहते-कहते ऐसा बुरा स्वभाव हो गया है कि याद ही नहीं रहती।'

'नहीं-नहीं, इससे क्या बिगड़ता है ! मैं बहुत ही छोटा हूँ। और आप में बहुत सारे गुण हैं। आपसे झूठ नहीं कहूँगा। जब आपकी बात पर बाँकुड़ा आया तो अनिच्छा से ही आया था। बी० ए० तक पढ़ चुका हूँ। नाटक के सम्बन्ध में अध्ययन भी किया है। शौक भी है। इच्छा थी कि बड़ा ऐक्टर बनूँगा। चान्स नहीं मिल रहा था। हिस्टोरिकल, मैथोलॉजिकल मुझे कतई पसन्द नहीं आता था। मैथोलॉजिकल मुझे अच्छा ही नहीं लगता। इसे मैं गाँजा कहता हूँ। थियेटर में बहुत पाबन्दी थी। छोड़ कर बैठा हुआ था। सोच रहा था, आइ० पी० टी० ए० जैसे दल में ही भर्ती हो जाऊँगा। एक प्रकार का ड्रामा मुवमेन्ट चलाऊँगा। सिनेमा में घुसने का चान्स नहीं मिला। बैठा था। रुपये की जरूरत थी। आपकी बात पर चला आया। सोचा, माहवार दो सौ रुपये की दर से सात महीने में चौदह सौ रुपये कमा लूँ। उसके बाद देखा जायेगा। बाँकुड़ा और कान्दी में अच्छा नहीं लगा था। सुरीला अभिनय ! माइथोलॉजिकल नाटक ! धत्त ! इस नाटक का कलकत्ते में रिहर्सल कर चुका हूँ। मन ही मन स्वयं पर गुस्सा आया था।'

जरा रुक कर हँसते हुए बोला, 'धर्म-पुराण वगैरह के प्रति अश्रद्धा ही नहीं है बल्कि उन्हें पोंछ-पाछ कर मिटा दूँ तो मुझे खुशी होगी। जितने भी कुसंस्कार हैं, सबके मूल में यही सब है। और इन सबों ने जीवन को भी पंगु बना दिया है—।'

वह फिर हँस दिया।

रीतू बाबू ने हँस कर पूछा, 'आज का पुराण अच्छा लगा ?'

'सच कहूँ ? अच्छा लगा। आज के अभिनय में न जाने मैं कैसा हो गया। समझ रहे हैं—लग रहा है, जिसे रियल कह कर देखता हूँ, जिसे रियल मानता हूँ, वह रियल नहीं है। रियल यदि दुःख है, सत्य है, तो ड्रिम एक दुःख। [illegible], कितना बेजोड़ ड्रिम ! आश्चर्य है ! जन्म-जन्मान्तर का देखा हुआ, [illegible] और मृत्यु से लड़ाई लड़ कर प्रिय पात्र का जीवन वापस कर लेना—[illegible] ऑफ लाइफ है। यह भाव अब भी दूर नहीं हुआ है। [illegible] नहीं [illegible]। उसका यह खुमार नहीं है। यह ड्रिम का खुमार है। अब भी लगता है, [illegible]

है तो यह अवश्य ही संभव और सुखद हो सकता है। शायद इस धरती पर इसी तरह के दो-चार दंपति खोज भी जन्म-जन्मान्तर ढोते हुए आते-जाते रहते हैं। कितना अच्छा लग रहा है'!'

'वाह !' रीतू बाबू ने कहा, 'जिन्दा रहो भाई ! तुम लोगों से यह सब बात सुनने से खुशी होती है। पहले यात्रा का दल बदेतू किस्म के घुमक्कड़ों का राज्य था। तब हां, मुझे यकीन था कि लोग आयेंगे। गोरा बाबू को देख कर सोचता था। उसके बाद तुम्हें देख कर लगता है, तुम्ही लोगों के लिए हम लोग इन्तजार में बैठे हैं। तुम लोग आओगे तो यात्रा के दल की आत्मा को मुक्ति मिलेगी। आज तुमने बहुत ही अच्छा पार्ट किया है। मैंने सोचा नहीं था कि इतना अच्छा करोगे।'

'वह—वह समझिये कि मजरी देवी के कारण हुआ। जिसे मैं ड्रिम कहता हूँ—नशा कहता हूँ—अगर वे को-ऐक्ट्रेस नही होतीं तो उसका मुझ पर कोई असर नही होता। इस तरह के रियलिज्म का मर्ज मुझे नही है। मगर क्या कहूँ रीतू बाबू, वे जब पति की खोज मे बाहर निकलीं—माँ-बाप, यहाँ तक कि नौकरानी से भी हाथ जोड़ कर कहा, 'आप लोगो के चरणो की धूल मेरा मंगल करे—आप लोगों का आशीर्वाद मेरा पाथेय बने, आप लोग कहिये कि अपने पति—जन्म-जन्मातर से जिससे बँधी हूँ, सती के शिव की तरह जो मेरे प्रियतम हैं, जिनके पैरों के नख से लेकर केश तक से मैं परिचित हूँ, उन्हें प्राप्त कर मैं लौट आऊँ। अन्यथा इस घर का दरवाजा मेरे लिए सदा-सर्वदा के लिए बन्द हो जाये।' उसके बाद वट वृक्ष और तुलसी के पौधे तक से कहा, 'आशीर्वाद दो। ओ मनुष्यो, मुझे आशीर्वाद दो।' उस समय रीतू बाबू, मैंने देखा कि उनके चेहरे पर एक ठहराव आ गया है। आँखों की दृष्टि और ही तरह की हो गयी है। मुझे नशे ने दबा लिया। मैं बहुत ही नर्वस हो गया। शुरू में मैं बोल गया—कौन ? वह कौन है ? अहाहा। यह कहने पर मुझे तालियाँ मिलीं, मुझे खुद भी अच्छा लगा। सोचा, यह बड़ा ही अच्छा लग रहा है। उसके बाद जनाब, वहाँ—मृत्यु के दृश्य मे सावित्री—कृष्ण चतुर्दशी रात—जगल का रास्ता—वहाँ भी मैंने गौर किया, 'बार-बार, हाँ बार-बार तुम मेरे मुखड़े की ओर ताक रही हो। इस मुखडे मे क्या है ? अयँ ? गहरी रात में नींद टूटने पर देखा है।' इसके उत्तर में जब उन्होंने कहा, 'प्रभु, एक बार आकाश के चन्द्रमा ने चकोरी से यही प्रश्न किया था।' यह बात जब बोल गयी तो मुझे नशे जैसा कुछ महसूस हुआ। लगा, रियल इज़ नॉट रियल। ड्रिम इज़ रियल। इसीलिए अब भी सोच रहा हूँ।'

'आश्चर्य है ! आओ, कमरे मे चलो। खाना खा चुके हो ? किस फ्लिट मे खाते हो ?'

'किसी भी फ्लिट मे नही खाता। फ्लिट मे जैसी रसोई पकती है, वह देख कर मुझे अच्छा नही लगता। पेन्ट और तेल लगा कर रग उतारे अँगोछे से हाथ पोंछ कर उसे धोता नही है। मैदा गूँथने बैठ जाता है। मैं पाव रोटी खरीद

कर रख लेता हूँ, मक्खन मेरे पास है। अण्डा रसोइये से सिद्ध करा कर डिब्बे में रख लिया था। रात में आकर वही खा लिया है। कल से मिठाई खरीद कर रख लिया करूँगा। उसी से काम चला लूँगा।'

'अगर तुम्हें एतराज न हो तो मेरे साथ खाना खा सकते हो। वह इन मामलों में साफ-सुथरा रहता है। या फिर प्रोप्राइट्रेस से कहूँगा—'

'नहीं रीतू बाबू, नहीं।'

'क्यों ? बाबुल तो खाता है।'

'वे उनको दीदी कहते हैं। उनकी बात ही अलग है।'

'तुम भी कहना।'

'नहीं।'

'क्यों ?'

'नौकरी करता हूँ, नौकरी। वे प्रोप्राइट्रेस हैं। जरूरत ही क्या है ?'

'बिग ब्रदर ! हैलो।'

बाबुल पुकार रहा है।

'क्या ?' रीतू बाबू ने उत्तर दिया।

'यहाँ आइये। डेरे पर लौटना है ? नहीं ?'

वेश-मन्दिर से झुण्ड के झुण्ड लोग बाहर निकल रहे हैं। डेरे पर जायेंगे। खाना खायेंगे। डेरा यहाँ से कुछ दूर है। कुछ ही क्यों—काफी दूर है। इसलिए झुण्ड के झुण्ड निकलने के बावजूद सब लोग खड़े हैं। दो पेट्रोमेक्स हैं, एक को सामने और दूसरे को बीच में रख कर वे एक साथ लौटेंगे। रीतू बाबू ने राणा से कहा, 'चलो, लौटा जाये।'

रीतू बाबू और राणा के आते ही गोपाल बोला, 'आप लोगों का सरो-सामान विपिन लेकर जा रहा है। फिर भी एक बार वेश-मन्दिर देख लीजिएगा क्या ?'

रीतू बाबू ने हँस कर कहा, 'देखना जरूरी है। कुछ हीरे थे और लाख रुपये का नोट था। वह सब कहाँ है ?' उसके बाद बोला, 'सो रहने दो। चलो, बीच-बीच में खोना अच्छा रहता है।'

सस्ता मजाक था। लेकिन आज की सफलता की खुशी में सब लोग हँसने के लिए जैसे तैयार ही थे। सब लोग हँस दिये। खास कर लड़के।

शेफाली ने कहा, 'हाय-हाय, राणा बाबू के मोती-जवाहरात आकाश में बिखरे ही रह गये। उनका क्या होगा ? राणा बाबू क्या रात-भर चुनते रहेंगे ?'

राणा को जरा बेचैनी का अहसास हुआ। शेफाली इसी तरह बीच-बीच में उससे जोर-जबरन बातचीत करती है। उसे अच्छा नहीं लगता।

इसी समय एक और पेट्रोमेक्स आया। शिवनन्दन मंजरी के साथ बाहर निकल आया। साथ में धुँची और शोभा हैं।

मंजरी अब भी खामोश है, पैरों की गति में थकान का भाव है। गोपाली के मन में एक शब्द गूंज उठा—'नखरा !'

शोभा को क्षमा कर देने के कारण वह मंजरी से रुष्ट हो गयी है। मंजरी की इस अभिभूत स्थिति को व्यंग्य से मन ही मन नखरा कहा है।

उस दिन रात में एक और काण्ड घटित हुआ—डांसिंग मास्टर वंसी डेरे के बरामदे पर से गिर पड़ा और उसका मुँह चोट से क्षत-विक्षत हो गया।

बाकुलिया से आसनसोल। यहाँ से दलाल बराकर बाजार और साहबों की कोलियारी में गया। इसी स्थान को मंजरी के रोजगार का केन्द्र या कर्मस्थल कहा जा सकता है। गोपाल कहता है, बँधा हुआ घर है। गोरा बाबू और अली के चले जाने के बाद भी मंजरी ऑपेरा भारा और आसनसोल में अभिनय कर चुका है। अभिनय मोटे तौर पर अच्छा ही रहा है। फिर भी लोग मन ही मन असन्तोष जाहिर करते रहे हैं। गोरा बाबू से उन्होंने राणा लाहिड़ी की तुलना की है। नये नाटक में उस तुलना का सुयोग नहीं है। इसलिए नये नाटक का मंचन कर नाम पर लगे धब्बे को पोंछना होगा। साबित करना होगा कि क्षति नाम मात्र की भी नहीं हुई है, बल्कि दल और भी अधिक शक्तिशाली और प्रभावशाली हो गया है।

सामने ही सरस्वती पूजा है। इस समय बहुत सारे स्थानों में यात्रा की मजलिस होती है। अतः इसके पहले ही नाम को और भी चमका लेने की जरूरत है।

आते ही आसनसोल से संपर्क स्थापित कर दो रात अभिनय किया। अभिनय अच्छा ही रहा। जैसा बाकुलिया में हुआ था, वैसा ही। 'रजिया' में रजिया ऊपर नहीं उठ सकी। बख्तियार का अभिनय सबसे अच्छा रहा। 'सावित्री' भी बहुत अच्छा रहा। तब हाँ, आसनसोल के लोगों ने पौराणिक नाटक रहने के कारण बहुत अधिक प्रशंसा नहीं की। और एक बात हुई—मंजरी ने अपने आपको संभाल लिया। उपवास करना उसने नहीं छोड़ा, परन्तु अभिनय के बाद मेज पर पहले की तरह सिर नहीं रखा। सहज-सरल ही बनी रही।

यही नहीं, बराकर बाजार के अभिनय के दिन साहब कोलियारी के बड़े बाबू सुरेन बाबू से उसने कहा, 'हम लोगों को ईश्वर ने अलग ही तरह का बनाकर तैयार किया है बाबू जी। हम लोगों की जात ही अलग है। वह सब बात याद रखने से काम नहीं चलता और न ही वह सब बात याद रहती है। मुझे कहाँ याद है ! आपसे सच कह रही हूँ, मुझे याद नहीं है। बल्कि शर्म ही होती है कि उसे अपना बनाकर गृहिणी बन गयी थी।' यह कह कर हँस दी थी।

सुरेन बाबू ने अभिनय समाप्त होने के बाद बातचीत के सिलसिले में गोरा

बाबू की चर्चा की थी।

सुरेन बाबू ने कहा था, 'तुम सच नहीं बोल रही हो बेटी।'

'क्यों?'

'फिर 'सावित्री' इतना अच्छा नहीं होता।'

मंजरी हँस दी थी। कहा था, 'होता है। कर सके तो होता है।'

'नहीं।'

'क्यों? आपका —।' कहते-कहते वह चुप हो गयी थी। उसके बाद फिर कहा था, 'आपने वह देखा नहीं। वह कण्डियों की कोलियारी में हुआ था। मैंने जना और मोहिनीमाया दोनों का पार्ट किया था। असी से बुरा नहीं किया था।'

सुरेन बाबू ने कहा था, 'सुना है। हाँ। सो सही है।'

मंजरी ने कहा था, 'पार्ट मिलने पर जिसकी जैसी सामर्थ्य होती है वह वैसा करता है। हम लोगों का खेल—हम लोगों के योगा बाबू गीत गाते हैं—यह माया प्रपंच माया यही विश्व के रंगमंच पर—'

सुरेन बाबू ने अधूरी पंक्ति पूरी कर दी थी, 'लीलामय नटवर हरि जिसे सजाते जैसा, वह वैसा ही सजता। यह बात सही है।' जरा चुप रहने के बाद बोले थे, 'वह सब गीत सचमुच ही गीत था!'

उसके बाद सरस्वती पूजा का बयाना करके चले गये थे। दो रात का बयाना।

सुरेन बाबू के चले जाने के बाद मंजरी बोली थी, 'मुझे यह सब बात बहुत ही बुरी लगती है बूंचोदी। इन बूढ़ों को होश-हवास नहीं रहता। अहा और अहा करते रहते हैं।'

दूसरे दिन आसनसोल के डेरे पर पुनः आदमी आया। बाहर उस दिन रोतू बाबू वगैरह की मजलिस भरपूर जमी हुई थी। गोपाल बड़ा ही खुश था। आज दो बजे तक तीन बयाने आ चुके हैं। सब के सब कोलियारी से मिले हैं। एक शनिवार की शाम सात बजे से करने को मिला है। रविवार को दो, एक तीसरे पहर पाँच बजे से साढ़े आठ बजे तक का और दूसरा दस बजे से साढ़े बारह बजे तक का। बयाना करने के लिए आने पर सब लोग कह गये हैं—दल पहले के बनिस्बत ज्यादा तगड़ा हो गया है।

आम तौर से दिन के वक्त शराब की झोंक कम रहती है। नींद की झोंक ही ज्यादा रहती है। बड़े ऐक्टरों के हाथ-पैर दाब कर दल के छोकरे काफी कमा लेते हैं।

उस समय दिन के ढाई बज रहे थे, साहब कोलियारी से आदमी आया। स्वयं बड़े बाबू ने प्रोप्राइट्रेस को खत भेजा है। बड़े बाबू ने लिखा है—बेटी, मुसीबत के बीच घिर जाने पर लिख रहा हूँ। मंजरी ऑपेरा का अभिनय यहाँ होगा, यह

सुन कर यहां का एंग्लो-इंडियन मैनेजर गुस्से से पागल हो गया है। उसने रट लगा दी है—बडे बाबू, जना नाटक ही करना होगा। एण्ड वही डान्स। दैट डान्सर। मैंने कहा, वह लडकी दल छोड़ कर चली गयी है। इस पर बोला—उन लोगों से कहिये, आदमी भेज कर मँगा ले। मैंने कहा है, साहब, उससे भी अच्छा नाच दिखाऊँगा। लेकिन साहब टस से मस नहीं हो रहा है। कहता है—जना चाहिए एण्ड दैट वेरी डान्स। मेरा तुमसे अनुरोध है कि यहां रजिया के बदले जना का अभिनय करो। सुना है, तुम स्वयं मोहिनीमाया का नृत्य और ज्यादा अच्छा करती हो। तुम्ही वह पार्ट करोगी।

गोपाल बोला, 'यह नही होगा जनाब। जिसके बारे में बातचीत हुई है, वही होगा।'

रीतू बाबू बोला, 'क्या ?'

'हुठ देख लीजिये।'

खत पढ कर रीतू बाबू बोला, 'हुं! वे जना वगैरह पुराने नाटक नहीं करना चाहती है। और सो भी जना। लगता तो नही है। फिर भी दिखा लेना अच्छा है—उन्हें दिखा दो!'

बाबुल ने कहा था, 'ह्वाइ ? प्रोप्राइट्रेस क्यों करेगी ? कोई दूसरी महिला करेगी।'

'शेफाली ?' रीतू बाबू हँस दिया था।

'येस। दैट डाय के हुक्के जैसी अली चौधरी से उसका फिगर कहीं अच्छा है, एण्ड शी विल डू बेटर। लाइये खत दीजिये, मैं जाता हूँ।'

मंजरी तब सो रही थी। शिवनन्दन बोला, 'गहरी नीद में है। अभी नहीं जगाऊँगा बोस बाबू।'

शोभा की नीद टूट गयी है, फिर भी वह बैठे-बैठे झपकियाँ ले रही है। वह उस हालत में भी मजाक करने से बाज नहीं आयी। वही पुराना स्वभाव उसके अन्दर लौट रहा है। बोला, 'इस सर्दी मे भी शेफाली आँचल बिछा कर लेटी हुई है। उसे खोज रहे हो न ?'

'रविश !' बाबुल ने कहा।

शोभा बोली, 'बात तुमने सही कही है। लोना पलस्तर की तरह चमड़ा फटने लगा है। रविश, तुमने ठीक ही कहा है।'

'शिवनन्दन !'

ठीक इसी क्षण मंजरी ने पुकारा। उसकी नीद टूट चुकी है। शिवनन्दन बोला, 'आया।'

'चाय बनाओ। सिर दर्द कर रहा है। एसपिरिन खाऊँगी।'

बाबुल ने पुकारा, 'दीदी, मैं आया हूं।'

'बाबुल ! आओ। क्या हुआ ?'

'वन लेटर, साहब कोलियारी के बड़े बाबू ने भेजा है।'

दरवाजा ठेल कर वह अन्दर घुसा। एक छोटा-सा कमरा। एक व्यक्ति के लिए भी पर्याप्त नहीं है। एक छोटे टुकड़े जैसा है। बहुत-कुछ भण्डार घर जैसा। चूंकि सर्दियों के दिन हैं, इसलिए कोई आदमी उसमें रह सकता है। एक छोटा सा तख्ता शिवनन्दन बाजार से किराये पर ले आया है। मंजरी बोली, 'बैठो।'

बाबुल ने बैठने के बाद खत दिया और कहा, 'तुम्हें लिखा है दीदी, वरना मैं ही रिप्लाइ भेज देता। साहब जना को देखना चाहता है। तुम्हें जना और मोहिनी-माया का पार्ट करना होगा। ओल्ड मैन मानो तुम्हारे ताऊ हों। मेटरनल अंकल का हठ है। उसे ही दिखाने चला आया। रिप्लाइ क्या देना है। वह मैंने तय कर लिया है।'

मंजरी ने पढ़ कर देखा और थोड़ी देर तक सोचती रही, 'क्या उत्तर दोगे?'

'दूंगा, कर सकते हैं। तब हां, मोहिनीमाया का पार्ट तुम नहीं करोगी। कोई दूसरी औरत करेगी।'

'कौन? शेफाली?' मंजरी के चेहरे पर मुसकराहट उभर आयी।

बाबुल निर्विकार है। उसने कहा, 'येस। शी विल डू गुड। वेरी स्लिम फिगर। वेरी स्मार्ट।'

मंजरी ने मौन होकर सम्भवतः थोड़ी देर तक सोचा। उसके बाद सिर उठा कर गम्भीर स्वर में कहा, 'नहीं, मैं ही करूंगी। कह दो। तब हां, और एक रात का बयाना मिले तो कर सकती हूं। दो रात हम लोगों का नया नाटक होगा।'

बाबुल बोला, 'मगर दल को ऑबजेक्शन है। तुम्हारी तबियत खराब हो जायेगी। सावित्री में उपवास करोगी, उसके बाद जना में दो-दो पार्ट करोगी—'

'नहीं। तबीयत खराब नहीं होगी। नायक पक्ष चाहता है, यही होगा। स्वीकार न करने से दल की बदनामी होगी। मैं उसे ठीक तरह से कर लूंगी। सावित्री के दिन उपवास करती हूं, मोहिनीमाया का पार्ट करने के पहले एक औंस ब्रान्डी पी लूंगी। जाओ, जाकर कह दो।'

बाबुल अवाक् होकर चला आया।

बाहर तब रीतू बाबू झुक कर अखबार पढ़ रहा था। उसके इर्द-गिर्द नाटू बाबू और मणि घोष खड़े हैं। गोपाल खड़ा-खड़ा बीड़ी का कश ले रहा है। योगानन्द कह रहा है, 'अहा, बहुत बड़े ऐक्टर थे। जीवन्त ऐक्टर। अहा, दो पुरखों से—'

बाबुल ने आश्चर्य में आकर कहा, 'क्या? कौन?'

गोपाल ने बीड़ी का कश लेते हुए, एक पैर हिलाते हुए कहा, 'विश्वनाथ भादुड़ी चल बसे।'

'विशु भादुड़ी दि ग्रेट! क्या हुआ था!?'

'और क्या होगा! हार्ट फेल!'

'उफ्!'

'खैर, प्रोप्राइट्रेस ने क्या कहा ?'

'बोलीं, वे ही करेंगी। तब हाँ, दो रात की जगह तीन रात का बयाना करना होगा।'

रीतू बाबू ने अखबार से सिर उठा कर कहा, 'वे करेंगी ?'

'हाँ। शी इज-जीने-मरने को उतारू हो गयी हैं।'

'हूँ।'

जरा एकान्त होने पर बाबुल ने कहा, 'बिग ब्रदर आइ एम एस्टोनिश्ड। विस्मित, स्तंभित, उद्‌भ्रान्त, विभ्रान्त।'

रीतू बाबू ने पूछा, 'ह्वाइ ?'

'प्रोप्राइट्रेस सम्भवतः टर्निंग मैड। समझ रहे हैं न ?'

'क्या कह रहे हो ? क्यों ?'

'जानते हैं, उन्होंने क्या कहा—?' यह कह कर मंजरी की बातों को दुहराते हुए बोला, 'समझ रहे हैं—यहीं से शुरुआत होने जा रही है। एक औस ब्राण्डी—अगले साल आते-आते '

'सो जिस विवाह का जो मन्त्र हो वही बोला जाता है। यह तो एक तरह से इस जीवन का मृणाल-कण्टक है—चन्द्रमा का धब्बा !'

जरा चुप रहने के बाद रीतू बाबू बोला, 'देखो भाई, आदमी एक तरह का बनना चाहता है, लेकिन दुनिया उसे दूसरी तरह का बना देती है। समझ रहे हो ? मैंने ही क्या यह बनना चाहा था ? या तुम्हीं ने चाहा था ? फिर ?'

जरा चुप रहने के बाद फिर बोला, 'तब हाँ, उस सन्दर्भ में दु:ख करने से भी कोई फायदा नहीं। जो भी बनूँ वही अच्छा। सिर्फ हँसते-हँसते विदा हो जाऊँ तो अच्छा। और किसी को बिना दुःख दिये बिदा हो सकूँ तो सबसे बड़ी बात होगी। साधु लोग मुक्ति-मुक्ति चिल्लाते हैं, मगर मुक्ति उसी में है।'

बाबुल बोला, 'माई अल्ला, ऐ गॉड ! यह तो आप फिलॉसफी की बात कह गये बिग ब्रदर।'

'जो कह लो।'

बाहर दल के कुछ लोग कहीं से लौट कर आये। वे लोग राणा लाहिड़ी के साथ निकले थे।

बराकर लायकडीह के साहबों की कोलियारी में मंजरी सचमुच ही जना और मोहिनीमाया का अभिनय अनायास कर गयी। मोहिनीमाया के अभिनय में उसने अपनी देह के लोच और अदा का ऐसा खेल, कटाक्ष की ऐसी लीला का प्रदर्शन किया कि अलका के मोहिनीमाया के अभिनय से कहीं आगे निकल गयी। वेश-मन्दिर लौटने के बाद वह पहले की तरह विचलित नहीं हुई। रजिया के अभिनय में वह जिस कमजोरी से अब तक स्वयं को अलग नहीं कर सकी थी—उसे दूर कर अबकी पहली बार ऊंचाई पर पहुँच गयी और रीतू बाबू, राणा की तरह ही गौरव प्राप्त करने में सफल हुई।

एक मात्र राणा ही जना में फीका पड़ गया। कहा जा सकता है कि प्रवीर के पार्ट का आठ आना ही जना के साथ है। मोहिनीमाया के साथ थोड़ा बहुत है और वह स्थल बड़ा ही महत्वपूर्ण है। वह जैसे मंजरी के सामने खड़ा हो ही नहीं पा रहा था।

जना के अभिनय के बाद राणा ने रीतू बाबू से कहा, 'प्रवीर का पार्ट अब मुझे नहीं दीजिएगा। ठीक से नहीं हो पाता है।'

रीतू बाबू ने कहा, 'नहीं-नहीं, ठीक होता है। देखना, अब एक-दो रात में ही ठीक हो जायेगा।'

जरा चुप रहने के बाद बोला, 'अच्छा, एक बात का मुझे सही-सही उत्तर दीजिएगा ?'

'क्या ?'

'नशा, यानी शराब पीने से क्या सचमुच ही ऐक्टिंग करने में बल मिलता है ?'

'शराब कभी पी नहीं है ? कोई एक्सपिरियेन्स नहीं है ?' नहीं है, यह नहीं कहूँगा। लेकिन उससे ब्रेन ठीक नहीं रहता है। फिर ऐक्टिंग क्योंकर होगी ?'

'धीरे-धीरे बरदाश्त हो जाती है। बाबुल की ही बात लो, जब आया था तो पीता था, मगर बहुत ही कम मात्रा में। अब पीपा गटक जाता है। नहीं पीता है तो अभिनय में खड़ा नहीं हो पाता है। मगर तुम यह बात क्यों पूछ रहे हो ?'

राणा ने उत्तर नहीं दिया, जैसे वह उत्तर सोच रहा था। सहसा रीतू बाबू ने कहा, 'ओह लगता है, प्रोप्राइट्रेस के मुँह से बू आ रही थी।'

राणा बोला, 'हाँ। कल रजिया के पार्ट में थोड़ी-बहुत मिली थी। फर्स्ट सीन में ही, जब वह एपियर हुई। उस समय वह 'कौन हो तुम उद्दण्ड काफिर युवक' कह कर चलने की झोंक में बहुत निकट आ गयी। थोड़ी-बहुत गन्ध मिली। मगर लगा, स्पिरिट वगैरह की—स्पिरिट की गन्ध है। आज मोहिनीमाया में उन्होंने जब मेरा टेल खींच कर स्वयं को ढँक लिया, उस समय हम लोग एक-दूसरे से सट कर जा रहे थे—उस समय सन्देह की गुंजाइश नहीं रह गयी। इसके पहले भी दो बार जना में पार्ट कर चुका हूँ, उन्होंने मोहिनीमाया का पार्ट किया था, लेकिन अब

की जैसे एकदम से शीशे के बाहर चली गयी [illegible]जना के चेहरे पर पेन्ट किए हुए थी। लेकिन फैलसी होने से जो एक किस्म की स्थिति होती है, वह भी उससे पकड़ में आ रही थी।

रीतू बाबू बोला, 'देखो बंदर, यात्रा का दल है, यहाँ कुछ देख कर अचरज मत करो। यहाँ सब होता है— सब। समझ रहे हो ! गोरा बाबू भी कहा करते थे, मनुष्य के जीवन के अन्दर दोनों ही चीजें रात और दिन की तरह खेलती रहती हैं।'

'वे सावित्री का पार्ट निराहार रह कर करती हैं ?'

'हाँ, करती हैं। उपवास करके करने से मन भी वैसा ही हो जाता है। मोहिनीमाया करती हैं—समझ रहे हो ? इसके अलावा बंदर चाहे जो हो, वे कुलीन अभिनेत्री हैं। दादी, माँ और स्वयं तीन पुरखों से *कन्या या अप्सरा गोत्र की कन्या* रही हैं।'

'वाह, आपने बात मार्के की कही—अप्सरा गोत्र की—'

यह गोरा बाबू का कथन है। गन्धर्वकन्या लिखा है। बड़े ही माइ डियर आदमी थे। गुणी आदमी। उनको हिस्ट्री जानते हो न ?'

'सुना है।'

गोपाल आकर खड़ा हुआ, 'लीजिये मैं आप दोनों को खोजते-खोजते हैरान हो गया। वहाँ खड़े हो कर क्या कर रहे हैं ?'

रीतू बाबू बोला, 'बाबुल होता तो कहता, फ्लाइंग बेरेन्डा। तुम्हें क्या कहूँ ? कहना चाहिए कि तुम क्या अन्धे गोपाल घोष हो ? बंदर के साथ गपशप कर रहा हूँ।'

गोपाल ने हँस कर कहा, 'इसे, मतलब है कि, अन्धा कह सकते हैं मास्टर साहब। दो बार यहाँ का चक्कर लगा कर लौट चुका हूँ। मतलब है कि एक बार भी जरा आगे बढ़ कर नहीं देखा था। बातचीत की आवाज सुन कर आया हूँ।'

'क्या समाचार है, कहो।'

'प्रोप्राइट्रेस सो गयी हैं। तबीयत खराब है।'

'क्या हुआ है ?'

'मालूम नहीं। शिवनन्दन ने कहा, मत जाओ भैया गोपाल चन्दर। उन्हें आज परेशान मत करो। तबीयत ठीक नहीं है।'

बुंची या शोभा को भेज कर पता लगाओ। तबीयत खराब होने की बात ही है। मालूम है न ?'

'मालूम है। लेकिन वह जनाब, मामूली बात है। शिवनन्दन ने मुझसे कहा है। इसा कम दो बार। कितना होगा, दो औंस भी नहीं। शिवनन्दन बुंची और शोभा को भी नहीं जाने देगा। सम्भवतः—'

'सम्भवतः क्या ?'

'लगता है, रो रही हैं।'

'हूँ।' जरा सोच कर रीतू बाबू बोला, 'क्या करोगे मैनेजर? रोने दो। दुनिया अनगिनत लोगों की नगरी है—दुनिया के बीच यात्रा का दल एक अजीब दुनिया है। बहुत सारे लोगों की नगरी है—कोई हँसता है, कोई रोता है, कोई चोरी करता है। आँखों के पानी से दिल का परदा साफ हो जायेगा।'

'सो तो है। साईं मैनेजर को जिस दिन बिनोदिनी यात्रावाली ने भगा दिया, उस दिन घाट पर लेट कर रोयी थी। मगर मैं मुसीबत में पड़ गया हूँ। जलपाईगुड़ी के चाय बगान का एक बाबू कोठी में आने के बाद यात्रा देखने आया था। उसके बाद आया और कहा, तुम लोग दल लेकर नार्थ बंगाल चलो। ढेर सारा बयाना होगा। सो उनसे कहना जरूरी है न। राय होगी तो बातचीत आप और मैं करेंगे।'

'नार्थ बंगाल। चाय बगान! बहुत ही अच्छा फील्ड है।'

'मुझे मालूम है।'

'तुम यात्रा दल के साथ हो—जरूर ही जानते होंगे। चलो, मैं चलता हूँ। इसके अलावा दूसरा उपाय नहीं है। वहाँ से असम तक सीधा रास्ता है। तब हाँ, असम में लड़ाई की वजह से शोर-शराबा है। चलो, चलता हूँ।'

कमरे में तब बाबुल बोस सूटकेस बजा रहा था। वह सरूर में आ गया है। मंजरी ऑपेरा का जयजयकार कर रहा है और चाय बगान के उस बाबू के साथ बातें बना रहा है।

वह बाबू चाय बगान में नौकरी करता है, साथ ही उस अंचल में फर्जी नाम से व्यापार भी करता है। वह बयाना करेगा। चाय बगान भी साहब कंपनी का ही है। साहब विलायत चला जायेगा, कर्मचारी गण देखरेख करेंगे। बयाना इसी उपलक्ष के लिए दिया जा रहा है। उसने बताया, साथ ही रीतू बाबू और गोपाल घोष को भी मालूम है कि दल जायेगा तो बयाना बहुत मिलेगा।

मंजरी को सूचना दिये बगैर ही बयाना हो गया।

पूरे दल में हलचल मच गयी। अब की मंजरी ऑपेरा की किस्मत खुल गयी है।

अठारह

मंजरी ऑपेरा की किस्मत सचमुच ही खुल गयी। पहला बयाना मोटी रकम में हुआ था। यानी आने-जाने के किराये के साथ। उसके बाद वहाँ पहुँचने पर पहली मजलिस से ही नाम फैल गया। जलपाईगुड़ी शहर के बहुत सारे लोग आमंत्रित

थे—साहब की फेयरवेल पार्टी थी—बहुत बड़ा आयोजन था। अभिनय देखकर वे लोग खुश हुए। आखिरी अभिनय के दिन जलपाईगुड़ी के राय के घर का बयाना मिला। शहर बड़ा ही धनी है। जलपाईगुड़ी मे ही आठ दिनों तक अभिनय चलता रहा। हर रात दो अभिनय। एक इस मुहल्ले में तो दूसरा उस मुहल्ले मे। दलाल भी बयाने की खोज में निकल पड़ा। सिर्फ दलाल ही नहीं, वंसी मास्टर भी खोज मे निकला। अबकी गोपाल घोष के ट्रंक मे दो ताले पड़ गये। प्रोप्राइट्रेस के घर रखवारी करने के लिए सिर्फ शिवनन्दन ही नहीं, विपिन भी सोने लगा।

मंजरी क्रमशः सहज से सहजतर और स्वच्छन्द हो गयी है। बहुत-कुछ बदलाव भी आ गया उसमें। पहले हँसी-मजाक और खेल-तमाशा बहुत ही कम करती थी। बहुत कुछ गोरा बाबू की अन्तरालवर्तिनी होकर रहती थी, अभी उस समय की वधू अन-ढँका चेहरा लिए स्वाधीन अधिकार के साथ विचरण कर रही है। अपने जिस अधिकार को इतने दिनों तक गोरा बाबू के हाथ मे सौंपे थी, उस अधिकार को अब हाथ मे लेने पर उसे जैसे नया स्वाद मिल रहा है। शोभा एक बात कहती है—बुंची से उस दिन कहा था—'खून का स्वाद शेर की जीभ मे होता है।' इस बात का अर्थ समझने मे बुंची को एक क्षण की भी देर नहीं लगी थी। उसने हँसकर कहा था, 'बात सच्ची है। किसी दिन घर की बहू रानी थी!'

'हूँ, देखो क्या होता है!'

दूसरी ओर गोरा बाबू का नाम लगभग धुल-पुंछ गया है। कहा जा सकता है कि कोई भी नहीं लेता। कभी किसी दिन शोभा सवेरे उठ कर फुसफुसाकर बुंची से कहती है, 'कल रात—'

आँख नचा कर इशारे से वह बात समझा देती है।

अर्थात् मंजरी ने लंबी-लंबी साँस ली है, रोयी है, सोयी नहीं है।

शोभा अब मंजरी के पास सोती है। मंजरी ने पुनः उसे ही बुला लिया है। शोभा एक तरह से उसके चरणों पर ही लोटने लगी थी। मंजरी ने उसे क्षमा कर दिया है। शोभा एकमात्र रीतू बाबू से डरती है। उसका वह भय अब तक दूर नहीं हुआ है। मैनेजर होने के बाद से रीतू बाबू भी अब पहले का रीतू बाबू नहीं रह गया है। उसमे भी बदलाव आ गया है। बीच-बीच मे ऐसा गंभीर हो जाता है कि सभी भयभीत हो उठते हैं।

रीतू बाबू अब अकसर प्रोप्राइट्रेस के पास जाता है। शोभा तत्क्षण बाहर निकल आती है। यह बात रीतू बाबू ने एक दिन कही थी। मुलायम स्वर मे ही कहा था, 'शोभा, एक बात बता दूँ। तुम्हें सिखा देता हूँ, अन्यथा नहीं लेना। देखो, मुझे उन्होंने अब मैनेजर बना दिया है। उनके पास बहुत सारी बातों के सिलसिले में आना पड़ता है। दल के तरह-तरह के लोगों के सन्दर्भ मे तरह-तरह की बातें रहती हैं। उस संबंध में बात चीत करता हूँ, वह सब बात गोपाल को भी मालूम नहीं होने दी जाती है।'

शोभा बैठ कर पान लगा रही थी। उसने कहा था, मैं बाहर चली जाऊँ ?'

'हाँ। अन्यथा मत सोचना। दो बीड़ा पान मुझे भी देती जाओ।'

पहले वाला जमाना होता तो हो सकता था कि रीतू बाबू कुछ और कहता। कहता, 'देखो, मुझे भेड़ा बनाने के लिए कोई जड़ी-बूटी मत मिला देना।'

शोभा उत्तर देती, 'बनने के लिए क्या बाकी रह गये हो। आईने में चेहरा नहीं देखा है ?'

मगर वैसा दिन शोभा और रीतू बाबू दोनों के लिए बीत गया है। बीच-बीच में बूंची और शोभा दोनो इस सन्दर्भ में बातचीत करती हैं। बूंची के मन में रीतू बाबू के प्रति एक प्रकार का अनुराग था। रीतू बाबू के मन में भी था। इसका सूत्रपात उसी दिन हुआ था जिस दिन बूंची ने इस दल की नौकरी स्वीकार की थी। लेकिन उसमें भी दरार आ गयी है। तब हाँ, बूंची शोभा नही है। वह इन मामलों में बहुत संयत है। लेकिन शेफाली और बाबुल के संबन्ध में सब उत्सुक हो उठे हैं। बाबुल शेफाली पर मुग्ध हो गया है, इसका पता सब को चल गया है और बाबुल ने इसे छिपाकर रखने की चेष्टा भी नहीं की है। उसका प्रेम एक तरह से जग-जाहिर है। उसे शर्म का अहसास नही हुआ है। तब हाँ, शेफाली को ठीक-ठीक समझना मुश्किल है। वह राणा लाहिड़ी के प्रति अनुरक्त है, इसका पता शुरू मे ही चल गया है। मगर राणा लाहिड़ी अलग ही किस्म का आदमी है। उसे ठीक से छुआ नही जा सकता, पकड़ना या बाँधकर रखना तो दूर की बात।

शेफाली उसे बहुत बार पान देने जा चुकी है। उसने कहा है, 'मैं पान नही खाता।'

बहुत बार मजाक किया है। राणा हँस दिया है, मगर बदले में उसने मजाक नहीं किया है।

बहुत बार शेफाली ने उससे कहा है, 'अच्छा, मुझे आप कहकर संबोधित क्यों करते हैं। तुम भी तो कह सकते हैं।'

राणा ने कहा है, 'कोशिश करूँगा। लेकिन ऐसा होना चाहिए तो। किसी को तुम कहकर सबोधित नहीं कर पाता हूँ, सिर्फ उन बच्चों को छोड़ कर।'

शेफाली का उत्साह कम गया हो, ऐसा नही लगता। तब हाँ, वह बाबुल से भी हँसी-मजाक करने के प्रति उदासीन नहीं है। उसके सम्बन्ध में शेफाली के कौतूहल का कोई ओर-छोर नही है। उस दिन वे लोग चार औरतें ताश खेलने बैठी थी—बूंची, शोभा, शेफाली और मंजरी। गोपाली दल मे जरा अलग-थलग हो गयी है। तब से जब से शोभा से उसका झगड़ा हुआ है। उसका हँसना भी कम हो गया है। बात-बात में अब वह हँसी से लोट-पोट नही होती। थोड़ी बहुत अस्वस्थ और शक की मरीजा हो गयी है। कहती है, कुछ हजम नहीं होता है। नाटू उसका प्रेमी है। उसे वह पहले सब कुछ दे देती थी। उसकी तनख्वाह का रुपया भी लेकर नाटू घर मनिआर्डर भेजता था। लेकिन अब पहले की तरह नहीं देती है। लोगों को सन्देह है

कि नाटू से उसका अलगाव हो जायेगा। ऐसा क्यों हुआ, किसी की समझ में यह बात नहीं आयी है। क्योंकि नाटू का मन हिलने-डुलने वाला नहीं है। उसका मन पैसे के लंगर से बंधा है, वह गोपाली के जीवन-घाट से ही बंधा है। गोपाली का मन किस ओर भाग रहा है, इसका पता किसी को नहीं है। बहरहाल शेफाली वगैरह उस दिन ताश खेल रही थी। तब दल का अड्डा सिलीगुड़ी में था। बाजार अंचल में दो दिन अभिनय हो चुका है—बुधवार और बृहस्पतिवार। शुक्रवार को बन्दी है। शनिवार और रविवार को स्टेशन अंचल में अभिनय होगा। एकाएक वहाँ बाबुल आकर हाजिर हुआ। वे लोग दार्जिलिंग जायेंगे। जाने का उद्देश्य दार्जिलिंग देखना है।

बाबुल बोला, 'हम लोग घूम-फिर आते हैं दीदी। मैं, बिगब्रदर, राणा बाबू और मणि। वेती आशा वगैरह जा चुके हैं। बहुत सारे लड़के भी गये हैं। उन्हें बुलाकर लेते आऊँगा।'

मंजरी ने पूछा, 'गोपाल मामा रह रहे हैं न ?'

'हाँ मेटरनल अंकल, योगा बाबू, नाटू बाबू वगैरह रह रहे हैं।'

शेफाली ने बुंची से कहा, 'मजा लेना है ?'

'क्या ?'

'देख लो।' यह कहकर बोली, 'यह क्या आपके लिए उचित है बाबुल बाबू ?'

बाबुल ने कदम आगे बढ़ाया था, ठिठक कर खड़ा हो गया और बोला, 'इसका मतलब ?'

'आप तो अच्छे आदमी हैं !'

'ह्वाइ ?'

'आपने नहीं कहा था कि मुझे दार्जिलिंग दिखा लाइएगा ?'

बाबुल ने आश्चर्य में आकर कहा, 'मैंने कहा था क्या ?'

'कहा नहीं था ?'

बाबुल बोला, 'येस, कहा था। फिर चलिये।'

'आज नहीं। किसी दूसरे दिन।'

बाबुल बोला, 'ठीक है, फिर मैं आज नहीं जाऊँगा। वे लोग जायें।'

शेफाली बोली, 'नहीं-नहीं, आज आप जाइये। सज-सँवर चुके हैं।'

'पोशाक उतार देता हूँ। टु मिनट्स।'

शेफाली और बुंची हँसी से लहालोट हो गयी। मंजरी बोली, 'जाओ बाबुल। वह तुम्हें नचा रही है।'

बाबुल ने हँसकर कहा, 'आइ नो मंजरीदी। बट वे नचा कर सुख पाती हैं और मुझे नाचने में सुख मिलता है।'

गोपाली दूर लेटी थी, वह बोली, 'हाय-हाय !'

दूसरी ओर और भी वाकया हो गया है। रीतू बाबू आर्सिग वेब के लिए जिन दो औरतों को ले आया था और जिन्हें सज-सँवर कर रहने कहा था, उनमें से मीना देखने में छरहरी है, सजने-सँवरने से मोटे तौर पर अच्छी लगती है। उसके प्रेम में फँस गया प्रौढ़ रमणी नाग।

यह वाकया जलपाईगुड़ी में हुआ है। गोपाल घोष ने इसका पता लगाया था। कहा था, 'हाय रमणीदा—'

'आखिरकार मीना के डबरे में—'

रमणी गुस्से से पागल हो गया था। वह गाँजा और शराब दोनों का सेवन करता है। कब कैसा मूड रहेगा, कहा नहीं जा सकता। उसने चिल्ला कर आसमान सिर पर उठा लिया था, 'ठीक किया है, अच्छा किया है। तू बेटे जैसा—'

रीतू बाबू आ धमका था। उसने एक ही बात में चुप करा दिया था, 'चुप रहो।' सब कुछ सुनने के बाद कहा था, 'जरूर। ठीक किया है। लेकिन चिल्ला कर ठीक नहीं किया है। समझ रहे हो न—'

रमणी नाग ने सिर झुका लिया था।

रीतू बाबू ने कहा था, 'और एक बात कहनी है रमणी। वह क्या है, जानते हो? गोपाल से तुमने जो गन्दी बात कही थी, वह मत कहा करो। पाप होगा। समझ रहे हो। वह गोपाल का लड़का है।'

'लड़का?'

'हाँ। लड़का। सन्तान। पुत्र। समझ गये?'

इस बात से पूरा दल अवाक् हो गया है। रीतू बाबू ने लड़के को बुला कर कह दिया है, 'ऐ, गोपाल तेरा बाप है। आज से बाबू जी कहना। और तुम गोपाल, इस बात को स्वीकार कर लो। उसे दबा कर आदमी का थूक शरीर पर मत लगाओ।'

गोपाल बिलख-बिलख कर रोने लगा था। तकरीबन पूरे दिन। दूसरे दिन उदास होकर बैठा-बैठा सोचता रहा था। उसके बाद वाले दिन से पुनः सहज हो गया था।

मंजरी से सब कुछ खुलकर बता दिया है। और सिर्फ मंजरी ही क्यों, दल के प्रायः सभी लोगों को पता चल गया है। गोपाल अब दूसरी ही तरह का आदमी हो गया है।

एक मात्र योगा बाबू पहले जैसा ही आदमी रह गया है। वह हर बात में कण्ठ जी का जिक्र करता है। उसने कहा था, 'समझ रही हैं माता जी, कण्ठ जी के

दल में ऐसी ही घटना हुई थी। वर्धमान बाजार के रास्ते से एक बच्चे को उठाकर ले आये थे। समझ रही है न, सुन्दर, गोरा-चिट्टा बच्चा। घर पर पाल-पोस कर यात्रादल में उतारते थे। पहले सखी के रूप में उतारा। बाद में राधा की भूमिका में। कोई उसकी जात के बारे में पूछता तो कहते, उसकी जात नहीं थी, मगर जात उसे मिल गयी है। और जात से आता-जाता ही क्या है! जिसके कण्ठ से मधु झरता है, हरि का नाम जिसकी रसना पर है, उसकी जात क्या ?'

रीतू बाबू दार्जिलिंग से सुसंवाद लेकर लौटा।

लड़ाई खत्म होने-होने पर है। मित्र-पक्ष ने टोकियो पर बेशुमार बम बरसाये हैं।

रीतू बाबू ने मंजरी से कहा, 'अगली बार के लिए अभी से तैयारियाँ करनी होंगी। दार्जिलिंग तक दल का नाम पहुँच गया है, ऐसा मैं सुनकर आया हूँ। दार्जिलिंग के कुछ वकील हम लोगों का प्ले देख गये हैं।'

मंजरी बोली, 'आप जैसा इन्तजाम कीजिएगा, वैसा ही होगा।'

रीतू बाबू कुछ देर तक खामोश रहा। उसके बाद बोला, 'मैंने एक योजना बनायी है, बशर्ते कि सोलहों आना भार मुझ पर सौंप दो।' यह कहकर 'तुम' कह बैठा।

मंजरी ने हँसकर कहा, 'इससे क्या बिगड़ता है मास्टर साहब!'

'नहीं-नहीं, चाहे जो हो, हो तो तुम प्रोप्राइट्रेस ही।'

'इससे क्या हुआ ?'

'ठीक है। आज मेरा शुभ दिन है। एक बहुत बड़ा अधिकार मिल गया।'

रीतू बाबू उठकर चला गया। मंजरी भी खुश हुई। खिड़की से बाहर की ओर ताकती रही।

कमरे के दरवाजे पर गोपाल घोष ने दस्तक दी। मंजरी समझ गयी कि गोपाल पुकार रहा है। वह बोली, 'कौन, गोपाल मामा ?'

'हाँ।'

'आइये, अन्दर चले आइये। कुछ कहना है ?'

'हाँ। स्टेशन से लोग आये हैं। उनका कहना है, हमने जना और सावित्री की माँग की है। लेकिन जना के बारे में राय नहीं हो रही है। उन लोगों का थियेटर है, उनका बड़ा ऐक्टर पार्वतीपुर से आया है। उनका कहना है, गोरा बाबू नहीं हैं, जना क्या देखेंगे! उन्होंने गोरा बाबू का अभिनय देखा है। कह रहे हैं, दूसरा नाटक कीजिये।'

[illegible] निकल रही। बहुत दिनों के बाद [illegible]।

गोपाल ने पूछा, 'फिर?'

'[illegible]।'

'नहीं। नहीं पौराणिक नाटक के अलावा दूसरे से काम नहीं चलेगा।'

'मास्टर साहब का क्या कहना है?'

'वे कह रहे हैं, जना दुलाली। आपसे पूछने के लिए भेजा है।'

'जना दुलाली?'

'हूँ।'

'जना—?' बयान करते-करते चुप हो गयी।

'राणा बाबू कर चुके हैं। इसके अलावा मास्टर साहब हैं। आप [illegible] भी कहियेगा, वही करेंगे।'

जरा सोचने के बाद मंजरी बोली, 'राणा बाबू एक बार कर चुके हैं। [illegible] ही करने दें। वरना अन्यथा सोच सकते हैं।'

'हाँ सोच सकते हैं। मास्टर साहब जरा बेमेल से भी लगेंगे।'

'हाँ। लगेंगे। है, बेमेल होने से आँखों को बड़ा ही बुरा लगता है। [illegible] फिर वही होगा।'

'दलाल आया है। मोती दलाल। [illegible] कह रहा था—'

'क्या?'

'कह रहा था, यह बयाने के लिए पूर्णिया कटिहार अंचल गया था। उस अंचल में वे लोग हर साल अभिनय करते हैं। पाँच-सात बरसों तक एक तरह से लगातार करते रहे। कह रहा था, हम लोगों के दल का नाम वहाँ बहुत फैल गया है। कह रहा था, उस तरफ जाने से हम लोगों को अभिनय का मौका मिलेगा। तो पार्वतीपुर होकर लौटने के बजाय क्या उधर से होकर लौटा नहीं जा सकता?'

'मास्टर साहब से कहिये। सलाह-परामर्श कर जो करना हो, कीजिये।'

'वे इसके लिये राजी हैं। फिर हम अपना आदमी भेज देते हैं।'

गोपाल चला गया।

मंजरी एकाएक उदास हो गयी। जना की चर्चा से आज अजीब ही तरह से गोरा बाबू की याद आ गयी। वह रहता—। उसने एक लंबी साँस ली। जिस भले आदमी ने कहा कि गोरा बाबू नहीं हैं, जना क्या देखूँगा, उसने झूठी बात नहीं कही है। गोरा बाबू का वह लंबा-चौड़ा शरीर, वह रंग, कण्ठ की वह आवाज —। वह अभिनय! उससे राणा लाहिड़ी के अभिनय की तुलना! यही नहीं, दल का गठन उसी के कारण हुआ था।

आँखों से आँसू लुढ़क पड़े।

सती तुलसी होगा । शंखचूड़ का पार्ट राणा करेगा ! सफल नहीं हो सकेगा। उसकी सामर्थ्य के परे की चीज है । इसके अतिरिक्त राणा अगर शंखचूड़ की भूमिका मे उतरेगा तो मंजरी ही क्या उस आवेग के साथ अभिनय कर सकेगी ?

अभिनय होता है । लेकिन लोग अभिनय के अन्तराल मे अभिनेता-अभिनेत्री का जो हृदय रहता है, उसे कहाँ तक समझ पाते हैं ?

न:, सती तुलसी का अभिनय नही किया जायेगा । जना और सती तुलसी को गंधर्व कन्या की तरह ही छोड़ देना होगा ।

उसने पुकारा, 'शिवनन्दन !'

शिवनन्दन बाहर बैठा है और उस छोटी लड़की की लास्य लीला देखकर मन ही मन हँस रहा है जिसे बंसी ले आया था । दूसरी ओर युवा गायक भूदेव बीड़ी का कश ले रहा है । कुछ छोकरे बैठकर अड्डेबाजी कर रहे हैं । वह लड़की आईना ले मुँह देखने के बहाने भूदेव की आँखों पर उसकी छटा फेंक रही है । भूदेव बार-बार पलकें झपकाकर मुसकरा रहा है ।

शिवनन्दन आकर खड़ा हुआ, 'चाय बनवाकर ले आऊँ ?'

'नही । एक बार गोपाल मामा को जाकर बुला ला ।'

गोपाल के आते ही मंजरी बोली, 'सती तुलसी रहने दें गोपाल मामा ।'

'यह क्या ! हम लोगों ने 'हाँ' कर दिया है ।'

कुछ देर तक चुप रहने के बाद मंजरी बोली, 'इसके बाद से जना और सती तुलसी छोड़ देना होगा । समझ रहे है न ?'

'छोड़ देना होगा !'

'हाँ, ठीक से नही हो पाता है ।'

मंजरी का अनुमान गलत नही था । राणा ने शंखचूड़ का पार्ट किया । दर्शक खुश भी हुए मगर दल के लोग खुश नही हुए । यह संसार विचित्र है, और यात्रादल का भाग्य उससे भी अधिक विचित्र । इस विचित्र संसार को जो कुछ अच्छा लगता है उसे ही मानकर चलना पड़ता है ।

सिलीगुडी से पूर्णियाँ कटिहार तक करीब-करीब सभी जगह दोनों नाटक बहुत अच्छी तरह चलते रहे । सती तुलसी और सावित्री । रजिया पूर्णियाँ मे, सिर्फ एक रात और, कटिहार में एक रात अभिनीत हुआ । वहाँ बंगला थियेटर है । थियेटर के बाबुओं की रुचि के अनुसार किया गया था ।

इन अंचलों मे लोग जिस भाषा मे बातचीत करते हैं, वह हिन्दी और बंगला से मिली-जुली एक भाषा है । वे लोग बंगला भी अच्छी तरह समझते हैं । तब हाँ, इतिहास के नहीं, पुराण के भक्त हैं । रजिया उन लोगों को अच्छा नही लगता है ।

वहां से मंजरी ऑपेरा मनिहारीघाट होकर साहबगंज पहुँचा । दलाल पहले

ही साहबगंज पहुँचकर बयाना ले चुका था। वहाँ आकर मंजरी की सांस मे सांस आयी। यहाँ रज़िया की फरमाइश की गयी है।

साहबगंज में दो दिन अभिनय करना है। उसके बाद भी दल एक दिन रुक जायेगा तब जमालपुर जायेगा। जमालपुर में मंचन करने के बाद दल कलकत्ते की ओर लौट जायेगा।

साँइथिया और अण्डाल में अभिनय करने के बाद रानीगंज में दल का आखिरी अभिनय होगा। उसके बाद दल छुट्टी मनायेगा। वैशाख से भादो तक। इसे छुट्टी नही कहा जायेगा, दल को एक तरह से भंग कर दिया जाता है। दुबारा दल का गठन नये सिरे से होता है। मंजरी ऑपेरा ने पिछली बार रथयात्रा के दिन दल का गठन किया था। नया नाटक रहता है, कुछेक नये लोगों को लिया जाता है, कुछेक पुराने आदमी दूसरे दल में चले जाते हैं।

गोपाल इसी बीच दल के नफा-नुकसान का हिसाब करने बैठ गया है। इसमे सन्देह नहीं कि इस बार लाभ बहुत अधिक हुआ है। फिर भी उसे कागज-कलम ले मिलाने बैठ गया है।

साहबगंज मे पहली रात सावित्री हुआ। दूसरी रात रज़िया। लेकिन मंजरी, पता नही क्यों बुझी-बुझी जैसी हो गयी। पहले जैसा मंचन होता था, वैसा नही हो पाया। रीतू बाबू को आश्चर्य हुआ। सिर्फ रीतू बाबू को ही नहीं, दल के तमाम रंग-कर्मियों को। आखिर हुआ क्या?

रीतू बाबू वेश-मन्दिर में आया और गला खँखारकर कमरे के अन्दर गया, 'क्या हुआ मंजरी? ऐसा होने की बात तो नही थी।'

मंजरी सिर झुकाकर खड़ी रही।

'क्या? तबीयत-वबीयत—'

'नही।'

'फिर?'

'मालूम नही।' वह उदासी की हँसी हँस दी।

'नहीं-नहीं, ऐसा होने से काम नही चलेगा।'

'देखूँ—'

रीतू बाबू के चले जाने के बाद मंजरी थोड़ी देर खड़ी रही। उसके बाद पुकारा 'शिवना!'

शिवनन्दन आकर खड़ा हुआ।

'थोड़ी-सी और दे न शिवना—'

यानी ब्रॉण्डी।

'और पियोगी?'

'न होने से काम नही चलेगा। ताकत नही मिल रही है।'

'तुम बुरा काम कर रही हो।'

'जानती हूँ। दे।'

थोड़ी-सी और ब्रांडी पीकर उसने मन को कठोर बनाने की कोशिश की। मगर नही बना पा रही है। किसी भी हालत मे नही बना पा रही है। आज सबेरे ही यह बात उसके ध्यान में आयी कि होली का सिलसिला शुरू हो गया है। चार दिन के बाद होली है। इस अंचल मे होली होली के दिन ही नही, उसके पहले से ही शुरू हो जाती है। इसी होली के अवसर पर उसकी मां को चौधरी भवन—उसके पिता—का बयाना मिला था। इस होली के दिन ही उसने पहले पहल उसे देखा था। यही नही, उसके बाद वाले वर्ष की होली के दिन ही नवद्वीप जाकर उन लोगों ने वैष्णव मत, माला-चन्दन की प्रथा से शादी की थी।

उसके बाद से अब तक होली के दिन वे लोग छिपे तौर पर उत्सव मनाते आये थे। दल लेकर परदेश जाने पर भी वे लोग इस उत्सव का पालन करते थे।

वह बात याद आ गयी है। हालांकि उसने ब्रांडी पी है, मगर उससे भी उस स्मृति को दबाने की चेष्टा सफल नही हो सकी है। आंखों में आंसू छलक आये हैं। वह क्या करे।

थोड़ी-सी और ब्रांडी पिये बगैर वह खड़ी कैसे होगी?

लेकिन—

आश्चर्य है! वह कई महीने से सोचती आ रही है, गहराई से विचार करने के बाद महसूस किया है कि उसे यह शोभा नहीं देता। उसके बारे में सोच-सोच कर जीवन जीना उसके लिए उसे शोभा नही देता, यह संभव भी नही है और न होता है। ससार मे उन गृहिणियों की तरह रहने की कीमत शून्य ही है। शून्य और शून्य। इन कई महीनों के दरमियान-उसने नये जीवन की शुरुआत की है। फिर भी ऐसा क्यों हुआ? होता क्यों है?

शिबू विन्यासकारी ने कहा, 'माता जी, सजना-सँवरना हो गया?'

मजरी चिहुँक उठी। लिबास बदलना है। बालक का वेश उतार कर उसे सुलताना का वेश धारण करना है।

जाने के समय उसने शिवनन्दन को पुकारा, 'शिवना।'

'क्या? फिर—'

'हां-हां। दे।'

सिर दर्द से टीस रहा है। वह बाहर निकल आयी। रजिया के पार्ट में उसे खड़ा होना है।

नाटक समाप्त होने के बाद कमरे में आने पर वह जैसे टूट गयी। कुछ देर बाद पुकारा, 'शिवना, गोपाल मामा को बुला ला।'

गोपाल आकर खड़ा हुआ, 'क्या बिटिया?'

थके स्वर में उसने कहा, 'रजिया अब नहीं खेला जायेगा गोपाल मामा। कही भी नही।'

'जमालपुर में ?'

'नहीं।'

'वे लोग कह जो गये हैं।'

'बयाना नही हुआ है न ?'

'नहीं। नही हुआ है।'

'फिर बयाना नही लीजिएगा। यही से हम रानीगंज चले जायेंगे।'

'ठीक है, कल सवेरे वे लोग आयेंगे तो जो कुछ करने को होगा, किया जायेगा।'

'जो होगा, नही। मैंने जो कुछ कहा, वही करें।'

अब वह पार्ट करने के लिए शराब नही पियेगी। उसे असह्य यंत्रणा का अहसास हो रहा है। उफ् सिर मे दर्द, मन मे दर्द। नही-नही। पूरे अभिनय के दौरान ज्यादा शराब पीने के बावजूद वह गोरा बाबू को भूल नही सकी थी। हालांकि बिना पिये कोई उपाय भी न था। कितना दुर्दान्त पार्ट किया बख्तियार ने! वह ऐसा नही कर पायेगी। उसके कदमों से कदम मिला कर पार्ट करना शराब पिये बगैर सम्भव नही है। नही।

साहबगंज में एक दिन आराम करने के बाद दल रानीगंज चला आया। रीतू बाबू, बाबुल वगैरह भी मजरी के पास गये थे, मगर मंजरी अपने विचार मे परिवर्तन लाने को राजी नहीं हुई। कहा था, 'मेरी तबीयत बहुत खराब है। मुझसे हो नही सकेगा।'

रीतू बाबू ने इसका एक कारण खोज निकाला है। उसने बाबुल से कहा, 'जिद मत करो। यहाँ के सिनेमा के पोस्टर की तसवीर देखी है ? हिन्दी फिल्म श्रावस्ती होने वाली है।'

गोरा और अलका की तसवीरवाला पोस्टर चिपकाया गया है। वह फिल्म आने वाली है।

'माइ खुदा! बात तो सही है। फिर ?'

'जो कुछ कह रही है, वही करना होगा।'

तब हाँ, रीतू बाबू ने एक काम किया। वह दूसरे ही दिन दल लेकर साहबगंज और हिन्दी फिल्म के इलाके को छोड़कर निकल पड़ा और रानीगज मे आकर पड़ाव डाला। दो दिन का हिसाब-किताब हो जायेगा। रानीगज में अभिनय करने

के लिए एक पुराने नाटक को परिमार्जित किया जा रहा है। उर्वशी उद्धार। बहुत दिनों का पुराना नाटक है। पार्ट करने वाले करीब-करीब सभी रंगकर्मी मौजूद हैं। दण्डी का पार्ट राणा करेगा और उर्वशी का शेफाली। ये दोनों गोरा बाबू और मंजरी के पार्ट हैं। मंजरी उर्वशी नहीं, सुभद्रा का पार्ट करेगी। उसने कहा है, 'मुझे वह पार्ट नहीं दीजिएगा। अब मैं नाच नहीं सकूँगी।'

शेफाली बहुत खुश है। राणा दण्डी और वह उर्वशी।

दल का हिसाब-किताब करने पर चार हजार रुपये का लाभ हुआ है। दल बड़ा ही खुश है। वे लोग निश्चिन्त हैं कि उन लोगों की नौकरी बर्करार रहेगी, हो सकता है कि तनख्वाह में भी कुछ बढ़ोत्तरी हो।

युद्ध का बाजार है। युद्ध खत्म होने-होने पर है। फिर भी रुपये का खेल चल रहा है—बाजीगरी के खेल का करिश्मा दिखा रहा है। योगानन्द ने गीत तैयार किया है—

रात हुई प्रभात रात का बाजार न गया,
हाय-हाय, काला बाजार न गया।
दालान घर की चोर कोठरी के संदूक में उसकी छलना—
सोने की सेज बिछाकर सोते, नोट का तकिया माथे के नीचे रखकर
नाक बजाता मन के सुख से उसका पता पाया न गया।

हर आदमी को गीत सुनाता है और कहता है, 'हुँ-हुँ, तालीम किसकी है जानते हो? कण्ठ जी की। हुँ-हुँ—'

चार हजार रुपये के फायदे की बात सुन कर वह सबसे अधिक उत्साही है। उसने गोपाल से कहा, 'वेतन जरूर बढ़ाना होगा।'

गोपाल बोला, 'अगले साल कहना।'

'अगले साल क्यों? अगले साल! मतलब क्या है? बहुतों से तो कह रखा है कि खत जायेगा, जाते ही चला आना। लेकिन मुझसे क्यों नहीं कह रहे हो?'

'कह रहा हूँ। खत मिलते ही चले आना।'

योगा बाबू कुछ देर तक खामोश खड़ा रहा। उसके बाद 'अच्छा' कह कर चला गया। तीसरे पहर वह सीधे मंजरी के पास पहुँच गया। हाथ जोड़ कर बोला, 'एक गीत सुनाने आया हूँ माताजी।'

यह अधपगला बूढ़ा मंजरी को अच्छा लगता है। बोली, 'काला बाजार वाला?'

'नहीं माता जी। नया।'

'यह बात!'

'हाँ, माता जी, कण्ठ जी का दो सौतवाला गीत जानती हैं न? सुन चुका हूँ—'

'आपके प्रताप से सुन चुकी हूँ।'

'हाँ माता जी, वह प्रताप मुझमें है। समझ रही हैं, गीत है—।' गाल पर हाथ रख कर बोला, 'आ—

ओ माँ डूब रहा मैं, हाथ पकड़कर मेरा मुझे उठा लो
पाँच नदी मे आँधी आयी, पर्वत जैसी लहरें जागी
साँस घुट रही, घूँट-घूँट जल पीकर माता,
पेट फूल कर हो गया ढोल
माँ, हाथ पकड़ कर मेरा मुझे उठा लो
घर में मेरे पांच कन्या, बढ़ती है यौवन की वन्या
मेरी पीड़ा है अनन्या, वे करती हैं शोर
माँ, हाथ पकड़ कर मेरा मुझे उठा लो।

इसके बाद बना नही पाया हूँ माता जी। कैसा लगा, बताइये।'

'बहुत अच्छा।'

'हाँ माता जी।' यह कह कर बात शुरु की, 'माता जी, मेरे दो पत्नियाँ है। पाँच कन्याओं मे से तीन को पार लगा चुका हूँ। उनमें से एक विधवा हो गयी है। दो अब भी वयस्क कुमारियाँ हैं। जमीन है दस-बारह बीघा, बँटाई पर खेत लगा दिया है, खुद मैं मूर्ख ब्राह्मण हूँ। विद्या के नाम पर मेरे पास गीत है। सो भी आधुनिक किस्म का नही—यात्रा के दल पर भरोसा है। इतने दिनो तक तुम्हारे दल मे रह चुका हूँ। छँटाई मत कर देना। कहाँ-कहाँ दूसरे दलो मे चक्कर लगाता फिरूँ और कहता चलूँ कि मुझे रख लो!'

मंजरी बोली, 'दल रहेगा तो आप भी रहिएगा। गोपाल मामा से कह दूँगी।'

'दल जायेगा कहाँ माता जी? अबकी तो मंजरी ऑपेरा का जयजयकार हो रहा है।'

शोभा ने कहा था, 'उसके जाने के बावजूद जब दल है तो दल मत तोड़ो। नही तो तुम्हारा अपना घर है—किराया मिलता है, देह पर भरपूर गहना भी है। लेकिन किसी न किसी को लेकर रहना तो पड़ेगा ही। इस उम्र मे किसी की तावेदारी—यानी—'

'चुप रहो शोभादी। चुप रहो।'

गोपाल के आने पर मंजरी ने कहा था, 'खत भेजने की एक फेहरिस्त बना लीजिये। गंगा बाबू का नाम लिख लीजिएगा। और रमणी बाबू का भी। उन्होंने तो फिर—'

'हाँ। इस उम्र मे—'

शोभा ने कहा था, 'तुम्हारी बलैया लेने का मन करता है मैनेजर। भूदेव की उम्र—मीना की उम्र? मुझसे बड़ी है। दुबली-पतली है, इसलिए लगता है कि उम्र

कम है। उस पर रीतू ने हुक्म दिया है, जरा सज-संवर कर रहा करो। वरना लोग-बाग कहेंगे कि बूढ़ी को नचा रहा है।'

आसनसोल में पहली रात में अष्टवज्र और उर्वशीउद्धार का अभिनय हुआ। अच्छा ही रहा। मंजरी सुभद्रा की भूमिका में उतरी थी, रीतू बाबू भीम की। दण्डी का पार्ट राणा लाहिड़ी ने किया था। उर्वशी का शेफाली ने। गोपाली ने द्रौपदी का। नाटू ने अर्जुन का। बुंची ने श्रीकृष्ण का। योगा बाबू ने कल गीत भी गाया है और पार्ट भी किया है। भैरव का अभिनय किया था। बाबुल नारद बना था। खूब जमा दिया था। कई बार नारद-नारद कहकर नाचा है और लोगों को खूब हँसाया है। प्ले अच्छा हुआ है। योगा बाबू ने दो गीत गाये थे —मजलिस को विभोर कर दिया था। प्ले के बाद ही रात में बादल घिर आये थे। कुछ देर बाद ही बूंदा-बांदी होने लगी। योगा बाबू ने शेफाली को तीखी बात कह दी। तब बारिश हो रही थी। सवेरे से ही आबोहवा में उमस का अवशेष था। मस्ती के साथ डेरे पर आकर योगा बाबू गांजा मसल रहा था। चप्पल में कीचड़ लगा कर शेफाली डेरे के आंगन में आयी और बोली, 'बाप रे! कहाँ पहुँच गयी! कितना गन्दा कीचड़ है! आह, हा-हा, क्या करूँ मैं? यह कीचड़—'

योगा बोला, 'देखो बिटिया, मरे हुए हाथी की कीमत लाख रुपया होती है। तुम लोगों की आँखें अब मोटर की अभ्यस्त हो गयी हैं, हाथी देखने से मन बिदक जाता है। नयी मोटर—कीमत कितनी? दस हजार या बीस हजार। हाथी की कीमत लाख रुपया। रानीगंज मरा हुआ हाथी है। समझ रही हो सुन्दरी? रानीगंज की लाल धूल, गद्दी की धूल पानी में पड़ कर कीचड़ हो गयी है। तुम नाक सिकोड़ रही हो?'

सब ने सोचा था, शेफाली से अब झगड़ा शुरू हो जायेगा।

मगर शेफाली खिलखिला कर हँस पड़ी। उसका मन खुश है। जब से आयी है राणा लाहिड़ी को आकर्षित करने की कोशिश कर रही है। वह चतुर औरत है। चतुरता के साथ ही आकर्षित कर रही है। कल वह उर्वशी की भूमिका में उतरी थी, राणा बाबू दण्डी। उसने दण्डी के साथ प्रेमाभिनय, नृत्य और गीत में अपने मन की बात व्यक्त की है। सो भी अत्यन्त चतुराई के साथ। राणा लाहिड़ी ने भी अपने अभिनय के माध्यम से उत्तर दिया है, इसमें कोई संशय नहीं।

अपूर्व सुन्दरी अश्विनी के बारे में सुनकर कृष्ण ने उसकी मांग की है, इस आशय का पत्र आया है। उर्वशी अपना रूप वापस पाकर दण्डी के प्रमोद भवन में नाच रही थी। उसकी आँखों में प्रेम भरी दृष्टि थी, तरह-तरह के आवेदन में देह के

अंग-प्रत्यंग के साथ आँखों की पुतलियों ने भी काले भ्रमर के समान नृत्य किया था। दूत ने आकर पत्र दिया।

राजा चीख उठा, 'नही-नही। नही दूँगा, दे नही सकता हूँ। सहस्र सुन्दरी और सौ साम्राज्य के मूल्य पर भी नहीं।'

शंका से चकित होकर उर्वशी ने पूछा, 'क्या बात है प्रियतम?'

'यदुपति ने तुम्हारी माँग की है। बदले मे सहस्र सुन्दरी और विशाल साम्राज्य देगा। नही-नही।'

उर्वशी दौड़ कर आयी और उसकी छाती से लग कर करुण स्वर मे बोली, 'नही नही। उससे अच्छा है कि मेरी हत्या कर दो। भीषण वन मे ले जाकर वापस कर दो। सिंह-बाघ मुझे नोच कर खायेंगे। नही-नही, वह भी नही कर पाऊँगी। तुम्हें छोड़कर प्रिय, जा नही पाऊँगी। लौट कर स्वर्ग राज्य भी नही जा पाऊँगी। ओ प्रिय, मुझे तुम छोड़ नहीं देना।'

शेफाली के स्वर में कितना अनुनय उभर आया था!

'तुम्हें छोड़ दूँगा? इसके पहले अपने प्राणो को विसर्जित कर दूँगा। यह कितना बड़ा अनाचार और अत्याचार है! प्रतिकार करने वाला कोई नही है? चलो प्रियतमे तुम्हे लेकर, मैं सब कुछ त्याग कर, चला जाऊँगा, दूर दूरान्तर वन के बीच, जहाँ कोई मनुष्य नही है। जब तक मेरा जीवन है तब तक तुम्हे छोड़ नही सकूँगा। केवल इतना ही कहो हे अप्सरी, कि तुम मुझे नही छोडोगी।'

'देखो प्रिय, आँखों में झांक कर देखो कि उनमें कौन-सी बातें हैं। छोड़ूँगी नहीं, कभी नही छोड़ूँगी। देखो, मेरे अधरो को देखो, वे तुम्हारे अधरों की प्रत्याशा में थर-थर काँप रहे हैं। वहाँ भी वही बात है—नही छोड़ूँगी।'

'चलो-चलो, फिर इस अँधेरी रात मे नगर छोडकर भाग जाये।'

'चलो, वहाँ केवल रहेगे हम और तुम।'

'चलो, केवल रहेगे हम और तुम।'

दोनों भागने के लिए दौड़कर आये थे। आने के समय शेफाली ने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया था। उस हाथ मे उष्णता दौड़ गयी थी। राणा लाहिड़ी की मुट्ठी भी जैसे सशक्त हो उठी थी। बाहर निकल हाथ छोड़ने के समय राणा ने कहा था, 'बहुत ही अच्छा हुआ है।'

शेफाली ने बंकिम कटाक्ष के साथ कहा था, 'बहुत ही अच्छा? सचमुच?'

यह कह कर वह तेज कदमो से चली गयी थी। पाँवों के घुंघरू झनक-झनक बज उठे थे। उस समय से उसके मन के नृत्य मे कोई दरार नही आयी है। शेफाली उसी आनन्द मे निमग्न है।

गोपाली बाहर आ नाट्टू के पास जा रही थी। हँसी देख कर वह ठिठक कर खड़ी हो गयी और कहा, 'बहुत ही खुश हो बहन। कुछ खुश खबरी सुनने को मिलेगी क्या?'

'सुनोगी—इसका मतलब ? सुना नहीं है ?'

'नहीं। बताओ, सुन लूं।'

'सुना नहीं कि नाना जैसे योगा ने मुझे सुन्दरी कह कर संबोधित किया है ?'

गोपाल घोष डेरे के बरामदे पर से उतरते हुए बोला, 'कल सावित्री, परसों सती तुलसी।'

'सती तुलसी ?'

'हाँ।'

'शंखचूड़ ? राणा बाबू ?'

'नहीं। स्वयं मास्टर साहब। राणा बाबू कृष्ण का अभिनय करेंगे।'

'बाप रे !'

'कल रीतू बाबू की करामात देख लेना।'

गोपाल मंजरी के कमरे में दाखिल हुआ। बोला, 'ये लोग रजिया के बदले सती तुलसी के लिए ही राजी हो गये हैं। तब हाँ, मास्टर साहब कह रहे हैं कि राणा बाबू कृष्ण का अभिनय करेंगे और वे खुद शंखचूड़ का।'

'वे करेंगे ?'

'हाँ।'

'अच्छा।'

मंजरी ने एक लंबी सांस ली। गोरा बाबू के साथ तुलसी का पार्ट करने की बात उसे याद आ गयी। रीतू बाबू शंखचूड़ का पार्ट करेगा। कुछ न कुछ असाधारण जैसा करेगा। वह क्या करेगी ?

सावित्री को अच्छा होना ही था। हुआ भी। और सती तुलसी में उस दिन रीतू बाबू ने सचमुच ही करामात कर के दिखा दिया। नवयुवक का वेश ही धारण किया था। सज-सँवरकर महिलाओं के वेश-मन्दिर के सामने जाकर पुकारा, 'मंजरी !'

'मास्टर साहब ! कुछ कहना है ?'

'अन्दर आऊँ ?'

'आइये-आइये। हम लोग साज-सिंगार कर चुकी हैं।'

'देखो तो।'

सब लोग अवाक् होकर ताकने लगे। मंजरी की आँखों में भी विस्मय है, साथ ही कुछ और भी।

रीतू बाबू ने पूछा, 'ठीक हुआ है ?'

शोभा बोली, 'बहुत ही अच्छा हुआ है।'

'मंजरी ?'

'मुझे डर लग रहा है मास्टर साहब।'

'डर ?'

'लग रहा है कि मैं खड़ी नहीं हो पाऊँगी।'

'क्या कह रही हो तुम !'

पाँव छूकर प्रणाम करते हुए मंजरी ने कहा, 'मैं आपकी शिष्या हूँ, आप मेरे गुरु हैं।'

'डर की कोई बात नहीं है। देखना, आज क्या करता हूँ।'

'नहीं। आपके ताल से ताल मिला कर मैं चल नहीं पाऊँगी।'

'जरूर चल पाओगी।'

रीतू बाबू चला गया।

मंजरी बुझी-बुझी-सी खड़ी रही। कुछ देर बाद पुकारा, 'शिवनन्दन, एक गिलास पानी दे जा।'

पानी पीकर वह स्वाभाविक स्थिति में लौट आयी। शोभा आकर बोली, 'तुम्हें नर्वस बना दे - ऐसा क्या कभी हो सकता है?'

'मालूम नहीं।'

मजलिस का घण्टा बज उठा—टन-टन। मंजरी बाहर निकल कर आयी। पहले उसका और कृष्ण यानी राणा बाबू का पार्ट है। राणा बाबू ने हँसते हुए कहा, 'पहले आप उसके बाद ही मुझे जाना है न ?'

'हाँ।'

'चलिये।'

दोनों ने बड़े ही अच्छे ढंग से प्रवेश किया। शुरू में ही खेल जम गया। पीछे की ओर मुड़ कर तुलसी तिरछी निगाह से जैसे आह्वान कर रही है—मुँह से कह रही है—'नहीं-नहीं। क्षमा करो, क्षमा। छोड़ो, छोड़ो जी आँचल।'

गति नाव की तरह है। गोरा बाबू के जाने के बाद बहुत दिनों से यह नाटक नहीं हुआ है। फिर भी स्वच्छन्द गति से चल रहा है। शंखचूड़ सती तुलसी के सामने आकर खड़ा हुआ—'जैसे कितने ही जन्म-जन्मान्तरों का गहरा परिचय हो तुमसे। नयनों में है अमृत की धारा। ज्योत्स्ना की माधुरी बह रही है अंग-प्रत्यंग से तुम्हारे। शुचि स्निग्धा, सुपवित्रा, कौन हो तुम ?'

रीतू बाबू का उदात्त कण्ठ-स्वर आवेग से थर-थर काँप रहा है।

गोरा बाबू से कहीं अधिक जीवन्त अभिनय कर रहा है। तुलसी के वेश में मंजरी के चेहरे पर ईषत् शंका का भाव है। ललाट पर पसीना छलक आया है। शोभा ने बाबुल से कहा, 'आज शुरू से ही कैसा—। तबीयत शायद ठीक नहीं है। तीसरे पहर से ही बुझी-बुझी जैसी है। उसके साथ तो पार्ट—। क्या हुआ ?'

वरण के बाद एक-दूसरे का हाथ थामे शंखचूड़ और तुलसी बाहर निकल रहे थे। तुलसी अचानक बीच रास्ते में ही रुक गयी। रीतू बाबू को भी ठिठक कर खड़ा होना पड़ा। रीतू बाबू ने उसका हाथ छोड़ दिया।

मंजरी बोली, 'सिर चकराने लगा था।'

रीतू बाबू बोला, 'थो

वह वेश-मन्दिर की ओर रवाना हुआ। मंजरी बोली, 'ठहरिये।'

उसने आकर प्रणाम किया और बोली, 'मेरा दोष सुधार लीजिएगा। आप गुरु हैं।'

रीतू बाबू चला गया। मंजरी भी घोर पदक्षेप के साथ चली गयी।

इसके बाद रीतू बाबू ने और अधिक आश्चर्यजनक अभिनय किया। सचमुच ही आश्चर्यजनक अभिनय। दल के लोग मजलिस के पीछे खड़े हो गये। ओह, कितने आश्चर्य की बात है!

बाबुल बोला, 'माई खुदा, बुढ़ापे की हड्डी से बाजीगरी का करामात दिखा रहा है।'

शोभा अवाक् हो गयी है। पटलीचाय के मरने के बाद ऐसा प्रेमाभिनय नहीं किया था। नहीं, पटलीचाय जब जिन्दा थी उस समय भी सम्भवतः नहीं किया था।

वाह मंजरी वाह! शची के साथ उस स्थल का अभिनय चल रहा है। तुम वारांगणा हो। वाह।

इसके बाद सब कुछ जैसे तल्लीनता में डूब गया। एक तल्लीनता के बीच अपना-अपना पार्ट किये जा रहा है। अभिनय स्वच्छन्द और तेजगति से आगे बढ़ रहा है। कनसर्ट के दौरान अनगिन पाँव ताल से ताल मिला कर थिरक उठते हैं। अभिनय का पहला दौर समाप्त हुआ। आज का अभिनय खूब जम रहा है। राणा लाहिड़ी अवाक् है। रीतू बाबू भी आश्चर्यचकित है।

गोपाल घोष आकर बोला, 'आइये आप, मजलिस के बाहर एकबारगी रास्ते पर जाकर खड़े हो जाइये। नाटक का श्रेष्ठ सीन है।'

'ओ। वह छद्मवेशी शंखचूड़ जैसे ही बाहर निकल कर आयेगा, मुझे जाकर खड़ा होना होगा।'

'हाँ, तुलसी के द्वारा आँख खोलने के पहले। अभिसंपात का सीन है।'

दल के सभी लोग खड़े हैं। दर्शकगण उद्ग्रीव-उत्कण्ठित हैं। कृष्ण शंखचूड़ के वेश में तुलसी के पास आये हैं और बोल रहे हैं। तुलसी का हाथ थामे बाहर निकल गये हैं। इसके बाद ?—

शंखचूड़ वेशधारी रीतू बाबू ने तेज कदमों से प्रवेश किया—जैसे वह भाग रहा हो।

तुलसी प्रवेश कर रही है—विस्रस्तवस्त्रा, उद्भ्रान्त दृष्टि, ठहरो, ठहरो। तुम कौन हो ? कौन हो तुम ? सच-सच बताओ, तुम कौन हो मूर्ख, कपट छद्मवेशी —'

'वाह-वाह-वाह! दीदी वण्डरफुल! अहा हा!' बाबुल बोल उठा।

तुलसी आज क्रुद्ध तुलसी नहीं है, जैसा कि उसने गोरा बाबू के साथ अभिनय करने के दौरान दिखाया था। यह तुलसी जैसे क्लान्त-श्रान्त है, जिसका सब कुछ लूट लिया गया है, जो कंगालिन है—दुर्भाग्य से बुरी तरह घिरकर रोते-रोते टूट

गयी है। कितना करुण ! तुलसी सचमुच ही रो रही है, दोनों आँखों से आँसू की धारा बह रही है, 'बोलो-बोलो, तुम कौन हो, किस अपराध के कारण मेरा यह सर्वनाश किया !' बोल नहीं पा रही है, कण्ठ जैसे रुद्ध हो रहा है।

दर्शक रो रहे हैं। रीतू बाबू मानो विचलित हो गया है। फिर भी वह पार्ट खत्म कर निकल आया। बोला, 'देखो, आँख बन्द कर उस बैकुण्ठधाम का स्मरण करो। तुम तुलसी हो, मैं कृष्ण—'

तुलसी ने आँखें बन्द कर ली हैं। रीतू बाबू बाहर चला आया। कृष्ण वेश-धारी राणा ने प्रवेश किया।

तुलसी ने थकान के साथ पार्ट खत्म किया। करुण रस मानो अधिक हो गया। यही नहीं, आखिरी सीन में अभिशाप देने के दौरान भी वह गुस्से को ठीक से उभार नहीं सकी। लेकिन अभिभूत दर्शकों के बीच उससे कोई बाधा नहीं आयी। तालियों की तड़तड़ाहट के बीच अभिनय समाप्त हुआ। इस बार के लिए मंजरी अंपिरा का अभिनय समाप्त हो गया।

योगा बाबू ने कहा, 'चलो मुसाफिर। गठरी बाँधो।'

वेश मन्दिर में मखमल की जुल्फें और मूछें हटाते हुए रीतू बाबू ने कहा, 'बोतल खोलो ब्रदर। जल्दी। लो ढालो। पूरा गिलास ढाल देना। आओ, आपस में टकरा लें।'

बाबुल बोला, 'लाग लिव मंजरी अंपिरा !'

रीतू बाबू ने एक ही साँस में खत्म कर सिगरेट सुलगायी। एक बार कश लेकर धुआँ बाहर फेंकते हुए बोला, 'एक-एक गिलास और।'

'माई खुदा ! इतनी जल्दी—'

'समय कम है ब्रदर।'

'मतलब ?'

'आज रात ही कलकत्ता चला जाऊँगा।'

'आज रात ही !'

'आज रात ही।'

'ट्रेन—'

'प्लेटफार्म पर जाकर बैठूँगा, जब भी मिल जाये। ढालो। लो, टकरा लो। यह मेरा फेयरवेल है।'

'फेयरवेल ?'

'हाँ।'

'रीतू दा—'

'ब्रदर—

रोओ नहीं, रोओ नहीं इस तरह मेरे लिए
काल-स्रोत में बह-बह कर तुम मैं भैया आये हैं मिल कर
पुनः बह कर चला जाऊँगा किस देश में, जन्म-जन्मान्तर में—ऐ-ऐ।

यात्रा दल का यही नियम है ब्रदर। मत पूछो, 'क्यों'। अच्छा मैं एक बार प्रोप्राइट्रेस से मिल कर आता हूँ।'

रीतू बाबू बाहर निकल आया। सभी रंगकर्मी एक-दूसरे की ओर अवाक् होकर ताकने लगे। कुछ क्षणो के बाद हर कोई अपना-अपना सामान सहेजने लगा। एक मात्र बाबुल ही बोतल गोद में लिये बैठा रहा।

'मंजरी!'

रीतू बाबू ने पुकारा।

'मास्टर साहब!' मंजरी चिहुँक उठी, 'इतनी रात मे? कल सवेरे—'

'रात में ही जा रहा हूँ।'

'चले जा रहे हैं?' मंजरी ने दरवाजा खोला, 'मास्टर साहब मैंने कौन-सा अपराध किया है?'

'नही, अपराध मैंने किया है मंजरी। अन्ततः अपने आपको संयत नही रख सका। अपराध स्वीकार कर जा रहा हूँ। तुम मुझे माफ कर दो। आज शंखचूड़ का वेश धारण कर बोलने के लिए ही यह पार्ट लिया था। तुमने रोकर उत्तर दिया है। मैं उन आंसुओ मे बह गया। मैं जा रहा हूँ।'

मंजरी की आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे।

'चलता हूँ। जानता हूँ, तुमने मुझे क्षमा नही किया है। वरना एक बार जरूर कहती कि यह बात किसी को मालूम नही है मास्टर साहब। आप रह जाइये।'

मजरी ने कहा, 'पहले इसे पढ़ लीजिये।'

रीतू बाबू ने पढ़ा। जरा मुसकराया। राणा ने प्रेम-पत्र लिखा है। मुग्ध हो गया है।

'मंजरी ऑपेरा मैंने विघटित कर दिया है मास्टर साहब।'

'विघटित कर दिया?'

'हाँ। वरना जिन्दा कैसे रहूँगी मास्टर साहब? जिन्दा मुझे रहना ही है। मैं उसे प्यार करती हूँ।'

जरा चुप रहने के बाद बोली, 'मास्टर साहब, मैं जैसी थी, वैसी ही हूँ। मेरी माँ, मेरी दादी के भाग्य मे ऐसा ही हुआ है। मैं जब बच्ची थी, उसी समय से मेरी माँ कहती थी कि मेरा विवाह रचायेगी। दादी भी यही कहती थी। फिर भी जो-सो समझना मेरे लिए बाकी नही रह गया था। वे चले गये, मुझे जिद थी कि मैं जैसी हूँ वैसी ही रहूँगी। पार्ट का बहाना बना कर शराब पी है। पी थी।'

'तुम राणा को—'

'सिर्फ उसी की तरफ ही नहीं, आपकी तरफ भी बढ़ने की कोशिश की है। लेकिन—'

जरा चुप रहने के बाद बोली, 'बढ़ नहीं पा रही हूँ। बढ़ नहीं सकी। जानते हैं, होली के समय उससे पहले-पहल मुलाकात हुई थी। दूसरे साल होली के समय उससे शादी हुई थी। अबकी साहबगंज में होली का रंग देखा—मेरा सब कुछ गड्मड हो गया। यह बरदाश्त नहीं हो रहा है। सती-असती का सवाल पैदा नहीं होता। लोग-बाग जो भी मजाक उड़ाते थे, उसे सहने की अभ्यस्त हो गयी थी। यह बरदाश्त नहीं हो रहा है, बरदाश्त नहीं कर पाऊँगी।'

'तुम्हारी जय हो।'

मंजरी ने उसे प्रणाम किया। उसके बाद उठ कर बोली, 'एक काम कीजिएगा—कहते जाइएगा कि मंजरी ऑपेरा विघटित कर दिया जा रहा है।'

उन्नीस

तीन वर्ष बाद—१९४५ ई० के मार्च से तीन वर्ष बाद। १९४८ ई० का मई, वैशाख का महीना। दोपहर। मोहन ऑपेरा के दफ्तर से उस वर्ष का हिसाब-किताब कर रीतू बाबू चितपुर रोड के निर्जन रास्ते पर आया। रुका। ट्राम पकड़नी है। डेरे पर लौटेगा। आजकल रीतू बाबू हावड़ा में रहता है। शरीर अब भी ताकतवर है। तब हाँ, प्रौढ़ता और बुढ़ापे की ओर झुक रहा है। तीन वर्षों के दरमियान छह दलों के साथ चक्कर काट चुका है। हर साल दल बदलता रहा है। एक वर्ष—१९४५ ई० से ४६ ई० तक कहीं काम नहीं किया था। कहाँ था, किसी को मालूम नहीं। अचानक बाबुल बोस से मुलाकात हो गयी। बाबुल अब सुप्रतिष्ठित हो चुका है। हास्य अभिनेता के रूप में नाम कमा चुका है। यात्रा नहीं, थियेटर में काम करता है। फिल्म का भी काम मिल जाता है। पोस्टर में नाम रहता है। फिल्म के विज्ञापन में भी नाम रहता है। नाट्यालोक में भी तसवीर छपती है। उसने शेफाली से शादी की है। बाकायदा शादी। शेफाली भी गृहिणी बन गयी है। कभी-कदा सिनेमा में उतरती है, लेकिन थियेटर में नहीं। वह टैक्सी से जा रहा था। मंजरी ऑपेरा की बैलगाड़ी, ट्रक और पैदल चलने की मजबूरी से, जिसे वह 'चरण बाबू का जोड़ी' कहा करता था, काफी कुछ रास्ता तय कर टैक्सी तक पहुँच चुका है। मंजरी ऑपेरा का

विघटन उसी वर्ष हो गया था। लेकिन दुनिया के उन निठ्ठलों का दल अब भी है जो किरानीगीरी नही कर सकते, अन्न-वस्त्र के अभाव से पीड़ित अपने घर वालों की कानी-कौड़ी से भी सहायता नहीं कर सकते, जिनका अपना कोई गणित नही—स्वय भी जो गणित के बाहर हैं, जो सिर्फ मैले-फटे धोती-कुरते पर रंग-बिरगे लिबास और कांच की माला पहन, रंग लगा कर रेखांकित चेहरे पर पॉलिश कर, झूठी हँसी, झूठी रुलाई हँस-रोकर, नाच कर, गा कर कई घण्टे तक अनगिन लोगो को बच्चों की तरह भुलावे में रख कर नशे मे विभोर कर देते हैं और हिसाव के खाते मे अपव्यय का अंक बचा कर रखते हैं। मजरी ऑपेरा के बाद नव मंजरी दल की स्थापना हुई है। मजरी ऑपेरा का सुनाम और मोह खत्म नही हुआ है। लेकिन अबकी महिला यात्रादल नही है। अबकी प्रोप्राइट्रेस नही, प्रोप्राइटर है। दल में दो-तीन औरतें हैं। एक अलका जैसी औरत भी है। राणा लाहिड़ी उसी दल में है। वही उद्योग कर्त्ता, प्रोप्राइटर, हीरो एक्टर सब कुछ है। और भी कुछ पुराने आदमी हैं, परन्तु नये लोगो की संख्या ही अधिक है। नाडू बाबू घर चला गया है, गृहस्थी मे ध्यान लगाया है। उसने कुछ रुपया जमा किया था, उससे अच्छी तरह गृहस्थी सहेज ली है। गोपाली उसे गाली देती है। उसने गोपाली के दो गहने लिये थे—कर्ज चुकाने के लिए माँग कर ले गया था और गोपाली से कहा था कि बाद मे बनवा देगा, मगर बनवाया नही। भूदेव अब भी उसी मीना के पास रहता है। योगा बाबू नव-मजरी मे है। अपनी छोटी लड़की को भी दल मे ले आया है। उसका चेहरा खूबसूरत है, गा भी सकती है। योगा बाबू को आशा है कि यहाँ से फिल्म की दुनिया मे दाखिल करा कर उस आश्चर्यजनक प्रदीप को अपने हाथ में कर लेगा जिसे रगड़ने मात्र से दैत्य आकर आदेशानुसार भवन तैयार कर देगा। एक गाड़ी भी लाकर देगा। दूसरी कुमारी लड़की का देहान्त हो गया है। विधवा लड़की कहीं चली गयी है। आभा और बंसी मास्टर मुफस्सिल के एक यात्रादल मे चले गये हैं। सबसे आश्चर्य की बात गोपाल घोष के साथ हुई है—वह सन्यासी होकर चला गया है। नीतू को शोभा के हाथ में सौंप गया है।

बाबुल ने टैक्सी से चिल्ला कर पुकारा। उसने रीतू बाबू को ट्राम-पड़ाव के पास देख लिया था।

'मास्टर साह-ब !'

यात्रादल का विशिष्ट ऐक्टर यात्रादल के कार्यालय-अंचल चितपुर रोड में 'मास्टर साहब' पुकार सुन कर ठीक-ठीक समझ नही सका कि उसे ही पुकारा जा रहा है। मास्टर साहब बड़े ऐक्टरों का खिताब होता है।

कौन है ? कहाँ ? टैक्सी उसके पास आकर खड़ी हुई।

'भैया !' बाबुल ने अपना हँसता हुआ चेहरा बाहर निकाल कर कहा, 'मैं

रीतू बाबू बोला, 'हाँ, तुम हो। वही तुम। चिर पुरातन। कैसे हो?' फिर बोला, 'लगता है अच्छे ही हो। अखबार और पोस्टर में तुम्हारा नाम देखने को मिल जाता है। वाह-वाह! बहुत बड़े होओ भाई। डेरा कहाँ है?'

एकाएक बाबुल को कुछ याद आ गया। टैक्सी का दरवाजा खोल कर बोला, आइये, बैठ जाइये।'

'जाकर कहाँ जाऊँगा? इस टर्म के लिए दल से विदा होकर आ रहा हूँ। विलायती खरीदूँगा, खरीद कर डेरे पर जाऊँगा। होटल से मांस-पराठा मँगा लूँगा। कहाँ जाऊँ?'

'आइये-आइये। ऐसी जगह चल रहा हूँ कि आप वहाँ जाकर खुश हो जाइएगा। आश्चर्य लगेगा। आइये। ट्राम आ रही है, गाड़ी लाइन रोक कर खड़ी है। आइये। ना नहीं कहिए। धोखा खाइएगा। दीदी के घर—'

'किसके? मंजरी के? वह तो—'

'पहले बैठ जाइये।'

खींच कर उसने बिठा लिया। ड्राइवर से कहा, 'चलो।'

गाड़ी चलने लगी। रीतू बाबू ने कहा, 'सुना था, वह तीर्थों की परिक्रमा कर रही है।'

'छियालीस-सैंतालीस दो साल तक घूमती रही है। पहले साल कन्या कुमारी से हरिद्वार तक। दूसरे साल बद्रीनाथ। इस साल नहीं निकल पायी है।'

रीतू बाबू ने इस बात के सन्दर्भ में किसी प्रकार की उत्सुकता जाहिर किये बगैर कहा, 'नहीं बाबुल, मैं नहीं जाऊँगा। मुझे उतार दो।'

'क्यों?'

'नहीं। मतलब है कि मैं—। बाबुल, उस रात मैंने बहुत शराब पी थी और चूँकि कलेजे में बहुत आवेग था इसलिए जाकर खड़ा हुआ था—हो सका था। लेकिन यकीन मानो, तीन चार मिनट से ज्यादा नहीं। किसी तरह यह कह कर चला आया कि मैं चल रहा हूँ। इसके बाद मैं कभी उसके पास नहीं जा सका। सकूँगा भी नहीं।'

'क्यों? यही तो पूछ रहा हूँ।'

रीतू बाबू की जबान में बात अटक रही है, 'बाबुल भाई। तब हाँ, इसका पता मुझे भी नहीं था। उसी दिन पता चला।'

कुछ क्षणों तक खामोश रहने के बाद रीतू बाबू ने एक लम्बी साँस ली और कहा, 'उस दिन मंजरी के कमरे से लौट कर तुम लोगों को बताया, मंजरी देवी ने कहा है कि दल तोड़ दिया जा रहा है। वे दल नहीं रखेंगी। यह बात मुझसे कहने को कहा था। तुमने पूछा था—क्यों? सबने पूछा था—क्यों? मैंने कहा था—मालूम नहीं। मैंने झूठ कहा था। कह नहीं सका था। मंजरी ने डर से दल तोड़ दिया था। तब मेरे मन में प्रबल वासना जगी हुई थी—मंजरी, मंजरी, मंजरी। इस तरह की वासना रहती है बाबुल। तुममें थी या नहीं, मालूम नहीं। रहना स्वाभाविक है। हो

सकता है कि दीदी का सम्बन्ध जोड़ कर तुम इससे बच गये थे। दूसरे-दूसरे जिन लोगों में थी, उनकी बात छोड़ो। साधारण आदमी के मन की वासना मन में ही दबी रह जाती है। शुरू में मुझमें भी नहीं थी। गोरा बाबू उन दिनों था। वे लोग सावधान थे और मैं भी सावधान था। मंजरी के साथ 'कर्ण' में कर्ण-पद्मावती के अभिनय के अतिरिक्त हम पति-पत्नी की भूमिका में नहीं उतरे थे। कर्ण नाटक भी बहुत ही कम किया जाता था। यात्रा का दल। अभिनय बड़ा ही खतरनाक होता है बाबुल। तुम हमेशा कॉमिक पार्ट करते रहे। रोमान्टिक पार्ट नहीं किया। अभिनय का असत्य जब मन में सत्य होकर जाग उठता है—उफ्, तब छाती के अन्दर तूफान चलने लगता है। गोरा बाबू चला गया। आहिस्ता-आहिस्ता वासना जगने लगी। पता चला कि पटलीबाबू के मरने के बाद उसके प्रेम के लिए अकेला ही रह गया हूँ, ऐसी बात नहीं है। मंजरी, मंजरी, मंजरी!—उसी के लिए हूँ। अब वह प्राप्त हो सकेगी। उसकी खातिर जी-जान से खटने लगा। तुम देख ही चुके हो। बीच-बीच में मन कहता था, कह दो, अब कह दो। लेकिन साहस नहीं होता था। मन कहता, उसके चेहरे को तुमने गौर से देखा है? गोरा बाबू के लिए वह कितनी दुखित है। दूसरे ही क्षण मन कहता, खाक दुःख है! उन लोगों का पेशा यही है। यात्रादल की प्रोप्राइटेस को पहले-पहल देख रहे हो? फिर भी साहस नहीं हो पाता था। जन्म के दोष से पेशा यही है, लेकिन वह तो वैसी नहीं है। इसी द्वन्द्व में सारा सीजन गुजर गया। रानीगंज में स्वयं को संयत नहीं रख सका। तुम लोगों ने गौर नहीं किया था, मगर मेरी आँखों से यह बात छिपी नहीं रही कि राणा लाहिड़ी सत्यवान का पार्ट करने के बाद मोहग्रस्त हो गया है। हो सकता है मंजरी। नहीं, नहीं कहूँगा, सत्य होने के बावजूद वह सत्य नहीं है। और वह राणा लाहिड़ी का मोह देख कर मंजरी का भय भी हो सकता है। शुरू में दो-तीन रात वह किस तरह मुँह लटकाये बैठी रहती थी, यह देखा है?'

'देखा था। लेकिन आप क्या कर रहे थे? दीदी मुझे बता चुकी है। मैंने उससे सम्बन्ध नहीं तोड़ा था। जाता हूँ, गपशप करता हूँ। उसकी जिन्दगी की सारी बातें सुन चुका हूँ, लेकिन यह बात—'

'उसने नहीं कही है। बहुत ही अच्छी औरत है। मेरे प्रति कितनी श्रद्धा है! और मैं—। बाबुल, रानीगंज में आखिरी रात का अभिनय था। मन में तूफान चल रहा था—कहूँगा, कहूँगा, कहूँगा। कैसे कहूँगा? जिस तरह हम यात्रादल के पुरुष-महिला रंगकर्मी मन की बातों का आदान-प्रदान करते हैं, उसी तरह। जिस तरह अलका और गोरा बाबू के बीच शब्दों का आदान-प्रदान हुआ था, जिस तरह मंजरी ने रजिया में नवीन होने की चेष्टा की थी, उसी तरह। अन्त में उस दिन गोपाल को बुला कर उससे मैंने कहा, आज सती तुलसी होगा और उसमें मैं शंखचूड़ का पार्ट करूँगा। जाकर कह दो। करना ही होगा। इस सम्बन्ध में कौन क्या कहेगा? सोचेगा? तुम लोगों ने भी नहीं सोचा था। मंजरी ने सोचा था, समझ गयी थी।

बड़े ही जतन के साथ मैंने युवक का वेश धारण किया—इसलिए कि मंजरी के पास खड़ा होना है। मंजरी को बुलाकर दिखाया—देखो, कैसा हुआ है ? सबने तारीफ की। वह भयभीत हो उठी। चेहरे का रंग उतर गया। मुँह खोल कर कहा, 'मुझे डर लग रहा है मास्टर साहब।' लोगों ने समझा पार्ट करने में डर लग रहा है। को-ऐक्टर को मारने-पीटने के मामले में मैं बदनाम था। लेकिन वह ठीक-ठीक समझ गयी, मैं भी समझ गया। फिर भी मन मानने को तैयार नहीं हुआ। जीत हासिल करनी ही है। उससे पहली बार मुलाकात हुई है, वह तपस्या कर रही है—शंखचूड़ के वेश में मैं कह रहा हूँ—'कौन है ? कौन ?' याद है तुम्हें ? प्राणों को उलीच कर कहा था मैंने—'लगता है कितने ही जन्म-जन्मान्तरों की जानी-पहचानी हो। तुम मेरी हो, मैं तुम्हारा हूँ—।' देखा, मंजरी इतनी बड़ी ऐक्ट्रेस है फिर भी उसका पसीना छूट रहा है। ललाट और नाक के नीचे पसीने की बूँदें हैं। आवाज कमजोर है। उसने पार्ट किया। वरण करने के बाद उसका हाथ थामे बाहर निकल आने की बात थी। मैंने हाथ पकड़ा। मेरे हाथ में आग का उत्ताप था। उसका हाथ बर्फ की तरह ठण्डा था। फिर भी मैंने नहीं छोड़ा। पकड़े रहा। स्पर्श के इशारे से जताया—छोड़ूँगा नहीं। अचानक वह चिहुँक उठी। लगा लड़खड़ाते-लड़खड़ाते सँभल गयी। उसने हाथ छुड़ा लिया। कहा, 'छोड़िये।' मैंने छोड़ दिया।'

जरा चुप रहने के बाद रीतू बाबू फिर कहने लगा, 'उसने आकर प्रणाम किया। बोली, 'आप गुरु हैं। दया कर चला लीजिएगा। मैं ठीक से नहीं कर पा रही हूँ।' लौट कर एक गिलास पानी पिया। आखिरी सीन में गोरा बाबू के प्रति कितना आक्रोश था ! और उस दिन वह रो पड़ी। मैं शर्म से पानी-पानी हो गया। लौटकर उसी क्षण निर्णय किया—नहीं, अब नहीं। आज ही चला जाऊँगा। आज ही—इसी रात में। इस दल में अब नहीं रहूँगा। क्रोध में आकर नहीं बाबुल, भय से ऐसा निर्णय लिया। यह सोचकर कि उसके सामने रह कर इस मोह को सँभाल नहीं सकूँगा। अगर पशु हो जाऊँ ! फिर भी उससे मिलने गया। सोचा, क्षमा माँगूँगा। बाहर निकलने पर देखा, राणा लाहिड़ी आँगन में कीचड़ में खड़ा है और आसमान की ओर ताक रहा है। मैं समझ गया कि वह वहाँ पागल की तरह खड़ा है। मंजरी के पास पहुँचना चाहता है मगर साहस नहीं है। मैंने पुकारा। तब मन में जरा क्षोभ भी जग गया था। सन्देह हो रहा था, फिर क्या मंजरी भी उसे चाहती है ! इसीलिए—। कमरे में शोभा थी, फिर भी मंजरी ने कहा, 'कल सवेरे—।' मैंने कहा, 'मैं आज ही जा रहा हूँ।' 'चले जा रहे हैं आप !' उसने कहा। उसने दरवाजा खोला। शोभा लेटी ही रही। मैंने कहा, तुम्हारा उत्तर मिल चुका है। शर्म से छोटा हो गया हूँ। मुझे क्षमा कर दो। मैं आज रात ही जा रहा हूँ। अब कभी नहीं आऊँगा। उसने झुक कर मेरे चरणों का स्पर्श किया और बोली, 'आप गुरु हैं, मैं शिष्या हूँ। आप मुझे क्षमा करें मास्टर साहब।' मैंने कहा, 'तुम्हारा अपराध नहीं है। फिर भी कह

रही हो तो क्षमा करता हूँ, आशीर्वाद देता हूँ। मगर तुमने मुझे क्षमा नहीं किया। करती तो कहती, आप रह जाइये मास्टर साहब, जाइये नहीं। आपके बिना दल नहीं चलेगा। यह न कहकर उसने एक पत्र मेरे हाथ में दिया; बोली, 'पढ़कर देख लीजिये।' राणा का प्रेम पत्र पढ़ा। वह अपने को उसके हाथों में बेच देना चाहता है। मंजरी ने कहा, 'दल विघटित कर रही हूँ मास्टर साहब। वरना मैं जिन्दा नहीं रह पाऊँगी। मुझे जिन्दा रहना ही है। मैं उसे प्यार करती हूँ।' मैंने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया और चला आया। नहीं, अब नहीं। मुझे उतार दो, ड्राइवर—'

गाड़ी तब अपने आप रुक गयी थी। गंतव्य स्थान पर पहुँच चुकी है। रीतू बाबू चौंक उठा। वही जाना-पहचाना मकान है। पर के दरवाजे पर आज भी एक मलिन साइन बोर्ड लटका हुआ है—'मंजरी ऑपेरा'। बगल में खड़िया से लिखा है—बन्द हो गया है। रीतू बाबू स्थावर की तरह खड़ा हो गया। जैसे चलने की शक्ति नहीं हो उसमें। टैक्सी का किराया चुका कर बाबुल ने दरवाजे की कुण्डी पर हाथ रखा। रीतू बाबू ने आर्त्त स्वर में कहा, 'बाबुल, मैं चलता हूँ।'

उसके पहले ही दरवाजा खुल गया। टैक्सी की आवाज सुनते ही दरवाजा खोल देहरी पर मंजरी खड़ी हो गयी। साधारण लाल कोर की साड़ी। एक मामूली-सा ब्लाउज। बाल बिखरे हुए। माँग में सिंदूर, ललाट पर एक छोटी-सी बेंदी। सब कुछ पहले जैसा ही—न तो दुबली हुई है और न ही मलिन पड़ी है। चेहरे पर सिर्फ उदासी की एक छाया है। ऐसा लग रहा है जैसे तीसरे पहर की धुली धूप पर दिगन्त में मँडराते काले बादल की छाया पड़ी हो। मंजरी बोली, 'देर होते देख कर सोच रही थी कि भाई शायद आज आ नहीं सका।'

'यह इनजस्टिस है दीदी। अन्याय। दिस ग्रटर वैगबॉण्ड बट मगर दीदी उसकी ओएसिस है। मगर कौन आये हैं, किन्हें ले आया हूँ। देखा है?'

'बाप रे! पीछे की ओर मुड़ कर खड़े हैं, पहचान नहीं सकी। मास्टर साहब! मेरे लिए कितने सौभाग्य की बात है!'

वह लपक कर आयी और प्रणाम किया, 'आइये-आइये। सुनते हो जी—' वह भागी-भागी अन्दर गयी।

फटी-फटी आँखों से रीतू बाबू ने बाबुल की ओर देखते हुए नीरव प्रश्न उछाला, 'कौन है?'

'गोरा बाबू।'

'गोरा बाबू?'

'हाँ। वही तो बरामदे पर निकल आये हैं।'

'वह गोरा बाबू है?'

खून के अभाव में गौरवर्ण गोरा बाबू मुरदे जैसा हो गया है। ठुड्डी की हड्डी ऊँची हो गयी है। सिर के बाल उड़ गये हैं। सिर्फ आँखें ही चमक रही हैं।

लेकिन अब भी तन कर खड़ा है। मंजरी की पुकार सुन कर उठ कर चला आया है और रेलिंग पकड़ कर खड़ा है।

'क्या ?'

'मास्टर साहब आये हैं।'

'कौन ? रीतू बाबू ! मास्टर साहब ! आइये आइये।'

गोरा बाबू मुसकराया। जैसे कोई कंकाल मुस्करा दिया हो। बाबुल ने कहा, 'टी० बी० हुआ है।'

'टी० बी० ?'

'उसी का एक्सरे प्लेट लेकर आ रहा था। यही तो। दीदी को खबर मिली तो उन्हें ले आयी।'

गोरा बाबू बरामदे में आराम कुरसी पर लेटा हुआ था। सामने एक मेज पर कुछ फल हैं, एक गुलदस्ते में कुछ फूल। एक खाता। मंजरी ऑपेरा के नाटक का खाता। गोरा बाबू संभवतः उसे पढ़ रहा था। मंजरी ने एक कुरसी लाकर रख दी, 'बैठिये।'

'तुम खुद ला रही हो ? शिवनन्दन—'

गोरा बाबू ने कहा, 'मंजरी ने उसे हटा दिया है। मुझे भला-बुरा कहा था। बैठिये। बाबुल, तुम एक कुरसी ले आओ। चाय बनाओ। मास्टर साहब को पिलाओ।'

रीतू बाबू अभिभूत हो गया था। इतनी देर के बाद बोला, 'आप ऐसे हो गये हैं !'

गोरा बाबू—वही गोरा बाबू है। जरा हँस कर बोला, 'कोई दुःख नहीं है, किसी भी तरह का कोई क्षोभ नहीं, कोई अनुताप या ग्लानि नहीं। भोग काफी-कुछ कर चुका, बहुत कुछ देखा, बहुत कुछ को जाना और पहचाना। सबसे बड़ी बात है, इसी में शान्ति मिली अपने सवाल का मुझे जवाब मिल गया।'

रीतू बाबू अभिभूत भाव से फिर भी मुक्त नहीं हो सका था। इसके बाद भी उसने पूछा, 'कितने दिनों से—यानी—'

'आठेक महीने से। इनफेक्शन शायद पहले ही हो चुका था। एकाध साल पहले अलका चली गयी है—'

'चली गयी ?'

'हाँ, बंबई से फिल्म-प्रोड्यूसर ने उसे फिल्म की हीरोइन बनाने का लोभ दिखाया। वह चली गयी। तब हाँ, बदले में उसे उसके पास प्रेयसी के तौर पर रहना

होगा। मुझसे कहा, स्ट्रेट-कट। गणित में दो-दो मिलकर जैसे चार होता है, उसी टाइप की औरत है वह। अच्छा ही किया। औरत का नशा तो मुझे हमेशा से रहा है। उसके बाद मैंने ज्यादा शराब पीना शुरू किया। शुरू-शुरू में मैंने बंबई में अच्छा ही किया था। अलका के चले जाने पर मुक्ति मिली। तेज जीवन जीने लगा। शुरू में समझ नहीं सका। उसके बाद परवाह नहीं की। उसके बाद मुंह के बल गिर पड़ा। लगातार दो फिल्मों में मुंह की खायी। दूसरी ओर नारी की संगति के लोभ में सब कुछ बेच कर दिवालिया हो गया। आखिर में कलकत्ता लौट कर एक झुग्गी में शरण ली। मौत का इन्तजार कर रहा था। एक दिन अलका पता लगा कर आयी। उसे जरूरत थी। कुछ खतरनाक कागजात मेरे पास थे। देख गयी। मैंने उसे दे भी दिया। कृतज्ञता के तौर पर—'

मंजरी चाय लाकर रख गयी। एक तश्तरी में कुछ मिठाई। रखकर बोली 'वह सब बात रहने दो।'

'नहीं-नहीं, बता दूँ। कितने दिनों के बाद मुलाकात हुई है। कह देता हूँ। समझ रहे हैं, अचरज की बात है। यह जिन्दगी रात का सपना नहीं है। नहीं, सपना नहीं है। तब हाँ, बरदाश्त कर ले तो आश्चर्यजनक सपना है। उफ्। बात सुनिये। अलका को मेरे प्रति ममता हुई। सोचा, यह आदमी बहुत तकलीफ में है। मगर मंजरी पर भीषण आक्रोश था। आक्रोश और घृणा। जानते हैं, क्या कहती है? कहती है, मंजरी चाहे जो हो मगर असल में वही है। मतलब समझ रहे हैं? इसलिए उसके पास न आकर दयावश मेरी पहली पत्नी कमला के पास चली गयी। सुनकर उसने कहा, 'मुझे कुछ करना धरना नहीं है। जिस दिन उन्होंने धर्म छोड़ा, जात छोड़ दी, उसी दिन से वे मेरे लिए मृत हो चुके हैं। यानी शादी रद्द हो गयी है या तलाक हो गया है।' अलका बहुत जल्दीबाजी में थी। कमला ने कहा, 'गुस्सा मत करो। शोर-शराबा मत करो। इस तरह के हिन्दू-मुसलमान दंगे की अभ्यस्त हो चुकी हूँ। वे अगर मुसलमान में जात दे देता तो तुम यह बात कहने आती? मैंने प्रेम-विवाह नहीं किया है। धर्म के अनुसार शादी कर धर्म के लिए प्रेम किया था। इसलिए उसने जिस दिन धर्म छोड़ दिया, उस दिन से वह मेरा कोई नहीं है।' यह बहुत बड़ी बात है रीतू बाबू। इस बात को याद करता हूँ और कहता हूँ, ठीक ही तो कहा है। मैं अगर मुसलमान या ईसाई हो जाता—तो फिर किसी रिश्ते का दावा नहीं कर सकता था। उफ्, जीवन के आखिरी दौर में कमला को श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगा हूँ। समझ रहे हैं? उसके बाद हारकर अलका ने मंजरी को पत्र लिखा। मंजरी तब तीर्थाटन करने निकल रही थी। तब उस पर तीर्थ सवार था। लेकिन पत्र मिलते ही तीर्थ की गठरी खोल उसी क्षण शिवनन्दन और शोभा के साथ टैक्सी से झुग्गी में आकर हाजिर हुई। मैं बहुत गुस्से में आ गया था। यानी—नहीं, इसे अपराध नहीं कहूँगा। अपराध नहीं है। मैं किसी चीज पर विश्वास नहीं करता, विश्वास करना भी नहीं चाहता। मैंने कहा, क्यों जाऊँगा? नहीं जाऊँगा। वह बोली, 'जाओगे। जाना

पड़ेगा। तुम मुझे प्यार करते थे, अब भी प्यार करते हो।' मैंने कहा, 'मैं ? मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ? हाँ-हाँ-हाँ !' उसने कहा, 'तुम चाहे प्यार न करो, मैं करती हूँ। उसी बल पर तुम मेरे हो—इसीलिए तुम्हें जाना पड़ेगा।' फिर मैं ना नहीं कह सका।'

जरा रुककर मुसकराते हुए फिर कहना शुरू किया, 'आया हूँ। आराम महसूस कर रहा हूँ। और यह बात आराम पाने से नहीं कह रहा हूँ, कसम खाकर कह रहा हूँ—मुझे विश्वास हो गया है कि भगवान चाहे सत्य हो या न हो, मगर प्रेम सत्य है। प्रेम प्राप्त होता है रीतू बाबू, सबको प्राप्त होता है। लेकिन जानते है, होता क्या है—वही पारस पत्थर की खोज, पागल की तरह प्यार करना। एक के बाद दूसरे को फेंककर अकस्मात् किसी दिन हम अनुभव करते हैं कि मिला था मगर उसे असत्य समझकर फेंककर चले आये हैं। मेरे भाग्य में यही है कि, ठुकराया हुआ प्रेम चलकर मेरे पीछे-पीछे आता है और कहता है, 'लौट आओ।' लीजिये चाय पीजिये।'

उसके बाद एक अटूट चुप्पी छा गयी। जैसे सब की बात खो गयी हो। बाबुल की भी। अचानक गोरा बाबू ने कहा, 'मंजरी ऑपेरा का अभिनय मिथ्या नहीं है रीतू बाबू। वह देखिये, आपके सावित्री का खाता पढ रहा था। यथार्थ जीवन में इसीलिए तो ऐसा घटित होते देखता हूँ। मैं सोया रहता हूँ। एकाएक आँख खुलती है तो मंजरी को अपनी ओर ताकते हुए पाता हूँ। जब वह कमरे में नहीं रहती, मैं बाहर आता हूँ। पैरों की आहट सुन वह मुड़कर मेरी ओर देखती है। मैं उसको देखता हूँ। हम दोनों बैठे रहते हैं—देखता हूँ, उसकी आँखें और कहीं नहीं, रोग से कुत्सित मेरे चेहरे की ओर है। इसके बाद भी कहा जा सकता है कि सावित्री की वे बातें झूठी है ? यह जीवन मंजरी ऑपेरा है और हम लोग सावित्री नाटक का अभिनय कर रहे हैं।'

रीतू बाबू की आँखों से आँसू लुढक पड़े। बोला, 'आपने वण्डरफुल कहा है। वण्डरफुल।'

बाबुल बोला, 'और नाटक सक्सेसफुल होगा ही।'

रीतू बाबू जानता है कि यह असत्य है। फलीभूत नहीं होगा। आशीर्वाद फलीभूत नहीं होगा। फिर भी कहा, 'और कुछ महीने। सिर्फ कुछ ही महीने में आप स्वस्थ हो जाइएगा।'

दोनों चुप्पी ओढे लौट रहे थे। एकाएक रीतू बाबू ने कहा, 'देखो ब्रदर—'

'कहिये।'

'आज लग रहा है कि वह गीत असत्य है।'

'कौन-सा ?'

'वही—यह माया प्रपंच माया। यहाँ विश्व के रंगमंच पर—
लीलामय नटवर हरि जिसे सजाते जैसा वह वैसा ही सजता।'

'असत्य क्यों ?'

र्ट करने को उतारा था।
मंजरी चलाना चाहिये
...। एक्सटेंपर कर दिया।
–। लिखता।'

सच्ची बात कही जाये तो अन्त यही है।

मंजरी ने अपने जीवन के नाटक की प्राम्प्टिंग अनसुना कर अपनी मर्जी के अनुसार उसका अन्त वही कर दिया। उसके बाद नाटक चलने की बात न थी। लेकिन रंगमंच के नटवर में आश्चर्यजनक नाट्य-बोध रहता है। वे नाटक को बगैर समाप्त किए चुपचाप बैठे नहीं रहते और समाप्त करते भी तो हैं अपने न्याय के अनुसार ही। इतनी विचित्रता के साथ समाप्त करते हैं कि समाप्त हुए बगैर उसका अन्दाज लगाना मुश्किल है।

तीनेक महीने के बाद रीतू बाबू को यह बात माननी पड़ी। उस दिन भी बाबुल रीतू बाबू के पास आया। बोला, 'चलिये।'

'कहाँ ?'

'गोरा बाबू चल बसे। कल रात शिवना आकर पत्र दे गया। शिवना फिर खुद ही आकर काम करने लगा है।'

मंजरी के घर के बरामदे पर ही गोरा बाबू की देह को फूलों से सजाया जा रहा था। बहुत सारे आदमी हैं। सबके सब अनजाने-अनपहचाने। एक महिला उसके सिरहाने बैठी है। एक खूबसूरत बालक खड़ा है। मंजरी कहीं भी नजर नहीं आ रही है।

शोभा अपने कमरे के बरामदे पर खड़ी है।

रीतू बाबू ने कहा, 'शोभा ? ये लोग—'

'यह गोरा बाबू की पत्नी है, वह लड़का। मंजरी ने कई दिन पहले पत्र लिखा था। कल शाम को उन लोगों का आदमी आया था—गोरा बाबू को कलकत्ते के डेरे पर ले जाना ही उद्देश्य था। उस वक्त आखिरी हालत थी। ले जाने का उपाय नहीं था। वह लौट कर चला गया। उसके बाद वे लोग दल बाँधकर आये। पत्नी आकर

सिरहाने बैठ गयी। पुरोहित ने आकर प्रायश्चित कराया। गोरा बाबू बेहोश थे। उन्हें छूकर पत्नी ने, प्रायश्चित कराया। मंजरी धीरे से उठकर चली गयी और कमरे में छिप गयी। क्या करूँ !'

रीतू खड़ा रहा—चुपचाप, खामोश। ऊपर मंजरी के पास जाने का उपाय नहीं है। मृत शरीर को श्मशान ले जाने के लिए सजाया जा रहा था।

मंजरी नटवर के निर्देश से इस दृश्य में निर्वासिता है। इतने दिनों के बाद मंजरी अपेरा के जीवन नाटक का परदा गिरा।

